जो दास थे

(गुलामान)

लेखक

सदरुद्दीन ऐनी

अनुवादक

राहुल सांकृत्यायन

प्रकाशक

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल

महेन्द्रू, पटना

मूल्य ७॥)

अन्तराष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल
(अशोक राजपथ)
पो० महेन्द्रू, पटना

दो शब्द

सदरुद्दीन ऐनी का उपन्यास 'जो दास थे' (गुलामान) मध्य-एशिया के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक की सर्वोत्तम कृतियों में है। ऐनी के उपन्यासों को पढ़ते समय हमें कितनी ही बार प्रेमचन्द याद आने लगते हैं। ऐनी ने अपने उस उपन्यास में १८३४-१९३४ तक के मध्य-एशिया के इतिहास और समाज का चित्रण किया है, और किया है बड़ी प्रामाणिकता से चित्रण। जो दास थे, वह आज किस अवस्था में पहुँच गये हैं, और वहाँ किस तरह पहुँचे, इसे जानने में यह उपन्यास बड़ा सहायक सिद्ध होगा, साथ ही पाठक इसे पढ़कर यह भी भली भाँति समझ जायें, यदि वह समझना चाहेंगे कि सोवियत राज्य ने जबानी प्रचार से ठोस आर्थिक काया-पलट द्वारा मध्य-एशिया की जातियों को पहिली पंक्ति में ला बैठाया है। जो इस ठोस कार्य को कम्युनिस्टों का प्रोपेगंडा कहकर छुटकारा ले लेना चाहते हैं, वह दया के पात्र हैं। भारत की अपनी समस्याओं के हल करने में सोवियत के अनुभव बहुत लाभदायक सिद्ध होंगे।

चिनी (हिमाचल प्रदेश) } राहुल सांकृत्यायन
२४-६-४८

विषय-सूची

चतुर्थ खंड

क्रांति और गृह-युद्ध

पंचम खंड

कलखोज (पंचायती खेत

प्रथम खंड

दासों का संसार

१८४०—७८ ई०

१

सन्त का आशीर्वाद

विस्तीर्ण मरुभूमि, शुष्क रेगिस्तान था। इस भारी रेगिस्तान में गहरे कुओं को छोड़ पानी पीने का दूसरा साधन नहीं, और कुएँ भी एक दूसरे से एक-दो योजन दूर खोदे गये थे। इस मरुभूमि के प्राकृतिक दृश्यों में थीं रेगिस्तानी घासें, बबूल, मदार, कँटीली झाड़ियाँ। वहाँ कहीं-कहीं फरास के जंगल भी नजर आते, जो हरियाली के लिये तरसती आँखों को शीतल करते। वहाँ दो-दो चार-चार योजन पर पक्के गुंबद और कच्चे जीवाखाने[1] भी मिलते, जो उस समय की तुर्कमानी संस्कृति के परिचायक थे।

इस मरुस्थली में एक बड़ी रबात (सराय) थी, जिसके चारों ओर ऊँची दीवार थी। रबात के बनाने के समय जो पशु मारे गये थे, उनके रक्त के चिह्न अब भी वहाँ मौजूद थे, जिससे मालूम होता था कि इमारत को बने बहुत समय नहीं बीता। रबात के द्वार पर ऊँट के सिर की हड्डी और तगल को काले रंग से रंगकर दो गुलदस्तों के ऊपर रखा गया था। मरुस्थली की यह सुन्दरतम इमारत थी, तभी तो नजर न लगने के विचार से इन्हें इमारत के ऊपर रखा गया था। रबात के भीतर एक कुआँ था, जिसके ऊपर गड़ारी बैठाई गई थी। गड़ारी में रस्सा पड़ा था, जिसके एक छोर पर दो मशकों के बराबर का एक चरसा और दूसरे छोर पर एक ऊँट बँधा था। जब पानी की आवश्यकता होती, तो ऊँट को कुएँ से दूर तक हाँक ले जाते और चरसे के पानी से भेड़ों-बकरियों की प्यास बुझाते। रबात के भीतर फाटक के पास, बायीं ओर हजार भेड़ों के बैठने लायक हौज के आकार का एक गढ़ा था, जिसकी बारी पर चारों ओर पोरसा भर अंदर की मिट्टी

---

१. जीवाखाने रक्षिगृह थे, जो मरुभूमि में सरायों और किलों के साथ बनाये जाते थे, जहाँ खड़े रक्षि-पुरुष शत्रुओं की गतिविधि देखा करते थे।

को जमा कर दिया गया था। यह गढ़ा मेषशाला का काम देता था। इस गढ़े के सामने गोशाला और कितने ही और घरों की काली पाँती थी। उसके आगे लड़के तकली पर ऊँट के धुने ऊन का सूत कात रहे थे। इन घरों के एक छोर पर चूल्हों की पाँती थी, जहाँ एक अधेड़ तुर्कमान स्त्री देगों में ऊन उबाल रही थी। चूल्हों के पास कुछ मिट्टी की हौदियाँ (नादें) थीं, जिनमें पीले, लाल, नारंगी, बनफशी, नीले, बैंगनी, हरे, काले रंग तैयार करके रखे हुए थे; जिनमें उबालकर सुखाये ऊन को एक तुर्कमान स्त्री रंग रही थी।

इन काले घरों की एक ओर एक छोटी-सी खुली जगह थी, जिसे समतल करके वहाँ दोनों तरफ खूँटे गाड़े हुए थे, जिनके ऊपर कितने ही कालीनों और कालीचों के ताने तने हुए थे। प्रत्येक कालीन और कालीचे (गलीचे) के पास कोमल भूमि पर एक बुढ़िया तरह-तरह के चित्र खींच देती, जिसे कालीन बनानेवाली तरुण स्त्रियाँ फूल-पत्ती के तौर पर उतारतीं।

रबात के फाटक की दाहिनी ओर दीवार में कितने ही खूँटे गड़े थे। दूर राह चलकर आये घोड़ों को यहाँ दम लेने के लिये बाँध देते थे। इन खूँटों के पास एक खुली जगह थी, जहाँ खूँटे पाँती से गड़े थे। दम ले लेने पर घोड़ों को यहाँ बाँधकर उन्हें घास-चारा डालते थे।

रबात के भीतर, फाटक के सामने एक अलग-थलग काला घर था, जिसके भीतर फूल-पत्तीदार नमाजी आसनीवाले कालीचे पर बैठा एक सत्तर-पचहत्तर-साला बूढ़ा नमाज पढ़ रहा था। रबात के फाटक से भीतर आनेवाले आदमी की दृष्टि सबसे पहले जिस चीज पर पड़ती, वह यही बूढ़ा था। बूढ़े के सिर पर सफेद पोस्तीन की टोपी थी; उसके किनारे एक दो पेचा साफा लपेटा हुआ था, जिसमें दातवन खोंसी थी। नमाजासनी पर खजूर की एक-हजार-एक गुठलियों की माला मेंहरी मारे साँप की तरह पड़ी बूढ़े के सूफी-सन्त होने का परिचय दे रही थी। घर की दीवार पर जहाँ-तहाँ पलीतेवाली बंदूकें, तलवार, खंजर, ढाल, कवच, भाला, पाश आदि हथियार टँगे हुए थे, जो बतला रहे थे, कि बूढ़ा कभी एक जंगी सरदार था।

बूढ़ा कभी मुँह को पिचकाकर बुढ़ापे के कारण ललाट पर पड़ी झुर्रियों को मिटाने का प्रयत्न करता; कभी निष्प्रभ हो गई आँखों को फैलाकर बारीक छँटी मूँछों के नीचे रक्तहीन पतले ओठों पर भेड़ियों-जैसी मुस्कराहट लाता, और कभी

इस नमाज पढ़ने के समय भी अपनी बकरदाढ़ी के छोर को हाथ से पकड़ मुह में डालकर चबाता। उसकी इस निरर्थक गतिविधि से मालूम होता था, कि उसके दिल में हर्ष-विषाद के भाव, उसके मस्तिष्क में मीठे-कड़वे विचार, उसकी नसों में क्रोध और क्षोभ का रक्त तरंगित हो रहा है।

वृद्ध अभी नमाज ही में था, कि रबात के फाटक से कुछ सवार भीतर आ घोड़ों से उतरे। उन्होंने अपने घोड़ों को दीवार में गड़े खूँटों से दम लेने के लिये बाँध दिया। अभी वे अपने घोड़े बाँध ही रहे थे, कि काले घर से बाहर निकलकर एक बुढ़िया ने उनका स्वागत किया। बुढ़िया के सिर पर बुखारा की मीनार-जैसा पिटारीनुमा भारी साफा बंधा था। उसने मेहमानों से तुर्कमानी कुशल-प्रश्न की विधि को पूरा किये बिना ही पूछा :

—सर्दार, जवानों की खबर मालूम है ?

पचास-पचपन साला सर्दार ने मुँह बिचकाकर बुढ़िया की ओर दृष्टि डाले बिना उत्तर दिया—यदि जीवित हैं तो गाजी होकर लौटेंगे, यदि खुदावंद के हुक्म से उनकी मौत आ पहुँची, तो शहीद होंगे। पूछताछ करने की क्या आवश्यकता ?

सर्दार यह कह उस काले घर की ओर चला, जहाँ बूढ़ा नमाज में अब भी लीन था। साथ के तरुण भी उसके पीछे-पीछे थे। द्वार पर पहुँचकर नमाज की समाप्ति की प्रतीक्षा में वे ठहर गये।

वृद्ध ने नमाज समाप्त की, फातिहा पढ़ा; फिर माला ले 'दरुद-औराद' पढ़ते एक-एक मनका गिनते उसे अन्त तक पहुँचाया। फिर एक बार फातिहा पढ़ कुफ् कह माला पर फूँक मार उसे दीवार में गड़ी खूँटी पर टाँग दिया। फिर कुछ भुनभुनाते जामा पर पड़े तिनकों और गर्दों को नख से निकाल-निकाल कर अलग फेंका। इसके बाद धीरे-धीरे बेमन-जैसे उठकर अब भी द्वार पर खड़े मेहमानों की ओर भौंहों को सिकोड़ आँखों को अर्ध निमीलित करके कहा—हाँ, अब्दु रहमान सर्दार, आओ, आइये।

आगे-आगे सर्दार और पीछे जवान अन्दर आये। सर्दार ने नमाजासनी पर खड़े वृद्ध को सलाम किया।

—पूछूँ सर्दार—वृद्ध ने कहा।

—आपसे आगा खलीफा—सर्दार ने कहा।

—तुमसे, तुम जो कि मरुकांतार पार कर खिजिर और इलियास से मिलकर आये हो।

—नहीं, आपसे, आप जो कि खुदा के नेक बंदे हैं, रात-दिन नमाज-भजन में लीन रहते हैं, और आयु में भी बड़े हैं।

इसी तरह दोनों ओर से 'तुमसे', 'आपसे' अरज दुहराई गई। फिर अन्त में वृद्ध ने पूछा :

—खूब स्वस्थ शांत तो हो? माल-असबाब, क्षुद्र-कण, देह-दयार, कौम-कबीला, छोटे-बड़े सलामत तो हैं?

सर्दार वृद्ध के एक-एक प्रश्न पर 'खुदा को धन्यवाद', 'खुदा को धन्यवाद' कहता रहा। वृद्ध के प्रश्न के समाप्त होने पर सर्दार ने भी उसी तरह वृद्ध से कुशल-मंगल पूछा। जवानों ने भी एक-एक करके उसी तरह दुहराया। इस कुशल-प्रश्न विधि के पूरा होने में काफ़ी समय लग गया। फिर वृद्ध ने 'भले आये सर्दार' 'भले आये युवकजन' कहते मेहमानों को बैठने के लिये कहा, और वह स्वयं भी कालीचा पर नमाजासनी डालकर बैठ गया। मेहमान भी हाथ आगे किये 'कुल्लुक-कुल्लुक' कहते आयु के वर्षों के अनुसार क्रम से अंगीठी की दोनों तरफ बैठ गये। बूढ़े ने हाथ उठाकर फातिहा पढ़ना आरम्भ किया, दूसरे भी हाथों को उठा सिर नीचा किये 'आमीन, आमीन' कहते रहे। लम्बे-चौड़े फातिहा-पाठ के बाद बूढ़े ने मुँह पर हाथ फेरा।

बूढ़े ने हाथ बढ़ाकर दीवार से लटकते तीन खानों के खलीते को उतारा। वह इतना मैला था, कि जान नहीं पड़ता था, उसका असली रंग क्या था। खलीते के एक खाने में हाथ डालकर एक मुट्ठी तंबाकू निकाला और उसे अंगीठी के पास रखे खीवावाले बड़े काठ-हुक्के की चिलम में भरा। सबसे नीचे की ओर बैठे तरुण ने उठकर हुक्के को ले लिया और अंगुलियों को चिमटा बना अंगीठी से आग लेकर चिलम भरी। फिर उसने खुद दो-एक फूँक लगा हुक्के को बारी-बारी से सबको दिया। बूढ़े को छोड़ सबने हुक्का पीया। इसी समय दो तरुण कन्यायें आईं। उनके गलों में बुखारी तंकों, ईरानी तुमानों और अफगानी रुपयों की हमेलें पड़ी थीं। उन्होंने मुँह-ओठ साफ की हुई चायनिकों (चायदानियों) और प्यालों तथा रोटी लपेटे दस्तरखान (खाना परोसने की चादर) को सामने रख दिया और सिर नीचा कर वे सर्दार की ओर सम्मान

प्रदर्शित करते घर के भीतर चली गईं। वृद्ध ने खलीते के दूसरे खाने में हाथ डाल हरी चाय निकाल उसे एक-एक करके प्रत्येक चाय में डाला। एक तरुण ने चूल्हे पर उबलते पानी को उँड़ेल चायनिकों को थोड़ा दम करके प्रत्येक मेहमान के सामने एक चायनिक और एक प्याला रखा; खाली बर्तन में ठंढा पानी भर उसे फिर उबलने के लिये रख चूल्हे के भीतर सकसोल (फरास) की एक दो लकड़ी डाल दी। तब अन्तिम चायनिक को अपने सामने रख वह भी मेहमानों की पाँती में बैठ गया। मकान में गर्द भरा धुआँ फैला हुआ था। मेहमान चाय पीने में लगे। वृद्ध ने दस्तरखान को खोलकर मेहमानों के सामने फैला दिया और रोटियों के टुकड़े कर मेहमानों से खाने के लिये प्रार्थना की; फिर सामने पड़े लत्ते को खोल, कंद के टुकड़ों को ले दस्तरखान पर बिखेर दिया। अब वृद्ध ने खलीता के तीसरे खाने में हाथ डाल एक मुट्ठी कोकनारी (भाँग) चूर्ण निकाल स्वयं एक गफ्फा मार ऊपर से चाय का घूँट पी लिया; फिर दूसरों को भी एक-एक मुट्ठी कोकनारी चूर्ण का गफ्फा लगवाया।

वार्त्तालाप आरम्भ करने से पूर्व वृद्ध ने थोड़ा धर्मोपदेश दिया और संसार की असारता के साथ मोमिन बंदे (मुसलमान) के लिये स्वर्ग-धन के अवश्य मिलने की बात की। धीरे-धीरे वार्त्तालाप धरती के कामों पर उतर आया। वृद्ध ने जमाना के खराब होने तथा पुण्य-धर्म के उठ जाने की बात कहते हुए कहा:

—नहीं जानता, अल्लाह की दर्गाह में क्या नाशुक्री की, कि पारसाल सर्दी और तूफान से सारे पशु मारे गये, मेषशाला और पशुशाला खाली हो गईं। अब जीवन का सहारा केवल कालीन-बुनाई रह गई है। और इस श्रम में भी बरकत नहीं।

वृद्ध ने सामने रखे प्याले की चाय पी और उसमें दूसरी चाय डालकर फिर बात आरंभ की—पहिले समय अपने जानवरों के ऊन से घर की आठ औरतें—चार सूफी [1] और चार निकाही—कालीन, खुर्जी और दूसरी चीजें बुनकर तैयार

---

[1] उज्बेकों और तुर्कमानों में सूफी बनाने की प्रथा थी। शरीयत में चार से अधिक ब्याहता स्त्री वर्जित है, इसलिये आगे ब्याहने के वक्त एक को सूफी बना घर में ही रख छोड़ते थे।

करती थीं। रोजगार अच्छी तरह चलता था। पिछले साल एक भूल कर बैठा। निकाही (व्याहता) स्त्रियों में से दो को सूफी बना, दो सुन्दर लड़कियों से पन्द्रह हजार बुखारी नकद देकर निकाह कर लिया। लड़कियाँ बहुत ही गुनी हुनरमंद हैं, उनके बुने कालीन बुखारा के बाजारों में अव्वल दर्जे के समझे जाते हैं।

वृद्ध ने एक लंबी साँस खींचकर फिर बात आरंभ की—मैंने सोचा था, इन लड़कियों से मेरा काम खूब चल निकलेगा, किन्तु अफसोस, वह बेहतर नहीं बदतर हुआ। अबके जाड़ा बहुत सख्त आया, सारे पशु मर गये, और अब यहाँ नहीं, सारी मारी-चूल (रेगिस्तान) में ऊन नहीं मिलता। जो कालीन बुने जा रहे हैं, उनके दाम से बुननेवाली स्त्रियों का ही पेट नहीं पूरा होता। इस समय मानों इन दस स्त्रियों की व्यर्थ ही पर्वरिश कर रहा हूँ।

—हौव्वा, सच है—अब्दु रहमान सर्दार ने कहा—मेरे यहाँ भी यही हाल है, लेकिन मैंने सूफी बनाई औरतों में से तीन को निकाल दिया, और इस तरह खर्च कुछ हल्का हो गया।

—मुझे भी अन्त में यही करने के लिये बाध्य होना पड़ेगा—वृद्ध ने भंगेड़ी आँखों को खलीते पर गड़ाकर कहा। उसके चेहरे से निराशा टपक रही थी। उसने भंग का एक गफ्फा और लगाया, और दूसरों में भी बाँटी, चायनिकों में भी दुबारा चाय डाली। सबसे नीचे की जगह में बैठे जवान ने चाय को दम किया, खाली बर्तन में ठंढा पानी भरके उसे फिर चूल्हे पर गर्म होने के लिये रख दिया और कुछ और ससकोल जलने के लिये डाल दिया। ससकोल के रजोमिश्रित धूम और बर्तन में उबलते पानी की भाप ने उस काले घर के भीतर बैठे लोगों के दिल को भी तमोमय बना दिया था। इस सारे धूम और रज के भीतर ससकोल के ईंधन की ज्वाला अंधेरी रात में छोटे दीपक की भाँति टिमटिमाती चारों ओर चमकती चिनगारियाँ बरसा रही थी।

वृद्ध ने बँधे लत्ते को फिर खोला, सारे कंद (मिश्री) के टुकड़ों को दस्तरखान पर रख लत्ते से ललाट और मुँह के पसीने को पोंछा। कंद के चूर्ण के साथ अपने प्याले में उबलती चाय डाली और बाकी चूर्ण को मेहमानों को दे दिया। अबकी बार ताजा भरे हुक्के से उसने भी दो फूँक लगाई, और चाय को दो घूँट में पी प्याले में ताजा चाय डालकर फिर बात प्रारंभ की :

—हाँ-आ, ऐसा ही है भाई मेरे अब्दु रहमान! हमने शाहमुराद[1]सरिक के शासन की कद्र न की। उस जमाने में यदि आज पाँच सौ भेड़ें सर्दी से मर जातीं, तो कल उनकी जगह हजार आ मौजूद होतीं। शाहमुराद के भय से शाह-ईरान की सेना सीमान्त पर ठहर नहीं सकती थी। उस समय हमारे लिये यहाँ से मशहद और आगे कज़्वीन तक का रास्ता खुला हुआ था।

गहरी मीठी चाय ऊपर से हुक्का खींचकर दुबारा गफ़्फा लगाये कोकनार ने वृद्ध के नशे को खूब बढ़ा दिया था। अपने दोनों कंधों को ऊपर उठा दोनों हाथों को दो ओर फैला खुलकर साँस लेते उसने पीछे की ओर बैठे जवान को आँख के इशारा से हुक्का भरने के लिये कहा, फिर ठंडे हो गये प्याले में थोड़ी गर्म चाय डालकर पिया। हुक्के की चार फूँक लगाने के बाद फिर बात आरंभ की :

—हाँ, यही बात है शुक्र। मेरे पुत्र भी हैं, भाई भी है। खुदा की मेहरबानी पर भरोसा करके उन्हें आस्राबाद की ओर भेजा है। भगवान कृपा करते, तो वह कोई काम करके आते।

कोकनार का नशा तेज हुआ था। देग गर्म हो छक्-छक् कर रही थी। कड़वी-हरी चाय से वृद्ध ने सूखे हलक को तर किया। पीछे की ओर बैठा जवान बूढ़े के इशारे की प्रतीक्षा किये बिना चिलम पर चिलम भरते पहिले वृद्ध को देने लगा। वृद्ध भी पानी के मुँह तक खिंच आने तक लंबी फूँक लगा रहा था। धुआँ, भाप, गरमी और लोगों के शरीर के पसीने की बदबू सबने मिलकर वहाँ की हवा को असह्य बना दिया था; किंतु उसका मारी-चूल की धूप में पके इन पहलवानों के ऊपर कोई प्रभाव न था। अबकी बार अब्दु रहमान सर्दार ने अपने भूतपूर्व सर्दार को 'खलीफा' या 'आप' न कह बेतकल्लुफी से बात शुरू की :

—किलिच् आगा, तेरा जमाना एक मंगल और बरकत का जमाना था। तेरे नेतृत्व में जब हम जय-विजय के लिये जाते, तो बिना कैदी (दास) और

---

[1]बुखारा का अमीर, मासूम बी भी इसका नाम था, वह दानियाल अतालीक (१७४८-१८०१ ई०) का पुत्र था। वह अनेकबार मशहद, सरख्स, मेर्व, बैरमअली के इलाकों में कत्ल और लूट मचाकर वहाँ के लोगों को बुखारा और समरकंद ले गया।

गनीमत (लूट के माल) के न लौटते। हमें कभी खतरे का सामना नहीं करना पड़ा। उस समय हमारी मेषशालाएँ भेड़ों से और रबात दासों से भरे रहते—अब्दु रहमान ने सूखे हलक को चाय से तरकर फिर कहना शुरू किया—किंतु, जब से तूने संसार त्याग दिया, एकान्तसेवी बना, तब से मंगल-बरक्कत चली गई। आज दास लूटकर बेचने की बात तो दूर, हम स्वयं दासता भोग रहे हैं। इन अन्तिम दिनों में दिल दुनियाँ से बिल्कुल उचट चुका है, इसीलिये "आगा के पास चलकर कुछ बात करूँ, सलाह मशौरा लूँ" के विचार से जवानोंको साथ लिये यहाँ तेरे पास आया।

—भले आये भाई मेरे—किलिच् आगा ने कहा—सदा दुआ करते समय तेरा नाम लेता हूँ। मेरी सलाह और नसीहत यही है, कि निराश कदापि न हो, निराशा शैतान का काम है। ताकतवर तन और हिम्मतवर दिल से काम कर, अपने कारनामे दिखला; ताकत और हिम्मतवाले आदमी के लिये दुनिया तंग नहीं हैं।

वृद्ध ने आधी ठंडी हो गई चाय को प्याले में डालना आवश्यक न समझ चायनिक की टोटी को मुँह से लगा लिया। फिर चायनिकों में दम करने के लिये नई चाय डालकर बात शुरू की:

—जैसा कि सुनने में आया है, इन दिनों अफगानिस्तान में तबाही छाई हुई है। तैमूरशाह के लड़कों शाहजमाँ और शाहमदमूद के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ है, देश के सीमान्त बेमालिक हैं, और हिरात का प्रदेश रक्षक-विहीन है। उसी तरफ चढ़ाई करके भाग्य-परीक्षा करनी चाहिये।

—करामत कर दी आगा, तूने—अब्दु रहमान सर्दार ने भावोद्रेक में कहा—मैं स्वयं भी हिरात की ओर ही 'प्रयाण' करने की इच्छा रखता था, और तेरे पास इसीके बारे में सलाह करने आया था। तूने मेरे हृदय की बात जान ली। तू निस्संदेह वली-सन्त है। तेरे हृदय में चिन्तित यह मेरी यात्रा अवश्य सफल होगी।

हिरात की यात्रा निश्चित हो गई। अब्दुरहमान ने अन्तिम चायनिक, जो कि शायद दसवीं थी, खाली की, और बिदाई के लिये खलीफा से फातिहा पढ़ने को कहा। खलीफा हरएक को एक-एक दाना दे मक्का की ओर मुँह करके खड़ा हुआ, दूसरे भी अपने स्थान पर काबा-मुख खड़े हो गये। खलीफा ने दोनों हाथों को उठा दुआ शुरू की। दूसरे भी हाथ उठा "आमीन, आमीन' कहने लगे।

"हाथ में लाना, हाथ में न जाना, पकड़ना, पकड़ में न आना, खिजिर और इलियास तुम्हारे मददगार, चार यार तुम्हारे मददगार होवें" कहते खलीफा ने अपने मुँह पर हाथ फेरा। दूसरों ने भी हाथों को मुँह पर फेरा, और घर से बाहर निकल गये।

पंद्रह मिनट बाद रेगिस्तान में आग के धूएँ की तरह गर्द उठकर हवा में फैलने लगी। किलिच् खलीफा की रबात में कालीन बुननेवाली औरतों के हाथों की गति और सूत कातनेवाले लड़कों के तकलों के चक्कर के अतिरिक्त कोई दूसरी गति नहीं दिखलाई पड़ती थी।

२

एक शांत नीड (१८४० ई०)

हिरात-प्रदेश में हरी रूद नदी के तट पर एक बड़ा बाग था। उसकी चारों ओर पक्की दीवार खिची हुई थी, और दीवार के ऊपर भी काँटे बँधे हुए थे, जिसमें राह चलते पथिक मेवे पर हाथ न मार सकें। बाग के भीतर कितने ही अंगूर, नाक, नास्पाती, शिफ्तालू, आलू-हिराती (आलू-बुखारा) और दूसरे मेवा-वृक्ष पाँती से लगे थे। इनके अतिरिक्त खर्बूजा (सरदा), तबूंज, कद्दू की बेलों ने बाग को शोभापूर्ण बनाने के साथ श्रीपूर्ण भी बना रखा था। बाग के भीतर एक लम्बी बारादरी के अतिरिक्त कोई दूसरी इमारत न थी। बारादरी भी, जान पड़ता था, आदमियों के लिये नहीं बल्कि कबूतरों के रहने के लिये बनाई गई थी। कबूतरों ने वहाँ बसेरा कर महीने-महीने अंडा दे, बच्चा निकाल, अपनी संख्या बढ़ाकर उसे चिड़ियाखाने के रूप में परिणत कर दिया था।

बाग के भीतर दीवारों और दूसरी धूपवाली जगहों को अंगूर तथा दूसरे मेवों के सुखाने के लिये सुरक्षित किया गया था। अंगूर के बाद वहाँ दूसरा सर्वश्रेष्ठ मेवा आलूहिराती था। शुष्क आलूहिराती एक अद्भुत मधुर स्वादवाला मेवा है। इसे ईरान (और हिन्दुस्तान) के बाजारों में "आलूबुखारा" कहकर खरीदते और औषध के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। बुखारा, समरकंद, ताशकंद और सारे तुर्किस्तान में इसे आलूहिराती कहकर दवा के काम में लाते हैं। हिरात-प्रदेश

में आलू जमा करने का मौसिम बड़े जोश-खरोश का समय है। यद्यपि इस समय बाग के मेवे पककर बिल्कुल तैयार हो गिरकर बर्बाद होने को तैयार थे, किन्तु वहाँ आलू चुननेवालों का कहीं पता न था। और बाग के मालिक? बाग से दूर आदमियों के घरों का एक गाँव था। गाँव की चारों ओर किले की तरह की ऊँची दीवारें घिरी थीं। इस बाग के मालिक भी गाँव के दूसरे बागदारों और किसानों की भाँति इसी "दुर्ग" के अंदर जीवन बिताते थे। परिवार का मुखिया हसन प्रतिवर्ष पड़ोसियों से पूर्व काम शुरू कर सबसे पहिले फसल को जमा कर लिया करता था; लेकिन तब हसन के पास काम करनेवाले हाथ अधिक थे—३५ और ४० साल के दो भाई हुसेन और हमीद, उनके २०-१७-१५ साल के तीन बड़े लड़के रजा, महमूद और अली सभी परिवार-ज्येष्ठ हसन के अधीन काम करते थे। लेकिन पिछले साल आलू जमा करने के समय सिर पर पहाड़ टूटा, जिससे हसन अपने भाइयों और भतीजों से सदा के लिये बिछुड़ गया, उसकी हिम्मत टूट गई। यह पहाड़ टूटना था, तुर्कमान डाकुओं का आक्रमण। वह हसन के परिवार के सारे सयाने मर्दों को बंदी बनाकर ले गये। मालूम नहीं उन्हें तुर्कमानों ने दुनिया के किस कोने में ले जाकर बेंच डाला।

इस वर्ष हसन के परिवार में स्त्रियों, लड़कियों, अल्पवयस्क बच्चों के अतिरिक्त कोई नहीं रह गया था। हसन ने अकेले जाकर बाग और खेतों में कुछ काम किया, पानी दिया, मेवा सुखाने की जगहों को भी कुछ ठीक-ठाक किया, किंतु वह अकेले मेवा नहीं जमा कर सकता था। तुर्कमानों के डाके का हर समय खतरा था, इसलिये वह स्त्रियों-बच्चों को काम के लिये वहाँ नहीं ले जा सकता था। मेवा जमा करने का मौसिम समाप्त हो रहा था। अकेला काम करने से विशेष लाभ नहीं था—मेवा जमा करना बहुत हाथों का काम है। वह जब तब बाग जा एक-दो गुच्छा अंगूर, दो-चार खर्बूजा (सरदा)-तर्बूज-कद्दू ले आया करता था; परिवार को बस इतना ही लाभ था।

इसी समय **मशहद** की ओर से आये कारवाँ ने खबर दी, कि यहाँ से दो-तीन दिन के रास्ते तक तुर्कमानों का कहीं पता नहीं है। कारवाँवालों के कथनानुसार अकाल के कारण तुर्कमान आजकल **सरखस** और **अबीवर्द** की ओर चले गये हैं। इन सात-आठ महीनों में मशहद प्रदेश के लोगों पर दो-एक बेकार आक्रमणों के सिवाय तुर्कमान कुछ नहीं कर पाये। कारवाँवाले कह रहे थे—

'फिरंगी तोपों तथा रुस्तम और स्पन्दयार-जैसे जंगी बहादुरों के साथ शाह की फौजों ने कई बार तुर्कमानों पर आक्रमण कर उन्हे भयभीत कर दिया है। तुर्कमानों ने कबूल किया है, कि अब वे फिर दास-विक्रय नहीं करेंगे। यही कारण है, जो हमने मशहद से हिरात तक रास्ते में एक भी तुर्कमान को नहीं देखा, जब कि पिछले साल इस रास्ते में कई बार तुर्कमानों से हमारी मुठभेड़ हुई थी। हिरात प्रदेश में भी इस एक साल के भीतर तुर्कमानों ने कोई हमला नहीं किया था। इसलिये भी कारवाँवालों की इस बात ने सबको निश्चिन्त कर दिया और लोग क्रियाशील हो गये। इससे पहले गाँव के मर्द काँपते-काँपते अपने खेतों और बागों में जाते थे, किन्तु अब वे बड़ी निश्चिन्तता के साथ बीबी-बच्चों को लिये काम करने जाते। हसन-परिवार भी बाग जाने को तैयार हुआ।

+ × × ×

शरद के एक दिन बड़े सबेरे ही हसन के घर में बड़ी तत्परता दिखाई पड़ती थी। अभी सूर्योदय नहीं हुआ था, स्वच्छ नीले आकाश में अब भी कितने ही तारे दिखाई पड़ रहे थे, अभी गौरैया अपने घोंसलों से न निकली थीं, घर के मुर्गे भी दरख्तों से न उतरे थे। दिन चढ़ आने तक सदा सोते रहनेवाले बच्चे बाग जाने के शौक में सयानों से पहले उठ बैठे थे और तैयारी में अपनी माताओं को मदद दे रहे थे। सात बरस का रहीमदाद औरों से देर में जगा था। वह अपनी माँ से "तू ने क्यों नहीं मुझे जल्दी जगा दिया" कहकर चिढ़ रहा था और अपनी तीन साल की बहन ज़ेबा को जगाकर कह रहा था—"उठ जल्दी बाग चलें, मैं तुझे गौरैया का बच्चा पकड़कर दूँगा।" ज़ेबा आँखों को बिना खोले ही हाथों को फैलाकर "अभी भैया जान" कहकर खुशामद कर रही थी।

तयारी समाप्त हुई। हसन की पत्नी ज़ुलेखा ने अपने दुधमुँहे बच्चे फारूक को पीठ पर बाँध अपनी तीन-साला बच्ची खदीजा को गोद में उठाया। पारसाल बंदी बने हुसेन की बीबी ने अपनी तीन साला लड़की जेबा को लेकर चाहा कि सात साला लड़के रहीमदाद का हाथ पकड़े, किन्तु उसने स्वीकार न किया। वह "मैं सबसे पहले बाहर जाऊँगा" कहते गली में दौड़ गया। पारसाल बंदी बने हमीद की बीबी ने अपनी १२-१५ साल की दो लड़कियों और हसन की एक सयानी लड़की के साथ रोटी का थैला, पानी का मटका, छींका, झोला और दूसरी आवश्यक वस्तुओं को उठाया। हसन एक पुरानी तलवार को म्यान में

रख एक पलीतावाली बन्दूक को लिये आगे-आगे चला। घर की रखवाली का काम हसन की सास के ऊपर रखा गया। अभी भी सूर्योदय नहीं हुआ था, जब कि सभी रास्ते पर चले आये थे। बाग बहुत दूर नहीं था तो भी धीरे-धीरे चलने के कारण वे एक घण्टा में पहुँचे। जाते ही सब लोग काम में लग गये।

रहीमदाद बहिन के लिये गौरैया का बच्चा पकड़ने बाग आया था, लेकिन उसे भी काम करने के लिये माँ ने कहा:

—बच्चा, जब तेरा बाप था, तब हम खुशहाल थे। वह अपने आका (बड़े भाई) के साथ सारा काम करता था, किन्तु जब वह, तेरे चाचा और दूसरे चचेरे भाई बन्दी होकर चले गये, तब से तेरे चचा बे-पंख हो गये और सभी काम अकेले उनके ऊपर पड़ गया। यदि हम सब उनकी सहायता न करेंगे, तो जल्दी वे थककर बीमार पड़ जायेंगे और हमारा कोई सहारा नहीं रह जायगा। अब तू अपने बाप की जगह काम कर।

रअना पेड़ पर चढ़ी और उसने झोले को एक डाली पर टाँगकर आलू चुन-चुनकर उसमें रखना शुरू किया और लड़के को "भूमि पर गिरे एक-एक आलू को चुनकर डाली में रख" हुक्म दिया।

रअना अपने काम में बहुत तन्मय थी। जेबा बार-बार पूछ रही थी—'मादरजान, मैं भी आलू चुनूँ क्या? यहाँ भी एक आलू है, इसे, कहाँ रखूँ?...'' किन्तु माँ को जवाब देने की छुट्टी न थी। दूसरी स्त्रियाँ और लड़कियाँ भी दरख्तों के ऊपर और नीचे से आलू चुन रही थीं। पारसाल बन्दी बन गये अपने पतियों की शोकपूर्ण स्मृति का जिक्र करते बाकी बच्चों की रक्षा के लिये खुदा और शाहमर्दां से दुआ माँग रही थीं।

× × ×

हसन वहाँ काम करनेवालों में नहीं था। गाँव में अच्छे समाचार सुनने से उसका हिआव बढ़ आया था, किन्तु बाग में आने पर फिर नाना प्रकार के विचार उसके हृदय को शंकित करने लगे। कौन जाने, रेगिस्तान के एक कोने से फिर डाकू आ धमकें। यद्यपि उसने इन भयावह विचारों को स्त्रियों और बच्चों से नहीं कहा, किन्तु उसका हृदय बहुत शंकित हो उठा:

—मैंने पिछले साल बड़ी बेवकूफी की, कि काम करने के वक्त रेगिस्तान बयाबान की ओर शत्रु की देखभाल न की, भाइयों के साथ खड़ा होकर दुश्मनों से लड़ने की

जगह खुद सबसे पहले भाग गया। उनसे वियुक्त हो आज असहाय बना हुआ हूँ, यह उसी भूल का परिणाम है। इस साल तदबीर से काम लेना है और आफत आने पर डट के मुकाबिला करना है।

इन विचारों में डूबा हसन स्त्रियों से बिना कुछ कहे अपने बाग से निकल पड़ोसी-बाग में काम करनेवाले लोगों के पास गया। उनसे दुश्मन से मुकाबिला करने के बारे में सलाह देते बहस करते बोला—"यदि संकट के वक्त भयभीत हो जायेंगे या उपाय से काम न लेंगे, तो हम सभी बन्दी बनेंगे। बात ठीक यही है कि हममें से जिसके ऊपर शत्रु आक्रमण करें, उसके चिल्लाने पर सबको मदद के लिये आ पहुँचना चाहिये। सभी मर्दों को इकट्ठा हो दुश्मनों को रोक रखना चाहिये, जिसमें औरतों, लड़कियों और छोटे बच्चों को भाग निकने का मौका मिले। यदि शत्रु के मकाबिले में हम सब डट जायेंगे, तो चाहे सबकी जान न भी बचे, किन्तु हम सभी मरेंगे भी नहीं और न सभी बन्दी होंगे। किन्तु यदि हर आदमी ने अकेले-अकेले मुकाबिला करने या भागने की ठानी, तो सभी पकड़े जायेंगे।"

—इसके लिये जरूरी है—एक पड़ोसी ने कहा—कि हम बारी-बारी से रेगिस्तान की ओर देख-भाल करते रहें। देखनेवाला जैसे ही रेगिस्तान में दुश्मन का चिह्न देखे, वैसे ही दूसरों को खबर दे। फिर स्त्री-बच्चे सारे घर भाग जायँ। यदि मौका मिले तो हम भी भागें, जो दुश्मन आ ही पहुँचें तो डटकर उनसे जूझें।

—खुदा को धन्यवाद है, कि हमारे पास कटार, तलवार, ढाल, और खंजर जैसे हथियार हैं—दूसरे ने कहा।

—हसन आका के पास बन्दूक भी है। वह अकेले कितने ही तुर्कमानों को घोड़े से गिरा सकता है—तीसरे ने कहा

—हसन ने बन्दूक को जमीन पर रखकर इधर-उधर देखा। दुश्मन का कहीं पता-निशान नहीं था अभिमान-पूर्ण स्वर में "आज देख-भाल मैं करूँगा, आपलोग दूसरे दिन करेंगे" कहकर बन्दूक उठा पड़ोसियों के फातिहा-पाठ के साथ रेगिस्तान को रवाना हुआ।

× × × ×

हसन ने घूम-घूमकर मरूभूमि की सारी समतल और ऊँची नीची जमीन को देखा, कहीं कोई नहीं था। चारों ओर शान्ति और निश्चिन्तता विराज रही थी। फिर एक ऊँची जगह पर जाकर आँखें जहाँ-तक जा सकती थीं, चारों ओर दृष्टि

दौड़ायी, किंतु क्षितिज तक कोई चिह्न नहीं दिखलायी देता। हसन निश्चिन्त हो जमीन पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसने फिर खड़ा हो चारों ओर नजर दौड़ाई। अब भी बयाबान में दुश्मन का कहीं पता नहीं था। इसी तरह अनेक बार उसने इधर-उधर देखा, सब जगह शान्ति थी। हसन का चित्त भी शान्त हो गया। सवेरे से ही जो भय उसके दिलपर छाया हुआ था, वह कम होने लगा और साथही उसकी हिम्मत भी बढ़ चली। धीरे-धीरे वह अपनी नजर में इतना बलवान दिखायी देने लगा, कि मानों अकेले ही दश दुशमनों का मुकाबिला कर सकता है। हसन को यह देख-भाल तुच्छता-द्योतक मालूम होने लगी। वह सवेरे से उठते अपने दिल के आतंक पर हँसने लगा। अब वह मरुभूमि की तरफ कम निगाह करता और अधिक समय लेटकर सोये बिता रहा था। इसी समय क्षितिज के किनारे उसकी आँखों के सामने से एक काली-सी चीज एकाएक प्रगट होकर लुप्त हो गयी। हसन का बदन काँप उठा, दिल इतनी तेजी से धड़कने लगा, कि उसकी गति स्पष्ट सुनायी दे रही थी। उसका सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया। वह अपने आप से कहने लगा—अफसोस, कोई भी काम न कर सका और दुश्मन के हाथ में पड़ गया। खुद पकड़ा गया और बच्चों के बचाने की कोई तदबीर न कर सका।

थोड़ी देर की प्रतीक्षा के बाद हसन ने देखा, कि दुश्मन का कहीं पता नहीं। वह धीरे-से अपनी जगह से उठकर टीले के किनारे गया। जैसे ही वह वहाँ पहुँचा, एक कालिमा सामने आयी। हसन के होश उड़ गये और वह लड़खड़ाकर जमीन पर गिरने लगा, किन्तु इसी बीच उसे मालूम हुआ कि यह कालिमा चील्ह है, जो उसके आने पर उड़ गयी। हसन अपने दिल में बहुत झुँझलाया। चील्ह आकाश में उड़कर चक्कर काटने लगी, उसकी छाया भी हसन के चारों ओर चक्कर काटने लगी।

अब हसन को समझ में आया, कि पहले भी जो कालिमा सामने प्रकट होकर लुप्त हो गयी थी, वह यही छाया थी।

हसन को दुबारा हिम्मत हुई। उसने चारों ओर नजर दौड़ाकर देखा, किन्तु चील्ह के अतिरिक्त भूमि और आकाश में वहाँ कोई दूसरी चीज दिखलाई नहीं पड़ी। चील्ह भी अब लुप्त हो चुकी थी। हसन ने अपने इस अकारण भय के लिये अपने आप को खूब फटकारा। और फिर गर्व से पग रखते मरुभूमि को चारों ओर से देखा। उसे अब खूब भूख लग आयी थी। वह अपने दिल में कह रहा

था—"अफसोस ! एक टुकड़ा रोटी और एक सुराही पानी साथ न लेता आया।" हसन अब अनागत दुश्मनों के साथ वीरतापूर्वक लड़ने के लिये तैयार था, किन्तु इस दुर्दम दुश्मन भूख से लड़ने की शक्ति न रखता था। मरुभूमि निर्जल और निर्वनस्पति थी। वसन्ती घासें कब की सूख चुकी थीं, इसलिये आँखों को शीतल करनेवाली हरयाली का कहीं पता न था। हसन बाग लौटने के लिये बाध्य हुआ, जिसमें वहाँ जाकर मेवा जमा करने का काम भी देखे और पेट-पूजा करके फिर पहरेदारी के लिये आये। उसने फिर एक बार चारों ओर नजर दौड़ायी, फिर वह निश्चिन्त हो बाग की ओर लौट गया।

३

नीड़ उजड़ गया

स्त्रियों और लड़कियों ने खूब काम किया। दोपहर का वक्त आ चला। उन्हें भूख और थकावट मालूम होने लगी। कमर अकड़ गयी। हाथ और पंजे सुस्त हो गये। कुछ निर्बल स्त्रियाँ तो वृक्ष की छाया में लेट भी गयी। यह रोटी खाने और आराम करने का समय था, लेकिन परिवार के स्वामी हसन का कहीं पता न था। बिना कुछ कहे सुने ही वह न जाने कहाँ चला गया था। "वाय अजब ! वह कहाँ चले गये ? हे अल्ला ! उनपर कोई आफत न आवे। हे खुदा ! कोई असगुन न हो।" इस तरह के विचार हसन की पत्नी के मन में बार-बार उठ रहे थे। इसी समय हसन आ गया। पत्नी ने यह कहते उसका स्वागत किया—"हाँ, ददेश ! तुम्हें क्या हो गया ? कहाँ चले गये थे ? खुदा बचाये। शैतान न जाने क्या-क्या दुर्विचार दिल में डाल रहा था। और थोड़ी देर न आते, तो दिल दो टूक हो जाता।"

—क्या हो गया ?—हसन ने जवाब दिया—शाहमर्दा के बाग में गया था। वहाँ उससे बातचीत कर रहा था।

रअना ने बीच में बोलते हुए कहा—जब चचा के पास रहीमदाद-जैसा जबर्दस्त कमाऊ पुत्र है तो उनको हर जगह जाने की छुट्टी है। रअना ने हसन की ओर मुँह करके फिर कहा—आप रहीमदाद से "थका नहीं, शाबाश" कहिये। इसने आज अपने बाप की तरह काम किया।

—बारकल्ला—कहते हसन ने रहीमदाद पर दृष्टि डाल—शाबास, बेटे आ, हम दोनों साथ दस्तरखान पर बैठें। आज मेरे हिस्से की रोटी भी तू खा, क्योंकि तूने ही मेरे हिस्से का भी काम किया है।

—रोटी की बात न करें—रअना ने कहा—आपका बेटा लज्जित होगा! आज ही तो उसने स्वतन्त्रतापूर्वक रोटी खायी। एक आलू झोले में पड़ता, तो दूसरा रोटी के साथ पेट में जाता।

रहीमदाद मा की पहली बात को सुनकर फूलकर कुप्पा होने लगा था, लेकिन रोटी की बात ने उसे लज्जित कर दिया और वह एक वृक्ष की आड़ में छिप गया। आलू के वृक्षों के नीचे हरे-हरे कालीन-जैसी हरी घासों का फर्श था, उसी पर स्त्रियाँ और लड़कियाँ अर्धवृत्त में एक जानु गिराये बैठ गईं। उनके सामने किन्तु थोड़ा हटकर एक वृक्ष पर तलवार और बन्दूक लटका उसीके सहारे हसन भी बैठ गया। उसकी पत्नी ने एक रूमाल में रोटी और एक गुच्छा अंगूर लाकर उसके सामने रख दिया। स्त्री-बच्चों ने लोई के दस्तरखान को फैलाकर रोटियाँ तोड़ अंगूर के साथ खाना शुरू किया।

अभी हसन ने रोटी की तरफ हाथ न बढ़ाया था, कि अपने से चंद कदम दूर ऊपर से सूख गये एक वृक्ष पर बैठी चिड़िया की कर्कश आवाज सुनी। स्त्रियाँ इस आवाज को असगुन समझ भयभीत हो गयीं। हसन ने बड़ी फुर्ती से छूरे को म्यान से निकाल एक लकड़ी काटकर चिड़िया पर फेंकना चाहा, किन्तु इससे पहले ही चिड़िया उड़ भागी थी। असगुनी चिड़िया को न मार सकने के लिये अफसोस खाते हसन उसकी ओर दौड़ा। इसी समय उसकी दृष्टि तुर्कमानों की लम्बे बालों-वाली काली टोपियों पर पड़ी, जो कि बाग से बाहर दीवार के किनारे पाँती से खड़ी थीं। उन्हें देख हसन को काठ मार गया और पहले के सारे वीरतापूर्ण संकल्प तथा मुकाबिला करने की सारी तदबीरें हवा हो गयीं। बचपन के वक्त दूसरे लड़कों की तरह हसन को भी रोने या ऊधम मचाने के समय बहुधा "चुप, चुप तुर्कमान आया; यदि चुप न होगा तो तुझे तुर्कमान के पास भेज दूँगी" कहकर डराया गया था। हरसाल तुर्कमान लूट-मार करने के लिये आते और कभी अपने पड़ोसी तथा कभी गाँव के पड़ोसी उनके शिकार बनते। हसन पहले से ही बहुत भयभीत था। पिछले साल तो उसके अपने परिवार पर ही आफत आयी, फिर उसके भय का क्या कहना? १०-१५ काली टोपीवाले सिरों को देखते ही उसका काम

तमाम हो गया। अब वह अपने घर का सरदार नहीं बल्कि एक बंदी था। मानो, अभी ही उसे बुखारा, समरकन्द या किसी दूसरे शहर में ले जा के बेंच चुके थे। उसके परिवार की स्त्रियों और बच्चों को भी दुनिया में हर तरफ ले जाकर दासी और दास बना चुके थे, और अपरिचित हाथों में पड़े उनसे अपनी शक्ति से अधिक कठिन काम लिये जा रहे थे।

इसी समय पीठ की ओर से आवाज आयी जिससे रुस्तम और सोहराब की युद्ध-कहानियों में वर्णित घटना की भाँति भूमि और आकाश काँपने लगे। कोई बोल रहा था—"एक दूसरे के हाथों को बाँधो। मुँह से आवाज न निकालो, नहीं तो तुम सारे मारे जाओगे।"

यह आवाज काठ मारे हसन पर बिजली की तरह पड़ी। उसने एकाएक अपने पीछे की ओर मुड़कर देखा। ५०-६० कदम पर एक तुर्कमान खड़ा था, जिसका शरीर लम्बा, कमर पतली, आयु प्रौढ़, दाढ़ी सफेद-काली, मुख, आँख और भौंहें काली और मूँछें बिल्कुल कटी थीं। तुर्कमान के हाथ में नंगी तलवार, कंधे पर बंदूक और कमरबंद में रस्सी लिपटी हुई थी। वह अपने बायें हाथ को कमर से बंधे बड़े खंजर के कब्जे पर रक्खे हसन की ओर परिहासपूर्ण निगाह से देख रहा था। हसन अपनी पीठ की ओर चुपचाप देखने के अतिरिक्त जरा भी हिलने-डुलने की शक्ति न रखता था। वह मोमबत्ती से चूते मोम की तरह तुरन्त जम गया था। तुर्कमान ने साँवले ओठों के अन्दर सफेद दाँतों को दिखलाते पहले से भी अधिक भीषण स्वर में कहा—"क्या तूने नहीं सुना? क्या कान बहरे हैं? दूसरों को बाँध और अपने को भी। देख, मैं तुझसे कह रहा हूँ!" और उसने अपने खंजर को हसन के ऊपर चलाते-जैसे हाथ में तान लिया। हसन कब का अपने को बंदी स्वीकार कर चुका था। किन्तु तुर्कमान की दूसरी आवाज और तलवार की गति ने मृत्यु की मूर्ति को उसके सामने ला रखा। मृत्यु साकार सामने खड़ी थी। उससे छुट्टी पाने के लिये वह अपनी सारी शक्ति लगाकर केवल इतना कह सका—"एशान सरदार! मुझमें जरा भी शक्ति नहीं रह गयी है। कृपा करके स्वयं बाँध दीजिये।"

—ऐसा ही सही—तुर्कमान ने कहा—अपने पंजे को आस्तीनों से निकालकर हाथों को ऊपर उठाये इधर आ।

हसन काँपते हुए तुर्कमान के पास गया। तुर्कमान ने कमरबंद में लगी रस्सियों

में से एक को निकालकर उसके हाथों को खूब मजबूती से बाँध दिया, फिर बंदूक के कुन्दे से एक चोट लगा उसे जमीन पर लेटा दिया। स्त्रियाँ और बच्चे भेड़िये से भयभीत खरगोश की तरह सहमकर दरख्तों के पीछे छिप गये थे। तुर्कमान ने उनके रूमालों से उनके हाथों को बाँध दिया और फिर "मुँह से जरा भी आवाज न निकालना। यदि जरा भी चिल्लाये या भागने की कोशिश की, तो सभी मारे जाओगे। जब तक मैं नहीं आऊँ तब तक चुपचाप लेटे रहो" कहकर कड़ी आज्ञा दे वह बाग से बाहर चला गया।

आध घंटा बाद तुर्कमान मुस्कुराते किन्तु दांतों को दबाये बंदियों के पास आया। इस बीच बंदी एक दूसरे से दिल की पीड़ा कहते आनेवाले संकट के भय से हाय-हाय कर रहे थे। तुर्कमान "बदमाशों! क्या मैंने तुम्हें चुप रहने को नहीं कहा था" कहते म्यान से खड्ग को खींचकर बंदियों के ऊपर घुमाने लगा। वृक्षों के पत्तों से छनकर कृपाण-धारा पर प्रतिफलित सूर्य-किरणों की चमक को देखकर रहीमदाद चिल्ला उठा। तुर्कमान का मिजाज पहले से ही गर्म था, बच्चे के इस अविनय ने उसे और भड़का दिया। एक छलांग में बच्चे के पास पहुँच उसने "तू चुप न होगा? अभी तेरा सिर काटता हूँ" कहते खड्ग को बच्चे की गर्दन के पास किया। बच्चा कहीं इसे सूखी धमकी न समझ ले, इसलिये खड्ग की नोक से बच्चे के कोमल कान के मांस-गोश्त को काट दिया और रक्त-रंजित खड्ग-शिर को बच्चे को दिखलाते हुए कहा—"देखता है न यह तेरा खून है। अभी थोड़ा ही निकाला है। यदि फिर बात नहीं सुनेगा, तो सारा खून निकाल दूँगा और तू मर जायगा।" फिर बन्दी की ओर निगाह करके "उठो, आगे चलो, बाग के बाहर चलो" कहते हुकुम दिया। बंदी खड़े हो गये। जो भय के मारे उठ न सके, उन्हें तुर्कमान ने अपने जूते की ठोकर और खड्ग की नोक से खड़ा किया।

बंदी बाग से बाहर आये। वहाँ दूसरे बागों से लाये हाथ-बंधे १०-१२ और बंदी भी खड़े थे। दरख्तों के पास पाँती से कितने ही तुर्कमानी घोड़े बंधे थे, जिनकी गर्दन लम्बी, पैर लम्बे, सीने चौड़े और कटि क्षीण थी। उनकी जीनों पर काठियों की जगह चारजामे बँधे थे। वहाँ दो नौजवान तुर्कमान खड़े थे। उनमें से एक विशाल जिरन्दी तुर्कमान घोड़े की बाग थामे हुए था। हसन-परिवार को पकड़कर लानेवाला तुर्कमान इसी घोड़े पर सवार हुआ। उसके चढ़ने के बाद जवान ने उससे पूछा—"आगा सरदार! टोपियों को जमा कर लूँ क्या?"

—हौव्वा, जमा करले—कहकर सरदार ने जवाब दिया। सरदार ने अपनी दो अंगुलियों को मुह में डाल चारों ओर निगाह करके दो बार जोर की सीटी बजायी, फिर सामने खड़े जवान से कहा—बिरादर! घोड़ों को खोल और गुलामों को उनकी पीठ पर बाँध।

जवान ने घोड़ों को खोल एक-एक पर दो-दो तीन-तीन करके दासों को लाद दिया। बकरी के बालों की रस्सियों से उनके पैरों को घोड़ों की छाती के नीचे दृढ़ता से बाँध दिया। हसन भी इसी तरह एक घोड़े पर बँधा था। घर और जन्मभूमि से सदा के लिये बिछोह का समय आ गया था। उसने अन्तिम बार बाग की ओर शोकपूर्ण निगाह डाली। तुर्कमान की खङ्ग के डर से आवाज नहीं निकाल सकता था, किन्तु मन-ही-मन अन्तिम सलाम, विदाई का सलाम उसने अपने बाग को दिया और उसके वृक्षों और दीवारों यहाँ तक कि दीवारों पर के कांटों को भी हसरत भरी निगाह से देखा। इसी समय उसकी आँखें उस जवान तुर्कमान पर पड़ीं, जो दीवार के कांटों पर रख छोड़ी तुर्कमानी टोपियों को उतारकर खुर्जी में रख रहा था। हसन को अब समझ में आया, कि जो टोपियाँ पहले-पहल उसके सामने आयी थीं, वे बिना आदमी की खाली टोपियाँ थीं।

सीटी की आवाज सुनकर गाँव की तरफ से दो और तजन की तरफ से दो इस प्रकार चार और तुर्कमान आ पहुँचे। उनमें से एक ने सरदार से कहा—आगा सरदार! हिरात की ओर सब ठीक है। सेना या भालावाले आदमियों का कोई पता नहीं।

और दूसरे ने कहा—तजन का रास्ता भी अकंटक है। किसी कारवाँ या आने जानेवाले का पता नहीं।

ये रक्षक थे, जिन्हें सरदार ने हिरात और तजन के रास्ते पर नजर रखने के लिये भेजा था, क्योंकि हिरात की ओर से सेना या भालेवाले लोग आ जाते या तजन की ओर से कारवाँ आ जाता, तो इन शिकारियों के काम में बाधा पड़ती। सरकारी सेना और भालेवालों से भी अधिक भय की बात थी कारवाँ का आना। उस जमाने में लोग लाठी-भाला लेकर चलते थे और सेना खंजर, तलवार या पतीलावाली बंदूक लेकर; किन्तु कारवाँ सदा छोटी-छोटी तोपों, तमंचा और फिरंगी बन्दूकों से हथियारबन्द होकर यात्रा करता था। इसीलिये सरदार ने अपनी कुल सात आदमियों की जमात में से चार को रखवाली पर भेज दिया था, बाकी तीन आदमियों से चालाकी से काम करके २० बंदियों को हाथ लगाया था।

सरदार ने एक बार फिर आगे-पीछे नजर दौड़ायी, फिर आज्ञा दी—"जवानों चलो।"

दो सवारों ने पाँच-पाँच की दो पांतियों में बंदियों से लदे घोड़ों को हाँका। सरदार आगे-आगे और बंदियों की दोनों बगल में दो-दो जवान चल रहे थे। उन्होंने अपने घोड़ों को दौड़ाना शुरू किया। अफगानी सेना या हथियारबंद कारवाँ न आ जाय, इसके लिये एक-दो मंजिल तक घोड़ों को दौड़ाना जरूरी था। तुर्कमानों के घोड़े उस भूमि में दौड़ने के आदी थे, इसीलिये बिना हुक्म या कोड़े के बेतहाशा दौड़ रहे थे। दो-तीन घंटा दौड़ने के बाद घोड़ों पर थकावट का प्रभाव पड़ने लगा। क्यों न होता, मौसिम गरम था, बालू तपी थी, पानी और हरियाली का कहीं नाम न था। थके घोड़ों के मुँह से निकलकर लपलपाती जीभ अंगार पर रखे मांस-खण्ड की तरह धुआं दे रही थी। घोड़े सबसे अधिक प्यास से बेचैन थे, तो भी वे सर्पट दौड़े जा रहे थे। मानों, वे जानते थे, कि मंजिल थोड़ी ही दूर पर है। किन्तु यहाँ चारों ओर असीम मरुकान्तार फैला हुआ था। सब तरफ बालुका-राशि थी, कहीं मंजिल का पता नहीं था। यद्यपि दूर कोई चीज जलाशय की तरह तरंगित जान पड़ती थी, किन्तु अनुभवी मरुयात्री जानते हैं, कि वह मरीचिका नहीं, मृगमरीचिका है, मुक्ति का तट नहीं बल्कि अनुभवहीन यात्री के लिये मृत्यु का बुलावा है। तुर्कमानों के अनुभवी घोड़े भी इस बात को जानते थे।

सूर्य अस्त हो चुका था। भूमि पर अंधकार फैल रहा था। चंद्रमा अभी क्षितिज से ऊपर नहीं आया था। घोड़े थकावट से चूर-चूर थे। रात के इसी अंधेरे में सरदार का घोड़ा मार्ग से एक तरफ हो मिट्टी के एक ढूहे के पास जा के खड़ा हो गया। दूसरे घोड़े भी जल्दी-जल्दी वहाँ जा एक दूसरे से सटकर खड़े हो भूमि पर पैर मारने लगे। एक जवान घोड़े से उतर पड़ा। उसने खुर्जी में से छोटे बेंट के एक बेल्चे को निकालकर उससे मिट्टी को हटाया और भूमि को चार हाथ गहरा खोदा। वहाँ से मिट्टी में लिपटी कोई सफेद चीज निकली। जवान ने बेलचे को एक तरफ रख दिया और म्यान से कटार को निकालकर उस चीज को खरबूजे की फाँक की तरह काटना शुरू किया। दूसरे जवान ने एक-एक फाँक को जीभ निकाले मुँह बाये घोड़ों के मुंह में एक-एक करके फेंका। उसे खा लेने पर घोड़े मानो पेट भरकर पानी पी आराम कर चुके हों, आगे दौड़ने के लिये तैयार थे। वह चीज

दुम्बे की मोटी दुम थी, जिसमें कच्ची चरबी भरी थी। अनुभवी तुर्कमान डाकू हिरात जाते समय हर तीन-चार घंटे के रास्ते पर इस चर्बी को मिट्टी में दबा गये थे। तुर्कमानों की राय में दौड़ कर आये घोड़ों को पानी देना खतरनाक है, लेकिन दुम्बे की चर्बी का एक टुकड़ा उनकी प्यास और भूख दोनों की दवा थी। जिन घोड़ों ने ऐसी बहुत-सी यात्राएँ की थीं, वे इस बात को जानते थे और यह भी कि वह चीज उन्हें कहाँ मिलेगी। इसीलिये सरदार के घोड़े उसी तरफ मुंह करके दौड़े और वहाँ जल्द पहुँचकर प्यास और थकावट दूर करने में सफल हुए। ताजा हो जाने के बाद फिर घोड़ों ने दौड़ना शुरू किया। रास्ते में कितनी ही बार उन्हें घास-दाना-पानी की जगह दुम्बे के पूँछ की चर्बी के टुकड़े खाने को मिले।

४

खलीफा का अन्तःपुर

किलिच् खलीफा की रबात में स्त्रियाँ कालीन बुनने में लगी थीं, किन्तु बीबी चारगुल का हाथ चल नहीं रहा था; बार-बार नली हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ती और सूत में घास-तिनके लिपट जाते। दूसरी बुननेवाली औरत ने उसकी ओर निगाह करके कहा—चारगुल, तुझे क्या हुआ है? क्यों तेरा काम आगे नहीं बढ़ रहा है?

—क्या तुझे नहीं मालूम, कि मेरे और मेरी-जैसी निःसन्तान सूफी बनायी स्त्रियों के सिर पर क्या बीतती है? आज जरांगुल और तूतीगुल पर जो संकट आया, कल उसी को मेरे सिर पर आने से कौन रोक सकता है? मुझे भी उसी तरह निकाल दिया जायगा।

—तू हुनर जाननेवाली कमाऊ स्त्री है। खलीफा कभी तुझे निकालना नहीं चाहेगा।

—आज जब कि सारे पशु मर चुके हैं और मारी की मरुभूमि में कहीं एक मुट्ठी ऊन नहीं मिलता; मेरे हुनर से खलीफा को क्या फायदा? बीबी चारगुल ने कुछ क्षण चुप रहकर कहा—अगर देश खुशहाल रहता, तो निकाले जाने पर भी मुझे कोई चिन्ता नहीं होती। पास में जो हुनर है, उससे एक कौर रोटी कहीं भी

पा सकती। लेकिन यदि इसी समय इसने हमें निकाल बाहर कर दिया, तो जो रूखे-सूखे दो टुकड़े यहाँ मिल जाते हैं, उनसे भी वंचित होना पड़ेगा और भूख से मरने के सिवाय कोई चारा न रह जायेगा।

—तुझे खलीफा ने कितने तंको पर खरीदा था? बात को दूसरी ओर फेरते दूसरी स्त्री ने पूछा।

—पाँच हजार तंका और एक ऊँट पर—चारगुल ने जवाब दिया।

—खलीफा के लिये बड़ी महँगी चीज, क्यों?—खलीफा का पक्ष लेते हुए दूसरी स्त्री ने कहा।

—मेरे महँगे होने से मुझे क्या लाभ और खलीफा को क्या हानि? बाप मुझे अनाथ छोड़कर मरा, चाचा ने मुझे खलीफा के हाथ बेंच दिया। उस समय मैं पन्द्रह साल की थी और अब पैंतीस की। मैंने खलीफा के लिये २० साल तक मर-मरकर काम किया। हर साल कम-से-कम हजार तंके का काम करके खलीफा को दिया। इस तरह २० साल में खलीफा ने मुझसे बीस हजार तंके का लाभ उठाया।

चारगुल ने वेदना-पूर्ण हृदय से ठंडी सांस भरकर जमीन की ओर निगाह कर आँखों में भर आये अश्रु-विंदुओं को आस्तीन से पोंछकर फिर बात शुरू की—बीस साल काम कर-कर के मरती रही। इसमें सिर्फ पाँच साल खलीफा की निकाही (व्याहता) रही। मेरे २० साल की होने पर खलीफा ने दूसरी स्त्री खरीदी और मुझे सूफी बना दिया। तुझे तो एक ही साल रखकर सूफी बना दिया, किंतु तू सौभाग्य-शाली है, क्योंकि तेरे हसन-हुसेन दो पुत्र हैं। तुझे निकाले जाने का भय नहीं। पाँच साल में मेरे दो पुत्र हुए थे, किंतु दोनों एक ही दिन महामारी से मर गये। मैं अपुत्रा बन गयी। अपुत्रा स्त्री अन्त में निकाली जाती है। मैं भी निकाल दी जाऊँगी—कहते-कहते चारगुल रो पड़ी।

इसी समय दूरवाले काले घर से एक बुढ़िया ने निकलकर आवाज दी—"चमन बाग! चमन बाग! ओ चमन बाग! इधर आ।" और वह फिर घर की ओर चली गयी। चमनबाग उठकर उस घर के अन्दर गयी। बुढ़िया के मुख पर भय के चिह्न दिखाई पड़ रहे थे। वह कपाल पर हाथ रखे, भूमि पर नजर गड़ाये खड़ी थी। चमनबाग के आ जाने पर भी उसका ध्यान कहीं दूसरी ओर था। बुढ़िया को मुँह न खोलते देख चमनबाग ने पूछा—कमरी बीबी! मुझे क्यों बुलाया? क्या बात है? सब ठीक है न?

—खलीफा के बारे में सब ठीक है—बुढ़िया ने कपाल से हाथ हटाये बिना चमनबाग की ओर कुछ देर देखकर फिर कहा—किंतु मेरा सारा ध्यान अपने बेटों की ओर लगा है। उनकी कोई खबर नहीं मिली। हिसाब के अनुसार उन्हें पिछले सप्ताह आ जाना चाहिए था। क्यों किसी को नहीं भेजा ? क्या हुआ ? क्या किजिल्-बाश (ईरानी शाह) के हाथ में पड़कर शहीद हो गये ? लेकिन ऐसा होने पर भी साथियों में से किसी को आकर खबर देना चाहिये था।

चमनबाग ने कमरी बीबी को चुपचाप ध्यान-मग्न देखकर कहा—मुझे क्यों बुलाया ?

—हाँ, मैं भूल ही जा रही थी। बेटों की चिन्ता के मारे मैं कुछ दिनों से काम की देखभाल नहीं कर सकी। कल बूढ़े ने "इन दिनों बुनाई का काम बहुत पिछड़ा हुआ है" कहकर मुझे बहुत फटकारा और यह भी कहा—"यदि यही अवस्था रही, तो ये सब बिना कुछ काम किए ही खाकर सारे बखार को खाली कर छोड़ेंगी। अब किसी औरत को एक रोटी से ज्यादा न दे। चारगुल को भी जैसे हाथ का काम खतम हो, हटा देना होगा।"

कमरी बीबी ने थोड़ी देर चुप रहकर फिर कहा—अब मेरा होश-हवास गुम है। मेरी सारी आशा-भरोसा बेटों पर है। अब तू मेरी आँख बनकर काम की देखभाल कर। चारगुल को 'नहीं निकालेंगे' कहकर हौसला दिला उससे काम ले। इसी समय जाकर साहिबजमाल और यनगाकगुल को मेरे पास भेज दे।

दस-पन्द्रह मिनट बाद दो षोडशियाँ अन्दर आयीं। कमरी बीबी प्रवासी पुत्रों की पोशाकों को बोगचे से खोलकर देख रही थी। दोनों उसे सलाम करके खड़ी हो गयीं।

—बैठो जवानियों ! बैठ साहिबजमाल, बैठ यनगाकगुल—कहकर कमरी बीबी ने उन्हें बैठने को कहा। लड़कियाँ बेमन से कमरी बीबी के सामने की ओर हो आधे चेहरे को फेर कर निगाह को जमीन पर डाले एक-जानु बैठ गयीं। कमरी बीबी ने उनकी ओर थोड़ी देर देखकर कहा—मेरी ओर निगाह करो।

लेकिन मुरझाये चेहरे उधर नहीं फिरे, न आँसू भरी आँखें उधर घूमीं।

—मेरी तरफ निगाह करो, कह रही हूँ—कहते हुए कमरी बीबी ने अपने हुक्म को दुहराया, किन्तु लड़कियाँ अब भी टससे मस न हुईं।

—खलीफा ने तुम्हें कितने तंकों में खरीदा है ?

कमरी बीवी को इस सवाल का भी जवाब नहीं मिला। तब उसने स्वयं उस सवाल का जवाब देना शुरू किया :

—तुम्हारे खरीदने पर खलीफा ने पंद्रह हजार तंका खर्च किया। इसके अतिरिक्त तुम्हारे भोजन-वस्त्र और दूसरी चीजों पर ढेर-के-ढेर तंके खर्च हो रहे हैं। इसे अच्छी तरह समझलो, कि खलीफा ने तुम्हारे ऊपर बीवी बनाने के लिये नहीं खर्चा। पचहत्तर साल की उसकी उमर है। उसके पास आठ-आठ औरतें हैं। अब्दुल और कुशात-जैसे चतुर, बहादुर सुपुत्र और गुलजमाल तथा जोहरा यन्‌गाक-जैसी वयस्का पुत्रियाँ और छोटे-बड़े पाँच पोते हैं। उनको जवान बीबी की जरूरत न थी। खलीफाने काम कराने और कालीन बुनवाने के लिये तुम्हें खरीदा और तुम्हारी अवस्था यह है, कि दो महीने हो गये और एक दो-गजी जाय-नमाज (पूजासनी) का कालीचा भी बुनकर तयार न कर सकी। यदि इसी तरह काम करोगी, तो तुम्हारा काम तुम्हारे खाने के खर्च के लिये भी पूरा न होगा।

लड़कियों ने कमरी बीवी की इन सारी लुच्चक और कटु बातों को मानो सुना नहींही। अब भी उन्होंने उसकी तरफ दृष्टि नहीं डाली। कमरी बीबी ने अपनी बात का कोई प्रभाव न देखकर यह कहते हुए उन्हें विदा किया—"जाओ अच्छी तरह काम करो, नहीं तो खलीफा तुम्हें दुरुस्त करने का उपाय जानता है।"

घर से बाहर निकलने पर साहेबजमाल ने कहा—भूमि तेरे खलीफा को निगल जाये।

—और तेरी-जैसी उसकी सरकार बीबी को भी—यन्‌गाकगुल ने कहा।

५

गाजियों का स्वागत

किलिच् खलीफा की बड़ी पत्नी कमरी बीबी बहुत चिन्ता में थी। उसके दोनों बेटे अब्दुल और कुशात अपने चचा ओराज सरदार के साथ अस्राबाद की ओर गये थे, किन्तु उनकी कोई खबर नहीं मिली। कमरी बीबी की बहुएँ, लड़कियाँ, पोते और ओराज सरदार के बीबी-बच्चे भी चिन्तित थे। यात्रा पर गये आदमियों के बन्धु-बान्धवों में केवल किलिच् खलीफा ही ऐसा था, जो अब

भी पहले की भाँति नमाज-आसनी पर मक्का की ओर मुँह किये बैठे शान्त भाव से माला फेरता रहता था। उसने दुनिया देखी थी। संसार के कड़वे-मीठे मजे चखे थे, बहुत-से तूफान और तकलीफें झेली थीं। अपने समय में उसने कभी एक सप्ताह के काम को तीन रोज में और कभी महीनों में नहीं पूरा कर पाया। किन्तु जिस काम को भी उसने हाथ में लिया, उसे जल्दी या देर में अवश्य पूरा किया था। उसने अपने सारे गुणों को भाई और बेटों को सिखाया था और उनसे वैसा ही करने की आशा रखता था। उसे पूरा विश्वास था कि वह खाली हाथ न लौटेंगे। आज नहीं तो कल हाथ-गर्दन बँधे झुण्ड के झुण्ड दास-दासियों, भेंड़-बकरियों के रेवड़ों और लदे ऊँटों की पाँतियों के साथ लौटेंगे। अब्दुरहमान सरदार भी उन्हीं पुरुष-सिंहों में है, जो किसी यात्रा से छूछे हाथ लौटना नहीं जानते। वह जरूर अपने भाग्यके अनुसार चीजों को लेकर आयेगा। ऐसे कामों के लिये चिंता करना मर्दों का काम नहीं।

किलिच् खलीफा जैसे स्वयं इन बातों की चिन्ता नहीं करता था, वैसे ही चाहता था कि दूसरे भी न करें। किन्तु औरतें खलीफा के सामने अपने भावों को न प्रगट करते भी चिन्ता में डूबी रहती थीं और खलीफा के शाहमुराद के समय के अभियानों की स्मृति साठ साला कम्बर बाबा को दिन में कई बार राह देखने के लिये मरुभूमि में भेजतीं। छोटा बच्चा कुमुस्चा रबात के फाटक के पास कम्बर बाबा के रास्ते पर आँख गड़ाये खड़ा था। बाबा को देखते ही वह दौड़कर बड़ी माँ के पास जा बोला—"कम्बर बाबा आ रहा है, दौड़ा-दौड़ा आ रहा है, जान पड़ता है, कोई सुसमाचार ला रहा है।" केमरी बीबी ने ऐसी अच्छी खबर लाने के लिये पहले उसका मुँह चूमा, फिर वह अपनी बेटियों, बहुओं और पोतियों को लिए रबात के फाटक पर पहुँची। कम्बर अभी कुछ दूर ही था तभी उससे पूछा—हाँ, हाँ, क्या खबर है? सब खैरियत तो है?

—उ-उ-स-स जी-ी-बा-ा-खा-ने (मीनार) के ऊ-ऊ-पर—हाँफते-हाँफते कम्बर बाबा ने कहा—मैं खड़ा था। देखा उस (ईरान की ओर संकेत करके) ओर से और इस (हिरात की ओर हाथ से संकेत करके) ओर से भी धूल उड़ रही है। ईरान की ओर से उठी धूल शाहमुराद सरिंग के अभियानों की धूल की तरह सारी मरुभूमि पर छायी हुई है। जान पड़ता है, खानजादे (राजकुमार) सारे ईरान को हाँके ला रहे हैं।

कमरी बीबी की प्रसन्नता की सीमा न रही। वह बीच ही में बात काटकर कम्बर को साथ लिए अपने पति की कोठरी में गयी और कम्बर की बतलायी सारी बातों को कह सुनाया। किलिच् खलीफा मानो पत्थर की मूर्ति था, मानो अब भी इसके भाव पहले-जैसे थे। इस समाचार से इतनी हँसी-खुशी प्रगट करने की आवश्यकता नहीं, यही प्रगट करने के लिये बीबी की तरफ देखकर उसने अपने ललाट पर एक और बल चढ़ा लिया।

कमरी बीबी पति की इस बेरुखी को देख फिर आकर फाटक पर खड़ी हुई। ईरान की ओर की धूल अब और समीप आ गयी थी। वहाँ ५०० के करीब भेड़ें, भार से लदे २० ऊँट, घोड़ों पर उनके पेट के पास पैर बँधे २० दास-दासियाँ दिखायी पड़ीं। इस लक्ष्मी को लानेवाले थे कमरी बीबी के सुपुत्र अब्दुल और कुशात तथा उनका चचा ओराज सरदार। हिरात की ओर से आनेवाले बहादुर भी इसी समय समीप आ पहुँचे—यह अब्दुरहमान सरदार और उसके साथी थे।

खलीफा अब भी नमाज-आसनी पर ध्यानावस्थित बैठा था। कौन जानता है, वह जन्नत (स्वर्ग) की हूरों-गिल्मानों का ख्याल करके मन-ही-मन उनका स्वाद ले रहा था; या यह सोच रहा था कि कैसे लूट के माल और बंदियों को बाँटा जाय, जिसमें सबसे अधिक माल अपने हिस्से में आवे, और किन बाजारों में दासों को बेंचने के लिये भेजा जाय, जिसमें दाम ज्यादा मिले।

× × × ×

भेड़ें मारी गयीं, देगें बैठायी गयीं, तनूर के चूल्हे जलाये गये, ओठों में चिपकनेवाला घृतपूर्ण शोरबा और हाथ जलानेवाली गरमागरम रोटियाँ तैयार की गयीं। दूध पीनेवाले भेड़ के बच्चों को मार चमड़ा खींच सिर के साथ उनके सारे शरीर को तनूर की भाँति जमीन में खोदे तथा दहकते गड्ढों में बंदकर उनका बिरयान बनाया गया। हर जगह घी-ही-घी था, देग में भी घी, चमचा में भी घी। दूसरी ओर भेड़शाला के हौज में दासों-दासियों को ले जाकर अमीर बुखारा के बंदी-गृह की भाँति एक साँकल में पाँच-पाँच, दस-दस कर के बाँधकर लिटा दिया गया। "गाजी (किलिच् खलीफा की ओर से डाकुओं को यही उपाधि मिली थी) पेट अफरने तक मांस खा, सूप पीकर आराम से बैठे थे। लेकिन किसी को ख्याल न आया, कि अभागे बंदी भी भूखे-प्यासे हैं। यदि कम्बर बाबा ने दया करके जूठे रोटी के टुकड़ों को एक मसक पानी के साथ

उन्हें न दिया होता, तो अवश्य उनमें से कुछ मृत्यु का मुख देखे बिना न रहते। गाजियों के लिये आज ईद थी। उन्होंने इस रात को हँसते-खाते बिताया। विजय की खबर सुनकर एक बख्शी (भाट) वहाँ पहुँच गया, उसने उनके ऊपर एक गीत बनाया और उसे अपने दुम्बुरुक पर गाना शुरू किया :

किलिच् सूफी के पुत्र बहादुर हैं * वे सुवर्ण, मोती और जवाहर हैं।
हर मैदान में जौहर दिखलाते हैं * उनके शत्रु आतंकित हो मरते हैं।
अब्दूल,कुशात ओराज आगाने सफर किया * अस्त्राबाद की ओर गुजर किया।
दास-दासियों को एक हमले में * उनके देश और धन से अलग किया।
अब्दु रहमान सरदार युद्ध-वीर है * मारी, बंदी तजन उसका घर है।
यदि युद्ध में शत्रुओं पर चढ़ता है * एक दस, सौ उसके लिये एक-सा है।
किलिच् सूफी की दुआ से सफर किया * शत्रु के खेत औ घर को चौपट किया।
हे हिरात देश के कबूतर, फिर न उड़ो * अब्दुरहमान सरदार उधर गया है।

बख्शी के स्तुति-पाठ से मंडली बहुत खुश हुई। किलिच् खलीफा ने उसे एक भेड़ इनाम दी और अब्दुरहमान ने रहीमदाद की तीन साला बहिन जेबा को प्रदान किया।

६

दासों का बँटवारा

गाजियों ने कल आधी रात हँसी-गप में बितायी थी, आज सूर्योदय के बाद उनकी नींद खुली। उन्होंने चाय पी फिर मीठी चाय के साथ भाँग (कोकनार) के चूरन का गफ्फा लगाया, यखनी के मांस को घी में पकी रोटियों के साथ खाया। तब लूट के माल और बंदियों की बाँट का काम आरम्भ हुआ। किलिच् सूफी की मदद और प्रचलित प्रथा के अनुसार बँटवारे का काम बिना झगड़ा-झंझट के पूरा हो गया।

अब दो काम बाकी थे : एक तो यह कि बँटे दासों को अलग करके हर एक मालिक के हाथ में सौंपना ; और दूसरा काम था हर एक के लिये अलग-अलग बाजार निश्चित करना, जिसमें एक ही बाजार में अधिक दास-दासी पहुँचकर

बाजार के भाव को गिरा न दें। सबसे हृदयद्रावक दृश्य अब आरंभ हुआ, जब कि पति से पत्नी को, भाइयों से बहनों को और मां-बाप से उनकी सन्तानों को अलग किया जाने लगा। उन्हें मालिकों के हाथ में देना आवश्यक था। बाँट इस तरह की गयी थी, कि पति-पत्नी, भाई-बहन अर्थात् दो नजदीक के सम्बन्धी एक मालिक के हाथ में न जायें; क्योंकि मालिक को छोड़ दूसरे के साथ स्नेह-सम्बन्ध रखनेवाले दास-दासियों की कीमत कम होती है। पति के साथ एक ही मालिक के हाथ पड़ी पत्नी का मूल्य इसलिये कम होता है, कि मालिक उससे पूरा लाभ नहीं उठा सकता।

ये काम वस्तुतः मानव के लिये बहुत कठिन हैं, लेकिन किलिच् खलीफा के 'गाजियों' के लिये वह बिल्कुल आसान था। उनका दिल किसी दूसरी धातु का बना था। ये अभागे जब रोते-कलपते, तो गाजी ठठाकर हंसने लगते। कुछ भी हो निश्चित काम को पूरा किया गया। पतियों से अलग की गयी पत्नियों का क्रन्दन, पत्नियों से अलग किये गये पतियों का मसोसना, मां-बाप के हाथों से छीने गये शिशुओं का तड़पना, हाथ से छीने बच्चों के लिये मां-बाप का आर्त्त स्वर—आँखों ने अश्रु की जगह रक्त बहाया, कण्ठ से आह की जगह आग निकली। यह दृश्य कराकुली भेड़ों के उन बच्चों की याद दिलाता था, जो मातृकुक्षि से निकलते ही (अपने नरम और चमकते चर्म के लिये) मार डाले जाते हैं। अन्तर इतना ही था, कि वह घटना एक मूक पशु पर होती थी, जो कि एक घंटा बाद उसे भूल सकता था और जो आज या कल मारा ही जानेवाला था, लेकिन यहाँ ये अत्याचार मानव-संतान पर हो रहा था, जो हर चीज को समझता और याद रखता है, जिसके हाथों दुनिया की सुख-संपत्ति, जनसाधारण की भलाई के लिये भारी सेवा होने की आशा की जा सकती। और यह सब कुछ उन जालिमों के हाथ से हो रहा था, जो शकल-सूरत में उनसे अन्तर न रखते थे।

'गाजी' अपने बंदियों के करुण-क्रन्दन को हंसी-मजाक करके सुनते रहे। अन्त में इस 'तमाशा' को समाप्त करना भी आवश्यक था। यदि रोदन-क्रन्दन को जबर्दस्ती बंद न किया जाता, तो सब कुछ हारे इन अभागों का रोदन-क्रन्दन मरते दम तक खतम न होता। उसे इस तरह खतम करना था, जिसमें वह फिर न उठे; नहीं तो यदि यही बात बाजार में आरम्भ हुई, तो कोमल-हृदय ग्राहक उन्हें खरीदने को राजी न होते और ग्राहकों के कम हो जाने पर भाव अवश्य गिर जाता।

१. गुलामों का बँटवारा

१—माँ-बाप के हाथों से छीने गये शिशु... (पृष्ठ ३०)

इसीलिये इस 'क्रन्दन-पाठ-सभा' को समाप्त करने की रसम भय-संचार के साथ आरम्भ हुई। अल्पवयस्क बच्चों के कानों को जलाया और फाड़ा गया, उनकी पीठ, जांघ और पैरों पर कोड़े लगाये गये। सरकश दासों की हथेली को चीरकर नमक छिड़काया गया। इस तरह के अत्याचारों से इनके आँसुओं को सुखाया गया और कंठों को बंद किया गया। दूसरी बार आवाज निकालने पर जीभ निकाल लेने या सिर काट डालने की सजा मिलेगी, यह उनको हृदयंगत कर दिया गया। ताकीद की गयी, यदि पति-पत्नी तथा संतान और माता-पिता एक दूसरे से मिलें, तो ऐसा प्रगट करें, मानो वे एक दूसरे को जानते नहीं।

× × ×

कुछ दास-दासी हिरात (अफगानिस्तान) से लूटकर लाये गये थे, जो अधिकतर सुन्नी थे। बुखारा और तुर्किस्तान के दूसरे भागों के बाजारों में सुन्नी दासों का विक्रय निषिद्ध था। बुखारा और अफगानिस्तान की सरकारों के आपसी संधि-पत्र के अनुसार अफगानी प्रजा का क्रय-विक्रय वर्जित था। ईरान से लूटकर लाये दासों के विक्रय में यह भारी अड़चन थी, जिसके लिये कोई रास्ता निकालना आवश्यक था। लेकिन हमारे गाजियों के पास उनका गुरु किलिच् खलीफा जो था, जिसके लिये कोई बात कठिन न थी।

हिराती दासों के नाम बदल दिये गये, उन्हें बाध्य किया गया, कि अपनी मातृभूमि भूल जायें, और उसकी जगह एक प्रसिद्ध ईरानी शहर या गाँव का नाम लें, लेकिन इतने से सारी कठिनाइयाँ दूर नहीं हो जाती थीं। उनके शब्दोच्चारण और धार्मिक रीति-रवाज में भी परिवर्तन करना जरूरी था। इस काम को कंबर बाबा पर छोड़ा गया।

कंबर बाबा ने हिरात के सुन्नी बंदियों को शिया-धर्म की बातें याद कराईं। नये आदमी से मिलने पर जिन वाक्यों के बोलने की अवश्यकता होती है, ऐसे १५-२० वाक्यों को ईरानी उच्चारण के साथ अभ्यास कराया। हाँ, यह काम आसान न था। नये नाम, नई जन्मभूमि, नई धार्मिक बातों और नई मातृभाषा के अभ्यास के लिये कितने ही दिनों की अवश्यकता हुई। कितनों ने हठ करके याद करना नहीं चाहा, और कितनों के लिये नया उच्चारण सीखना असम्भव मालूम हुआ। ऐसे लोगों को मालिकों की ओर से कड़ी भर्त्सना दी गई, कोड़े मारे

गये। ईरानी उच्चारण न सीखने वालों की जीभ दागी गई। सातसाला रहीमदाद के लिये नवीन उच्चारण असम्भव-सा था। उसे धमकाते हुये अब्दुर्रहमान ने कहा—ओ अभागे बच्चे, हठ और बदमाशी न कर। जो बातें सिखलाई जा रही हैं, उन्हें याद कर। भूल गया अपने बाग को, जब तूने मेरी बात न मानी, और मैं तेरा सिर काटने ही वाला था। जल्दी कर। कंबर बाबा जो सिखला रहा है, उसे याद रखने की कोशिश कर।

आठ-दस दिन में हिराती बंदी, चाहे ईरानी-जैसा न सही, किन्तु हर वक्त की बोल-चाल के १५-२० वाक्य ईरानी उच्चारण के अनुसार बोलना सीख गये। सुन्नियों ने पाँच तन 'आली-अबा' और बारह इमामों के नाम याद कर लिये। अब उनके लिये बाजार खुल गये, उनके खरीदार तैयार थे।

घोड़े भी विश्राम करके अब ताजा हो गये थे, 'गाजियों' की भी थकावट दूर हो गई थी। हर आदमी अपने दास-दासी को ले अपने लिये निश्चित बाजार की ओर रवाना हुआ—किसी ने खीवा का रास्ता लिया, किसी ने बुखारा का, कोई करशी की ओर गया और कोई शहरसब्ज की ओर। बखशी को रहीमदाद की तीन-साला बहिन जेबा इनाम में मिली थी, उसने अपने माल को करशी जानेवाले मानुष-वणिक के हाथ में धरोहर रख बेंचने को दिया। कहीं धरोहर में धोखा न दें, इसके लिये उसे शिक्षा भी दी:

—महात्माओं का कहना है, "यदि सौदागर के कारवाँ को अमानत (धरोहर) दी जाये, और कारवाँवाले अमानत में खयानत न करें, तो उस कारवाँ को खतरे का मुँह नहीं देखना पड़ेगा।" इसका अर्थ यह है, कि यदि कारवाँवाले अमानत में खयानत करें, तो 'अल्-अयाज् बिल्लाह' उनपर कोई आफत जरूर आयेगी।

× × ×

आदमियों के सौदागर दास-दासियों को लेकर यात्रा के लिये निकले। अब किलिच् खलीफा की रबात अस्त्राबाद के अभियान के पूर्व-जैसी खाली नहीं थी। अब उसका मालखाना भेड़ों से और ऊँटखाना ऊँटों से भरा था। बड़ा लड़का अब्दुल अपने चचा ओराज के साथ दास-दासियों को लिये खीवा की ओर रवाना हुआ था, घर का काम देखने के लिये छोटा लड़का कूशात् रह गया था। सबसे पहिली जरूरी बात यह थी, कि चरवाहा ढूँढ़कर भेड़ें उसे सौंपी जायें, तथा पशुओं के जाड़े की खोराक पत्ता-घास जमाकर ली जाये। इसके लिये कूशात् ने कंबर

बाबा को घोड़े पर सवार करा पड़ोसी डेरों में भेजा, जिसमें वह परसाल के निकाले चरवाहे को समझा-बुझाकर ले आये।

चार-पाँच घंटा बाद कंवर बाबा एकसाठ-साला तुर्कमान को उसके १५-१८ साला दो बेटों के साथ ले आया। कूशात् ने देखते ही कहा—'पुर्स, तुर्दी आगा !'

किन्तु बूढ़े में 'पुर्स-पुर्स' के विधि-व्यवहार के पूरा करने की शक्ति न थी। उसकी आँखें निस्तेज तथा चारों ओर से सूजी थीं, ओठ सफेद और बेखून थे। जान पड़ता था, कितने ही दिनों से उसने रोटी की सूरत नहीं देखी थी। उसके लड़कों की भी भूख ने वही हालत कर रखी थी। उनका रंग मुर्दे जैसा पीला और कान्तिहीन था। तुर्दी आगा ने 'पुर्स' के जवाब में कहा :

—तेरी बलि जाऊँ खानजादा (राजकुमार), परसाल तेरे बाप ने मेरे ऊपर बहुत जुलम किया। तीस साल से सूखा टुकड़ा खाकर मैंने जो सेवा की थी, वह सब भूल गया। भेड़ें जब मर गईं, तो "जाओ निकलो, अब तुम्हारे लिये यहाँ काम और रोटी नहीं है" कहकर हमें भगा दिया। बड़े लड़के के साथ अपने गाँव गया। जाड़े का मौसिम सख्त, बर्फ जियादा, शिर-शरीर शीतल, खाने के लिये रोटी नहीं, जलाने के लिये ईंधन नहीं, रहने के लिये जगह नहीं। निष्ठुर भाग्य के हाथ में अपने को छोड़ दिया। इसी अवस्था में मेरी मेहरिया और दो लड़कियाँ जाती रहीं।

तुर्दी आगा का दिल भारी हो आया, गला रुंध गया और वह बात को और आगे जारी नहीं रख सका। कूशात् ने ढाढ़स बँधाते कहा :

—चिन्ता न कर, जिसकी मौत आ गई रहती है, वह मर जाता है; जिसकी आयु बाकी रहती है, वह जिन्दा रहता है।

कंवर बाबा ने अपने ओठों में भुनभुनाते हुए कहा—तुम्हारी मौत क्यों नहीं आ गई ? इसीलिये न कि तुम्हारा पेट भरा था।

तुर्दी आगा ने आस्तीन से आँसू पोंछकर फिर कहना शुरू किया—उसके बाद मैंने तै कर लिया था, कि फिर तुम्हारी चाकरी न करूँगा। लेकिन जिस आदमी ने तीस वर्ष एक जगह सेवा की हो, वहाँ अपनी जवानी बिताई हो, बुढ़ापे में वहाँ से निकाले जाने पर उसे कौन काम देगा ? इसीलिये जब कंवर बाबा गया, तो दोनों बेटों को लिये चला आया। अब न्याय करना तुम्हारे हाथ में है। हम सेवा करते हैं, किन्तु तुम भी ऐसा करो, कि हम भूखे न मरें।

—हम यदि (पेट) भरे रहेंगे, तो तू भी भरा रहेगा—कूशात् ने कहा—दुआ कर कि लक्ष्मी हमसे मुँह न मोड़े। इन बातों को बाप के सामने न कहना। वह 'संसार-त्यागी', "भगवत्-समीपी" आदमी है, उसकी दुआ ही बहुत है। महात्माओं ने कहा है "सोना न माँग असीस माँग, असीस क्या सोना नहीं है?" खुदा न करे, कहीं वह तुझसे रंज हो जाये, तो तेरी दुनिया जल जायेगी।

—नहीं बेटा—तुर्दी आगा ने कहा—मैंने अपना बेटा जानकर तेरे सामने अपना हृदय खोला। हाँ, तेरे बाप के सामने अपने इन घावों को नहीं खोलूँगा। उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। यद्यपि मैं उससे दुआ की इच्छा नहीं रखता और उसके शाप से भी नहीं डरता; किंतु उसके क्रोध से जरूर डरता हूँ। यदि उसे क्रुद्ध कर दूँगा, तो वह मुझे फिर बाहर निकाल देगा। फिर इस दोहरी कमर को लेकर किसके द्वार पर जाऊँगा और इन निर्बल हाथों से कहाँ रोटी पाऊँगा?

तुर्दी अपने दोनों बेटों के साथ रह गया। किलिच् खलीफा ने बख्शी को एक मेड़ इनाम दी थी। उसने भी कहीं से बे-माँबाप के १२-१५ साल के दो लड़कों को लाकर खलीफा की सेवा में डाल दिया।

खलीफा का काम फिर चल निकला। बेटियों और बहिनों के साथ छ सूफी और चार निकाही बीबियाँ कालीन बुनने में लगी थीं। उनके ऊपर प्रधान-सूफी कुमरी बीबी शासन करती थी। कम्बर बाबा दस-साला लड़के को ले कुएँ से पानी खींचकर जानवरों को पानी देता, रबात का झाड़ू-बहारू और ढोरखाने की देखभाल करता। १५ साला लड़के के साथ तुर्दी आगा कांतार से कांटा और ईंधन जमा कर ऊँटों पर लाद रबात में लाता। उसके दोनों बेटे भेड़ों को ले जाकर मैदान में चराते। कूशात् सबका नियंत्रण करता।

घर के जीवन में सब जगह एक नया परिवर्तन आया था, केवल किलिच् खलीफा एक ऐसा आदमी था, जिसकी बात-व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं था। वह पहले ही की तरह नमाजआसनी पर बैठा रहता। वह खुदा से भेड़ों के लिये बरक्कत, अपने पुत्रों के लिये दीर्घायु, सेवकों के लिये ईमानदारी और सेवा-भक्ति, गुलाम बेचने गये अपने गुमाश्तों के लिये निर्भय-यात्रा और अपने दास-दासियों के लिये अच्छे बाजार और धनी खरीदार की दुआ माँगता था।

७

दासों का बाजार

बुखारा की पाय-आस्ताना नामक कारवाँ-सराय का काम जोश पर था, बड़ी तैयारी थी। सरायबान (सरायवाला) कोठरियों, दालानों, तहखानों (भूंइघरों) और सराय की सारी जगह को साफ करा रहा था। भिश्ती पानी का छिड़काव कर रहे थे, नूरीकश (भंगी) सारे कूड़े-करकट को तंग बोरों में बन्दकर गदहों पर लाद बयाबान में ले जा रहे थे। सौदागरों के ठहरने के कमरों को खास तौर से साफ करके मूल्यवान् बिछौनों से सजाया गया था। तहखानों में जानवरों के बाँधने के लिये गड़े खूँटों को उखाड़कर उनकी जगह छल्लेदार लोहे के कीले गाड़े गये। एक तहखाने में अमीर बुखारे के जेलखानों की तरह हाथ के कुन्दों को बड़े कीलों से जोड़कर तैयार किया गया था। स्नानागार को साफ कर के वहाँ पानी के कुखडे रखे गए थे। पाखाने के साफ करने को भी नहीं भूले थे। रसोईखाने में भोजन पकाने और पानी गरम करने के लिये अलग-अलग देगें रखी थीं। संक्षेप में कहा जा सकता है, कि इस बड़ी सराय में असाधारण तैयारी की गयी थी।

एक सवार घोड़े को सरपट भगाता आकर सराय के पास उतरा और उसी काम के लिये वहाँ तैयार खड़े सरायबान लड़के को लगाम थमा घोड़े को ठंडा करने का हुक्म दिया। वह स्वयं जैसे कोई भारी मुहिम मार के आया हो, अपने कोड़े को हाथ में नचाते सराय के भीतर चला गया। आंगन से होते एक कमरे में जा वहाँ पालथी मारकर बैठे एक आदमी को बड़े सम्मान के साथ सलाम किया।

आदमी ने सलाम का उत्तर दिये बिना ही पूछा—क्या नजदीक आ गये?

—हाँ, नजदीक आ गये, दो घंटे में यहाँ पहुँचनेवाले हैं।

—तू कारवाँ से किस जगह मिला?

—पैकन्द में। कारवाँबाशी (सार्थवाह) को आपकी ओर से सलाम दिया और कहा "मुझे आपकी सेवा में भेजा है"। कारवाँबाशी बहुत खुश हुआ और बोला "इजारादार अकरम बाय मेरा पुराना दोस्त है। अगर चिन्ता करके पहले से

आदमी न भी भेजे होता, तो भी हम उसकी सराय छोड़ दूसरे की सराय में न उतरते।"

—इसके बाद ?

—इसके बाद कारवाँ (सार्थ) के साथ-साथ चारबकर तक आया। कारवाँ वाले हाथमुँह धोने और रास्ते की धूल-मिट्टी साफ करने के लिए वहाँ रुक गये। कारवांबाशी ने "सराय को साफ-सुथरा करके रखो, बेगाना आदमियों को वहाँ से हटा दो" कहकर मुझे आगे भेज दिया।

—उनके पास माल ज्यादा है ?

—बहुत ज्यादा है, करीब ५० ऊँट सेब, कितने ही ऊँट तामे की देगें, गड़वे तथा दूसरे लोहे के भी सामान, कितने ही ऊँट ओरेनबुर्ग की सन्दूकें, सब मिलाकर प्रायः दो सौ ऊँटों पर लदा माल है।

—इनमें से कोई माल हमारी सराय में नहीं उतरने का। यह वह माल हैं, जो सराय-उर्गञ्ज में उतारे जाते हैं। तू उन मालों की बात कर, जो हमारी सराय में उतारे जायेंगे।

—हमारी सराय का माल पचीस-एक दास-दासी दिखाई पड़े। इनमें से अधिकांश सुन्दर स्त्रियाँ और लड़कियाँ, बलवान जवान और खूबसूरत छोकरे हैं। यदि अच्छी तरह नहला-धुलाकर सुन्दर परिधान पहना दिये जायँ, तो बाजार में उनपर अशर्फियों की वर्षा होने लगेगी।

इजारादार अकरमबाय प्रसन्न हो ठहाका मारकर हंस पड़ा और सामने पातित-जानु बैठे १६-१७ साला लड़के की ओर दृष्टि डालकर बोला—मिरजा (लेखक) को बुला।

—बहुत अच्छा तकसीर (क्षमानिधान) !— कह लड़का उठकर सराय के भीतर चला गया।

दो-तीन मिनट बाद सराय के अन्दर से एक आदमी आया। उसकी दाढ़ी बकरी-जैसी, बाल सफेद, कमर झुकी, आँखें तंग और बलाद्र', चेहरा सूखा और मनहूस, ओठ पतले और बे-खून थे। उसके कमरबंद से एक कलमदान लटक रहा था, बगल में चमड़े मढ़ी एक पुरानी जुजदानी दबी थी। वह हाँफते-हाँफते आकर इजारादार को सलाम करके खड़ा हो गया। इजारादार ने सिर हिलाकर सलाम का जवाब दे 'बैठो' कहकर अपने सामने स्थान की ओर संकेत किया। बूढ़ा मिरजा

(लेखक) सम्मान प्रदर्शित करते वहाँ पतितजानु बैठ गया और अपने कलमदान तथा जुजगीर (बस्ता) को सामने रख हाथ को सीने के पास कर आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

उसके जरा विश्राम कर लेने पर इजारादार ने कहा—मिरज़ा।

बूढ़ा मुंह से शब्द निकाले बिना शिर को नीचे किये इजारादार की ओर कान लगाये बैठा रहा। इजारादार ने फिर कहा :

—तुरन्त गिजदुवान, शाफिरकाम, वाबकन्द और जिन्दाना के तूमानो (परगनों) के बायों और दास-सौदागरों (गुलाम-जल्लाबों) को मेरी ओर से पत्र लिखकर कारवां के आने की सूचना दीजिये। पत्र को ऐसा आकर्षक और सुन्दर शब्दों में लिखिये, कि पढ़नेवाला बड़ी शौक से "यद्यपि दास खरीदने की मुझे इच्छा नहीं है, तो भी सुरूप दास छोकरों और मनोहर छोकरियों को चलकर जरा निहारेंगे" कहते शहर की ओर दौड़े आयें; यहाँ भीड़ लग जाय और बाजार गरम हो जाय। बाजार गरम होगा, तो दासों का दाम बढ़ जायगा, जिससे कारवाँ-बाशी प्रसन्न होगा। फिर हमारी आय भी अधिक होगी, तुम्हारा भी चाय और नशे का पैसा ज्यादा होगा।

पत्र लिखे गये। इजारादार ने उन्हें खास सवारों द्वारा तूमानों में भेजा। इस समय तक कारवाँ भी कराकुल द्वार से बुखारा नगर के भीतर आ चुका था। इजारादार के पास उसके प्यादे दौड़-दौड़ कर सूचना दे रहे थे, कि कारवां कौन-सी सड़क और कौन-से महल्ले से गुजर रहा है। खीवा (नगर) के कारवां वाले सराय-उर्गंज में उतरे। दूसरी सराय में उतरकर दूसरे बाजार में अपने माल को बेंचना ठीक नहीं समझा जाता। पाय-आस्ताना की सड़क की सरायों में से किसी एक में ही दास-सौदागर कारवाँ-बाशियों को उतरना पड़ता, क्योंकि यह सरायें सराय के साथ दासों की बाजारें भी थीं। कारवां-बाशी अपने कारवां के दूसरे लोगों से अलग हो अपने "माल" के साथ अकरमबाय की सराय में आकर उतरा। दोनों ने एक दूसरे के साथ पार्श्वालिंगन किया, एक दूसरे का चुम्बन किया। फिर अपने लिये खास तौर से तैयार किये कमरे में कारवां-बाशी जाकर बैठा।

दास-दासियों को तहखाने में ले जाकर बन्द कर दिया गया। जो ज्यादा सरकश थे, उनके पैरों में कुन्दा मार दिया गया या गर्दन में जंजीर डाल उसके

एक छोर को कील के छल्ले में डाल ताला लगा दिया गया। दासों को ढोकर लानेवाले ऊँटों को "बोझ" उतार देने पर नगर से बाहर अवस्थित ऊँटखानों में भेज दिया गया।

कारवां-बाशी ने अकरमबाय को पास बुलवाकर कहा—आज खरीदारों को सराय में न आने दीजिये। किसी को दास-दासियों को देखने न दीजिये। कल सवेरे जनाब आली (अमीर-बुखारा) के सम्मुख हम अपनी सौगात और आवेदनपत्र अर्पित करेंगे, फिर जनाब-आली की आज्ञा प्राप्त करके बेचने का काम आरम्भ होगा।

इस आज्ञा को तत्काल कार्य रूप में परिणत किया गया और सराय के दरवाजे पर खास रक्षक बैठा दिये गये, जिसमें कोई अन्दर न आ सके।

रसोई घर में सूप (शोरबा) की देग उबल रही थी और पोलाव के लिये घी तपाया जा रहा था। एक कोने में मन भर की एक बड़ी देग में पानी गरम किया जा रहा था। बाल्टियों से गरम पानी स्नानागार में पहुँचाया जाता था। कारवां-बाशी के खास आदमी दास-दासियों को पारी-पारी से वहाँ ले जाते थे। उन्हें नहला कर नयी पोशाक पहनाते फिर तहखाने में ले जाकर शृंखलाबद्ध कर देते थे। सुन्दरी नारियों और कन्याओं तथा सुरूप लड़कों के नहलाने-धुलाने पर खास तौर से ध्यान दिया जाता। उन्हें इराकी सुगन्धित साबुन से नहलाया जाता, उनके बालों में बड़े ध्यान से कंघी की जाती, जुल्फ़ें और भंवरी निकाली जाती, उनकी भौंहों को मोचनियों से चुनकर सँवारा जाता, आँखों में सुरमा डाला जाता और चेहरे पर नील से तिल बनाये जाते। सुन्दर व्यक्तियों को उनके आकार के अनुसार काटकर खूबसूरत ढंग से सिली नयी पोशाक पहनायी जाती।

कारवां-बाशी की विशेष आज्ञानुसार एक चौदह-साला कन्या और सोलह-साला लड़के को अनेक बार साबुन लगा पानी डालकर नहलाया गया। उन्हें नयी पोशाक पहना कर कारवां-बाशी के कमरे में ले गये। कारवां-बाशी ने खास हज्जाम बुलाकर उनके बालों की कंघी करायी, भौंहों को चुनवाया। हज्जाम ने बालों को कैंची से छांटकर जुल्फ, काकुल, पेचा और कुञ्चन के रूप में परिवर्तित किया। जुल्फ और कुञ्चन को कई बार बिगाड़-बिगाड़ कर फिर नये प्रकार से तैयार करके सुन्दर बनाया गया। उनके बालों में शुद्ध गुलाबी अतर डाला गया। हाथों की अंगुलियों में मणि-जटित सोने की अंगूठियां पहनायी गयीं, कानों में मुक्ता-जटित सोने के मंजुल कुण्डल लटकाये गये। छोकरे के शिर पर तास की टोपी पहनायी गयी, कन्या के

शिर पर तास की टोपी के अतिरिक्त जरदोजी का ललाट-पट्ट बांधा गया और कंठ में तिलड़ा सोने का हमेल डाला गया। उनकी पोशाक शाही और बुखारी सतरंगी मखमल की थी, जिसे उस समय र आन्तः पुर के अतिरिक्त दूसरी जगह पाया नहीं जा सकता था।

८

अमीर के जल्लाद, दास-वणिक

सवेरे ही-सवेरे बुखारा के रेगिस्तान नामक मैदान में झाड़ूदारों ने झाड़ू दिया, भिश्तियों ने छिड़काव किया। अतिप्रातः अमीर की सलामी के लिये आये दरबारियों के घोड़ों को लेकर उनके अनुचर उन घोड़ों पर सवार हो मदरसा दारूश्शफा के पास पांती से दक्षिण की ओर मुंह करके खड़े हो गये। तमाशा देखने के शौकीन बुखारा-निवासी भी सूर्योदय के पहले ही आर्क (राजदुर्ग) के दरवाजे के सामने आ पायन्दा जामां-मस्जिद की दीवार के नीचे दीवार की ओर पीठ और उत्तर की ओर मुंह करके बैठे हुए थे। वह यह देखने आये थे, कि आज जनाब-आली किसे मारेंगे, किसे दार (शूली) पर चढ़ायेंगे, किसे आर्क के मीनार (नकारखाना) से नीचे गिराकर मारेंगे, किसकी गर्दन को भेड़ की तरह कटवायेंगे, किसे यार्लिक (सनद) देंगे, किसे पद और खिलअत (राज-परिधान) दे सौभाग्यवान् बनायेंगे। यद्यपि ये तमाशबीन घोड़ों पर चढ़े अनुचरों के सामने थे, तो भी जान पड़ता था, कि मानों स्वयं अमीर के सामने बैठे हैं, इसीलिये बड़े सम्मान के साथ छाती पर हाथ रखे बैठे थे। वह एक दूसरे के मुंह की ओर देखे बिना तथा बिना ऊँची आवाज निकाले आपस में तत्कालीन घटनाओं पर धीरे-धीरे बात कर रहे थे।

शहर के भीतर आने-जानेवाले, लोग दरवाजा-इमाम की ओर से आकर ताक-तीरगरों की ओर जाते वक्त रेगिस्तान मैदान को बीच से पार होकर गुजरते; वह बाध्य थे कि यहाँ आने पर उतरकर घोड़ों को हाथ से पकड़े या गदहे को आगे-आगे हाँके पैदल ही आर्क की ओर निगाहकर झुककर सलाम करके रेगिस्तान से बाहर जा फिर सवार हो जिधर जाना होता जाते।

समय से पहले आये दर्शकों का आना बेकार नहीं हुआ। एक किसान रेगिस्तान के पास से जा रहा था। बेचारा शहर बहुत कम आया था और रेगिस्तान से होकर जाने के नियम को न जानता था, इसलिये सवारी से बिना उतरे आँख मूंदे चला जा रहा था। यह देखकर आर्क दरवाजा के पास तख्तापूल (चबूतरे) पर खड़े एक लठधर सिपाही ने बड़े भीषण स्वर में चिल्लाकर कहा—"अत्—दन्—कून्—कून्-अत्दन्!" (घोड़े से उतर)

किसान घबड़ाकर जल्दी में उतरते-उतरते जमीन पर गिर पड़ा। अभी वह जमीन से उठ भी नहीं सका था, कि आर्क के दरवाजे से डंडेवाले यसावुल दौड़े हुए आये और गर्दन पकड़कर उसे घसीटते आर्क की ओर ले गये। तख्तपूल के ऊपर तूनकतर (सवारी से उतारने के अफसर) के सामने ले जा शरीर नंगा कर पीठ पर १५ बेंत लगाये गये। फिर किसान से जनाब-आली के लिये दुआ पढ़वा पोशाक उसके हाथ में दे छोड़ दिया गया। दर्शकों के लिये यह पहली-सौगात थी, यह अच्छा शगुन था। तमाशा गर्म हो चला।

दो बंदियों को आबखाना (आर्क के एक जेलखाने) से निकालकर तख्तपूल के पास लाया गया। बंदियों के हाथ पीछे नहीं आगे की ओर बँधे थे। इस अवस्था को देख एक दर्शक ने दूसरे दर्शक के कान में धीरे से कहा "बेचारा"। सामने हाथ बंधे का अर्थ था मृत्यु-दंड।

एक आदमी आगे आया। उसके शरीर पर कमखाब का जामा, शिर पर कुलाह के साथ सैनिक जैसी पगड़ी, कमर में सुनहला कमरबंद और हाथ में चाँदी के बेंटवाला कोड़ा था। यह था बुखारा का मीरशब (कोतवाल) जो जनाब-आली के गजब (मृत्युदंड)को कार्य रूप में परिणत कराता। बंदियों को चारों ओर से नंगी तलवार लिये सिपाही और तीन-बन्धनी कोड़े लिये रात्रि-रक्षी (पुलिस) घेरे हुए थे। वह प्रत्येक बंदी की बगल में उसकी बाँह पर एक हाथ रखे दूसरे हाथ में हाथ भर लम्बा डंडा लिये खड़े थे। इन आदमियों का कद नाटा, शरीर मोटा और पोशाक दूसरे आदमियों की तरह नहीं थी। उनके शिर पर भेड़ के चमड़े की बालदार टोपी, बदन पर रूईदार चिपका हुआ जामा, कमर में फीता और पैरों में घुटनों तक पहुँचता लम्बा जूता था—ये जल्लाद थे।

बंदियों को इसी सूरत में तख्तपूल से उतार रेगिस्तान की उस तरफ एक गड्ढे के किनारे ले गये, जो वर्षा और बर्फ के पानी के बहने के लिये बाजार-

२—आर्क के दरवाजे जल्लादों की लीला (पृष्ठ ४१)

रेशमा (रस्सी बाजार) में खोदा गया था। आर्क के दरबाजे और बाजारवाले गढ्ढे की चारों ओर दर्शकों की भीड़ थी। मीरशब और कुशबेगी (महामंत्री) के आदमियों ने डंडा और कोड़ा मारकर लोगों को हटा गढ्ढे की चारों ओर घेरा डाल दिया। मीरशब ने आर्क के दरवाजे की ओर मुँह करके शिर को करीब-करीब जमीन तक पहुँचाते तीन बार कोरनिश (बंदना) की। फिर लोगों और बंदियों से जनाब-आली (बुखारा के अमीर) के लिये दुआ करवायी। फिर "जनाब-आली विश्वविजयी होवें, उनका खड्ग तीक्ष्ण हो, उनकी कमर हजरत शाहमर्दां और बहाउद्दीन बलागर्दां बाँधें" कहते ऊँची आवाज से दुआ कराने लगे। लेकिन बंदियों में इसके लिये हौसला कहाँ था ? दुआ के समाप्त होने तक जल्लादों ने बंदियों के हाथों को ऊपर उठा रखा था।

मीरशब ने अपनी बगल से एक पत्र निकाला, उस पर लगी मुहर को चूमा, उसे आँखों से मला, फिर पढ़ते हुये उस पर नजर दौड़ाई। पढ़कर पत्र को जेब में डाल उसने जल्लादों को संकेत किया। पहले जल्लाद ने एक बंदी की बाँह को अपने पैरों की तरफ खींचकर अपने डंडे से उसपर कड़ी चोट लगायी। गढ्ढे से निकाली मिट्टी पर बंदी मुँह के बल गिर पड़ा। दूसरे जल्लाद ने बंदी के पीठ पर सवार हो उसे जमीन पर दबा रखा। पहले जल्लाद ने अपने लम्बे बूट में से एक पतला छूरा निकाला और उसे कान के पास गले में घुसा कंठ पार करते दूसरी ओर निकाल दिया और रक्त रंजित छूरे को बंदी के कपड़े से पोंछकर फिर उसे बूट के भीतर रख लिया। पहले बंदी का प्राण अभी पूरी तरह नहीं निकला था। उसे उसी तरह छोड़ वही काम दूसरे बंदी के साथ किया गया। बंदी कुछ देर छटपटाते, इधर-उधर रक्त बिखेरते, अन्त में ठंढे पड़ गये।

इसी समय हम्माम नोक़म-न्दोज़ी की ओर से दो खटोलियाँ लिए चार क़मारबाज़ (कहार) आये। उनका काम था, मारे मुर्दों को खटोली में रख अपने निवासस्थान गुलाख़ हम्माम (स्नानागार) में ले जाकर रखना। यदि सम्बन्धी आकर मुर्दा ले जाना चाहें, तो इसके लिये खासी रकम उनसे वसूल करें, यदि मुर्दा का कोई वारिश न हो, तो उन्हें रास्ते पर रखकर मुसाफिरों से दफन करने के नाम पर पैसा माँगे। उन्होंने इस काम को अपना पेशा बना लिया था। इस पेशा से बहुत पैसा जमा करके कमार (जूए) में सदा सारे दाओं पर पैसा रखते, इसीलिए बुखारा के दूसरे जुआरियों ने उन्हें "जनाब-आली के

बाय-बच्चा" की उपाधि दे रखी थी। किन्तु आज इन कमारबाजों के दाव खाली गये। उन्हें मुर्दा उठाने के लिये तैयार देखकर मीरशब ने कहा :

—इन मुर्दों पर हाथ न लगाओ। जनाब-आली ने खास हुक्म दिया है, जिससे ये मुर्दे शाम तक यहीं रहेंगे, जिसमें आने जानेवाले देखकर शिक्षा ग्रहण करें। सायंकाल को इन मुर्दों को शहर से बाहर जाकर कुत्तों के सामने फेंक देना। ये जुआरी और बदमाश तो थे ही, साथ ही इन्होंने खातिरची के लोगों को हाकिम और काजी के विरुद्ध उभारकर बगावत फैलायी।[1] इस्लाम के बादशाह से बागी होनेवाले ऐसे आदमियों के मुर्दे से भूमि अपवित्र होती है, इसीलिये जनाब-आली का आदेश है, कि इन मुर्दों को कुत्ते के सामने फेंक दिया जाय।

मीरशब ने अपने आदमियों और कुशबेगी के नौकरों के साथ आर्क पर जाकर अमीर की आज्ञा को कार्य रूप में परिणत होने की सूचना देते हुए कहा—वह जनाब-आली की सलामती के न्यौछावर हुए। हजरत दीर्घजीवी होवें।

फिर आबखाना के छोटे द्वार का मोटा ताला खुला। फिर वहाँ से दो बंदी फाटक के पास तख्त-पुल पर लाये गये। एक बंदी के कपड़े को उतरवाया गया। उसे एक बलिष्ठ आदमी ने अपने पीठ पर उठाया। बंदी के हाथ को उस आदमी ने अपने गर्दन में डाला और दूसरे आदमी ने बंदी को पकड़ रखा, तीसरे आदमी ने बंदी के पैरों को उठानेवाले आदमी के पैरों के बीच से निकाल कर पकड़ा। बंदी की दोनों ओर दो मीर-गजब (डंडामार) खड़े हुए, पास में लपलपाती लकड़ियों का ढेर पड़ा था।

मीर-गजबों ने एक-एक लकड़ी हाथ में लेकर "एक दो……" कहते ७५ कमचियाँ मारीं, फिर जनाब-आली के लिये दुआ करवा उसे छोड़ दूसरे बंदी को नंगा करना शुरू किया।

कुशबेगी (युद्धमंत्री) ने अपनी दरबारी पोशाक में जरी के कमरबन्दवाले दरबारियों से घिरे दण्ड की व्यवस्था को पूरा कराने के लिये आकर खड़ा हो "चार-आईना" कहकर ऊँची आवाज दी। आवाज को सुनकर रेगिस्तान में एकत्रित दर्शक-मंडली में हलचल मच गयी। यह तमाशा असाधारण था, इसलिये

---

1. खातिरची और मियाना-काल के किसानों ने मंगीती अमीरों के जमाने में अत्याचार से तंग आकर बगावत की थी।

हर एक आदमी अपने पास के आदमी से गर्दन को अधिक ऊँची उठाकर देखने की कोशिश कर रहा था। मीर-गजब ने बंदी को पीठ पर न उठवा जमीन पर सुला दिया। दो आदमियों ने उसके हाथ पैरों को पकड़ रखा। फिर दो मीर गजबों ने ७५ डंडे मारे। बंदी खून से लदफद हो गया। फिर उसे पीठ के बल लिटा पेट पर भी ७५ डंडे मारे। इसी तरह उलट पलटकर दोनों पार्श्वों पर भी ७५-७५ डंडे मारे गये। चारों पार्श्वों में ७५-७५ डंडा मारना, यही अमीरों के दण्ड-विधान में "चार आईना" कहा जाता था।

इसके बाद शरीर से जगह-जगह मांस-खण्ड उड़ गये, रक्त से रंजित बन्दी को तांगे में सवारकर जेल में भेज दिया गया। 'चार आईनावाला बंदी चाहे मर भी चुका हो, किन्तु उसे जेलखाना भेजना आवश्यक था; क्योंकि अमीर के हुकम में लिखा था "डंडा मारने के बाद जेलखाना भेज दिया जाय" और हुकम को कार्य-रूप में परिणत करना अनुल्लंघनीय था।

× × × ×

अमीर हैदर[1] (सन १८०२—२६ ई०) का शासन काल था। यह अमीर अपने मुल्लापन और सदाचार के लिये प्रसिद्ध था। वह प्रतिदिन सूर्योदय से पहले उठ बैठता और हस्त-पाद-मुख-प्रक्षालन कर तहज्जुद की नमाज[2] पढ़ता, फिर बामदाद (सूर्योदय) की नमाज के समय तक नमाजासनी पर बैठा ध्यान में मग्न रहता। उसके बाद सेवकों के साथ अपने पूजागृह में या दरबारियों के साथ आर्क (किले) की मस्जिद में स्वयं इमाम (पुरोहित) बनकर बामदाद की नमाज पढ़ाता। इसके बाद सलामखाना में आकर दरबारियों का सलाम लेता आवेदन-पत्रों को एक-एक करके देखता, और उनपर मौखिक आज्ञा देता या पत्र की पीठ पर लिख देता। फिर इशराक[3] की नमाज पढ़कर आर्क की मस्जिद या रहीमखानी[4] मेहमानखाना (अतिथिशाला) में जाकर मुल्लाबच्चों (विद्यार्थियों) को अध्यापन करता।

---

१. बुखारा के अन्तिम राजवंश मंगित का चतुर्थ अमीर।

२. यह आवश्यक दैनिक पांच नमाजों से अतिरिक्त है, जिसे संत महात्मा भिनसारे में पढ़ते हैं।

३. यह तीनों नमाजें पांच से ऊपर हैं।

४. प्रथम मंगीती अमीर।

उस दिन आवेदन-पत्र बहुत अधिक थे। अमीर हैदर को डर था, कि उनके कारण अध्यापन में देर न हो जाय—वह अध्यापन के काम (मुल्लापन) को अधिक महत्त्व देता था, इसीलिये आवेदन-पत्रों को जल्दी-जल्दी देख रहा था। आवेदन-पत्रों में से एक में सोलहसाला छोकरे और चौदहसाला छोकरी की बात देखकर उसे ध्यान से पढ़ने लगा। पढ़ने के बाद उसे पास के तकिये के ऊपर रख डंडी से द्वार पर तीन बार तिक्-तिक् किया। यह डंडी अमीरों के लिये घंटी का काम देती थी। यदि अमीर एक बार तिक् करता, तो उपस्थाक (पेश-खिदमत) उपस्थित होता, दो पर मुहरम और तीन पर दरबान (द्वारपाल) आता। तीन बार तिक्-तिक् सुनकर पहरे का दरबान देहली पर उपस्थित हो "खुश तक़सीर (आज्ञा क्षमा-निधान)" कहते तीन बार जमीन तक शिर झुकाने के लिये कमर दोहरी कर हाथों को सीने पर रख शिर नीचे किये खड़ा हो गया। अमीर ने बालिश पर रखे आवेदन की ओर संकेत किया "इसे ले और इसमें उल्लिखित भेंट को यहां ले आ"।

दरबान ने फिर कोरनिश की, घुटनों से बैठकर बालिश को चूमा, आवेदन-पत्र को हाथ में ले खड़ा होकर फिर एक बार कोरनिश की। तब बिना पीठ फेरे मुंह को अमीर की ओर किये देहली पर पहुँच फिर कोरनिश करते बाहर चला गया। पांच मिनट बाद भेंट की चीजों को मुहरमों (भृत्यों) से उठवाये दो बच्चों को आगे आगे किये दरबान सलामखाना में आया। अमीर ने भेंट की चीजों को खजाना में ले जाने का संकेत किया और बच्चों को पास लाने का हुक्म दिया। दरबान ने स्वयं अन्दर आये बिना बच्चों को भेज दिया। अमीर ने उन्हें नजदीक बुलाकर एक-एक को बड़े ध्यान से देखा और अपने आपसे कहा "संसार में दुर्लभ और अति-सुन्दर"। फिर दरबान को बुलाकर बच्चों की ओर संकेत करके कहा "इन्हें हौलीचा-मियाना[1] में ले जाकर ख्वाजासरा (अन्तःपुर के अधिकारी) को सुपुर्द कर।" इसके बाद अमीर ने बाहर आकर पाठ के लिये आये विद्यार्थियों को कहलवाया "आज हजरत का मिजाजे-हुमायूनी (श्रीजी का मन) कुछ ठीक नहीं है, इसलिये पाठ नहीं होगा।

---

१. अन्तःपुर के बीच का एक महल, जिसमें अमीर बैठा करता और जहां उसके लिये सुन्दर लड़के रखे जाते हैं।

वस्तुतः इन दो मासूम बच्चों को देखते ही अमीर के अंग में कम्पन पैदा हो गया, रंग उतर गया और आँखें लाल हो गयीं—मानो उसे जूड़ी आ गयी। कौन जानता है, यह बीमारी कितने दिनों तक रहेगी और बेचारे विद्यार्थी अमीर के धर्माध्यापन से वंचित रहेंगे। अवश्य, तबतक जबतक कि उसका मन इनसे भर न जाये और फिर उनकी तरफ से खट्टा न हो जाये।

अमीर ने दरबान के हाथ से आवेदन-पत्र लेकर उसकी पीठ पर लिख दिया—"आवेदक का नाम श्री दरबार से एशक-आकाबाशी के दर्जे की यार्लिक लिखी जाय और इसके अनुसार हमारे श्रीकोश से तीन सरोपा खिलअत (आपाद राजकीय परिधान) दी जाय। आवेदनपत्र को दरबान के हाथ में दे मिर्जा-मुन्शी के पास भेजने को कहा।"

फरमान (आज्ञापत्र) के जारी होने में आध घंटा न बीता था, कि आवेदक को नीचे अंदरस का जामा, ऊपर से शाही का जामा और सबसे ऊपर कमखाब का जामा पहिनाया जा चुका था और उसके सामने एक थान दाका (ढाका का मलमल) एक कमखाब की कुलाह (नोकीली टोपी) और एक फिरंगी रुमाल रखी हुई थी। आवेदक ने भेड़ के लम्बे काले बालों वाली पोस्तीन (चर्म) की भारी भरकम टोपी को शिर से उतार कर जमीन पर रख दिया और कुलाह को शिर पर रखकर चाहा कि दाका को स्वयं अपने शिर पर बांधे। किन्तु इससे पहले कभी साफा बांधे न था, इसलिये बांध न सका। इनाम पाने के लिये मक्खियों की तरह वहां कितने ही फर्राश (बिछौना बिछानेवाले) एकत्रित हो गये थे। उनमें से एक ने कुलाह को बांयें हाथ में पकड़कर दाका को उसकी चारों ओर लपेट शल्गम की शकल की दरबारी पगड़ी बांधकर आवेदक के शिर पर रख दी। एशक-आका-बाशी की यार्लिक आधा ताव खोकन्दी कागज पर लिखकर तैयार थी। उदेची (अफसर) ने लेकर यार्लिक को पगड़ी की पेंच में खोंस दिया। फिर आवेदक को दाहिनी ओर से उदेची और बांयी ओर से शिगावुल कंधा पकड़कर सलामखाना की हवेली में ले गये और उसे अमीर के सामने ५० पग दूर खड़ा किया। पहले उदेची के प्रधान-नायक ने तुर्की भाषा में मोटी आवाज से उच्चारण को अलग-अलग करके कहा :

तकसीर!—मेरे हजरत-की स-ला-मती खी-वा-कापात वर-सौ-दा-गर आ-प-का गु-ला-म मु-हम्मद-क-री-मा-बाय का-र-चीं-ना-शी मेरे ह-ज-रत-की कृ-पा-से

-सल-त--नत-बु-खा-रा-शरीफ-के दर-बार-के बड़े-दर-बा ए-शिक-आ-का-बा-शी-से सौ-भा-ग्य-शा-ली हो मे-रे-हज-रत-को-दु-आ-कर-के अप-ने-का-म-पर-जा-ने-की-आज्ञा चा-ह-ता- है।

इसके बाद शिगावुल ने कहा—हज-रत-अ-मीर-को खु-दा प्र-ताप-औ-र-न्या-य प्र-दान-क-रे।

फिर उदेची ने—"यह अप-ने-शिर-को भेंट-कर-ता-है" कहकर कारवाँ-बाशी की गर्दन को पकड़ कर उसे घुटने मोड़ भूमि पर बैठा दिया।

इसके बाद अमीर के बैठने के कमरे की देहली से आगाशी (अफसर) ने ऊँचे स्वर में कहा—"व-अ-ले-कुम्-अस्-स-ला-म्!"

यह मानो कारवां-बाशी की कोरनिश् (दण्डवत) का उत्तर था। कारवां-बाशी ने दोनों घुटनों को टेक कर जमीन पर बैठे दोनों हाथ आकाश की ओर उठाये दुआ की। अमीर ने उसकी ओर हाथ फैलाया। यह ऐसी कृपा थी, जिसे प्राप्त करने का सौभाग्य बहुत कम आदमियों को होता है। उदेची के इशारे पर कारवां-बाशी खड़ा हो गया और हर पग पर कोरनिश करते उस कमरे के द्वार पर पहुँचा, जिसके भीतर अमीर बैठा था। अमीर का हाथ दो हाथ की ऊँचाई पर फैला हुआ था। कारवां-बाशी ने उसे अपने दोनों हाथों में ले पहले आंखों से मला, फिर जबतक अमीर ने हाथ खींच नहीं लिया, बड़ी इज्जत से उसे चूमता रहा। जान पड़ता था जैसे गाय अपने नवजात बच्चे को चाट रही है। हस्त-चुम्बन की रसम पूरा हो चुकने के बाद कारवां-बाशी, आस्ताना (सिंहासन) के नीचे बैठ हाथों को उठाकर दुआ करने लगा। फिर उदेची के "उठो चलो" कहने पर उठकर कोरनिश करते बिना पीठ दिखाये सलामखाना के बाहर निकल आया।

वहाँ दरबारियों ने उसे चींटी की तरह घेर लिया। वह मुर्दाखोर कीड़ों की तरह चाहते थे, कि अमीर के सामने से पसीने-पसीने हो सड़े मुर्दे की तरह मंहकते कारवां-बाशी के मोटे-गन्दे शरीर को नोचकर खा जायें। "मुबारकबाद", "इससे भी बड़ी दौलत प्राप्त हो", "खुदा बरकत और खैरियत बढ़ाये", "बख्शीश लाइये", "कमर की थैली खोलिये", "जनाबआली की कृपा के अनुसार हिम्मत दिखलाइये" की आवाज एक ही बार दसों मुंह से निकलकर कारवां-बाशी के कान

के पर्दों को फाड़ रही थी। कारवां-बाशी बटुए का मुंह खोलने के लिये बाध्य हुआ और किसी को पांच तंका किसी को दो तंका किसी को ज्यादा किसी को कम सबको उनके दर्जे के अनुसार इनाम देने लगा। लेकिन लेनेवाला चाहे कम मिला हो या ज्यादा, पहले गुस्सा दिखलाता और तंका को कारवां-बाशी के सामने फेंक कर कहता "मेरे हजरत की इतनी कृपा के सामने बस यही हिम्मत है? इसे भी ले जाइये और हलुआ खरीद कर खाइये या अपने बच्चों के लिये बांसुरी खरीद कर ले जाइये। हमारे लिये हमारे हजरत का सलामत रहना काफी है"। लेकिन खूब झगड़ा-झंझट के बाद एक दो तंका बढ़ा देने पर राजी हो जमीन पर फेंके तंकों को बटोर लेता। बख्शीश के लेने-देने में चाहे कितना ही झंझट हुआ हो, किन्तु अंत में सबने संतुष्ट हो कारवां-बाशी को दरबार से बड़े सम्मान के साथ बिदा किया।

कारवां-बाशी दरबार से सराय की ओर चला। रास्ते में बाजार के लोग कमखाब के जामे और पगड़ी में बड़ी यालिक को देखकर इज्जत से सलाम करते; जान पहिचान न होने पर भी कितने ही "मुबारक हो" कहने से भी बाज न आते। कारवां-बाशी के अनुचर ने सड़क के झाड़ूदार को "ठहर-ठहर कहकर रोक दिया। झाड़ूदार ने किनारे खड़े होकर पीछे से "मुबारक हो नयी मौत" कहकर हंसी की। कारवां-बाशी सबसे सलाम, सम्मान, मुबारकवादी लेते इतना फूला हुआ था, कि उसे झाड़ूदार की बात का अर्थ नहीं मालूम हुआ और उसकी ओर भी शिर झुका कर प्रसन्नता प्रगट की।

सराय **पाय-आस्ताना** में भारी भोज की तैयारी थी। बुखारा के बड़े-बड़े सौदागर, दरबार के अमलदार और खावावाले कारवां के सारे आदमी एकत्रित थे। मिश्री तोड़ी गयी थी, दस्तरखान के ऊपर शीरीनी, बिलायती मिठाई, हलुआ, पिस्ता, बादाम और मेवा से भरी तस्तरियां रखी थीं। मुरब्बा और निशाल्ला साधारण तौर से आधा-आधा प्याला नहीं बल्कि प्याला भर-भर के रखे गये थे।

'मुंह मीठा कीजिये' कहकर मेहमानों में उन्हें बांटा जा रहा था। नगाड़े और सहनाई वाले "शादियाने" (हर्षगीत) बजाने में लगे थे। "मुबारकबाद" और जनाब आली के लिये आशीर्वाद के शब्दों से आकाश गूंज रहा था।

यह सारा महोत्सव, तड़क-भड़क और प्रदर्शन इसीलिये था, कि आज दो मासूम नव-तरुण दास-दासियों की इज्जत-पानी के बर्बाद करने का आरम्भ हुआ था और आरम्भ कारवां-बाशी के अमीर के पास उनकी भेंट से हुआ था।

६

दासों का जीवन

शाफ़िर-काम तूमान के म० गाँव में अब्दूरहीम बाय की हवेली में काम जोरों पर था। कड़ी से लटकते तराजू पर पल्ला रखा हुआ था और पांती से खड़े किसानों के गूज़ा (बिना ओटी कपास) को तौला जा रहा था। (तराजू की ओर) निगाह कर के किसी ने कहा—आरतुक, रस्सी ढीली है।

—खातिरजमा रहिये, आका बाय—तराजूदार ने कहा—रस्सी भले ही ढीली हो मेरा हाथ ढीला नहीं है।

एक किसान को बाय की इस बुझौअल पर संदेह हुआ और वह बोल उठा—खुदा को हाजिर देखिये। अका आरतुक।

—अपना मुंह बन्द कर यलूमां—तराजूदार ने आग-बगूला हो किसान से कहा—मेरे लिये जैसा तू वैसा ही बाय। बाय क्या कयामत में मेरी सिफारिश करेगा कि तेरा माल चुराकर उसे दे दूं। मैं तो अपनी मेहनत में बस उसी एक मुश्तक (मुठिया) का आसरा रखता हूँ।

—अच्छा नाराज न हो अक आरतुक—किसान ने दबकर आदर के साथ कहा—ध्यान रखें, भूल न हो जाय, इसीलिये मैंने कहा।

—हर पेशा और काम का पैर धरती पर होता है, किन्तु तराजूदारों का पैर तराजू के सितारे (सूई) की ओर आसमान में होता है। हमसे भूलचूक नहीं हो सकती।

—बस कर आरतुक!—मूँछ पर ताव चढ़ाते दूसरे किसान ने कहा—तराजू का सितारा (तुलाराशि) जहाँ कि तेरा पैर है, सदा एक तरह चक्कर नहीं काटता है। यदि तुला (सितम्बर) के महीने में वह सीधा होता है, तो साथ ही एक ओर ऊंचा और दूसरी ओर नीचा भी होता है।

सभी किसान हंस पड़े। एक और किसान ने कहा—मसल नहीं सुनी है "यदि देश में चोर न हाथ न लगे, तो तराजूदार को मीरशबखाने (थाने) में

भेज देना चाहिये।"—जिसे सुनकर लोग और हंस पड़े और स्वयं तराजूदार भी अपने को न रोक सका।

तराजूदार बड़ी तत्परता से काम कर रहा था। पल्लादार भी मुस्तैद था। तराजूदार अभी तराजू से हाथ नहीं हटाता, कि पल्लादार पल्ला से चीज उतारने लगता। मुश्तकची (मुठिया निकालनेवाला) भी अपने काम में चतुर था। वह हर किसान के कपास के अन्तिम तराजू से मुश्तक निकालता, मुश्तक निकालते वक्त अपनी चौड़ी आस्तीन को भी लगाकर एक मुट्ठी की जगह कम से कम आध पूद (दस सेर) कपास जमीन पर गिरा देता।

—वाय दाद (हाय न्याय करो)! मैं एक मन से अधिक कपास का अन्दाजा कर के लाया था, लेकिन यहाँ एक मन से एक पूद[1] कम निकली—कहकर एक किसान चिल्ला उठा।

—तू तो अन्दाज करके लाया था, मैं एक मन तोलकर ऊपर से मुठिया के हक को भी डालकर लाया था, लेकिन यहाँ दश सेर कम हुआ—कहते दूसरे किसान ने जवाब दिया।

—अच्छा, जरा कम हुआ तो क्या हो गया। कपास हवा लगने से सूख जाती है, बोरा फटने से रास्ते में गिर जाती; फिर कम क्यों नहीं, होगी—पल्लेदार ने जवाब दिया।

—तुम क्या कपास को खरीद कर लाये थे, कि नुकसान उठा रहे हो? जमीन की पैदावार भगवान् का दिया माल है—कहते बाय[2] के गुमाश्ता नबी पहलवान ने उनका मुँह बन्द करना चाहा।

बाय तौल से सन्तुष्ट था। उसने फिर वहाँ जाने की आवश्यकता न समझी। वह एक किनारे एक लम्बे चौड़े तख्तपोश पर बैठा था। उसकी एक ओर कलमदान और स्याहीदान रखा था और दूसरी ओर तंकों और पूलस्याह (ताँबे के पैसों) की ढेरी। बाय सामने बही को रखकर हिसाब कर रहा था। इसके माल से १ मन और उसके माल से डेढ़ मन चुराये माल का हिसाब लगा रहा था। हिसाब करते समय वह माल और तंके के भिन्न अंश का हिसाब न करता था। लेकिन अपने बारे में एक-एक कौड़ी का हिसाब लगा रहा था। हिसाब भी ऐसे लगा रहा था,

१. पूद = पाँच सेर = १६ किलोग्राम = २० सेर भारतीय।

२. मध्य-एसिया में सेठ-साहूकार को बाय कहते थे।

कि किसान उसे आसानी से न समझ सकें। हिसाब के अनुसार जो दाम किसानों को मिलता, उसमें से वसन्त में बुआई के वक्त उधार दिये बीज और गल्ले का दाम सूद-सहित काट लेता। फिर किसानों के साथ साल भर की मेहनत का भी जो बच जाता, उससे एक महीना भी काटना मुश्किल था।

सन्ध्या होने को आयी, सूर्य अस्त होने वाला था, आज के आये कपास को तौला जा चुका था। बाय ने पैसे के थैलों को मेहमानखाने में लाकर लोहे की सन्दूक में रखा और बही तथा दूसरे हिसाब के सामान को मेहमानखाने के ताक में रखा। हस्त-पाद-मुख-प्रक्षालन कर खण्डित और विहित के साथ सारी नमाज पढ़ी। तराजूदार, पल्लादार, मुश्तकची, और गुमश्ता भी हाथ धो मेहमानखाने में आकर बैठे। चिराग जलाया गया। तराजूदारों के साथ हिसाब शुरू हुआ। बाय चाहता था, कि तराजूदार और उसके साथियों को मजदूरी में आधमन कपास दे। मगर तराजूदार राजी नहीं हुआ, वह कहने लगा :

—आज मैंने जो ५० मन कपास तौली, उसमें से ५ मन अधिक छीन कर आपको दिया। इसमें आधा मेरा हक हलाल है। इन्साफ कीजिये अका बाय।

"इन्साफ दीन-साफ" (न्याय शुद्ध-धर्म है) कहा गया है।

—क्या यह चार मन कपास पैसा बनकर मेरी जेब में चला आया? इसपर हजारों खर्च हैं। रूई ओटने वाले को पैसा देता हूँ। बाँधने वाले को पैसा देता हूँ, ऊँटवान को पैसा देता हूँ। ऊँटों को चारा देता हूँ, जनाब-आली को कर देता हूँ, आकपाश्शा (सफेद बादशाह, रूसी जार) को महसूल देता हूँ। इस सारे खर्च-वर्च के बाद माल को ओरेनबुर्ग या त्रुइत्स्की में ले जाकर बेचूंगा, यदि आने जाने के वक्त कजाक डाकुओं से बँच पाया, तो यह पैसा मेरे खीसे में आयगा। तू इन सारे खर्चों का बिलकुल ख्याल न कर इस चार मन कपास को चुराया माल समझ रहा है।

काफी हुज्जत के बाद बाय ने तराजूदार को एक मन और पल्लादार तथा मुश्तकची दोनों को मिलाकर आध मन, सब मिलाकर डेढ़ मन का दाम दे उन्हें राजी कर लिया।

बाय ने किवाड़ पर तिक्-तिक् की। दो दासियाँ चाय और दो थाल घी-वाला पोलाव लेकर आयीं। चोरी के माल के लिये जो किच्-किच् हुई थी, अब उसका प्रभाव दिल से दूर हो गया था और सबने हँसी-खुशी से पोलाव खाया।

जाने के लिये तैयार तराजूदार आतुंक ने बाय से पूछा—कल काम है ?

—नहीं—बाय ने कहा—कल आराम करो। आज के खरीदे कपास को कल मैं स्वयं तोलकर ओटने वालों को दूंगा। जो काफी कपास जमा हो जायगी, तो तुम्हारे पास आदमी भेजूँगा, फिर आकर काम करना।

बाय ने तराजूदारों के साथ बाहर जाते अपने गुमाश्ते से कहा—नवी पहलवान, तू कल सवेरे आकर काम में मदद करना।

"बहुत अच्छा" कहकर पहलवान तराजूदारों के पीछे-पीछे चला गया।

बाय भी चिराग बुझा पेट खुजलाते हवेली के दरवाजे पर पहुँचा और वहाँ अँधेरे में दो-तीन आदमियों को देखकर बोला—कौन है ? कौन आये हैं ?

—हम—आनेवालों में से एक ने जवाब दिया। "दास, कमकर"—कहकर नवी पहलवान ने व्याख्या कर दी।

—अशुर तुम सब हो ? क्यों काम से इतना सवेरे चले आये ?—बाय ने फटकारते हुए कहा।

—कैसे सवेरे ? आदमी आदमी को देख नहीं सकता ! क्या यह सवेरा है ? क्या अँधेरे में वहाँ काम हो सकता है ?—अशुर ने कहा।

—अच्छा, बहुत बक-बक न करो। ओटनीखाने में जाकर ओटनी पर बैठो—बाय ने नाराज होकर कहा।

—रहने दीजिये, अभी हम खाना-वाना खायेंगे। काम से अभी लौटे हैं।

—अभी खाना तैयार नहीं है। जबतक खाना तैयार होता है, तब तक एक मुट्ठी रूई ओट लेना अच्छा है। बेकार रहने से क्या मिलेगा ?

—दास भूख से मरे। कमकर बीमार हो अपनी जान दे और तुम्हें काम चाहिये—कह कुरकुराते अशुर ढोरखाने के पास के एक घर में चला गया और भीतर से मिट्टी का चिराग ले बाहर आ बाय से बोला—दियासलाई दीजिये, इसे जलाऊँगा।

दियासलाई ! दियासलाई ! हर समय दियासलाई—कहते क्रोधभरी आवाज में बाय ने फिर कहा—क्या चिराग बालने के लिये भी दियासलाई की जरूरत ? जा गाँव में कहीं अलाव या चूल्हे से इसे जला ला।

—हमारे मिरजा (स्वामी) के लिये एक तीली दियासलाई अशर्फी है—अपने मन में कुरकुराते अशुर ने आगे बढ़कर "गुल्फाम" कहकर आवाज लगायी

और "खुश" की आवाज सुनकर उसे चिराग जलाकर देने के लिये कहा।

—जल्दी कर गुलफ़ाम, काम रुका हुआ है—ऊँची आवाज से बाय ने कहा।

घर के अन्दर से एक मध्यवयस्क स्त्री आकर अशुर के हाथ से चिराग ले गयी। जिस वक्त गुलफ़ाम ने चिराग जलाकर उसे अशुर के हाथ में दिया, बाय ने उससे कहा—जल्दी कर कपास को ढो कर ला। ये सारे बेकार हैं।

अशुर ने चिराग को अन्दर ला मकान के बीच में एक लकड़ी की दीवट पर रख दिया और एक ओटनी को सामने रख घुटनों के बल बैठ गया। दूसरे दास और कमकर भी घर के अन्दर आ एक-एक ओटनी सामने रखकर बैठ गये। गुलफ़ाम और दूसरी दासियों ने खोल से अलग किये कपास को टोकरों से ढोकर एक-एक टोकरा हरएक के सामने रख दिया। बाय घर के द्वार पर खड़ा दासों के काम को देख रहा था। गुलफ़ाम जब टोकरा खाली कर चुकी तो बाय बोला—

—अभी एक-एक टोकरा कपास और लाकर हर एक के सामने रख। खाना खा चुकने के बाद दो-दो टोकरा और लाकर रखना। ये बहुत सुस्ती से काम कर रहे हैं। इनके लिये हर रात तीन टोकरी कपास ओटना जरूरी है। कल सवेरे ही काम पर जाना भी जरूरी है।

बाय की इन बातों को सुनकर द्वार के पास ओटनी लेकर बैठे रज़ाकुल ने कहा "सलामत रहो मेरे मिरज़ा, हमारे ऊपर बड़ी कृपा कर रहे हो।"

दास और कमकर हँस पड़े। अशुर ने मुस्कुराते हुए कहा—एक मेहरबानी और कीजिए। भूख के मारे हाथ नहीं हिलते, ओटनी कपास नहीं पकड़ती। ऐसे काम से आपको क्या लाभ होगा? हुक्म दीजिये कि जल्दी आश (खिचड़ी) लाये, ताकि जान में जान आये और हाथ भी चले। बाय ने ओटनी की ओर से आँख को हटाये बिना कहा "आ रहा है, आ रहा है, काम करो।"

ओटनियाँ चर-चर चल रही थीं। मांस पीसनेवाली मशीन की तरह उनके पीछे से रूई निकल रही थी, लेकिन जिस समय बिनौले आ पड़ते उस समय ओटनी को फेरना हाथों के लिये कठिन हो जाता, और मजबूरन उलटा घुमाकर फिर दुबारा चलाना पड़ता। इसे देखकर बाय कहता :

—क्यों इतना दुबारा कर रहे हो? क्यों एक चक्कर में उसे नहीं घुमाते।

—क्यों आपने को ओटनी के दाँतों को इतना बड़ा किया कि वह पहले से दूना हो गया है? इस भूख में इतने बड़े दांतों की ओटनी के चलाने में प्राण निकल रहे हैं।

—मैंने खेलवाड़ के लिये दांतों को बड़ा नहीं बनवाया—बाय ने क्रोध से कहा—ओटनी का दांत जितना बड़ा होता है, उतना ही वह अधिक बिनौले खाती है, जितने ही बिनौले अधिक खाये जायेंगे, उतनी ही रूई अधिक भारी होगी और दाम अधिक मिलेगा।

—हमारा मिरज़ा (स्वामी) जैसे किसानों को धोखा देता है, तराजूदार को देता है, वैसे ही रूसी कारखानावालों को भी—अशुर ने धीमी आवाज में अपने पास बैठे फरहाद से कहा। दोनों हंस पड़े।

—क्या बात करते हो ? क्यों हँसते हो ? काम करना पसन्द नहीं आता ?—कहकर बाय ने फटकारा।

कीचड़ में पड़े एक्का की पहियों की तरह ओटनियाँ चर-चराती बहुत धीमी धीमी चल रही थीं। धीरे-धीरे काम करने वाले इतने सुस्त हो गये, कि दो तीन बार उलटा घुमाकर भी रूई को पार कराना कठिन हो गया। बाय ने देखा, काम कुछ नहीं हो रहा है। उसने गुल्फ़ाम को खिचड़ी लाने को आवाज दी और अपने मन में कहा "गुलाम बहुत सरकश होते हैं, जब तक उनकी बात न मानी जाय काम ठीक से नहीं करते"।

खिचड़ी (आश) का नाम सुनकर सोयी भूख और जाग उठी, हाथ और भी सुस्त हो गये। बाय काम को बिलकुल बन्द देखकर जल्दी खाना लिवाने के लिये स्वयं हवेली के भीतर रसोई घर में गया। वहाँ रिजवाँ खिचड़ी पका रही थी। गुल्फाम और दूसरी दासियाँ रोटी आदि बनाने में लगी थीं। बाय गाढ़ी खिचड़ी को देखकर चिल्लाते रिजवाँ को खाने दौड़ा—तू है तो मेरी क्रीत दासी, किन्तु जबसे मुझ से पुत्रवती बन मेरी पत्नियों में सम्मिलित हो गयी; तब से मैंने सोचा, अब तू मेरे माल को अपना माल समझ कर रक्षा करेगी, लेकिन मैंने भूल की। कमीना कभी ठीक नहीं होता। अब भी तू अपने दासीपन को भूली नहीं, अब भी तू मेरे माल को अपने सजातियों को मोटा बनाने में बर्बाद कर रही है।

बाय ने चिमटा उठा रिजवाँ को मारना चाहा, किन्तु रिजवाँ कलछी फेंक कर रसोई-घर से भाग गयी। बाय ने "हे अल्ला" कहकर क्रोध के जरा ठंढा होने के बाद "कलमक" कह कर आवाज दी।

—लब्बैक (जी सरकार)—कहती एक स्त्री दौड़ी आई।

—तू मेरी सभी बीबियों में अधिक भली है। अब से हंडा-थाल अपने हाथ में

सम्भाल । इस खिचड़ी में इतना ही और पानी डाल कर फिर से चढ़ा दे। आधा इसमें से आज दासों को खाने को दे, बाकी को कल सवेरे गरम करके देना—रसोई घर से निकलते बाय ने फिर कहा—चूल्हे के नीचे कंटीला ईंधन डाल, जिसमें देग जल्दी उबलें। ये बन्दक (बँधुए) तब तक काम न करेंगे, जब तक खिचड़ी न खा लेंगे।

बाय बाहर चला गया। स्त्री ने चूल्हे में और कांटा डाल दिया, कांटा शितिर-शितिर करके जलने लगा और रजो-मिश्रित ज्वाला उठने लगी। स्त्री ईंधन डाल धूंआवाली आग को देखती रही। सारा रसोई घर काले धूंए से भर गया। स्त्री उस धूंए में बैठी एक-एक करके अपनी जीवन-घटनाओं पर दृष्टि डालने लगी।

वह कल्मक (मंगोल) जाति की थी। कल्मक-मैदान में मां-बाप और अपने कबीले के साथ स्वच्छन्द जीवन बिता रही थी। क़ज़ाकों ने आक्रमण किया, लड़ाई हुई, बहुत से कल्मक मारे गये, बाकी भाग गये। लूट के माल के साथ यह स्त्री भी क़ज़ाकों के हाथ लगी। उस समय वह एक नव-तरुणी थी, ओरेनबुर्ग से लौटते वक्त अब्दुररहीम बाय ने उसे क़ज़ाकों के हाथ से खरीदा। उसके सौन्दर्य को देखकर उसे अपनी पत्नी बनाया और पहले पहल "असलजादी" (सुजाता) बीबियों से भी अधिक मानता था। जब उसे एक लड़का पैदा हुआ, तो बाय ने उसे विवाहिता पत्नी बना लिया और उसे हन्डा-थाल की रानी बना दिया। अब बाय की बीबियां और दास इस कल्मक-पुत्री को कल्मक-आयम् कहने लगे। "दुनिया में कोई वस्तु स्थायी नहीं" की कहावत के अनुसार बाय का प्रेम भी ढीला पड़ा। जब उसने रिज़वाँ को खरीदा, तो उसके सौन्दर्य ने बाय के मन को कल्मक आयम् की ओर से बिलकुल खींच लिया। पुत्र होने के बाद रिज़वां अब बाय की विवाहिता पत्नी हो गयी। कल्मक-आयम् नजर से बिलकुल गिर गयी और रिज़वाँ की बात चलने लगी। किन्तु अब रिज़वाँ भी प्रौढ़ा हो गयी। अब बाय क्यों दूसरी बीबियों से अधिक उसे चाहता। बीबियों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता से लाभ उठा रसोईखाने के खर्च में कमी करने का अवसर हाथ आया। इस तरह रिज़वां रसोई-घर से निकाली गयी और उसकी जगह कल्मक-आयम् बैठायी गयी।

कल्मक-आयम् सारी बातों पर सोच रही थी, किन्तु नहीं जान पाती थी, कि

भविष्य में उसपर क्या बीतनेवाला है। उस धूम-मिश्रत कांटे की आग से अधिक प्रकाश वह अपने भविष्य पर नहीं पाती थी। कांटा अब भी शितिर-शितिर कर के जल रहा था। कल्मक आयम् ने उसी ताल पर गुनगुनाना शुरू किया :

सुखी थी मैं	उस कल्मक-भूमि में।
सदा थी खाती	दूध दही कैमक मैं।
अब हूँ दासी	एक निर्बुद्धि की।
हूँ खून पीती	आंखों बहाती।
बन्दी बनी हूँ	एक नामरद की।
कभी बड़ी बनी	कभी हूँ छोटी।
जो भी स्त्री आये	उसे वह लेता।
एक स्त्री के ऊपर	सौ स्त्री है लेता।

देग उबलने लगी। आग की ज्वाला भी बैठने लगी। कल्मक-आयम् ने भी मुंह पर बिखरे आंसुओं को आस्तीन से पोंछकर खिचड़ी को निकालना शुरू किया।

१०

कारवाँ की तैयारी

गाँव के गरीब बेकार आदमियों ने सुना, कि अब्दुर्रहीम बाय ओटने के लिये कपास दे रहा है। वह बाय की हवेली के सामने जमा हो गये। उनमें कुछ थे जो कल अपने कपास की ऋण चुकाई में दे आये थे। बाय एक मन[1] कपास साफ कर के ओट कर सत्रह चारयक शुद्ध रूई और आध मन बिनौला माँगता था, जिसके लिये चार तंका मजदूरी देना चाहता था। किसान मजबूर थे। बाय ने घर पीछे एक मन कपास देना तय किया। आज तराजू पर वह खुद बैठा था

१ एक मन = एक सौ पचीश किलोग्राम = एक सौ सवा छप्पन भारतीय सेर, १ चारयक = दो किलोग्राम = २॥ भारतीय सेर। १७ चारयक = ३४ किलोग्राम, १ किलोग्राम = भारतीय सवा सेर।

और नबी पहलवान पल्लादार बनकर सहायता दे रहा था। बाय ने सबको कपास दे दी। फिर बही लेकर हर आदमी का नाम, कपास, शुद्ध रूई, बिनौले के परिमाण तथा लाकर देने के समय को लिखा। इस तरह कल खरीदी सारी कपास आज बाँट दी गयी। लोग अपनी अपनी कपास लेकर घर चले गये। बाय ने नबी पहलवान के सामने सारी कपास का हिसाब जोड़ा, वह ५८ मन थी।

—है-है कितना अच्छा—नबी पहलवान ने कहा—आप तराजूदारी में आतुंक से कम नहीं हैं।

—अलबत्ता—बाय ने कहा—बाय (सेठ) होने के लिये दुनिया की सारी हरामजादगियों का जानना और करना आवश्यक है; अन्यथा सिर्फ पैसा स्वयं कुछ नहीं कर सकता। वह उस हाथ में जमा भी नहीं होता, जो चोरी हरमजदगी नहीं जानता।

—यदि तराजूदारी में आप इतने चतुर थे, तो क्यों आतुंक को बुलाकर आपने उसे डेढ़ मन कपास का दाम दे डाला? क्यों नहीं स्वयं तौल लेते?

—तू अभी बहुत भोला है पहलवान—बाय ने कहा—प्रथम तो यह कि मैं आतुंक को तराजू पर बैठाकर ठलुआ नहीं रहा। उसे मैंने १॥ मन कपास का दाम दिया, तो उसके द्वारा और अधिक मूल्य का माल मैंने किसानों से लिया। यह काम मैं नहीं कर सकता था। द्वितीय बात यह है, कि यदि मैं स्वयं तराजू पर बैठता और किसान अपने कपास कम हुए देखते, तो वे मुझसे भड़क कर दूसरे बाय का लक्ष्य बनते। इस समय जो कोई बुराई होती, उसका दोष आतुंक के शिर पर पड़ता है और मैं एक सच्चा ईमानदार लोगों के हक को न मारने वाला समझा जाता हूँ।

अपनी इन बातों से बाय स्वयं अपनी दृष्टि में गिर गया था, तो भी वह अपना परिहास उड़ाते हँसते हुए नबी पहलवान से बोला:

—अभी तू जवान है। अभी तुझे इन कामों का अनुभव नहीं है। अभी तू अखाड़े में अपने प्रतिद्वन्द्वी जवान को पछाड़ने का दाव-पेंच जानता है; किन्तु व्यवहार व्यापार के अखाड़े में लोगों को धोखा देना, लोगों से काम लेना नहीं जानता। अपने सारे रहस्यों को खोलकर मैं तुझसे इसीलिये कह रहा हूँ, कि तू भी इन हथकण्डों को सीख, जिसमें कि मेरे न रहने पर मेरी तरह काम कर

सके। तू मेरा गुमाश्ता है। जब तू मेरे सारे हूनरों को अपना लेगा, तभी वस्तुतः तू मेरा गुमाश्ता हो सकता है।

× × ×

इसी समय फाटक से एक सवार भीतर आया। नबी पहलवान ने फुर्ती से उठकर सवार के हाथ से घोड़े को ले खूँटे से बाँध दिया। सवार पास आकर बाय के साथ दुआ-सलाम करके तखतपोश पर बैठा।

—यहाँ कैसे कँजा पायकार ?—कहते बाय ने हालचाल पूछी।

—खुदा का शुक्र, सब ठीक है, आप से भी वही पूछता हूँ—कहते पायकार (दूत) ने उत्तर दिया।

—शुक्र, मैं भी अच्छी तरह हूँ। दिन में पाँच बार नमाज पढ़ने के बाद हर बार तुम्हारे जैसे गुणग्राहियों के लिये दुआ करता रहता हूँ। कारवाँबाशी तो सानन्द है ?

—शुक्र, बूढ़े हो गये हैं, तो भी जवान घोड़े की तरह दौड़ते फिरते हैं। आप के लिये दुआ-सलाम भेजा है।

—सलामत रहें। काम के बारे में कहो। काम कैसा चल रहा है ?

—बुरा नहीं है, काम ठीक है। कुरगान बर्दानूज़ा के बायों ने अपना काम खतम कर डाला। करबास, कलमी, अलाचा, सिले जामे जैसे सारे माल बाँधकर तैयार हैं। अब सिर्फ रूई और मेवा का काम रह गया है।

—शहर-बुखारा की क्या खबर है ?

—कारवाँ-बाशी ने स्वयं पत्र लिखकर मुझे बुखारा में मीर बदल कारवाँ-बाशी (सार्थवाह) के पास भेजा था। उनके कथनानुसार डेढ़-दो महीने में बुखारा के बायों की भी तैयारी पूरी हो जायगी।

—ठीक है "हर गदहे के पास अपने लायक छानन" की कहावत के अनुसार बुखारा के बायों के हाथ माया से भरे, उनकी खरीद भी बड़ी, उसी के अनुसार तैयारी में भी उनका समय अधिक लगता। हमारे तूमान (परगना) के बाय अधकचरे बाय हैं, वे थोड़े ही समय में अपनी तैयारी कर लेते हैं। ऊँटो की क्या हालत है ?

—इस साल ऊँट खूब मोटे ताजे हैं। एक मास हुआ जुगाज़[1] किया था। आपके ऊँट कैसे हैं?

—मेरे ऊंट भी इस साल बड़े तैयार हैं। जुगाज़ लगाये डेढ़ मास हो गये। फिर ठंडा करके काम पर लगाया। अब गिजदुवान और समरकन्द के बीच किरायादारी कर रहे हैं।

—किराये की लालच में कहीं ऊंटों को दुर्बल न करवा डालिये। जानते हैं कि किला (ओरेनबुर्ग) की यात्रा बहुत कठिन है।

—अपने ऊंटों पर मुझे पूरा भरोसा है, इसीलिये मैंने उन्हें किराये पर लगा दिया। मैं २० साल का किलाची हूँ। सिर्फ ओरेनबुर्ग और त्रुइत्स्की ही नहीं इरवित् भी हो आया हूँ। इन यात्राओं में मेरे ऊंट कभी मांदा नहीं हुए। किला की यात्रा में वरदांजा के कारवाँ के ५०० ऊंटों में सबसे अच्छे ऊंट मेरे होते हैं।

—बहुत अच्छा, मैं नहीं जानता था, क्षमा करें—पायकार ने बड़े विनम्र स्वर में कहा।

इसी समय बाय की दृष्टि गुलफ़ाम पर पड़ी। वह कूजा लेकर पानी भरने जा रही थी। उसे बुलाकर बाय ने कहा—कूजा छोड़, पहले भीतर जाकर दस्तरखान ले आ, और चाय गरम कर—फिर बाय ने मेहमान से कहा—गपशपें में चाय भी भूल गये।

—कोई हर्ज नहीं—मेहमान ने कहा—मैं आपकी चाय नई नहीं पी रहा हूँ।

—कहते हैं क़ज़ाक़ डाकू बड़े बढ़ गये हैं। इसके बारे में कारवां-बाशी ने क्या प्रबन्ध किया है।

—कारवाँबाशी ने पाँच जज़ायर (छोटी तोपें) और, २५ बलिष्ठ जवान जमा किये हैं। हमारे कारवांबाशी ने भी तीन जज़ायर और बीस जवान तैयार किये हैं। दूसरे बायों में से भी प्रत्येक के पास एक दो बन्दूक और तमंचा है।

—मैं भी इस सप्ताह बुख़ारा जा रहा हूँ, यदि मिल सकी तो एक बन्दूक खरीदूंगा।

—अरे, एक बात तो भूल ही जा रहा था—कहते पायकार ने बगल की जेब

---

[1] उस देश में गरमियों में एक दो मास ऊँटों को नंगा छोड़ देते थे। फिर उनपर नया जुगाज़ (पलान) रखकर काम शुरू करते हैं। पहले जमाने में जुगाज़ रखने की विधि बड़े ठाट-बाट से मनायी जाती थी।

में हाथ डाल एक पत्र निकाल कर कहा—बुखारा से कारवांबाशी के नाम एक पत्र आया था। उन्होंने इसे आपको दिखलाने के लिये मुझे दिया।

बाय ने पत्र को लेकर पढ़ना आरंभ किया :

"तूमान वर्दान्ज़ा के कारवाँबाशी जनाब मुहम्मद अज़ीम बाय कारवाँबाशी की सेवा में, बहुत बहुत दुआ और सलाम के बाद मालूम हो, कि आज ही खीवा के कारवाँ के साथ हमारी सराय में बहुत सी दासियां और दास-बच्चे आये हैं। इनमें से अधिकतर की भौंहे धनुष-सी, कमर चींटी सी, मुख पिस्ता सा, दांत मोती से हैं। यह गुलाब से खिले, सरो से सीधे, चाँद से चमकते, हृदय को खींचने में निष्ठुर और आफ़त के परकाले हैं। यदि दास और दासी की आवश्यकता हो, तो बाजार में आना न भूलें।

निवेदक, पाय-आस्ताना सराय का
इजारादार अकरमबाय"

अब्दुर्रहीम बाय पत्र पढ़कर बहुत प्रसन्न हो बोला—बहुत अच्छा, मैं एक दास-बच्चा खरीदनेवाला था। अच्छा हुआ जो यह पत्र आ गया। आज ही रात को या कल सवेरे बुखारा जाऊँगा।

मेहमान के लौटते वक्त बाय ने कारवांबाशी के पास सलाम भिजवाया। फिर नबी पहलवान की ओर दृष्टिपात करके बोला—जब तक मैं बुखारा से लौटूं, तब तक ओटने के काम को फुर्ती से करवा तैयार रूई को बंधवा कर रख छोड़। किसान यदि कपास लायें, तो न तोलवाना। यह काम मैं खुद आकर के करूंगा।

नबी पहलवान अपने घर गया और बाय बुखारा की यात्रा की तैयारी करने लगा।

११

(दासों का क्रय-विक्रय)

भोर ही पाय-आस्ताना की सराय में झाड़ू देकर छिड़काव हुआ था। सराय का भारी समावार (चाय-वर्तन सहित चूल्हा) भी उबल रहा था। सराय के बिचले खंड में कालीचा के ऊपर अकरमबाय इजारादार पालथी मारकर बैठा

था। सरायवान ने गरम चाय लाकर दी। अकरमबाय ने उसके ऊपर अपनी रूमाल को चार तह करके रख दिया और तश्तरी में रखी गरम रोटी को तोड़कर खाना आरम्भ करना ही चाहा, कि इसी समय दरबार का एक मोहरम (राज भृत्य) सराय के अन्दर पहुँचा। मोहरम के कमरबंद में रूपहला कमर-बंद बंधा था, जिससे चिनार की लकड़ी का एक चौकोर कलम-दान लटक रहा था'। उसने आकर इजारादार से पूछा :

—खीवा के सौदागरों के कारवाँबाशी जनाब मुहम्मद करीमबाय एशक आका बाशी का कमरा कहाँ है ?

अकरमबाय ने जल्दी जल्दी उठकर "कृपा कीजिये, मैं रास्ता बतलाता हूँ" कहते मोहरम को लिये कारवाँबाशी के कमरे के द्वार तक पहुँचाकर कहा—आप यहीं हैं।

—सलामत रहें, अब आप लौट सकते हैं। मैं जनाब एशक आकाबाशी के पास जनाब आली की गुप्त आज्ञा पहुँचाना चाहता हूँ।

अकरमबाय शिर नीचा कर सम्मान प्रदर्शित करके लौट गया। मोहरम कारवाँबाशी के कमरे में प्रविष्ट हुआ।

कारवाँबाशी ने गरमागरम सलाम और कुशल-मंगल पूछते बड़े सम्मान के साथ मोहरम का स्वागत किया। मोहरम के संकेत करने पर चाय डालने वाले अपने नौकर को भी कमरे से बाहर भेज दिया और जनाब-आली की "गुप्त आज्ञा" सुनने के लिये तैयार हो आगन्तुक की ओर देखने लगा।

मोहरम ने चौकोर कलमदान का मुँह खोला। वह दूसरे कलमदान की तरह भीतर से खाली था और एक तरफ खुलता था। खुली जगह पर लकड़ी का एक पतला ढक्कन रखकर उसे रुपहली मेखलाओं से बांधा गया था। देखने में मामूली चौकोर लकड़ी के कलमदान सा मालूम होता था, किन्तु थी यह पत्राधानी। इसमें पत्र रखकर दरबार में ले जाया जाता। अमीर के मोहरम भी राजकीय पत्रों को इसके भीतर रख के ले जाते। मोहरम ने पत्राधानी की मेखला को अलग कर ढक्कन खोला और उसके भीतर से एक पत्र निकाल कर कारवाँबाशी के हाथ में देते हुए कहा "जनाब आली का मुबारकनामा (श्रीपत्र) है"।

कारवाँबाशी ने पत्र को खोला। अमीर की मुहर देखकर उसे चूमकर आँखों से मला, फिर उसे पगड़ी में खोंस कर खड़ा हो गया और दो मील दूर पर अवस्थित

३—दासी के विक्रय पर मुल्लों का फैसला (पृष्ठ ६१)

आर्क की ओर निगाह करके तीन बार कमर दोहरी करके कोरनिश की। फिर बैठ कर पत्र को पढ़ने लगा। यह मुबारकनामा कारवाँबाशी के उस विनती-पत्र का उत्तर था, जिसमें उसने लिखा था "...यदि उचित समझा जाय, तो मैं सभी दास-दासियों को श्रीचरणों में भेंट कर दूँ।" अमीर के मुबारकनामा में लिखा था :

श्री चरणों के कृपापात्र राजरक्षक मुहम्मद करीम बाय एशक आकाबाशी को मालूम हो, कि श्रीचरण सर्वथा सानन्द हैं। तुमने जो विनती-पत्र श्रीचरणों में भेजा था, वह मिला, और लिखित बात मालूम हुई। तुम्हारे दास-दासियों के विक्रय के संबन्ध में श्रीचरणों की स्वीकृति दी जाती है। बाकी वस्सलाम् अलैकुम।"

पढ़ने के बाद कारवाँबाशी ने अमीर के लिये लम्बी चौड़ी दुआ की, फिर थैली खोलकर एक कूज़ा मिश्री के साथ २० तंका खिदमताना मोहरम के सामने रखा, किन्तु जब मोहरम ने "जनाब-आली की इतनी कृपा के सामने यह बहुत कम है" कहा तो एक कूज़ा और देकर उसे प्रसन्न किया

× × ×

"श्रीचरणों की स्वीकृति मिल गयी।" बाजार खुल गया। जिस तरह घोड़ों को झाड़ पूँछ खरहरा करके नई जीन और नया पालपोस डालकर बाजार में लाते हैं, उसी तरह दास-दासियों को भी नये वस्त्रों से सजा सराय की दालान में लाकर पाँती से बैठाया गया था। सराय के बिचले आँगन में चँदवे के नीचे दो-तीन अदरस और शाही के गद्दे बिछे हुए थे। यहीं "एशक आकाबाशी" के दर्जे के अनुकूल बड़ी शान के साथ तीन बालिशों पर तकिया किये कारवाँबाशी बैठा था। एक सुन्दर दास-बच्चा चाय डालकर दे रहा था। दिल बहलाने के लिये अकरमबाय तरह-तरह की मीठी कहानियाँ और बातें सुना रहा था। पहले अकेले-दुकेले फिर पाँच-पाँच दश-दश खरीदार आने लगे। धीरे-धीरे सराय खरीदारों से भर गयी। खरीदारों में बुखारा-निवासी भी थे और तूमानों (परगनों) से आये भी बहुत से लोग थे। उनमें से कुछ अपने लिये दास-दासी खरीदना चाहते थे और कुछ दास-वणिक भी थे, जो व्यापार के लिये दास-दासी खरीदना चाहते थे। अकरमबाय ने तूमानों में पत्र भेजा था, उसका फल दिखलाई पड़ रहा था—बाजार खूब गरम था। आरम्भ ही में दो दास एक सौ बीस तिल्लों (अशर्फियों) में बिक गये। वैसे होता तो उनका ६० तिल्ला भी न मिलता।

लेकिन यह अवस्था देर तक नहीं रही। दास-वणिक इसे कब पसन्द करने लगे ? यदि वे इस भाव पर दास खरीदते, तो दुबारा बेंचने में लाभ छोड़ मूल में भी खोना पड़ता। इसलिये वह आपस में लुक-छिप कर एक दूसरे से कहने लगे।

—हम इतनी दूर से खर्च और तकलीफ सहकर आये हैं। क्या यहाँ से खाली हाथ लौटना होगा ? एक दास-वणिक ने कहा।

—कोई उपाय सोचकर बाजार के भाव को गिराना चाहिये। फिर हम मनमाने भाव पर खरीद सकेंगे—दूसरे ने कहा।

—यह आसान है—तीसरे ने कहा—

—कैसे ?—सभी दास-वणिक उसका मुँह देखने लगे।

—बहुत आसान है—कहकर उसने दूसरों के ध्यान को और भी आकृष्ट किया—खरीदारों के बीच गौगा फैलाना चाहिये, कि अधिकांश दास सुन्नी, इमाम-आजम के अनुयायी अफगानिस्तान-निवासी हैं, और तुर्कमानों के डर के मारे अपने को "किजिल-बाश" (शीया) कह रहे हैं। यह बिककर किसी के घर जायेंगे। पीछे देश के विधिविधान को जान जायेंगे, तो अपने को सुन्नी और अफगान सिद्ध करेंगे, अथवा पीछे से इनके खानदानवाले वंश-वृक्ष और दूसरा सबूत लेकर आयेंगे, और इन्हें छुड़ा ले जायेंगे। इस प्रकार उनपर खर्च की हुई सारी अशर्फियाँ डूब जायेंगी। इसीलिये दास-वणिक होते भी हम खरीदना नहीं चाहते।

यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और दास-वणिकों की ओर से इसका प्रचार किया जाने लगा। परिणाम-स्वरूप उबलती पतीली पर ठंढे पानी की तरह इस प्रचार ने धीरे-धीरे बाजार को ठंढा कर दिया। पहले यदि कोई खरीदार कहता—"इस बच्चे का क्या दूँ ? यह अभी छोटा है, कोई काम नहीं कर सकता। खरीदने के विचार से आया था। खाली हाथ लौटना नहीं चाहता। आइये इसके लिए ५० तिल्ला देता हूँ, "नहीं" मत कीजिये।"

तो नाज करते हुए कारवाँबाशी कहता "तिल्ला संभाल रखिये। पीछे निकालियेगा।" लेकिन अब बाजार गिर गया था। कोई खरीदार नहीं आ रहा था। कारवांबाशी का दिल घबड़ाने लगा। उसने पहले दलालों या अपने आदमियों के द्वारा फिर स्वयं ही उनके बोले दाम पर खरीदारों को राजी करना चाहा, किन्तु अब खरीदार नाज दिखलाते हुए कहते "फिर सोचकर बतलाऊँगा।

इसी समय एक दूसरी घटना घटी, जिससे "एशक आकाबाशी" का होश उड़ गया।

× × × ×

बुखारा-बाजार के दो आदमी एक तीसरे आदमी के साथ सराय के फाटक के अन्दर आये। तीसरे आदमी के शरीर पर अर्ध-सरकारी पोशाक और कमर में सफेद कमरबन्द था। उनके साथ मुँह खोले एक २४-२५ साल की स्त्री भी थी। स्त्री के मुख के एक भाग पर मैला लत्ता बँधा था। उसकी आँखों और भौंहों को देखने से मालूम होता था, कि कभी वह सुन्दरी थी। दोनों आदमियों में से एक ने अर्ध-सरकारी आदमी से चंदवे के नीचे शान से बैठे आदमी की ओर संकेत करते कहा "वह यही आदमी है," और उसके पास जाना चाहा। अर्ध-सरकारी पोशाक वाले, आदमी को पास जाने की हिम्मत नहीं हुई। उसने अपने साथी को भी रोक कर कहा—शायद तू भूल कर रहा है।

—नहीं—आदमी ने कहा—वही है, अंतर यही है, कि जिस समय मेरे बाप ने इससे जहाँआरा को खरीदा था, उस समय इसकी दाढ़ी सारी काली थी, लेकिन अब कुछ बाल सफेद हो आये हैं।

दूसरे आदमी ने कहा—मैं इसके नाम को भी भूला नहीं हूँ। इस आदमी का नाम मुहम्मद करीमबाय है और खीवा का निवासी है।

अर्ध-सरकारी आदमी ने स्वयं पूछने का विचार करके साथ की स्त्री से पूछा—जहांआरा, तू पहचानती है? क्या तेरा पहिला मालिक यही है?

जहांआरा ने खूब ध्यान से कारवांबाशी को देखकर कहा—हाँ, यही है, किन्तु खुदा के लिये मुझे इस शैतान की औलाद के हाथ में न दो। मैं तुम्हारा हाथ जोड़ती हूँ। यह बहुत अत्याचारी आदमी है। जब इसने मुझे तुर्कमान से खरीदा और मुझसे प्रसंग करना चाहा, तो मैंने इससे घृणा की। इसने मुझे चार-मेख[१] करके पीटा और प्रसंग किया। इसके बाद खीवा के अमलदारों (अधिकारियों) में से एक एक के हाथ एक रात के लिये मुझे बेंचा। मैंने इन्कार किया। उनके लिये भी मुझे चार-मेख किया। यही दशा मेरी खीवा से बुखारा आने तक रही। यहाँ आने पर मुझे बेंच दिया। मैं एक आदमी का माल हो गयी, इससे कुछ आराम मिला।

---

(१) चार खूटों में हाथ पैर बांधकर लिटाना।

अर्ध-सरकारी आदमी ने बीच में टोकते हुए कहा—"कुछ भी हो, यह यह आदमी कदापि नहीं हो सकता।" यह तो श्रीदरबार का एक अमलदार है।

"गदहा वही है सिर्फ पलान बदला है" साथवाले एक आदमी ने कुछ ऊँची आवाज में कहा।

अकरमबाय अब भी कारवांबाशी के चुटकुले सुन रहा था। झगड़े-झंझट की आवाज सुनकर उसने उधर निगाह की। वह अर्ध-सरकारी आदमी को पहचानता था। वह काजी कलां (महा-न्यायाधीश) का अधिकारी था। उसने कारवांबाशी से इस बात के जानने के लिये छुट्टी ले काजी-कलां के आदमी के पास जा के पूछा—क्या बात है?

—एक सूखा जंजाल, एक सूखी रोटी का दावा—अधिकारी ने जवाब दिया।

—क्यों सूखा जंजाल और सूखी रोटी का दावा बना रहे हैं—साथवाले एक आदमी ने कहा और अकरमबाय की ओर निगाह कर के फिर कहने लगा—चार साल पहले इस आदमी से मेरे बाप ने इस दासी को ५० तिल्ला में खरीदा था। (यह कहते उसने जहांआरा की ओर संकेत किया)। दो साल बाद मेरा बाप खुदा की बंदगी बजाने चला गया (मर गया)। यह दासी हम दोनों भाइयों को दाय-भाग में मिली। हमने इसको साहब नजर बी के हाथों ५२ तिल्ला में बेंच डाला और दाम को आपस में बांट लिया। कुछ समय बाद दासी के मुंह पर चरक का चिन्ह निकल आया। साहब नजर बी ने हमारे पास आकर सौदा को लौटा दाम वापस मांगा। हमने स्वीकार नहीं किया और कहा कि बेंच दिया सो बेंच दिया, अब लौटा नहीं सकते। उसने कहा "यदि कोई आदमी किसी से घोड़ा खरीदे और वह घोड़ा रात्र्यन्ध या किसी दूसरे दोषवाला निकल आये, तो खरीदार को हक है, कि घोड़े को लौटाकर दाम को वापस ले ले। यह दासी ५२ तिल्ला का माल है। इसमें एक दोष निकल आया। अब इसे लौटा कर तुम्हें मेरा पैसा वापस देना होगा।"

अकरमबाय ने बात को बीच में काटकर कहा—तुमने किसी आदमी के हाथ एक दासी बेंची। वह दोषी निकल आयी। खरीदार दाम वापस मांग रहा है। इस झगड़े को मेरी सराय से क्या संबन्ध?

आदमी ने कहा—अभी मेरी बात पूरी नहीं हुई। इस झगड़े का संबन्ध इसी आदमी से है, जो बड़ी शान से गद्दे पर बैठा है (कहते उसने कारवांबाशी की ओर

संकेत किया), साहब नजरबी ने दावा करके उलेमा (विद्वानों) से रवायत-महजर (व्यवस्थापत्र) लिया। आदमी ने अपनी बगल की जेब से एक व्यवस्था-पत्र[१] निकाल अकरमबाय को दिखाकर कहा—इस व्यवस्था-पत्र पर ईशान आलम और दूसरे तीन मुफ़्तियों (व्यवस्था-शास्त्रियों) ने अपनी मोहर लगायी है और लिखा है, कि यदि कोई आदमी किसी आदमी से माल खरीदे और उसमें ऐसा दोष निकल आये, जो खरीदने के वक्त प्रगट नहीं था, तो खरीदार को अधिकार है कि माल को लौटाकर दाम वापस ले ले।

अकरमबाय ने व्यवस्था-पत्र को हाथ में ले उसपर एक नजर डालकर पूछा—तेरा नाम क्या है?

—नियाज़बाय—आदमी ने जवाब दिया

—सफर बाय कौन है?

—मेरा भाई यह आदमी है—कहते नियाज़बाय ने अपने साथी की ओर संकेत किया।

अकरमबाय ने कहा—इस व्यवस्था-पत्र से यही मालूम होता है, कि एक आदमी ने दासी के सौदा को लौटाने के लिये तुम दोनों भाइयों के ऊपर दावा किया है। इस काम का जनाब ईशक आकाबाशी से क्या संबंध?

नियाज़बाय ने कहा—अभी भी मेरी बात पूरी नहीं हुई। साहब नजरबी ने अमीर के पास आवेदन पत्र दे व्यवस्था-पत्र के अनुसार इशान काजी कलाँ (श्रीमान् महान्यायाधीश) के नाम मुबारकनामा लिया और हमें काजीखाना (न्यायालय) तक घसीटा। हमने ५२ तिल्ला देकर दासी को वापिस लिया। मैंने ईशानकलाँ से प्रार्थना की, कि हमारे बाप ने इस दासी को दूसरे आदमी से खरीदा था और बीच में हम मारे जा रहे हैं। ईशानकलाँ ने कहा—"उस आदमी को ढूँढ़ो, जिससे तुम्हारे बाप ने इस दासी को खरीदा था। फिर हम उससे तुम्हारा दाम वापस करा देंगे।" हमने आज इस आदमी को तुम्हारी सराय में पाया। जाकर ईशान काजी कलाँ से निवेदन किया। उन्होंने अपना आदमी हमारे साथ कर दिया। अब यह आदमी या तो दासी को लौटाकर दाम वापस करे, या स्वयं काजीखाना चलकर जवाब दे।

---

१ जिसका फोटो यहाँ पुस्तक में दिया गया है।

—मुझे मार डालो या जिन्दा कब्र में गाड़ दो, किन्तु इस आदमी के हाथ में मुझे न सौंपो।—कहकर बहाँआरा चिल्लायी। काजी कलाँ के आदमी ने उसे चुप करने के लिये वादियों से कहा—तुमने ईशान कलाँ के पास आवेदन करते समय कहा था, कि हमारा दावा एक दास-वणिक् पर है। यदि तुम श्रीचरणों के अमलदार खीवा के कारवाँबाशी पर दावा करते, तो कभी तुम्हारी अर्जी नहीं सुनी जाती। अब मेरा खिदमताना लाओ और अपना रास्ता लो। तुम इस आदमी पर पंजा नहीं गड़ा सकते।

नियाजबाय ने चिल्लाकर कहा—कारवाँबाशी है, होता फिरे, अमलदार बना है बना फिरे, इससे क्या? हम अपना हक माँगते हैं।

नियाजबाय की बात में "करवाँबाशी," "अमलदार" के शब्दों को सुनकर कारवाँबाशी समझ लिया कि झगड़ा उससे संबंध रखता है। उसने जोर की आवाज में कहा— अकरमबाय क्या बात है?

—कोई बात नहीं, मैं स्वयं खतम कराये देता हूँ—अकरमबाय ने जवाब दिया।

—मालूम होता है, यह झगड़ा मुझसे संबंध रखता है। यहाँ आओ, मुझे बतलाओ, मैं जवाब देता हूँ—कारवाँबाशी ने कहा।

महान्यायाधीश के कर्मचारी और अकरमबाय ने जाकर सारी बात बतलायी। सारी बात सुन कारवाँबाशी ने पातितजानु बैठ क्रोधपूर्ण स्वर में कर्मचारी से कहा—इन्होंने मेरा नहीं श्री सरकार का भी अपमान किया। मैं बुखारा-दरबार का ईशक आकाबाशी हूँ। मेरी यार्लिक में लिखा है "आलिम फाजिल इनका सम्मान करें।" और यहाँ दो बाजारू आकर मुझे काजीखाना घसीटना चाहते हैं!

कारवाँबाशी "भगवान् क्षमा करें" कहकर चुप हुआ और उसने थैले में से पाँच तंका निकाल कर "यह आपका खिदमताना है" कहते कर्मचारी को देकर फिर कहा "इसी वक्त इन्हें मेरे सामने से दूर हटाओ। यदि इन्होंने फिर मुँह खोला, तो मैं स्वयं जनाब आली के पास मानहानि का दावा करके इन्हें कठोर दंड दिलवाऊँगा।"

कर्मचारी और अकरमबाय ने नियाजबाय और सफरबाय को सराय के फाटक से बाहर निकाल दिया। कारवाँबाशी का दिल अब भी बेचैन था। उसका चेहरा काला पड़ गया था।

× × ×

कारवाँबाशी चंदवे के नीचे सिर झुकाये चुपचाप बैठा था। अब अकरमबाय के चुटकुले उसे पसन्द न आते थे। इसी वक्त एक मध्यवयस्क, दीर्घकाय, निर्बलशरीर, बकरदाढ़ी पुरुष सराय के फाटक पर दिखलाई पड़ा। जैसे ही अकरमबाय की दृष्टि उस पर पड़ी, उसने कारवाँबाशी से कहा।

—यह आदमी अब्दू रहीम बाय नामक शाफिरकाम का किलाची है। बहुत ठीक आदमी है। भाव थोड़ा नर्म करके कहें। यह आदमी बाजार से खाली हाथ नहीं जाता।

कारवाँबाशी ने आँख के कोने से अब्दूरहीमबाय के ऊपर दृष्टि डाली और "ठीक" कहकर चुप हो रहा।

अब्दूरहीमबाय ने बहुत देर तक बाजार की सैर की; दास-दासियों को एक-एक करके देखा, दास-वणिकों के प्रचार को भी सुना। उसने किसी दास-दासी के बारे में दाम नहीं पूछा, सिर्फ एक सातसाला बच्चे पर फिर-फिर कर निगाह डालता रहा। दलाल ने उसके पीछे-पीछे होकर प्रत्येक दास और दासी की उससे प्रशंसा की, लेकिन बाय ने किसी को खरीदने की इच्छा नहीं प्रगट की। दलाल निराश हो गया था। बाय को बच्चे की ओर अनेक बार निगाह करते देखकर उसने कहा—अच्छा, आइये अकाबाय! इसी बच्चे को ले लीजिये।

—नहीं, नहीं लूँगा, मेरा दिल गवाही नहीं देता।

—अकाबाय—दलाल ने कहा—थोड़े से पैसे के लिये ऐसी बात क्या? अगर डूबेगा तो आपका तीस-चालीस तिल्ला ही न डूबेगा। अगर भाग्य ने साथ दिया, तो आपके हाथ से शिक्षा-दीक्षा प्राप्तकर यह बच्चा सारी उम्र आपकी सेवा करेगा। क्या आप इसकी आँखों को नहीं देख रहे हैं? मृग के नयनों की तरह खेल रही हैं। यह बड़ा समझदार बच्चा है, यह इसकी आँखे बतला रही हैं।

दलाल ने बाय को ध्यान से बच्चे की ओर देखते देखकर आशान्वित हो बच्चे से कहा "उठ मेरे बच्चे, इस गड़वे को भर ला।" बच्चा गड़वा ले रसोई घर की ओर चला। दलाल ने बाय की ओर निगाह करके कहा—"इसकी गति नहीं देख रहे हैं? स्वर्ग के मोर की तरह कैसे ललित गति से चल रहा है, अभी मैं बच्चे की सुन्दरता की बात नहीं करता। १५-१६ साल का होने पर यदि आप का भाग्य खुल गया और जनाब-आली आपके तूमान में सैर के लिये गये, तो इस बच्चे को श्रीचरणों में अर्पित कीजियेगा। फिर देखिये "तो कि आप उससे भी अधिक

सम्मान और दर्जा प्राप्त करेंगे, जो कि खीवा के इस कारवाँबाशी को मिला"।

दलाल की अन्तिम बात सुनकर बाय का मन ललचाने लगा और उसने कारवाँबाशी के ऊपर निगाह डाली, जिसने अब भी अपने शिर पर एशक आकाबाशी की यार्लिक लगा रखी थी। दलाल ने अपनी बात जारी रखी—इस बच्चे का नाम भी सुनिये—इसका नाम है "नेकदम" अर्थात् "नेककदम"। पुराने ऋषियों ने इसे "दिव्यनाम कहा है" इस बच्चे के कदम का नेक होना नाम से ही प्रगट है। यदि आप इस बच्चे को खरीद कर घर ले जायें, तो इसके कदम के साथ सभी नेकियां और समृद्धि भी आपके घर में पहुँच जायेगी।

दलाल एक के बाद एक तारीफ के पुल बांध रहा था। बाय को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। अंत में उसने शरीयत (धर्मशास्त्र) की बात छेड़ दी—सब ठीक है। किन्तु एक सुन्नी बच्चे को दास के रूप में खरीदने की आज्ञा धर्मशास्त्र नहीं देता। कौन ऐसे बच्चे को खरीद कर पैसे को हराम के रास्ते में फेंक कर पापाचारी बनेगा।

दलाल भी अपने पेशे के हर हथकन्डे का उस्ताद था। वह भला कब चुप होने वाला था; गड्व लाकर अपने स्थान पर बैठे बच्चे को इशारा करके बोलाः इससे आप स्वयं बात करके देखें। यह कहां का सुन्नी है? इसकी भाषा शुद्ध किज़िल-बाशों (ईरानियों) की भाषा है।

दलाल ने स्वयं बच्चे को बात में लगाया; "बच्चा तू कहां का है?" से लेकर धार्मिक बातों तक के बारे में सवाल-जवाब किया। बच्चे ने इस प्रश्न का जवाब ईरान की भाषा (फारसी) के उच्चारण के अनुसार बकार के स्थान में वकार ज़कार के स्थान में ज़कार और ऊकार के स्थान में उकार करके दिया। दलाल ने बाय से कहा :

—आपने स्वयं देख लिया अकाबाय! कहां का यह सुन्नी है? यदि अब भी खरीदना नहीं चाहते, तो इसका अर्थ यह हुआ, कि आप बाजार में दास खरीदने नहीं बल्कि तमाशा देखने आये हैं। दास खरीदने और रोटी देने की आप शक्ति नहीं रखते।

बाय नर्म पड़ता दिखाई पड़ा। दलाल ने उसके हाथ को पकड़ कर धक्का सा देते उसे कारवाँबाशी के पास ले जाकर कहा—आप नेकदम को खरीदना चाहते हैं, कितने में देंगे?

कारवाँबाशी इतने तपाक से मिला, मानो सालों की दोस्ती हो और बोला—आप एक अनुभवी धन-संपन्न पुरुष हैं, हर एक माल का भाव स्वयं जानते हैं। आप जो कुछ भी देंगे, एक दास-बच्चे के लिये मैं इन्कार नहीं करूंगा।

—खैर, कोई बात नहीं, मैं बीच में हूँ—कहते दलाल ने अपने एक हाथ से कारवाँबाशी के एक हाथ को और दूसरे हाथ से अब्दूरहीमबाय के हाथ को पकड़कर दोनों हाथों को एक दूसरे से मिलाकर अब्दूरहीमबाय से कहा—वैसे तो यह बच्चा १०० तिल्ला का माल है, किन्तु जनाब कारवाँबाशी कबूल करें, आप ६० तिल्ला दीजिये।

अब्दूरहीमबाय ने ६० तिल्ले का नाम सुनते ही तुरन्त अपना हाथ खींचकर कहा—नहीं, यह नहीं हो सकता।

कारवाँबाशी ने धीरे से अपने हाथ को खींचकर कहा—भाई मेरे, आप पैसा न भी दें, तो भी कोई हर्ज नहीं। लेकिन यदि पैसा देना चाहते हैं, तो माल के अनुसार होना चाहिये। (फिर दलाल की ओर देखकर) तुमको मालूम है ना, कि सवेरे ७० तिल्ला पर मैंने इस बच्चे को नहीं बेंचा।

दलाल ने दूसरी बार अब्दूरहीमबाय का हाथ जोर से पकड़कर कहा—आइये, अच्छा बतलाइये; यदि सौदे से बरकत न देखें तो मुझे गाली दीजियेगा। अच्छी बात, नहीं ही ठीक, आप ५० तिल्ला दें। अब तो राजी हैं न!

बाय फिर "नाहीं" कहकर अपने हाथ को खींचने वाला था। दलाल ने अपने हाथ को और जोर से दबाकर कहा—अपने ही मुंह से कहिये। आखिर कुछ देना चाहते हैं या नहीं।

बाय ने अन्त में कहा—अच्छा, मैं ४० तिल्ला दूंगा।

कारवाँबाशी ४० तिल्ला खीसे में आते देखकर मन ही मन प्रसन्न हुआ, परन्तु प्रगट "नहीं, नहीं होगा, चाहे मैं बच्चे को काटकर फेंक भले ही दूं। किन्तु इस दाम पर नहीं बेंचूँगा" कहते भी दलाल को आँखों से "सौदा खतम करो" का इशारा किया।

दलाल ने जोर देते कहा—कारवाँबाशी न भी बेचें, तो भी मैंने इस बच्चे को बेंचा। एक दास-बच्चे के लिये कारवाँबाशी मेरी बात खाली नहीं जाने देंगे। ले जाइये, फायदा उठाइये (कहते हाथ छोड़कर कहा) लाइये दाम निकालिये।

बाय ने दाम दिया। उसे गिन लेने पर दलाल ने क्रेता-विक्रेता दोनों के हाथों को दाम के साथ एक दूसरे से मिलाकर "आप पैसे से और आप दास-बच्चे से लाभ के भागी होवें" कहकर सौदा खतम किया। सौदा खतम हुआ, ४० तिल्ला कारवाँबाशी का और नेकदम अब्दुर्रहीमबाय का माल हुआ। दलाल ने दो तंका बाय से और दो तंका कारवाँबाशी से लेकर अपनी जेब में डाला और दोनों के लिये शुभमंगल की दुआ दी। सरायवान ने एक पत्थर को तेल से चुपड़ कर नेकदम के सिरपर मला[1] और "आका बाय! आपके दास का सिर पत्थर हो इसकी भेंट लाइये" कहकर बाय की दौलत में से सात सियाह पूल (पैसा) हजरत बहाउद्दीन[2] की भेंट ली।

अब बच्चे के कपड़ों पर झगड़ा शुरू हुआ। कारवाँबाशी ने बाय से कहा— अपना कपड़ा लाकर बच्चे को पहिनाइये, मेरे कपड़े को मेरे आदमी के हवाले कीजिये।

—एब, आप विचित्र आदमी हैं। आप जैसे दासवणिक् के मुंह से यह बात शोभा नहीं देती। बाजार में दश तंके का गदहा खरीदते हैं, तो दो गज रस्सी देते हैं। मैंने आपको ४० तिल्ला लाल-लाल देकर एक बच्चा खरीदा, और आप उसे नंगा देना चाहते हैं। मैंने कुदरत आका का ख्याल करके सौदा किया था। यदि आपको पसन्द नहीं है, तो मैं माल लौटाने को तैयार हूँ।

दलाल ने बात को खटाई में पड़ते देख बात काट कर कहा "मैं समझाता हूँ, कारवांबाशी बच्चे को नंगा करके नहीं देना चाहते" और कारवांबाशी के आदमी को निगाह करके कहा—"जा, बच्चे के पुराने कपड़ों को ले आ।" कारवांबाशी के गुप्त संकेत को पाकर आदमी पुराना वस्त्र ले आया। बाजार के लिये नये कपड़े तैयार कराके जो बच्चे को सजाया गया था, उसे उतार कर, दलाल ने पुराने कपड़े पहना दिये और फिर "जाइये आप दोनों का भला हो" कहते दोनों को

---

१. यह रवाज पशुओं के बारे में बहुत पीछे तक रहा और घोड़ा, गाय, या गदहा खरीद कर लाने पर स्त्रियाँ इसी तरह पत्थर सिर पर मलती थीं।

२. नक्शबंदी साधुओं के गुरु शाह बहाउद्दीन ने बुखारा में पाय-आस्ताना की सराय बनवायी थी, और वहीं बहुत रहे थे। इसीलिये पाय-आस्ताना (चरण द्वारा) नाम पड़ा। पीछे उनके नाम से भेंट भी ली जाने लगी।

खुश कर दिया। दो महीने से जिन कपड़ों को पहने मरु-कान्तार और पहाड़-जंगल घूमता बच्चा आया था, जो फटे और गंदे हो गये थे, उन्हें उतारकर दो दिन के लिये नयी पोशाक पहनाकर फिर उन्हीं कपड़ों से उसका शरीर ढांक दिया गया।

१२

(बाय और हाकिम १८४० ई०)

नबी पहलवान ने कपास ओटने का काम आगे बढ़ाया था। ओटी रूई को ओटने वालों से लेकर गांठें भी बंधवा डाली थीं। जिन्होंने वादा के अनुसार रूई और बिनौला नहीं लौटाया था, उनका हिसाब पहलवान ने अंत के लिये छोड़ रखा। कुछ काम करने वालों ने नयी कपास ली थी, किन्तु कितने ही इसके लिये राजी न थे और कहते थे—पहले पिछला हिसाब ठीक करो, तो यदि हमारी इच्छा होगी तो और कपास ले जायेंगे।

काम करने वालों का संदेह अकाट्य न था। एक मन कपास में सत्रह नहीं सोलह ही चार-यक रूई निकली और बिनौला भी आधमन से कम। एक किसान ने कहा—दोष चाहे तो आश (खिचड़ी) में है या माष (उड़द) में।

—या दोनों में—एक चुक्की दाढ़ीवाले निडर से किसान ने कहा, वह अभी-अभी ओटने के काम को छोड़ के आया था।

—क्या कहना चाहता है?—नबी पहलवान ने पहले किसान से कहा—साफ-साफ क्यों नहीं कहता? तेरी बात का मतलब मैंने नहीं समझा।

—नहीं सम्-म्-झा।—उस किसान ने नबी पहलवान से कहा।

—अब भी नहीं समझा—नबी पहलवान ने कहा।

—यही कहना चाहता हूँ, कि या तो बाय की कपास १ मन से कम थी, या कपास में कुछ और भी था।

—अर्थात् कहना चाहता है कि बाय चोर या धोखेबाज है—आगबबूला होकर पहलवान के जवाब दिया।

—नहीं, मैंने बाय को चोर या धोखेबाज नहीं कहा, लेकिन भूल होना संभव है। जैसे हो सकता है, कि तराजू गिनते भूल हो गयी हो, या तो लेते समय खराब

कपास पड़ गयी हो । ऐसी अवस्था में जरूर रूई और बिनौला अंदाज से कम निकलेगा ।

—भूल !—चुकी दाढ़ी वाले किसान ने आश्चर्य करते हुए कहा—भूल, एक या दो आदमी के साथ हो सकती है । यह भूल सभी किसानों के साथ कैसे हुई ?

—तू कैसे जानता है, कि बाय की कपास कम या खराब थी ! नबी पहलवान ने डाँट कर कहा ।

—आज भी मैं ओटनी के लिये एक मन कपास लेने आया था । बाय ने दो बोरा कपास एक मन कहकर दी । मुझे किसानों की कुरबुराहट से संदेह हो गया । मैंने कपास तौली, वह ५ सेर कम निकली, उसके ऊपर से आधी कच्ची कलियां थीं ।

—कच्ची कलियां थीं तो क्यों ले गया ?—हल्ला-गुल्ला सुनकर वहां पहुँच आये बाय ने कहा ।

—आप की बात पर विश्वास करके ले गया—चुकी दाढ़ी वाले ने कहा ।

—अभी-अभी इस पत्थर को भी ५ सेर से कम बतला रहा था—नबी पहलवान ने बाय से कहा ।

—आ-ा-ा इस्तगफरुल्ला—झल्ला कर कहते बाय रुक गया ।

—हाँ, तौलकर देखा, पांच सेर कम हुआ—चुकी दाढ़ी वाले ने कहा ।

—तेरा पत्थर भारी होगा और तराजू खराब—बाय ने चिल्ला कर कहा ।

—आइये अकाबाय ! इसी भारी पत्थर से इसी खराब तराजू पर अपनी कपास को फिर से तौल कर दीजिये, और रूई बिनौले को भी मेरे इसी भारी पत्थर और खराब तराजू से तौल कर लीजिये । ठीक है न ?—चुकी दाढ़ी ने कहा ।

बाय बुरी तरह फंस गया, उसे भागने की जगह न थी । अंत में नरम होकर बोला—रुस्तम ओका, अभी तू जवान है, बहुत आगे न बढ़ । अगर काम करना चाहता है तो कर, नहीं चाहता है तो मेरी कपास लौटा दे । व्यर्थ का झगड़ा न करता फिर, झगड़ा करना उन लोगों का काम है, जिन्हें काम करना नहीं आता ।

—मैं काम करना चाहता हूँ—रुस्तम ने कहा—और इसीलिये काम करता हूँ कि एक मन कपास ओट कर तुमसे सात तंका पाऊँ और परिवार का भरण-पोषण करूँ । मैं इसलिये काम नहीं करता, कि हिसाब में माल कम उतरे, तुम्हारा कर्जदार बनूं, और अंत में फिर सारी जिन्दगी तुम्हारी या तुम्हारे जैसे बायों की चाकरी करता रहूँ ।

—जा भाग, किसी और समय तेरा हिसाब करेंगे—कहकर नबी पहलवान ने धक्का दे रुस्तम को फाटक से बाहर निकाल दिया।

रुस्तम भी "धोखेबाजो, चोरो, मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं।" कहकर कुरकुराते हुए चला गया।

× × ×

म-गांव की मस्जिद के सामने बहुत से किसान और रूई ओटने वाले एकत्रित थे। बहुत हल्ला हो रहा था, अब्दूरहीमबाय के बुलाने पर शाफिरकाम तूमान के चारो हाकिम—काजी (न्यायाधीश), रईस (मजिस्ट्रेट) अमलाकदार (माल-हाकिम) और मीरशब (कोतवाल) के आदमी भी वहाँ मौजूद थे। लोगों की ओर निगाह करके काजी के आदमी ने कहा—हम चाहते हैं, कि तुम लोग सुलह कर लो; रूई और बिनौले की कमी के लिये बाय को दस्तावेज लिखकर दे दो। बाय तुम्हें और कपास ओटने के लिये देंगे और पहले की कमी को तुम्हारी मजदूरी में से थोड़ा-थोड़ा काट कर ले लेंगे। यदि तुम इस बात पर राजी नहीं हो, तो हम तुम सबको काजीखाना ले चलेंगे। फिर तुम भारी मुश्किल में पड़ोगे।

—इलाही तौबा—एक ओटने वाले ने कहा—एक सप्ताह तक हमारे बीबी-बच्चे अपने नखों को उखाड़कर कपास के ढेढ़ों को खोलते रहे और हम खुद ओटाई करते रहे। और अंत में कर्जदार भी हो गये। यह कैसा काम है!!

—यदि ईमानदारी से काम करते, तो कर्जदार न होते—रईस के आदमी ने कहा।

—हमने हरमजादगी करके किसके माल को खाया?—रुस्तम ने कहा।

—चाहे चोर है या साहु—मीरशब के आदमी ने कहा—लेकिन शरीयत (धर्मशास्त्र) के अनुसार अब तो तू चोर है। बाय ने तुझे एक मन कपास दी और तूने अपनी करार के अनुसार एक मन की जगह पाँच सेर कम लौटायी।

—बाय ने स्वयं तौलते समय मुझे ५ सेर कपास कम दी—रुस्तम ने कहा।

—तू बाय को चोर बनाता है—झगड़ा मिटाने के लिये आये र-गाँव के रूई के व्यापारी राजिक बाय ने कहा।

—चोर को चोर कहते हैं साहु को साहु अकाबाय—रुस्तम ने कहा—तुम कपास के सौदा और ओटनेवालों को अपने हाथ में करने के लिये अब्दूरहीमबाय

के साथ कुत्ता-बिल्ली की तरह लड़ते रहते थे ; आज क्या हुआ जो बाय के साथ आपकी इतनी सहानुभूति है ?

—इसीलिये कि—दूसरे ओटनेवाले ने कहा—इनके ओटनेवाले भी हमारे झगड़े को सुनकर कुरकुराने लगे। इनकी दी हुई कपास भी एक मन में पाँच सेर कम उतरी। अगर हमारा मुँह बंद कर सके, तो इनके ओटनेवाले की भाग्य पर भरोसा करके चुप हो जायँगे। यदि अब्दूरहीमबाय को झुकना पड़ा, तो इन्हें भी झुकना पड़ेगा। यही कारण है, जो आज हमारे बाय के यह "प्राणसममित्र" बने हैं। नहीं सुना है चोर को चोर अंधेरी रात में भी पहिचान लेता है।

—ओः, इन हरामजादों ने मुझे भी चोर बना दिया ! चार हाकिम के लोगो ! सुना आपने—कहते राजिक बाय चिल्ला उठा।

—जबानदराजी करनेवालों को गिरिफ्तार करो—कहकर काजी के आदमी ने मीरशब के आदमियों को हुक्म दिया।

उन्होंने रुस्तम सहित चार जबानदराजों (बढ़-बढ़ कर बोलनेवालों) को पकड़ कर पेड़ से बाँध दिया। दूसरे किसान नर्म पड़ गये। चार हाकिम के आदमियों ने बाय के साथ मिलकर समझौतापत्र तैयार किया, जिसके अनुसार ओटनेवालोंने कर्जदार बन बदले में बाय का काम करना स्वीकार किया।

—यह कैसी बे-इनसाफी है ?—कहते एक किसान ने गाँव के इमाम से शिकायत की।

—कोई हर्ज नहीं—इमाम ने कहा—यदि अनुचित होगा, तो उसकी क्षतिपूर्ति भगवान् तुम्हें देगा। चाहे जो भी हो, हर हालत में खुदा का शुक्र करना चाहिये, खुदा का शुक्र करना मोमिन (मुसलमान)-बंदा का धर्म है।

—आः—बहुत धीरे से एक ओटनेवाले ने कहा—यदि कहीं अकेले में मेरे हाथ आता, तो इस बाय का सिर तोड़ डालता। हजारों धोखा-फरेब से गाँव की सबसे अच्छी जमीन को इस बाय ने अपने हाथ में कर लिया और हमें बटायी, मजूरी, ओटवनी करने के लिये बाध्य किया। यह काम करके भी पेट भरने की बात तो दूर ऊपर से हम कर्जदार भी बने।

—खुदा को जानो—इमाम ने कहा—यह अपनी पुरानी नाशुक्री का फल है। तौबा करो। बाय के बारे में बुरा न सोचो। थोड़ा बहुत तुमने इसका नमक खाया है "नून रोटी का हक खुदा के हक के बराबर है" यह धर्मग्रन्थों में लिखा है।

—बाय का नमक आपने मुफ्त खाया है—एक ओटनेवाले ने इमाम से कहा—इसलिये उसका पक्षपात करते हो। हमने तो एक चुटकी नमक के लिये एक मास खून-पसीना एक किया।

—जीभ संभाल कर बोल, असभ्य कहीं के—आगबगूला हो इमाम ने कहा—अगर तुम्हारी यही नीयत रही, तो इससे भी बुरे दिन देखने पड़ेंगे। बाय को दौलत खुदा ने दी है, क्या तू खुदा से लड़ना चाहता है?

—दौलत बाय को चोरी से मिली है—ओटनेवाले ने भी चिल्लाकर जवाब दिया।

आवाज को सुनकर मीरशब का आदमी दौड़कर वहाँ पहुँचा और इमाम के इशारे पर उसे भी पकड़ कर वृक्ष में बाँध दिया।

"समझौता-पत्र" को कार्यरूप में परिणत किया गया। हर एक आदमी ने अपनी कमी के अनुसार बाय को कर्ज का कागज लिख दिया, जिसके अनुसार उन्हें कपास ओटकर अपनी मजदूरी से कर्ज चुकाना था। कपास न ओटने पर नौकरी चाकरी से अदा करना था, जो और भी ओटने का काम करना चाहते, उनका आधा कर्ज माफ हो जाने वाला था। काजी के आदमी के कथनानुसार "बाय का यह काम वस्तुतः कमकरों पर भारी दया थी"। पेड़ से बंधे "बदमाश" इमाम और बायों के अपमान करने के अपराध में शरीयत के अनुसार दण्ड पाने के लिये काजीखाने (न्यायालय) की हवा खाने गये।

अब्दूरहीम बाय का तांगा (अराबा) मस्जिद के सामने आकर खड़ा हुआ। बंदियों को पेड़ से खोलकर अराबा पर चढ़ाकर बांध दिया गया। बाय ने बहुत खुश हो हाथ-पैर बँधे रुस्तम से कहा :

—अब समझा, मैं चोर हूँ या तू?

—तू चोर है—रुस्तम ने कहा—किन्तु तू मामूली हथियारबंद चोर डाकुओं की तरह रात को किसी के साथ मर्दानगी से मुकाबिला करके चोरी नहीं कर सकता। तू एक नामर्द चोर है और बिना बतलाये हर आदमी के अन्न-धन को चुराता है।

मीरशब के आदमियों के डंडों ने रुस्तम के सिर पर पड़कर उसे आगे बोलने नहीं दिया। अराबा भी शाफिरकाम के काजीखाने की ओर चला।

१३

(दास भगे)

शरद् का अन्त था। सरदी का मौसिम समीप आ रहा था। तो भी बुखारा के तूमानों (परगनों) की शुष्क ऋतु में अभी वर्षा शुरू नहीं हुई थी ; लेकिन आकाश में मटमैले बादल छाये हुए थे। सूर्य का ताप पहले से कम हो चला था। इन बादलों ने उसे और निर्बल बना दिया था। सिबेरिया की ठंढी हवा ओरेनबुर्ग और कजाक-कान्तार से पार होती किज़िल-क्वूल (लाल मरुभूमि) जैसे पर्वत-हीन विशाल मैदान से चलकर बुखारा पहुँच रही थी। मरुभूमि में काम करने वालों के हाथ ठंढी के मारे ठिठुर रहे थे। रेत भरी हवा में राह देखना मुश्किल था। इस हवा ने उन दासों की अवस्था और बुरी कर दी थी, जो अति प्रातः ही बिना खाये एक पुराने बाग में जाकर जड़ों को काटते, भूखे प्यासे सवेरे से शाम तक फावड़ा, कुल्हाड़ा चलाते थे।

—इस भूख और थकावट में यह हवा जले पर नमक छिड़क रही है—कहते रजा फावड़े को एक ओर फेंककर अपनी खोदी नर्म मिट्टी पर जा बैठा।

—बाय के किला (ओरेनबुर्ग) जाने से हमने समझा था, कि कुछ आराम मिलेगा, लेकिन यह घरजला नबी पहलवान बाय से भी भारी जल्लाद निकला—अशुर ने फावड़ा पर टेक देकर कहा।

हाशिम ने फावड़े को जमीन से उठाते हुए कहा—यात्रा के लिये रवाना होते वक्त सुना नहीं, बाय ने नबी पहलवान को क्या कहा? कहा था "तू यदि मैं नहीं बन सकता, तो मेरी आंख बनना।"

—सुना था—अशुर ने कहा—लेकिन बाय ने इन्हीं शब्दों को पारसाल भी किला जाते वक्त पहले वाले गुमाश्ता से कहा था, किन्तु उसने हमें नबी की तरह तंग नहीं किया था।

—इसीलिये तो बाय ने उस गुमाश्ता को निकालकर उसकी जगह इस कसाई को रखा।

—नबी पहलवान—दूसरे ने कहा—बाय की दासियों और कूमाओं (रखेली

दासियों) से बाय से भी अधिक काम ले रहा है। बाय के घर रहते वक्त घर के कामों के अतिरिक्त रात दिन वे कुल कपास साफ करती थीं और अब नबी पहलवान उनसे दस टोकरी साफ कराता है। जब तक कपास खतम नहीं हो जाती, तब तक ओटनी में जोतकर हमें भी वह रात को सोने नहीं देगा।

—नेकदम्मा की हालत को नहीं देख रहे ! कुत्ते के लिये आराम है, किन्तु इस अभागे बच्चे के लिये नहीं। "नेकदम, मालों को चारा दे ! नेकदम, मालों को पानी दे ! नेकदम, गोसार को साफ कर ! नेकदम, मालों की हौदी में खुराक डाल ! नेकदम, हवेली में झाड़ू दे ! नेकदम, कपास की खोलों को तनूर में ले जा ! नेकदम, पानी निकाल ! नेकदम, रोटी बना ! नेकदम, कपास को ओट...।" इन अनगिनत कामों के लिए हुक्म आठ साल के नेकदम पर हरवक्त चलता रहता है—आठ साल का बच्चा, जिसके दूध के दांत भी अभी टूटे नहीं हैं।

—यह कम कहा—तकी ने कहा—अगर नेकदम ने किसी काम को अच्छी तरह नहीं किया, या कुछ बाकी रह गया, तो उसे दिन में कितनी ही बार पीटा जाता है।

—उठो, यदि इस आधे दिन में बाग के सारे कुन्दों को खोदकर हम बाहर न निकाल पाये, तो हमारी पीठ पर भी नबी पहलवान का डंडा पड़ेगा—अशुर ने पहले ही से काम से हाथ खींचे दासों से कहा, दासों ने न चाहते भी फावड़ा-कुल्हाड़ा हाथो में लिया।

—फफोले वाले हाथों में ठंढा पड़ जाने पर फावड़ा पकड़ने की शक्ति नहीं रह जाती —तकी ने कहा।

—तू खुरपा लेकर पौधों को उखाड़, खोदने का काम हम करेंगे।

आकाश में एक ओर से बादल हटा और सूर्य दिखलाई पड़ा। हाशिम ने सूर्य को देखकर कहा—एय्, दोपहर आ पहुँचा। कल्मक-आयम् ने अभी भी रोटी-पानी नहीं भेजा। खाली गरम पानी मिलने पर भी वह भीतर जाकर शरीर को गर्म करता, तब शायद हाथ से फावड़ा भी उठने लगता।

—जो कहीं पानी गर्म भी होता—अशुर ने कहा—इस सर्दी में चार कोस से लायी खिचड़ी भी वर्फ हो गयी रहती है।

—क्या उसको खिचड़ी (आश) कहेंगे—रजा ने कहा—एक देग में एक प्याज और एक मुट्ठी उड़द डाल देते हैं, और यह है हमारा प्रातः, मध्याह्न

और सायंकाल का आश। यह मनचलाक स्त्री जब से देग और थाल की मालिक बनी, तब से हमारी हालत और खराब हुई।

—इस तरह जिन्दगी कैसे कटेगी? सभी बातों पर सोचकर आज ही कोई रास्ता निकालना चाहिये—सिर खुजलाते एक कोने में अबतक चुपचाप बैठे फरहाद् ने कहा।

—मैं भी इस पर राजी हूँ—अशुर ने कहा—मैं अबतक सोचता था, कि काम आज ठीक हो जायेगा कल ठीक हो जायेगा, लेकिन अवस्था सुधरती क्या, और भी खराब होती जा रही है। जो भी हो एकबार भागकर भाग्य-परीक्षा करनी चाहिये। इसी भागने में या तो स्वतन्त्र हो जायँगे, या पकड़े जाने पर इससे भी भारी दुर्गति में पड़ेंगे।

—इससे भारी दुर्गति दुनिया में नहीं हो सकती—फरहाद ने अशुर के पास आकर कहा—इससे बुरी हालत हो सकती है, सिर्फ मौत। लेकिन मेरी दृष्टि में मौत इस जिन्दगी से हजार गुना बेहतर है।

इसी समय नेकदम और गुल्फाम दिखाई पड़े। फरहाद ने अपनी बात समाप्त करते कहा "यह जहर-माहुर जो वे ला रहे हैं, इसे खाकर भाग चलना चाहिये।

—भागना मुक्त होना है।

—या मरना है···।

× × ×

—बहुत देर हो रही है, गुल्फाम और नेकदम का कहीं पता नहीं है। नेकदम तो बच्चा है, किन्तु इस गुल्फाम को क्या हुआ?—कहते नबी पहलवान ने बायू के नौकर शेरबेक से शिकायत की।

शेरबेक गदहों पर पलान रखकर उसमें खाद डाल रहा था। उसने "मैं क्या जानूँ" कहते एक गदहे को हटा दूसरे गदहों को खींचकर खाद डालना शुरू किया। नबी पहलवान उसके व्यवहार से क्रुद्ध हो अपने आप से बोल उठा "इस आदमी से बात पूछो और यह जवाब सुनो"। फिर वह झुँझलाकर शेरबेक से बोला "ओय् आदमी! मैं तुझसे पूछ रहा हूँ, उनको क्या हुआ, कह रहा हूँ"।

—मैं नहीं जानता, मैं क्या जानूँ? कहा तो—शेरबेक ने कहा—मैं क्या

उनका कराबुल (पहरेदार) था, या मेरी नाभि उनकी नाभि से बँधी हुई थी ?

—या अल्ला, इस आदमी को क्या हुआ है ?—नबी पहलवान ने गर्म होकर कहा—काम छोड़ दे, गदहों को द्वार पर हाँक दे, चारा खायेंगे और तू स्वयं एक गदहे पर चढ़कर जल्दी पुराने बाग में जा। देख तो उन्हें क्या हुआ ?

—काम को छोड़ दे, फिर क्या इसे मौसी का बेटा कर देगा—कुरकुराते शेरबेक गदहों को एक ओर खदेड़ एक गदहे पर स्वयं सवार हो बाग के लिये रवाना हुआ।

नबी पहलवान ने शेरबेक की कुरकुराहट को अनसुनी कर दी। उस आदमी से बहस करके और कड़ा जवाब सुनना उसे पसन्द न था।

एक घंटा बाद शेरबेक बाग से लौटकर आया। गया था गदहे पर सवार हो कर लेकिन लौटा गदहे पर फावड़ा, कुल्हाड़ा, खुरपा लादे। "वह कहाँ हैं" पूछने पर शेरबेक ने पहले धीरे-धीरे चीजों को गदहे से उतारा, फिर अन्त में जवाब दिया—बाग में कोई न था, हथियार जहाँ-तहाँ फेंके हुए थे। जितना हो सका जमा करके लाया। बाकी को थाल आदि के साथ वहीं ढाँक आया हूँ।

—अच्छा, और वे सब कहाँ हैं, नेकदम और गुलफाम कहाँ चले गये ?

—मैं क्या जानूँ ?

—तो वे भाग गये—नबी पहलवान ने निराश होकर कहा।

"यदि बीबी बच्चे का ख्याल न होता तो मैं भी भगा होता"—शेरबेक ने अपने मन में कहा।

१४

(दासों के पीछे)

"गरीबो फकीरो ! पीछे न कहना कि हमने नहीं सुना। यदि लाल तिल्ला (अशर्फी) की इच्छा रखते हो, तो मेरी बात पर कान दो। शाफिरकाम तूमान के देह-नौ अब्दुल्लाजान के म० गाँव के अब्दूरहीमबाय किजाची के आठ दास एक दासी और एक दास-बच्चा भाग गये। उन सबका निशान यह है, कि दास बच्चा को छोड़कर सबकी कलाई पर नाल की शकल की मोहर दागी हुई है। जो आदमी

उन्हें गिरफ्तार करेगा, उसे प्रति दास एक तिल्ला और जो उनका पता देगा उसे प्रति दास आधा तिल्ला इनाम दिया जायगा।"

सवेरे-ही-सवेरे एक ढिंढोरची, यह ढिंढोरा शाफिरकाम तूमान के केन्द्र बाजार खोजाआरिफ में पीट रहा था। तिल्ला चाहनेवालों ने पता लगाने की बहुत कोशिश की, किन्तु कोई लाभ न हुआ।

नज़ी पहलवान ने दासों के भागने की हाकिमों के पास खबर देने और ढिंढोर पिटवाने पर ही संतोष नहीं किया। वह घोड़े पर सवार हो चूल (मरुभूमि) में कज़ाकों के औल (कैम्प) में गया और वहाँ से एक कज़ाक इज़्ची (पदचिह्न पहचाननेवाले) को साथ ले उसे चार हाकिमों के आदमियों के साथ भगोड़ों के पीछे लगा दिया। कज़ाक इज़्ची पहले उस बाग में गया, जहाँ से दास भगे थे। उसने एक-एक पद-चिह्न को अच्छी तरह देखा भाला, फिर बाग में इधर-उधर घूमकर पद-चिह्नों के पीछे-पीछे उत्तर की ओर चला। दो हजार पग जाने पर लाल बालू के बीच चिह्न लुप्त हो गये। इस लाल बालू पर पानी की तरह कोई चिह्न टिक नहीं सकता। वहाँ तो बालू पर पानी की कोमल तरंग की भाँति शृंखला जसी आकृति अंकित होती और वह भी हवा के हलके झोंके से पुरानी आकृति छोड़कर नयी आकृति ग्रहण कर लेती। कज़ाक इज़्ची कई बार बालू के टीले पर इधर से उधर उधर से इधर घूमा, किन्तु पद-चिह्न का कोई पता नहीं लगा। भगोड़ों के पद-चिह्नों की तो बात ही क्या, कज़ाक लौटकर अपने पद-चिह्नों को भी नहीं देख पाता। इस बालू पर पड़ा पैर पानी पर पड़ा जैसा था, पैर हटाते ही चिह्न की जगह भर जाती और वहाँ जंजीर की शकल प्रगट होती। कज़ाक बहुत मत्थापच्ची कर रहा था और गर्मी की धूप में भी न खुलनेवाले अपने कनटोप के बन्दों को उसने खोल दिया। पसीना-पसीना हुई कनपटी को उसने आस्तीन से पोंछ कर फिर "या पीर आ-मे-`-" कहते एक ओर चल पड़ा। एक-दो बालू के टीलों को पार हो एक जगह नजर गड़ाकर इज़्ची चिल्ला उठा—"पा गया ओ-ो-

हाकिम के नौकर "कहाँ है कहाँ है इगित् आगासी" कहते दौड़कर उसके पास पहुँच गये। कज़ाक वहाँ दो टीलों के बीच की जमीन पर खून के दाग पर नजर गड़ाये खड़ा था, उसने इन दागों की ओर इशारा करके कहा।

—यह है। आप अपने घोड़ों पर चढ़े धीरे-धीरे पीछे आइये। मैंने बड़ा महत्त्वपूर्ण चिन्ह पकड़ लिया। हमें इसी चिन्ह के पीछे-पीछे चलना है।

४—कजाक भगे दासों की खोज में (पृष्ठ ८०)

हाकिम के आदमी "क्या जाने यह मूरख कज़ाक बालू के टीलों के बीच रास्ता भुलाकर हमें भी इस अनन्त मरुभूमि में गुम न कर दे" कहते भी बाध्य होकर उसके पीछे-पीछे चले। कज़ाक एक के बाद एक बालू के टीलों को पार करता गया। डेढ़-दो घंटा राह चलने के बाद सब थक गये। उन्हें भूख भी लग आयी और चाहा कि खुद रोटी खायें और घोड़ों को चारा दें; किन्तु कज़ाक राजी नहीं हुआ। वह बोला "यदि देर करेंगे तो चिन्ह मिट जायेगा और भगौड़े दूर निकल जायेंगे; इस तरह हमारा सारा परिश्रम व्यर्थ जायेगा"। सरकारी आदमियों को भी चिन्ह का गुम होना और भगोड़ों का दूर भग जाना पसन्द न था। वह भी तो लाल तिल्लों की लालच से आये थे। लाचार कज़ाक की बात मानकर वे उसके पीछे-पीछे चले। बालू के टीले समाप्त हो गये, फिर असीम विस्तृत समतल मरुभूमि आरंभ हुई। अब गिरते खून का चिन्ह चींटी के रास्ते की तरह एक ओर जाता दिखाई पड़ा। खून का चिन्ह धीरे-धीरे तेकय-चूल में एक सूने ढोरखाने में पहुँचा। ढोरखाना जमीन में खोदे गहरे हौज जैसा था। कज़ाक ने ढोरखाने के किनारे जाकर देखा, फिर आवाज दी "पा लिया"। सवार निराश और परेशान हुये यहाँ तक आये थे। कज़ाक की आवाज सुनकर उनकी जान में जान आ गई और वह तलवारों को म्यान से निकालकर घोड़े को दौड़ाते यहाँ पहुँचे।

ढोरखाने के अन्दर कितने ही आदमी मुर्दे जैसे लेटे थे। "तुम कौन हो?" कहकर एक सवार ने आवाज दी, किन्तु कोई जवाब नहीं मिला। कज़ाक आगे-आगे चला। उसके पीछे दूसरे भी घोड़ों को बाहर छोड़कर गड्ढे के अन्दर गये। अब भी वहां वे सोये हुए थे। उनमें से कोई सुगबुगा नहीं रहा था। कज़ाक ने उनमें से एक का हाथ पकड़ कर कलाई देखी, किन्तु वहां मुहर न थी।

—यह जिन्दा है। किन्तु इसके हाथ पर मुहर नहीं है—निराशपूर्ण स्वर में कज़ाक ने कहा। उसने उनमें से हर एक पर नजर दौड़ायी। वहाँ आठ सयाने, एक स्त्री और एक बच्चा सब दस थे; किन्तु किसी के हाथ पर मुहर का दाग न था, हां मुहर की जगह कुरेदी हुई थी, और वहां खून लगा था, सिर्फ बच्चे की कलाई न कुरेदी गयी थी। कज़ाक ने मुसकराते हुए कहा—"यही हैं, मुहर मिटाने के लिये उन्होंने इसे छीला था, और उसीने हमें इनके पास पहुँचने में सहायता की।

कज़ाक ने उनमें से एक को जगाने के लिये इधर-उधर हिलाया, किन्तु उस ने एक बार आंख खोलकर फिर बंद कर लिया। कज़ाक ने सवारों से कहा—"ये भूख के मारे अधमरे हो गये हैं, खुरजी में से रोटी-पानी निकाल लाओ। फिर मैं इनमें जान पैदा करता हूँ।

१५

(भगोड़े फिर पकोड़े गये)

दासों को अब्दूर रहीमबाय के तहखाने में हाथ पैर बाँधकर डाल दिया गया और बाहर से ताला लगा दिया गया। नबी पहलवान प्रतिदिन एक बार द्वार खोलता, वहाँ एक कूजा पानी लाकर रखता, एक दो रोटी के टुकड़े फेंक जाता; फिर पिछले दिन के खाली कूजे को लेकर बाहर जा ताला लगा देता। कुछ दिनों तक पहले नबी पहलवान उन पर छड़ियां भी तोड़ता रहा इसलिये उसके तहखाने में आने पर जैसे कुत्ते को देखकर बिल्ली भागती है, उसी तरह उसके डर से दास भागकर तहखाने के कोने में जा छिपते और उसके चले जाने पर जमीन पर फेंके रोटी के टुकड़े को चुन-चुनकर खाते। एक दिन नबी पहलवान अपनी आदत के विरुद्ध सवेरे ही तहखाने में आया। दास डर गये—न जाने कौन और आफत उनके सिर पर आनेवाली है। आज नबी पहलवान के हाथ में कूजा और रोटी की जगह पतली छड़ी थी, इससे और भी डर गये और कई बार छड़ी-कोड़े खाकर उनकी फूली और काली पीठ अपने आप दर्द करने लगी। किन्तु नबी पहलवान ने किसी को छड़ी नहीं मारी और वह सिर्फ फरहाद को लेकर तहखाने के बाहर चला गया।

हवेली के आंगन में ताजा बनकर आये कितने ही गोल-अशकेल रखे थे। नबी पहलवान ने हाथों पैरों से मामूली अशकेल (बेडी) को खोल दिया और उसकी जगह फरहाद की गर्दन और जाघों में एक गोल-अशकेल डाल दिया। दोनों में अन्तर इतना ही था कि गोल-अशकेल में पैरों में डालने का छल्ला अधिक बड़ा था, उसकी जंजीर भी उतनी लम्बी न थी। वह इतनी लम्बी थी कि जांघ से गर्दन तक पहुँच जाये। जंजीर की छोर नोक पर शिकारी कुत्तों जैसा खुला छल्ला

५—नेकदम के हाथ पर मुहर दागना (पृष्ठ ८२)

था, जिसे गर्दन में डालकर ताला लगा दिया जाता। इस जंजीर से काम करने, राह चलने, उठने-लेटने में कोई बाधा न थी; हां, इसके साथ भागना दौड़ना असंभव था, क्योंकि इसका भार एक पूत (भारतीय २० सेर) था। यह नबी पहलवान या उसके लोहार का आविष्कार नहीं था; बहुत प्राचीन समय से बुखारा प्रदेश के दास-स्वामी भागने से रोकने के लिये ऐसी जंजीरें दासों को पहनाते थे।

नबी पहलवान ने फरहाद की तरह अशुर, रजा, तफी, हाशिम और दूसरों को भी गोल-अशकेल पहनायी।

गुलफाम ने रोते-कांदते कहा—मैं अपनी खुशी से नहीं भागी। मुझे जबर्दस्ती साथ ले गये।

—सच कहती है—अशुर ने उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा—भेद जल्दी न खुल जाये, इसी के डर से हम गुल्फाम और नेकदम को भी साथ लेते गये।

लेकिन नबी पहलवान ने एक भी न सुनी, उसने उनके आकार के अनुसार गुल्फाम और नेकदम को भी जंजीर पहनायी। फिर निडर हो बिना पहरेदार के हाथ में फावड़ा, कुल्हारा, खुरपा देकर उन्हें उसी बाग में काम करने के लिये भेजा, जहाँ कुछ दिनों से काम रुका हुआ था। गुल्फाम को उसने कल्मक-आयम् के सुपुर्द किया, अब नेकदम् की बारी थी। नबी पहलवान ने "कल्मक आयम्, यदि तमगा (मुद्रा) लाल हो गया हो, तो ले आओ" कहकर आवाज दी। बाय का तमगा नाल की शकल का था, जो आग में रखने से लाल हो गया था। अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, घोड़ा-ऊंटों और रूस भेजे जाने वाले दूसरे मालों पर बाय यही तमगा (मुद्रा) लगाया करता था। नबी पहलवान ने नेकदम् को चित्त लिटा रखा। कल्मक आयम् संड़ासी से लाल तमगे को पकड़े ले आयी। आयम् ने नेकदम् के पैरों को पकड़ लिया। नबी पहलवान ने संड़ासी से तमगे को पकड़कर नेकदम् की कलाई पर दाग दिया। बच्चा भय और पीड़ा से चिल्लाते-चिल्लाते बेहोश हो गया। नबी पहलवान ने हाथ में चिपक गये जलते तमगे को खींचकर निकाला। कल्मक आयम् ने जले नम्दे को वहाँ बाँध दिया। इस प्रकार नेकदम् भी बाय के न गुम होनेवाले मालों में सम्मिलित हो गया।

१६

(दास वृद्धि का उपाय १८५३)

सारे म० गाँव को साफ करके पानी का छिड़काव किया गया था। नबी पहलवान जैसे खाते-पीते आदमियों की हवेलियों को ऐसे सजाया गया था, मानो घर में मेहमान आनेवाला हो। किसी-किसी हवेली में शीरमाल में पकाये कुलचे और खमीरी रोटियों के लिये बड़े-बड़े तनूर बैठाये गये थे। सबसे अधिक सजावट अब्दूरहीमबाय की हवेली में देखी जाती थी। वहाँ सजावट की प्रदर्शिनी हो रही थी। बाय के १३ बालार (द्वार) के विशाल मेहमानखाने में एक बहुमूल्य तुर्कमानी कालीन बिछा हुआ था, जिसके किनारे-किनारे मखमली गद्दे रखे हुए थे। ऊपर की ओर और भी सुन्दर मखमली गद्दे थे, जिनपर चार जगहों में चार मसनदें रखी थीं। मसनदों के नीचे दोनों ओर कलाबत्तू के कामवाले जरदोजी के लोले रखे थे। हवेली के छत पर बेल-बूटेवाले शामियाने तने हुए थे, जिसमें कि वर्फ और वर्षा से हवेली भींग कर चूने न लगे। शामियाने के नीचे भी चबूतरों पर किजिल-अयाक के लाल कालीन शोभा दे रहे थे, जिनपर शाही और अदरस के गद्दे रखे हुए थे। हवेली के पार्श्व में अवस्थित ऊँटखाने में चूल्हे तैयार करके एक मन[1] चावल पकाने को देगें बैठायी गयी थीं, इनके अरिरिक्त कजी-जोश, मुर्गबिरियान तथा घी तपाने की देगें भी रखी हुई थीं। मुरब्बा पकाने, निशल्ला बनाने के लिये बड़े-बड़े पतीले बैठाने भी नहीं भूले थे। एक कोने में कुएँ की तरह गहरा गड्ढा खोदकर उसे आग जलाकर तनूर की तरह तपाया गया था। यहाँ चमड़ा निकाले सम्पूर्ण वर्रों (भेड़ के बच्चों) को बिरियान किया जाना (भूनना) था।

पहले दिन सूर्योदय के समय शाफिरकाम तूमान के सारे किलाची (ओरेन-

---

(१) १ मन = ८ पूद = १२८ किलोग्राम = १६० सेर (हिन्दी) = ४ मन (हिन्दी) ; १ किलोग्राम = २॥ फोन्त (पौंड) ; १ फोन्त = ४०० ग्राम = आध सेर (हिन्दी)।

बुगंवाले) सौदागर, बाय, अरबाब (चौधरी), अकसक्काल (नम्बरदार) म० गाँव में मीर अजीम कारवाँबाशी के नेतृत्व में आकर एक खास हवेली में उतरे। सब घोड़ों, साईसों और खरहरावालों को अपने डेरे में छोड़कर स्वयं अब्दूरहीमबाय की हवेली में एकत्रित हुए और हवेली के सामने कालीचा बिछे तख्तपोशों पर बैठे चायपान में लगे।

दोपहर के समय पश्चिम की ओर से घोड़ा दौड़ाते एक सवार इसी हवेली के सामने उतरा और घोड़े को एक चाकर के हाथ में देकर हवेली के भीतर अब्दूरहीमबाय के पास जाकर बोला—"आ रहे हैं"।

सारी हवेली में बिजली-सी दौड़ गयी। लोगों ने पीये अधपीये प्यालों को उँड़ेल कर एक ओर रख दिया। पागों को ठीक किया, दाढ़ियों को अंगुलियों से कंघी करके सजाया, कमरबंदों को बाँधा। फिर सभी अब्दूरहीमबाय और मीर अजीम के पीछे-पीछे हवेली से निकल कूचे में दो पाँती से खड़े हो गये, उनमें से एक पाँती के सिरे पर अब्दूरहीमबाय और दूसरी के सिरे पर, मीरअजीम कारवाँबाशी खड़े थे।

बहुत प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। गाँव के पच्छिम बर्दानूजा की ओर से सवार आते दिखाई पड़े। सवार जितने ही समीप आते गये, खड़े लोगों ने उतना ही बार-बार पागों को उतारकर ठीक-ठाक करके सिर पर रखा और दाढ़ियों में खलाल किया।

सवार बिलकुल नजदीक आ गये। आगे-आगे काजी और अमलाकदार एक पाँती में, फिर रईस और मीरशब दूसरी पाँती में और उनके पीछे मुफती लोग, फतवा (व्यवस्था-पत्र) लिखनेवाले कातिब लोग, मिरजा (चार हाकिम के लेखक) लोग, मुलाजिम (कर्मचारी), शागिर्द-पेशा (चपरासी), मीर-आब (नहर कर्मचारी), अमीन और हाकिमों के पीछे-पीछे फिरनेवाले सारे मातबर लोग पाँती से आ रहे थे। बहुत समीप आ जाने पर छत पर बैठे बाजेवाले अपने नगाड़े और शहनाई को शादियाँने (महोत्सव) के ढंग पर बजाने लगे।

चारो हाकिम द्वारपर उतर कर घर के अन्दर गये और प्रमुख-स्थान पर बैठे। वहाँ लोलावाली मसनद के पास काजी बैठा और उसी पाँती में क्रमशः अमलाकदार, रईस और मीरशब ने स्थान ग्रहण किया। मुफती लोग, फतवा लिखनेवाले कातिब लोग (जिन्हें उस समय मुहर्रिर कहा जाता था), मिरजा लोग और मीर

अजीम कारवाँबाशी के नेतृत्व में आये सारे किलाची सौदागर भी अपने दर्जे के अनुसार मेहमानखाने में दो-तरफा बिछे गद्दों पर बैठे। बाय लोग भी दर्जे के अनुसार ऊपर या नीचे बैठे। छोटे बाय, हाकिमों के आदमी और उनके दर्जे के जैसे दूसरे लोग चबूतरे या शामियाने के नीचे दोनों घुटने टेक कर बैठ गये।

दस्तरखान फैलाये गये। हाकिमों के सामने २० कदाक[1] वाले शीरमाली कुलचे, और दस कदाकवाली तफतानी रोटियाँ विशेष प्रकार की तश्तरियों में रखी गयीं। मेहमानखाने के अन्दर के मेहमानों के सामने ५ कदाकी रोटियाँ और कुलचे रखे गये। हवेली के सामने बैठे लोगों के आगे दो चारयक यानी आधी कदाक की रोटियाँ और कुलचे रखे गये। आश लंगरी थालों (तबकों) में भर-भर कर रखा गया। हर थाल में १० कदाक चावल था, जो तीन आदमियों के लिये सम्मिलित रखा गया था। हर थाल के पास जोशाँदा कजी एक प्याला, चावल और मेवा डालकर तला एक मुर्ग और एक तश्तरी में घी के बिना बिरियान किया बर्रा तली दुम्बे की दुम के साथ रखा था। सबसे नीचे के चबूतरेवाले मेहमानों के सामने तीन-तीन आदमी पर एक-एक थाल पलाव रखा गया था, लेकिन उनके लिये कजी, मुर्ग और बर्रा बिरयानी को पृथक्-पृथक् तश्तरियों में न रख पलाव की थालियों में रख दिया गया था।

मेहमानों ने पेट फटने तक खूब खाया और हाथों को पोंछ लिया। थाल उठाये गये और उनकी जगह कीमती कटोरों और प्यालों में भरकर निशल्ला और मुरब्बा आया; तश्तरियों में भरकर युरोपीय मिठाइयों, हलुआ, सतूरा, बगलावा, पशमक, कोफ्ता, रूस्ता, पिस्ता, बादाम और दूसरी स्वादिष्ट चीजें आयीं। चबूतरेवालों के पास भी आधा-आधा कासा (कटोरा) निशल्ला और मुरब्बा रखा गया।

अब्दूरहीमबाय बहुमूल्य जामा पहने कमर में कमरबंद बाँधे मेहमानखाने की देहली में खड़ा मेहमानों के पास लायी जानेवाली एक-एक चीज को एक नजर से देख रहा था और दूसरी नजर से मेहमानों के सामने से उठाकर ले जायी जाती चीजों को; वैसे ही जैसे कौआ एक आँख हड्डी और अपनी खाने की चीज पर रखता है और दूसरी शिकारी पर। वह देखना चाहता था, कि जूठे भोजन को

---

१. १ कदाक = ४ चारयक।

रसोई घर में ले जा रहे हैं या कहीं और। नेकदम् भी जूठे भोजन को दूसरे दास कमकरों के साथ रसोई घर में ले जाने में लगा था। ऊँटखाने के अन्दर छिपकर उसने आश में से एक टुकड़ा माँस उठाकर मुँह में डाल दिया। बाय ने इसे देख लिया। दौड़ा-दौड़ा उसके पास पहुँचा और बच्चे के कान को जोर से पकड़े देग के पास नची पहलवान के सामने ले जाकर बोला :—

—यहाँ बैठा क्या कर रहा है, पहलवान ? इस अंख-भुक्खड ने तो चाहा कि मेहमानों के बचे सारे आश को ही खाकर खतम कर डाले ! मैंने तुझे यहाँ अपनी आँख बनाकर बैठाया था और तू कोई ध्यान नहीं देता। मैंने यह सारा खर्च इन गुलामों-नौकरों और सेवा करने के बहाने खामखाह आ डटे गाँव के भुखक्ड़ों के लिये नहीं किया।

—मिरजा,—अशुर ने बाय की ओर निगाह करके कहा – हमने दो रोज से नमक की डली भी जी पर नहीं रखी। बच्चा भूखा था। क्या करता, लाचार हो एक कौर आश या माँस खा लिया खा लिया, इससे आकाश जमीन पर गिरकर चिपट नहीं जायेगा, न संसार में प्रलय मच जायेगी।

—ब-चा ब-चा-!—बाय ने कहा—बीस साल का हो गया। अब भी बच्चा, यदि तुम भूखे हो तो कल्मक का हाथ जल नहीं गया है ! उसे कहते कल की रखी खिचड़ी को गरम करके दे देती।

—अका बाय—गाँव के एक गरीब ने परिहास करते कहा—दासों का पेट कल्मक आँयम् से खिचड़ी गर्म करा के भरवा रहे हो, और जलसे में आये हमलोगों का पेट कैसे भरवाओगे ?

—तेरा अपना घर है, अपनी जगह है। अपेने घर जा, खाना खाके आ। उजबे की मसल है "भोज में जा, पेट भरकर जा" तू भी इसी मसल के अनुसार काम कर।

खाना और चाय पीना समाप्त हुआ। फिर हाकिमों को लोला-लोला (रोल) कमखाब और शाही, जोड़ा जोड़ा अदरस, कोड़ा-कोड़ा अतलस, एक एक पूद (२० सेर) वाला मिश्री का डला भेंट किया गया। दूसरे मेहमानों को भी उनके दर्जे के अनुसार शाही, अदरसी या अतलसी जामे तथा अलाचे पहनाये गये; २० या १० कदाकी कन्द के डले भेंट किये गये और सबसे छोटे दर्जे के मेहमानों को भी मेवा-मिठाई दी गई।

दस्तरखान उठने और फातिहा पढ़ने के बाद मेहमान हवेली से निकलकर मैदान में गये, और वहाँ बड़े-बड़े वृक्षों पर बंधे मचानों पर कूबकारी (बकरी नोचने की घुड़दौड़) देखने के लिये बैठे। कूबकारी आरम्भ हुई। आज की कूबकारी में सौ बकरियों और दश बछड़ों के सिर काटे गये। झुण्ड से जो सवार घोड़े पर बैठे-बैठे किसी बकरी को खींच लाने में सफल हुए, वह उनकी चीज हुई। इसी तरह बछड़े खींच ले जानेवालों को बछड़ा मिला और उसके ऊपर से उन्हें जामा और तंका भी इनाम दिया गया। आज की कूबकारी में एक सौ जामा और हजार तंका खर्च हुए।

× × ×

भोज हुए एक सप्ताह बीत गया था। अब मेहमानखाने की वह शोभा नहीं थी। मूल्यवान् गद्दे हटाये जा चुके थे। उनकी जगह वहाँ एक सन्दली[1] (चौकी) रख उसे एक मामूली रजाई से ढाँक दिया गया था। सन्दली के प्रमुख स्थान पर बालिश के सहारे बाय बैठा था। उसने सामने बैठे नबी पहलवान की ओर निगाह करके कहा:—

—पहलवान, भगवान का धन्यवाद है, कि यह शुभ कार्य इज्जत-आबरू के साथ पूरा हो गय। बड़े बेटों की शादियाँ और छोटों के खतने (मुसलमानी) भी हो गये। लेकिन अभी एक काम पूरा नहीं हुआ—बाय ने लिलार पर एक हाथ रख कुछ सोच कर कहा—पहलवान, तुझे मालूम है, यदि ५ भेड़ों को प्रति वर्ष जोड़ा खिलाया जाये, तो दस साल में उनकी संख्या कितनी हो जायेगी?

—यदि गुम न हो, भेड़िया न खा जाय और मारी न जायें, तो हजार से अधिक हो जायगी।

—और ५ जोड़े आदमी?

—यदि उन्हें घरवाला बनाया, तो ३० हो जायेंगे—पहलवान ने जवाब दिया।

—हमारी शरीयत (धर्मशास्त्र) की भारी कृपा है, कि दास-दासियों के बच्चे उनके मिरजा (स्वामी) के दास-दासी होते हैं।

बाय चुप रहा। नबी पहलवान को इस बुझौवल का अर्थ समझ में नहीं

---

१. जाड़ों में उन देशों में एक वर्गाकार चौकी (सन्दली) के नीचे कोयले की अंगीठी रख ऊपर चारों ओर लटकती रजाई रख देते हैं। कमर या छाती तक इसी रजाई में डूबे नर-नारी गर्म होने के लिये चौकी की चारों ओर बैठ जाते हैं।

आया। वह आँखें फाड़े कानों को खड़ा किये उसे समझने के लिये बाय की ओर एक टक देखता रहा। बाय ने फिर बात शुरू की।

—इसीलिये मैं चाहता हूँ कि ४० साल से अधिक के दासों को प्रौढ़ा दासियों के साथ घर वाला बनाया जाय। इन दासियों में मेरी गूमायें (रखेलियाँ) भी सम्मिलित हैं, जिनको हमसे बच्चा नहीं हुआ या बच्चा होकर मर गया। यदि हम १५ जोड़ा दास-दासियों को इस तरह सम्बद्ध करें और खुदा मेहरबानी करे, तो १० साल में एक सौ पचास गृहजात दास-दासी हो जायेंगे। मेरे लिये तो यही काम है असली दावत या जलसा।

नबी पहलवान को अब मतलब मालूम हुआ। उसने अपने आपसे कहा "ओहो! यह बात थी" फिर वह बाय से बोला "तरुण दासियों को पति के हाथ न सौंपना इसका कारण तो मालूम हो सकता है, किन्तु तरुण दासों को क्यों नहीं घर बसाने दिया जाय, जिसमें उनसे भी गृहजात बच्चे पैदा हों?

—जवानी का समय दासों से काम लेने और लाभ उठाने का है। जवानी में घर बसा देने पर दास की आधी शक्ति और समय स्त्री के काम में लग जायेगा। यही कारण है, जो कि कामवाले घोड़ों और बैलों को अख़ता कर देते हैं, जिसमें वह जोड़ा न खा सकें। देखा नहीं, अख़्ता हुए जानवर कितने मजबूत होते हैं। यदि बुढ़ापे में संतान की आशा न होती, तो मैं भी अपने दासों को अख़्ता करवा देता। संक्षेप में यह कि जवान दास का नकद फायदा है उससे काम लेना। संतान पैदा करने का फायदा कोई निश्चित नहीं है, क्योंकि हो सकता है गर्भपात हो जाय, बच्चा मर जाय या पानी में डूब जाय। उपस्थित लाभ को छोड़कर अनुपस्थित की ओर हाथ बढ़ाना बुद्धिमानों का काम नहीं है।

बाय ने इस तरह नबी पहलवान से सलाह करके दास-दासियों द्वारा गृहजात दास-दासी उत्पन्न करने का निश्चय किया और अगले दिन से उसे कार्य रूप में भी परिणत किया जाने लगा।

× × ×

दास और कमकर (मजदूर) आधी रात तक रूई ओटते रात के लिये निश्चित काम को पूरा कर चुके, फिर सोने का वक्त आया। जोड़े बने दास अपने लिये मिली दासियों के साथ घासखाने, साईसखाने, भेड़खाने या ऊँटखाने में सोने के लिये चले गये। एक स्त्री ईंधनखाने में ईंधन के ऊपर घोड़े के पुराने झूल को

बिछा अपने और पति के लिये बिस्तरा तैयार करने लगी। वह बड़े करुण स्वर में गा रही थीः

सुखी थी मैं उस कल्मक-भूमि में।
सदा थी खाती दूध - दही कैमक मैं।
अब हूँ दासी एक निर्बुद्धि - सी।
हूँ खून पीती आँखों बहाती।
बाँदी बनी हूँ एक नामरद की।
कभी बड़ी बनी कभी हूँ छोटी।
कुछ समय उसने मुझे किया खुश।
अपनी स्त्री बना फिर मुझे मुक्त किया।
किन्तु अंत में इस नामर्द ने।
अपनी स्त्री दी गुलाम को।

यह दासी कल्मक-आयम् थी, जिसे बच्चों के मर जाने पर बाय ने अपनी औरतों में से निकालकर अशुर गुलाम को दे दिया, जिसमें कि वह गृहजात दास पैदा करे।

१७

(दासता उठ गयी १८७१ ई०)

अब्दुर्रहीमबाय का मेहमानखाना अर्ध तातारी ढंग से सजाया गया था। तख्तपोश को हटाकर तीन गज लम्बा एक गज चौड़ा पौन गज ऊँचा मेज रखा हुआ था, जिसके ऊपर एक सफेद चादर बिछी थी, चिराग की जगह पाँच पञ्जादार शमादान था, जिसमें एक कदाकी (छटंकी) मोमबत्तियाँ जल रही थीं। मेज के ऊपर नान (रोटी), कुलचा, सम्बोसा, कुर्स, रूसी मिठाई, बादाम, पिस्ता और मेवे इत्यादि रखे हुए थे; दूसरी ओर ५० गिलासवाला समावार उबल रहा था।

मुख्य स्थान पर मेज के किनारे एक बड़े पेटवाला तातार (बोलगातट-निवासी) बैठा हुआ था। उसकी पोशाक और टोपी तातारी थी और पैरों में नमदे का

लम्बा बूट था। उसकी बगल में गाँव का इमाम लम्बा-चौड़ा जामा और बड़ी पगड़ी पहिने बैठा था। मेज की लम्बाई में एक ओर बूढ़ा अब्दूरहीमबाय और उसकी बग़ल में उसके दो लड़के अब्दूहकीम औ मुल्लासाबित बैठे थे। उनके सामने मेज की दूसरी ओर शाफिरकाम तूमान के कुछ किलाची बाय थे। मेज के नीचे की ओर समवार के पास बाय का छोटा लड़का बैठा था, जो मेहमानों के खाली गिलासों को ले उनमें ताजी चाय डालकर सामने रख रहा था। तातारबाय ने करीब-करीब ठंढी हो गयी चाय की गिलास को दो घूँट में खतम करके गिलास को समावार की ओर खिसका बाय की तरफ निगाह डाली। अब्दूरहीमबाय बूढ़ा होने के साथ उसकी हिम्मत भी टूट गयी थी। अपने विचारों में मग्न उसे नहीं मालूम हो पाया कि मेहमान उसकी ओर देख रहा है। तातारबाय ने स्वयं कहा :

—बाय अका, इतने सामान के साथ दावत देने के लिये मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, लेकिन बात क्यों नहीं कर रहे हो? सो गये हो क्या?

—दुनिया खतम हो गयी, देश को रूसियों[1] ने ले लिया। भला मुसलमान मुँह कैसे खुले, उसके ओठ कैसे हँसे!

तातारबाय ने सामने रखी गरम चाय के गिलास से एक-दो चुस्की लेकर फिर कहना शुरू किया—दा (हाँ), यह ठीक है मुसलमानों के देश में काफिरों का कदम रखना इस्लामिक राज के साथ बेदीन राज का जंग करना किसी भी मुसलमान को दुखी किये बिना नहीं रह सकता; यह ठीक है। लेकिन खुदा की मर्जी पर राजी न होना और भाग्य से उलाहना देना मुसलमान का काम नहीं।

—अरे, "कजा (भगवदाज्ञा) पर रजा" होना चाहिये—कहते इमाम ने तातारबाय की बात का समर्थन किया।

—आपने ठीक कहा हजरत—तातारबाय ने इमाम से कह फिर बाय के साथ बात शुरू की :

—जब इस देश में काफिरों का कदम रखना खुदा की मर्जी है, खुदा की मर्जी का विरोध करना मोमिन-बंदा का काम नहीं है; अच्छा यही है कि खुदा की बात को खुदा के ऊपर छोड़ अपने कामों की बातें करें!

(दो तीन और चुस्की लेकर)—मेरे विचार में यहां तक आक पाश्शा (सफेद

---

(१) सन १८६३ ई० रूसियों ने तुर्किस्तान पर अधिकार किया।

बादशाह अर्थात् जार) के राज्य का फैल जाना हम सौदागरों के लिये बड़े फायदे की बात है। पहले तुम्हारे जैसे किलाची सौदागर सेना की तरह तैयार होकर ओरेनबुर्ग (किला) की यात्रा करने के लिये मजबूर थे। अब जब कि आक पाश्शा की सरकार ने कजाकों के हाथ ठंडे कर दिये, तो तुम अकेले ही किला की यात्रा कर सकते हो। (तातारबाय ने बाकी चाय पीकर गिलास को समावारची-ओर सरकाते कहा) पहले यात्री घोड़े पर सवार हो साईस साथ में लिये किला की यात्रा करता था, किन्तु अब थोड़ा-सा दाम खर्च करके सरकारी डाक के अराबा (बग्घी) पर सवार हो रूस की यात्रा कर सकता है। देख नहीं रहे हो, रूसी सेना को इधर कदम रखे तीन साल भी नहीं हुए, कि शाफिरकाम के बाय किजली और आकमस्जिद् जैसे नये व्यापारिक केन्द्रों में बस रहे हैं; वहाँ तातार या कजाक स्त्रियों को रखकर मकान बनवा दो वतनों के मालिक, दो दो बादशाहों की रियाया और दो चश्मों से पानी पीनेवाले बन गये। इस बात से स्पष्ट है कि आक-पाश्शा की सरकार कितनी दयालु और न्यायप्रिय है।

तातारबाय ने चाय पीना शुरू किया। इमाम ने अवसर पा बोलना शुरू किया—बाल-बच्चों को रोजी देना कर्तव्य है। हमारे पैगम्बर ने "व्यापार को देश का सबसे अच्छा पेशा और व्यापारियों को भगवान की सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ" कहा है। काफिर होते भी आक-पाश्शा का प्रजा पर इतनी मेहरबानी करना बड़ी ही अद्भुत बात है।

—तुमने अभी नहीं देखा हजरत—तातारबाय ने कहा—किन्तु मैं अपनी देखी बात कहता हूँ। शायद तुमने धर्म-ग्रन्थों में पढ़ा होगा, कि खुदा अंतिम न्याय के दिन बादशाहों से दीन नहीं बल्कि न्याय के बारे में पूछ करेगा।

सब मेहमानों के सामने गिलास उलटे हुए थे, जिसका अर्थ यह था कि वे और चाय नहीं पीना चाहते थे। अब सिर्फ तातारबाय का गिलास समावार तक यातायात कर रहा था। उसने "तुम्हारी चाय बहुत स्वादिष्ट है" कहते सामने रखी चाय को पी "एक और दो" कहते गिलास को समावार की ओर बढ़ा छूटी जगह से फिर बात शुरू की।

—यह भी कम है अब्दूरहीमबाय अका! जो हम नहीं देख सके वह हमारे लड़के देखेंगे। इस ओर भी युरोप की भांति रेलें बन जायेंगी। सौदागर आज बड़ी मुश्किल से एक मास में ओरनबुर्ग पहुँचते हैं, रेल द्वारा वे एक सप्ताह में

मास्को पहुँच जायेंगे। आज सौदागर साल में एक बार बुखारा और ओरेनबुर्ग की ओर यात्रा करते हैं, तब साल में चार बार मास्को जा-आ सकेंगे। तुम्हारा पैसा आजकल साल में एक बार बुखारा और ओरेनबुर्ग की ओर चक्कर काटता है, तब उतने समय में चारबार चक्कर काट सकेगा। यह सब सौदागरों पर खुदा की मेहरबानी और आक पाश्शा का भारी न्याय का प्रमाण है।

तातार की बात सुनकर अब अब्दूरहीम बाय पर भी उसका असर होने लगा। वह देर से एक बात पर सोच रहा था और उसी के बारे में उसने पूछा—तुम्हारे आक पश्शा का यह कौन-सा न्याय है, जो उसने हमारे जनाबआली को आज्ञा दी है, कि अपने मुल्क के दासों को स्वतन्त्र कर दें और आगे के लिये दासों का क्रय-विक्रय बिल्कुल बंद कर दें ! क्या यह काम दास-स्वामियों पर जुल्म नहीं है ?

—अवश्य यह काम इस्लामी देश से धर्म के विधान को निकाल बाहर करना है—कहते इमाम ने अब्दूरहीमबाय का समर्थन किया।

—इस समय शरीयत और दीन के काम को खुदा पर छोड़कर हम सांसारिक कामों पर बात कर रहे थे। इस बात को भूलें न हजरत—कह इमाम को जवाब दे तातारबाय ने अब्दूरहीमबाय की ओर निगाह करके कहा—दासों का स्वतन्त्र करना कैसे जुल्म है ?

—क्यों नहीं जुल्म है ?—अब्दूरहीमबाय ने कहा—जैसे मेरे पास सौ से अधिक दास-दासी हैं, इनमें से कुछ गृहजात भी हैं ; किन्तु औरों को मैंने सौ से लेकर डेढ़ सौ तिल्ले पर खरीदा है ! अब आक पाश्शा और जनाबआली के बीच में जो अहदनामा (प्रतिज्ञापत्र) हुआ है, उसके अनुसार १२ साल के भीतर इन सारे दास-दासियों को स्वतन्त्र कर देना होगा और उनपर लगे मेरे दस हजार तिल्ले हवा हो जायेंगे। क्या यह जुल्म नहीं हैं।

तातारबाय ने सिर खुजलाते बात शुरू की—बात यह है, यदि १०० तिल्ला से खरीदा गुलाम १२ साल तक तुम्हारे यहां काम करे, तो साल में साढ़े आठ तिल्ला के करीब खर्च पड़ा। यह रकम मजदूरी की रकम के सामने कुछ नहीं है। शरीयत ने भी प्रत्येक अधिकार दिया है, कि दास तीन चार साल सेवा करके मालिक से भी आजाद हो जावे।

—ठीक है यह मसला मुकातिबा[1] है—बीच में बात काटकर इमाम ने तातारबाय का समर्थन किया।

—मेहरबानी हजरत—तातारबाय ने इमाम से कहा—मैंने इसी बात को सीधी-सादी भाषा में कहा था। तुमने इसे किताब की भाषा में कहा—तातारबाय ने फिर अब्दुर्रहीमबाय की ओर निगाह करके कहा—इस प्रकार आक पाश्शा ने जनाब आली के साथ जो अहदनामा किया है, उसके द्वारा शरीयत के साथ भी और दास-स्वामियों के साथ भी अधिक न्याय और दया का परिचय दिया गया है। (चाय पीकर) दूसरे यह कि दासता का अर्थ है, दास से मेहनत कराना सेवा लेना। जो दास तुम्हारे पास १२ साल से काम कर रहा है और उसके पास जमीन घर-बार कुछ नहीं है, वह स्वतन्त्र होने के बाद कहाँ जायेगा? वह बाद में भी तुम्हारी सेवा करने के लिये मजबूर होगा। इसलिये इस तरह की दास-स्वतन्त्रता से घबड़ाने की जरूरत नहीं।

बहुत बात करने से तातार बाय का गला फिर सूख गया था। एक घोंट चाय से उसे तरकर गिलास को समावार की ओर बढ़ाते उसने फिर बात शुरू की.—

—तीसरी और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है, कि आक पाश्शा इस तरह व्यापारियों और कारखानेवालों पर भारी कृपा करना चाहता है। जैसे पहले यदि ईरान और अफगानिस्तान से तुर्कमान हर साल ५०० गुलाम लूटकर तुम्हारे मुल्क में भेज तुमसे पचास हजार तिल्ला ले जाते थे; तो अब आक पाश्शा की युक्ति से उन मुल्कों से तुम्हारे देश में हजारों दास अर्थात् मजूर मुफ्त में अपने पैरों से चलकर आयेंगे। यह ठीक है कि इस युक्ति से केवल तुम्हारा या मेरा लाभ नहीं है, बल्कि सभी सौदागरों और कारखानेवालों के लिये यह एक समान लाभदायक है। (थोड़ा सुस्ताकर) आजकल रूई ओटने और साफ करने में कितनी मेहनत उठानी पड़ती है, इसपर भी इस साल की खरीदी कपास अगले साल जाकर रूई (ओटी रूई) बनती है और तुम्हारी पूंजी मुफ्त में फँसी रहती है। यदि तुम्हारे

---

१. यदि मालिक ५० से ६० तिल्ला में दास को मुक्त करने के लिये राजी है, तो दास तीन या चार साल काम करके वह रकम कमाकर मालिक को दे स्वतन्त्र हो सकता है; लेकिन उस बात को काजी के पास जाकर मुकातिबा (लिखा-पढ़ी) करा पक्का करना होगा। सस्ती के समय दास को उसी के हाथों बेचने का यह ढंग निकाला गया था।

मुल्क में ओटने का कारखाना बन जाय, तो इस सप्ताह का खरीदा कपास अगले सप्ताह रूई बनाकर मास्को भेजा जा सकता है। आजकल तुम्हारे मुल्क में हर गाँव तेल निकालने के कोल्हू और साबुन बनाने के कारखाने हैं। यदि उद्योग-धन्धा आगे बढ़ें, तो तेल और साबुन की चन्द फैक्टरियाँ सारे देश के लिये पर्याप्त होंगी। यदि चाहो तो तुम ऐसी फैक्टरी बना सकते हो और हजारों जगहों में बिखरनेवाली रकम को एक जगह जमा कर सकते हो। फैक्टरी की वजह से छोटे-छोटे हथियार बेकार हो जायेंगे, किन्तु मजदूर और कारीगर भूखे नहीं रहेंगे, क्योंकि वे फैक्टरी में आकर काम कर सकते हैं और अपने भाग्य के अनुसार मजूरी पा सकते हैं। लेकिन ऐसी फैक्टरी क्रीत-दासों से नहीं चलायी जा सकती, क्योंकि वे जिम्मेवार नहीं होते। इस तरह के काम के लिये जिम्मेवार, सस्ते और स्वयं काम के लिये आये कारीगरों की आवश्यकता होती है। आक पाश्शा इसीलिये दास-प्रथा को उठाना चाहता है, कि बड़े कारखानों और फैक्टरियों के लिये सस्ते और स्वेच्छा से आये मजूर मिलें।

सामने ताजी आई चाय को देखकर तातारबाय ने बात रोककर उसे पीना चाहा। किन्तु चाय बहुत गरम थी। इसलिये उसे तस्तरी में निकाल फूंक-फूंक कर पीया और गिलास को समावार की ओर बढ़ाते "एक गिलास और" कहकर फिर बात शुरू की—मैंने रूसिया में स्वयं अपनी आँखों ऐसा होते देखा है। रूसिया में तुम्हारे मुल्क की तरह दासों का क्रय-विक्रय न होते भी मूजिक (किसान) बड़े-बड़े जमींदारों के हाथ में बंधे हुए थे। जमींदार की इच्छा होती, तो मूजिकों के साथ अपनी जमीन दूसरे के हाथ बेंच सकता था। मूजिक किसान अपने गाँव से दूसरे गाँव भी बिना मालिक की आज्ञा के न जा सकता था और न नगर में जाकर कारखानों और फैक्टरियों में काम कर सकता था—इस प्रथा को रूसी भाषा में "क्रिपोस्त्नोइ प्रावा" कहा जाता था। दस साल पहले (१८६१ ई०) की बात है, जब कि आक पाश्शा ने मूजिकों को स्वतन्त्र कर दिया और उन्हें अधिकार दे दिया कि जहाँ चाहें जायें और जो काम करना चाहें करें। जमींदारों के बेकार और घटिया सी जमीनों में से भी कुछ को लेकर उन्हें दे दिया। लेकिन इस शर्त के साथ कि मूजिक उस जमीन के लिये हर साल जमींदार को दाम दें।

तातारबाय ने सामने की चाय पीकर गिलास को फिर समावार की ओर बढ़ा दिया, और बात शुरू की—इसी युक्ति से काम की शक्ति (मजदूर) गाँव से शहर

की ओर रवाना हुई। फैक्टरियों में मजदूर भर गये। उद्योग-धन्धों में उन्नति हुई और बड़े-बड़े बाय (सेठ) पैदा हुए। पहले पहल बड़े-बड़े जिमीन्दार मूजिकों की स्वतंत्रता से नाराज अवश्य हुए, किन्तु वस्तुतः इस काम से उनको भी अधिक हानि न हुई, क्योंकि उनकी खराब जमीन को मूजिकों ने दाम देकर खरीद लिया। खराब जमीन की उपज से मूजिक का पेट कहाँ भरनेवाला था ? उससे अच्छी तरह काम करने के लिये उसके पास साधन भी नहीं था ; इसलिये लाचार होकर जमीन को उसने पुराने मालिक को लौटा दिया और उससे ठीका पर ले काम करते वह अपने खून-पसीने की कमाई को फिर मालिक को देने लगा। जमीन्दार फिर पहले की तरह पेट खुजलाते मूजिकों का खून पीते ज्यादा पैसे बैंक में जमाकर सूद उड़ाते मौज करने लगे। कितने ही बड़े-बड़े जमीन्दारों ने स्वयं फैक्टरियों और बड़ी दुकानों को खोला और वह अपने पुराने मूजिकों से और आसानी से अधिक लाभ उठाने लगे।

अब्दुरहीम बाय के चेहरे पर कुछ प्रसन्नता की रेखा दौड़ने लगी और उसने कहा—क्या हम भी ऐसा कर सकते हैं ? क्या व्यापारी होने के अतिरिक्त हम फैक्टरीवाले भी बन सकते हैं ?

—जरूर, जरूर—तातारबाय ने ठंढी चाय पर उबलता पानी ढलवाकर पीते कहा—हाँ, जरूर फैक्टरीवाला बनना चाहिये। यदि यह तुम न करोगे, तो तुम्हारे लड़के करेंगे। लेकिन फैक्टरी-मालिक और व्यापारी कामों के लिये तुम्हारे पास शक्ति नहीं है। रूसी बाय बहुत बड़े बाय हैं, उनके पास बहुत पैसा है, उनके मुकाबिले में तुम काम नहीं कर सकते। वह दूसरे मुल्कों से भी सस्ते सूद पर कर्ज ले सकते हैं। तुम इतना पैसा कहां से लाओगे ?

तातारबाय ने चाय का गिलास फिर खतम करके कहना शुरू किया—बड़ा काम तुम एक ही तरह कर कसते हो, वह यही है कि हम तातार और तुम एक हो जावें। हम भी मुसलमान तुम भी मुसलमान. यदि हम दोनों मिलकर व्यापार और उद्योग-धंधे में शामिल हों, तो इन काफिर बायों का मुकाबिला कर सकते हैं। यदि ऐसा नहीं किया, तो रूसी बाय हम दोनों को बर्बाद कर डालेंगे, हमारी कमर तोड़ देंगे। इस बात को मुझसे और तुमसे पहले रूसी बायों ने ताड़ लिया था, लेकिन आकपाश्शा ने तुम्हारे मुल्क में हमें जमीन खरीदने और यहाँ आकर घर बनाने की मनाही कर दी। तुम्हारे मुल्क में कच्चा माल बहुत है, काम की शक्ति (गरीब आदमी) भी यहाँ ज्यादा हैं। ऊपर से पड़ोसी मुल्कों से भी दस्तकारी

की चीजें तुम्हारे मुल्क में अधिक आती हैं। यदि हम सब मुसलमान एक हो जायँ, तो इससे हम खूब लाभ उठायेंगे। वस्तुतः तुर्किस्तान-विजय भी तुम्हारे दीन पर चोट करने के लिये नहीं, बल्कि इसी कच्चे माल और सस्ती मेहनत से फायदा उठाने के लिये किया। तुम जितने दीनदार (पूजा-पाठवाले) रहना चाहो रहो, जितनी बार नमाज पढ़ना चाहो पढ़ो। बादशाह रूस को इससे कोई मतलब नहीं, बल्कि वह तो चाहता है, कि तुम ज्यादा दीनदार बनो, ज्यादा नमाज पढ़ो और दूसरों को भी ज्यादा दीनदार बनाओ।

—ऐसा है!—इमाम ने बात काटते हुए कहा—तब तो बादशाह रूस बड़ा अच्छा है, हमारे दीनदार होने या लोगों को दीनदार बनाने में बाधा नहीं देना चाहता।

—बाधा नहीं देना चाहता हजरत!—तातारबाय ने कहा—तुम लोगों को दीनदार बनाने के लिये खूब काम करो, लेकिन अपने उपदेश और प्रार्थना के बीच राजभक्ति की भी बात कहते रहो।

—अलबत्ता, अलबत्ता, बादशाह के नमक का हक खुदा के हक के बराबर है—इमाम ने कहा।

अब्दूरहीमबाय अपने विचारों में डूबा हुआ था। तातारबाय ने उसकी ओर जरा देखकर कहा—हाँ, और क्या चिंता कर रहे हो? क्या अब भी अपने दासों के स्वतन्त्र होने की अफसोस में हो?

—तुम चाहे जो कहो, चाहे जो भी हो, किन्तु रूसियों के मुल्क में कदम रखने से हम भलाई की आशा नहीं रखते। रूसियों के आने के बाद दीन (धर्म) कमजोर हुआ, धर्म-पुण्य उठ गया, चीजें महँगी हो गयीं, जिस माल से हम एक पर दश फायदा उठाते थे उससे अब एक पर आधा भी फायदा नहीं उठा सकते।

—अच्छा—तातारबाय ने कहा—तुम्हारी सूझ-बूझ तुम्हारे साथ और मेरी सूझ-बूझ मेरे साथ (जेब से निकाल कर घड़ी देखते) रात बहुत बीत गयी, एक बज रहा है। अब सोना चाहिये।

इमाम ने अपनी घड़ी देखकर कहा—अभी बारह नहीं बजे हैं।

—तुम्हारी घड़ी पीछे है—तातारबाय ने कहा।

—मेरी घड़ी ठीक होनी चाहिये, क्योंकि ये जनाब बाय ने ओरेनबुर्ग से लाकर प्रदान किया है।

—तुम्हारी घड़ी चाहे ओरेनबुर्ग से लाकर प्रदान की गयी हो, किन्तु वह सुस्त है। अपनी घड़ी मैंने बर्लिन में अपने पैसे से अपने लिये खुद खरीदी। बायलोग अच्छी चीज का दान नहीं करते, इसे भी गाँठ बांध लो हजरत !

इमाम, अब्दूरहीमबाय और दूसरे भी हँस पड़े। तातारबाय ने भी हँसते हुए जेब से टटोलकर एक चाँदी का रूबल इमाम को देते हुए कहा—दुआ करना न भूलना हजरत !

इमाम ने तातारबाय के लिये लम्बी-चौड़ी दुआ की। भोज की मजलिस बर्खास्त हुई।

१८

दास फिर भी दास हो (१८८३ ई०)

हवा में सुगन्धि बह रही किन्तु यह आयी करशी औ मेरे यार से।
चमन से चमन में समीर सा मैं घूमा कि मिलूं उससे दर्द कम हो मेरा।
हवा में सुगन्ध बह रही किन्तु यह आयी करशी औ मेरे यार से।
हाय हाय करता हूँ मैं सर्वत्र हवा में सूंघता उसकी सुगन्ध।
हवा में सुगन्ध बह रही किन्तु यह आयी करशी औ मेरे यार से।

तुला (मार्च) मास का अन्त था। आकाश स्वच्छ समुद्र की तरह नीला दिखलाई दे रहा था। यद्यपि कहीं-कहीं बादल के टुकड़े थे, किन्तु वह असीम सागर में नाव की तरह तैरते जान पड़ते थे। कभी-कभी वर्षा की फुहारें पड़तीं जब कि जलबिन्दु अकाश के दूसरे किनारे से सद्योनिर्गत सूर्य के प्रकाश में चमकती मोतियों-जैसे दिखलाई पड़ते थे। बालू के टीले जो गरमी में अग्नि-चूर्ण के पहाड़ की तरह गर्म और जरा-सी हवा से चारों ओर चलायमान दीखते थे, अब वर्षा के कारण भारी बनकर स्थिर हो गये थे और उनकी गर्मी भी लुप्त हो चुकी थी। गर्मियों में चिनगारियों की तरह का उनका लाल रंग अब बसन्त के समान हरा लिये साँवला हो गया था। जगह-जगह बसन्त की हरी-हरी घासें उग आयी थीं, जो कि उनके मर्कत सौन्दर्य को कई गुना बढ़ा रही थीं। जगह-जगह पीले बनफशी,

और सफेद लाले खिले हुए थे, जिनसे वह दृश्य और मनोहर हो गया था। यह दृश्य शाफिरकामतूमान और क़िज़िल-चूल (लाल रेगिस्तान) के बीच कराखानी गाँव से बर्दांजे तक एक लम्बी-चौड़ी धारा की तरह खींचा हुआ था। वहाँ कराकुली भेड़ों के गल्ले चरते डोल रहे थे। यह भेड़ें जाड़े और गर्मी में क़िज़िल-चूल में चरा करतीं, किन्तु अब बसन्त ऋतु में बच्चा जनने का समय आ गया था। इसलिये उन्हें बस्ती के नजदीक लाया गया था, जिसमें उनसे मिलनेवाली चीजों का उपयोग किया जा सके।

पहाड़ी डांड़ों की तरह दिखलाई देनेवाले इन बालू के टीलों के बीच काले मकान, तम्बू और छोलदारियां खड़ी थीं, जिनमें मालिक अपने परिवार के साथ ठहरे हुए थे। एक ओर बीबियां, लड़कियां और दासियाँ भेड़ों को दूहने, मथने, मसक निकालने और घी तपाने में लगी थीं; दूसरी ओर दास, नौकर और चरवाहे भेड़ों को जनाने और बच्चों को मारने में लगे थे। ये वही बच्चे थे जिनकी पोस्तीन (बालसहित चर्म) गुलाब की तरह नर्म और रेशम की तरह चमकीली होती हैं और इसीलिये जिन्हें एक बार भी मां का दूध पिये बिना मार डाला जाता है। जिन बच्चों की पोस्तीन पूर्ण विकसित नहीं देखी जाती, उन्हें दो-तीन बार या दो-तीन रोज मां का दूध पीने के लिये जीवनदान दिया जाता है। भेड़ों की "मां-मां" और बच्चों की "में-में" के साथ दूर के टीले से विषण्ण स्वर में कोई गा रहा था—

"हवा में सुगन्धि बह रही......" साथ ही बांसुरी में वह उस गीत को दुहरा भी रहा था। संगीत से करुणा बरस रही थी।

एक दासी कुमाच के खमीर को आग से तपाकर बालू में ढांक रही थी। दूसरा आदमी तनूर की तरह तपे गड्ढे में चमड़ा निकाले वर्रे को बिरियान (भूनना) कर रहा था। दासी ने कहा—आचिल अका!

—हाँ, क्या कह रही है!

—यह नेकदम एक बड़ा ही विचित्र आदमी है। भेड़ जनाने में जरा भी सहायता नहीं करता। जैसे ही भेड़ जनाना शुरू करते हैं, जनी भेड़ों को लेकर दूर चला जाता है और बांसुरी बजा गाना शुरू करता है। वह हर वक्त गाता है "हवा में सुगन्ध बह रही, किन्तु यह आयी करशी औ मेरे यार से।" क्यों वह लोगों से इतना भागता फिरता है? क्यों इतना विलाप करता है?

—उसके दिल में दर्द है—आचिल आग पर लटकते हुए वर्रों को उलटते

तथा अपनी बात को दोहराते बोला :—

उसे दर्द है रंग जर्द है।
रंग जर्द कहता है कि उसे दर्द है।
ठंढी आह कहती है कि उसे दर्द है।

दासी ने पूछा—उसे कैसा दर्द है?

—क्या उसके दर्द को नहीं जानती?

—यदि जानती तो तुम से क्यों पूछती?

—उसका दर्द तू ही है, वह तुझे पाना चाहता है।

दासी ने कुछ लज्जित-सी होकर कहा—रहने दो अपने मजाक को। वह हर समय गाता रहता है—"हवा से सुगन्धित बह रही, किन्तु यह आयी करशी औ मेरे यार से"। भला करशी से मेरा क्या सम्बन्ध?

—जहाँ तक मैं जानता हूँ, उसका दर्द तू है। यदि विश्वास नहीं करती तो स्वयं पूछकर देख ले।

इसी समय काले घर के अन्दर से "गुलसुम्, ओ गुलसुम्" कहते किसी ने आवाज दी और दास-दासी का गरम वार्तालाप यहीं समाप्त हो गया। दासी "लब्बेक, खुश" कहती काले घर की ओर दौड़ी।

अब्दूरहीमबाय का बड़ा लड़का अब्दूहकीम बर्रा-बिरयान खाकर घर के अन्दर बैठा था। गुलसुम् के आने पर पूछा—खैबर कहाँ है?

—मैंने नहीं देखा, मैं नहीं जानती—गुलसुम् ने जवाब दिया।

—तू नहीं जानती, मैं जानता हूँ—बायबच्चा ने क्रोध के स्वर में कहा—वह गुस्सा होकर चला गया है। तुम भुक्खड़ों ने उसे नाराज कर दिया।

—हमने न उसे मारा, न गाली दी। कैसे हमने नाराज कर दिया?

—जबान को रोक—मनचलाक बायबच्चा ने डाँट कर कहा—मैंने सबेरे खाना खाते वक्त अधखायी हड्डियों को खैबर को देने को कहा था। तुम भुक्खड़ों ने दुबारा हड्डियों को बे-मांस का बना दिया, इसीलिये खैबर ने उसे नहीं खाया और गुस्सा होकर चला गया।

बायबच्चा चुप हो गया। गुलसुम् ने समझ लिया की बुलाने का मतलब था गाली सुनाना और अब वह पूरा हो गया। अब वह घर से बाहर निकलना

चाहती थी। बायबच्चा ने उसे रोककर अधखायी हड्डियों पर एक टुकड़ा रोटी और एक बोटी मांस रखकर गुलसुम् के हाथ में थमाते बोला—इसे ले जाकर खैबर को दे दे।

गुलसुम् काले घर से निकलकर "खै-ब-र बूः-बूः-बूः" कहती आवाज देने लगी, लेकिन खैबर का कहीं पता न था।

—वह गुस्सा हो गया है—काले घर के अन्दर से अब्दूहकीम बोला—आवाज देने से वह नहीं आयगा। जा बालू के टीले पर घूमकर देख। पहले मांस-रोटी सामने रखना, उसके सिर को सहलाना, फिर हड्डियों को सामने रख देना।

गुलसुम् ने धीमे स्वर मे आचिल से कहा—कुत्ते की अवस्था हमसे अच्छी है। उसकी सेवा का मूल्य हमारी सेवा के मूल्य से अधिक है।

गुलसुम् टीलों की ओर चल पड़ी। अब भी एक रेत के टीले पर से गाने के शब्द आ रहे थे।

"हवा में सुगन्धि बह रही" गीत के बंद होते ही वही स्वर बांसुरी से निकलने लगा। उस करुण संगीत ने दिल को हिला दिया। उसने गुलसुम् को अपनी ओर खींचा। वह खैबर को ढूँढ़ने की बात भूलकर उस टीले की ओर चली।

बालू के टीलों के बीच भेड़ें चर रहीं थीं। लम्बे बालवाले बर्रे, जिन्हें कुछ समय के लिये जीवनदान मिला था, मां बनने वाली मांदा बर्रे के साथ नर्म बालू के ऊपर फुदकते खेल रहे थे। टीले के ऊपर चरवाहों की बांसुरी हाथ में लिये नेकदम गा रहा था। गाना रोककर बांसुरी बजाते वक्त अधमुंदी आंखों से वह फुदकते बच्चों की क्रीड़ा या नृत्य को बड़े शौक से देख रहा था। गुलसुम् ने पास आकर बर्तन को जमीन पर रख दिया और उसके सामने बैठ गयी, और बांसुरी के चुप होने पर बोली।

—नेकदम! गीत और बांसुरी का स्वर जैसा हम पर प्रभाव डाल रहा है वैसा ही तुझ पर भी डाल रहा है क्या?

—क्या मेरा गाना तुझ पर प्रभाव डालता है?—नेकदम ने मुस्कराते हुए पूछा और बांसुरी के भींगे भाग को आस्तीन से पोंछकर एक तरफ रख दिया।

—आचिल अका से पूछ कि तेरे गीत और बांसुरी मेरे ऊपर कितना प्रभाव डालती है।

—क्या उससे भी तूने कह दिया?

—उससे कुछ नहीं कहा। उससे उतना ही पूछा कि नेकदम क्यों सदा "हवा में सुगन्धि……"गाता रहता है।

—फिर उसने क्या जवाब दिया?

—उसने कहा, "उसे दर्द है, रंग जर्द है……।"

—तूने उससे यह नहीं पूछा कि वह दर्द क्या है?

—पूछा।

—क्या कहा?

—उसने कुछ नहीं कहा, जैसे तू मजाक करता है वैसे ही उसने भी मजाक किया—कहते गुलसुम् का चेहरा लज्जा से आरक्त हो खिल उठा।

नेकदम गुलसुम् के खिले चेहरे को शौक से देखकर मुस्कुराते "मजाक नहीं, सच्ची बात है" कहकर गाने लगा।

मेरे दिल में दर्द है मुँह पर गर्द है।
रंग मेरा जर्द है आह मेरी सर्द है।
मेरी सर्द आह कहती है कि मेरे दिल में दर्द है।
मेरा जर्द रंग कहता है कि मेरे दिल में दर्द है।
मेरे मुँह की गर्द कहती है कि मेरे दिल में दर्द है।
मेरे दिल का दर्द कहता है कि मेरे दिल में दर्द है।

गीत समाप्त करके नेकदम ने कहा—अब इस दर्द की दवा करने का वक्त आ गया है।

—कैसा वक्त आ गया है?—गुलसुम् ने पूछा।

नेकदम ने कहा—यह वर्ष स्वतन्त्रता का वर्ष है। १२ साल पहले अंगूर कलम करने के वक्त हमारे बड़े मिरजा ने काजी के पास जाकर पत्र लिखकर दिया था कि १२ वर्ष सेवा करने के बाद मेरे सारे दास-दासी स्वतन्त्र हो जायेंगे। इसी वर्ष अंगूर कलम करने के समय से १२ वर्ष पूरे हो जायेंगे। तब हम गृहस्थ बनेंगे।

—बाय के दास अताजान और शादमान से एक दिन मुलाकात हुई तो उन्होंने पूछा—"हम तो कब के स्वतन्त्र हो गये और तुम कब स्वतन्त्र हो रहे हो?" क्यों वे पहिले हम से स्वतन्त्र हो गये? आक पश्शा ने दासों को स्वतन्त्र करने के बारे में अमीर के पास जो आज्ञापत्र भेजा था, वह तो सबके लिये एक-सा था न?

—सब के लिये एक-सा था, लेकिन उसकी कबर जले! बड़े मिरजा ने धोखा

देकर हमारी स्वतन्त्रता को टाल दिया और आज कल कहते छ मास बिता दिये। इसीलिये हम छ मास देर से स्वतन्त्र होवेंगे।

—अच्छा, मान गया छ मास बाद स्वतन्त्र होंगे; लेकिन जब हमारे पास न जमीन है न घर-बार, न भेड़-बकरी फिर ऐसी स्वतन्त्रता से क्या लाभ? इस तरह गृहस्थी में क्या मिठास? फिर वही अब्दूरहीमबाय के भेड़खाने में रहना, वही भेड़-बकरियों के पीछे दौड़ना, वही कपास ओटना, और फिर वही काम करना लेकिन रोटी न खाना। कुत्ते का सम्मान है किन्तु हमारा नहीं, हम कुत्ते से भी बदतर हैं! हाय दासता!

गुलसुम् ने आँख से झरते आंसुओं की बूंदों को आस्तीन से पोंछकर सर पकड़े इधर-उधर नजर डाली और फिर कहा—मैं असली काम को ही भूली जा रही थी, मैं खैबर को ढूंढ़ने आयी थी, जिसमें उसे मांस-रोटी खिला मिरजा के साथ उसकी दोस्ती कराऊँ।

—लेकिन क्या कभी कुत्ते की दोस्ती कुत्ते से हुई है?—हँसकर नेकदम ने कहा—खैबर वहां टीले के नीचे सो रहा है। पुकार तो देखें आता है या नहीं।

गुलसुम् उठकर टीले की ओर गयी। यहां एक बड़ी कजाकी मेढ़ के पास खैबर अपने पैरों के बीच में सिर रखे सोया था। गुलसुम् ने "खैबर, खैबर, बूः-बूः-बूः-" कहके पुकारा। कुत्ता एक बार बेमन से मुंह को उठा गुलसुम् की ओर नजर डालकर फिर पहले की तरह सो गया। गुलसुम् ने चंद बार और "खैबर, खैबर, बूः—बूः—बूः—" दोहराया, मगर कुत्ता टस-से-मस नहीं हुआ। और अंत में तो सिर उठाना भी छोड़ दिया।

—इस स्वाभिमानी कुत्ते ने सिर्फ बाय ही नहीं बल्कि उसके घर के हरएक आदमी से गुस्सा कर रखा है—नेकदम ने अपनी जगह से उठते हुए स्वयं "खैबर, खैबर" पुकारा। कुत्ता दुम हिलाते अपनी जगह से उठा। कमर और गर्दन को ऐंठ के अंगराई ली और दो एक बार जमीन को कुरेदा फिर नेकदम के पास पहुँच कर अगले पैरों को फैला उन पर मुंह को रख दुम हिलाते हुए नेकदम की आंखों की तरफ देखने लगा। गुलसुम् ने मांस-रोटी वाले बरतन को दिखलाते हुए अपनी ओर बुलाना चाहा। कुत्ता एकबार गुलसुम् की ओर देख कर सिर उधर से खींच नेकदम की ओर निगाह किये दुम हिलाने लगा।

—तुझसे बहुत नाराज है—नेकदम ने कहा और गुलसुम् के हाथ से बरतन लेकर कुत्ते के सामने रखकर कहा—खा, मेरे खैबर, खा।

कुत्ते ने एक बार बर्तन को सूंघकर नेकदम की ओर निगाह करके दुम हिलाना शुरू किया; लेकिन खाया नहीं। नेकदम ने बरतन को अपनी ओर खींचकर उसमें से एक टुकड़ा रोटी और एक बोटी मांस अपने मुंह में डाला और फिर बर्तन को कुत्ते की ओर बढ़ाते कहा—"ले मेरे खैबर, ले, हम दोनों साथ खायेंगे।" कुत्ते ने अब उठकर खाना शुरू किया।

—यह कुत्ता नहीं मानव है—नेकदम ने कहा—उसमें अब्दुर्रहीमबाय से अधिक मानवता है। उसने कुत्ते के लिये बरी-बिरियान भेजा और हम भूखों के लिये एक सूखी रोटी का टुकड़ा भी नहीं। यह कुत्ता स्वयं भूखे रहते हुए भी अपने खाने को नहीं खा सका, जब तक कि उसमें से मुझे नहीं खिलाया गया। यह कुत्ता नहीं, मानव है, ऐसा मानव जिसने अपनी मानवता को खोया नहीं, किंतु वह एक कुत्ता है जो मानवता के कूचे से नहीं गुजरा। वह सूअर है, उसे जो कुछ मिलता है उसे पेट में भरता है।

—"गुलसुम्, ओ गुलसुम्! क्या पत्थर हो गयी?" की आवाज गुलसुम् के कानों में आयी। वह बर्तन को कुत्ते के सामने खाली करके "खुश अब चली" कहते काले घर की ओर दौड़ी। नेकदम का दिल चंचल हो उठा। बालू पर से बांसुरी को उठा साफ करके ओठों से लगा फिर उसे बजाने लगा।

१६

दासों का महल्ला

विस्तृत मैदान को बालू के टीलों ने पहाड़ी की तरह ढाँक रखा था। आकाश स्वच्छ था। तारे अपनी चमक से संसार को आलोकित कर रहे थे। साफ काँच-जैसे नीले आकाश में वह बिजली के दीपों की तरह लटके हुए से मालूम होते थे। वासन्तिक वायु बह रहा था। प्रातः समीर रात में प्रफुल्लित फूलों की सुगन्ध अपने साथ ला रहा था। भेड़ें-बकरियाँ बर्रें और मेमने अपने निद्रास्थानों में आ सटकर सोये हुए थे। मालिक काले घर, तम्बुओं या छोलदारियों में आराम

से सो रहे थे। दास और नौकर भी दिन भर के काम से थके पंखोंभरी तोसक की तरह नरम बालू पर मजे से सो रहे थे। मरुभूमि निःशब्द और शान्त थी। दुनिया नीरव थी। उस नीरवता को एक करुणासंगीत भंग कर रहा था। गाने वाला गा रहा था।

"हवा में सुगन्धि बह रही, किन्तु यह आयी करशी औ मेरे यार से। चमन से चमन समीर-सा मैं घूमा, कि मिलूँ उससे दर्द कम हो मेरा।"

दूसरे दो आदमी गाने के साथ ताल दे रहे थे:

यल्ल-ले, यल्ल-ले, यल्ल-ले यल्लू
यल्ल-ले, यल्ल-ले, यल्ल-ले, यल्लू

गायक गाना बंद करके फिर उसी धुन को बाँसुरी से बजाता। रात्रि की निस्तब्धता को वह संगीत अवश्य तोड़ रहा था, किन्तु उससे सोनेवालों की निद्रा में बाधा न थी, उनके लिये वह तो लोरियों का काम दे रहा था।

× × ×

गुलसुम् रसोई घर की देग और थाल को जमा करके मालिकों का बिस्तरा लगा पानी लेने गयी। फिर पानी से भरी मशक को लाकर चूल्हे के सहारे खड़ा कर स्वयं बालू के बिस्तरे पर पड़ रही। अंधेरा रहते उठकर आधी रात तक उसने दम न लिया था। अब वह सोकर थकावट मिटाना चाहती थी, किन्तु वंशी की धुन और गीत के स्वर ने उसे सोने नहीं दिया। वह कुछ देर तक करवट बदलती रही, किन्तु नींद कहाँ! लाचार वह उठकर उस ओर चली जिधर से वंशी की ध्वनि आ रही थी। जब गुलसुम् नजदीक पहुँची, तो नेकदम "किन्तु वह आयी करशी औ मेरे यार से" पद पर पहुँच गाना समाप्त कर रहा था। उसने "दवा एकान्तता के हाथों में" कहते वंशी को एक ओर रख दिया।

—एकान्तता की दवा घर बसाना है न? सामने बैठे आचिल ने कहा।

—तू घटक बन एक स्त्री ठीक कर, यह घर बसा लेगा, क्यों?—शादमान ने आचिल से कहा।

—मुझसे पहले ही मिल चुकी है, मैं घटक क्या बनूँगा—आचिल ने जवाब दिया।

—कौन?—शादमान ने पूछा।

—गुलसुम्—आचिल ने जवाब दिया।

गुलसुम् अपना नाम सुनकर जहाँ पहुँची थी वहीं बैठ गयी और टीले की आड़ से उनकी बातचीत सुनने लगी।

—वह चालीस को पहुँच गयी, किसी तरुणी को ढूँढ़ना चाहिये—शादमान ने कहा।

गुलसुम् के मुँह से आवाज निकली "हाय, जवानी"।

—वह चालीस को पहुँच गयी, तो यह भी तो ५० के ऊपर है। यदि गुलसुम् के साथ घर बसाये तो किसी बात का हर्ज नहीं। खुदा ने चाहा तो अभी एक-दो बच्चे भी हो सकते हैं।

—आह, मरदो!—गुलसुम् ने अपने आप से कहा—ये स्त्री का मतलब इतना ही समझते हैं कि एक-दो बच्चे हों।

नेकदम बोल उठा—मैं यदि गुलसुम् को अपनी बनाऊँगा तो इसीलिये कि मैं उससे प्रेम करता हूँ, उसे प्रसन्न रखना चाहता हूँ और इसलिये भी कि उसने भी बाय-बच्चों के हाथों बेहद जुल्म सहे हैं। अन्यथा मेरे लिये बच्चा होने से न होना ही अच्छा है। हमने दुनिया में आकर क्या सुख देखा, कि वह देखेंगे।

—आ: नेकदम मेरे प्राण!!—गुलसुम् ने अपने आप से कहा—मेरा प्रेम व्यर्थ नहीं गया (फिर वह मन में सोचने लगी) लेकिन उसके पास करशी से सुगन्धि आती है, न जाने कौन-से यार के पास से?

—मैंने आज—नेकदम कह रहा था—खुद उससे बात उठायी। वह भी राजी-जैसी है। लेकिन उसने एक बात ठीक कही। वह कहती है "जब कि हमारे पास न जमीन है न घर-बार, फिर इस तरह के घर बसाने में क्या मिठास है?" इसे सोचकर मैं भी दुबिधा में पड़ गया हूँ।

—इसके लिये दुबिधा में पड़ने की आवश्यकता नहीं—शादमान ने कहा—हम स्वतन्त्र हुए दास अपना काम ठीक से चला रहे हैं। गाँव की एक तरफ रेगिस्तान के पास हम एक छोटा-सा गाँव बसा रहे हैं, जिसका नाम भी हमने "गुलामान" (दासों का महल्ला) रख दिया है। पहले-पहल मैंने और अताजान ने अपनी झोपड़ी डाली। जब बाय के काम से छुट्टी होती है, तो उसी झोपड़ी में जाकर आराम करते हैं। जब बाय का जुल्म ज्यादा बढ़ जाता है तो हम उसका काम छोड़ के बयावान में निकल जाते हैं और एक बोझ ईंधन जमाकर दो रोटी पर बेंच देते हैं और रोटी खा अपनी कोठरी में आराम से सो जाते हैं। हम चाहते

हैं कि अगले साल बाय का काम बिल्कुल छोड़कर लकड़हारी करें। तू भी गुलसुम् के साथ ब्याह कर लो। अगर बाय से पटरी न जमी तो दासों का महल्ला तो है ही, वहाँ एक झोपड़ी बनाकर लकड़हारी करना। (आकाश में तारों की ओर देखकर) ओः, रात आधी से ज्यादा बीत गयी। अब चलकर सोना चाहिये—कहते वह अपनी जगह से उठा। आचिल भी उठ खड़ा हुआ।

—मैं कूरा (भेड़-हिराव) पर जाकर सोऊँगा। भेड़ियों के आने का वक्त आ गया—आचिल ने कहा।

—भेड़िया आयेगा तो खैबर खबर देगा—कहते शादमान अपने कूरा की ओर रवाना हुआ। नेकदम के नजदीक लेटा कुत्ता अपना नाम सुनकर एक बार सिर को ऊपर उठा फिर उसे पैरों के बीच में डालकर लेट रहा।

—खैबर ने अब भी मालिक से मेल नहीं किया। वह रखवाली के लिये कूरा नहीं जाता—कहते आचिल भी अपने कूरा की ओर चला गया।

नेकदम सोने के ख्याल से उसी जगह लम्बे पड़ तारे गिनने लगा। इसी वक्त आवाज आयी "कुत्ते की कुत्ते के साथ मुहब्बत नहीं होती।" नेकदम ने आवाज आने की ओर नजर डाली, तो देखा कि गुलसुम् उसके सिरहाने खड़ी है।

—आहा, इस समय इस जगह क्या कर रही है!—कहते नेकदम उठ बैठा।

—सलाह करने आयी हूँ। अपने घर के बारे में, जिसे हम दासों के महल्ले में बनायेंगे।

—मालूम होता है सारी बात तूने सुन ली?

—सब सुन ली। मुहब्बत के तेरे झूठे दावे को भी सुन लिया।

—१५ साल की मुहब्बत, १५ साल का क्रन्दन और विलाप क्या सब झूठ है!

—किज़िल-च्यूल से उठनेवाले क्रन्दन और विलाप का उत्तर करशी से आता है।

—वह दूसरी ही घटना है, उसकी फिक्र मत कर।

—मैं भी जानती हूँ। वह दूसरी ही घटना है लेकिन यह भी जानती हूँ, कि एक दिल में दो यार नहीं रह सकते।

—तू भूल रही है गुलसुम्—नेकदम ने जोर देकर कहा—वह ऐसी घटना है, जो कि मेरे जीवन के सबसे अभागे दिन से सम्बन्ध रखती है। वह ऐसी घटना है, जिसका सम्बन्ध ब्याह-शादी से नहीं है।

—ऐसा है तो मुझे भी बतलाओ, कि वह कैसी घटना थी ?

—उस घटना के बतलाने की मुझ में शक्ति नहीं।

—मालूम होता है, कोई रहस्य है जिसे तू मुझसे छिपाना चाहता है।

—तुझ से छिपाना नहीं चाहता, उसे कहूँगा ; किन्तु मरते वक्त वसीयत के तौर पर।

—अच्छा, तो सच बतला। क्या तू मुझे जीवन-संगिनी बनाना चाहता है ?

—मैं चाहता हूँ और बहुत समय से चाहता आ रहा हूँ ; किन्तु केवल मेरे चाहने से तो नहीं होता, तेरी भी चाह होनी चाहिये।

—यदि मैं नहीं चाहती, तो थकी-माँदी रात को तेरे पास क्यों दौड़ी आती ?

—यदि यही बात थी, तो पहले क्यों नहीं आयी ? आचिल और शादमान जब तक नहीं आये थे, तब तक मैं लेटे-लेटे तारे गिन रहा था।

जलवाँ गयी थी पानी लाने के लिये, लेकिन वहाँ पानी सूख गया था। फिर वहाँ से बालायरूद (गाँव) गयी। कुएँ से पानी खींचकर मसक भरी, पानी-भरी मसक को पीठ पर रखकर जाँघ भर रेत में डूबती आधा पत्थर राह चलकर लौटी। रात आधी हो गयी थी, चाहा कि सो जाऊँ, लेकिन तेरी वंशी ने सोने नहीं दिया और दौड़ी-दौड़ी तेरे पास आयी।

—तू भी कोई गाना जानती है ?—नेकदम ने पूछा।

—आज रात जिलवाँ के किनारे गयी, देखा उसका पानी सूखा है। वहाँ दम लेने के लिये थोड़ा बैठी और उस समय की अवस्था के अनुरूप एक गीत गाया।

—गीत गा, मैं भी सुनना चाहता हूँ।

—मेरा गीत करशी से नहीं जिलवाँ से सम्बन्ध रखता है।

—अच्छा, गा, मैं सुन रहा हूँ।

गुलसुम् ने गाना शुरू किया :

अब यहाँ जिलवाँ में पानी नहीं * मेरा काम रोने के सिवा है नहीं।
मुरझाया गुलाब मेरे पास है * क्या जाने बुलबुल उसे चाहता है या नहीं।

—मेरी ओर निगाह कर गुलसुम्—नेकदम ने कहा—मुझसे भी एक जिलवाँ सम्बन्धी गीत सुन।

—सुन रही हूँ।

नेकदम ने गाना शुरू किया:

लबालब पानी जिलवाँ में मैं देखूँ * मिलन प्रिय का स्वप्न के बीच देखूँ।
वह एक बुलबुल पियासा बन का हूँ मैं * कि सूखे गुल को भी रससिक्त देखूँ।

गुलसुम् ने जवाब में कहा—

तेरे मिलन-स्मृति में मेरा दिल चक्कर काटता, उस चक्कर में मेरा ख्याल डूब जाता।
बेकार की बात यह एक सूखी हवा, जिस हवा से फूल रससिक्त कहाँ होता।

इस पर नेकदम ने कहा—

तेरी याद छोड़ और मुझे काम नहीं,
तेरे लिये शोक छोड़ मुझे कोई बोझ नहीं।
विरह-एकान्त में तारे गिनता हूँ,
विलाप छोड़ कोई मेरा यार नहीं।

"मैं भी बेयार हूँ, इसलिये तारे गिनती हूँ" कहती ताना दे सिर को ऊपर उठा गुलसुम् भी आकाश की ओर देखने लगी। दूध-जैसी चांदनी सीधे गुलसुम् के मुंह पर पड़ रही थी। उस समय उसका रूप नेकदम को बहुत आकर्षक मालूम हुआ। "मेरी गुलसुम्" कहते नेकदम ने अपने हाथ को गुलसुम् की ओर बढ़ाया। गुलसुम् का हाथ भी अनायास नेकदम की गर्दन की ओर बढ़ गया।

२०

भिखारिन

नेकदम काम से निकाल दिया गया था। पिछले सात सालों से जो आफतें उसके सिर पर पड़ रही थीं उन्होंने उसे बूढ़ा कर दिया था और अब वह ५० की उम्र में ७० का मालूम होता था।

"बाबा गुलाम को कह कि अपने लिये दूसरी जगह ढूँढ़े। इस अकाल के समय हम उसका पोषण नहीं कर सकते।" कहकर अब्दुर्रहीमबाय के छोटे लड़के ने गुलसुम् और नेकदम को जवाब दे दिया। चिन्ता ने नेकदम को मृत्यु-शय्या पर लेटा दिया। उसने गुलसुम् से बात करते हुए कहा "अन्यायियो! स्वतन्त्रतापत्र पाने के बाद मैंने चाहा था कि दासों के मुहल्ले में झोपड़ी बनाकर कहीं जिन्दगी बसर करूँ। लेकिन इसी बाय-बच्चे, इसी साँप से पैदा संपोले ने साँप की तरह

मीठे-मीठे बोलते कहा—'कहाँ जाओगे बाबा गुलाम ? यह ठीक नहीं है। तुम हमारे बाबा हो, जबतक जिन्दा रहो यहाँ बने रहो। जब हम पेट भर खायेंगे, तो तुम भी पेट भर खाओगे। हम भूखे रहेंगे तो तुम भी भूखे हमारे साथ जिन्दगी बिताना। यदि मौत आ गयी और खुदा की बन्दगी के लिये तुम्हारा बुलावा हुआ तो हमारे बाप की कब्र के पास एक गड्ढा खोदकर तुम्हें भी दफन कर देंगे।' लेकिन अब जब मेरे हाथ से काम नहीं हो सकता तो मुझे निकाल रहा है बे-इन्साफ !"

—उस वक्त—गुलसुम् ने कहा—उन्हें हमारी जरूरत थी। तुम उनकी चारवाही करते थे। मैं उनके घर में काम करती थी। अब तुम काम नहीं कर सकते। अब मैं भी बुढ़िया हूँ। फिर बीमार बच्चे की देख-भाल में भी समय लगता है। अब हम उनके किस काम के ? उस वक्त आचिल अका की सलाह नहीं मानी। तुम इनकी मीठी-मीठी बातों पर मुग्ध थे ?

मुग्ध होकर भूल की। मैंने उन्हें गोद में खिला कर बड़ा किया था। अभी भी उनके दूध की गन्ध नाक से और रंग कपड़ों से नहीं छूटे हुए थे। वह मुझे नाम से नहीं, बल्कि "बाबा गुलाम" के नाम से पुकारते थे। मैं कैसे जानता कि मधुमिश्रित वचनों के भीतर विष और जिह्वाग्र पर साँप-जैसा हलाहल रखा है। मुग्ध होकर मैंने भूल की।

—अब की चलकर आचिल अका और शादमान अका से सहायता मांगनी चाहिये।

—ऐसा ही कर, एक बार जा उनके पास—नेकदम ने गुलसुम् से कहा।

× × ×

करायगाच् गांव के दासों के महल्ले में एक छोटा-सा घरौंदा-जैसा घर था, जिसमें दो बीमार लेटे हुए थे। बीमारों में एक पांच-छ साल का बच्चा था, दूसरा ६० साल का बूढ़ा, एक ५० साला स्त्री उनके सिरहाने बैठी अपने आस्तीन से हवा दे रही थी। इसी समय हाथ में टेढ़ी छड़ी और पीठ पर मैला-कुचैला कपड़ा रखे एक भिखारिन द्वार पर आकर बैठी। उसने लकड़ी को भीत के सहारे खड़ा कर दिया और दोनों हाथों को ऊपर उठा घरवालों के लिये "क़दम पहुँचे, बलाय न पहुँचे" कहकर दुआ की। उसकी दृष्टि भीतर लेटे बीमारों पर पड़ी। भिखारिन ने सिरहाने बैठी स्त्री से पूछा—यह तुम्हारे कौन होते हैं ?

—यह मेरा बेटा और यह मेरा पति। बेटा एक वर्ष से बीमार है और पति

६—नेकदम और गुलसुम् (पृष्ठ ११०)

दो मास से। दो दिन से पति का दिमाग फिर गया है। अकबक बोलता है। नहीं जानती क्या हो गया ?

—खुदा चाहेगा तो कुछ नहीं होगा। "दर्द दूसरा मौत दूसरी।" चार बूंद ठंढा पसीना आया, बस स्वस्थ हो जायेंगे—कहते भिखारिन ने फिर हाथों को उठाकर "खुदा चंगा करे" कहते दुआ दी।

घरवाली ने बीमार के सामने पड़ी तर की हुई रोटीवाले कटोरे को भिखारिन के सामने रखते हुए कहा—बुरा न मानो मौसी, मेरे पास दूसरी चीज नहीं है; यदि मन माने तो इसे खालो।

—रोटी है क्या ?—भिखारिन ने कहा—मेरी-जैसी बे-दाँतवाली बूढ़ी के लिये तर की हुई रोटी सूखी से बेहतर है। और वह खाने लगी।

—मौसी, पूछने को बुरा न मानो, तुम यहाँ की नहीं मालूम होती; कहाँ की रहनेवाली हो ?

—करशी की—भिखारिन ने कहा।

करशी का नाम सुनते ही बूढ़ा बीमार चिहुँक पड़ा और एक बार आँखें खोलकर फिर उन्हें मूँदकर "किन्तु यह आयी करशी औ मेरे यार से" कहकर चुप हो गया।

—अकबक बोलता है—कहकर घरवाली ने फिर पूछा—क्या हुआ जो तुम इस तरफ आ पड़ी ?

—हो बहिन ! उस तरफ के लोगों पर कैसी-कैसी बलायें आयीं, इसकी कुछ नहीं पूछो। दो साल से करशी में सूखा पड़ा है।

बीमार ने फिर आँखें खोलकर भिखारिन की ओर देखा और "क-र-शी" कहते आँखें मूँद लीं।

भिखारिन ने उसकी अवस्था देखकर "बेचारा" कह फिर अपनी बात जारी की—वर्षा नहीं हुई, इसलिये गेहूँ भी नहीं हुआ और लोग भूखों मरने लगे। वर्षा न होने से कचका नदी का पानी सूख गया। पानी न होने से सब्जी, तरकारी और बागदारी भी न हो सकी। दो साल के अकाल और भूख ने लोगों को अकिंचन बना दिया। बायों की बखारों में गल्ला भरा हुआ था। उन्होंने एक मुट्ठी गल्ला के बदले घर के सारे असबाब ले लिये। भूख के बाद महामारी आयी। भूखे-नंगे लोग बीमारी में एक-एक दश-दश नहीं सौ-सौ और गाँव के-

गाँव मरने लगे। अन्त में तो जनाजा पढ़ना और कब्र देना भी संभव न हो सका। जब घर के सारे आदमी मर जाते, तो गांव के लोग उसी घर को उनके ऊपर गिराकर सभी को ढाँक देते। जिनके पास राह चलने भर की शक्ति थी, उन्होंने समरकन्द और बुखारा का रास्ता लिया। हमारे मालिक की कोठार गेहूँ से भरी थी, लेकिन उसने हमें घर से निकाल दिया। मैं भी भागनेवालों के साथ निकल पड़ी और यहाँ आ पहुँची।

—क्या तुम्हारे भाई-बंद न थे अथवा उन्होंने भी तुम्हारी सहायता न की?

—भाई बंद की बात न पूछ बहिन—कहते भिखारिन की आँखों से आँसू की धार बह चली। उसे आस्तीन से पोंछकर उसने फिर कहा—मैं अब करशी की हूँ, किन्तु·········

बीमार ने एक बार सिर उठाकर भिखारिन की ओर देखा और फिर आँखें मूँदकर कहा "आः करशी! तू मुझसे १८ योजन (फरसंग) पर थी, तो भी मैं तेरे पास नहीं पहुँच सका। मैं तुझे बिना देखे ही मर रहा हूँ। नहीं-नहीं, मैं अभी नहीं मरूँगा, तुझे बगैर देखे नहीं मर सकता हूँ।"

—फिर अक-बक बोल रहा है—घरवाली ने कहा।

—अलस (झाड़फूक) नहीं कराया?

—अलस कराया, किन्तु कोई फायदा नहीं।·····अच्छा, तुम अपनी भाई-बंदों के बारे में कह रही थी।

—मैं अपने मातृ-गृह को नहीं जानती। वह कहाँ था यह भी नहीं जानती। मैं अबोध बच्ची थी। तभी तुर्कमान मेरे सारे परिवार को पकड़ लाये।

बीमार फिर हिला। एक बार उसने भिखारिन की ओर देखकर आँखें मूँद ली। भिखारिन ने फिर अपनी बात जारी की।

—उन्होंने हममें से हर एक को दुनिया की हर तरफ ले जाकर बेंच डाला। उस समय मैं बहुत छोटी थी। इसलिए नहीं जानती कि कौन देश से किस तरह हमें लूट कर लाये, कहाँ ले जाकर बेचा, मेरे भाई-बंद क्या हुए और मैं कैसे करशी पहुँची। सिर्फ वह अभागा काला दिन भर मुझे याद है।

—जान पड़ता है तुम भी हमारी ही तरह अभागी दासी रही? नाम तुम्हारा क्या है मौसी?

—नाम अब गुल अन्दाम है, लेकिन मेरी माँ ने मेरा नाम ज़ेबा रखा था।

बूढ़ा बीमार "करशी", "तुर्कमानों की लूट" सुनकर दुविधा में पड़कर भिखारिन की हर बात को बड़े ध्यान से सुन रहा था, लेकिन ज़ेबा का नाम सुनते ही वह जान पर खेल अपनी जगह से उठा और भिखारिन के पास जा जरा देर उसकी आँखों की तरफ देख "आः मेरी प्यारी ज़ेबा, ज़ेबाजान तू स्वयं है, मेरी छोटी सी ज़ेबाजानी" कहते उसके ऊपर गिरना चाहा। भिखारिन बीमार की पागलों-जैसी चेष्टा को चकित हो देख रही थी, किन्तु उसे अपनी ओर आते देख वह वहाँ से हटकर अलग खड़ी हो गयी। घरवाली ने दौड़कर अपने पति को पकड़ा और "तुझे क्या हुआ रहीमदाद" कहते उसे लाकर बिस्तरे पर लिटाना चाहा।

"आः रहीमदाद !" कहती भिखारिन आश्चर्य मुद्रा को छोड़ बड़ी विकलता के साथ दौड़कर बीमार को लिटाने में घरवाली की मदद करने लगी। बीमार पास आया। भिखारिन को अपनी सारी शक्ति से खींचकर "मैं मर रहा हूँ, लेकिन बेहसरत मर रहा हूँ। मैं तुझे ही देखने के लिये आज तक जिन्दा रहा। शुक्र है, कि तुझे देखा। यह एरगश हमारे परिवार की एक मात्र स्मृति, मेरा तनुज है। इसे मैं तुझे और उसकी माँ गुलसुम् को सौंपता हूँ। अब मैं जा रहा हूँ···" कहते उसने अपनी प्रकाशहीन आँखों को सदा के लिये मूँद लिया।

यह वही ज़ेबा और उसका भाई रहीमदाद थे, जिन्हें तुर्कमान हिरात-प्रदेश से लूट लाये थे।

द्वितीय खंड

बेचारे किसान

(१९१६ ई०)

१

जिलगाँ नदी

बालू से भरकर बेकार हो गयी शाफिरकाम की पुरानी नहर और म० गाँव के बीच एक विस्तृत तथा ऊँची दीवारों वाली इमारत दिखलाई पड़ती थी। इसका फाटक पश्चिम की ओर खुलता था। फाटक से अन्दर आने पर एक विस्तृत खुली जगह थी, जिसमें खूँटे पाँती से गाड़े हुए थे। यह हवेली के बाहर का भाग था। दरवाजे से अन्दर घुसने पर नौकरखाना, ढोरखाना और दूसरे मकान थे। इसी बायीं ओर एक बहुत लम्बा-चौड़ा साईसखाना था जिसके सामने बँधे घोड़े दाना खा रहे थे। हवेली के दक्षिण की ओर छाया के नीचे लम्बी इमारत थी, जहाँ धूप तेज होने पर घोड़ों को ले जाकर बाँधते थे। इस इमारत के ऊपर भी घरों की एक पाँती थी, जिसमें अलग-अलग घास ईंधन आदि रखते थे। हवेली के पूरब अन्दरवाली इमारत के पिछवाड़े एक छोटा-सा द्वार था, जिससे अन्दरवाली इमारत में जा सकते थे। उत्तर तरफ मझोले आकार की देहलीवाला एक जोड़ा मेहमानखाना था। मेहमानखाने का चबूतरा हवेली से प्रायः चार हाथ ऊँचा था और उस पर चढ़ने के लिये खास सीढ़ी थी।

मेहमान खाने के द्वार दो तरफ थे, दक्खिनी द्वार हवेली की ओर खुलते थे और उत्तरी चारबाग (मेवाबाग) में, चारबाग का सम्बन्ध एक दूसरे द्वार से बाहरी हवेली के साथ था। चारबाग में अंगूरों की क्यारियाँ, जर्दालू, शिफ्तालू, नाक, नासपाती, सेव, और बिही जैसे मेवों की पाँतियाँ थीं। उसके दूसरे भाग में अनारजार (अनारबाग), अंजीर जार भी थे। चारबाग में मेहमानखाने के सामने एक राजचबूतरेवाला घर था जिसके चारो ओर सफेदों और वेद जैसे छायावाले वृक्ष थे। मेहमानखाना और घर के बीच में एक गुल्जार

(गुलाब क्यारी) भी थी, जिसके वर्ण और गंध से चबूतरे और मेहमानखाना दोनों में बैठे लोग लाभ उठा सकते थे।

रबात (किलानुमा इमारत) के अन्दर की हवेली में ऊँचे चबूतरेवाले दो बहरा[1] मकानों की पाँती थी। इनके उत्तरवाले द्वार भी चारबाग की ओर खुलते थे। भीतरी हवेली की दूसरी तरफों में भण्डार, बावर्चीखाना तनूरखाना, और ईंधनखाना जैसी इमारतें थीं।

लेकिन रबात जितनी विशाल थी उसे देखते रहनेवालों की संख्या बहुत कम थी। चारबाग में एक-दो बागवान थे जो पेड़ों के लिये थाला बनाते और रविशों को आरास्ता करते थे। भीतरी हवेली में दो मध्यवयस्का स्त्रियाँ रोटी पका रही थीं और एक तीसरी हवेली के सामने झाड़ू दे रही थी। इनके अतिरिक्त एक चौथी स्त्री थी, जो बाग की ओर खुलते द्वार के पास बैठी बच्चे को दूध पिला रही थी।

हवेली के बाहर एक कसाई अपने सहायक के साथ भेड़ को मार चमड़ा खींचने से पहले गरम पानी डालकर उसके ऊन को निकाल रहा था। वहाँ दो साईस भी थे, जो घोड़ों को मालिश तरहरा कर रहे थे।

दिन का अन्त था। सूर्य पश्चिम की ओर नीचे जा हवेली के ऊपर अपने पीले प्रकाश को डाल रहा था। इसी समय एक किसान रबात के भीतर आया। उसके शरीर पर पुराना गाढ़े का पायजामा, वैसा ही फटा जामा और चिथड़ों वाली टोपी थी। किसान ने इस निर्जन हवेली पर हर तरफ नजर डाली, फिर मेहमानखाने की ओर जाना चहा, इसी समय साईसखाने की ओर से "हा, अका, किसको चाहते हो?" कहकर एक साईस ने उसे आगे जाने से रोक दिया। किसान लौटकर साईस को सलाम करके बोला :

—सुना है कि अमलाकदार (माल अफसर) यहीं उतरे हैं, उन्हीं को देखने आया था, वह नहीं तो उरमान पहलवान को देखना चाहता था।

—अमलाकदार आज रात को यहाँ पधारेंगे। कल रात कराखानी में उतरे

---

[1] ऐसे घर जिनके द्वार उत्तर और दक्षिण दोनों ओर खुलते और जिनसे जाड़े और गरमी दोनों ऋतुओं में लाभ होता।

थे। अपने सामान को यहाँ भिजवाकर वह स्वयं "मालकनी" (मालगुजारी लगाने) पर गये हैं।

—इस समय वह कहाँ होंगे ?

—यदि कराखानी के खेतों की मालकनी कर चुके होंगे, तो इस समय शायद वह करा कलपाक के खेतों पर गये होंगे या काका में होंगे। लेकिन अमलाकदार से तुम्हारा क्या काम है ?

—पूछना चाहता था कि हमारे खेतों पर "मालकनी" के लिये कब आयेंगे ?

—कौन गाँव है तुम्हारा और तुम्हारे खेत कहाँ हैं ?

—ओ बिरादर ! तुमसे सच कहूँ, हमारा गाँव न गाँव कहने लायक है, न हमारे खेत खेत कहने लायक हैं। हम करायगाच गाँव की एक तरफ एक जगह में गुजारा करते हैं, जिसे "गुलामान" (दासों का टोला) कहते हैं। हम पहले के दासों की संतान हैं। हमारे बाप-दादा जब स्वतन्त्र हुए, तो उन्होंने रेत को बराबर कर वहीं अपने लिये भूइधरे जैसे घर बना लिये। हम भी उसी जगह जिन्दगी बिता रहे हैं और जमींदार बायों की नौकरी, बटाई, मजूरी, ढोर-बटाई और चरवाही करके जीते हैं। हममें से कुछ बयावान में जा ईंधन इकट्ठाकर पीठ पर लादे बेचकर रोटी खाते हैं।

—यदि ऐसा है, तो तुम किस चीज की *मालकनी (लगान लगाना)* चाहते हो ?

—शायद जिलवाँ नदी को जानते होगे (साईस के हाँ न करने पर दुविधा में पड़ किसान ने फिर पूछा) क्या जिलवाँ को नहीं जानते ?

—सुना है, लेकिन देखा नहीं।

—जान पड़ता है तुम इधर के नहीं हो, नहीं तो रूद जिलवाँ को देखे होते।

—नहीं मैं यहाँ का नहीं हूँ।

—हम साईस घुमक्कड़ आदमी हैं हममें एक समरकन्द का है, दूसरा शहसब्ज का, तीसरा बुखारा का, चौथा और कहीं का—इस तरह हर आदमी अलग-अलग विलायत (जिला) का है। हम हाकिमों, काजिमों और दूसरे बड़े अधिकारियों के साईसखानों में काम करते फिरते हैं। आज यहाँ कल कहीं और जगह इस प्रकार दुनिया की सैर करते रहते हैं।

—जान पड़ता है तुममें से किसी ने रूद जिलवाँ को नहीं देखा—किसान ने कहा—पुराने समय में वह एक बड़ी रूद (नहर) थी, और बुखारा के

इलाके को सींचती थी। उसी की कृपा से शाफिरकामतुमान अत्यन्त हरा-भरा इलाका माना जाता था। धीरे-धीरे रेत पट गयी और उसका जल सूख गया। उससे सिंचित खेत, बाग और फुलवारी रेतीला बयावान बन गयी। प्रायः २५ साल हुए कि चलायमान बालुका ने बिलवाँ के तट से कूच किया।

सालों वहाँ अवस्थित रहने से रेत ने उस जगह की उर्वर मिट्टी को भी चाट लिया और कूच करते समय उसे भी अपने साथ लेती गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि जिलवाँ का प्रदेश कंकड़ियों का बयावान बन गया। लेकिन अब बेपानी और बेजमीनवाले दासों ने अपनी-अपनी जमीन लेकर बायों की नौकरी और बटाई करनेवाले किसानों से मिलकर इस रूद में पानी का रास्ता खोदा है और ज़रफ़शाँ (नदी) के बढ़ने पर उधर से भी पानी का एक नया रास्ता तैयार किया है।

जिस समय किसान इतिहास बखानने में दत्तचित्त था उसी समय एक दूसरा साईस बाहर निकल आया। उसने घोड़े के मुँह-पोंछने-लत्ते को पानी में धोकर फैला दिया और हाथों को अपने जामा से पोंछकर किसान से कहा—मैं शहसब्ज का रहनेवाला हूँ। अपनी कथा कह चलो मैं भी सुनूँगा।

किसान ने कहना शुरू किया—हाँ, तो उसी नाली पर उमीद बाँधकर हम किसानों अर्थात् भूतपूर्व दासों, नौकरों, मजूरों, बटाईदारों ने वहाँ जा एक एक टुकड़ा जमीन पकड़ी और कुदाल से खोदकर उसमें गेहूँ, जौ, सरसो, उड़द या खरबूजे-तरबूजे की खेती आरम्भ की। यदि कुछ पानी आ गया तो एक-आध चीज पैदा हो जाती है। नहीं तो फसल के साथ किसान की मिहनत भी व्यर्थ हो जाती है। "गुलामाँ" के हम गुलामों का भी उसी जगह थोड़ा-बहुत खेत है। उसी जमीन का माल (मालगुजारी) करने अमलाकदार कब जायेंगे, यही जानने के लिये मैं आया था।

—जिस समय पारी आयेगी, स्वयं जायेंगे। तुम क्यों इतनी चिन्ता करते हो। वह तुम्हारे लिये नहीं बल्कि अपने और बादशाही फायदों के लिये जायेंगे—पहले साईस ने कहा।

—सो ठीक है। किन्तु हमें यह जानना बहुत जरूरी है, कि वह कब जायेंगे। उनके जाने के समय हमें खेत पर हाजिर रहना चाहिये। जमीन के अन्दाजा करने और पैदावार के कूतने के समय हमें संघर्ष करना होगा, नहीं तो आधी तनाब (जरीब) जमीन को चार तनाब और एक मन पैदावार को दस मन बना उसी

के अनुसार मालगुजारी बाँधकर चल देंगे। ऐसा काम करने में उनके दिल में जरा भी दर्द नहीं होगा।

—एक मन को २० मन कहने में भी अमलाकदारों के दिल में जरा भी दर्द न आयगा—दूसरे साईस ने कहा।

—हाँ ठीक है—किसान ने कहा—परसाल मेरे नाम से दो मन उड़द पर लगान लगा दी गयी, और पैदावार हुई थी सिर्फ एक मन। सारे जाड़े भर ईंधन जमाकर पीठ पर ढो-ढो कर उसकी बिक्री से बहुत मुश्किल से लगान दे पाया। ईंधन-ढुलाई में कमर में जो साल पड़ी, वह अब भी मौजूद है और जोर का काम करना मुश्किल है—कहते किसान कमर को हाथ से पकड़कर मलने लगा।

—और क्या अमलाकदार की कमर दर्द करेगी?—दूसरे साईस ने हँसते हुए कहा।

—अच्छा, सलामत रहो। जान पड़ता है, अब अमलाकदार को खेतों-खेतों ढूँढ़ के निकालना पड़ेगा।

—हाँ, यही करना होगा, खैर, खुश—पहिले साईस ने कहा।

किसान ने जाते समय हवेली की चारों ओर नजर डालकर कहा—उरमान पहलवान ने भारी इमारत बना रखी है।

—कहा जाता है यह सारी इमारत चार तनाब अर्थात् दस मन जमीन से बनायी गयी है। पहलवान ने उसपर दिल खोल कर खर्च किया है—दूसरे साईस ने कहा।

—मेरी माँ के कथनानुसार—किसान ने कहा—उरमान पहलवान का बाप नबी पहलवान अब्दूरहीमबाय का गुमाश्ता था। दासता के समय उसी बाय के घर में इसके बाप के नीचे हमारे माँ-बाप काम करते थे। अब तो इसका साईसखाना भी बाय के मेहमानखाने से अधिक तड़क-भड़क रखता है।

किसान यह कहते साईसखाने की ओर होते अन्दर गया। वह अन्दर की सजावट देखना चाहता था। इसी समय साईसखाने के जीनखाने[१] से किसी के रोने-चिल्लाने की आवाज आयी—"हाय मेरे प्राण! यह कैसी बे-इन्साफी है! इस तरह की गर्मी में इतनी तंग जगह में एक आदमी को दो दिन से भूखा-प्यासा बंद रखना!!"

---

(१) साईसखाने के ऊपर जिसमें अस्थायी तौर से बंदियों को रखा जाता।

किसान ने घबड़ा कर सिर को पीछे खींच लिया और साईस से पूछा यह कौन आदमी है ?

—यह एक गरीब किसान है। इसने चार तनाब अन्दाजा करने पर "यह कैसी बे-इन्साफी" कहकर झगड़ा किया था—एक साईस ने कहा।

—ओय भले लोगों! खुदा के लिये, करबला के प्यासों के नाम पर एक रोटी और एक बूंद पानी लाकर दो।

—क्या इस बेचारे को रोटी पानी भी लाकर नहीं दिया जा सकता ?—किसान ने पूछा।

—कल रात पाखाना ले जाते वक्त मैंने इसे एक कटोरा पानी और अपनी रोटी में से एक टुकड़ा रोटी दे दी थी। उस्मान पहलवान इसे जान गया था। तब से जीनखाने में ताला लगाकर कुंजी अपनी जेब में रख ली और कहा "उस चोर को बाहर निकालने की जरूरत नहीं। वहीं गन्दगी में रहने दो।"

—या हफ़ीज़—किसान ने कहा—खैरियत हुई जो तुम्हें भी रोटी पानी देने के अपराध में इस आदमी के साथ इसी कोठरिया में बंद नहीं कर दिया।

—हम साईस हैं—पहले साईस ने कहा—हमारा बाबा है, बाबाखाना है। यदि हमारे साथ अधिक जोर जुलुम करें तो हम बिगड़ कर बाबाखाने में चले जायेंगे। इसके बाद जब तक हमें मनायेंगे नहीं, दूसरा साईस भी नहीं पा सकते।

—यही कारण है, चाहे कैसा भी बड़ा हाकिम या बाय हो हमें छेड़ नहीं सकता।

—तो साईसों की अवस्था गरीब किसानों और स्वतन्त्रता प्राप्त दासों से बेहतर है—किसान ने कहा।

साईसों ने आपस की एकता से एक दूसरे की अवस्था को बेहतर बनाया है—पहिले साईस ने कहा—किन्तु गरीब किसान अपने कुत्ते की गर्दन से सिर नहीं निकाल सकते। इसलिये उसी में फंसाकर एक-एक को मारते हैं।

"खुश रहो" कहकर किसान दरवाजे से बाहर जाने लगा। उससे साईस ने पूछा—पूछने में कोई दोष नहीं है, तुम्हारा नाम क्या है ?

—एरगश।

२

किसानों की खेती

रूद शाफिरकाम पानी से लबालब भरी थी। रूद (नहर) किनारे सफेद बेद (बीसरी) और सफेदे के वृक्ष अपनी शाखाओं को एक दूसरे से मिलाये छाया डाले खड़े थे। धूप में जान लड़ा, कंठ सुखा, कलेजे को भुनकर काम करनेवाले किसानों के लिये यह छाया अमृत थी। ऐसी छाया में एक जगह अपनी कुदाल को जमीन पर फेंक जामे को चौपेत कर सिर के नीचे रखे एक किसान लेटा हुआ था।

—उठ गुलाम हैदर।

दूसरे किसान ने फावड़े को वृक्ष से लटकाते हुए कहा—भूख से मेरी जान निकली जा रही है। ले इन लोबियों को उबाल—कहते-कहते उसने कमरबंद खोलकर अधपकी हरी लोबियों को जमीन पर गिरा दिया।

गुलाम हैदर ने एक अंगड़ाई ले बेमन से खड़े होकर कहा—रहने नहीं दिया अकासफर (सफरभाई), जरा सोता। आधी तनाब मेंड़ पर मिट्टी चढ़ाकर अभी-अभी आकर लेटा था। अभी आंखों से गर्मी भी नहीं निकली थी।

—मैं रहने भी दूँ किन्तु अमलाकदार यदि तुझे सोने दे तब ना ? अशुर के कथनानुसार अमलाकदार कराखानी के हार की लगाम लगा चुका। अब वह कूबत खाँ की हवेली में शोरवाखोरी (सूप पान) करने गया है और जल्दी आने के लिये हमारे अकसक्काल के पास आदमी भेजा है। मध्याह्न बाद वह काका आ रहा है। कह रहे हैं एक घंटे के भीतर वह यहाँ पहुँच जायेगा। जल्दी कर जिसमें उसके आने तक हम भी लोबिया का रस्सा पीकर कुछ तगड़े हो जायँ।

गुलाम हैदर वृक्ष के नीचे चूल्हे के पास गया। चूल्हे के अन्दर आग पर पड़ी राख को हटाकर थैली रख फूंककर उसे जगाया। फिर वृक्ष पर लटकते हुक्के को उतारकर चिलम में तम्बाकू डाल उसपर आग रखी और दो तीन फूंक लगायी, फिर रूद के किनारे नंगी छाती पड़े सफर को बुलाया।

—जल्दी कर, लोबिया उबाल—सफर ने हुक्का पी खांसते हुए कहा।

गुलाम हैदर ने एक बार और फूंक लगायी और चिलम की आग को चूल्हे में डालकर हुक्के को वृक्ष के सहारे रख दिया। फिर वृक्ष की शाखा में छिपी हड्डियों को निकाल उसमें लोबिया डाली और नहर से धोकर चूल्हे पर ला चढाई वृक्षों से कुछ सूखी डालियां तोड़ी और उन्हें चूल्हे में रख फूंक-फूंक कर आग को तेज कर दिया।

—नमक डालना न भूलना—सफर ने याद दिलाते हुए कहा।

सचमुच में भूल ही जा रहा था—कहकर गुलाम हैदर ने शाखाओं में से एक बंधे लत्ते को निकाल कर उसे खोला और थोड़ा सा नमक लोबिया में डाल दिया।

—नमक जरा जादा डालना, मैंने आज सवेरे रोटी न खा लोबिया का रस्सा पिया था। उसमें नमक कम था, जिससे मुंह फीका-फीका मालूम होता है।

—क्यों बिना रोटी के खाया—रोटी कहां थी? रोटी पकाने के लिये आटा न था, आटा बनाने के लिये गेहूँ-जौ भी न था और उनके खरीदने के लिये पैसा भी न था।

—घर में क्यों नहीं कह दिया! तेरे खेत में गेहूँ की सुनहली बालियां खड़ी हैं, उन्हें काट-मींज कर चक्की में पीस लेतीं।

—क्या भूल गया? पारसाल दो पाव गेहूँ पीसकर मैंने खा लिया था।

इसके लिये अमलाकदार ने मुझे कितना पीटा था? आज भी छड़ी के चिन्ह मेरी पीठ से गये नहीं। ऊपर से जुर्माना लगा मालगुजारी आधमन और बढ़ा दी। यह जले पर नमक था। इसके बाद मैंने शपथ कर ली थी कि भूखे भले ही मर जाऊँ, लेकिन गेहूँ की एक बाल भी तोड़कर न खाऊँगा।

—क्या तुम्हारी सब बातों को अमलाकदार देखता रहता है?

—किसी ने खबर दे दी। उस घर-जले अकसकाल (नम्बर दार) ने दी होगी। वह हमारा अकसकाल है, उसे हमारा पक्ष लेना चाहिये, लेकिन वह अमलाकदार की जासूसी करता है।

— क्यों इतनी बदी और चुगली करता है। इससे क्या फायदा मिलेगा?

तू बड़ा भोला है। लगान लगाते वक्त अमलाकदार उसे जामा पहिनाता है। सवारी के लिये घोड़ा पाता है। देखा नहीं? अमलाकदार ने हमारी आधी तनाब जमीन को "करीब चार तनाब" लिखवाया और उसके अच्छे-अच्छे खेतों

को "यह अकसकाल का घोड़-चारा कहकर छोड़ दिया। यह फायदा कम है?

गुलाम हैदर ने नया हुक्का भरा। खुद पिया और सफर को भी पिलाया। एक दो लकड़ी और चूल्हे में डाली, फिर वृक्ष से दूसरे लत्ते को उतारा। उसे खोलकर रोटी निकाली और तोड़कर एक कौर अपने मुंह में डालते सफर से कहा—अकासफर, लो रोटी खाओ।

सफर ने भी एक टुकड़ा मुंह में डाल चबाते हुए पूछा—यह जौव की रोटी है क्या?—हाँ, जौव की रोटी है।

—कहां पाया?

—कहाँ पाया? कोई देख न ले इसलिये रात को आया और अपने जौब में से कुछ डन्ठल तोड़े। उसी को मीजकर तुम्हारी बहू ने चक्की में पीसा और यह रोटी पकायी।

"बहुत अच्छा" कहते अपनी जगह से उठकर सफर चूल्हे के पास गया और एक दाना लोबिया निकालकर देखा और "करीब-करीब पक गयी" कहते चूल्हे में दो और लकड़ी डाल आकर अपनी जगह बैठा।

—रोटा लो सफर अका—गुलाम हैदर ने कहा।

—तू खा, मैं अपने पेट को लोबिया से पूरा करूंगा।

—लो भी ना "एक दाना को चालीस ने खाया" वाली कहावत सुनी। हम तुम जैसे अकसकाल की तरह के बाय नहीं हो जायेंगे।

दोनों ने रोटी खाकर खतम किया। सफर लोबिया सामने रख एक ओर बैठ गया। फिर मिट्टी के प्याले से लोबिया के रस्से को निकालकर ठंढाकर बारी-बारी से दोनों पीने लगे। इसी समय म० गाँव से कोई आदमी उनकी तरफ आता दिखाई पड़ा।—"यह एरगश गुलाम जैसा मालूम होता है" कहते सफर ने उधर नजर करके जल्दी ही लोबिया के रस्से की ओर निगाह फेर ली।

"एरगश ही तो है"—कहते गुलाम हैदर ने अपनी बारी का प्याला हाथ में लिया।

जबतक उन्होंने एक दो बार लोबिया का जूस पिया, तबतक आदमी भी समीप आ गया। परस्पर "सलाम अलैक" करके कुशल-मंगल पूछ दोनों ने आगन्तुक को भी लोबिया-जूस पर बैठा दिया। अभी कटोरा दुबारा घूमने नहीं पाया था कि कराखानी की ओर से घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज आयी।

—टिड्डियाँ आ गयीं—गुलाम हैदर ने उस तरफ निगाह करके कहा। दूसरों ने भी उधर दृष्टि डाली। बीस-पचीस सवार आ रहे थे।

—यह लोबिया-जूस भी काम का रहा—कहकर सफर ने हाथ से मुंह पोंछ लिया।

सवार और समीप आ पहुंचे। अकसक्काल उनके आगे-आगे और कई कदम दूर घोड़ा दौड़ाये आ रहा था, जिसमें उसके घोड़े की धूल हाकिमों पर न पड़े। उसने सबसे पहिले वृक्ष के नीचे पहुँचकर एरगश को वहाँ देखकर कहा—हाँ, गुलाम, तू यहाँ क्या करता है ?

—अमलाकदार कब हमारे यहाँ जा रहा है, यही जानने के लिये आया था।

—शायद अपने खेत पर न हुए तो अकसक्काल हम पर जुल्म करायेगा, यही समझ कर नीचा गुलामों ने तुझे भेजा है। जा, सबको जमा करके रख। इन खेतों के बाद जिलवाँ किनारे आ रहे हैं—अकसक्काल ने नाँक फुलाते हुए कहा।

एरगश उठकर चला गया। अमलाकदार भी अपने दल के साथ आ पहुँचा। अकसक्काल ने सलाम करने के बाद आँख से लोबिया के वर्तन की ओर इशारा किया। अमलाकदार ने उधर निगाह करके कहा:

—चोरो, बादशाही हक ठीक होने से पहिले ही कच्ची-पक्की पैदावार को चुराकर खाते हो!

तबतक अमलाकदार के आदमियों को आये देख जबार के किसान वहाँ जमा हो गये थे।

—गरीबी है क्षमानिधान!—अकसक्काल ने सभी किसानों को सुनाते हुए हाकिमों से कहा—एक मुट्ठे लोबिया से बादशाही खजाना न भर सकता है न खाली ही हो सकता है।

—धोकेबाज, हमारी नजरों में अच्छा सिद्ध होने के लिये कह रहा है—एक किसान ने दूसरे किसान से कहा।

—तुम्हारी बात ठीक है—एक लम्बी पगड़ीवाले सवार ने अकसक्काल से कहा—लेकिन धर्म ग्रन्थों में "बादशाही हक को अनाथ के हक के बराबर कहा है।" बादशाह ने अमलाकदार को अपना प्रतिनिधि बना रखा है, उसकी आज्ञा बिना एक तिनके को भी जगह से बेजगह करना ठीक नहीं।

—इस कसूर को दूसरी पैदावार की लगान के ऊपर रखेंगे, दमुल्ला!—

अकसक्काल ने बड़ी पगड़ीवाले सवार की ओर निगाह करके कहा और फिर अमलाकदार से भी—अनुग्रह कीजिये, जौव और गेहूँ पर नजर डालिये।

अब अमलाकदार ने अकसकाल से आगे चलने के लिये कहा। "आगे चलो"। आगे-आगे अकसक्काल चला और पीछे से अमलाकदार और उसका दल, फिर किसानों का झुण्ड।

—वह बड़ी पगड़ीवाला धर्मबघारू कौन था?— अमलाकदार के पीछे-पीछे दौड़ते गुलाम हैदर ने सफर से पूछा।

—पहिचानता नहीं, मुल्लानवरोजी इस्तमजी को?—सफर ने जवाब दिया।

—यह इनके बीच क्या काम कर रहा है?

—नहीं जानता—सफर ने कहा।

—"ईं जा बि-जनी (यहां मारो)" कर रहा है—साथ दौड़ते दूसरे किसान ने कहा—यदि अमलाकदार किसान को एक जगह मारता हो, तो मुल्ला कहता है "वहाँ नहीं यहाँ मारो, मर्मस्थान यह है।" और इस सेवा के लिये एक-दो तो बड़ा अनाज वह भी अपने घोड़े के लिये किसानों की कमाई में से लूटता है।

३

लगान लगाना

अमलाकदार अपने दल के साथ यूनुचुका (घास) और कपास के खेतों पर होते थाला दिये खरबूजे-तरबूजे की कियारियों, फिर उड़द तिल सरसों आदि के नये खेतों पर घोड़ा दौड़ाते फसल को रौंदते पामाल करते एक गेहूँ के खेतपर जाकर खड़ा हुआ। गेहूँ पककर लाल हो गया था, दानों से भरी बालों को न संभाल सकने के कारण पौधे झुक गये थे और हलकी हवा के झोंके से हिलकर बालियाँ एक दूसरे से टकरा खनखना रहीं थीं। कितनी ही बालियाँ चिड़ियों के बैठने या पककर भारी होने से चिटकती जमीन पर गिर रही थीं। अमलाकदार ने खेत पर नजर डालकर अकसक्काल से पूछा—यह किसका खेत है?

—सफरशादी, उसी लोबियाखोर किसान का—अकसक्काल ने जवाब दिया।

—अन्दाज लगाओ अमीन !—अमलाकदार ने अमीन से कहा।

सवारों ने अब घोड़ों के मुँह से लगाम निकाल दी थी और सब घोड़े गेहूँ के खेत के भीतर फैल गये थे। बेलगाम के घोड़े गेहूँ की बालों को चर-चर करके खाने और खड़ी फसल को पैरों से रौंदने लगे। इसे देखकर गुलाम हैदर ने कहा, "सचमुच टिड्डी हैं।"

टिड्डी इनसे हजार गुना अच्छी है—दूसरे किसान ने कहा—टिड्डी पेट भरने भर खाती हैं, किन्तु फसल को नाहक बर्बाद नहीं करती हैं; और ये घोड़ों से खिला भी रहे हैं और बर्बाद भी करा रहे हैं।

—ये जंगली सूअर हैं—दूसरे किसान ने कहा—जो चीज हाथ आती उसे खाते हैं, ऊपर से जिस जगह कदम रखते हैं, उसे खोदकर खराब भी कर देते हैं।

अपनी फसल बर्बाद होते देख सफर ने डबडबायी आँखों से कहा—अपने खेत से दो पाव गेहूँ ले लेने पर अमलाकदार ने "बादशाही हक निश्चित होने से पहिले खाया" कहकर मुझे ४० कोड़े लगवाये थे और यहां आँखों के सामने मेरे गेहूँ को मटियामेट करवा रहा है।

—हाँ, बादशाही लगान निश्चित करने से पहले यदि किसान थोड़ा खाते हैं, तो उससे बादशाही हक और अमलाकदार को कोई हानि नहीं पहुँचती, क्योंकि जमीन परती पड़ी हो तब भी अमलाकदार "पैदावार करीब दस मन" कहते लगान लगाकर चल देता—गुलाम हैदर ने कहा।

एक किसान ने बीच में पड़कर कहा—अमलाकदार इन कामों को बादशाही हक की रक्षा के लिये नहीं करता बल्कि इसलिये करता है, कि किसानों के बोझ को और बढ़ाये, और भी अधिक परेशान करे, और भयभीत करे; जिसमें वह उसकी कठोर आज्ञा को बिना चूं किये स्वीकार करें।

खूब खिलाने और फसल को पामाल करने के बाद अमलाकदार का दल खेत के किनारे जमा हुआ। अमलाकदार के मिर्जा (लेखक, कायथ) ने कमर से लटकते कलमदान को खोलकर कलम हाथ में पकड़ी और बगल में दबे बस्ते में से एक ताव कागज निकाला, फिर ऊपर की ओर "गांव मं०, हार काका" लिखकर अमीन की ओर देखने लगा।

—अमीन, बतलाओ अन्दाजा कितना है—अमलाकदार ने पूछा।

—करीब दो तनाब—अमीन ने कहा !

—बाय ने मेरा घर जला दिया—कहते सफर ने अपनी बगल से लिपटे एक पुराने लत्ते को निकाला—यही गेहूँ का खेत पास की अलफी और बगल के उन गेहूँ के खेतों के साथ कुल चार तनाब था। यह मेरे बाप-दादे की मीरास (दाय भाग) है और यह है उसका कागज—कहते लत्ते को खोलकर उसके अन्दर से चिट्टी-चिट्टी हो गये एक पुराने कागज को निकालकर अमलाकदार की ओर बढ़ाया।

अमलाकदार ने कागज को लेकर अपने मिर्जा को दिया और सफर की ओर निगाह करके कहा—तेरी इस बात से फायदा क्या ? तू स्वयं सबको चार तनाब बतला रहा है। बिलायत (जिला) के अमीन ने दो तनाब अन्दाजा लगाया है। फिर क्यों हाय तोबा मचा रहा है ?

—आपका हुक्म सिर आँखों पर जनाब बेक ! अभी मेरी अरज खतम नहीं हुई। मैं कह रहा था, ये चारो खेत चार तनाब हैं······

—कैसे मालूम—अमलाकदार बीच में बोल उठा—आठ तनाब क्यों नहीं ?

—चार तनाब है, यह इसी कागज में लिखा है—सफर ने कहा—बाय के मरते समय कफन और कब्र के खर्च के लिये अकसक्काल के बाप अब्दूरहीमबाय से कर्ज लेकर दो तनाब बेंच दिया। बाय ने तनाबची को बुलाकर खेत नपवा के ले लिया। उसने तनाबची की खूब पेट पूजा कर दी थी इसलिये उसने खूब जोरदार हो डेग को लम्बी-लम्बी डालकर दो तनाब से अधिक जमीन नापकर बाय को दे दी। आप अच्छा इसे दो तनाब बतला रहे हैं ?

—बाकी दो तनाब यही गेहूँ का खेत है ना ?—अमलाकदार ने अनजान की तरह सफर से कहा।

—यह अलफ (घास) उसी बाकी दो तनाब में से है--कहते सफर ने यूनुच्का घास के खेत को दिखलाया—बसन्त में यूनुच्का पर लगान लगाते आपने ही उसे डेढ़ तनाब लिखवाया था। इस प्रकार यह गेहूँ का खेत आधा तनाब हुआ, यदि कहें कि अलफ की जमीन आधा तनाब ज्यादा लिख दी गयी थी, तो भी गेहूँ का खेत एक तनाब होगा, दो तनाब नहीं। सफर ने मिर्जा की ओर मुंह करके कहा—कागज को पढ़कर सुनाइये मिर्जा !

मिर्जा पुराने कागज को खोलकर एक निगाह देख चुप हो रहा।

—पढ़कर सुनाइये, कह रहा हूँ, नहीं सुन रहे हैं ?—सफर ने चिल्लाकर मिर्जा से कहा।

—ओ बदमाश यह कैसी बदतमीजी !—कहते अमलाकदार ने उस्मान पहलवान की ओर निगाह की।

उस्मान पहलवान घोड़ा दौड़ाये सफर के पास पहुँचा और उसने "होश संभला कर बात कर सूअर"—कहते एक कोड़ा लगाया।

—यह कैसी बेदादी है।—कहते सफर चिल्ला उठा।

"बेदादी", "बेइन्साफी" "अन्याय" की आवाज किसानों की ओर से निकली। सफर ने अकसक्काल के घोड़े की लगाम पकड़कर कहा "अकसक्काल ! तुम खुदा को साक्षी जानकर कहो, तुम्हारे बाप ने इन्हीं दोनों खेतों को दो तनाब कहकर मुझसे लिया या नहीं ? तुम्हारे पास वह दस्तावेज भी होगा, जिसे तुम्हारे बाप ने मुझसे लिखवाकर काजी की मुहर करवायी थी।

—सामने को देख, क्यों पुरानी कब्र खोद रहा है ? —अकसक्काल ने कहा।

—जब तुम सब मेरे लिये नयी कब्र खोद रहे हो तो पुरानी कब्र को खोदकर सबूत देना क्या मेरे लिये ठीक नहीं है ? सालों से मेरी जमीन ज्यादा लिखवाकर मुझे लूट रहे हो। यदि मैं मुंह खोल रहा हूँ, तो "सबूत दे,खाली बात नहीं सुनी जाती" कहकर मेरा मुंह बन्द कर देते हो। मैंने कोना-अंतरा छानकर अंतमें किसी तरह यह वरासत का कागज ढूँढ़ निकाला। क्यों नहीं इसे देखते, क्यों नहीं इसे पढ़ते ? "पढ़कर देखो" कहने पर मुझे मारते हो। इससे बढ़कर और बेइन्साफी क्या होगी ?

अकसक्काल ने धीरे से अमलाकदार से कहा—तकसीर (क्षमानिधान) ! बसन्त में इस अलफ वाली जमीन को डेढ़ तनाब लिखा गया था। अच्छा इस खेत को भी डेढ़ तनाब लिखवा दें।

अमलाकदार ने अमीन की ओर देखा। अमीन ने भी "हां कहते सिर हिला दिया इसपर अमलाकदार ने मिर्जा से कहा—लिखो।

—किसके नाम से—मिर्जा ने पूछा।

—सफरशाबी के नाम से —अकसक्काल ने जवाब दिया।

—कितनी जमीन ? —फिर मिर्जा ने पूछा

—डेढ़ तनाब—अमीन ने जवाब दिया।—अनुचित—सफर चिल्ला उठा।—

किसान भी चारों ओर से चिल्लाने लगे—"अनुचित" "अनुचित" "अनुचित"।

लिख चलो—अमीन ने मिर्जा से कहा—यदि चौथाई तनाब लिखोगे तो भी ये लोग अनुचित कहेंगे।

"चोर भी रोता है और घरवाला भी" कहो अमीन बाबा—एक किसान ने कहा, जिसपर सभी किसान हँस पड़े, अमीन ने भी विष-बूझी हँसी हँसी, लेकिन अमलाकदार की त्यौरी चढ़ गयी।

—इसकी लगान कितनी? मिर्जा ने अमीन से पूछा।

—बारह मन पैदावार में से ३/१० बादशाही, १/१० वक्फ (देवोत्तर) का हिसाब करके लिखो।

सफर ने फिर हल्ला किया—कहां देखा है डेढ़ तनाब में १२ मन गेहूँ पैदा होते। न तुमने देखा है, न मैंने बापदादों से सुना। तुम किस तरह के अमीन-विलायत हो?

—यदि खुदा देवे तो एक तनाब में १५ मन भी पैदा हो सकता है—अमीन ने कहा।

—कब खुदा ने आसमान से गल्ला बरसाया कि आज मेरी जमीन में बरसायेगा—सफर ने कहा।

—तू खुदा की शक्ति पर अविश्वास करता है? कहते मुल्ला (पंडित) नौरोज ने भी सफर को एक थप्पड़ लगाया।

तुम यदि खुदा की शक्ति पर विश्वास रखते हो—सफर ने मुल्ला से कहा—क्यों बेकों की दुम चाट रहे हो? जाकर मस्जिद के कोने में सो जाओ, खुदा तुम्हारे घोड़े का दाना मस्जिद की खिड़की से फेंक देगा। (फिर अमीन से) जहाँ भी जाओ "दो पन्द्रह एक तीस" है। एक तनाब भी अपने अनुसार दो तनाब भी अपने अनुसार पैदावार देता है। उस जमीन को तुमने नाहक डेढ़ तनाब लिखा, किन्तु असल में है एक तनाब। ऊपर से बहार में दो पानी नहीं मिला, इसलिये दाना पुष्ट नहीं हो सका।

—यह तेरा कसूर है—अमीन ने कहा—क्यों समय पर पानी नहीं दिया?

—जिस समय पानी के लिये मेरी बारी आयी, उरमान पहलवान ने सारे दानों को अपने चारबाग में मेंड़ बांधकर भर लिया। सिर्फ मेरा ही खेत नहीं इस हार के सभी खेत कम पानी के कारण खराब हो गये। तू इसे किसका कसूर कहता है?

—तू-तू न कह गदहे—उरमान पहलवान ने सफर की ओर घूरकर कहा और फिर अमलाकदार से—इस मुँहफट ने जहाँ एक बार बात शुरू की फिर इसकी जबान नहीं रुकती। इसे सिखलाने की जरूरत है, जिसमें दूसरों को भी शिक्षा मिले, नहीं तो सिर्फ काका के हार में हम दस दिन भटकते फिरेंगे।

—इसे पकड़कर पेड़ से लटकाओ, जिसमें इसकी अकल दुरुस्त हो जाये—अमलाकदार ने कहा।

दो सवारों ने घोड़े से उतरकर सफर को पकड़ा। उसके चिल्लाते रहते भी उन्होंने उसके हाथों को पीठपर बांध दिया और ले जाकर तूत के वृक्ष से लटकाना चाहा। उस पर उरमान पहलवान ने ऊँची आवाज में कहा—इसे छायादार वृक्ष से न लटकाओ बल्कि गजे तूत के पेड़ से लटकाओ, जिसमें सिर पर धूप पड़े और इसकी चरबी उबले, तब इसकी अकल दुरुस्त होगी।

अमलाकदार के आदमी पासवाले गेहूँ के खेत में जाना चाहते थे। इसी समय अमीन ने उनसे कहा—यह गेहूँ शायद अकसक्काल का है।

—हाँ, मेरा है—अकसक्काल ने कहा।

—यह अकसक्काल का गेहूँ है, इसे छोड़ दो, चलो दूसरे खेत पर चलें—अमलाकदार ने कहा।

—क्या आपके गेहूँ की उस तरफ जौव का खेत भी आपका ही है—एक चपरासी ने अकसक्काल से पूछा।

—नहीं, मेरा नहीं गुलाम हैदर का, इस लड़के का है—अकसक्काल ने गुलाम हैदर की ओर इशारा किया।

—वह दमुल्ला नौरोज के हिसाब में रहे—अमलाकदार ने कहा—दाँय, ओसाय और रास करने पर वह ले लेंगे।

—कूत दीजिये क्षमानिधान—मुल्ला नौरोज ने कहा—इस लड़के की नजर बेईमान है, दाँवने ओसाने तक आधा चुरा लेगा, फिर मैं इसका क्या लूँगा?

—तू पत्थर लेगा, आफत लेगा—गुलाम हैदर ने कुरकुराते हुए कहा।

कूत देने पर बादशाही दस्तक[1] में चला जायेगा। तब तुम्हें नहीं मिलेगा—अमलाकदार ने कहा।

---

१. लगान आदि लिखने का कागज, जिसे एक के बाद एक चिपकाते जाते थे और लपेटकर उसे बाजूबंद की तरह हाथ में बाँधते थे।

७—इसे पकड़कर पेड़ से लटकाओ···(पृष्ठ १३२)

—इस लड़के की नजर यदि बेजा है—उस्मान पहलवान ने नाराज होकर कहा—तो तुम्हारी नजर कहाँ जौंय पर है ? खबरदारी करो, रखवाली करो, रास पर से अपना हक ले लो। क्या चाहते हो, स्वयं जनाब बेक (अमलाकदार) दाना ले जाकर तुम्हारे बखार में डाल आयें ? यदि मेरे लिये रखवाया जाता तो एक-एक दाना चुनकर उठवा लिया जाता।

—तुम्हारे लिये काफी एक बड़ा खेत रखवायेंगे, नाराज न हो पेहलवान—अमलाकदार ने कहा।

—जनाब आली और आपकी बदौलत सभी माल मेरा है। मैं क्यों नाराज होने लगा ? बात पर बात निकल आयी।

अमलाकदार का दल दूसरी ओर चला, इसी समय वक़्फ़ के इजारादार ने पीछे-पीछे दौड़ते हुए कहा—इस जौव में मेरा भी दशांश रास के समय के लिये रहने दीजिये।

सफर बगल में रस्सा बाँधकर पेड़ से लटकाया हुआ था। लोगों को जाते देखकर चिल्लाया—आय मिर्जा, मेरे कागज को लौटाते जा।

मिर्जा ने बस्ते में हाथ डालकर चाहा कि कागज को लौटा दें, किन्तु अमलाकदार ने "न दो, इस कागज को फाड़कर फेंक दो, नहीं तो यह हर साल इसे लाकर झगड़ा करता रहेगा" कहकर रोक दिया।

दल दूर चला गया, लेकिन सफर अब भी चिल्ला रहा था—मेरा कागज, मेरा कागज।

४

दासों पर लगान

काका और बालाय-रूद के हारों की लगान निश्चित हो जाने पर अमलाकदार जिलवाँ के पास पहुँचा, रूद-जिलवाँ, रूद शाफिरकाम की भाँति सिर्फ पानी से नहीं भरी थी, बल्कि एक ओर पानी के सूख जाने से सफेद हो गयी थी। वहाँ देखने में मालूम पड़ता था, कि रेगिस्तान में वर्षा के पानी का रास्ता बना है। उसके आसपास के खेत भी रेगिस्तान जैसे मालूम होते थे। वहाँ एक-एक हाथ पर एक-एक गेहूँ का पौधा था, जो एक ही हाथ बढ़ सके थे और उनकी फूटी

बालियाँ दाना पड़ने से पहले ही सूख गयी थीं। गेहूँ के सिवा वहाँ थाला बँधे तर्बूजे और खर्बूजे भी थे, उड़द और लोबिया फूल खिलने से पहिले सूख गयी थीं। इनके अतिरिक्त खेती का कोई पता न था।

अमलाकदार जिलवाँ के तट पर पहुँचा, वहाँ उसकी चारो ओर भूखे-नंगे आदमी जमा हो गये।

—यह गेहूँ किसका है—अमलाकदार ने एक खेत की ओर इशारा करके लोगों से पूछा।

—मेरा।

—तेरा नाम क्या है?—मिरजा ने उस आदमी से पूछा।

—एरगश बाबा गुलाम।

—क्या तू भी गुलामों में से है?—अमलाकदार ने पूछा।

अभी एरगश ने जवाब देने के लिये मुँह नहीं खोला था, कि अक्सक्काल बोल उठा—हाँ, यह गुलाम हमारे गृहजातों में से है।

—क्यों खेत में काम नहीं किया? क्यों फसल बर्बाद होने दी?—अमलाकदार ने पूछा।

—काम किया, लेकिन पानी न था। इसलिये मेरी मिहनत अकारथ गयी और फसल न हुई।

—क्यों तुम एक ही समय पर रूद (नहर) को खोदकर पानी नहीं लाये?

—एक बार नहीं दो बार खोदा, लेकिन आज खोदते कल बालू भर जाती। एक नाली भी न आयी, पानी सूख गया।

—जैसे इस समय मेरे सामने तुम सारे जमा हो गये हो, क्या खुदाई के समय भी ऐसे ही जमा हुए थे?—अमलाकदार ने लोगों से पूछा।

अभी लोग हैरान होकर जवाब देने के बारे में कुछ सोच ही रहे थे कि अक्सक्काल ने कहा—तकसीर! ये लोग "परसाल अक्सक्काल ने पीठ पीछे हमारे ऊपर जुल्म कराया था, इस साल स्वयं लगानबंदी के वक्त बेक से लड़ेंगे" सोचकर यहाँ जमा हुए हैं।

—मुझसे लड़ेंगे! बादशाही हक पर दावा करेंगे?—अमलाकदार ने आश्चर्य करते कहा—मैं इसके लिये मजबूर नहीं हूँ कि इन्हें लगानबंदी की बात समझाऊँ और उनसे किच-किच करने बैठूँ।

—लिखो मिर्जा, इस गेहूँ को "अश्रा अमनान्" (दस मन)—अमलाकदार ने अरबी में बात लिखायी।

मिर्जा ने लिखा "एरगश बाबा गुलाम, एक खेत : गेहूँ मालगुजारी दस मन।"

—मेरी कितनी मालगुजारी हुई ? और नहीं तो यह तो मालूम होना चाहिये, कि मैं कितने का बादशाही कर्जदार हुआ—एरगश ने कहा।

—मैं मजबूर नहीं हूँ, कि तुझसे सलाह लेता फिरूँ। बादशाह के कितने कर्जदार हुए। यह भाव की पुकार और "दस्तक-मालियाँ" (लगान के कागज) के निकलने पर चुकती के समय मालूम हो जायेगा।

—यह जमीन किसकी है ?—कुदाल से खोदी एक जमीन की ओर इशारा करके अमलाकदार ने पूछा।

—यह भी मेरी जमीन है—एरगश ने जवाब दिया।

—सारे बयाबान की मालिकी तूने ले ली है क्या ? खोदने के बाद बोया क्यों नहीं ?

—कैसे बोता ? बीज नहीं, पानी नहीं। पानी नहीं तो बोने से क्या फायदा ?

—यदि ऐसा था तो खोदा क्यों ?

—पर साल बिना खोदे छोड़ रखी थी, कांटे उग आये और कांटे की मालगुजारी १० तंका मेरे नाम लिख दी गयी। कांटा न उगने पाये इसीलिये मैंने इसे खोद डाला।

—बहुत अच्छा, अपने कसूर को खुद कबूल करता है। लिखो मिर्जा, इसके नाम "२० तंका मालगुजारी खुदाई।"

—यह कैसी बे-इनसाफी—कहकर चिल्लाते एरगश ने एक हाथ से मिर्जा को लिखने से रोकने के लिये उसकी कलाई पकड़ ली।

'अपराधी, बागी' कहते उरमान पहलवान घोड़ा दौड़ाते एरगश के पास आया और उस पर कोड़े मारने लगा।

एरगश ने दर्द के मारे "हायमरा, आः सिर फटा, आख-आख जान निकल गयी" कहकर चिल्लाते भी मिर्जा के हाथ को नहीं छोड़ा। उसकी चिल्लाहट को सुनकर लोगों ने दौड़कर उरमान पहलवान के घोड़े की लगाम पकड़ ली और चाहा कि उसे दूर खींच ले जावें। उरमान पहलवान एरगश को छोड़कर 'गुलामों बदरगो" कहकर गाली देते सामने आये हुए एक आदमी के सिर पर कोड़े चलाने लगा। लोगों की सहानुभूति से एरगश की हिम्मत बढ़ी। उसने मिर्जा के

हाथ को छोड़ दिया और कूद कर एक छलांग में उरमान पहलवान के हाथ से कोड़ा छीन उसे ताबड़तोड़ उसपर चलाने लगा और साथ ही कहता जाता। "तेरा बाप अब्दूरहीमबाय का गुमाश्ता बनकर हमारे माँबापों पर डंडे के जोर से हुक्म चलाता था। अब तू अमलाकदार का आदमी बनकर कोड़े से हमारी पीठ के चमड़े उतारना चाहता है? ओ साँप के बच्चे...।

यह देखकर अमलाकदार के आदमी लोगों पर टूट पड़े, उन्हें कोड़ों और जूते की ठोकरों से मारने लगे। उन्होंने एरगश और दो एक दूसरे आदमियों को गिरफ्तार किया। लोग हट गये मिर्जा ने कागज पर लिखा। "एरगश बाबा गुलाम मालगुजारी खुदाई २० तंका।"

अमीन ने धीरे से अकसक्काल से कहा—अब हमारे "४ तनाब, २० मन" कूतने की भी आवश्यकता नहीं। अमलाकदार स्वयं लिखवाता रहा है।

अकसक्काल ने अमीन को जवाब दिया—मैंने उसके कान में कह रखा था, कि इन गुलामों को डराने की जरूरत है। मुल्क के हाकिम भला हमसे तुमसे पूछे बिना कोई काम कर सकते हैं? काजी हों या रईस, अमलाकादार हों या मीरशब यहाँ तक कि स्वयं अमीर भी मुल्क के बड़ों अरबाब, अकसक्काल और अमीन को साथ लेकर ही शासन कर सकते। यदि हम न हों, हमारा धोखा-फरेब न हो तो यह नंगे भूखे एक दिन में उनकी जड़ खोदकर फेंक देंगे। ताजिकी मसल नहीं सुनी है "अरबाब (नम्बरदार) को देख और गाँव को लूट!"

गिरफ्तार किसान हाथ बांधकर अमलाकदारखाना (कचहरी) भेज दिये गये।

मुल्ला नौरोज ने अमलाकदार से कहा—यह गुलाम मुसलमान नहीं हैं। यह शीया हैं। मालगुजारी और खराज (कर) के अतिरिक्त इनपर जजिया लगाना भी शरीयत (धर्मशास्त्र) के अनुसार उचित है। यदि मैं मुफ्ती बना तो इस तरह का फतवा तैयार करूँगा।

—अगर तुम्हारी इस बात को जनाबआली सुनें—अमलाकदार ने कहा—तो उसी वक्त तुम्हें मुफ्ती बना देंगे और तुम्हें भी दाना मांगने के लिये भी घोड़े पर चढ़ जगह-जगह मारा-मारा न फिरना पड़ेगा।

और हम भी तुम से छुट्टी पायेंगे—उरमान पहलवान ने अमलाकदार की बात को पूरा करते हुए कहा। अमीन और अकसक्काल हंस पड़े।

अमलाकदार का दल किसी दूसरे खेत की ओर रवाना हुआ।

५

खलिहान में बांट

काफ़ा के हार में गुलाम हैदर जब दाँय कर ओसाई कर रहा था मुल्ला नौरोज खलिहान पर चींटी की तरह चक्कर काट रहा था। वक्फ़ का इजारादार $\frac{१}{१०}$ का हिस्सेदार था। उसने मुल्ला से कहा—"गदहा न मरा जौ पकेगा" कहने से न गदहे का पेट भरता न उसके मालिक का। इसी घोड़े के दानों के लिये तुम कितने दिनों से मारे-मारे फिरते हो। अब इसे रास्ते पर लगाओ और दाना हाथ में करो।

—मैं इस खलिहान से अपना हक ले रहा हूँ और तुम भी ले रहे हो, फिर मैं ही क्यों अकेला रखवाली करता फिरूँ—मुल्ला नौरोज ने नजरबाय इजारेदार से कहा।

—मैं इस खलिहान से वक्फ़ का हिस्सा $\frac{१}{१०}$ ले रहा हूँ और तुम $\frac{२}{१०}$ बादशाही हक ले रहे हो। इसलिये इसकी रखवाली तुम्हें ज्यादा करनी चाहिये। इसके अतिरिक्त दरोगा (रखवाली) का हक और नौकरों का हक भी तुम्हें मिलेगा; इसलिये हमारी ओर से भी तुम्हें रखवाली करनी चाहिये—नजरबाय ने कहा।

—ऐसा ही सही—मुल्ला नौरोज ने कहा—यह सेवा भी मैं अच्छी तरह करूंगा—। मैं कोई मूर्ख आदमी नहीं हूँ। जब से गुलाम हैदर दाँने लगा है, रात-दिन बिना आँख बन्द किये रखवाली कर रहा हूँ 'इसके ऊपर से "तूने जौ चुराया" कहकर धमकाता भी रहता हूँ।

—जब तुम खबरदार हो और जानते हो कि उसने चोरी नहीं की तो तूने "चुराया" कहकर धमकी क्यों देते हो ?

—इसीलिये देता हूँ कि रास तैयार हो जाने पर दोष लगाकर और दाना ले सकें

शाबाश दमुल्ला, तुम्हें तो अपना मिर्जा (मुनीम) बनाऊं तो अच्छा।

मिर्जा बनाने के लिये पढ़ाई लिखाई की जरूरत होगी। यदि तुम मुझे दरोगा बना दो तो उमीद है, अच्छी तरह काम कर सकूंगा।

—अच्छा इस पर विचार करूंगा, फिर मिलने तक सलाम—कहते नजरबाय घोड़ा दौड़ाकर चला गया।

"खैर खुश" कहते मुल्ला नौरोज खलिहान पर डटा रहा।

गुलाम हैदर ने खलिहान ओसाकर रास लगाई। मुल्ला नरौज ने रूद से गीली रेत लाकर पिंडी बना चार जगह रखा और जेब से खास रेखाओं की एक लकड़ी की मुहर निकाल कर ठप्पा लगाया। इस तरह चोरी का रास्ता रोक इजारेदार को बुलाने गया। गुलाम हैदर ने मुल्ला से बहुत कहा "जल्दी आइयेगा, इतने दिनों से अगोरते अगोरते मैं तंग आ गया हूँ। तो भी मुल्ला नौरोज एक सप्ताह बाद लौटा और घोड़े को पेड़ से बांधकर रास के पास पहुँचा। एक नजर डालकर उसने कहा —तूने इसमें से चुरा लिया।

—सपना देखकर बात कर रहे हो क्या !

—सपना देखूं या न देखूं, किन्तु तूने चुराया जरूर है।

—इसका प्रमाण क्या है ?

—इसका प्रमाण है मोहर। यदि चुराया नहीं है तो मेरी लगायी मुहर कहां है ?

—मोहर तो रेत पर लगायी थी और आठ दश रोज पहिले। इसी बीच उसका चिन्ह ही नहीं बल्कि खुद धूप में सूखी रेत को भी हवा उड़ा ले गयी।

—चोरी के लिये बहाना, खूब !

—चोरी न कहो दमुल्ला ! १२ महीना काम कर खून पसीना एक कर रोटी पैदा करके मुफ्तखोरों को देने वाले किसान को चोर कहना पाप है।

—अच्छा, हरज नहीं। काम शुरू कर ; खलिहान उठाते वक्त इसका हिसाब होगा—कहते नजरबाय ने झगड़े को रोका।

आस पास के किसान अपना काम छोड़ "रास पर बरकत" कहते खलिहान पर आये

"रास पर बरक्कत"—गुलाम हैदर ने भी कहा—"यदि तुम्हारे मुल्ला की नीयत ऐसी है तो रास पर बरक्कत क्या होगी ?"

—मुल्ला (पंडित) की बात न मार काफिर हो जायेगा—कहते एक किसान ने गुलाम हैदर की बात मारी।

—अगर मुसलमानी यही है, तो काफिर होना ही बेहतर है।

—काफिर होने पर जीता नहीं बचेगा—

मुल्ला नौरोज ने कहा तुझे घसीट कर काजीखाने ले जायेंगे और सब्बे-नबी (पैगम्बर का अपमान) किया" कहकर पथराव करायेंगे।

—बहुत फ़टफट न कर दमुल्ला—एक कोने में चुपचाप बैठे सफर ने कहा।

—तू बीच में न पड़, क्या पेड़ से लटकना भूल गया?—मुल्ला नौरोज ने कहा।

—अभी तो वह पेड़ पर ही लटकाया गया था, यदि तुम्हारे हाथ में होता, तो ले जाकर दार पर चढ़ाते, मीनार से गिराते······

—व्यर्थ के झंझट से क्या फायदा दमुल्ला—नजरबाय दमुल्ला से कहकर गुलाम हैदर से बोला—उठ टोकरी उठा काम शुरू कर।

गुलाम हैदर ने टोकरी ले राशि पर आ उसे जौ से भरा। मुल्ला नौरोज और नजरबाय भी अपने-अपने बोरों का मुंह खोलकर अनाज लेने के लिये खड़े हुए। भरी टोकरी को देखकर नजरबाय ने कहा—इसको दरोगाई हक के हिसाब में दमुल्ला के बोरे में डाल। गुलाम हैदर ने उस टोकरी को खाली करके दूसरी टोकरी को भरा।

—इसे भी नौकरों के हिसाब में दमुल्ला को दे—नजरबाय ने कहा।

दूसरी टोकरी भी दमुल्ला को दे हैदर ने तीसरी टोकरी भरी। इसी समय गांव के इमाम (पुरोहित), अरबाब (चौधरी) हजाम एक-एक खुरजी लिये दौड़े आये।

—इस टोकरी को अल्ला के हक में दमुल्ला इमाम की खुरजी में डाल—नजरबाय ने कहा। इसके बाद चौथी टोकरी जलाध्यक्ष के हक के रूप में अरबाब की खुरजी में और पाँचवी हजामत के हक के लिये हजाम की खुरजी में डाली गयी। गुलाम हैदर ने छठी टोकरी भरी।

—इसको वक्फ़ के हिस्से वाले दशांश में मेरे बोरे में डाल—नजरबाय ने कहा।

—क्या दशांश पांच टोकरी पर एक होता है?—आश्चर्य करते गुलाम हैदर ने पूछा।

—दशांश साढे चार टोकरी पर आधी टोकरी होता है। यह जो साढे चार टोकरी डाला वही दश टोकरी का हिसाब है। देश का यही रवाज है—नजरबाय ने कहा।

—खाक पड़े इस तरह के रवाज पर—हैदर ने कहा।

—देश का रवाज तेरे फायदे के लिये नहीं तोड़ा जायेगा—नजरबाय ने कहा।

—"अल अर्फो कन्-नास्" अर्थात् लोक-प्रसिद्धि और आदत कुरान की आज्ञा के बराबर है, यह धर्म-ग्रन्थों में लिखा है—कहते इमाम ने इजारादार की बात का समर्थन किया।

—तुम बात में न शामिल हो तो भी अच्छा, एक टोकरी जौ तो हलाल कर ही चुके—सफर ने कुछ गर्म होकर कहा।

—एक चींटी एक दाना गेहूँ ले जाती, दूसरी चींटी भी दाना पर धक्का देकर सहायता करती है—हंसते हुए दूसरे किसान ने कहा।

—बहुत बात करने की आवश्यकता नहीं, देश के रवाज के अनुसार बांट—अरबाब ने कुछ तेज होकर हैदर से कहा।

—लूटना है तो खुद लूटकर ले लो। मैं अपने हाथ से अपने माल को नहीं लुटा सकता—कहते गुलाम हैदर ने टोकरी को फेंक दिया। और एक तरफ जा दोनों जांघों को दोनों हाथों से बांधकर मुंह बिचकाये बैठ गया।

—ऐसा ही सही, यह सेवा मैं करता हूँ—कहते अरबाब अपनी जगह से उठा और जामा को निकाल कर एक ओर फेंक टोकरी लिये रास के पास जा उसे भर कर बोला—अपने बोरे के मुंह को संभाल कर रखो नजरबाय अका—और टोकरी को उसमें खाली कर दिया। इसके बाद फिर अरबाब ने दूसरी टोकरी भरी, जिस पर नजरबाय ने कहा :

—बंटे जौ पर $\frac{3}{10}$ के हिसाब में इसे दमुल्ला के बोरे में डाल।

अरबाब ने उस टोकरी को दमुल्ला के बोरे में खाली कर दूसरी टोकरी भी भरकर उसमें डाल दी, इस तरह आठ टोकरी अनाज चला गया और हैदर को अभी एक टोकरी अनाज भी न मिला इसी समय एक कलन्दर (साधु) आकर घोड़े से उतरा, उसके शरीर पर कफनी, सिर पर चारतही कलन्दरी टोपी चेहरे पर चलतार (४० तार) बंधा, नाभि पर कमरबंद से कचकोल लगा, पार्श्व मे तुम्बा लटकता और हाथ में लोहे का खूंटा था। कलन्दर ने खूंटे को जमीन पर गाड़कर घोड़े की लगाम को उससे बांध दिया, फिर खुरजी से दो शीरमाली कुलचा (रोटी) को एक तश्तरी में रख रास के पास जाकर—"या हुआ, या मीन्हू, पीरम् नक्शबन्द दीवाना" कहते उसे इमाम के सामने रख दिया।

—आइये-आइये शाह रजब बस सिर्फ तुम्हारी कमी थी—कलन्दर की ओर देखकर सफर ने कहा।

आदत से मजबूर हो इमाम ने कुलचे को तोड़कर खाना शुरू किया। नजर बाय, मुल्ला नौरोज, अरबाब और हजाम ने भी बड़ी बे-तकल्लुफी से कुलचे की ओर हाथ बढ़ाया।

दो तीन हाथों में जा तस्तरी में दो एक टुकड़ों के सिवा कुछ नहीं रह गया। तब नजरबाय ने "तुम भी लो, कलन्दर का प्रसाद है" कहकर तस्तरी को सफर की तरफ बढ़ाया। सफर ने उसकी ओर ताका नहीं; लेकिन इमाम ने उन दो टुकड़ों पर नजर गड़ाये सफर से कहा :

—ले लो ना, अगर पेट भरा है, तो दूसरों को दे दो। यदि कोई न खायेगा, तो हम ही खा लेंगे।

सफर ने एक कण अपने मुंह में डाला और तस्तरी को दूसरे किसानों की ओर बढ़ा दिया।

उन्होंने ने एक हाथ से दूसरे हाथ में से देते एक-एक कण को मुँह में डाला। अंत में तस्तरी को गुलाम हैदर के हाथ में देते एक किसान ने कहा—तू भी कलन्दर का प्रसाद चख ले। न भी खायेगा तो भी तेरा एक टोकरी जौ उसके थैले में तो जायेगा ही।

लेकिन क्रोध के मारे गुलाम हैदर ऐसी अवस्था में न था, कि कुलचा उसके गले से उतरता। उसका कंठ सूखा हुआ था, आँखों से चिनगारियाँ बरस रही थीं। उसने कहा—नहीं, मैं नहीं खाऊँगा। इसे भी इन्हीं बलाखोर को दे दो। वही खायेगा।

इसी समय गुलाम हैदर की नजर कलन्दर पर पड़ी। वह घोड़े को खोलकर आधे दाँये भूसे को ले जाकर खिला रहा था। हैदर गुस्से में पागल होकर दौड़ा और खूंटे को जमीन से उखाड़ कर घोड़े की नाक पर मारा। घोड़ा भिन्ना कर भगा। गुलाम हैदर ने कलन्दर से कहा—

—यदि मेरे लिये कुछ बचता तो यही था, और तू मुफ्तखोर इसे भी चराना चाहता है!

कलन्दर अपने घोड़े के पीछे भागा। दूसरे बाकी जौ को बांटने लगे।

—पहले चोरी किये जौ का हिसाब करना चाहिये, फिर बांट होगी—मुल्ला नौरोज ने अरबाब से कहा।

—क्या इस खलिहान में चोरी हो गयी थी—कहते अरबाब ने टोकरी को एक तरफ रख मुल्ला नौरोज की ओर निगाह की।

—हाँ, मुहर को तोड़कर चुराया—मुल्ला नौरोज ने कहा।

—कितना चुराया?

—मेरे अन्दाज से दो मन।

—किसने चुराया?—कहते गुलाम हैदर मुल्ला की ओर चढ़ दौड़ा।

—तूने चुराया—मुल्ला नौरोज ने कहा।

—यह चोर नहीं है, यह चोरी नहीं कर सकता, तू झूठ बक रहा है दमुल्ला!—सफर ने कहा।

"झूठ" "तुहमत" कहते दूसरे किसान भी चिल्लाने लगे।

—तुम सभी चोर हो, तुम सब एक-सी बात करते हो—कहते मुल्ला नौरोज अपनी जगह से उठा।

गुलाम हैदर उसके पास जाकर बोला—"तुम लोग चोर हो, हजाम अका हर दसवें-पन्द्रहवें मेरी और बच्चों की हजामत बनाता रहा। बाकी तुम लोगों का क्या हक था, कि मुझे एक दाना भी दिये बिना आठ टोकरी जौ आपस में बांट लेते और फिर भी रास्ता ढूँढ़ रहे हो, कि बाकी को भी लूट लो। वह चोरी नहीं डकैती है, दिन-दोपहर लोगों के सामने डाका डालना है।

"जबान संभाल कर बोल" कहते नजरबाय हाथ में कोड़ा लिये गुलाम हैदर पर चढ़ आया। इससे मुल्ला नौरोज की भी हिम्मत बढ़ी और उसने अपनी कमर से कोड़ा निकाल गुलाम हैदर के सिरपर मारा। गुलाम हैदर ने अपने दोनों हाथों से मुल्ला नौरोज के गले को पकड़कर अपने दाहिने पैर में उसके पैरों को फंसाकर आगे की ओर खींचा। मुल्ला नौरोज पीठ के बल जमीन पर गिर पड़ा। हैदर ने उसकी छाती पर सवार हो अपने दोनों घुटनों से दबाकर उसे पीटना शुरू किया। इसी समय 'घर-जले, चोरो" कहते नजरबाय ने हैदर पर कोड़ा चलाना शुरू किया।

"घर हमारा यदि जलनेवाला है, तो एक ही बार जले" कहते सफर ने नजर बाय को धर गिराया। "अब होनी थी सो हो गयी, मारना क्यों छोड़ो" कहते दूसरे किसान भी टूट पड़े। और "प्रगट न होनेवाली जगहों में मारो" कहते मुल्ला नौरोज और नजरबाय को कमर के नीचे कूटने लगे।

"इन बेसमझों के खोदे गड्ढे में कहीं हमारा भी पैर न फँसे" सोचते इमाम,

८—होनी थी सो हो गयी, मारना क्यों छोड़ो (पृष्ठ १४२)

अरबाब और हजाम अपनी खुर्जियों को उठाये गांव को भगे। कलन्दर ने नाक से खून बहते घोड़े को पकड़ आकर यह हालत देखी। उसने पैरों के नीचे पड़कर पिचक गयी तस्तरी को खुर्जी में रख खूंटे को हाथ में ले घोड़े पर सवार हो "इसमें मेरा शीरमानी कुलचा भी अकारथ गया" कहकर बड़बड़ाते चल दिया।

मुल्ला नौरोज और नज़रबाय अब किसानों के नीचे कसाई के हाथ पड़ी गाय की तरह लेटे बांग मार रहे थे।

६

देवोत्तर संपत्ति और किसान

बुखारा नगर के मीर-अरब नामक मदरसे के एक आँगन में बहुत से मुल्ला (पंडित) जमा हुए थे। वहाँ मदरसा (पाठशाला) की देवोत्तर संपत्ति (वक़्फ़) के बारे में बात हो रही थी। इजारेदार (ठेकेदार) नज़रबाय ने शिकायत की थी कि वक़्फ़ के किसानों ने उसे पीटकर भगा दिया। नज़रबाय की आप बीती सुन लेने पर एक मुल्ला ने कहा—५ साल पहले हमारे मदरसे के सारे वक़्फ़ों से ५० हजार तंका आता था, और अब उनकी आमदनी दो लाख तक पहुँच गयी है। सिर्फ नज़रबाय के इजारे से ५० हजार तंका आता है।

दूसरे मुल्ला ने कहा—यदि आमदनी इसी तरह बढ़ती गयी, तो दस-पन्द्रह साल में हमारे मदरसे के पास भी अमीर के खजाने को तरह अपरिमित आय होने लगेगी।

—तुम अच्छी इजारादारी को नहीं जानते—एक और मुल्ला ने इस मुल्ला की बात न स्वीकार करते हुए कहा—असली इजारादार आरिफ रंगोबार (जूआचोर) नहीं है, वह "मकबूज" खोर है।

—हाँ ठीक है—इस मुल्ला की बात का समर्थन करते दूसरे मुल्ला ने कहा। हर साल आरिफ रंगोबार जो पहला काम करता है, वह यही इजारा है। जब दूसरा इजारेदार आकर इजारे की रकम को बढ़ाता है, तो वह "मुकबूज" लेकर चल देता है। किसी ने नहीं देखा कि पूरे एक साल भी इजारा उसके हाथ में रहा।

—इजारादारी का क्या कहना है—कहते एक और मुल्ला ने लम्बी प्रशंसा करनी चाही। इसी समय नज़रबाय ने कहा—क्षमानिधानो!

जब मुल्ला लोग चुप हो गये तो उसने फिर कहा—पहले मेरी अर्ज सुन लीजिये फिर अपनी बात कहियेगा।

—अच्छा, तुम्हारी अरज क्या है—एक मुल्ला ने उसकी बात काटकर कहा।

—मैंने अभी कहा था और अब भी फिर कह रहा हूँ, कि किसानों ने मुझे पीटा, अपमानित किया, वक्फ़ की लगान को न दे मुझे भगा दिया, अब आपलोगों को चाहिये कि किसानों से लगान वसूल करें, या उनको ऐसी स्थिति में डालें कि वे बिना आना-कानी के हिसाब के अनुसार लगान को मुझे दें। यदि ऐसा न कर सकें तो पाँच हजार तंका "मक़बूज" के साथ मेरे दिये ग्यारह हजार तंकों को मुझे लौटा दें। इसके बाद चाहे अपना इजारा आरिफ रंगोवार को दें या शरीफ कचरी को दें।

—तुमने कब हमारे हाथ में ग्यारह हजार तंका नगद दिया था?—कहते एक आदमी एक किनारे से चिल्ला उठा—मैंने कब तुम्हारे इजारे में से अपने कमरे के लिये एक हजार तंका नकद हिसाब से पाया?

नज़रबाय के जवाब देने से पहिले ही मदरसा के इमाम ने उस आदमी को जवाब दिया—तुम बिरादर, अभी देतोत्तर संपत्ति के ठेके (वक्फ़ के इजारे) की रीति-रवाज को नहीं जानते।

—देवोत्तर संपत्ति के ठेके की क्या रीति-रवाज है, इसे जरा हमें भी बतला छोड़िये—कहते वह आदमी फिर इमाम से उलझ पड़ा—मैंने २० हजार चाँदी के तंके—बुखारा शरीफ में ढले प्रत्येक सात मिशकाल भारी को देकर आपके मदरसे का हुजरा (कमरा) लिया और इसी उमीद पर कि इस साल वक्फ़ की आमदनी से खूब फायदा उठाऊँगा। अब जब कि मदरसे के वक्फ़ की सारी आमदनी दो लाख तंका है, तो हिसाब करने पर मेरे हुजरे (कमरे) का हक एक हजार होता है। यह सोचकर मैं बहुत प्रसन्न था।

—मैं तुमसे वक्फ़ के इजारे के रीति-रवाज को बतलाये देता हूँ, फिर तुम्हें सारी बात मालूम हो जायेगी—कहते इमाम ने बात शुरू की—हमने इस वक्फ़ को, जो आज नज़रबाय के हाथ में है, होत (फरवरी) मास में आरिफ रंगोवार को १० हजार तंके में ठेका दिया था, और इस शर्त के साथ कि वह हजार तंका नगद देगा, हजार तंका "मकबूज" रहेगा और बाकी आठ हजार तंका को साल में तीन किस्त करके दे देगा।

—"मकबूज" क्या है?—कहते उस आदमी ने इमाम को बीच में टोक दिया।

इमाम ने जवाब दिया—"मकबूज" का अर्थ यही है कि हम इस रकम को न पाने पर भी पायी जैसी हिसाब करते हैं।

—क्यों न पाये पैसे को हम पाया जैसा हिसाब करते हैं?—आदमी ने फिर टोका।

—इसीलिये कि यदि कोई दूसरा आदमी आकर वक्फ को इजारा की रकम और बढ़ाकर लेना चाहे और पहले इजारेदार को हटना पड़े, तो उसे खाली हाथ न जाना पड़े, काजीखाना में दस्तावेज लिखाने का खर्च, मदरसों में मिठाई बांटने का खर्च आदि के जो खर्च इजारेदार कर चुका है और इजारे के काम में इसने जो दिन और मिहनत खर्च की है, वह सब बेकार न जांय।

—अच्छा, ठीक—उस आदमी ने कहा।

इमाम ने फिर बात शुरू की—तुला (मार्च) मास में शरीफ कचरी ने आकर आरिफ को दिये वक्फ पर पन्द्रह हजार तंका देना चाहा; लेकिन इजारे के साथ यह शर्त हुई कि शरीफ ढाई हजार तंका नगद देगा और डेढ़ हजार तंका "मकबूज" रहेगा। हमने शरीफ कचरी से ढाई हजार तंका नगद लिया, उसमें से दो हजार तंका आरिफ को दिया, जिसमें एक हजार तंका नगद उसने ठेका लेते वक्त दिया था और एक हजार तंका "मकबूज" का उसके दूसरे खर्च और परिश्रम के लिये दिया गया। बाकी ५०० तंका हमने वक्फ खोरों में बांट दिया।

अर्थात् एक हजार तंका हवा हो गया—उस आदमी ने कहा।

अच्छा तुम "मकबूज" वाली रकम को हवा हुई समझ लो—कहते इमाम ने फिर अपनी बात शुरू की—सूर (अप्रैल) मास में हाजी कुर्बान ने उसी वक्फ को २५ हजार तंका पर इजारा लिये, शर्त यह हुई कि वह साढ़े चार हजार तंका नगद देगा और दो हजार तंका "मकबूज" रहेगा। हमने हाजी कुर्बान से साढ़े चार हजार तंका लिया और उसमें से चार हजार नगद शरीफ कचरी को दे दिया। और बाकी ५०० को मदरसे में बांट दिया।

—अर्थात् ढाई हजार तंका हवा हुआ—उस आदमी ने कहा—।

इमाम ने फिर अपनी कथा शुरू की—कन्या (जून) मास में कमालबाय ने आकर हजार की रकम को बढ़ाकर ३५ हजार कर दिया, शर्त यह थी कि सात हजार तंका नगद देगा और तीन हजार "मकबूज" रहेगा। हमने कमालबाय से सात हजार

तंका नगद लेकर उसमें से साढ़े छ हजार हाजी कुर्बान को दे दिया और ५०० तंका मदरसे के भीतर बांट दिया।

—अर्थात् अबतक सब मिलाकर साढ़े चार हजार तंका इजारेदारों के पेट में चला गया—उस आदमी ने कहा।

इमाम ने फिर कहा—कर्क (जुलाई) मास में "फसख" के दिन इस नजर बाय आका ने उसी १ वक्फ को ५० हजार तंका पर इजारा लिया, शर्त यह थी कि वह ११ हजार तंका नगद देंगे और ५ हजार "मकबूज" रहेगा। हमने इनसे ११ हजार तंका लिया, उसमें से १० हजार (जिस में तीन हजार मकबूज और हजार अमानत थी) कमाल बाय को दिया और बाकी हजार तंका मदरसे में बांट लिया, जिसमें तुम्हें भी अपने हुजरे (कोठरी) का हिस्सा मिला।

—तो कहना चाहिये कि साढ़े सात हजार तंका अर्थात् कुल रकम का प्रायः छठा भाग "मकबूज" के रूप में हवा हो गया—कहते उस आदमी ने फिर पूछा—"फसख के दिन" का अर्थ मुझे समझ में नहीं आया।

इमाम ने कहा—फसख वह दिन है जिस दिन कि ईशान काजी कलां (माननीय महान्यायाधीश) इजारे की रकम का और बढ़ाना रोक (फसख) देते है। फसख का दिन जुलाई में गेहूँ कटने के समय होता है। यह इसलिये किया जाता है कि लगान की वसूली के समय इजारा एक आदमी के हाथ में रहे और वह तत्परता से उसे उगाह सके।

—खैरियत हुई जो उसी दिन फसख भी हो गया, नहीं तो कोई और भी आकर इजारे को बढ़ाता और यह नजर बाय भी मजे में ५ हजार तंका "मकबूज" उड़ाते और इस तरह इजारे की रकम की चौथाई हवा में उड़ जाती।

—अब भी मैं अपने ५ हजार तंका "मकबूज" को लेकर इजारा छोड़ने को तैयार हूँ—नजरबाय ने कहा।

—इजारा अपने हाथ में रखे हो और "मकबूज" भी खाना चाहते हो? एक मुल्ला ने धमकाते हुए कहा।

—ऐसा कहना ठीक नहीं—मुतवल्ली (प्रबन्धक) ने कहा—ऐसे आदमी के साथ इस तरह का बर्ताव अनुचित है जो अपनी जान खतरे में डाल सूखी जमीन और सरकश किसानों से ५० हजार तंका वसूल करके देता है।

मुतवल्ली की हिमायत से नजरबाय को हिम्मत हुई और उसने कहा—यदि

न्यायतः लगान वसूल करूँ तो मेरे इजारे की जमीन से २० हजार तंका भी नहीं मिल सकता। ये हमारे जैसे इजारेदारों की प्राणपन से चेष्टा है, जो इतनी बड़ी रकम आपको मिली है।

—अच्छा, ऐसा रास्ता निकालना है, कि किसान बिना चूँ-चिरां के लगान देने पर राजी हो जायें।

—मुल्ला बच्चों (विद्यार्थियों) को इकट्ठा करके चलें। किसानों को खूब खरमुर्द (कुटाई) करें—एक जवान मुल्ला ने सलाह दी।

किसानों को काजीखाने में ले जाकर दण्ड दिलाना चाहिये—दूसरे मुल्ला ने कहा।

—बेंत और कोड़े की सजा के साथ-साथ जुर्माना भी कराना चाहिये, क्योंकि आर्थिक दण्ड डंडे की चोट से बढ़कर होता है।

नजरबाय के साथ किसानों पर दावा करने के लिये आये मुल्ला नौरोज ने कहा—आर्थिक दण्ड के लिये उन्हें धन देना होगा, क्योंकि उनके पास कुछ नहीं है, धरती आकाश में हाथ पैर रखने के लिये कोई ठिकाना नहीं है।

—तो तुम्हारे विचार में उन्हें कैसी सजा दिलानी चाहिये—उस मुल्ला ने मुल्ला नौरोज से पूछा।

—आलिमों (पंडितों) से काफिर (विधर्मी) होने का फतवा (व्यवस्थापत्र) लेकर सबको पथराव करा देना चाहिये—मुल्ला नौरोज ने कहा।

—यह सब उपाय अपर्याप्त है, इस उपाय से न पेट भरेगा, न खीसे में पैसा आयगा। मेरी समझ में ठीक उपाय वह है जिसे मैंने सोचा है।

—तुम्हारी समझ में ठीक उपाय क्या है—मुतवल्ली ने पूछा।

—ऐसा उपाय है, जिससे वक्फ का पैसा निकल आये।

—लेकिन वह उपाय क्या है? मुतवल्ली ने दुबारा पूछा।

—तुम किस तरह के दिमागवाले हो ठीक उपाय को भी नहीं समझते, ठीक उपाय वह है जिससे वक्फ का पैसा निकल आये, मैंने कहा नहीं—मुल्ला ने झल्लाकर कहा।

तुम्हारी बात भी थोथी और खाली गप है। मेरी समझ में···

—"ला नसल्लमो" (मैं नहीं मानता) कि मेरी बात थोथी और खाली है, क्यों उचित नहीं है, कि वह ठीक उपाय न हो?—मुल्ला ने मुतवल्ली से शास्त्रार्थ की भाषा में बोलना शुरू किया।

—कोई आदमी एक उपाय सोचता है, जिससे वक फ का पैसा निकल आवे,

संभव है उसका सोचा उपाय ठीक उपाय हो—कहते एक और मुल्ला ने उस मुल्ला का समर्थन किया।

—संभव वस्तु अवश्य-घटनीय नहीं होती—कहते दूसरे मुल्ला ने मुतवल्ली का पक्ष लिया—। यथा उत्का (गरुड़) पक्षी संभव में से है, लेकिन आज तक किसी आदमी ने उसे दुनिया में नहीं देखा।

एक विद्यार्थी ने उस मुल्ला की ओर इशारा करके दूसरे विद्यार्थी से धीरे से कहा—यह महानुभाव मेरे दमुल्ला-कुंजकी (दूसरे श्रेणी के अध्यापक) हैं। यह महानुभाव शास्त्रार्थ में अप्रतिहत हैं। स्वयं इन्होंने मुझे बतलाया है, कि एक दिन बादशाही आर्क (दुर्ग) के शास्त्रार्थ में इन्होंने कई बड़े-बड़े मुल्लों को परास्त किया है।

पहले विद्यार्थी ने दूसरे विद्यार्थी का खंडन करते हुए कहा—मेरे दमुल्ला-कुंजकी (सहायक अध्यापक) तेरे दमुल्ला कुंजकी से ज्यादा पढ़े हैं। आप जब अपने कमरे में अध्यापन करते हैं, तो आवाज दरवाजे से निकलकर सड़क तक फैल जाती है और राह चलते आदमी भी उनकी आवाज सुनकर "गजब के महान् मुल्ला हैं" कहते चकित हो खड़े होकर सुनने लगते हैं।

—मुतवल्ली क्या सोच रहे हैं, इसे भी सुनें—मुदर्रिस (प्रधानाचार्य) ने कहा। अभी तक वह बात में भाग नहीं ले रहे थे और अपनी छाती की ओर निगाह किये कुछ गुनगुनाते सुमरनी (तस्बीह) फेर रहे थे।

—मुतवल्ली मामूली आदमी है, वह हमलोगों का सेवक है। उसकी बात का क्या मूल्य है?—एक हुजरा खरीदे मुल्ला ने कहा।

—चुप रह, बेअदब—कहकर मुदर्रिस ने उसे डाँट दिया।

—मैं क्यों चुप रहूँ! यदि तुम अध्यापन के लिये मदरसे के वक्फ़ से हिस्सा पाते हो, तो मैं भी अपने खरीदे हुजरों (कोठलियों) के लिये हिस्सा पाता हूँ।

इसपर मुदर्रिस के विद्यार्थियों ने चारों ओर से "चुप रह, चुप रह" कहते अपनी गर्दनों को लड़ने के लिये तैयार मुर्गों की भाँति ऊँचा किया। वह मुल्ला चुप होने के लिये मजबूर हुआ।

—कृपा कीजिये, क्या सोचा है, बतलाइये—मुदर्रिस ने मुतवल्ली से कहा।

—मुतवल्ली के उदास चेहरे पर कुछ रंग-सा दौड़ा और उसने कहा—यह घटना केवल नजरबाय इजारादार या केवल हमारे मदरसा से संबंध नहीं रखती। इसका संबंध सारे वक्फ़-खोरों से है।

—माननीय महान्यायाधीश से भी इसका संबंध है—इमाम ने कहा—क्योंकि वह साहब भी वक्फ़ के इजारे के दस्तावेज पर मुहराना लेते हैं।

—ठीक है—कहते एक मुल्ला ने इमाम का समर्थन किया—इसी हमारे ५० हजार के इजारा से उन्होंने प्रति सहस्र ५ तंका के हिसाब से ढाइ सौ तंका मुहराना वसूल किया।

—नहीं, और अधिक लिया है—इमाम ने कहा—इसी वक्फ़ के इजारे के लिये ५ बार दस्तावेज लिखा गया और प्रति बार अलग-अलग मुहराना दिया गया, जो कि सब मिलाकर छ सौ पचहत्तर तंका हुआ।

—अब मालूम हुआ—इजारादार ने कहा—क्यों काबी कलाँ ने इजारे पर इजारा मकबूज पर मकबूज करने दिया और फ़स्ख के दिन को टालते रहे।

—क्या मकबूज और मुहराना तुम्हारी जेब से गया, जो इतने तिलमिला रहे हो? यह सब किसानों के मत्थे गया, तुमको इससे क्या?—एक मुल्ला ने कहा।

—"*मा नहनू फीहे*" *अर्थात् हम प्रसंग से बाहर जा रहे* हैं—कहकर मुदर्रिस ने उन्हें चुप कर दिया।

मुतवल्ली ने फिर बात शुरू की—

यदि हम आज इस काम को छोड़ दें, तो हमारे दूसरे किसान दूसरे इजारेदार को मार भगायेंगे। हमारा यह वक्फ़ दशांश (पैदावार का $\frac{1}{10}$) वाला है, हमारे पास ऐसी भी जमीनें हैं, जिनसे पैदावार का आधा या तृतीयांश मिलता है। जब किसान दशांश के लिये इतनी सरकशी कर रहे हैं, तो आधे और तृतीयांश को वह कैसे आसानी से देंगे।

—इस जमीनवाले किसान भी $\frac{4}{10}$ हिस्सा देते हैं—एक गरीब विद्यार्थी ने कहा—क्योंकि यदि वह वक्फ़ को दशांश देते हैं, तो साथ ही राजकर भी $\frac{3}{10}$ देते हैं, सब मिलकर $\frac{4}{10}$ होता है।

—चुप रह जंगली—कहकर मुदर्रिस ने विद्यार्थी को डाँट दिया।

मुतवल्ली फिर कह चला—यह बहुत बुरी बीमारी है, इससे देवोत्तर संपत्तिवाली मस्जिदों और दूसरे मदरसों की पोंछ में भी पानी लगेगा और धार्मिक संपत्ति पर भारी संकट उठ खड़ा होगा।

—अच्छा, बात ज्यादा लम्बी न बढ़ाइये। अब अपना असली उपाय बतलाइये— पहले झगड़ पड़े मुल्ला ने मुतवल्ली से पूछा।

—असली उपाय यह है—मुतवल्ली ने कहा—मैं, ईशन मुदर्रिस (माननीय प्रधानाचार्य) और कुछ और बड़े दर्जेवाले ईशान काजी कलाँ और मीरशब कूशबेगी (महामंत्री के कोतवाल) के पास चलें और इस घटना की गंभीरता को समझावें। वे दोनों एक-दो मोहरा (दोनों की मुहरवाला) फरमान लिखकर तूमान के चारा हाकिमों के पास बरन्दा-दरन्दा (भयंकर) कर्मचारियों और सिपाहियों के साथ भेजें; जिसमें वह मुखियों को पकड़कर कड़ी सजा दें। इस तरह बाकी किसान इजारेदार की आज्ञा मानने के लिये बाध्य हो जायेंगे।

मुतवल्ली की बात का समर्थन करते हुए एक मुल्ला ने कहा—यह काम काजी-कलाँ और तूमान के चार हाकिमों के लिये भी बे-फायदा नहीं होगा; उन्हें मुहराना मिलेगा, और कर्मचारियों तथा सिपाहियों को खिजमताना मिलेगा।

—जिस समय आप काजी कलाँ और मीर कूशबेगी के पास जायें उसी समय विद्यार्थियों को भी जमात बाँधकर काजीखाने के फाटक और किले के सामने जाकर खूब हल्लागुल्ला मचाना चाहिये; जिससे मालूम हो कि इस घटना से मुल्ला लोग विद्रोह कर बैठेंगे—कहकर इमाम ने मुतवल्ली की बात की पुष्टि की।

—ठीक—कहकर मुदर्रिस ने इमाम की बात का समर्थन किया।

—इस काम से वक्फ़ का झगड़ा और नजरबाय का झगड़ा ठीक हो जायेगा—मुल्ला नौरोज ने कहा—किन्तु मेरे दावा का क्या होगा।

—तुम्हारा दावा, मामूली मानहानिकर है—मुतवल्ली ने कहा—तुम किसी समय भी तूमान के काजीखाने में अपमानकारकों को ले जाकर उनसे बदला ले सकते हो।

मुल्ला नौरोज ने गरम होकर कहा—मेरा दावा क्यों मामूली मान-हानिकर है। यह मानहानि आलिमों (पंडितों) की मानहानि है, आलिमों की मानहानि शरीयत (धर्म) की मानहानि है, शरीयत की मानहानि खुदा और रसूल की मानहानि है, जो ऐसा करता है वह काफिर मुर्तिद् (धर्मभ्रष्ट) है, और काफिर-मुर्तिद के लिए दण्ड है कत्ल, दार खींचना, पथराव करके मारना।

—तुम वैसे मुल्ला नहीं हो कि तुम्हारा अपमान आलिमों का अपमान माना जाये—मुस्कुराते हुए नजरबाय ने कहा।

—क्यों मैं मुल्ला नहीं हूँ? कितने ही साल मदरसे की खाक चाटते विद्या पढ़ी, गुरुओं के जूते ढोये, और मुल्लायी पगड़ी पायी।

—सो ठीक है—नजरबाय ने कहा—लेकिन लिखना-पढ़ना नहीं जानते।

इस बात पर चारों ओर से मुल्लों ने हल्ला मचाना शुरू किया "जब मदरसा की खाक चाट चुका, तो अवश्य मुल्ला है", "मुल्ला होने के लिये लिखना-पढ़ना जरूरी नहीं, ऐसा होने पर यहाँ बैठे मुल्लों में अधिकांश मुल्लों की पाँती से बाहर हो जायेंगे।

"लिखने-पढ़ने से आदमी मुल्ला नहीं होता। ऐसा होने पर बाय ओरजी (भाई अर्जुन) हिन्दू भी मुल्ला हो जायेगा क्योंकि वह मुसलमानी लिखना-पढ़ना अच्छी तरह जानता है और वह मुल्ला क्या मुसलमान भी नहीं है।"

"लिखना-पढ़ना न जानने से मुल्ला होने में कोई हर्ज नहीं। आखिर हमारे पैगम्बर (मुहम्मद साहेब) भी तो लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे।"

मुल्लों की हाथ हिलाई और सिर चलायी की समाप्ति के बाद मुदर्रिस ने मुल्ला नौरोज से कहा—अच्छा कहो तुम्हारा दावा किस पर है!

—देहनौ अब्दुल्लाजान के रहनेवाले सारे सरकश किसानों के ऊपर है।

—क्या सबने तुम्हें पीटा? —नहीं सबने नहीं, उनमें से कुछ ने पीटा, किन्तु यदि अवसर मिले तो सभी मुझे पीटेंगे ही नहीं जान से मार डालेंगे।

तो क्या सबको दंडित करना चाहिये?

—हाँ क्षमानिधान, सबको पथराव करके मारना जरूरी है।

—नहीं, ऐसे नहीं होता—मुदर्रिस ने कहा—यदि उन सबको पथराव करके मरवा दें, तो फिर हमारी जमीन का काम कौन करेगा, और हमारा तुम्हारा पेट कौन भरेगा!

—तक्सीर (क्षमानिधान)! —कहते मुल्ला नौरोज सुस्त पड़ गया।

मुदर्रिस कहता गया—तुम उनमें से कुछ का नाम लो, जिसमें उनको कड़ा दंड

दिया जाय, इससे दूसरों को भी शिक्षा मिलेगी। फिर वह डर कर तुम्हारा और जालिमों का अपमान न करेंगे, वक्फ़ की चीज न हड़पेंगे और तुम्हारी चीज तुम्हें देते रहेंगे।

तो ऐसा ही हो, मैं उनमें से सबसे बुरों का नाम बतलाता हूँ। आप लिखिये—मुल्ला नौरोज ने मुतवल्ली से कहा।

—मुतवल्ली के इशारा करने पर उसका मिर्जा कलम-कागज लेकर लिखने के लिये तैयार हुआ।

—कृपया बतलाइये—मुतवल्ली ने पूछा।

प्रथम गुलाम हैदर।

मिर्जा ने लिखा। फिर मुतवल्ली ने पूछा—उसका अपराध क्या है?

—उसका पहिला अपराध है चोरी करना—मुल्ला नौरोज ने जवाब दिया।

—क्या देहनौवाले गुलाम हैदर की बात करते हो?—एक अपरिचित आदमी ने पूछा, जिसका जामा-पगड़ी मुल्लों जैसी थी, किन्तु उसकी गतिविधि मुल्लों जैसे न थी।

हाँ, म० गाँव का जो कि देहनौ से सम्बद्ध है—मुल्ला नौरोज ने कहा।

—उसे मैं बहुत दिनों से जानता हूँ—अपरिचित आदमी ने कहा—वह ऐसा जवान नहीं है कि चोरी या बुरा काम करे। बिना प्रमाण के किसी आदमी को चोर कहना ठीक नहीं।

—क्या गुलाम हैदर गुलामों में से तो नहीं है—एक दूसरे मुल्ला ने पूछा।

हाँ गुलामों में से है—अपरिचित आदमी ने जवाब दिया।

—गुलामों की चोरी और दुष्कर्म के लिये किसी गवाही या प्रमाण की आवश्यकता नहीं। सभी गुलाम चोर और बदमाश होते हैं—मुल्ला ने कहा।

—गुलाम हैदर मामूली चोरों में से नहीं है—मुल्ला नौरोज ने कहा—वह वक्फ़ और सरकारी माल का चोर है, मोहर लगायी रास से उसने जौ चुराया।

गुलाम हैदर के इस अपराध के लिखे जाने के बाद मुतवल्ली ने फिर पूछा—और उसका दूसरा अपराध?

—उसने आरंभ किया और दूसरे किसानों ने उससे मिलकर मुझे खरमुर्द (गदहमार) करके पीटा।

—खरमुर्द किया, अफसोस कि खरमुर्दा न हुआ—अपरिचित व्यक्ति ने ओठों के भीतर कहा।

—और क्या ? —मुतवल्ली ने पूछा—

—आलिमों का अपमान किया। शरीयत की निन्दा की।

यह भी लिखे जाने के बाद 'और क्या किया" पूछा गया।

—उसके दूसरे अपराध इस समय याद नहीं आ रहे हैं, अब दूसरे अपराधी के बारे में लिखिये—मुल्ला नौरोज ने कहा।

—अच्छा, कहिये।

—दूसरे का नाम सफर है, वह भी मुझे खर-मुर्द करने में शामिल था। वह भी चोर है।

— क्या वह भी गुलामों में से है ?—अपरिचित व्यक्ति ने फिर पूछा।

—गुलाम न होने पर भी वह गुलामों से भी बुरा है। वह एक नंगा-भूखा सरकश किसान है। ऐसे किसानों का काम ही है वकूफ़ और सरकारी माल का चुराना और मालिकों की चीज को हड़पना।

—यह किसानों का पक्षपाती कौन है—कहकर मुदर्रिस ने मुतवल्ली से अपरिचित व्यक्ति के बारे में पूछा।

—मदरसे में एक अस्थायी घरवाला विद्यार्थी है। उसकी कोठरी में मैंने इसे आते जाते देखा है किन्तु मैं इसे पहिचानता नहीं—मुतवल्ली ने कहा।

—इस विद्यार्थी को किसने मदरसे में स्थान दिया ? क्या उसने अपने कमरे को षड्यन्त्र-घर बनाया ?—झल्लाई सी आवाज में मुदर्रिस ने कहा।

शास्त्रार्थी मुल्ला भी साथ देते बोला—दमुल्ला इमाम को अध्यापन करने का शौक चर्राया, किन्तु कोई विद्यार्थी न मिला ; अंत में इसी विद्यार्थी को अपना हुजरा दिये हुए हैं। यह उनसे पाठ लेता है।

—तकसीर—कहते एक विद्यार्थी मुदर्रिस के सामने खड़ा हो गया। उसकी पगड़ी का छोर सम्मानार्थ गर्दन में लिपटा हुआ था।

—क्या कहता है ?—मुदर्रिस ने पूछा।

—यह विद्यार्थी स्वयं जदीद (नवीनतावादी) सा मालूम होता है। मैंने कई बार उसके हाथ में "गजेत" (समाचारपत्र) देखा है।

—ह: हा, बात यहाँ तक पहुँच गयी—मुदर्रिस ने कहा।

—स्वयं अपरिचित व्यक्ति भी एक प्रसिद्ध जदीद है। इसका नाम शाकिर गुलाम है।—कहकर दूसरे विद्यार्थी ने मुदर्रिस के क्रोध को पूरी तरह भड़का दिया और यह भी कहा—एक दिन यह आदमी भी उस अस्थायी कमरेवाले विद्यार्थी के साथ बात करता जा रहा था। मैंने इसे कहते सुना "यदि जमीन नगदी हो जाये तो आदमी कनकुत्ती और बटायी के जंजाल से मुक्त हो जायें।"

—पकड़ो इस काफ़िर को खर-मुर्द करो—कहते मुदर्रिस अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। मुल्ला और विद्यार्थी खड़े हो मुट्ठियों को बांध हाथों को तान उस अपरिचित व्यक्ति के ऊपर आक्रमण करने के लिये दौड़े, लेकिन अपना नाम और "जदीद" की बात सुनते ही वह वहाँ से रफूचक्कर हो गया था। प्रथम शिकार के हाथ से निकल जाने पर मुदर्रिस ने अपने ताजियों (शिकारी कुत्तों) को द्वितीय शिकार अस्थायी-वास वाले विद्यार्थी की कोठरी की तरफ भेजा। आंगन में एकत्रित मुल्ला और मुल्ला-बच्चे सियारों के झुण्ड की तरह "हुँवाँ हुँवाँ" करते मदरसे के भीतर की ओर दौड़े। सभा बिखर गयी।

तृतीय खंड

अमीरशाही का नाश

१९१७—२० ई०

१

"जदीद" कौन ?

सन् १९१७ के अप्रैल का अंत था और बसन्त का आरम्भ, किन्तु गर्मी जून जैसी थी। सारे जाड़े में वर्फ नहीं पड़ी, बसन्त बिना वर्षा के ही आया। इससे जौ गेहूँ की बसन्ती खेती नहीं हुई, बल्कि वृक्षों के पत्ते भी मुरझाये दिखाई पड़ते थे। जर्दालू, आलवालू, सेब, और शिफतालू के फूलों से निकली कैरियां भी मुरझाने लगीं। हवा रुकी हुई थी तो भी तूफानी मौसिम की तरह आकाश में धूल फैली हुई थी। किज़िल-चूल के किनारे अवस्थित म० गांव भी रेगिस्तान की तरफ से आती पीली धूल से ढँका मालूम होता था।

किन्तु इसी गांव में अवस्थित उरमान पहलवान के चारबाग का दृश्य दूसरा ही था। बिना वर्षा के बसन्त का इस चारबाग पर कोई प्रभाव न था; क्योंकि रूद शाफिर काम को बांध तथा दूसरी छोटी नहरों को रोक कर हर तीसरे दिन एक बार पानी दे दिया जाता था। इस चारबाग में मेवादार वृक्ष कम भले ही हों, किन्तु थे सब फले हुए। वह अपनी जड़ों और रेशों से लगातार पानी खींचते धूल का मुकाबिला कर सकते थे। सिंचाई और ऊपर के छिड़काव के कारण बाग की सब्जी और तरकारी सद्यः वर्षा-स्नाता-सी हरी और प्रफुल्लित मालूम होती थी।

जोड़े मेहमानखानों में से जिसके दरवाजे बाग की तरफ खुलते थे, उसमें कालीन गेलम् और अतलस तथा शाही के गद्दे बिछे हुए थे। मुख्य स्थान पर कुछ रूई भरे गद्दे तीन बड़ी मसनदों के साथ रखे हुए थे। उरमान पहलवान उस राजसी गद्दे पर लेटा हुआ था और एक सोलहसाला लड़का उसके पैरों को दबा रहा था। बाहर से खांसने की आवाज सुनकर उरमान पहलवान ने लड़के से कहा—देख देहली में कौन है ?

लड़के ने बिचले दरवाजे को खोल और बंद कर खांसने वाले आदमी से एक दो बात की, फिर पहलवान के पास लौट कर बोला—जवार के मुल्ला लोग और बड़े आदमी आपसे मिलने आये हैं।

उरमान पहलवान बेमन से उठ बैठा और एक हरे कुर्त्ते की बटनों को बंद कर बोला—जा उन्हें आने के लिये कह।

लड़के ने देहली के द्वार को खोल एक ओर खड़ा होकर कहा—पधारिये।

खांसने वाले आदमी ने बाहर की ओर मुंह करके कहा—आइये। बाहरी चबूतरे पर खड़े सात-आठ आदमी देहली में आये। उन्होंने अपने जूतों को वहां उतार दिया। फिर एक के पीछे एक पांती से मेहमानखाने में प्रविष्ट हुए उरमान पहलवान ने खड़ा हो एक एक से पार्श्वालिंगन कर उन्हें बैठने के लिये कहा।

मुल्लों ने अधिक तकल्लुफ नहीं किया और उनमें से हरएक अपने दर्जे के अनुसार ऊपर या नीचे पहलवान की पास वाली जगह में बैठ गया, लेकिन अकसक्काल और दूसरे एक दूसरे से "आप आगे, आप आगे" कहते ऊपर बैठने के लिये जोर देते रहे और फिर हरएक ने कोने में जा घुटने टेक बड़े गौरव के साथ स्थान ग्रहण किया। उरमान पहलवान "आप आगे आप आगे" की प्रतीक्षा किये बिना अपनी जगह पर बैठ गया। सारे मेहमानों के बैठ जाने पर मुल्लों की ओर निगाह करके पहलवान ने कहा—क्षमानिधानो! जनाब आली के लिये दुआ करें।

सब से प्रमुख स्थान पर बैठे श्वेत-केश मुल्ला ने बगल में बैठे मुल्लों की ओर निगाह की। उन्होंने सिर नीचा कर दोनों हाथों को सीने के ऊपर रखा। श्वेत-केश मुल्ला ने दोनों हाथ ऊपर उठाये। दूसरों ने भी वैसा किया फिर बूढ़े मुल्ला ने ऊँची आवाज में दुआ शुरू की।

—हे अल्ला, जनाब आली (अमीर बुखारा) विश्व-विजयी होवें, उनका खड्ग तिक्ष्ण हो, उनकी यात्रा निर्भय हो, हजरत शाहमर्दां और बहाउद्दीन बलागर्दां उनकी कमर बांधें, श्री चरणों के साथ बुरी भावना रखने वाले शत्रु पराजित हों कहते उसने मुंह पर हाथ फेरा; दूसरों ने भी "आमीन" कहकर अपने हाथों को मुँह पर फेरा।

दुआ और फातिहा-पाठ की विधि पूरा होने के बाद पहलवान ने पूछा—आप सब कैसे हैं? तूमान में क्या हो रहा है?

—भगवान की कृपा, जनाब आली की सरकार के प्रताप और आप जैसे बेगों के पराक्रम से सब सलामती है—कहकर जवाब देते महामुल्ला ने यह भी कहा—

आप ग़ज़ा (धर्मयुद्ध) से लौटे हैं। इसीलिये आपके दर्शनों के लिये तकलीफ़ दी। क्षमा कीजियेगा।

—स्वागत है, आपका आना सिर आँखों पर—जवाब देकर पहलवान ने देहली की ओर निगाह करके कहा—बच्चो, चाय और दस्तरखान ले आओ।

—बुखारा की क्या खबर है? जदीद खतम हुए और देश को शान्ति मिली ना?

—इस समय कुछ हद तक शान्ति है। कुछ जदीदों को ७५ बेंत लगे। उनमें से एक मर गया, दूसरे भी कगान के अस्पताल में मृतप्राय पड़े हैं, जो जदीद पकड़े नहीं गये, वे शहर से भग गये, और अपने बीबी-बच्चों के साथ कगान में काफिर रूसियों की तरह रह रहे हैं। इस समय देश और जाति से उनका सम्बन्ध टूट चुका है। दस्तरखान आ जाने पर उसे फैलाने में नौकरों को सहायता दे पहलवान ने फिर बात शुरू की—नसरुल्ला कूशबेगी ने जदीदों का पक्ष लिया था। वह अपने बीबी-बच्चों और संबन्धियों के साथ नगर से निर्वासित हो करमीना में नजरबंद हुआ है और उसकी जगह मिर्ज़ाउरगज इशबेगी (महामंत्री) बनाये गये। मुफ्ती हाजी अकराम ने जदीदी मक्तबों (पाठशालाओं) के पक्ष में फतवा दिया था। उसे बीबी-बच्चों के साथ निर्वासित करके गुज़ार में रख दिया गया है। बुखारा शरीफ का नया रईस अब्दू समत खाँ जदीद होने के कारण पदच्युत कर दिया गया और अभी घर बैठा है। श्री दरबार के नमकहराम मिर्ज़ा शहबाई और हाजी दादख्वाह भी कबादियान में निर्वासित कर दिये गये।

उरमान पहलवान के मुहरमों (नौकर छोकरों) ने दस्तरखान फैलाकर वहाँ खीर की तश्तरियां और रोटियां रखीं फिर देहली की तरफ से प्यालियों में भरी चाय डालकर लाने लगे। मेहमान और मेजबान ने रोटी खाना शुरू किया।

—हल्ला हो रहा है कि ओरेनबुर्ग तक सारा तुर्किस्तान देश जनाब आली के हाथ में आ गया, क्या यह सच है—महामुल्ला ने पूछा।

—अभी इस खबर की सच्चाई का पता नहीं, लेकिन अन्त में शायद ऐसा ही होगा—उरमान पहलवान ने कहा—रूस के लोग अपने बादशाह को निकालकर बिलकुल बेसिर के हो गये। जिन लोगों के हाथ में सरकार की बागडोर है, उनकी बात कोई नहीं मानता। नयी सरकार भी रूस के अन्दर शान्ति स्थापित नहीं कर सकती, फिर तुर्किस्तान की तो बात ही क्या। ऐसी अवस्था में तुर्किस्तान को जनाब आली के हाथ में सौंपने के सिवा चारा नहीं है।

—निकोला को गद्दी से उतारने के बाद रूसियों ने उसकी जगह किसे बादशाह बनाया?—एक मेहमान ने पूछा।

—अब रूस में बादशाह नहीं है। सरकार के काम को दूमाखाना (पार्लियामेंट) के आदमी मेलीकोफ और करेन्स्की चला रहे हैं।

—दूमाखाना क्या है?—अक़सक्क़ाल ने पूछा। दूमाखाना—पहलवान ने कहा—एक खाना (घर) है, जिसमें लोगों के अक़सक्क़ाल (नम्बरदार) और दूसरे बड़े-बूढ़े जमा होकर बैठते हैं।

रूस के हर शहर में यहाँ तक कि ताशकन्द और समरकन्द में भी शहर के दूमाखाने हैं। ऐसा ही एक दूमाखाना पीतरबुर्ग में है, जहाँ सारे देश के अक़सक्क़ाल जमा होते हैं। बादशाह को निकाल देने के बाद देश के दूमाखाने ने अपने भीतर से मंत्री चुने और उन्हें शासन का काम सौंप दिया। अब यही मंत्री सरकार बन बैठे हैं।

महामुल्ला ने ठहाके लगाकर हँसने के बाद कहा—जैसे भेड़ों के झुंड को चरवाहा और कुत्ते के बिना नहीं सँभाला जा सकता, उसी तरह साधारण लोगों और भुक्खड़ों को भी बिना बादशाह और हाकिमों के ठीक नहीं रखा जा सकता। कहा जाता था कि रूस के आदमी समझदार होते हैं। उनकी समझ कहाँ चरने चली गयी, जो कि बिना बादशाह के राज करना चाहते हैं।

—बादशाह को रूस के समझदारों ने नहीं हटाया—उरमान पहलवान ने कहा—इस दीर्घकालव्यापी महायुद्ध के कारण देश की अवस्था बिगड़ गयी, भूख और अकाल पड़ गया, नंगे-भूखे आदमियों को दाना मिलना मुश्किल हो गया, उन्होंने लड़ाई में अपनी बड़ी हानि देखी; फिर कारखानों के मजूर, युद्ध में मारे जाते सैनिक और दूसरे भुक्खड़ बादशाह के विरुद्ध उठ खड़े हुए। बादशाह निकोला और उसके मंत्रियों से दूमाखाना तंग आ गया था, उसने भी भुक्खड़ों का साथ दिया, बादशाह को गद्दी छोड़नी पड़ी और देश बिलकुल बेसिर का हो गया। इम्पेरातर (शाहंशाह रूस) के कोन्सल (राजदूत) ने जनाब आली से बात की जिससे जान पड़ता है कि धीरे-धीरे यह बेसिरी खतम कर दी जायेगी, निकोला न हुआ तो उसके लड़के या किसी भाई-बंद को बादशाह बनाकर देश को शान्ति मिलेगी, अन्यथा बादशाह के बिना क्या कोई राज कायम रह सकता है?

—ठीक—एक मुल्ला ने कहा—रूसी आपस में झगड़ने लगे। जो भी हो,

तुर्किस्तान (ताशकन्दवाला सूबा) जनाब आली के हाथ में आये, श्रीजी का राज्य बढ़े, विलायत (जिले) और तूमान (परगने) संख्या में अधिक हों। फिर हम जैसे अधकचरे मुल्लों को भी काजी और रईस का दर्जा मिलेगा, अभी तो छोटी मस्जिद का इमाम बनना भी मुश्किल है।

उस्मान पहलवान ने उस मुल्ला की बात को नापसन्द कर सिर हिलाते हुए कहा—दमुल्ला, अभी इसी छोटी मस्जिद पर संतोष करो, खुदा इसे भी तुम्हारे लिये कम नहीं समझता।

—क्यों-क्यों—चकित स्वर में मुल्ला ने कहा—इस वक्त जनाब आली के राज में तूमानों और अमलाक से लेकर कूट्गानों तक चालीस जगहें काजी और रईसों की हैं। जब तुर्किस्तान के सैकड़ों तूमान और शहर भी आ जायेंगे तो काजी और रईस के दर्जे यदि हमें न मिलेंगे तो किसको मिलेंगे? इन सारे तूमानों और शहरों के लिये कहाँ से मुल्ला लाकर काजी और रईस बनाये जायँगे?

उस्मान पहलवान ने कहा—बात यह नहीं है, सच तो यह है कि यदि रूसिया में शान्ति स्थापित न हुई, तो हमारे यहाँ भी शान्ति देर तक कायम न रहेगी—उस्मान पहलवान ने मेहमानों की ओर एक-एक करके देखकर फिर कहा—मैंने पुराने कोरान में एक विचित्र घटना देखी। मिर्जा नसरुल्ला ७५ बेंत खाने के बाद कागान के अस्पताल में जाकर मर गया। उसी के दफनाने के वक्त मैंने यह घटना देखी। उसके शव के साथ बुखारा के जदीद (नवीनतावादी), कागान के तेल-कपास कारखानों के मजूर, रेलवे मजूर, रूसी सैनिक और आसपास के गाँवों के भुक्खड़ किसान भारी संख्या में चल रहे थे। दफनाते वक्त उन्होंने कई तरह की बातें कहीं। कुछ जदीदों ने "हम तेरे खून का बदला लेंगे" जैसी गोलमोल बातें कीं; लेकिन कपास के कारखाने के एक मजूर ने सामने खुलकर कहा। "हम तेरे खून का बदला अमीर से लेंगे, हमें अमीर की जरूरत नहीं।"

पहलवान की इस बात से मेहमानों का दिल टूट गया। उन्हें उत्साहित करने के लिये उसने फिर कहा—इस समय यह बात बिलकुल थोथी-सी है, सिर्फ यह गाल बजाना है। दस या हजार नंगे भूखों के हाथों क्या बन सकता है? लेकिन "जब तक बुरा न कहें अच्छा नहीं आता" की कहावत प्रसिद्ध है, और यदि रूसिया देश की बेसिरो और अशान्ति देर तक चली तो हमारे यहाँ भी शान्ति का कायम रहना कठिन होगा।

खाना खतम हुआ, फातिहा पढ़ा गया, दस्तरखान समेट लिया गया। नौकरों ने चायनिकों में गरम चाय लाकर जगह-जगह मेहमानों के सामने रखा। पहलवान ने भी एक चायनिक और प्याला सामने रख "क्षमा करें दमुल्ला लोग" कहते बालिश पर ओटंगकर पैरों को फैला फिर कहा—मैं तीन सप्ताह से ठीक से पैर भी न फैला सका, सारा समय अधिकतर घोड़े पर गुजरा। तूमानों से आये हम ५-६ हजार सवारों ने इसी तरह सप्ताह बिता दिया। हमें हमेशा लड़ने के लिये तैयार रहना पड़ता था।

—कोई हर्ज नहीं, आराम फरमाइये—महामुल्ला ने कहा—किन्तु यह तो बतलाइये, ये जदीद कौन हैं और क्या करते हैं? आखिर ये करना क्या चाहते हैं?

पहलवान ने कहा—जदीद "गजेत" (समाचारपत्र) पढ़नेवाले वे दीन हो गये मुसलमान हैं। बुखारा के बहुत-से ईरानी और यहूदी भी उनके साथ हो गये हैं। वे पहले कहते थे "नये सिद्धान्त के अनुसार पाठशालाएँ खोली जायँ और मदरसों की पाठ्य-प्रणाली में सुधार किया जाय।" लेकिन निकोला के गद्दी से उतार देने के बाद "देश में सुधार किया जाय, जमीन की बटाई और दानाबंदी हटाकर नगदी लगान की जाय। जनाब आली बादशाह रहें, लेकिन हमारे प्रतिनिधियों की इच्छा के अनुसार इन सुधारों के करने में हमारा साथ दें" जैसी बेसिर पैर की बातें करने लगे हैं।

—इलाही तौबा (शान्त पापम्)—बात को बीच में काटते महामुल्ला ने कहा—क्या इसी को देश का सुधार कहते हैं? यह तो शरीयत (धर्म) और मुल्क को बर्बाद करना है।

—बर्बाद आदमियों का सुधार भी बर्बादी के लिये ही होता है—दूसरे मुल्ला ने कहा।

—आ रे—पहलवान ने कहा—जदीद इम्पेरातर (जार) के निकाले जाने पर देश और धर्म को बर्बाद करने की माँगें पहले माँगते थे, तो भी जनाब आली के बारे में अन्ट-सन्ट नहीं बोलते थे। जदीदों के भागकर कागान जाने के बाद काम ने दूसरा रंग लिया है। अब उनके साथ बुखारा के कितने ही ठलुए और कागान के आसपास के भुक्खड़ किसान हो गये हैं, जिनमें कितने ही भूतपूर्व दास भी हैं। कपास के कारखाने के नोगाई तथा चिरवासी मजूर, रेलवे मजूर और रूसी सैनिक उन्हें फुसलाने-बहकाने में लगे हैं। अब उनमें से कुछ नये आदमी उठ खड़े हुए हैं, जो दूसरी तरह की बातें करने लगे हैं।

—बातें करा करें—महामुल्ला ने कहा—जब वह देश से बाहर हो गये तो उनकी बात से जनाब आली को क्या नुकसान ?

उस्मान पहलवान ने खीझकर कहा—तुम बहुत संकुचित दृष्टि से काम ले रहे हो। अभी यह काम का आरंभ है और आरंभ में ही खुलकर बातें की जाने लगी हैं। यदि काम इसी तरह चलता रहा, तो आश्चर्य नहीं कि एक, दस, सौ मुँहफट बोलनेवालों की संख्या हजारों तक पहुँच जाय और देश के सारे गरीब उनके साथ हो जायें।

—कौन इन बेदीनों के साथ होगा—महामुल्ला ने कहा।

—जैसे अपने ही तूमान को ले लें—पहलवान ने कहा—यहाँ के भुक्खड़ किसान बे-खेत-पानी के गुलाम जब कहीं कोई बात न थी, तब भी हर बहाने से हाकिमों से लड़ पड़ते। कर और लगान के बारे में झंझट करते थे। यदि काफी आदमी आकर उन्हें बहकायें, तो क्या वे चुपचाप बैठे रहेंगे?

कदापि नहीं। भगवान करें कि रूसिया में और खुराफात न बढ़े और कोई बादशाह आकर सिंहासन संभाले, तभी हम चैन से रह सकेंगे।

देहली के दरवाजे से नौकर लड़के ने आकर पहलवान की बात काटते हुए कहा—काजीखाने का कर्मचारी आया है, कहता है पहलवान से काम है।

—अंदर आने के लिये कह—पहलवान ने कहा।

कमर में जरी का कमरबंद बाँधे एक आदमी ने भीतर आकर सलाम किया, फिर बगल से एक लिफाफा निकालकर पहलवान के हाथ में दे स्वयं एक ओर बैठ गया। पहलवान ने लिफाफे की मुहर पर नजर दौड़ा महामुल्ला की ओर बढ़ाते हुए पूछा—क्या यह शरीयत पनाह (धर्मरक्षक, काजी) की मुहर है?

महामुल्ला ने आँखों को संकुचित कर लिफाफे की मुहर को देखकर कहा—स्याही अच्छी तरह नहीं पकड़ी है, किन्तु इसका लांछन हमारे काजी के मुहर जैसा है।

पहलवान ने खत को वापस लेकर जेब से चाकू निकाल लिफाफे को खोला और लिफाफे को तोड़-मड़ोरकर एक ओर फेंक पत्र को एक नजर से देख महामुल्ला के हाथ में देते हुए कहा—पढ़िये, देखिये क्या लिखा है?

महामुल्ला ने फिर आँखों को संकुचित कर ऊपर से नीचे नजर दौड़ा पत्र को पास में बैठे दूसरे मुल्ला के हाथ में देते हुए कहा—आप पढ़ दीजिये। मेरा चश्मा घर पर छूट गया है।

—मेरा भी चश्मा घर घर रह गया—कहते दूसरे मुल्ला ने पत्र को देखे बिना तीसरे मुल्ला की ओर बढ़ा दिया।

तीसरे मुल्ला ने पत्र को हाथ में ले दो-तीन बार-देख रुक उसे रुककर पढ़ना शुरू किया :—

"सद्वृत और श्रद्धालु उरमान पहलवान को इस चिट्ठी के पाते ही तुरन्त शाफिरकाम तूमान के दारुल-कज़ा (न्यायालय) में खोजा अरिफ माहतावीं में आना चाहिये। बाकी अस्सलाम् व-अलैकुम।"

पहलवान ने पत्र को लेकर बगल की जेब में डाल लिया और पढ़नेवाले मुल्ला की ओर निगाह करके कहा—खैरियत हुई दमुल्ला, जो तुम्हारा चश्मा भी घर पर नहीं छूट गया, नहीं तो हमें मजबूर होकर पत्र को साथ ले स्वयं जनाब शरीयत पनाह (काजी) से पढ़वाना पड़ता।

—शरीयतपनाह के चश्मे के घर रह जाने की बात को भी मैं जानता हूँ। यदि पत्र को लौटाकर काजीखाना ले जाते, तो इसे मिर्जा (कायथ) ही पढ़ता—कहते महामुल्ला हँस पड़ा और इस तरह घर पर चश्मा छोड़ आनेवालों में उसने अपने को सबसे महान् सिद्ध करना चाहा।

पहलवान ने कर्मचारी से तुरन्त चलने की बात कही। मुल्ला तथा बड़े बूढ़े लोग "खैर खुश, खुदा मार्ग उज्ज्वल करें" कह उठकर बाहर चले गये। पहलवान भी कपड़ा पहनने लगा।

२

श्रीमुख-पत्र

खोजा अरिफ में काजीखाना के मेहमानखाने के भीतर तूमान के बड़े-बूढ़े महा अक़सक्काल और अमीन लोग एकत्रित हुए थे। मेहमानखाने के चबूतरे के किनारे सीढ़ी के ऊपर एक कर्मचारी खड़ा था, जो काजी की आज्ञा बिना किसी को चबूतरे पर भी आने नहीं देता था। दक्षिण तरफ हवेली की ओर खुलनेवाले दरवाजे खुले थे, किन्तु मेहमानखाने के उत्तरवाले कूचे में खुलनेवाले द्वार बन्द

से, साथ ही इन द्वारों पर इतने मोटे परदे टँगे थे कि भीतर की आवाज बाहर बिलकुल नहीं जा सकती थी।

काजी बोल रहा था—हाँ तो, मुझे बुर्हानुद्दीन मखदूम और मुल्लों के वकीलों में से एक जनाब दमुल्ला कुतुबुद्दीन और दमुल्ला खाल मुराद की ओर से एक पत्र मिला है। इस पत्रसे मालूम होता है कि अब बुखारा में जदीद नहीं रह गये। जो रह भी गये हैं, वे कलमा पढ़कर फिर से मुसलमान हो गये हैं।

—अच्छा, तो हमें क्या करना चाहिये—प्रमुख स्थान में बैठे हायत अमीन ने कहा!

—क्या करना चाहिये यह जनाब मिर्जा उरगंजी कूशबेगी (महामंत्री) के पत्र में स्पष्ट लिखा है—काजी ने कहा—इस पत्र के अनुसार तूमान् के महान आपलोगों को चाहिये कि यहाँ के घोड़ेवालों को जमा करें, हर गाँव के तरुण घोड़ेवाले को उसी गाँव के एक सरदार के हाथ मे सौंपें। सरदार उन्हें कूबकारी (बकरी नोच घुड़दौड़) और जिरिश (परस्पर धक्का देते घुड़दौड़) सिखाते उन्हें सैनिक शिक्षा दें; साथ ही भगे जदीदों और हर संदिग्ध आदमी को पकड़कर काजीखाना भेजें। और तूमान की हर छोटी-बड़ी घटना से खबरदार हो सदा हर काम के लिये तैयार रहें।

बाजार अमीन ने पूछा—काजीखाने में भेजे जदीदों और संदिग्ध आदमियों के साथ क्या किया जायगा?

—विज्ञात जदीदों और अज्ञात संदिग्ध व्यक्तियों को बुखारा में जनाब आली के पास भेज दिया जायगा—काजी ने कहा; किन्तु जिनका जदीद होना उतना स्पष्ट नहीं है और उनपर केवल आरोप भर है, उनके बारे में मुल्लों के वकील के खत में जैसा लिखा है, उसी के अनुसार काजीखाने में मुफ्ती (धर्मशास्त्रियों) के पास भेजकर तौबा कहा, दोबारा कलमा पढ़ा फिर से मुसलमान बनायें।

—इन पत्रों में गुलामों के बारे में भी कुछ है?—सबसे नीचे की ओर बैठे उरमान पहलवान ने पूछा।

—गुलामों के बारे में अलग से कुछ नहीं लिखा है—काजी ने कहा। लेकिन इन पत्रों से भली प्रकार मालूम होता है कि चाहे गुलाम हो या असिल जादा (सुजात), चाहे खोजा (सैयद) हो या करचा, चाहे ताजिक हो या उजबेक, संक्षेप में चाहे कोई भी हो, यदि उसका रवैया जनाब आली, हाकिमों या मुल्लों के

विरुद्ध देखा जाय या उसमें जदीदों के चिह्न दिखलाई पड़ें, तो उसी समय उन्हें गिरफ्तार करना चाहिये।

—लेकिन—पहलवान ने फिर कहा—हमारे तूमान के गुलामों का काम कुछ दूसरा-सा है। पुराने समय में हमारे तूमान के बाप किलाची सौदागर थे। उन्होंने बहुत-से गुलामों को खरीदा था और उनके पास गृहजात गुलाम भी बहुत थे। इनके संतान आजकल हमारे यहाँ बहुत अधिक हैं। देहनौ अब्दुल्ला जान के पास "गुलामान" नाम का एक अलग गाँव ही है जिसके सारे निवासी पुराने गुलामों के संतान हैं। स्वयं देहनौ में "चूजा" नाम की एक जमात है, यह भी उन्हीं गुलामों की औलाद है........।

—ठीक, हमारे तूमान में गुलाम ज्यादा हैं तो इससे क्या—हायत अमीन ने पहलवान की बात काटते हुए कहा—बात संक्षिप्त करके कहें, आप क्या कहना चाहते हैं ?

—मैं कहता हूँ कि इन गुलामों के लिये कोई अलग तदबीर करनी चाहिये—उरमान पहलवान ने कहा।

—शरीयतपनाह ने फरमाया कि चाहे गुलाम हों या असिलजादा—सभी बुरे आदमियों को गिरफ्तार करना चाहिये। क्या यह तदबीर काफी नहीं है ?—हायत अमीन बोला।

—अभी मैंने अपनी बात पूरी तौर से नहीं कह पायी, यदि शरीयतपनाह आज्ञा दें तो कहूँ—पहलवान ने कहा।

—कृपया कहिये—काजी ने कहा।

—जनाब आली और हाकिमों के विरोध के काम की प्रतीक्षा न कर गुलामों को गिरफ्तार करके उन्हें कड़ी सजा देनी चाहिये—उरमान पहलवान ने कहा ; क्योंकि उन्होंने मालगुजारी देने तथा दूसरे कामों में जनाब आली की आज्ञा न मानने का सबूत दिया है।

आज से पहिले देहनौब-अब्दुल्ला जान में मालगुजारी के बारे में जितने झगड़े हुए, उनके कारण यही बेखेत के गुलाम और भुक्खड़ थे। क्योंकि देहनौब के गुलाम हर ऐसे काम में "चुब्बस" मारकर आगे रहते हैं। इसीलिये उन्हें "चूजा" कहा जाता है।

—उनके बाप-दादा पहले गुलाम भले ही रहे हों—एक आदमी ने पहलवान

की बात काटते हुए कहा—अब कितनी ही पीढ़ियों के बाद उनमें और दूसरे आदमियों में कोई अन्तर नहीं, इसलिये उन्हें अलग करके देखना उचित नहीं।

उस्मान पहलवान ने चिल्लाकर कहा—कौन उनमें से दूसरों के साथ एक हो गया? कुछ समय देखकर अपने को मुसलमान कहते हैं, यदि उनके दिल के भीतर घुस के देखिये, तो उनका मजहब दूसरा ही है। वे हमारे मुल्लों को पसंद नहीं करते, न उनकी बातों पर कान देते हैं। उनके लिये हजारों मुल्लों की बात से शाकिर गुलाम के गमकते मुँह की एक बात बढ़कर है। श्री-दरबार के गुलाम जैसे आस्ताना कुल कूशबेगी ने हमारे जनाब आली और मुल्लों के लिये कौन-सा भला काम किया कि हम इन गुलामों से उसकी आशा रखें?

—अर्थात्—हायत अमीन ने टोककर कहा—आप चाहते हैं कि तूमान में जितने गुलाम हैं, सबको पकड़कर मार डालना चाहिये?

—मार डालने की जरूरत नहीं—पहलवान ने कहा—उन्हें सख्ती से पकड़ना, सजा देना और जेल में भेजना चाहिये (यदि वे खुले छोड़ दिये जायेंगे तो पीछे एक दिन वे सभी बागी हो हमारे शत्रुओं का साथ देंगे) कागान के जवार के गुलामों और ईरानियों को नहीं देखा? वे जदीदों के विद्रोह के समय मुल्ला शरीफी करबूनी के बहकावे में पड़ गये। जिस तरह मुल्ला शरीफी उन्हें भटकाकर बलवा कराने में सफल हुआ, उसी तरह शाकिर गुलाम जैसे भी इनके साथ कर सकते हैं।

—नहीं—हायत अमीन ने कहा—इस तरह एक ओर से सबके लिये "गुलामों" या "ईरानियों" की बात उड़ाना ठीक नहीं। गुलामों के भीतर ऐसे भी आदमी हैं जो हमसे और तुमसे भी अधिक जनाब आली के लिये प्राण न्योछावर कर रहे हैं।

वे कौन-से गुलाम हैं?—पहलवान ने चिल्लाकर कहा।

जैसे पोलादबाय जाफरेगी के लड़के—हैत अमीन ने कहा।

—क्या वह गुलाम है?—चकित स्वर में पहलवान ने कहा।

—हाँ। तुम जवान हो, संभव है तुम्हें मालूम नहीं; किन्तु मैं पोलादबाय के बाप-दादों को जानता हूँ। पोलादबाय का पर-दादा गुलाम बनकर बिका था। किन्तु स्वतंत्रता के बाद पोलादबाय को खुदा ने दौलत दी, ढेर की ढेर जमीन, बखार-बखार गल्ला, सराय-सराय माल और झुंड-झुंड भेड़ें उसके पास

हुई । वह दौलतमन्द हो गया, इसलिये उसकी गुलामी की बात भी भुला दी गयी और नाम भी पोलादबाय अरब प्रसिद्ध हो गया। अभी हाल में पोलादबाय के लड़के अब्दुल्लाबाय बच्चा ने जदीदों के संघर्ष में श्री-चरणों के लिये आत्मत्याग का परिचय दिया और उसे तूकसाबों का दर्जा प्रदान किया गया है।

—सो मैं जानता हूँ—पहलवान ने कुछ सुस्त पड़कर कहा।

—हाँ, किन्तु शाकिर गुलाम जैसे आदमियों को सकुशल छोड़ देना ठीक नहीं है—बाजर अमीन ने कहा।

—मैं यह नहीं कहता कि शाकिर गुलाम और मुल्ला शरीक जैसे राजद्रोहियों को सलामत छोड़ दिया जाय—हैत अमीन ने कहा—कोई उपाय करके जितना जल्दी हो सके, उन्हें पकड़कर सजा देनी चाहिये। लेकिन कोई भेद न करके सभी गुलामों, सभी आदमियों को एक साथ पकड़ दबाना ठीक नहीं है। वैसा करने पर हम बहुसंख्यक आदमियों को अपना शत्रु बना लेंगे जैसा कि अभी शरीयत-पनाह ने फरमाया, उनके रवैये पर निगाह रखनी चाहिये, और यदि बुरा देखा जाय तो तुरन्त पकड़कर सजा देनी चाहिये।

अमीन की सलाह ठीक है—नार करावुलबेगी ने कहा—यदि किसी आदमी को हर वक्त "तू गन्दा आदमी है" कहते रहो तो वह अवश्य कुमार्ग में गिरकर रहेगा। देखा नहीं 'वर्दाजा" तूमान के मीट शब (कोतवाल) मिर्जा उसमान को चारों ओर से "तू जदीद है" कहा जाने लगा। अन्त में उसकी जान पर आयी और वह मीटशबी को छोड़कर जदीदों के साथ हो गया। नहीं तो भला ऐसा हो सकता था कि एक आदमी जो मीट शब रहा हो, जिसकी हड्डियाँ जनाब आली की नून-रोटियों से बनी हों, वह जनाब आली के विरुद्ध तलवार उठाये?

—तुम्हारे पिता पर भगवान की कृपा—कह हैत अमीन काजी की ओर मुँह करके बोला—मैं मुल्लों के बहुत-से कामों को पसन्द नहीं करता। बुखारा में मुल्ला लोग गली-कूचों में जदीदों को ढूँढ़ते फिरते थे और जिस किसी आदमी के बारे में जाने-बे-जाने "यह जदीद है" का इशारा पा जाते, उसे उसी वक्त पकड़कर मस्जिद या मुल्लों के वकील के पास घसीट ले जाते, उसे बेइज्जत और बदनाम करते; फिर कलमाँ पढ़ाकर फिर से मुसलमान बनवाते। यदि आदमी सचमुच काफिर हुआ होगा, तो कलमाँ पढ़कर उसी वक्त मुसलमान नहीं बन सकता। साथ ही यह बात भी पक्की है कि यदि अवसर हाथ आया तो यही अपमानित हो फिर से मुसलमान

बना आदमी पहला होगा, जो जाकर मुल्लों के वकील दमुल्ला कुतुबुद्दीन का सिर काटेगा।

—है, है, धीरे से—कहते काजी ने अमीन की बात को काटकर और धीमे स्वर में कहा—"दीवार में मूष है और मूष के कान हैं।" यदि तुम्हारी यह बात एक मुँह से दूसरे मुँह तक होती दमुल्ला कुतुबुद्दीन के कान तक पहुँच जाय तो केवल तुम्हें नहीं, मुझे भी दण्ड भोगना पड़ेगा।

—श्री-चरणों से चपर (चपरासी) आया है—काजी के मुहरंभ (छोकरे नौकर) ने देहली के द्वार से कहा।

काजी हैत अमीन की बात से आतंकित हो गया था, "चपर" का शब्द सुनते ही उसका रंग उड़ गया, तो भी उसने आत्मसंयम करके कठिनाई से कहा— आने के लिये कहा।

हैत अमीन ने काजी की अवस्था देखकर चुटकी लेते कहा—दमुल्ला कुतुबुद्दीन ने अपनी करामात (दिव्य शक्ति) से हमारी बात को सुनकर कहीं तुम्हें पकड़ने के लिये चपर को तो नहीं भेजा हो।

काजी को छोड़ सभी इस बात को सुनकर हँस पड़े। चपरासी भीतर आया। उसने काजी को सलाम कर सामने घुटने टेक रुपहले कमरबंद में बंधे खीसे में से एक पत्र निकालकर काजी को दिया; फिर जाकर एक ओर बैठ गया। काजी ने पत्र को हाथ में ले उसे देखा, फिर "श्रीमुख पत्र (मुबारकनामा आली) है" कहते अपनी जगह से उठा और पत्र को अपनी पगड़ी पर रख ४० मील दूर अवस्थित बुखारा की ओर निगाह करके तीन बार कोरनिश की और फिर वह खत को हाथ में ले जल्दी-जल्दी मेहमानखाने से निकलकर हवेली के अन्दर चला गया।

काजी की इस चेष्टा से सब लोगों को आश्चर्य हुआ; किन्तु उरमान पहलवान को महामुल्ला की चश्मेवाली कहानी भूली नहीं थी, इसलिये उसने चकित हो अपने पास बैठे नामुराद पहलवान के कान में कहा—जनाब शरीयत पनाह का चश्मा हवेली के अन्दर तो नहीं छूट गया है!

काजी लौटकर अपनी जगह बैठा और हाथ में मौजूद श्रीमुख पत्र को ऊँचे स्वर से पढ़ने लगा :—

"शरीयत-पनाह काजो तूमान शाफिर काम! श्री-चरणों की कृपा से लाभान्वित हो मालूम करो कि श्री-चरणों की उपस्थिति में **चारबाग सितारामह** में

विशेष कूचकारी (घोड़दौड़) आरंभ हो रही है। धनी घोड़ेवालों और सुकर्मी लक्ष्य-बेधियों को सूचित करो कि वह श्री-स्थान में आ श्री-घोड़दौड़ में सम्मिलित हो श्री-चरणों को दुआ दे श्री-कृपा के पात्र होवें...बाकी अस्सलाम् अलैकुम्।"

—गर्मी के ऐसे गर्म दिनों में कूचकारी कैसे होगी?

—उस्मान पहलवान ने कहा—जो भी घोड़ा इस गर्मी में कूचकारी में सम्मिलित होगा उसका कलेजा फट जायेगा और वह बिलकुल बेकार हो जायेगा।

हमारी सभा किस बात के लिये हो रही थी?—काजी ने कहा—क्या वह हर समय, हर बात के लिये तैयार रहने के लिये नहीं थी? इसलिये श्री-चरणों के इस श्री-आज्ञापत्र को कूचकारी के तमाशे की सूचना न समझ युद्ध का आह्वानपत्र मानकर पूरी तैयारी से जाना चाहिये।

कूचकारी करनेवालों को जमा कर उन्हें बुखारा ले जाने के लिये सभा ने निश्चय किया और प्रत्येक आदमी घोड़ा दौड़ाते अपने-अपने गाँव को चला गया।

३

रात का सवार

गरमी की रात का कोमल समीर शरीर में किन्हीं प्रिय कोमल हाथों के स्पर्श की तरह लग रहा था। रूद-जिलवाँ और शाफिर काम के बीच के किसान ग्रीष्म के दाहक सन्तप्त दिन में सुबह से शाम तक काम करने के बाद थके-माँदे इस सरस हवा में, मैदान में पड़े आराम ले रहे थे। दशमी का चन्द्रमा अभी-अभी उगा था और इस असीम बालुका-राशि पर अपना प्रकाश फैला रहा था। यह बालुका-भूमि, जो कि दिन में सूर्य के आतप से तपकर चिनगारियों के ढेर की तरह लाल दिखलाई पड़ती थी, अब वह रात को चन्द्र-किरणों के नीचे मलाई बँधे दूध की तरह पांडु-वर्णा हो बहुत मनोहर और आकर्षक मालूम होती थी। कान्तार में नीरवता का अखंड राज्य था, जिसको तोड़ने का प्रयास बाग के वृक्षों में छिपे उलूकों की "बौ-बौ, पित्-पित् पिलक, पित्-पिलक, पित्-पिलक" की आवाज तोड़ रही थी और यह आवाज सैकड़ों बागों से इस तरह आ रही थी, जिससे मालूम होता था कि संगीत की होड़ लगी हुई है।

रात आधी बीत चुकी थी। कराखानी गाँव की तरफ से १५-२० कुत्तों की आवाज आ रही थी। यह आवाज गाँव के एक कोने से शुरू हो धीरे-धीरे दूसरे छोर से आने लगी। कुत्तों का झुंड गाँव से निकलकर खेतों में आ गया। उनके बीच में एक सवार था, जो अपने पैरों को घोड़े के पेट से चिपकाये कोड़ा घुमाते अपनी रक्षा करना चाहता था। कुत्तों ने सवार को चारों ओर से घेर रखा था। कुछ साहसी कुत्तों ने रिकाब के नजदीक पहुँचकर सवार के पैरों को काट खाने की कोशिश की; किन्तु सिर पर घोड़े की सख्त चोट खा वे पीछे भागने के लिये बाध्य हुए। सवार गाँव से एक-दो तनाब दूर आ गया था। कुत्तों ने अंतिम साहस से आक्रमण किया। घोड़ा घबराकर पूंछ को ऊपर उठा बेतहाशा दौड़ने लगा। सवार के नीचे दबे जामा के छोर दोनों ओर लटक गये। कुत्तों के आक्रमण और घोड़े के बेतहाशा दौड़ने से सवार के लिये भारी खतरा हो गया था। यदि कहीं वह घोड़े से गिरता तो कुत्ते तुक्का बोटी किये बिना न रहते। एक कुत्ते ने कूदकर चिपटना चाहा, किन्तु घोड़े की लात खाकर दूर गिरा। दूसरे कुत्ते ने जामे के छोर को पकड़ा, किन्तु कोड़े की कड़ी चोट खा उसे भी हटना पड़ा और सवार के जामा के एक छोर नुच जाने के सिवा और कोई हानि न हुई। कुत्ते लौट गये और घर-घर में बिखरकर छतों के ऊपर घास-भुस के ढेरों पर सिकुड़-कर सो गये।

सवार खतरे से बाहर हो चुका था।

उसने घोड़े को रोककर जामा के छोर को समेट नीचे दबा लिया और खुली हुई पगड़ी के हवा में उड़ते छोर को फिर से सिर में बाँधकर अपना रास्ता लिया। सवार सोच रहा था—"कुत्ते ठीक अमीर के आदमियों की तरह हैं। तुम उसके पास न भी जाओ, तो भी वे तुमसे चिपकर हैरान करते हैं। उनके हाथ से छूटना संभव नहीं है। तुम उनसे डरकर जितना ही भागो, वह उतने ही दिलेर होकर तुमपर आक्रमण करते हैं।"

सवार इसी प्रकार अपने विचारों में मग्न घोड़ा बढ़ाये जा रहा था। एकाएक उसने अपने को एक बस्ती के अन्दर दाखिल होते देखा। तुरन्त घोड़े के मुँह को मैदान की ओर घुमा-फिरा उसी कान्तार और वही नीरवता में पहुँचा सवार फिर विचारों में मग्न हो गया—"हाँ, अमीर के आदमी इन कुत्तों से भी अन्तर नहीं रखते। यदि अन्तर रखते हैं, तो केवल यही कि ये चार पैरवाले हैं और वे

दो पैरवाले, यदि उनसे डरकर भागें तो हार खायें। उनकी दवा वही है जो घोड़े ने कुत्ते के साथ की अर्थात् खूब कड़ी चोट। लेकिन ऐसी चोट कौन लगा सकता है?"

सवार को अपने सवाल का जवाब नहीं मिला। वह सोचने लग गया। फिर ख्याल में आया "यदि कहीं किसान उठ खड़े होते?" किन्तु सवार को विश्वास नहीं हुआ "ये धार्मिक मिथ्या विश्वासों के भारी शिकार हैं। तुम चाहे कितना ही इनके लाभ की बात करो, किन्तु वे मुल्ला के एक इशारे पर तुम्हें बोटी-बोटी करके फेंक देंगे। मूर्ख, बेसमझ!" इस तर्क-वितर्क ने निराशा को और दृढ़ कर दिया। फिर वह सोचने लगा "जो भी हो, यहाँ के गुलामों के भीतर एक तजुर्बा करके देखना चाहिये। ये लोग मुल्लों और दीन के साथ उतनी घनिष्ठता नहीं रखते।" इस विचार ने सवार के दिल में कुछ आशा और साहस पैदा किया। वह दो टीलों के बीच पहुँच घोड़े को रोककर उतर गया। घोड़ा पेशाब करने लगा और वह कुछ हटकर खड़ा हो गया। फिर जीन और काठी को खोलकर उसने फिर से कसकर बाँधा, पगड़ी को उतारकर खुर्जी के अन्दर डाल दिया और जामे को चौपेतकर जीन के ऊपर बाँध दिया; फिर सवार हो चन्द्रमा के अस्त होने की दिशा की ओर चलने लगा।

अब वह काका के हार के सामने पहुँच गया था। और बाग तथा खेतों के पास से होते उत्तर की ओर चलने लगा। वह सोचने लगा "यह वह जगह है जहाँ उरमान पहलवान का हुकम चलता है। यदि वह या उसके आदमी देख लें, तो जरूर मुझे गिरफ्तार कर लेंगे।" सवार बालायरूद गाँव के समीप पहुँचा, पास में एक बाग था, जिसकी चारों ओर काँटों की बाड़ के सिवा कोई दीवार न थी। पास की निचली जमीन में एक घोड़ी को देखकर सवार का घोड़ा हिनहिनाया, जिसे सुनकर पास ही सोये कुत्ते ने भी गुर्रा के भूँकना शुरू किया। सवार ने फिर अपने आपसे कहा "यह जगह उरमान पहलवान की रबात के सामने है। यहाँ से उस राक्षस का निवास २५-३० तनाब से अधिक नहीं है।"

इस विचार ने सवार को अधिक डरा दिया। बागबान की बीबी घोड़े के हिन-हिनाने और कुत्ते के भूँकने से जग गयी थी। उसने अपने पति को हिलाते हुए कहा—"उठ ददेश, देख तो कौन है?" मर्द सुबह से शाम तक काम करते-करते चूर हो गया था। इस वक्त वह निद्रामदिरा में मस्त था। स्त्री के जगाने पर उसने जल्दी

से सिर को ऊपर उठा मुसाफिर की ओर एक नजर डालकर देखा और उसे अपने रास्ते जाते देख "कौन होगा ! आबदार (नहर का सिपाही) होगा, पानी लगाने गया रहा होगा" कहकर फिर सिर को तकिया पर रख निद्रा-विलीन हो गया।

सवार के लिये "आबदार" का शब्द आकाशवाणी-जैसा मालूम हुआ। उसने अपने शरीर को एक बार देखकर कहा—"मेरा जामा चौपेतकर जीने पर रखा है। कुरते के ऊपर कमरबंद रखा है और सिर नंगा है। इस समय मुझमें और आबदार में क्या अंतर हो सकता है ? यदि पास में एक बेलचा भी होता, जिसके पासे को जीन से बाँधकर बेंट को जाँघ के नीचे से गुजार लेता, फिर तो आबदार और मुझमें कुछ भी अन्तर न रह जाता। अब भी जो कोई मुझे दूर से देखेगा तो आबदार कहेगा। अब यदि कोई मुझसे पूछेगा, तो मैं निस्संकोच हो अपने को आबदार कहूँगा।

आगे वह एक बालू फैले गाँव में पहुँचा। घोड़े से उतरकर लगाम निकाल उसने घोड़े के अगले पैरों को छान दिया, फिर घोड़े की पीठ पर से उतारकर जामा और खुर्जी को एक तरफ रखा। घोड़े की गर्दन और पीठ को थोड़ा मला। घोड़ा वहाँ के घास-तिनके पर मुँह चलाने लगा। सवार उसे वहीं छोड़ जामा लिये गाँव में चला।

वह बहुत गरीब उजाड़-सा गाँव था—घर खंडहर-से और दीवारें छोटी छोटी तथा जहाँ-तहाँ गिरी-पड़ी थीं। गिरी जगहों को काँटे से रुँध दिया गया था। सवार एक घर के पास जा ठमककर कुछ सोचने लगा। "देखने से मालूम हुआ कि घर के दरवाजे में भीतर से जंजीर लगी हुई है। किन्तु द्वार की दोनों ओर आदमी के बराबर की दीवारें आसानी से फाँदी जा सकती थीं। सवार बिना आहट किये दीवार फाँदकर भीतर चला गया, फिर एक कोठरी के सामने खड़ा होकर बहुत धीमी आवाज में बोला—"कुलमुराद, कुलमुराद, कुलमुराद !"

—कौन है ओय—कहकर एक स्त्री ने जवाब दिया।

—मैं परिचित, अका कुलमुराद घर पर है ?

—घर पर नहीं है।

—कहाँ है ?

—मालिक की भेड़ों को लेकर तेकेचूल में गया है।

क्या काम है?

कोई काम नहीं। राह से जाता था, सोचा मिलकर जाऊँ। तुम जानती हो, रोजी घर पर है या नहीं?

—वह भी अपने मालिक की भेड़ों को चराने गया है।

—और सफर गुलाम?

—वह भी चूल (मरुभूमि) में है।

—क्या सभी एक चूल में हैं?

न भी हों, तो भी एक दूसरे से दूर नहीं होंगे,सभी तेके-चूल जाना चाहते थे।

—अगर तकलीफ न हो, तो इस जामा की फटी जगह को सीकर रखना, मैं लौटते वक्त ले लूँगा।

—बहुत अच्छा, कब लौटोगे?

—कल रात को शायद लौटूँ।

—बहुत अच्छा। लेकिन समय से आना। बे-मर्दवाले घर में रात को बेवक्त आने पर आदमी को आँख लगती है—कहते औरत ने भीत के कोने से हाथ बढ़ाकर जामा ले लिया।

—क्षमा करना बहिन, खैर,खुश—कहते सलज्ज स्वर में सवार ने माफी माँगी।

—दरवाजा बंद कर देना—स्त्री ने कहा। नींद में विघ्न पड़ने से स्वर कुछ रूखा-सा था।

—दरवाजा बन्द है। मैं दीवार फाँदकर आया था, और उसी तरह लौट रहा हूँ—कहते मुसाफिर एक छलाँग में पार हो गया।

औरत ने निश्चिन्तता की साँस ली और अपने आप से कहा "खैरियत है, जो मेरे पास एक पूँछ बकरी या भेड़ नहीं, नहीं तो यदि इस बेवक्ती मेहमान की जगह कोई चोर दीवार फाँदकर आता और उसे लेकर चल देता, तो मैं बेखबर ही सोती रहती।"

सवार पाँच मिनट में अपने घोड़े के पास पहुँच गया। घोड़ा अब भी चर रहा था। सवार ने चारजामा को कसकर बाँधा। ऊपर से खुर्जी को लाकर रखा, मुँह में लगाम लगा पाबन्द को खोल दिया। फिर सवार हो तेके-चूल की ओर घोड़े को दौड़ाने लगा।

४

मरुभूमि के चरवाहे

वृक्ष-वनस्पतिहीन असीम मैदान जिसमें चारों ओर बालू के टीले छाये हुए थे। वहाँ की मिट्टी को बाढ़ बहा ले गयी थी या हवा चाट गयी थी और वहाँ कंकड़ियाँ रह गयी थीं। कंकड़ियों पर चलते समय चर-चर की आवाज निकलती थी। गर्मी की धूप से मदार, अरपारबान, सलंग ऊँट कांट जैसी घासें झुलसी पड़ी थीं। चाँद की मटमैली किरणें इस नग्न मरुभूमि में विचित्र-सी मालूम हो रही थीं।

बयाबान में किसी जगह दो पोरसा दो गहरे गड्ढे खुदे हुए थे। उनके किनारे कंकड़ियों की दीवार की तरह खड़ा कर, उसे ऊपर से तिनकों से ढाक दिया गया था। यही कूरे थे, जिनमें कराकुली भेड़ें आराम कर रही थीं। प्रतिदिन १४-१५ घंटा बयाबान में चरती-विचरती भेड़ें यहाँ आकर अब आराम से सो रही थीं; किन्तु बर्रें बार-बार माँ के सीने में मुँह मारकर उनकी निद्रा में बाधा डाल रहे थे।

कूरा के पास कुछ ऊँचाई पर बराबर करके चबूतरा-सी बनायी जगह में हि सारी भेड़ों-सा बड़ा एक कुत्ता सो रहा था। देखने में कुत्ता आँखों को मूँदे था, किन्तु वस्तुतः उसके सिर से पैर तक रोयें-रोयें में कान और आँखें थीं और उस विस्तृत मैदान में होनेवाली हरएक घटना को वह देख-सुन रहा था; जरा भी खटका होने पर वह उठ के चारों ओर नजर डालने लगता।

कूरा के बाहर जाँघ बाँधे दो ऊँट बैठे हुए थे, जिनके पास ही पैर बँधे दो गदहे भी थे। ऊँटों के सामने सूई जैसी तीक्ष्ण काँटोंवाली झाड़ियाँ रखी थीं, जिन्हें वे उतनी ही रुचि से खा रहे थे, जैसे बेदाँतवाला बूढ़ा हलुए को। गदहे भी रेगिस्तानी सूखी घासों को उसी चाव से खा रहे थे जैसे बच्चे मिश्री को। मैदान में एक काला घर था, जिसके सामने चबूतरे पर तीन चरवाहे सोये हुए थे। उनके लिये बिस्तरे की जगह ऊँटों का झूल, बालिश की जगह गदहे की काठियाँ और चादर की जगह अपने जामे थे। तो भी चरवाहे उतने ही आराम से सो रहे थे, जितने कि मोटे पेटवाले बाय (सेठ) अतलस और शाही के नर्म गद्दों पर सोते हैं।

रात करीब-करीब बीत चुकी थी, भिनसार हो रहा था, कुत्ता अपनी जगह से उठा और सूर्य की ओर निगाह करके जमीन को अपने अगले पैरों से कुरेद चरवाहों के चबूतरे पर जा गुर-गुर करते जमीन कुरेदने लगा। चरवाहे अब भो न जगे। कुत्ते ने चबूतरे पर जा ऊपर की ओर सोये चरवाहे के जामे को दाँत से पकड़कर खींचना शुरू किया। चरवाहा अब भी न जगा। कुत्ता नखों को छिपा-कर पंजे से चरवाहे के पैर को खरोंचने लगा।

चरवाहा उठ बैठा और आँखों को मलने लगा। कुत्ता एक छलाँग में चबूतरे से नीचे चला आया और सूर्य की ओर दो-तीन पग जा जमीन कुरेदने लगा; फिर इस कूरा के किनारे अपने बैठने की जगह दोनों पैरों को आगे की ओर फैलाये बैठकर सूर्य की ओर देखने लगा। चरवाहा तमाकू मुँह में डाल जामा को लिये चबूतरे से उतर कुत्ते की दिखाई दिशा की ओर देखने लगा। कोई चीज दिखलाई न पड़ती थी। चरवाहा किनारे जा शौच से निवृत्त हो लौटकर फिर चबूतरे पर जाना चाहता था। कुत्ते ने फिर गुरगुराते कितने ही पग सूर्य की ओर जाकर जमीन को एक-दो बार कुरेदा, फिर चरवाहे के पास जाकर पूँछ हिलाने लगा और तब अपनी जगह जा पहिले की तरह कानों को समेटे सूर्य की ओर देखने लगा।

कुत्ते की इस चेष्टा को बार-बार देखकर चरवाहे ने समझ लिया कि बयाबान में अवश्य कोई खास चीज है। वह चबूतरे से उतरकर कुछ दूर गया और दूर दृष्टि डालकर ध्यान से देखने लगा। वहाँ एक सवार आ रहा था। चरवाहा लौटकर चबूतरे पर जा बैठा। अभी तमाकू उसके मुँह में था, इसी समय चाँद की रोशनी में एक कालिमा प्रगट हुई। कुत्ता और चंचल हो उठा। वह बार-बार अपनी जगह से उठकर मैदान की ओर जाता। गुरगुराते दो-तीन बार जमीन कुरेद फिर अपनी जगह आ बैठता। कालिमा समीप आयी सवार साफ दिखलाई देने लगा, कुत्ता आगे जमकर जोर से गुर्राते हुए जमीन कुरेदने लगा। सवार ने कुत्ते की आवाज को सुन लिया और उसके विशाल शरीर को देख घोड़े को थामकर आवाज दी :—

—ओय अका। कुत्ते को पकड़ो।

—"आ जाओ डरो नहीं"—कहकर चरवाहे ने सवार को जवाब दे कुत्ते की ओर निगाह करके कहा—"चुप, बैठा रह" कुत्ते ने चरवाहे और सवार की आपस

९—चाँदनी की फीकी रोशनी में एक कालिमा प्रगट हुई । (पृष्ठ १७१)

की बात सुनी। अपने लिये चुप रहने का हुक्म भी सुना और समझा कि सवार अपना आदमी है, इसलिये चुप हो गया, लेकिन अब भी वह सवार की ओर ध्यान से देख रहा था।

"सावधान अका! कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा कुत्ता मुझपर आक्रमण कर दे—कहकर डरते-काँपते सवार आगे बढ़ा। चरवाहा अपरिचित व्यक्ति को समीप से देखने के लिये चबूतरे से उतरकर आगे बढ़ा। सलाम करके लगाम पकड़ने के लिये जब पास पहुँचा तो एकाएक बोल उठा "ए शाकिर अका, तुम हो।"

सवार ने चरवाहे की आवाज सुनकर उसके चेहरे को नजदीक से देखकर कहा—"तू कुलमुराद, ओ! तुझे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते कहाँ-कहाँ की खाक छान रहा हूँ।"

मेहमान घोड़े पर से उतर पड़ा। कुलमुराद ने स्वागत करके घोड़े को पकड़ लिया और मालिक के घोड़े के किये मैदान में गड़े एक खूँटे से बाँध दिया। फिर खुर्जी उठाये मेहमान को चबूतरे पर ले गया। दूसरे चरवाहे अब भी खर्राटे ले रहे थे। कुलमुराद ने बात शुरू की—कहो अका शाकिर, तुम्हें कौन आँधी इधर उड़ा लाई?

—कोई बात नहीं—मेहमान ने जवाब दिया—तुझे देखने तेरे घर गया। नहीं मिला, मालूम हुआ कि चूल में है। इतनी दूर आकर बिना मिले जाना ठीक नहीं समझा और चूल का रास्ता लिया।

—भले आये - कुलमुराद ने कहा—दिन होने ही वाला है. मैं काफी सो चुका हूँ। यदि बहुत थके न हो, तो कुछ गप-शप करें। अगर सोना चाहते हो तो जगह ठीक कर दूँ।'

—मैं थका हूँ और जगा भी हूँ, किन्तु नींद नहीं मालूम हो रही है; तो भी थोड़ी देर लम्बे पड़ रहने में कोई हर्ज नहीं।

—किन्तु हमारे यहाँ तुम्हारे लायक गद्दा-तकिया नहीं है। यदि जूँओं और खटमलों से भय न खाते हो, तो मेरी जगह लेट जाओ। यदि और आराम से सोना चाहते हो, तो अपने जामे को भी नीचे बिछा लो और खुर्जी को तकिया बना सो जाओ।

—बहुत अच्छा, ऐसे ही लेट जाता हूँ—कहते मेहमान खुर्जी को सिर के नीचे रखकर सो गया।

—और तुम्हारा जामा कहाँ है?—कहकर कुलमुराद चारों ओर देखने लगा।

जामा की बात न पूछ, रास्ते में कुत्ते मुझपर टूट पड़े, उन्होंने जामे को फाड़ दिया, उसे मैंने सीने के लिये तेरे घर छोड़ दिया।

—ओहो, तभी कुत्ते से इतने डर रहे थे। लेकिन चरवाहों का कुत्ता गाँववालों-जैसा नहीं होता। गाँववाले कुत्ते ही आने-जानेवाले व्यक्ति पर आक्रमण कर देते हैं, लेकिन चरवाहों के कुत्ते मेहमान या मुसाफिर से कुछ नहीं बोलते। जबतक उसे मालूम नहीं कि यह चोर है, तबतक वह आदमी पर चोट नहीं करता। अपनी भेड़ों की चोरों और भेड़ियों से जान से अधिक समझकर रक्षा करता है।

—बहुत ठीक, वह अमीर के आदमियों से हजार गुना अधिक अच्छा है।

—हाँ, किन्तु यहाँ अमीर के आदमियों से क्या सम्बन्ध—कहते कुलमुराद ने कुछ आश्चर्य प्रगट किया।

—भारी सम्बन्ध है।

—कैसे?

—जिस समय कुत्तों ने मुझपर चोट की, मैंने उन्हें अमीर के आदमियों-जैसा समझा; क्योंकि अमीर के आदमी कुत्ते की तरह ही हर आदमी पर चोट करते हैं।

—अमीर के आदमियों ने किसपर चोट की—कुलमुराद ने पूछा।

—तुझपर, मुझपर और गरीब किसानों पर—शाकिर ने कहा—उनके हाथों खासकर उरमान पहलवान के हाथों मालगुजारी, खराब, कर, बाकी और दूसरी बातों को लेकर तुमने क्या कम तकलीफें सही है? जितनी तकलीफें तुमने उरमान पहलवान, हैत अमीन, बाजार अमीन और दूसरों के हाथों झेलीं, उनसे कम मैंने सफर अमीन, कोजी अमीन, जलाउद्दीन अकसक्काल और दूसरों के हाथ से नहीं झेलीं। जब से यह जदीद और कदीम (नवीन और पुरान) का झगड़ा उठ खड़ा हुआ, मुझे जदीद कहकर मार डालना चाहते हैं।

—हाँ, शाकिर अका, यह जो जदीद-कदीम के झगड़े की चर्चा है, यह क्या बात है? तुम्हें क्यों जदीद कहते हैं?

—मैं इसे तुझे कैसे समझाऊँ? बुखारा में जवानों का एक दल है, वे कहते हैं कि पुराने मकतबों (पाठशालाओं) के स्थान पर नये मकतब खोले जायँ। मदरसों के हुजरों का क्रय-विक्रय बंद किया जाय। मदरसों में शिक्षा सुव्यवस्थित

रूप से दी जाय। ताशकन्द और समरकन्द की तरह यहाँ भी किसानों की जमीन का बन्दोबस्त, दानाबंदी और बटाई नहीं, बल्कि नगदी लगान में होना चाहिये। देश के आय-व्यय का हिसाब रखा जाय। जदीद जवान इन चीजों की माँग करते हैं, लेकिन मुल्ला सैनिक अमीर और उसके सारे आदमी उसके विरुद्ध हैं। इसी को लेकर दोनों में झगड़ा पैदा हुआ है, जिसे जदीद-कदीम का झगड़ा कहते हैं।

—आपके विचार में दोनों में किसकी बात ठीक है ?

—अलबत्ता, जदीदों की बात ठीक है; क्योंकि उनकी माँग जनता के लाभ के लिये है।

—मैं नहीं समझ पाया—कुलमुराद ने सिर हिलाते हुए कहा।

—क्यों नहीं समझ पाया ? इसमें न समझने की कौन-सी बात है ?

तुम जवानों की माँग को जनता के लाभ की बतलाते हो, मैं उसी के बारे में पूछता हूँ।

—पूछ।

—पुराने मकतब की जगह नये मकतब खोलने से जनता को क्या लाभ ?

—पुराने मकतबों में सौ बच्चे दस साल तक पढ़ते हैं, उनमें दस कुछ पढ़कर निकलते; बाकी अनपढ़ रह जाते हैं। लेकिन नये मकतब में छ मास में और यदि मन्दबुद्धि हुए तो एक साल में सभी लिखने-पढ़ने लगेंगे। यह कम लाभ है ?

—ठीक, लेकिन सबको मुल्ला (पंडित) बनाने से क्या काम बनेगा ? अभी जितने मुल्ला हैं, वे क्या जान खाने के लिये कम हैं ?

—मैंने कहा नहीं कि तू नहीं समझेगा।

—नहीं, मैंने कहा था कि मैं नहीं समझ पाता, किन्तु तुमने कहा कि यहाँ न समझने की कौन-सी बात है।

अब दिन साफ हो गया था। सोये चरवाहों में से एक जागकर उठ बैठा। चबूतरे पर एक अपरिचित आदमी को देख उसने दूसरे चरवाहों को भी "यूसुफ-यूसुफ" कह के आवाज देकर जगाया। यूसुफ भी उठ बैठा। वह बारह-तेरह साल का लड़का था। अभी भी वह अच्छी तरह जगा न था और अपने ही से सपनाते-सा बोल रहा था "हाँ, क्या पानी दूँ।"

कुलमुराद और दूसरा चरवाहा बच्चे की बात सुन ठठाके हँस पड़े। हँसी सुन के लड़का अच्छी तरह जाग गया और आँखों को मलते उठ खड़ा हुआ।

शाकिर ने कुलमुराद से जदीद-कदीम का विवाद छेड़ दिया था; किन्तु उसका तीर पत्थर पर लगकर टूट गया और बात बीच में कट गयी। अब उसने कुलमुराद से कहा—इस समय सोने में मजा नहीं। चायदान को आग पर रख, थोड़ी चाय उबालें।

—चायदान तो है, किन्तु चायनिक, प्याला और चाय नहीं है।

—कोई हर्ज नहीं, मेरे पास चाय है। चायदान में थोड़ी चाय उबालकर कटोरी में पियेंगे।

कुलमुराद ने चायदान को चूल्हे पर रखा और नीचे आग लगायी, काँटा और मदार का गरगर करके जलने लगा। ज्वाला ने उठकर सारे चायदान को लपेट लिया और चिनगारियाँ तथा हलकी राख उड़कर चायदान में पड़ने लगीं। शाकिर केवल लेटे ज्वाला की ओर देखते सोच रहा था—ये लोग नादान हैं, नादान कुछ भी नहीं कर सकते।

कुलमुराद चायदान चूल्हे पर रख काले घर में चला गया और कठौत में दो-तीन मुट्ठी आटा पर कुछ दूध और पानी डालकर खमीर करने लगा। चरवाहे लड़के भी हाथ-मुँह धोकर आ गये थे। कुलमुराद ने आवाज दी—कालिम!

—हाँ, क्या कहते हो—कहते लड़का घर के द्वार पर पहुँचा।

—तू रेत पर काफी ईंधन रखकर जला, जिसमें खमीर होते तक वह तप जाये. यूसुफ को कह चूल्हे में आग लगाकर चायदान को उबालने लगा।

कामिल १५-१६ साल का लड़का था। उसने रेत-मिट्टी के ढेर पर रखकर आग जलायी। यूसुफ ऊँट की खायी कँटीली झाड़ी को चूल्हे के नीचे जलाने लगा।

शाकिर अपनी बात को न समझा सकने से चरवाहे को नादान समझकर निराश हो चुका था। अब वह प्राची पर दृष्टि गड़ाये उषा की लालिमा को देख रहा था। कुछ मिनट बाद वह उठ के घोड़े के पास गया और नीचे खिसक आयी जीन उतारी। जीन और लगाम को लाकर चबूतरे के पास रखा, फिर मिट्टी के मड़वे से हाथ-मुँह धोया, अंत में अपनी खुर्जी को बिछाकर उसपर बैठे "नादान" कहते विचारों में डूब गया।

५

चरवाहों का आतिथ्य

सूर्य का प्रकाश सारे मैदान में फैल गया। कूरा के अन्दर भेड़ें जग गयीं और माँ-माँ करती अपनी जगह से हिलने लगीं; लेकिन सारी रात को जागकर दिन करते कुत्ते की अब बारी थी। और वह अपने सिर को दोनों पैरों के बीच रख खर्राटा ले रहा था। जलती रेत पर पकी चार गरमागरम बाटियाँ लाकर दस्तरखान पर रखी गयीं। दस्तरखान क्या एक मैला-कुचैला लत्ता था, तो भी गरम रोटियों की सुंधाई भूख को तेज कर रही थी। बहुत भूखे शाकिर के मुँह से तो पानी टपकने लगा था, तो भी उसने हाथ नहीं बढ़ाया। वह अपने पास रखे चायदान की चाय को बार-बार हिलाते गृह-पति के आकर रोटी तोड़ने की प्रतीक्षा कर रहा था।

कुलमुराद और कामिल ने दूहे दूध को लाकर काले घर में रखा। कुलमुराद दस्तरखान पर आया। कामिल ने एक किनारे पड़े कुत्ते के बर्तन को ला उसमें आधी रोटी तोड़ ऊपर से एक कटोरी दूध डालकर छोड़ दिया। फिर वह भी आकर दस्तरखान पर बैठा। कुलमुराद ने अपने हाथ से रोटी के टुकड़े कर अतिथि से खाने की प्रार्थना की।

शाकिर ने चायदान से अब तक ठंढी हो चुकी चाय को कटोरे में डालकर पीने के लिये ओठ से लगाया और उसके स्वाद को देखकर कहा—चाय में नमक डाल दिया क्या?

—नहीं, स्वयं नमकीन है—कुलमुराद ने कहा।

—कैसे, क्या चाय में खुद नमक है!—शाकिर ने आश्चर्य से पूछा।

—हमारे चूल में जितने ही कुएँ हैं, प्रायः सारे ही खारे हैं। आधा पत्थर दूर एक कुआँ है, वहीं हमारा सबसे अच्छा पानी है। अपने कुएँ के पानी को तो मुँह में भी नहीं डाला जा सकता।

कुलमुराद ने पीठ पर सुराही लिए चूल्हे के पास खड़े हुए यूसुफ को देखकर कहा—यह उसी मीठे कुएँ का पानी है, जिसे बच्चा पीने के लिये लाया है। (बच्चे की ओर निगाह करके) आ यूसुफ, तू भी रोटी खा।

यूसुफ भी आकर दस्तरखान पर बैठ गया। शाकिर को छोड़कर सबने पेट भर रोटी खायी। शाकिर ने एक टुकड़ा रोटी हाथ में ले उसमें से कुछ चीजें बीनकर फेंकीं, फिर मुँह में डाल अरुचिपूर्वक खाते हुए पूछा—तुम्हारी रोटी में घास क्यों है?

—घास नहीं, जौ के आटे की भूसी है—कुलमुराद ने जवाब दिया।

—छानकर क्यों नहीं पकाते?—शाकिर ने पूछा।

—मालिक का ऐसा ही हुक्म है। "यदि जौ के आटे को छाना जाय तो आधा निकल जायेगा।

—क्या खुद तेरा मालिक उसी तरह की रोटी खाता है?

नहीं, जब वह यहाँ आता है, तो अपने लिये गेहूँ की रोटी लाता है।

टुकड़ा दिया हुआ टिक्कर खतम देख कुलमुराद ने दूसरे टिक्कर को भी तोड़कर दस्तरखान पर डाल दिया और लत्ते पर पड़े हुए चूरों को अंगुली से चुनकर मुँह में डाल दिया।

—चाकू से काटने पर टुकड़ा अच्छा कटता है—शाकिर ने कहा और रोटी का चूरा नहीं होता।

—मैं क्या जानूँ—कुलमुराद ने कहा। रोटी को चाकू से काटना उबाल (अलच्छन) कहते हैं।

—उबाल-पुबाल कुछ नहीं होता, यह मुल्लों की बलबलाहट है। जदीद इन बातों को बलबलाहट कहते हैं और रोटी को चाकू से काटकर खाने को उबाल नहीं मानते।

—जो भी हो, इसझगड़े से लोगों को क्या लाभ? रोटी होनी चाहिये, उसे हाथ से भी तोड़कर खा सकते हैं, चाकू की क्या आवश्यकता! रोटी का मिलना कठिन है, उसका खाना बिल्कुल आसान।

"इस नादान को कुछ समझाना बहुत मुश्किल है" कहते शाकिर फिर अपने ख्यालों में डूब गया।

गर्दन दूसरी तरफ फिर गई थी। कुत्ता अब भी सो रहा है, शाकिर ने बात को दूसरी ओर बदलने के लिये पूछा। क्या कुत्ते ने खाना नहीं खाया?

—खाना खायेगा, लेकिन बिना बुलाये स्वयं खाना नहीं शुरू करता (कुत्ते की ओर निगाह करके) खालदार, खालदार! आ अपना खाना खा।

कुत्ता धीरे-धीरे अपनी जगह से उठा, अगले पैरों को आगे की ओर और पिछले पैरों को पीछे की ओर खींचकर अंगड़ाई ली ; फिर चबूतरे की ओर देखकर जरा पूँछ हिलायी तब साभिमान अपने बर्तन के पास जाकर बिना जल्दी किये खाना खाने लगा ।

—तेरे कुत्ते का नाम उसके रंग के अनुसार है, लेकिन अफसोस, इसका नाम क़ूशबेगी के लड़के-जैसा है—शाकिर ने कहा ।

—कैसे ?

—नये क़ूशबेगी (महामंत्री) मिरजा उरगंजी के एक लड़के का नाम खालदार बेगीजान है ।

ठीक, एक-सा नाम होता है, इससे क्या हर्ज ?

—अफसोस, ऐसे समझदार और बइज्जतदार कुत्ते का नाम अमीर के एक बेइज्जत चाकर-जैसा है !

—तुम अमीर के आदमियों के भारी शत्रु हो गये हो अका शाकिर—कुलमुराद ने कहा ।

—आदमी उनका शत्रु बनने के लिये मजबूर हैं । उन्होंने बहुत जुल्म किया है, लोगों के घर-बार को बर्बाद कर दिया है, दुनिया में खून-खराबी का बाजार गर्म कर दिया ।

—अन्याय करनेवाले खून-खराबी फैलानेवाले सिर्फ अमीर के ही आदमी नहीं हैं—कुलमुराद ने कहा—मेरे मालिक को ही नहीं देख लो । १०-१५ साल की बात तो मैं जानता हूँ, उसने अपने गाँव के २०-३० किसानों की जमीन को अपने हाथ में करके उन्हें अपना नौकर, मजूर और बटाईदार बना लिया ।

—यह जुल्म अन्याय नहीं है—शाकिर ने कहा—उन्होंने अपनी जमीन बेची और उसने खरीद ली ।

—अगर जानते कि कैसे खरीदा तो तुम भी कहते कि यह जुल्म है । पहिले भोज-बारात, मामला-मुकदमा और किस-किस बहाने से उन्हें अपना क़र्जदार बनाया ; फिर सूद पर सूद लगाकर उन्हें अपनी जमीन बेचने के लिये मजबूर किया ।

शाकिर के पिये चाय के कटोरे को लेकर पीते हुए कुलमुराद ने फिर अपने

मालिक के बारे में कहना शुरू किया—अपने नौकर के साथ वह कैसा बर्ताव करता है, इसे मेरी अवस्था को देखकर समझ सकते हो। हमारी इस फटी गंदी पोशाक को देख रहे हो। गर्मी-सर्दी में, बर्फ-बारिश में, धूप-ताप में हम भूखे-प्यासे, सिर-पैर से नंगे चूल बयाबान में भेड़ों के पीछे डोलते फिरते हैं। मालिक कराकुली पोस्तीने (बहुमूल्य चर्म) बेचकर प्रति वर्ष तोड़े के तोड़े तिल्ला और तंका ढोकर अपने घर में रखता है।

—इतने पैसे क्या करता है?—शाकिर ने यों ही पूछ दिया।

—क्या करता है?—शाकिर के प्रश्न को दोहराते कुलमुराद ने जवाब दिया—फिर अपनी भेड़ों को बढ़ाता है, फिर जमीन को बढ़ाता है। अमीर हरसाल बाल्ता जाकर जो करता है, यदि वही काम (ऐश) सीम में और बाद में मौलाना जाकर करता है। बदचलनी इतनी बढ़ गयी है कि यद्यपि उसकी उम्र ५० साल से ज्यादा है, चार निकाही (विवाहिता) बीबियाँ हैं, तो भी अपने नौकरों की बीबियों को खराब किये बिना नहीं छोड़ता। सारा भेद खुल गया है, किंतु "सेठ बेइज्जत न हो जाये" कहकर गाँव के बड़े-बूढ़ों ने छिपा रखा है। इन कामों के लिये भी पैसे की जरूरत होती है

—मैं ऐसे बायों को अच्छा आदमी नहीं कहता—शाकिर ने कहा—किन्तु अमीर और उसके आदमी अच्छे हो जायें, तो ये भी अच्छे हो जायेंगे। किताबों में लिखा है, "लोग अपने बादशाह के दीन के साथ होते हैं" इसका अर्थ यह है कि यदि बादशाह न्यायी हो, तो उसके नीचे के बाय, अरबाब और अकसकाल भी न्यायी होंगे। अगर वह जालिम हो तो नीचेवाले भी जालिम होंगे।

—मैं एक अनपढ़ आदमी हूँ, आपकी किसी किताब-मिताब को नहीं जानता। अपनी छोटी अकिल के मुताबिक मेरा विचार दूसरा ही है।

—तेरा क्या विचार है?

—मैं "समझता हूँ, यदि मांस अच्छा तो सूप अच्छा, यदि दूध अच्छा तो दही अच्छा"। अच्छे मांस को बनाइये, तो अच्छा शोरवा होगा, अच्छे दूध को जमाइये तो अच्छा दही होगा। लेकिन बुरे मांस का शोरवा बुरा और बुरे दूध का दही बुरा होता है। अमीर और उसके आदमियों को यही बाय, अरबाब और अकसकाल उठाये हुए हैं अर्थात् वह इसी मांस के शोरवा और इसी दूध के दही हैं; इसलिए यदि हो सके तो पहिले इन्हीं को ठीक या खातमा करना चाहिये।

शाकिर को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। उसने बात को बदलने के लिये पूछा—रोजी और सफर गुलाम भी क्या इसी चूल में हैं?

—उनसे काम है?

—अगर वे नजदीक हों तो उनसे भी जरा मिल लेना चाहता था।

—वे यहाँ से नजदीक हैं, लेकिन तुम्हें उनके पास जाने की आवश्यकता नहीं है। संभव है, तुम्हारे वहाँ पहुँचने तक वे भेड़ों को चराने चले जायँ, अभी लड़के भेड़ें ले जा रहे हैं, उनसे कह देता हूँ कि ये उन्हें आने के लिये कह दें।

—बहुत अच्छा—कहकर शाकिर ने दोनों हाथों को कमर पर रखकर अंगड़ाई ली।

—कुलमुराद ने कहा—इसपर थोड़ा आराम करो।

—हाँ, आराम करना चाहिये।

—दस्तरखान समेटा गया। कामिल और यूसुफ ने बोरों को एक ऊँट पर लादा। एक गदहे को कसकर उसकी खुर्जी में रोटी, जलपात्र और कटोरा रखा। भेड़ों को कूरे से बाहर किया और ऊँट-गदहे के साथ उन्हें आगे-आगे हाँका। लंबी लाठियाँ लिए वह उनके पीछे-पीछे चरभूमि की ओर चले। कुत्ता खाना खाके सो गया था। वह भी जमीन को एक-दो बार कुरेदकर उनके साथ हो लिया।

"जूओं और पिस्सुओं ने यदि उन्हें न खा डाला तो मुझे भी न खा सकेंगे" कहते शाकिर खुर्जी को सिर के नीचे रख ऊँट के झूल पर लम्बा पड़ गया।

कुलमुराद ने कुछ दूर चले गये कामिल और यूसुफ को जोर से आवाज दी "रोजी और सफर गुलाम को भेजना, ओ—ो—ो—रे—य।" और स्वयं काले घर से एक बड़ी देग निकालकर चूल्हे पर रख दिया, फिर घर के अन्दर जा एक-एक करके दूध से भरे तीन मटकों को लाकर देग में उँड़ेल दिया, फिर कँटीले ईंधन को चूल्हे में रख फूँक मारकर आग जला दी। ऊपर से और ईंधन रख उसे तेज कर दिया, फिर मथने के बर्तन को लाकर चबूतरे पर रखा और दही की मटकियों को उसमें उँड़ेलकर मथना शुरू किया।

—तुम्हारी भेड़ें अच्छा दूध देती हैं—शाकिर ने लेटे ही लेटे पूछा।

—अच्छा दूध कहाँ से देंगी, अधिकांश तो बिसुक गयी हैं।

—क्यों बिसुक गयीं?

—पिछले जाड़े में हिम-वर्षा कम हुई और वसंत में जलवर्षा एक तरह हुई ही नहीं। इससे चूल में घास न उगी, जो उगी, वह बिना बढ़े ही सूख गयी। इससे भेड़ें दुबली हो गयीं, कितनी भेड़ें अपने बच्चों को भी दूध न दे बिसुक गयीं। चमड़े के लिये जिनके बच्चे मार दिये गये, उनमें से भी अधिक बिसुक गयीं। बिसुकी माँओं के बच्चे चरते समय दुधार भेड़ों को पी जाते हैं। बे-बच्चे की भेड़ों में से जिन्हें अलग करके रात में दूसरे कुरा में सुला देते हैं, उन्हीं से सबेरे दो-तीन मटके दूध दूह लेते हैं।

—खैर, अपने लिये तो इतना काफी है।

—"अपने लिये" से तुम्हारा किससे मतलब है?

—तू, कामिल और वह दूसरा लड़का यूसुफ।

—काफी होता यदि मालिक रहने देता।

—क्या नहीं रहने देता?

—हाँ, आज सबेरे रोटी को जरा स्वादिष्ट बनाने के लिये खमीर में थोड़ा दूध डाल दिया। हफ्ते में एक-दो बार चावल पकाते हैं, उसमें भी एक कटोरा डाल देते हैं। सुबह-शाम एक-दो कटोरी दूध कुत्ते को भी देना पड़ता है। बिना दूध के रोटी देने पर वह रूठ जाता है। बाकी दूध का दही जमाकर मथते हैं। मट्ठे को कपड़े में बाँध के चक्का बनाते हैं। चक्के के टुकड़े को काट-काटकर खाते हैं। मसका का घी बनाते हैं, फिर इन सबको मालिक के हवाले करते हैं।

कुलमुराद ने दही मथकर पानी डालने के लिये जब सिर उठाया, तो देखा—शाकिर की आँखें झँप रही हैं। कुलमुराद ने पूछा—मेरी बातें सुनीं शाकिर अका!

शाकिर ने आँखों को बिना खोले ही कहा—कहता जा मेरी आँखें तेरे ही पास हैं।

कुलमुराद ने मथानी चलाते हुए अपनी कथा जारी रखी—इतनी मिहनत करते हैं, अपना कंठ सूखा रखकर सब कुछ मालिक को दे देते हैं, तो भी वह हम से प्रसन्न नहीं। हफ्ते में एक बार जब वह यहाँ आता है, सारे दिन इसी दूध, दही, घी, चक्के, पनीर को लेकर झगड़ा करता रहता है, गाली देता है, फटकारता है, जान पर आफत कर देता है। इस साल के सूखे और भेड़ों के दुबली होने का ख्याल न कर पागलों की तरह बोलता रहता है "परसाल प्रति सप्ताह कितना घी,

कितना चक्का, कितना पनीर होता था, इस साल क्यों कम है ? तुम भुक्खड़ो, दूध न खा फलाँ खाओ।"

—दही मथने के संगीत के साथ कुलमुराद की करुण कथा चलती रही और इसी बीच न जाने कब शाकिर निद्रा में डूब चुका था।

६

जदीदपन निःसार

दो पहर की धूप की गर्मी से पसीने-पसीने हो शाकिर जाग उठा। उसने देखा कि रोजी और सफर गुलाम के साथ कुलमुराद घर की छाया में बैठा दोनों के बीच में हुए वाद-विवाद को परिहासात्मक रूप में वह लाते हँस रहा है। शाकिर रंज हो भीतर ही भीतर "मूर्ख, नादान" कहते बाहर से अनजान-सा "ओहो" "तीन-चार घंटे सोता रहा" कहते उठ खड़ा हुआ।

रोजी और सफर गुलाम ने उठकर सलाम करके मिलना चाहा, लेकिन शाकिर "अभी आया" कहते काले घर के पीछे फरागत के लिये चला गया। फिर लौटकर चूल्हे के पास रखे गड़वे से हाथ-मुँह धो कमरबंद से पोंछकर वह रोजी और सफर गुलाम के साथ पार्श्वालिंगन करते बोला—कैसे है रोजी, और तू कैसा है सफर ?

"शुक्र, शुक्र" कहते चरवाहों ने जवाब देकर इससे भी पूछा "और तुम भी बतलाओ कैसे हो ?"

—खुदा का शुक्र। मिट्टी से निकलकर आया हूँ। कुलमुराद धूप में पड़े ऊँट के झूल को घर की छाया में बिछा चुका था। उसने मेहमान को आवाज दी—इस तरफ छाया में आइये, शाकिर झूल के ऊपर की ओर बैठा। रोजी और सफर गुलाम एक ओर घुटना टेक जमीन पर बैठने लगे। शाकिर ने उनसे कहा—और आगे झूल पर बैठो।

—आदमी मिट्टी से पैदा हुआ, फिर मिट्टी पर बैठने में क्या हर्ज !—रोजी ने जवाब दिया।

—यही ठीक है—शाकिर ने कहा—किन्तु मैं क्या ऊँट के झूल से पैदा हुआ हूँ कि उसके ऊपर बैठूँ ?

—तुम मेहमान हो—सफर गुलाम ने कहा—"मेहमान तेरे बाप से बड़ा" की कहावत प्रसिद्ध है। तुम्हें बिछौने पर बैठाना हुर्मत है। वह मेहमान है।

—ऐसा ही सही, तुमने मेरी बड़ी हुर्मत (सम्मान) की। सलामत रहो—शाकिर ने हँसते हुए कुलमुराद से कहा, जो कि कूजे से देग में पानी डाल रहा था।

कुलमुराद ने एक कटोरा ज्वार धोकर देग में डालते हुए कहा—तुम भी सलामत रहो। अपने पुराने परिचितों और बंधुओं को दिल से न भुलाकर पता लगाते यहाँ तक आने का कष्ट उठाया।

शाकिर ने मजाक करते हुए कहा—लेकिन सबसे अधिक मेरी हुर्मत जूँओं और पिस्सुओं ने की। गहरी नींद में मुझे मालूम न हुआ, किन्तु जागने के बाद देखता हूँ, सारे शरीर में खुजली हो रही है और सिर से पैर तक सब जगह दाने पड़ गये हैं।

—क्षमा करो शाकिर अका—कुलमुराद ने कहा—मैंने पहले ही इस बारे में तुमसे कहा था, किन्तु तुमने स्वयं "जूँओं-पिस्सुओं ने तुम्हें नहीं खा डाला, तो मुझे भी नहीं खायेंगे" कहते इस अजाब को सिर पर लिया। अब आप समझ गये होंगे कि यदि उन्होंने हमें मार नहीं डाला, तो भी मारने से भी बुरा करके छोड़ा है।

शाकिर ने दाढ़ी में अँगुली फेरते किसी चीज को पाकर "फिर एक को पकड़ा" कहते उसे दूर फेंक दिया।

रोजी इस समय शाकिर की दाढ़ी की ओर देख रहा था, वह बोल उठा—शाकिर अका, बूढ़े हो गये, तुम्हारी दाढ़ी सफेद हो चली।

शाकिर ने चेचक के दागवाले चेहरे को पूरे तौर से ढाके अपनी बड़ी दाढ़ी को हाथ में पकड़कर आँखों के सामने करके कहा—जिसकी उम्र पचास से अधिक हो जाये, उसकी दाढ़ी क्यों सफेद न होगी? अभी तो मैं काला वृद्ध हुआ हूँ, क्योंकि मेरी दाढ़ी में सफेद की अपेक्षा काले बाल ज्यादा हैं—(रोजी की ओर देखकर) तू खुद कितने सालों का है कि दाढ़ी सफेद हो गयी?

—मैं ४५ साल का हो गया हूँ—रोजी ने कहा—लेकिन मुझे उम्र ने बूढ़ा नहीं किया। आधा भूखा रहकर कड़ी मिहनत का काम करता आ रहा हूँ, उसीने मेरी दाढ़ी को सफेद कर दिया।

मैं २८ साल का हूँ—सफर गुलाम ने बिना किसी के पूछे कहा—यदि रख छोड़ता तो दाढ़ी में काले से सफेद बाल ज्यादा होते; लेकिन तुम्हारी बहू का दिल रखने के लिये हर रोज सवेरे उठकर सफेद बालों को निकाल दिया करता हूँ।

—दिल रखना ! खैर दिल रखता रह, किन्तु उसके लिये दाढ़ी नोचने की क्या आवश्यकता ?—कहकर कुलमुराद ने सबको हँसा दिया; फिर अपनी फटी टोपी को उतारकर सिर झुका मेहमानों को दिखाते हुए कहा—मैं २६ साल का हूँ तो भी मेरे सिर के सारे बाल सफेद हैं। किन्तु मैं उनकी परवा न कर २० साल की बहू के सामने जाता हूँ।

कुलमुराद के सिर का बाल चाँद से लिलार तक आग में तपे ताँबे की तरह लाल था। सफर गुलाम ने उसे देखकर हँसते हुए कहा—अच्छा है कि तेरे सिर के बाल गिर गये; नहीं तो यदि मैं दाढ़ी उखाड़ने को मजबूर हुआ तो तू सिर का बाल उखाड़ने के लिये मजबूर होता। सिर का बाल उखाड़ने से दाढ़ी के बाल का निकालना आसान है।

—नयी बीबी आयी है—कुलमुराद ने कहा—इसलिये तू इस तरह कष्ट उठा रहा है। मैं तो बहू को खुश करने के लिये न तो दाढ़ी नोचता, न सिर के बाल।

—तो तू सफर घरवाला बन गया ? बधाई, कब शादी हुई ?—शाकिर ने कहा।

—खुदा मुबारक करें, शादी हुए एक साल हुआ—सफर गुलाम से कहा।

—कहाँ से शादी की ?

—इस कहानी को न पूछो—कहते सफर गुलाम ने कहानी शुरू की। मैं १५ साल का था। बाय ने शादी करा देने का वचन दे मुझे नौकर रखा। दस साल उसकी नौकरी की, मैं २५ साल का हो गया, किन्तु ब्याह का कहीं पता नहीं। मैंने काम छोड़ने का निश्चय कर लिया। बाय के घर में एक लड़की थी, जिसे उसने १० साल की उम्र में अकाल के समय एक पूद (२० सेर) ज्वार देकर खरीदा था। लड़की ने दस साल बाय के घर नौकरी की थी, मेरा निश्चय सुनकर बाय ने लाचार हो उस लड़की के साथ मेरी मंगनी कर दी। दो साल और काम किया, किन्तु निकाह का कोई पता नहीं। फिर मैंने रूठकर नौकरी छोड़ना चाहा। इसपर अरबाब और अकसक्काल बीच में पड़े और दस साल और काम करने की शर्त पर उस लड़की के साथ मेरा निकाह (विवाह) हो गया।

—उसे कहाँ बैठाया ? "गुलामान" में तेरे बाप का घर तो कब का गिर-पड़ गया था।

—अब भी वह बाय के घर में वहाँ गाय दूहने, माल खिलाने, जामा सीने, चावल-रोटी पकाने में लगी रहती है। मैं सारे साल बारह महीने चूल में रहता हूँ। वह मेरी बीवी है, किन्तु आज तक दिल भरकर मैं उसके साथ नहीं सो सका हूँ। तीन-चार मास बाद गाँव में जाने पर एक रात सोता हूँ और सवेरे रूद में नहाकर बयाबान का रास्ता लेता हूँ।

—सच बात यह है—कुलमुराद ने कहा—हम गुलामों की औलाद स्वतंत्र होने पर भी अपने क्रीतदास बाप-दादों से कोई अन्तर नहीं रखती। एरगश आका के कथनानुसार उस समय भी गृहजात दास पैदा करने के लिये अपने दास-दासियों का ब्याह कराते थे, लेकिन दास-दासी साल में एक-दो बार से अधिक नहीं मिल सकते थे। कहा करते थे "यदि दास बीवी के साथ अधिक सोयेंगे, तो काम को हानि पहुँचेगी।" आज भी बाय के घर में रहकर विवाहित हमलोगों की वही हालत है।

शाकिर ने सफर की आँखों को लाल देखकर पूछा—हाल में गाँव गया था क्या ?

—१५ दिन हुए, बाय से जाने के लिए आज्ञा माँगी। वह आज और कल कहकर धोखा देता रहा। अंत में बाजार के दिन दूर देखकर पूछा, तो "अच्छा तो शुक्र के दिन जाना" कहकर वचन दिया। शुक्र के दिन बाय आया, मैं भी गाँव जाने के लिये तैयार था।

—दाढ़ी के सफेद बाल उसी समय निकाले क्या ?—कहकर कुलमुराद ने उससे पूछा।

—हाँ, दाढ़ी तैयार की, सिर, गर्दन और मुँह को खूब धोया, चलने की सोच रहा था कि बाय ने कहा "कहाँ जाना चाहता है ? आज गाँव नहीं जा सकता, वहाँ बड़ी गड़बड़ी है।"

मैंने उससे पूछा "कैसी गड़बड़ी है ?"

उसने कहा "बुखारा में कदीम-जदीद का झगड़ा उठ खड़ा हुआ है। जदीदों ने झंडा उठाकर अमीर से स्वतंत्रता की माँग की है। अमीर ने उनमें से कुछ को मरवा डाला। जदीद भागकर कागान चले गये हैं। ईरानी और यहूदी उनके साथ

हैं, पास-पड़ोस के गुलाम भी उनसे मिल गये हैं।" मैंने बाय से पूछा "जदीदों ने अमीर के साथ लड़ाई की, उसका मुझसे और मेरे गाँव से क्या सम्बन्ध है?"

उसने कहा "इसके बारे में हमारे तूमान के चार हाकिम के पास अमीर और कूशबेगी का खास आज्ञापत्र आया है। काजी ने अमीन, अकसक्काल और तूमान के दूसरे बड़ों को बुलाकर कहा है कि अपने गाँव के बुरे आदमियों, विशेषकर गुलामों से सावधान रहें। इसके लिये अकसक्काल हरएक की पूछताछ कर रहे हैं। तू गुलाम है, इसलिये इस समय तेरा गाँव में जाना ठीक नहीं।

सफर गुलाम ने बाय से सुनी बातों को दुहराकर फिर शाकिर की ओर नजर करके बात शुरू की—मैं तो भूले ही जा रहा था। उस्मान पहलवान के कथनानुसार तुम्हारा नाम लेकर अकसक्कालों को खास तौर से आज्ञा दी गयी है कि शाकिर गुलाम को जहाँ भी देखो, उसे वहीं गिरफ्तार कर लो। यह क्या बात है? तुमने क्या बुराई की?

—पहिली बात यह है—शाकिर ने कहा—मैंने मालगुजारी, बटाई, बाकी तथा दूसरी बातों में अमलाकदार का विरोध किया, इसलिये वह मेरा दुश्मन हो गया, दूसरा यह कि मैं जदीदों के साथ हूँ।

—ऐ, तो यह बात है!—कहते सफर और रोजी ने आश्चर्य प्रगट किया। कुलमुराद देग साफ करना छोड़ चबूतरे पर आ शाकिर की ओर निगाह करके कहा—जदीदों को काफिर कहा जाता है, तुम्हें क्या हुआ कि उनके साथी बने?

शाकिर ने कुछ भयभीत होकर कहा—झूठी बात है, जदीद भी हमारी-तुम्हारी तरह आदमी हैं, मुसलमानजादा हैं, और खुद मुसलमान हैं। वह जनता के लाभ की माँग करते हैं, जो अमीर उसके आदमियों और मुल्लों के लाभ के विरुद्ध हैं, इसीलिये ये लोग उन्हें काफिर कहने लगे।

—जदीद जनता के लाभ की कौन-सी माँग करते हैं? —कुलमुराद ने पूछा।

—तुमसे जदीदों की माँग के बारे में कह चुका हूँ, अब उन्हें सुनाने के लिये फिर से कहता हूँ। जदीदों की माँग है मकतब और मदरसे के सुधार। मदरसों की कोठरियों के क्रय-विक्रय का रोकना, जमीन की नकदी लगान करना।

—अच्छा—कुलमुराद ने कहा—मदरसे की सुधार की माँग को अलग रखो, क्योंकि उसकी बात को मैं बिलकुल नहीं समझ सका।

नगदी मालगुजारी के बारे में बतलाइये, इससे हमारे लिये क्या लाभ?

—हमारे से तुम्हारा क्या मतलब ?

—मैं, रोजी, सफर—कुलमुराद ने कहा—यदि अधिक आदमियों की आवश्यकता हो, तो शाकिर कामतमान के वे खेत-पानीवाले हजार गुलाम घरों को गिना दूँ। यदि और भी आवश्यकता हो, तो हर गाँव के आधे आदमियों को गिनाऊँ, जो बायों के घर पर नौकरी, चरवाही, मजदूरी या बटाईगिरी करते हैं, जिनके पास कुछ भी खेत नहीं है। इनलोगों को तुम्हारी नकदी लगान से क्या लाभ और बटाईयाना बंदी से क्या हानि ?

इस विवाद में भी शाकिर की तलवार मोथी सिद्ध हुई। उसने नगदी की बात छोड़कर स्वतन्त्रता की बात शुरू की—जदीदों की एक माँग है—"स्वतन्त्रता"। यदि स्वतन्त्रता हो, तो क्या तुझे फायदा न होगा ?

—पहिले यह तो बताओ कि यह स्वतन्त्रता क्या है ? सुना है कि सबसे अधिक झगड़ा इसी के ऊपर उठा है—आश्चर्य के स्वर में अबकी बार रोजी ने पूछा।

स्वतन्त्रता यही है—शाकिर ने कहा—कि बाय और बेचारा, मुल्ला और गँवार, गुलाम और आसिलजादा, काफिर और मुसलमान सब बराबर हों। कोई दूसरे के सामने बढ़कर बात न कर सके और आज की तरह "गुलाम", "बदरग" और "बदजात" कहकर गाली न दे। स्वतन्त्रता हो जाने पर यह बात बिलकुल बन्द हो जायेगी।

—लेकिन क्या इससे हमारा पेट भर जायेगा ?—चूल्हे पर से कुलमुराद ने चोट लगायी।

पेट भले ही न भरे, लेकिन तेरी इज्जत बच रहेगी—शाकिर ने जवाब दिया।

इज्जत !—कुलमुराद ने कहा—मेरी राय में इज्जत रहती है दौलत के साथ। औलाद बाय के पुत्र दौलतमन्द हैं। इसलिये गुलाम होने पर भी सब उनकी इज्जत करते हैं, यहाँ तक कि कोई उन्हें गुलाम तक भी नहीं कहता। लेकिन हमारी इज्जत कोई नहीं करता, क्योंकि हमारे पास कुछ नहीं है।

—बाय और बचा का बराबर होना क्या है ?—सफर गुलाम ने कहा—अर्थात् यदि स्वतंत्रता हो, तो क्या जिन चीजों को मेरा मालिक खा सकता है, मैं उन्हें खा सकूँगा, वह जो पहनता है, मैं भी उसे पहन सकूँगा, जैसे मेरा मालिक अपनी बीबियों के साथ हर रात सोता है, वैसे ही मैं भी अपनी मेहरियों के साथ सो सकूँगा ? यदि स्वतन्त्रता यही है, तो उसकी माँग सबसे पहले मैं करूँगा।

यह दूसरी बातें हैं—शाकिर ने कहा—अगर तू चीजों को पैदा और हासिल कर सके तो जिस चीज को चाहे, खा सकता है, पहन सकता है, जब चाहे अपनी स्त्री के साथ सो सकता है।

—खैर, ऐसा ही सही, पैदा और हासिल करने का रास्ता ही बतलावें, जिसमें हम भी दुनिया में जरा जीवन की मिठास ले सकें।

—पैदा और हासिल करने का रास्ता मिहनत है—शाकिर ने कहा—कहावत नहीं सुनी है—"बे मेहनत राहत नहीं मिलती।"

यदि पैदा और हासिल करने का रास्ता मेहनत होती, तो रात-दिन मेहनत करने पर भी क्यों हमारे पास कुछ नहीं है, जब कि कभी अपने हाथों को सर्द-गर्म पानी में न डालते भी बाय सारे गाँव का मालिक है।

सफर गुलाम के प्रश्न से शाकिर को आजिज आये देखकर बात बदलने के लिये रोजी बोल उठा—काफिर और मुसलमानों को बराबर करने का रास्ता क्या मुसलमानों को काफिर बनाने का रास्ता नहीं है? ऐसा मानने पर मुल्लों का भय खाना और जदीदों को काफिर मानना शायद अकारण नहीं है।

—काफिर और मुसलमान के बराबर होने का यह अर्थ नहीं है कि उनमें से एक दूसरे के धर्म में चला जाय। दीन-धर्म मानने में हर आदमी की अपनी इच्छा है, किन्तु दूसरे कामों में सबको बराबर होना चाहिए।

—जैसे कैसे कामों में?—रोजी ने पूछा।

—जैसे हमारे नगरों में यहूदी किसी सवारी पर चढ़कर नहीं निकल सकते, वह मजबूर हैं कि जब कूचे में निकलें तो अपनी कमर में एक रस्सी बाँधकर निकलें। स्वतन्त्रता मिल जाने पर, काफिर और मुसलमान के बराबर हो जाने पर इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण काम बंद कर दिये जायेंगे।

—लेकिन क्या यह काम शरीयत (धर्म) के एक अंश का उच्छेद करना नहीं है?—रोजी ने पूछा।

—भूमण्डल के सारे मुसलमानों के खलीफा (गुरु) खलीफा रुम (तुर्की) ने स्वतन्त्रता दे दी है और आज्ञा निकाल दी है कि काफिर और मुसलमान बराबर हैं। यदि स्वतन्त्रता शरीयत के विरुद्ध होती, तो मुसलमानों के खलीफा क्यों ऐसा करते?—शाकिर ने इतना कह रोजी के मुँह की ओर देखा; लेकिन वहाँ संतोष के चिह्न नहीं थे। इसलिये अपनी बात को और दृढ़ करते हुए कहा—हमारे

असली वतन ईरान में भी कुछ वर्षों से स्वतन्त्रता मिली है, लेकिन वहाँ के मुसलमान धर्महीन नहीं बने। अब भी बुखारा के शीयों के मुल्ला और धर्मशास्त्री ईरान से पढ़कर आते हैं।

—अच्छी बात—कुलमुराद ने कहा—शरीयत की बात एक ओर रख के यह बतलाओ कि तुम्हारी इस स्वतन्त्रता अर्थात् काफिर और मुसलमान के बराबर होने से दुनिया को क्या लाभ होगा?

—जिस मुल्क में स्वतन्त्रता होती है, वह आबाद हो जाता है, जैसे कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद तुर्की और ईरान आज स्वर्ग-से बन गये हैं।

—रहने दो शाकिर अका अपने स्वर्ग को—कुलमुराद ने झल्लाकर कहा—तुम्हारा स्वर्ग भी मुल्लों के बखाने स्वर्ग की तरह है, जिसे आज तक किसी ने देखा तक नहीं। मसल है—"ढोल की आवाज दूर से सुहावनी।" तुम भी "स्वतन्त्रता मिलने से तुर्की और ईरान स्वर्ग बन गये" की बात को दूर से सुनकर अपना मन खुश कर लो; लेकिन वहाँ जाकर देखने की इच्छा न करना, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

शाकिर ने कुछ अभिमानपूर्ण स्वर में कहा—स्वतन्त्रता-प्राप्ति करने के बाद ये देश कितने खुशहाल हो गये हैं, इसे मैं गजतों (अखबारों) में पढ़कर कह रहा हूँ। तेरे इन्कार करने का क्या प्रमाण है?

—मैं तुम्हारे गजेत-मजेत को नहीं जानता—कुलमुराद ने कहा—मैं वह बातें कह रहा हूँ जिन्हें आँखों से देखे हैं।

—कह, मैं भी सुनूँ, कौन-सी बात तूने अपनी आँखों देखी?—शाकिर ने पूछा।

—मेरे बाप-दादों को तुर्कमानों ने लूटकर गुलाम बना बेच दिया था। बुखारा और समरकन्द में रहनेवाले कितने ही ईरानियों को अमीर लूटकर लाये और उन्हें "आक-ओयली" नाम दिया। लेकिन आजकल हमारे रेल के स्टेशनों पर जो नंगे, भूखे ईरानी कुलीगिरी कर रहे हैं, इनको कौन यहाँ लाया? यदि स्वतन्त्रता के बाद ईरान स्वर्ग बन गया होता,, तो उस स्वर्ग से ये हमारे भाई क्यों भागकर यहाँ टुकड़े-खोरी कर रहे हैं? कुलमुराद की बात सुनकर शाकिर का मुँह लाल हो गया। उसे कोई जवाब न सूझ पड़ा और सिर झुका लिया। कुलमुराद ने उसके बोझ को हलका करने के लिये बात को बदलते हुए कहा—इन बातों से पेट नहीं भरेगा शाकिर अका! पेट भरेगी हमारी यह खिचड़ी—आश, उठो, हाथ धोओ, मैं इसे परोस रहा हूँ।

× × ×

कुलमुराद ने दो कठौतों में आश (खिचड़ी) निकाली, दो कटोरों में दही भी और हरएक कठौत में लम्बी बेंट का एक चम्मच रख दिया। सफर गुलाम दस्तर-खान बिछा रहा था। उसने कुलमुराद के हाथ से एक कठौत लेकर शाकिर और रोजी के सामने रख दिया। दूसरी कठौत को सामने रखकर कुलमुराद और सफर बैठ गये। शाकिर का दिल बहस से तंग हो गया था। अब भी वह दस्तरखान की ओर न देखकर इधर-उधर नजर दौड़ा रहा था। रोजी ने उसका ध्यान खींचते हुए कहा—आश की तरफ निगाह कीजिये।

—बहुत अच्छा, तुम खाना शुरू करो—शाकिर का उत्तर कुछ उदासी लिए हुए था।

कुलमुराद नम्र स्वर में बोला—शाकिर अका, कहावत है "छोटे अपराध करते हैं और बड़े क्षमा करते हैं।" यदि मुझसे कोई अपराध हुआ, तो क्षमा कर देना, कृपा करके हम गरीबों की आश स्वीकार करें।

कुलमुराद की नम्रता का प्रभाव शाकिर पर पड़ा। उसने खाना ही नहीं शुरू किया, बल्कि लोगों में छायी उदासी को हटाने का प्रयत्न करते कहा—हमलोगों के लिये यह दो कठौत आश पर्याप्त है। कामिल और यूसुफ के लिये भी एक कठौत काफी होती, फिर क्यों देग भर के पकाया?

—हम यहाँ प्रतिदिन आश नहीं पकाते—कुलमुराद ने कहा—सप्ताह में एक या दो बार पकाते हैं, उस दिन ताजा गर्म-गर्म आश खाने को मिलती है, बाकी को रख छोड़ते हैं और कई दिनों तक खट्टा-खट्टा खाते हैं। खट्टी आश गर्मी के दिनों में विशेषकर बहुत स्वादिष्ट मालूम होती है।

दो आदमियों के बीच में एक चम्मच था, जुलाहे की ढरकी की तरह वह इधर से उधर चला रहा था। हरएक आदमी बारी-बारी से चम्मच लेकर दो कौर खा उसे अपने साथी के सामने रख देता। लेकिन सफर गुलाम सुस्ती से हाथ उठा रहा था। जितने समय में दूसरे चार कौर खा जाते, उतने में वह मुश्किल से दो खा पाता। कुलमुराद ने ताना मारते हुए कहा—जल्दी-जल्दी खा, क्यों बच्चों की तरह चलप्-चलप् करके खा रहा है?

—यदि तुझे अच्छा नहीं लगता, तो पहले अपना पेट भर ले, जो बच रहेगा उसे मैं पीछे खाता रहूँगा—सफर गुलाम ने कहा।

शाकिर भी बीच में बोल उठा—जदीदों की एक अच्छी आदत है कि

खाना खाने के लिये हर एक का चम्मच और कटोरा अलग-अलग होता है, जिससे जल्दी खानेवाला जल्द खा लेता है और धीरे खानेवाला धीरे-धीरे। इस प्रकार एक दूसरे के खाने में बाधा नहीं पड़ती।

सफर गुलाम ने कहा— हमें ऐसी आदत की जरूरत नहीं। आश मिलनी चाहिये, चम्मच न भी हो तो कोई हर्ज नहीं, हाथ तो अपने पास है ही, और कठौत के किनारे मुँह लगाकर के भी सुरक लेंगे।

तू लोगों के फायदे का ख्याल नहीं करता, सदा केवल अपना ख्याल करता है। यदि कोई बात अपने लिये आवश्यक है, तो आवश्यक समझता है और अनावश्यक है तो अनावश्यक —कहकर शाकिर ने सफर को जवाब दिया।

—क्यों न ऐसा हो—सफर गुलाम ने कहा—"हर आदमी अपने मुर्दे के लिये रोता है। जदीदों की माँगों में सरसों भर की हमारा लाभ दिखला दो तो सबसे पहले हम जदीद बन जायेंगे।

इसपर शाकिर ने कहा—जदीदों का घोषणा-पत्र मेरी खुर्जी में है। खाने के बाद मैं उसे सुनाऊँगा। शायद उसमें तेरे लाभ की चीजें भी हैं।

—क्षमा करना शाकिर अका, तुम्हारी इस बात पर एक कहानी याद आ गयी—कुलमुराद ने कहा—कहानी कह—मैं भी सुनूँ—शाकिर ने कहा।

कुलमुराद ने कहानी शुरू की—तूमान वाबकन्द में एक गाँव है, जिसे शीरीनों का गाँव कहते हैं। एक शीरनी के पास सफेद गदहा था, जिसके झाड़ू-जैसी पूँछ भूमि तक पहुँचती थी। शीरनी गदहे को बेचना चाहता था। वाबकन्द का बाजार लगने से एक दिन पहले उसने गदहे को साबुन से धोया, मालिश और खरहरा किया, पूँछ में कंघी की और उसे बाजार के लिये तैयार किया। दुर्भाग्य से रात को भारी वर्षा हो गयी और रास्ते में कीचड़ हो आया। शीरनी चिन्ता में पड़ गया, क्या करे। पैसे की बहुत जरूरत थी, इसलिये अगले बाजार तक के लिये रुक नहीं सकता था; लेकिन यदि बाजार ले जाता तो गदहे पर कीचड़ पड़ जाता; विशेषकर कंघी से सँवारी पूँछ, जो कि तरुणियों के सँवारे केशों की तरह खरीदारों को अपनी ओर खींचने में समर्थ थी। बहुत सोचने पर भी उसे कोई उपाय न सूझ पड़ा। अन्त में उसने मुहम्मद दाना (लाल बुझक्कड़) के पास जाने का निश्चय किया; क्योंकि वही ऐसी गुत्थियों को सुलझा सकता था। अभी मुहम्मद दाना बिस्तरे से उठा नहीं था कि उसने तड़के ही जाकर दरवाजा खटखटाया और सारी बात

कहकर उससे सलाह पूछी। मुहम्मद दाना पहिले तो बहुत गुस्सा हुआ और बोला—"यदि मैं मर जाऊँ तो तुम लोग क्या करोगे? इतने आसान काम में भी तुम्हारी बुद्धि काम नहीं करती?" डाँट-फटकार कर लेने के बाद जरा ठंडा हो उसने कहा—"गदहे की पूँछ काटकर खुर्जी में रख लो और उसपर सवार हो बाजार चले जाओ। फिर यदि उसकी पूँछ पर एक कुरकी कीचड़ भी पड़ जाय तो मैं मुहम्मद दाना नहीं।" शीरनी ने सलाह के लिए मुहम्मद दाना को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और अपनी छोटी बुद्धि पर अफसोस किया।

घर पर पहुँच पूँछ को काटकर खुर्जी में रखकर उसने बाजार का रास्ता लिया। बाजार में जो भी दलाल, सौदागर या खरीदार खर को देखता, कह उठता—"खर बहुत अच्छा है, अफसोस, पूँछ नहीं है।" शीरनी ने चट जवाब दिया—"आका, सौदा पक्का कर डालो, पूँछ की पर्वाह न करो, वह खुर्जी में सुरक्षित है।—"कुलमुराद ने कहानी समाप्त करते हुए शाकिर गुलाम से कहा—मुझे डर है कि जदीदों के घोषणापत्र में भी हमारा लाभ इसी कहानी की तरह कहीं खुर्जी में नहीं। कुलमुराद की कहानी जिस वक्त चल रही थी, सफर गुलाम इसी समय पेट-पूजा में लगा हुआ था। अब उसने बात आरंभ की—मैंने इससे भी विचित्र कहानी सुनी है। उन्हीं शीरनों में से एक के पास बड़ी सींगोंवाली एक दुधार गाय थी। एक दिन भूखी रहने के कारण गाय सींग में बँधी रस्सी को तोड़कर गोशाला से बाहर निकल गयी। बाहर एक कुण्डे में ज्वार की बालों को देख मुँह लगाकर खाने लगी। चबाने के लिये जब उसने मुँह ऊपर उठाना चाहा, तो सींग कुण्डे में फँस गये। गाय घबराकर कुण्डा उठाये इधर-उधर दौड़ने लगी। तब तक शीरनी वहाँ पहुँच गया। बहुत सोचा और कुण्डे को गाय के सिर से निकालने के लिये बहुत कोशिश की, लेकिन सब बेकार। वह डरने लगा "अब घर सत्यानाश हुआ, कुण्डा टूटकर अवश्य चूर-चूर हो जायेगा।" इसी समय उसे मुहम्मद दाना (लाल बुझक्कड़) का स्मरण आया। उसने दौड़कर उससे सलाह पूछी। मुहम्मद दाना ने बताया "कुण्डे को सुरक्षित निकाल लेना बहुत आसान है। गाय का सिर काट ले वह बिना टूटे ही अलग हो जायेगा।" शीरनी ने जल्दी-जल्दी घर जा मुहम्मद दाना की सलाह को कार्य-रूप में परिणत किया। सायंकाल हाथ में मटकी ले शीरनी की बीबी गाय दूहने आयी और वहाँ बेसिर की गाय के धड़ को देखकर चिल्लायी "सदेश, गाय का कल्ला कहाँ गया?" शीरनी ने जवाब दिया—"ज्यादा

चिल्ला मत बेकूफ, जा दूध दूहने लग, कल्ला कुंडे में रखा है।" शाकिर अका, मुझे डर है कि जदीदों की माँगों में हमारे लाभवाली पूँछ न खुर्जी में है न हमारे लाभ-वाला कल्ला कुंडे में है।

दोनों कहानियों को सुनकर शाकिर की देह में आग लग गयी और अब वह वहाँ ठहरने के लिये एक क्षण भी तैयार नहीं था। अभी भोजन समाप्ति पर फतिहा भी न पढ़ा गया था। लेकिन शाकिर बिना किसी की ओर निगाह किये अपनी जगह से उठा। खुर्जी बगल दबा, जीन हाथ में लिये, घोड़े के पास जाकर उसने कसना चाहा। रोजी ने नर्मी के साथ कहा—क्यों रंज हो रहे हो एक जरा-सी बात के लिये शाकिर अका!

लेकिन शाकिर ने मुड़कर रोजी की ओर देखा भी नहीं। कुलमुराद ने "जरा ठहरो, मैं घोड़ा कसे देता हूँ" कहते उसके हाथ से जीन लेकर कसना चाहा; लेकिन शाकिर ने उसे एक ओर धकेल दिया, स्वयं जीन कसी, लगाम लगायी। खुर्जी को जीन पर रखा, फिर वह घोड़े पर सवार हो गया। अब दिल के सारे —फफोलों को फोड़ते बोला "नादानो, मूर्खो, तुम्हारे जैसे बेवकूफों को दुनिया का लाभ समझाना असंभव है" और वह जिधर से आया था, उसी ओर घोड़े को दौड़ाते चला गया। दस मिनट बाद उसके घोड़े के खुरों से उठी धूल बालू के टीलों पर बैठने लगी।

७

बोलशेविक हौआ

१९१८ की जनवरी का अंत था। दो दिन लगातार हिमवर्षा होने के बाद आज वह रुक गयी थी। आकाश कारखाने से बंद कर ताजा निकले नीले कीचड़ की तरह निर्मल था, जिसमें तारे रुपहली रूमालों में लिपटे विद्युत् प्रदीपों की तरह चमक रहे थे। यद्यपि मैदान, दर्रा, राह, कूचा, छत, टीले सभी स्थान हिम-पूर्ण और हिमाच्छादित थे, किन्तु पहलवान अरब की विशाल हवेली को साफ करके सजाया गया था। हवेली के सामने लाल बालू बिछा था, जिसमें बर्फ पर पिघलने का डर नहीं था। रेगिस्तान की ओर खुलते फाटक से जब-तब हवा बर्फ की गर्द लाकर बिखेर

देती थी। उसके अतिरिक्त वहाँ उसका कोई चिह्न न था। घोड़ों के झूल और जीन को उतारकर पैंतीस बालारी साईसखाने में बाँधकर उनके सामने चारा डाल दिया गया था। साईसखाना घोड़ों से भरा था। जीनखाने की छत पर अंगीठी जल रही थी और लटकती गेस लालटेन अपने प्रकाश को चारों ओर फैला रही थी। अंगीठी के किनारे बैठे साईस चाय और हुक्का पीते चख-चख कर रहे थे। साईस-सरदार अपनी आप-बीती सुना रहा था। कैसे वह जवानी में एक समय जूए में हारकर बंदा (बंधुआ) बना, फिर उसी अवस्था में चौताल (ऋण) ले उस पैसे से अपने प्रतिद्वंद्वियों को हरा बंदगी से मुक्त हुआ। वह अपनी बात को नमक-मिर्च लगाकर सुना रहा था। बात के बीच-बीच में जीनखाने के भीतर से अनेक प्रकार के शब्द आ रहे थे "हाय जानम्" "ऐसी सर्दी में, ऐसे छोटे-से घर में इतने आदमियों को बंद करके रखना! इस तरह बंद करके रखने से जल्दी मार डालना अच्छा है, जिसमें इस सासत से जान बचे।"

उन करुण शब्दों ने साईसों के सरदार की कथा में बाधा डाली और उसने फटकारते हुए कहा—"चुप सो जाओ, कल बुखारा भेजे जाओगे, वहाँ अमीर के आर्क (किले) के आबखाना (जेल) में एक पक्का घर है, वहाँ खूब गरम होकर आराम करना।"

—क्यों इन आफत के मारों पर हँसते हो, क्यों इनके टूटे दिल को और तोड़ते हो? एक साईस ने उससे कहा— जो आफत आज इनके ऊपर आयी है, कौन जानता है, कल वही हमारे सिर पर भी न आये।

—तुझे मुझसे बात करने का अधिकार नहीं—सरदार ने कहा—तू अभी नया-नया साईस बना है, अभी तुझे इस काम का कायदा-कानून नहीं मालूम। वर्तमान अमीर आलम खाँ उस समय करमीनी में तूरा (राजकुमार) हाकिम थे। उस समय मैं तूरा के साईसखाने में काम करता था। एक दिन इमामकुल तूकसाबा ने मेरे नौचे (छोकरे) से मजाक कर दिया। मैंने यह बात सुनी। उसी समय मैं गुस्सा होकर बाबाखाना[1] चला गया। उसी दिन तूरा दरबार के सारे साईस और अराबा कश (कोचवान) भी काम छोड़कर बाबाखाना चले गये। घोड़ों और अराबों को कोई देखनेवाला नहीं रह गया। जब इसका समाचार तूरा को मिला,

[1] साईसों का पंचायती स्थान, जहाँ हड़ताल करने पर वह जाकर रहते थे।

तो उसने इमाम कुल को बुलाकर फटकारा और कहा—"इन हरामजादों, कमीनों, मुँहजोरों से मेल करने का कोई रास्ता निकाल।" इमामकुल ने बाबा को बुलाकर उसे एक जामा दिया और मेरे लिये भी अपने पहिनने का एक जामा भेजा। फिर हमने सुलह की और काम पर चले गये। देखा हमारे जोर को?

नौन्चे ने लाकर हुक्का दिया, सरदार ने फूँक लगाकर खाँसते-खाँसते फिर कहा—इस समय जो तेरे अमलाकदार, काजी, हाजो लतीफ दीवानबेगी बाय के मेहमान-खाने में बैठे गरीबों पर इतना रोब गाँठ रहे हैं, जरा हममें से किसी पर जबान-दराजो तो करें। हम सभी काम छोड़कर चल देंगे और उनके सारे घोड़े और अराबे बे-आदमी के हो जायेंगे।

—उस समय—एक साईस ने कहा—हाजी-लतीफ दीवानबेगी को जूआ गर्दन में डालकर स्वयं अराबा खींचना पड़ेगा।

—उसके लिए जूए की भी जरूरत नहीं—दूसरे साईस ने कहा—उसने अपने साफे को जूए की तरह—हैकल की तरह गर्दन में लपेट रखा है।

—बीच में बोलते हुए एक कोचवान ने कहा—आः, यदि इसे एक-दो आदमी खींच सकते तो अतिरिक्त घोड़े के साथ एक और बलिष्ठ घोड़े को भी लगाकर बड़ी कठिनाई से घसीटकर लाया हूँ।

—खैर, हर्ज नहीं—सरदार ने कहा—यदि हाजी लतीफ दीवानबेगी अकेला न खींच सका, तो उसके साथ काजी को भी जोड़ देना।

—अमलाकदार को जोड़ें तो और भी अच्छा, क्योंकि उसकी गर्दन और भी मोटी है—दूसरे साईस ने कहा।

—लेकिन सचमुच क्यों ये लोग रेल के इन लोहों को एक तूमान से दूसरे तूमान घसीटते फिर रहे हैं?—एक और साईस ने कोचवान से कहा।

—मैं क्या जानूँ?

—मैंने मेहमान इन्जिलनार इंजीनियर से पूछा था, तो उसने कहा—"जनाब आली तूमानों में आग-गाड़ी का रास्ता बिछानेवाले हैं"—एक नौचे ने कहा।

सरदार ने कहा—तेरे जनाब आली ने दर···के लिये पानी का रास्ता बनाकर दे दिया न, जो अब तूमानों में वह बलार बनाकर देगा।

खाकर छोड़ा और अब ठंडी हो गयी आश मेहमानखाना से साईसखाने में आयी। साईसों की गर्मागर्म बहस बंद हो गयी। सब हाथ धोकर खाने लगे। चारों

तरफ नीरवता छा गयी, जिसको भंग करते हुए कभी-कभी जीनखाने से आवाज आती थी "वाय जानम्, हाय मैं मरा।"

× × ×

पहलवान अरब का ग्यारह बालारवाला मेहमानखाना आदमियों से भरा था। उसकी बगल की देहली और दूसरे मेहमानखाने की वही हालत थी। मेहमानखाने के प्रधान स्थान पर सन्दली (अंगेठीवाली चौकी) के पास काजी, रईस, अमलाकदार और मीरशब अर्थात् शाफिरकाम तूमान के चार हकिम पाँती से बैठे थे। इसी पाँती में, किन्तु सन्दली से बाहर तूमान के मुफ्ती और कुछ स्थानीय मुल्ला बैठे हुए थे। काजी की बायी ओर पास की सन्दली के किनारे एक मध्यम वयस्क, ऊँची भौंह, काले मुँह, काली दाढ़ीवाला आदमी बैठा था, जिसकी गर्दन में साफा लिपटा हुआ था और जिसके साथ बात करते वक्त काजी हर बार सिर नीचा करके सम्मान प्रदर्शित करता था। उस आदमी की बगल में दो अपरिचित व्यक्ति बैठे थे। इन दोनों के सिरों पर बुखारी सैनिकों की तरह शलगमी साफा और शरीर पर अतलसी जामा था; किन्तु उनकी गतिविधि बुखारी सैनिकों या आदमियों-जैसी न थी। यद्यपि वे चार हाकिमों के सामने बैठे थे, किन्तु अदब-कायदा को छोड़कर अपने पैरों को कुछ फैलाये बालिश का सहारा लिये, जामों की गर्दन को गले में लिपटाये बैठे थे।

मेहमानखाने की दूसरी ओर दरियों पर तूमान के बाय और बड़े-बूढ़े हैत अमीन, बाजार अमीन, नार पहलवान, उरमान पहलवान और दूसरे लोग बैठे हुए थे। मेहमानखाने के नीचे देहली (ओसारे) के पास एक आदमी था। उसकी गर्दन और पेट मोटा, चेहरा भरा, रंग साँवला, दाढ़ी कुछ-कुछ सफेद होती, भौंहें मोटी और आपस में मिली, पपनियाँ लम्बी, आखें बड़ी और काली थीं। इस आदमी के शरीर पर लम्बा-चौड़ा सफेद सूफी कुर्ता, ऊपर से फूलदार रूई भरा साटन का जामा, कमर में नीला रेशमी अफगानी कमर बंद बँधा था, जिसके ऊपर से एक हलके नीले रंग का फिरंगी चकमन भी उसने पहन रखा था। उसके सिर पर सफेद पगड़ी थी, जिसे बुखारा के बायों, मुल्लों और सैनिकों की तरह नहीं, बल्कि सिर के आगे की तरफ लटकाये लगा रखा था। वह दोनों घुटनों को मोड़े बैठा, हाथों को छाती पर लिये अपनी आँखों को चार हाकिम की ओर से जरा भी नहीं हटाता था। आदमी शकल-सूरत में बुखारा के अरबों-जैसा और मोटाई में

गोश्त-चर्बी, दूध-दही खाकर मोटे हुए बुखारी तूमानों के वायों-जैसा था । यह था हवेली का मालिक और मजलिस का गृहपति पहलवान अरब ।

यद्यपि जाड़े की ऋतु और कमरा बहुत बड़ा था, किन्तु फरास के कोयले की अंगेठियाँ वहाँ पाँती से रखी हुई थीं, छत से लटकती बहुत तेज लालटेन जल रही थी, जिससे मेहमानखाना तनूर की तरह गरम मालूम होता था ।

ओसारे में लटकते लैम्प के प्रकाश में कुछ फटे जामेवाले किसान और चरवाहे बैठे हुए थे । वे एक दूसरे से सटकर गर्दन झुकाये द्वार से मेहमानखाने के भीतर की ओर देख रहे थे ।

मेहमानों के खाना खतम कर लेने पर दस्तरखान को हटा उनकी जगह अंगेठियाँ रख दी गयीं, फिर वाय ने पीठ की ओर मुँह करके खिदमतगारों को चाय के लिये हुक्म दिया । जिसे तुरन्त कार्य-रूप में परिणत किया गया । हरी चाय की चायनिकों, प्यालों और तश्तरियों को लाकर वाय के पास बैठे रेशमी कमर-बंदवाले एक १७-१८ साल के लड़के ने सामने रखा । लड़के ने चाहा कि चायनिक से प्याले में चाय डाले ; किन्तु काजी ने मना करते हुए कहा—चायनिकों को सब जगह रख दे, लोग चाय खुद डाल लेंगे ।

लड़का दो-दो आदमी पीछे एक-एक चायनिक और एक प्याला रखने लगा । जब वह उन अपरिचित व्यक्तियों के सामने भी एक चायनिक और एक प्याला रखने लगा, तो बगल में बैठे गर्दन में साफा लपेटे आदमी ने धीरे से कहा—"यहाँ एक प्याला और लाकर दे ।" लड़के ने वहाँ एक प्याला और रख दिया । फटे कुर्तेवालों को इन अपरिचित व्यक्तियों के रंग-ढंग को देखकर पहिले से ही आश्चर्य हो रहा था, उनके पास एक प्याला और रखने पर उनका आश्चर्य और बढ़ा । उनमें से एक ने आँख को बिना हटाये दूसरों से कहा :—

—क्या इनमें से कोई बीमार है कि दोनों एक प्याले में चाय नहीं पी सकते ?

—क्या देखता नहीं, इनके सारे काम विचित्र हैं—दूसरे ने कहा ।

—क्या काम ?

—चार हाकिम के सामने भी पैरों को फैलाकर ऐसे बैठे हैं, जैसे अपनी माताओं के साथ लेटे हों ।

दोनों अपरिचित आदमियों में से एक ने अपनी केहुनी को बालिश से उठा सिर को सीधा कर बगल में गर्दन से साफा लपेटे आदमी के कान में कुछ

फुसफुसाया, फिर उस आदमी ने अपने पास बैठे काजी के साथ फुसफुस की। फिर अपरिचित व्यक्ति की ओर मुँह करके सिर को नीचे हिलाया। अपरिचित आदमी ने जामे को थोड़ा-सा हटाकर नीचे की पोशाक की छातीवाले जेब से चाँदी का डिब्बा और दियासलाई निकाली। यह देख दूसरा अपरिचित आदमी केहुनी को ग्रालिश से हटाकर उठ बैठा। दोनों ने एक-एक सिगरेट ले, दियासलाई ले पीना शुरू किया। यह देखकर देहली के बाहर बैठे फटे जामावालों के आश्चर्य की सीमा न रही।

—एरगश अका ने देखा—देहली की चौकठ पर छाती रखकर झाँकनेवाले आदमी ने अपने साथी से कहा।

—देखा— दूसरे ने जवाब दिया, जो कि उस आदमी के सिर पर से झुककर मेहमानखाने के अन्दर झाँक रहा था।

—यह काजी के सामने पाप्रोस (रूसी सिगरेट) पी रहे हैं।

—इससे भी अधिक आश्चर्य की बात नहीं देखी ?

—सो क्या ?

—जामा हटाने पर भीतरी पोशाक दिखलाई पड़ी।

—हाँ हाँ, काला गर्दनबंद (टाई) और सफेद कालर क्यों ?

—हाँ।

—देखा, हो सकता है ये जदीद हों। कहते हैं, जदीद भी इसी तरह की पोशाक पहिनते और सिगरेट पीते हैं।

—तू निरा भोंदू है। जब अमीर सारे जदीदों को मार रहा है, तो उसके आदमी कैसे दो जदीदों को साथ लिये घूमेंगे और कैसे मेहमानखाने में काजी के सामने उन्हें सिगरेट पीने देंगे ?

—तो ये कौन हैं ?

—हो सकता है, ये हिन्दुओं में से मुसलमान बने हों। कहते हैं, जब जदीद बुखारा छोड़कर भाग गये, तो सभी काफिर मुसलमान हो गये। इनका जामा और साफा नौमुस्लिमों-जैसा है और हिन्दुओं की तरह इन्होंने दाढ़ी मुड़ा रखी है।

—नहीं, हिन्दुओं का चेहरा काला, आँख काली और भौंहें भी काली होती हैं और इनका चेहरा सफेद, आँखें नीली और भौंहें हलकी हैं। इनकी सूरत हिन्दुओं से बिल्कुल नहीं मिलती।

एक सिगरेट पीनेवाले ने एक हाथ को सन्दली पर रख झुककर जली सिगरेट को बाहर फेंकना चाहा। उसी समय अपनी ओर निगाह किये देहली के बाहर से फुसफुसाते फटे कपड़ेवालों पर उसकी निगाह पड़ी। देखते ही उसके लिलार पर सिकुड़न पड़ गयी और सिगरेट पीने से चेहरे पर छायी प्रसन्नता लुप्त हो गयी। इस समय गर्दन में साफा लपेटे आदमी काबी से अमीर की एक कूचकारी घोड़दौड़ में बहादुरी दिखलाने की कहानी बड़े जोश के साथ कह रहा था। अपरिचित व्यक्ति ने उसे खींचकर कान में कुछ कहा। साफेवाले ने सिर को नीचे-ऊपर हिलाया, फिर देहली के पास बैठे गृहपति को इशारे से बुलाया। बाय ने उठकर दौड़ते हुए जा उसके मुँह के पास अपना कान लगाया। साफेवाले ने दो-तीन वाक्य कान में कहे। बाय दौड़कर देहली में पहुँचा और फटे कपड़ेवालों की ओर निगाह करके बोला:—

—तुम यहाँ क्या करते हो? एक जगह मेहमान आया और कौओं की तरह लाश के किनारे जमा हो जाते हो। क्यों नहीं अपने घर जाकर आराम से सोते?

बाय की फटकार सुनकर वह एक दूसरे को धक्का देते हुए बाहर चबूतरे पर चले गये। उनमें से एक ने कहा—यदि बाय ने मुझे कौआ बनाया, तो अपने मेहमानों को लाश भी तो बनाया।

—मेहमान इसकी लाश है तो बाय खुद लाशखोर है।

इसका उलटा भी हो सकता है— बाय लाश और मेहमान लाशखोर।

अपने नौकरों को अब भी वहाँ देखकर बाय ने कहा—तुम भी जाओ और मालों को चारा दो। यदि काम न हो तो सो जाओ, जिसमें कल सबेरे ही उठकर काम में जा सको। फाटक में ताला लगाना न भूलना। यहाँ चाय और दूसरे कामों के लिए एरगश और सफर गुलाम रह जायेंगे।

दूसरे भी देहली से चले गये और वहाँ सिर्फ सफर गुलाम और एरगश रह गये। वे भी वहाँ से हटकर पीछे की ओर जा बैठे, जिसमें मेहमानों की निगाह उन-पर न पड़े।

बाय लौटकर जब मेहमानखाने में आया तो फिर साफावाले आदमी ने उसे अपने पास बुलाकर कानों में कुछ कहा। बाय "अभी" कहते दौड़ता देहली में आया, फिर सामनेवाले दूसरे मेहमानखाने के द्वार को खोलकर वहाँ खड़ा हुआ। यह मेहमानखाना नौबालार का था और इसकी छत से ४० बत्तियों की रोशनीवाली

लालटेन जल रही थी। बाय के जाने के दो मिनट बाद दोनों अपरिचित व्यक्ति साफेवाले आदमी के साथ अपनी जगह से उठे। उनके उठने पर काजी ने भी उठकर "कहाँ पधार रहे हैं" कहकर अपने हाथों को उनकी ओर बढ़ाया। उन्होंने भी अपने हाथों को काजी की ओर बढ़ाते कहा, "अभी आ रहे हैं, यहाँ दीवानबेगी से दो-एक बात करने जा रहे हैं।" उनके बाहर चले जाने पर काजी अपनी जगह बैठ गया। वहाँ बाय ने अपने एक हाथ को सम्मान-प्रदर्शन करने के लिये छाती पर रख दूसरे से नौबालारवाले मेहमानखाने की ओर इशारा करके कहा—"वह यहाँ विराज रहे हैं।"

दूसरे मेहमानखाने में जाकर अपरिचित व्यक्ति ने साफेवाले आदमी को निगाह करके कहा—वत्, क्या हाल है, गस्यदिन (मिस्टर) हाजी लतीफ दीवानबेगी? भुक्खड़ किसानों को ऐसी बैठक के पास आने देना खतरे से खाली नहीं है। कौन जानता है, इनके भीतर बोलशेविकों के जासूस भी हों।

—ये हानिकारक आदमी नहीं होंगे, नहीं तो बाय अपने घर के भीतर आने नहीं देता। खैर, अब तो उन्हें देहली से बाहर निकाल दिया।

—अब भी दो-एक संदिग्ध आदमी बरांडे में दिखलाई पड़े।

हाजी लतीफ ने देहली के द्वार को खोलकर बाय को अन्दर बुला द्वार बंद कर उससे कहा—मैंने तुमसे कहा था कि बाहरी आदमियों को देहली से निकाल दो; अब भी दो संदिग्ध आदमी वहाँ दिखलाई पड़ रहे हैं।

—सबको निकाल दिया। ये दोनों मेरे आदमी हैं। इन्हें चाय और दूसरे काम के लिये रख छोड़ा है—बाय ने उनकी ओर खातिरजमई करते हुए कहा—केवल उसी हवेली और उसी गाँव में नहीं, बल्कि सारे तूमान में कोई संदिग्ध आदमी नहीं रह गया है। जो कोई भी संदिग्ध आदमी दिखलाई पड़ता है, हमारे हाकिम उसी समय उसे पकड़कर बुखारा भेज देते हैं। आज रात को भी कितने ही संदिग्ध आदमियों को लाकर मेरे जीनखाने में बंद कर रखा है।

—कल सबेरे उन्हें भी बुखारा भेज देंगे—कहकर हाजी लतीफ ने बात का समर्थन किया।

—नू, निच्चिओ (कोई बात नहीं) दूसरे कामों की बात करें—अब तक चुप दूसरे अपरिचित आदमियों ने कहा।

—लद्ना (हाँ)—कहते प्रथम अपरिचित व्यक्ति ने हाजी लतीफ की ओर निगाह करके पूछा—व्याख्यान कैसे शुरू किया जाय ?

—मेरी राय में—दीवानबेगी ने कहा—मैं उठकर पहले जनाब आली का सलाम लोगों को दूँगा, फिर आप लोगों का परिचय कराऊँगा, दूसरी बातें आप लोग स्वयं कहें तो अच्छा। हमारे यहाँ कहावत है "बात लुकमान के मुँह से अच्छी" आप दोनों मुसलमानी भाषा को भी खूब जानते हैं।

—लद्ना, बहुत अच्छा।

—मैं आपका नाम भूल गया—दीवानबेगी ने पूछा।

—निकोलाय पेत्रो विच्।

—निकले पेतोरो विच्, निकले पेतोरो विच्। बहुत अच्छा नाम है, जनाब इम्पेरातर (राजाधिराज) महान् का सा नाम। और भी कोई छोटा नाम ?

—पेत्रोफ्—कहते जवाब दे अपने साथी की ओर मुँह करके वह मुस्कुरा उठा।

—पेत्रोफ्, पेत्रोफ्, पेत्रोफ्—कहते दीवानबेगी ने दुहराकर फिर कहा—पेत्रोफ् अच्छा छोटा-सा नाम है। इसे रूसी न जाननेवाले हमारे-जैसे आदमी भी याद रख सकते हैं।

—मेरा नाम अलेक्सान्द्रर, अलेक्सन्दरो विच् कातोफ्—दूसरे अपरिचित आदमी ने बिना पूछे ही अपना नाम बतलाया और साथ ही यह भी कहा—अलेक्सन्द्र का मुसलमानी जबान में अस्कन्दर या सिकन्दर होता है। जिस समय हम ताशकन्द में पढ़ रहे थे, उस समय मेरे दमुल्ला जनाब अस्भा मोफ ने ऐसा ही बतलाया था।

—आपका नाम भी बहुत अच्छा है। यह तो बिलकुल मुसलमानी नाम है, इसलिये कभी भूल नहीं सकता। यह बादशाह सिकन्दर दो-सींगे (जुलकरनैन) का नाम है और इनका नाम महान् इम्पेरातरका है। खुदा चाहेगा तो हमारा काम बहुत अच्छा होगा। आप लोगों के नाम बहुत ही शुभ सगुनवाले हैं।

—अच्छा, अब मेहमानखाने में लौट चलें कातोफ् ने कहा और तीनों देहली से होते मेहमानखाने में चले गये।

उनके आने पर सब खड़े हो गये। पेत्रोफ और कातोफ के अपने स्थान पर

पहुँचने पर काजी ने फिर उनसे हाथ मिलाया। पेत्रोफ़ ने मुस्कराते हुए अपने हाथ को दिया; लेकिन कालोफ़ अनजान बन अपनी जगह बैठ गया।

× × ×

दीवानबेगी ने काजी के कानों में कुछ कहा, फिर खड़े हो अपने सम्मान में खड़े लोगों को बैठने का इशारा करके बोलना शुरू किया—शाफ़िरकाम नूमान के सम्माननीय सज्जनो, मैं तुम्हारे पास जनाब आली के दिनपालक श्री-सलाम को लाया हूँ (मेहमानखाने में जय-घोष हुआ "जनाब आली विजयी हों, श्री-शेर खुदा और बहाउद्दीन बला गर्दा उनकी कमर बाँधें")

देहली में खड़े सफ़र गुलाम ने दीवानबेगी की बात सुनकर अपने दोस्त एरगश से कहा—क्या हम और तुम भी अमीर के लिये दीन हैं?

—अलबत्ता—एरगश ने कहा—जिस देश में बादशाही होती है, वहाँ दीन भी होते हैं।

—यदि ऐसा है तो अमीर हमारे साथ दीन-पालन का क्या काम कर रहा है?

—इसे मेहमानखाने में बैठे इन महानों से पूछ—कहते एरगश हँस पड़ा।

दीवानबेगी ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा—हमारे हजरत ने श्री-मुख से कहा है। "हमारे सच्चे दास और राजभक्त प्रजा, हमारी कृपा के पात्र होकर मालूम करें कि हमारे राज्य में मुसलमानी काम का चलन है; लेकिन तुर्किस्तान के मुसलमान दीन-धर्म छोड़ खून गिरा रहे हैं। भगवान की दया से हम आशा रखते हैं कि अल्ला के रहम और हमारी सच्ची प्रजा की सहायता से जल्दी ही उस तरफ़ को भी हम मुसलमानाबाद बना लेंगे।"

"हमारे प्राण न्योछावर हों"—कहते अमीन अकसकाल और मुल्ला हल्ला मचाने लगे।

हाजी लतीफ़ ने फिर कहा—तुम कुलीन और सम्माननीय लोग हो। तुम यहाँ हमारे हजरत के अमर राज्य की छत्रच्छाया में अपने दीन, अपने धन, अपने प्राण और अपनी प्रतिष्ठा के स्वामी बने आराम से जीवन बिता रहे हो, लेकिन तुर्किस्तान के मुसलमान अपनी सारी चीजों को खोकर बोलशेविकों के हाथ से खराब हो रहे हैं। इसके बारे में पेत्रोफ़ तूरा (राजकुमार) और अस्कन्दर तूरा खुद अपनी आँखों देखी बातों और कामों को तुमसे कहेंगे। ये दोनों हजरात महान् इम्पेरातोर

के बड़े अफसर हैं और बोलशेविकों के हाथ से भागकर अब जनाब आली की सेवा कर रहे हैं।

पेत्रोफ् ने अपनी जगह से उठ सभा की ओर निगाह करके बिना सलाम किये कहना शुरू किया—सदस्यवृन्द ! आप इस यूलुस (इलाके) के महान् कुलीन, धनीमानी आलिम विद्वान् हैं, जनाब आली अमीर बुखारा शरीफ की कृपा से आराम की जिन्दगी बिता रहे हैं। लेकिन हमारी रूसिया और तुर्किस्तान में ऐसा नहीं है। वहाँ बोलशेविक नाम के शैतान-पुत्र पैदा हुए हैं। उन्होंने सभी बायों (सेठों), सभी आलिम-फाजिलों (पंडित-पुरोहितों) और सभी मातवरों को बर्बाद कर दिया। उनके माल को वह स्वयं खाते और भुक्खड़ों को खिलाते हैं। रूसिया (रूस) में बायों की जमीन, उनके खेती के सामान और जानवरों को नौकरों और बटाई जोतनेवालों में बाँट दिया; ऐसे लोगों में बाँट दिया, जिन्होंने सारी आयु कभी अपना खेत और बैल-जोड़ी नहीं देखी थी।

—ओः—सफर गुलाम ने कहा—यदि हमारे यहाँ भी ऐसा ही होता, तो हम भी दुनिया में अपना खेत और बैल-जोड़ी देखते, और पेट भर रोटी खाते।

—यह खुदा से माँग—एरगश ने कहा—क्या दूसरे के माल को लूटकर अपना बनाना चाहता है ?

—खुदा ने किसके पास आसमान से खेत और बैल की जोड़ी टपकाये, जो हमारे लिये टपकायेगा ?—सफर ने कहा।

—अच्छा, चुप रह, बात सुनने दे।

—खुदा न करे—पेत्रोफ् ने अपना भाषण जारी रखते कहा—यदि कहीं इस ओर भी बोलशेविकों का कदम पहुँच गया, तो तुम्हारे लिये और सभी इज्जतदार आदमियों के लिये सुख-चैन से जीवन बिताना असम्भव हो जायेगा।

"खुदा बचाये, खुदा बचाये" कहते श्रोताओं ने पेत्रोफ् के भाषण को बीच में काट दिया।

—दा (हाँ)—कहते पेत्रोफ् ने अपने विशृंखलित विचारों को एकत्रित करके फिर से कहा—"खुदा बचाये, खुदा बचाये" यह ठीक है ; लेकिन खुदा तभी बचायेगा, जब तुम भी हाथ-पैर हिलाओगे।

—यह बोलशेविक कौन है और कहाँ से पैदा हुआ ?—एक श्रोता ने पेत्रोफ् से सवाल कर दिया।

—वह रूसी मूजिक् (किसान) है—कहते हाजी लतीफ ने जवाब दिया।

—सभी मूजिक् बोलशेविक नहीं हैं—पेत्रोफ् ने दीवानबेगी की बात को संशोधन करते हुए कहा—अधिकतर बोलशेविक फैक्टरियों और कारखानों के रबोची (मजदूर) हैं। इनमें रूसी भी हैं, अरमनी भी हैं, यहूदी भी हैं, सभी जातियों के लोग हैं। लेकिन असल रूसी कभी बोलशेविक नहीं होता। कुछ भुक्खड़ रूसियों ने अपनी आत्मा को यहूदियों के हाथ बेच डाला है, वे ही बोलशेविक हुए हैं।

—क्या बोलशेविक अधिक है—दूसरे बाय ने पेत्रोफ् से पूछा।

—ज्यादा है और ज्यादा होते जा रहे हैं—पेत्रोफ् ने जवाब दिया।

—वे कहाँ से आकर ज्यादा होते जा रहे हैं?—फिर एक बाय ने टोका।

—सभासदवृन्द!—पेत्रोफ् ने कुछ गरम होकर कहा—यदि चुप रहकर सुने तो तुम्हारे सारे वोप्रोसों (प्रश्नों) का उत्तर मिल जायगा। दा (हाँ) बोलशेविक न आसमान से टपके हैं, न जमीन से फूटकर निकले हैं। बोलशेविक हर खलक (जाति) के भीतर से आते हैं। हर जाति के भुक्खड़ बोलशेविक बन सकते हैं। जैसे तुम्हारे यूलुस में क्या बेघर-जमीन के आदमी बे-सिर-पैर के आदमी नहीं हैं? हैं तो क्या, इनका बोलशेविक होना संभव नहीं है? संभव है। शायद उनमें से कितने ही अबतक बोलशेविक हो भी चुके हों। तुम्हारे यहाँ के भगे जदीद भी वहाँ जाकर बोलशेविकों के जानी दोस्त बन गये हैं। अचरज नहीं होगा, यदि धीरे-धीरे उनमें से कितने ही बोलशेविक बन जायँ। तुर्किस्तान के नंगे भूखों में से बहुत-से बोलशेविक हो गये हैं। तुम्हारे जदीद वहाँ के रूसी और मुसलमान बोलशेविकों से मिलकर, खुदा न करे, जनाब आली के विरुद्ध तलवार उठायें। हाँ, तो इस तरह की आफतों को रोकने के लिये आज से ही उपाय करना चाहिये। इसके लिये जैसा कि गस्पदिन्, हाजी लतीफ, दीवान-बेगी ने कहा, जरूरत है जनाब आली की सच्चे दिल से सेवा की जाय। जवानों को युद्ध-विद्या की शिक्षा दी जाय। बन्दूकें खरीदी जायँ, बे-खेत-जमीन के भुक्खड़ों से खबरदार रहा जाय, जिसमें किसी बोलशेविक जासूस की बात में पड़कर वे बोलशेविक न बन जायँ। बोलशेविकों के जासूसों तथा राजद्रोहियों को पकड़कर सरकार के हाथ में दिया जाय।

—हम कहाँ से बन्दूक खरीदें ? हमारे यहाँ तो बन्दूक की दूकानें नहीं हैं—किसी ने सवाल किया।

पेत्रोफ् ने जवाब दिया—रूस के भगोड़ों से हजरत इम्पेरातोर महान् की कसा की फौजों से बन्दूकें मिल सकती हैं। उन्होंने बोलशेविकों की आज्ञा नहीं मानी और अपने-अपने हथियारों को लिये खीवा, ईरान तथा दूसरी जगहों की ओर भाग रहे हैं। उनमें से कुछ तुम्हारे देश से होकर जा रहे हैं। वे अपने हथियारों को थोड़े दामों में बेच रहे हैं। यदि तुम लोगों को पैसे का प्यार न हो, तो तुम्हारा मुल्क थोड़े ही समय में बन्दूकों से भर जायेगा। तब बन्दूकों के सहारे जनाब आली के प्रताप से तुम न सिर्फ अपने दीन, माल और इज्जत की रक्षा कर सकोगे, बल्कि तुर्किस्तान के मुसलमान भी बोलशेविकों के पंजे से मुक्त होंगे। इस बारे में गस्पदिन् अस्कन्दर तूरा और भी बातें बतलाएँगे—कहते पेत्रोफ् ने अपना भाषण समाप्त किया।

अलेक्सान्द्र कातोफ् ने खड़ा हो मजलिस को सलाम करके बोलना शुरू किया—सभासदवृन्द ! सभी आवश्यक बातों को जनाब दीवानबेगी और गस्पदिन् पेत्रोफ् ने तुम्हें बतला दिया। उनकी बातों से आपको मालूम हुआ होगा कि सैनिक-विद्या सीखना बहुत जरूरी है। किन्तु सैनिक-विद्या सिर्फ बन्दूक दागना नहीं है। रास्ते को बनाना और बिगाड़ना भी सैनिक-विद्या का एक अंग है। नाप्रिमेर (जैसे) यदि कहीं जनाब आली और बोलशेविकों के बीच युद्ध छिड़ गया, तो यह आग गाड़ी (रेल गाड़ी) तुम्हारे लिये बड़ी बलाय सिद्ध होगी। आग गाड़ी द्वारा बड़ी तोपों को लाकर बुखारा के किले को एक दिन में ढाहा जा सकता है। इसलिये रेल बर्बाद करने के ढंग को सीखना जरूरी है। इसी काम के लिये जनाब आली की आज्ञा से मैं रेल के एक लोहे और उसके बाँधने-खोलने के हथियारों को साथ लिये आया हूँ। २०-३० विश्वासपात्र जवानों को हमें दो, मैं उन्हें रेल की सड़क खराब करने का ढंग सिखला दूँगा। जिस दिन जनाब आली का प्रीकाज (आज्ञापत्र) निकले, उसी दिन ये जवान गाजियों के साथ मिलकर रेल की सड़क को बर्बाद कर देंगे, पुलों को उड़ा देंगे। हम इस सिखलाने के काम को सिर्फ यहीं नहीं, बल्कि जनाब आली के सारे राज्य में जहाँ-जहाँ रेल की सड़कें हैं, वहाँ-वहाँ कर रहे हैं। समय आने पर, जरूरत पड़ने पर

चारजूय से जीराबुलाक और कागान से शहसब्ज और तिरमिज तक की सारी रेल की सड़कों और पुलों को एक दिन में उड़ा फेंकेंगे।

सफर गुलाम ने कातोफ् की बातों को सुनकर अपने मित्र से कहा—अका एरगश, काम भारी मालूम होता है।

—कैसे ?

—इनकी बातों से मालूम होता है कि अमीर और बोलशेविकों के बीच जल्दी ही जग छिड़नेवाली है। यदि बोलशेविक विजयी होंगे, तो हमारे यहाँ भी बायों की माल-मिलकियत को गरीबों में बाँटना शुरू हो जायेगा। तो क्या, उस समय भी तुम खुदा से माल-मिलकियत माँगोगे और पहलवान अरब की माल-मिलकियत में से कुछ न लोगे ?

पेत्रोफ् और कातोफ् ने बोलशेविकों के बारे में जो बातें बतलायीं, उससे पहलवान अरब बहुत भयभीत हो गया था। वह सोचने लगा "क्या जाने, यह शैतान-पुत्र बोलशेविक यहाँ भी शैतान की भाँति एकाएक पैदा न हो जायँ और मेरी माल-मिलकियत को न छीन लें। यदि उनके आने पर मेरे नौकर और चरवाहे भी बोल-शेविक हो गये तो सब काम खतम ही समझो; क्योंकि ये मेरे सारे भेद जानते हैं। उनसे मेरी जमीन, भेड़, पैसा और घर की मिलकियत कोई चीज छिपी नहीं है।" इन विचारों में डूबे पहलवान अरब की दृष्टि एकाएक देहली में बैठे अपने नौकरों पर पड़ी और वह उनकी गति-विधि देखने लगा। इस वक्त माल-मिलकियत लेने के संबंध की सफर गुलाम की बात उसके कानों में आयी। वह उठकर देहली में आया और एरगश सफर से "ओय हरामजादो, क्या कह रहे हो" कहते मेहमान-खाने की ओर मुँह करके बड़े जोर से चिल्ला उठा "मीरशबबेग, दौड़ो!" बाय की चिल्लाहट ने सारे मेहमानखाने में हलचल मचा दी। "क्या डाकुओं ने बाय के घर को घेर लिया" कहते सभी लोग घबड़ा गये। भाषण में संलग्न कातोफ् का रंग बिलकुल (फक) हो गया और अपने दोस्त के पास बैठ रूसी भाषा में कहने लगा।

—एशिया के आदमी जंगली हैं। इनके डाकू और भी जंगली होते हैं, आदमी को लूटने से पहिले उन्हें मार डालते हैं।

उरमान पहलवान, हैत अमीन, बाजार अमीन और कितने ही बहादुर नौजवान

मीरशब के साथ देहली में गये। उरमान पहलवान ने बाय से पूछा—क्या बात है अका बाय ?

१०—एशिया के आदमी जंगली हैं (पृष्ठ २२१)

बाय ने सफर गुलाम और एरगश की ओर इशारा करके कहा—कोई और बात नहीं। ये नमकहराम बोलशेविकों के जमाने में बाय की माल-मिलकियतों को

आपस में बाँटने की सलाह कर रहे थे। बाय की बात काटकर उरमान पहलवान ने कहा—क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि इन हरामी गुलामों से हलालखादगी की आशा रखना बिलकुल गलत है। इनसे काम लेकर रोटी के बदले पत्थर देना चाहिये, जिसमें इनका सिर फूटे और मर जायें। इन्हें भूखे-प्यासे बंदीखाने में डाल देना चाहिये जिसमें अपने शरीर के मांस को खाकर मरें।

मीरशब ने जवानों की सहायता से सफर गुलाम और एरगश के हाथ-पैर को बँधवाया और बाय के जीनखाने में "बाय जानम्" कहनेवाले दो आदमी और बढ़ गये।

× × ×

प्रातःकाल सूर्योदय से पहिले ही बाय की हवेली के सामने दो अराबा तैयार थे। मीरशब, काजी, अमलाकदार और रईस के आदमियों का एक दल अराबा को घेरकर खड़ा था; क्योंकि बहुत रखवाली के साथ उन्हें बुखारा पहुँचाना था। मीरशब ने साईसखाने में जा खीसे से कुंजी निकाली और जीनखाने के छोटे-से दरवाजे में लगे ताले को खोलने लगा। अरब पहलवान अपने नमकहराम आदमियों को गाली देने के लिये बचपन से लेकर आज तक सुने सारे बुरे शब्दों को जोड़-जोड़कर बोल रहा था।

मीरशब ने दरवाजा खोलकर बाहर आने का हुक्म दिया; किन्तु भीतर किसी के हिलने-डुलने की आवाज नहीं आयी। "बाहर आओ कह रहा हूँ" कहते उसने दुबारा और जोर से आवाज लगायी। तो भी भीतर से कोई उत्तर नहीं। "क्या यह मर गये" कहते मीरशब ने द्वार के अन्दर मुँह डालकर देखा। जीनखाना भीतर से प्रकाशित था, यद्यपि वह एक अंधेर साईसखाने के भीतर अवस्थित था। मीरशब ने चारों ओर खूब ध्यान से देखा, मालूम हुआ, कूचे की तरफवाली दीवार की ईंट-मिट्टी हटी हुई है और जीनखाने में हाथ-पैर बाँधने की रस्सियों के टुकड़ों के सिवा और कुछ नहीं। मीरशब ने बड़े आवेग में आकर सिर को पीछे खींचते हुए कहा "दीवार में छेद करके बदमाश भाग गये।"

बुखारा ले जाने के लिये तैयार हाकिमों के आदमी अब मीरशब के साथ भगोड़ों के पीछे घोड़ा दौड़ाने लगे। लेकिन पता नहीं चला, वे बयाबान के किस कोने में जा छिपे।

८

मजदूर मैदान में

१९१८ का मार्च का महीना था। आकाश में सफेद बादल छाये हुए थे, हिम-मिश्रित वर्षा हो रही थी; किन्तु सर्दी उतनी अधिक नहीं थी। इतना होने पर भी करशी-चूल और आबादी जिस जगह एक दूसरे से मिलती है, वहाँ अवस्थित क़िजिलतप्पा स्टेशन में सर्दी कड़ी न थी। वहाँ के कपास के कारखाने के मजदूर बड़ी चिन्ता में पड़े थे। कारखाना बन्द था। अपनी छोटी-छोटी कोठरियों को गर्म करके अपनी बीबी-बच्चों के साथ वहाँ न सो वे कारखाने से मैदान में हिम, पड़ते आकाश के नीचे सो रहे थे।

रेलवे स्टेशन से एक आदमी जल्दी-जल्दी आकर फैक्टरी कमेटी के आफिस में चला गया। इसी समय फैक्टरी के भोंपे ने जोर की आवाज दे सारे दिगन्त को मुखरित कर दिया, जिसे सुनकर झुण्ड के झुण्ड मजदूर मैदान छोड़ कमेटी के आफिस की ओर चले। उनके आफिस तक पहुँचने के पहिले ही कमेटी के मेम्बर उनके पास आये। अब तक स्टेशन से रेलवे मजदूर भी कारखाने के पास आ पहुँचे थे।

कमेटी के सदस्य ने लोगों की ओर निगाह करके ऊँची आवाज में कहा, "साथियो, मीटिंग।"

लोग रुक गये। कमेटी के अध्यक्ष ने पाँच-छ रूई की गाठों को रखकर बनाये मंच पर चढ़ ऊँचे स्वर में कहना शुरू किया—साथियो! कल रात से हमारा संबन्ध कागान से कट गया। कल जो खबरें मिली थीं, उनसे मालूम हुआ कि बुखारा के क्रान्तिकारियों की सहायता के लिये कमकरों और गोरिल्लों का एक दल समरकन्द से रवाना हुआ, किन्तु अब तक उसका कोई पता नहीं। कल रात से समरकन्द के साथ भी हमारा संबन्ध कट गया। और बातें बतलाने के लिये प्रेस-खाने के पुराने मजदूर-साथी सियारकुल को कहा जाता है।

गेहुँआ रंग तथा काली आँखोंवाले लम्बे कद के मजदूर ने मंच पर आकर कहना शुरू किया—साथियो, अमीर बुखारा और उसकी हुकूमत अब तक कई बार बुखारा के जदीदों, बुखारा के जवानों और बुखारा के क्रान्तिकारियों को

धोखा दे चुकी है। पहला धोखा उसने १९१७ की फरवरीवाली क्रान्ति के समय दिया। फरवरी-क्रान्ति में अमीर ने अपने को जवानों की माँगों पर राजी-सा प्रगट करके देश के लिये एक फरमान निकाला। लेकिन फरमान की मुहर की स्याही अभी सूखने भी नहीं पायी थी कि उसने कागज को फाड़कर फेंक दिया—जवानों पर आक्रमण किया, उन्हें मारा, कतल किया। बंदीखाने में डाला। बर्बाद किया। अमीर ने अपने सुधार-संबन्धी आज्ञापत्र को ही बेकार नहीं किया, बल्कि तूमानों और विलायतों में पहले से भी अधिक जोर-जुल्म गरीब किसानों पर ढाया। जाँगर चलानेवाले किसानों पर लगान, कर और दूसरे जुल्म तो होते ही रहते थे, अब वह उन्हें जदीद होने का अपराध लगा-लगाकर मारने, कतल करने और जेल में डालने लगा। अक्टूबर-क्रान्ति (७ नवम्बर १९१७ की बोलशेविक क्रान्ति) के बाद अमीर का जुल्म और बढ़ा। "अक्टूबर से पहले अमीर और उसकी हुकूमत कमकरों को जदीद कहकर गिरफ्तार करती तो अक्टूबर के बाद उन्हें बोलशेविक कहकर मारने और कतल करने लगे। पिछले दो-तीन महीनों में बुखारा प्रदेश में एक भी ऐसा गाँव नहीं, जहाँ के कमकर और किसान अमीर, उसके हाकिमों और अपने मालिकों के जुल्म और अत्याचार पर सिर्फ रोने के अपराध में बोलशेविक होने का आरोप लगाकर गिरफ्तार न किये गये हों। बुखारा के आबखाना में लाकर उनकी गर्दन में रस्सा डाल गड़गड़ा (फाँसी) न खींचा गया हो और अत्यन्त बर्बरतापूर्ण ढंग से कतल न किये गये हों।

लोगों ने नारा लगाना शुरू किया "नष्ट हों अमीर और उसके हाकिम, नष्ट हो मध्यकालीन सामन्ती जुल्म।"

सियारकुल ने फिर अपना भाषण जारी किया—अमीर के विश्वासघातपूर्ण जुल्म के विरुद्ध फरवरी-क्रान्ति में पराजित बुखारा के क्रान्तिकारी जवानों की अक्टूबर-क्रान्ति से हिम्मत बढ़ी। उन्होंने अमीर के साथ अपना हिसाब चुकाने का निश्चय किया। वे अमीर के फाड़ फेंके उसी सुधारपत्र की माँग पर अमीर से लड़ने के लिये तैयार हुए। उन्होंने अपनी माँग को पूरा कराने और पुराने अमलदारों को निकालने के लिये हथियार भी जमा किये। अमीर ने झटकर उस माँग को स्वीकार किया और अपने कूशबेगी (महामंत्री) प्रसिद्ध कसाई निजामुद्दीन खोजा उरगंजी या मिरजा उरगंजी को काम से निकाल दिया। इसे बड़ी सफलता समझ जवान कुछ खातिरजमा-से हो गये। लेकिन वस्तुतः यह काम

अमीर का दूसरा धोखा सिद्ध हुआ। अमीर ने कुशबेगी के निकालने के दूसरे ही दिन जवानों की माँगों के जवाब में उनके खिलाफ सेना और तोप भेजी, युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में तुर्किस्तान प्रजातन्त्र के मंत्रिमण्डलाध्यक्ष साथी कोलिसोफ भी बुखारा के क्रान्तिकारियों की सहायता के लिए अपनी सेना के साथ आये। इस युद्ध में अमीर का प्रधान सेनापति और तोपखाना नष्ट हो गया। अमीर ने फिर धोखे का रास्ता लिया। उसने दूत भेजकर सुलह की बात करने और सुधारों के स्वीकार करने के संबंध में विचार-विनिमय करने के लिए प्रतिनिधि भेजने के लिए कहा। अमीर का यह तीसरा धोखा था। उसने क्रान्तिकारी जवानों की ओर से भेजे २१ प्रतिनिधियों को बड़ी नृशंसता के साथ मरवाया और तीन दिन की युद्ध स्थगिति से लाभ उठाकर लड़ने की तैयारी अमीराबाद से तिर्मिज और चारजूय से जोरावुलाक तक सारी रेलवे लाइनों पर आक्रमण करके हमारे यातायात-संबंध को तोड़ दिया और कागान में अवस्थित "तरुण बुखारियों" की कमेटी तथा सेना और उनके सहायक कोलिसोफ की सेना को भी घेर लिया···।

नयी पोशाक और टाई पहने एक यूरोपीय आदमी अपनी जगह बैठे-बैठे बीच में बोल उठा—बुखारा के जदीदों और उनके सुधार की माँग से कुछ भी होने-जानेवाला नहीं है। उनका साथ देकर अपने को खतरे में डालने की जरूरत न थी।

इसके उत्तर में एक दूसरे यूरोपीय मजदूर ने कहा—ग्राजदान इंजिनेर (नागरिक इंजीनियर)! तुम भूतल पर हो, किसी भी परतन्त्र देश में जो भी क्रान्तिकारी आन्दोलन हो रहा हो—चाहे उसका रूप कैसा ही क्यों न हो—उसमें सहायता करना हमारा कर्तव्य है। हमारे महान् पथ-प्रदर्शक साथी लेनिन ने हमें ऐसा ही सिखलाया है। इसके ऊपर यहाँ हम देख रहे हैं कि सफेद रूसी अफसर और जारशाही राजनीति के पुराने एजेन्ट अमीर को हथियार, युद्ध-कौशल और राजनैतिक सहायता दे रहे हैं, और इस प्रकार के हत्याकाण्ड को स्वयं चला रहे हैं, ऐसी स्थिति में बुखारा के संत्रस्त कमकरों और क्रान्तिकारियों की सहायता हम न करें तो यह बुरा होगा।

इंजीनियर ने जवाब देना चाहा, लेकिन सभापति ने उसे रोककर वक्ता को अपना भाषण जारी रखने के लिये कहा।

—मेरा वक्तव्य समाप्ति पर है—सियारकुल ने कहा—केवल इतना और

कहना चाहता हूँ कि जो पक्की खबरें हमारे पास आयी हैं, उनके अनुसार नूमान शाफिरकाम और गिज्दुवान के अमीरी नौकर और अमलदार वहाँ के अमीनों, अरबाबों, अकसक्कालों और धनियों के साथ होकर हमारे ऊपर यहाँ किजिलतप्पा स्टेशन पर हमला करने के लिये कूच कर चुके हैं। ऐसी अवस्था में हमें भी तैयार रहना चाहिये।

"हथियार, हथियार, हाथ में हथियार ले लो" की आवाज चारों ओर से उठी और लोगों में हलचल दिखाई पड़ी। मजदूरों की हलचल जब जरा कम हुई, तो फैक्टरी-मजदूर-कमेटी के अध्यक्ष ने कहा—साथियो! अनुशासन और सैनिक-व्यवस्था को हर हालत में कायम रखना होगा। साथियो! आपमें से जो निशाना लगाने में चतुर हैं, वे एक ओर हो जायें। हमारे पास जो हथियार हैं, उन्हें हम इन्हीं में बाँटेंगे। दूसरे साथी रूई की गाँठों को उठाकर उनसे फैक्टरी की चारों ओर मोर्चा-बंदी करें।

"मुझे भी हथियार दो, मुझे भी हथियार दो" कहते सारे मजदूर एक ओर जमा हो गये, मानो सभा एक जगह से उठकर दूसरी जगह चली गयी। लेकिन फैक्टरी-कमेटी के मेम्बर जानते थे। उन्होंने युद्ध देखे अनुभवी मजदूरों को अलग करके पास की बन्दूकों और कारतूसों को बाँट दिया। बाकी मजदूर गाँठों को रखने लगे। एक घंटा में मोर्चा-बंदी हो गयी और निशाना लगाने की जगहें भी ठीक हो गयीं। कमेटी के अध्यक्ष ने कमांड अपने हाथ में ली। निशानचियों को जगह-जगह पर बैठाया। कुछ बे-हथियारियों को भी चुनकर मोर्चे के पीछे रखा, औरतों और लड़कियों में से कुछ को घायल-सुश्रूषा के काम में नियुक्त किया।

जिस वक्त कमान्डर इन कामों में लगा था, छत के ऊपर और मोर्चे के ओर से आवाज आयी "आ गये"। आवाज सुनते ही तीन बन्दूकें एक साथ खाली हुईं। कमांडर तेजी से दौड़कर छत पर चढ़ गया और सन्तरियों से पूछा "कहाँ, किधर से आ रहे हैं?" मोर्चों से बन्दूक की आवाज अब भी आ रही थी। संतरियों ने एक ओर इशारा करते कमांडर से कहा—"वह कहाँ खड़े हैं।" कमांडर ने दूरबीन से बहुधा देखकर जोर से आवाज दी "न दागो, वे हमारे आदमी हैं, जरफशाँ के किनारे से आकर तीन साथी अपनी बन्दूकों को हवा में उठाये खड़े हैं।"

कमांडर के हुक्म से हलचल खतम हुई। उसने सबको कड़ा हुक्म दिया कि बिना कमान दिये कोई अपनी बंदूक खाली न करे। तब तक जरफशाँ के साथी

भी आ पहुँचे। कमांडर ने उनसे समाचार पूछा। उनमें से एक ने जवाब दिया—१० बजा था, पानीकल के सामने नदी के दूसरे तट पर कितने ही सवार आये। उन्होंने अपने घोड़ों को नदी में डाल दिया। गर्दन में साफा लपेटे एक आदमी उनकी सहदोरी कर रहा था।

—उसकी दाढ़ी चावल-उड़द और रंग सफेद था या रंग साँवला और दाढ़ी काली? एक स्थानीय मजदूर ने पूछा।

—रंग सफेद और दाढ़ी चावल-उड़द थी।

—स्थानीय मजदूर ने कहा—यह गिज्दुवान और शाफिरकाम का मीरशब और हाजी लतीफ दीवानबेगी का बड़ा भाई कुल्ली सुलतान है। ये दोनों भाई अपने साफे को गर्दन में लपेटते हैं।

—खैर, कोई हर्ज नहीं—दूसरे मजदूर ने कहा—नसीब होगा तो इनकी गर्दन-पेच को बन्दूक की गोली से खोल देंगे। (अब आगे की बात कहो)।

जरफशानी मजदूर ने फिर कहना शुरू किया—उन्होंने अराबा को पानी से पार कराया, फिर "पकडो-पकड़ो, बाँधो-बाँधो, मारो-मारो, पीटो-पीटो" कहकर पानीकल की ओर अपने घोड़ों को छोड़ा। हम भी अपनी बन्दूकें सँभालकर तैयार थे। कुछ और आगे बढ़ने पर हमने गोलियाँ चलायीं और दो आदमी तथा एक घोड़ा जमीन पर लुढ़क गया। उन्होंने मुड़कर दूसरी ओर से पानीकल को घेरा। हमने भी मुँह उस तरफ कर लिया। देखा कि नराधम हमारे बीबी-बच्चों को तलवार से काट रहे हैं।

कहानी कहनेवाले का गला भर आया और वह आगे न बोल सका।

एक निशानची ने "खैर, बहुत अफसोस न कर साथी, इनका काम खतम करने के बाद फिर तुझे बीबी-बच्चा मिलेगा" कहते उसे तसल्ली दी।

जरफशाँ के किनारे से आये दूसरे मजदूर ने आगे की बात कही—हमने देखा कि वे अधिक हैं और हम सिर्फ तीन, इसलिये हम उनका मुकाबिला नहीं कर सकते। उसपर हम पानी के नल के रास्ते गोली छोड़ते पीछे हटने लगे। उनकी गोलियाँ हमारे सिर के ऊपर या अगल-बगल से चली गयीं। उन्होंने एक बार और घोड़ा दौड़ाकर समीप आना चाहा, जिससे एक हमारी गोली का निशान बना। हम पीछे हटते ही गये। जब हमने तलीयखाव गाँव में पहुँचकर पीछे निगाह डाली, तो पानीकल की इमारत जल रही थी और काले

बादलों-जैसा धुआँ निकल रहा था। अब वे हमसे दूर थे, हमारे और उनके बीच वृक्ष भी थे, इसलिये लेटे-लेटे सरकने की जगह हम खड़े होकर दौड़ आये।

× × ×

जरफशानी मजदूर की बात अभी खतम नहीं हुई थी कि निशानची की आवाज आयी "आ गये, आ गये।"

कमांडर ने दूरबीन उठाकर चारों ओर देखा। सवार और प्यादे आकर फैक्टरी को तीन तरफ से धनुषाकार घेर रहे थे। कमांडर ने मोर्चों में घूमकर कड़ी ताकीद की। निशानचियों ने अपनी जगह ली। जब घेरावा गोली की मार तक पहुँच गया, तो कमांडर के "दागो" कहने पर सारी बन्दूकें एक बार छूटीं। बन्दूक की आवाज के बाद धूल-धुआँ उठा। आक्रमणकारी पीछे की ओर भागे। धूल-धुआँ हट जाने पर देखा गया कि मैदान में एक-दो घोड़ों और आदमियों की लाशों के अतिरिक्त और कोई चीज न थी। लेकिन इसी समय पानी की टंकी के मजदूर ने आकर सूचना दी "अब जरफशाँ से पानी आना बन्द हो गया। पानी कम है। बहुत सावधानी से खर्च करना चाहिये।" यह खबर सुनते ही चारों ओर से आवाज आयी—"पानी, पानी, पानी ले आ", "बहिन पानी दे।" कमांडर ने चिल्लाकर कहा—

—चुप, साथियो, क्या तुम पानी की कमी को सुनकर प्यासे हो गये? यदि सचमुच प्यासे हो, तो छत पर और मैदान में भी हर जगह बर्फ की गर्द पड़ रही है, उसे चाट लो, व्यर्थ परेशान न हो और न दूसरों को परेशानी में डालो।

हमारे पास जो पानी है, उसे बड़ी मितव्ययिता के साथ तब तक खर्च करना होगा, जब तक कागान के साथ हमारा सम्बन्ध न हो जाय या हम स्वयं समरकन्द न पहुँच जायें।

बयाबान की ओर से फिर "पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो" की आवाज उठी। आक्रमणकारी तीन ओर से घोड़ों को दौड़ाते आगे आ रहे थे। अबकी बार जब वे पहिले से भी आगे आ गये, तब कमान्डर ने दागने की आज्ञा दी। इस बार मोर्चे से निकली गोलियाँ अधिक तो बेकार न गयीं, कितने ही घोड़े और आदमी खेत रहे और कितने ही घायल होकर भाग गये। भागने के वक्त दूसरी बार जब गोलियाँ छोड़ी गयीं, तो मुर्दों और घायलों की संख्या और बढ़ी। गोलियाँ इसी तरह शाम तक चलती रहीं। रात आयी, चारों ओर अंधेरा छा गया। आदमी

आदमी को नहीं देख सकता था। आक्रमणकारी मैदान से हटकर पास के गाँवों में विश्राम ले अगले दिन की तैयारी करने लगे। इधर कमांडर ने मोर्चे में नये आदमियों को नियुक्त कर दूसरों को खाने और विश्राम करने की छुट्टी दी। सुबह होने तक कई बार ड्यूटी बदली गयी।

दूसरे दिन पौ फटते ही "पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो" की आवाज उठी। आज भी आक्रमणकारियों का प्रयत्न निष्फल रहा। बहुत समीप नहीं आये, इस लिये आज उनको बहुत नुकसान नहीं हुआ। तीसरे दिन स्थिति कठिन हो गयी। मजदूरों के पास गोला-बारूद कम रह गयी और खाने की चीजें भी कम। एक छोटी सभा बैठी जिसमें फैक्टरी-कमेटी और रेलवे मजदूरों के पार्टी सेल् के सदस्य सम्मिलित हुए। कमांडर ने स्थिति को समझाते हुए कहा—"साथियो! आज तक कागान या समरकन्द से हमारे पास सहायता नहीं पहुँची। यदि हम आज भी यहाँ रहे तो सभी मारे जायेंगे। इसलिये यहाँ मौजूद गाड़ी में बैठकर समरकन्द चल देना चाहिये।"

कमांडर की बात काटकर किन्हीं-किन्हीं ने कहा—"हम अन्त तक लड़ेंगे। कागान में घिरे बुखारी क्रान्तिकारियों को हम अकेला नहीं छोड़ेंगे।"

—यह नहीं हो सकता—हल्ला के जरा कम होने पर कमांडर ने कहा—हमारे गोला-बारूद दो घंटा भी नहीं चल सकते। अभी रास्ता चलने तथा सुरक्षित अपने स्थान पर पहुँचने में भी उसकी आवश्यकता है। अपनी रक्षा के लिये काफी शक्ति होनी चाहिये; लेकिन हमारे हाथ में कुछ नहीं है। कमांडर के बाद स्टेशन मास्टर ने कहा—हमारे पास दो गाड़ियाँ और एक इंजन रह गया है। बाकी गाड़ियाँ और इंजनों को कागान में साथी कोलिसोफ के पास भेज दिया था। हमारा पानी जियाउद्दीन स्टेशन तक शायद ही पहुँचे। हम जितनी ही देरी करेंगे, इंजन का पानी भाप होकर और कम होगा। इसलिये जल्दी से जल्दी कूच करना अत्यन्त जरूरी है

कमांडर ने कमान दिया "साथियो, सभी गाड़ी पर।"

मजदूर स्टेशन की ओर चल पड़े। उनके बीबी-बच्चों को सबसे पहिले गाड़ी पर चढ़ना चाहिये था, लेकिन वे सबसे पीछे रह गये थे। स्त्रियाँ अपनी पतीलियों, थालियों, स्टोप, किरासिन टिन, फटे गद्दों और तकियों को इकट्ठा करने में परेशान थीं। उधर आक्रमणकारी नजदीक पहुँच रहे थे।

मजदूरों और मजदूरनियों ने गाड़ी में जगह ली—आगे-पीछे और बगल में हथियारबंद साथी रक्षा करने के लिये तैयार थे। इंजन सीटी बजाकर रवाना

११—लेकिन वहाँ कीचड़ की जगह आदमियों की लाशें (पृष्ठ २२१)

हुआ। कुछ दूर जाने पर फिर सीटी बजाकर खड़ा हो गया। वहाँ पटरी उखाड़ दी गयी थी और स्लीपर जलाकर लोहे को दूर ले जा फेंक आये थे। मजदूर नीचे

उतरकर जुट पड़े। साथ लायी पटरियाँ और लोहे को जोड़कर उन्होंने रास्ता तैयार कर दिया, फिर पीछे के रास्ते को खराब कर मरम्मत के लिये रेल और पटरी साथ ले आगे का रास्ता लिया। इसी समय स्टेशन की ओर से "उल्लास" की जबर्दस्त आवाज आयी। देखा काले धुएँ के भीतर आग की लाल ज्वाला उठ रही है—फैक्टरी जल रही थी।

× × ×

जिस समय बुखारा के क्रान्तिकारी और कागान के भगोड़े कोलिसोफ की सेना की मदद के लिये रेल और स्लीपर लिये रास्ता बनाते किजिलसप्पा पहुँचे, उस समय वहाँ फैक्टरी और स्टेशन की जगह राख और कोयले के सिवा कुछ नहीं रह गये थे। कोलिसोफ की सेना और इंजन के लिये पानी की बहुत जरूरत थी; लेकिन वहाँ एक बूँद भी पानी नहीं मिल सकता था। बहुत ढूँढ़-ढाँढ़ करने पर फैक्टरी के हौज में कुछ गन्दा पानी मिला। लोग इस पानी पर टूट पड़े। स्वयं पीया और गाड़ियों में भरा। इस तरह करते एक घंटे में हौज की पैंदी दिखलाई देने लगी; लेकिन वहाँ कीचड़ की जगह आदमियों की लाशें थीं, जिनके हाथ-पैरों में लोहा बाँधकर हौज में डाल दिया गया था।

ये वे मजदूर थे, जो भागने के लिए तैयार न हुए थे या स्थानीय मजदूर थे, इसलिए भागना न चाहते थे और इस तरह आक्रमणकारियों के हाथ में पड़ गये थे। इन मजदूरों को काटकर, लोहा बाँध, हौज में डालनेवाले आक्रमणकारियों के सरदार थे कुली सुलतान मीरशब, अब्दुल्ला बाय-बच्चा, उस्मान पहलवान, हैत अमीन और बाजार अमीन।

६

यह कौन-सी मुसलमानी ?

नूरता और शाफिरकाम के बीचवाले रेगिस्तान में एक काला घर था, जिसमें एक कजाक चूल्हे में फरास का ईंधन जला रहा था। चूल्हे की चारों ओर बैठे कुछ लोग हाथ-पैर गर्म कर रहे थे। उनमें से एक ने काले घर से बाहर निकलकर आकाश की ओर नजर डाली। चारों ओर काले बादल छाये

हुए थे। इसलिए कोई तारा दिखाई न पड़ा। आदमी ने घर की ओर लौटकर कहा—इस प्रकार की अँधेरी रात में तारों बिना कजाक कैसे रास्ता पायेगा। भय लग रहा है, कहीं रास्ता भूलकर वह हमें नूरता से शाफिरकाम या गिज्दुवान की ओर न पहुँचा दे।

—चाहे कुछ भी हो—वहाँ बैठे दूसरे आदमी ने कहा—अब इस कजाक की आज्ञा मानने के सिवा कोई रास्ता नहीं। जो भाग्य में होगा, उसे भुगतना पड़ेगा।

सब चुप हो गये। काले घर को एक गंभीर नीरवता ने घेर लिया। वहाँ जलते फरास की शितिर-शितिर और उबलते गड़वे की बिफिर-बिफिर के अतिरिक्त कोई शब्द सुनाई नहीं दे रहा था। एक हाथ में रोटी और दूसरे में चायनिक और प्याला लिए कजाक ने घर के अन्दर आकर कहा—तुम लोग रोटी खाओ, चायनिक में चाय दम करते बात करो। मैं अपने पास के पड़ोसी के पास जाकर कुछ घोड़े और गदहे ले आता हूँ; फिर हम यहाँ से चलेंगे।

—कितने घंटे में बीजक पहुँच जायेंगे ?

—एक बैठे आदमी ने कजाक से पूछा।

—मैं घंटा-मंटा नहीं जानता—कजाक ने कहा—इतना जानता हूँ कि यदि आज आधी रात को सवार होकर रवाना हों तो कल दोपहर तक हम अमीर के मुल्क से निकलकर बोलशेविकों के देश में पहुँच जायेंगे।

कजाक निकलकर बाहर चला गया। चाय गरम हुई। गोष्ठी में फिर चिन्ता-पूर्ण नीरवता छा गयी। एक २८-२९साला जवान ने प्याले में थोड़ी चाय निकालकर खुद पीया, फिर उसने चाय भरकर ६५-७०साला बूढ़े की ओर बढ़ाते हुए कहा—अका, कुछ बात करते रहिये, बात गनीमत है। न जाने कल हमारे सिर पर क्या गुजरे।

—हर हालत में खुदा की मर्जी के बाहर कोई बात नहीं होगी। इसके लिये चिन्ता करने की आवश्यकता क्या ?—दूसरे आदमी ने कहा।

चाय लेकर बूढ़े ने उसे सामने रख छोड़ा और उत्तर देते हुए कहा—

क्या बात करूँ, किसकी बात करूँ, मेरा दर्द बहुत भारी है। बाबा ताहिर नूर ने कहा है :—

"यदि मेरा दर्द एक हुआ तो क्या हुआ ?
यदि गम कम हुआ तो क्या हुआ ?
यदि मेरे पास वैद्य या मित्र मेरा,
इन दोनों में से एक हुआ तो क्या हुआ ?"

इसके साथ बूढ़े ने और भी कहा—अमीर की नृशंसता और अत्याचार की बात करूँ या जवानों के बिना सोचे-समझे हुतावलेपन की बात करूँ ? या अमीर के कसाइयों के हाथ बीबी-बच्चों के रह जाने की बात करूँ ? या इस बुढ़ापे में मजबूर होकर इस रेगिस्तान की ओर भागने की बात करूँ ?—बूढ़े ने आः खींचकर बात वहीं रोक दी और सामने रखी चाय में से दो घोंट पीली।

—शुक्र करो—पास बैठे एक मध्यम वयस्क गंगा-यमुनी दाढ़ीवाले आदमी ने तसल्ली देते हुए कहा—तुम्हारी बूढ़ी बीबी और अल्प वयस्क बच्चे अमीर के जल्लादों के हाथ में हैं सही। किन्तु साथ में तुम्हारे यह सयाने पुत्र सलामत हैं—कहते आदमी ने बूढ़े की बगल में बैठे दो १४-१५साला लड़कों की ओर इशारा करते फिर कहा—आजकल मुल्क में क्या हो रहा है नहीं देखते ? दूर जाने की आवश्यकता नहीं, इसी गिज्दुवान और शाफिरकाम में कितने इज्जतदार आदमी अपने घरों या कूचों में काटे गये। अमीर के जल्लादों ने उनके माल-असबाब को लूटा। हाजी सिराजुद्दीन[1] साक्तरीवाले. एवज बेक, अजीम जान गिज्दुवानी जैसे कितने ही प्रगट जदीदों को हाथ-पैर-गर्दन में बेड़ी-हथकड़ी डाल बुखारा ले गये। कौन जानता है, उन्हें आर्क-बुखारा के आबखाने में कैसी-कैसी सासत देकर मारा ? क्या उनकी स्त्रियाँ बेवा और बच्चे अनाथ न हुए ?

मध्य वयस्क पुरुष ने अपनी बारी में सामने आये प्याले से चाय पीकर कहना शुरू किया—मेरे घरवाले बीबी-बच्चे, बहुएँ और नाती-पोते सारे अमीर के जल्लादों के हाथ में हैं, तोभी संतोष और शुक्र करता हूँ, और आशा रखता हूँ कि सारे किसानों को अमीर के विरुद्ध खड़ा कर उसके तख्त-बख्त को जलाकर राख में मिला, उससे अपना और अपने कतल किये भाइयों का बदला लूँगा।

---

१ लेखक (ऐनी) का भाई।

—तुम जैसा कह रहे हो—सामने बैठे जवान ने कहा—किसानों को अमीर के विरुद्ध खड़ा नहीं कर सकते हो ; क्योंकि तुम जदीद लोग किसानों के दर्द को नहीं जानते, या यदि जानते हो, तो उन दर्दों की दवा तुम्हें मालूम नहीं, यदि मालूम है, तो दवा करना नहीं चाहते।

—तुम और सफर गुलाम जो मेरे पीछे-पीछे बयाबान में भटकते फिर रहे हो, क्या यह गरीब किसानों का मुकाबिला के लिए उठना नहीं है ? क्या तुम्हें मैंने अमीर के विरुद्ध खड़ा नहीं किया ?

—क्षमा करें, शाकिर अका—सफर गुलाम ने कहा—हमें तुमने अमीर के मुकाबिले में नहीं खड़ा किया, बल्कि ताशकन्द-समरकन्द से आनेवाली बोलशेविकों की आँधी ने खड़ा किया।

—बोलशेविकों के किस काम ने तुम्हें अपनी ओर आकृष्ट किया ?—बूढ़े ने सफर गुलाम से पूछा।

—जो कुछ मैंने सुना है, उससे मालूम होता है कि बोलशेविक बायों की माल-मिलकियत को गरीबों में बाँट देते हैं और बेखेत-जमीनवाले किसानों की हिमायत करते हैं।

—यह दूसरी तरह की गड़बड़ी है—कहते बूढ़े ने अपने लिलार पर सिकुड़न डाल ली। उसी समय घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई दी और बहस वहीं खतम हो गयी।

—"क्या कजाक इतनी जल्दी लौट आया ?" कहते सफर गुलाम बाहर आया और उसके पीछे चाय देनेवाला जवान भी। उन्होंने देखा कि काले घर के पास १५-१६ हथियारबंद सवार खड़े हो रहे हैं। वे जल्दी से घर के पीछे गड्ढे में जाकर छिप गये।

एक सवार घोड़े से उतरकर, लगाम को अपने साथी के हाथ में दे गरमी पहुँचाने के लिये दोनों हाथों को रगड़ते और मुँह से "उफ्-उफ्" करते दरवाजे पर आया। उसने "इगित् आकाशी ! तुम्हारे घर में थोड़ा गरम हो लेने की इजाजत है" कहते अपने सिर को घर के अन्दर किया, किन्तु घर के अन्दर से किसीका जवाब सुनने से पहले ही उसने "ए" कहते अपने सिर को पीछे खींचकर साथियों से कहा:—

—उतर आओ, त्योहार पर पहुँच गये। जदीदों के बड़े नेता मुल्ला शरीफ

करखूनी, शाकिर गुलाम आवाजोनी, जो ईरानियों, गुलामों और किसानों को भड़काते फिरते रहे, यहीं मौजूद हैं।

सवार जल्दी से घोड़ों से उतरे। अपनी बन्दूकों को हाथ में तैयार रख उन्होंने घर को घेर लिया और शाकिर गुलाम, मुल्लाशरीफ और उसके दोनों लड़कों को पकड़कर उनके हाथ-पैर बाँध दिये। रात के अंधेरे में सफर गुलाम और उसके साथी मरुभूमि की ओर भाग निकले। इसी समय बर्फ पड़ने लगी, जिसने उनके पदचिह्नों को भी मिटा दिया।

× × ×

खोजा-आरिफ बाजार में एक फरंजादार (बुरकेवाली) स्त्री दो छींका और एक रस्सी हाथ में लिये बेचने के वास्ते घूम रही थी। स्त्री के शरीर पर आँख की जाली के बिना फटी पुरानी पोशाक थी। उसने सवेरे से शाम तक बाजार का चक्कर लगाया; किन्तु कोई खरीदार न मिला। बाहरी खरीदार से निराश हो उसने रस्सी बाजार के एक रस्सीफरोश के हाथ बेचना चाहा। रस्सीफरोश ने छींके-रस्सी को हाथ में तो कितनी बार खींच-खांचकर देखा, फिर "ये बे-ऐंठन की चीजें हैं, मैं ऐसी चीजों को बेचकर अपने खरीदारों में बदनाम नहीं होना चाहता" कहते माल को स्त्री की ओर बढ़ाया।

—खैर, जो भी देना चाहो दे दो और इन्हें ले लो—स्त्री ने दीनता प्रगट करते हुए कहा।

—अच्छा, एक तंका दिये देता हूँ, यदि पैसा न लौटा तो खैरात समझूँगा—दूकानदार ने कहा।

स्त्री ने माल हाथ में लेते हुए कहा—इन्साफ करो, मैंने कई दिन बयाबान में चक्कर काटा, भेड़-बकरियों के चरते वक्त झाड़ियों में उलझ गये बालों को चुना। फिर कई दिन रस्सी बाँटकर यह चीज बनायी और बाजार में लायी। इनके बनाने में मैंने दो मास खर्च किये। और नहीं तो दो रोज के खाने के पैसे तो दे दो।

—अच्छा बहिन, दूकानदार ने कहा—मैंने तुमसे नहीं कहा कि अपना माल मेरे हाथ बेचो, बल्कि तुमने स्वयं लेने के लिये बिनती की। यदि बेचना नहीं चाहती तो मेरी दूकान के सामने न रहो, क्योंकि लोगों को सौदा देखने में बाधा होती है। स्त्री निराश हो दूकान से हटना चाहती थी, लेकिन ठहरने के लिये बाध्य हुई, क्योंकि इसी समय बंदियों को लिये कुछ सवार आ निकले। बंदियों के सिर,

चेहरे और हाथ डंडे की चोट से घायल और काले हो गये थे। कूचे में "जदीद-जदीद" कहते उल्लास करनेवालों की भीड़ थी, लेकिन पेट के लिये चिन्तित स्त्री को जदीदों का तमाशा देखने की कहाँ छुट्टी थी? भीड़ के कुछ छँट जाने पर उसने फिर बाजार में खरीदार ढूँढ़ने के लिये किसी ओर जाना चाहा। इसी समय एक जवान सवार ने आकर दूकानदार से अपने घोड़े के लिये एक रस्सी माँगी। स्त्री ने अन्तिम आशा के साथ अपनी रस्सी और छींके को दिखलाते हुए कहा :—

—इन्हीं को ले लो सुन्दर तरुण, भगवान भला करें आज कुछ नहीं खायी हूँ।

जवान ने जीन पर रखे जामे की ओर इशारा करते "तू इस जामा को ले ले, मैंने भी आज कुछ नहीं खाया" कहते मजाक किया। औरत ने जामा देखते ही उसके पेवन्द को पहिचान लिया और गौर से देखते ही उसका रंग उड़ गया। उसने जवान से पूछा—इस जामा को कहाँ पाया?

—क्या पहचान गयी—जवान ने कहा—मैंने यहाँ से अभी गये इन्हीं जदीदों को गिरफ्तार करते वक्त उनमें से एक से यह गनीमत का माल पाया।

—हाय अभागी अब क्या करूँ? कहकर औरत दूकान के आगे गिर पड़ी।

दूकानदार ने गुस्सा हो औरत से कहा—उठ, भाग यहाँ से, क्या तेरा पति या सम्बन्धी जदीद तो नहीं है?

स्त्री ने अपनी सारी शक्ति लगाकर कहा—नहीं, भगवान जानता है, मेरा पति "जदीद-मदीद क्या है, इसे भी नहीं जानता।"

—वह जदीद हो या न हो—दूकानदार ने कहा—यदि यह जामा उसका है, तो स्पष्ट है कि वह भी जदीदों के साथ गिरफ्तार हुआ और तू जदीद की बीबी है।

—बता, सच बता, यह जामा किसका था?—कहते सवार ने औरत के सिर पर कोड़ा मारा।

—ठहरिये, मैं कहती हूँ—स्त्री ने कहा—परसाल एक अपरिचित आदमी मेरे घर आया था। उस समय मेरा पति घर में नहीं था। आदमी इस जामा में मुझसे पेबंद लगवाकर ले गया था। वही आदमी फिर इस साल हमारे घर एक रात आया। उसके बदन पर यही जामा था। चूल में जाने के लिये वह मेरे पति को पथ-प्रदर्शक बनाकर ले गया। यदि इस जामा के मालिक गिरफ्तार हुआ, तो उसके साथ गया मेरा निरपराध पति भी गिरफ्तार हुआ होगा—कहते स्त्री रोने लगी।

—उठ-उठ—जवान ने ठोकर मारकर कहा—तेरे घर में जदीद आते-जाते हैं। तू जदीदों के जाम में पेवन्द लगाती है, तेरा पति उनका पथ-प्रदर्शन करता है। आज तुझसे बहुत-से भेद मालूम हो गये।

स्त्री इन बातों को सुनकर चकित हो आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगी। जवान ने कोड़े मारकर कहा—"उठ, कहता हूँ उठ।"

"वाय जानम्" कहते स्त्री अपनी जगह से उठी और जमीन पर पड़ी रस्सी और छींके को झुककर उठा सवार की ओर देखने लगी।

सवार ने रस्सी-छींके को उससे छीनकर अपनी खुर्जी में रख लिया और एक कोड़ा मारकर कहा—"चल आगे।"

"यह कौन-सी मुसलमानी है" कहते रोती स्त्री ने सवार के आगे हो लिया; लेकिन किधर जाय, यह वह जानती न थी। सवार ने फिर एक कोड़ा मारकर उसकी नोक से इशारा किया "इस तरफ चल"। वह खोजा-आरिफ के काजीखाने का रास्ता था। सवार स्त्री को उधर ले गया।

१०

लकड़हारों में बोलशेविक

जाड़ों के कठिन दिन समाप्त हुए और वसन्त के नर्म दिन आये; लेकिन शाफिरकाम के बयाबान की हवा सिबेरिया की तरफ से आने के कारण उतनी सुखद न थी। लगातार कई दिनों से धूप निकल रही थी, जिससे रेगिस्तान की मोटी बर्फ पिघलकर पानी हो चली और नीचे पड़ी झाड़ियाँ जगह-जगह उघार होने लगीं। दिन बिना बर्फ और वर्षा का था, इसलिये शाफिरकाम तूमान के लकड़हारे बयाबान में फैल गये और वर्षा के बाद दाना चुनने के लिये उत्तरी चिड़ियों की तरह वे ढूँढ़-ढूँढ़कर बर्फ के नीचे-ऊपर पड़ी लकड़ियों को निकालकर एक ओर जमा करने लगे। इस काम के लिये वे आधी रात को ही घर से निकले थे और सूर्योदय होते-होते अपने काम में लग गये थे। दिन भर बड़ी मुस्तैदी के साथ काम करने के बाद अब वे घर लौटने की तैयारी में थे। उनमें से दो ही एक के पास गदहे थे, बाकी सिर्फ रस्सी और हँसिया लेकर आये थे। गदहेवाले अपने

ईंधन का दो बोझ बाँध गदहे पर रख ऊपर से थोड़ा और ईंधन रख रवाना हुए। दूसरों ने अपने जामों को चौपेतकर अपनी पीठ पर रख ईंधन के गट्ठर को पीठ पर उठाया और बाँधने की रस्सी को गर्दन और बगल से निकाल चारबंद करके सीने पर बाँधा और फिर वे डंडे को हाथ में लेकर रवाना हुए। एक लकड़हारा जामे की परत में, लत्ते में बँधी किसी चीज को भी डालकर पीठ पर ईंधन उठाये था, जिसके कारण ईंधन पीठ पर कुछ ऊँचा हो गया था और बाँहों पर उतना जोर नहीं पड़ रहा था। वह प्रसन्न होकर कह रहा था :—

—मुझे बहुत आसान मालूम हो रहा है, जान पड़ता है, इसीलिये रेलवे कुली बोझ ढोते वक्त अपनी पीठ पर एक ऊँचा बीड़ा बाँधते हैं।

—उन बेचारों की भी हालत बड़ी बुरी है—दूसरे लकड़हारे ने कहा—एक रोज करमीना जाने के लिए स्टेशन गया हुआ था। टिकट नहीं पा सका, इसलिये एक दिन-रात वहीं रह जाना पड़ा। बेकार था, दिन में उनकी हालत देखने लगा, जब ट्रेन आती तो वे गाड़ियों की ओर दौड़ते। यात्रियों के पास यदि कोई चढ़ाने-उतारने की चीज होती तो उसे ढोते, और पाँच-दस कोपेक (पैसा) पा जाते हैं। इस तरह कई ट्रेनों में काम करके एक रोटी का पैसा कमा पाते। पैसे से रोटी खरीद दीवार के पास लम्बे पड़े रोटी खाते, फिर दूसरी ट्रेन की प्रतीक्षा करते।

—उनमें से कितने—तीसरे लकड़हारे ने कहा—कई ट्रेनों को देखकर भी बोझ नहीं पाते, ऐसी अवस्था में उन्हें भूखे सो जाने के सिवा दूसरा चारा नहीं रहता।

—मैंने भी देखा—एक और लकड़हारे ने कहा—उनके पास सोने के लिये भी जगह नहीं होती और वे गन्दे कूचों में तख्तों और चारपाइयों के नीचे सोते हैं।

—वे कहाँ के रहनेवाले हैं ? क्यों अपना वतन छोड़कर यहाँ आये हैं ?—एक लकड़हारे ने पूछा।

—वे ईरानी हैं, उस ईरान के रहनेवाले हैं, जो शाकिर अका के कथनानुसार स्वतन्त्रता प्राप्त कर स्वर्ग बन गया है। शाकिर अका के उसी स्वर्ग से वे टुकड़ों के लिये यहाँ आये हैं।

—जान पड़ता है, उनके देश में भी पानी-धरती और सारी माल-मिलकियत

बायों बेकों और महानों के हाथ में है। इसीलिये तो ये बेचारे ऐसी जिन्दगी बिता रहे हैं—दूसरे लकड़हारे ने कहा।

—गरीब मेहनती आदमियों के लिये असली स्वतन्त्रता और पेट-पूर्ति केवल सोवियतों के देश में, बोलशेविकों के राज में ही है—कहते एक लकड़हारे ने व्याख्या की।—इस वक्त रूस की भाँति तुर्किस्तान में भी सरकार मजदूर और किसानों के हाथ में है। जो लोग सरकार के कार्यालयों, फैक्टरियों और कारखानों में काम करते हैं, वे मजे से जिन्दगी बिताते हैं और जो नौकरी और चरवाही कर रहे हैं, वे भी हमसे हजार गुना अच्छी जिन्दगी बिता रहे हैं। नौकर और चरवाहे वहाँ कायदे के अनुसार काम करते हैं। मालिक उन्हें खाना-कपड़ा देता है और आठ घंटे से अधिक काम नहीं ले सकता।

हमारी तरह प्रतिदिन १६-१८ घंटा काम तो नहीं करना पड़ता है—एक लकड़हारे ने बीच में टोककर कहा।

—हमारे भीतर ऐसे भी हैं—दूसरे लकड़हारे ने कहा—जो साल में बारहों महीने रात-दिन बाय के घर में काम करते हैं। चरवाहों ही को देखो, वे दिन में भेड़ चराते हैं और रात में कुत्ते लेकर भेड़ों के कूरे का पहरा देते हैं।

पहले लकड़हारे ने फिर कहना शुरू किया—इसके अतिरिक्त बोलशेविकों के देश में मालिक मजबूर है कि अपने नौकर को सप्ताह में एक दिन और साल में कितने ही दिन विश्राम करने के लिये छुट्टी दे और छुट्टी के दिनों का वेतन भी दे।

—वहाँ हमारे देश की तरह रात-दिन काम करा काम खतम करने के बाद उनके दोनों हाथों से आँख मुँदवा निकाल बाहर तो नहीं करते?—किसी दूसरे लकड़हारे ने पूछा।

—बाहर नहीं कर सकते, ऐसे अन्याय के लिये सरकार इजाजत नहीं देती—लकड़हारे ने कहा—सरकार स्वयं बीच में पड़कर मालिक से मजदूरी दिलाती है और नौकर की मजदूरी हड़पनेवालों को सजा भी देती है। यह अवस्था है तुर्किस्तान में और रूसिया के भीतर तो बड़े जमीन्दारों की जमीन और खेती के सामान को गरीबों में बाँट दिया गया है।

हमारे यहाँ भी ऐसा ही हो तो हमारी भी हालत अच्छी होगी।

—होगा, होगा—पहले लकड़हारे ने कहा—नये घोषणापत्र को पढ़कर मैंने सुनाया नहीं था, क्या भूल गये?

—तूने पढ़ा, मैंने सुना और भूला भी नहीं। लेकिन वह कब होगा, हम उसे देखेंगे या नहीं ?

—देखेगा और इसी साल देखेगा। इस काम के जल्दी होने में अमीर भी सहायक हो रहा है। वह जुल्म और अन्याय के लिये रोनेवाले कमकरों को जदीद और बोलशेविक कह कतल करवा रहा है। प्राणों पर आफत देख कितने ही लोग भागकर ताशकन्द और समरकन्द में जा जवानों में शामिल हो बोलशेविक बन रहे हैं, सैनिक-शिक्षा ले रहे हैं। सेना में दाखिल हो युद्धविद्या सीख रहे हैं। ये सब काम जल्दी होने के चिह्न हैं।

—लेकिन अमीर ने भी भारी सेना एकत्रित कर रखी है—एक लकड़हारे ने कहा।

—अमीर सेना एकत्रित करता फिरे—पहले लकड़हारे ने कहा—अमीर की सेना क्रान्ति के सम्मुख सूर्य के सामने बर्फ की तरह नहीं ठहर सकती। अमीर के सिपाही अधिकतर कमकर-किसानों के लड़के हैं। वे युद्ध के समय क्रान्ति के विरुद्ध कभी गोली नहीं चलायेंगे। यही कारण है कि कोई दिन नहीं बीतता, जब कि अमीर के सिपाही अपनी बन्दूक लिये जवानों की तरफ नहीं चले जाते हों।

अमीन, अरबाब, अकसकाल, अमीर के खान्दानी नौकर और अफसर गरीबों को लूटना भले ही जानते हों, लेकिन वे युद्धक्षेत्र में जान देने की हिम्मत नहीं रखते। ऐसी सेना लेकर अमीर कभी क्रान्ति से मुकाबिला नहीं कर सकता।

एक लकड़हारे ने कहा—अमीर मूर्ख है। उसने बुखारा के बायों की एक सेना संगठित की है। वही बाय, जो सदा स्त्रियों की तरह बनाव-सिंगार में ही अपना दिन काटते हैं।

—सेना तैयार कर ले, जनाने बायों की नहीं, बल्कि असुर-जैसे मर्दों की सेनाएँ। कुछ भी करें, अमीर के दिन अब इने-गिने हैं।

—परसाल की क्रान्ति में ही फैसला हो गया होता, किन्तु मूर्ख किसानों ने काम खराब कर दिया।

—अब किसान समझ गये हैं, अब एक भी कमकर-किसान अमीर के पीछे नहीं जायेगा।

—जो गजेत (समाचारपत्र) और पुस्तिकाएँ हमारे पास आ रही हैं, वे दूसरी जगहों में भी जाती हैं कि नहीं ?—

—जा रही हैं, हर तरफ जा रही हैं, चारजूय, किरकी, करशी, शहसब्ज और हिसार भी जा रही हैं।

लकड़हारों के गदहे बहुत दुबले-पतले थे और नाप-नापकर पग डाल रहे थे। अभी वे बहुत दूर नहीं गये थे कि सूर्यास्त हो गया। रात के अंधकार के साथ हवा भी तेज हो उठी (काले बादलों ने पश्चिम से उठकर आकाश को ढाँक दुनिया को बिलकुल अंधकार में डुबा दिया। धूल के मारे आँखों का खोलना मुश्किल था।

—यह अभी पहिला काम है—एक लकड़हारे ने कहा—हो सकता है, कड़ी वर्षा भी आरंभ हो जाये, क्योंकि कहावत है "बादल यदि पश्चिम से उठे, कड़ी वर्षा होती है।"

लकड़हारे की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। पश्चिम से टुकड़े-टुकड़े उठे बादल एक दूसरे से मिलकर सारे आकाश में छा गये। उनकी मोटी तह के अन्दर तारे भी छिप गये। आकाश में गड़गड़ाहट हुई, क्षितिज से दूर बिजली प्रगट हो थोड़ी देर के लिये उसने अन्धकारावृत जगत को प्रकाशित कर दिया। लकड़हारे आँखें मूँदते-खोलते मुश्किल से आगे बढ़ रहे थे। गदहे पैदल चलनेवालों से भी पीछे छूट गये, कड़क और बिजली अपनी भयंकर आवाज के साथ अब उनके समीप पहुँच रही थीं। एक बिजली सीधे सिर पर दिशाओं में प्रकाश फैलाती चमकी, जिससे सब बहुत भयभीत हो गये। बिजली के गिरने का डर हो गया। बूढ़े थके गदहे ने अपने अगले पैरों को आगे फैला उनके बीच में सिर को रखकर आगे चलने से इन्कार कर दिया। चार-पाँच बूद (डेढ़-दो मन) लकड़ी पीठ पर बाँधे लकड़हारों को भी और चलने की ताकत नहीं रह गयी थी, ऊपर से बूँदाबाँदी की जगह वर्षा अब फौव्वारे की तरह जोर-शोर से बरसने लगी। एक लकड़हारे ने कहा :

—हो, अब ईंधन को गदहों के साथ यहीं छोड़कर कहीं शरण लें।

—मैं कब से आशा छोड़ चुका हूँ—दूसरे लकड़हारे ने कहा—इस समय हम कहाँ हैं, इसे भी नहीं जानते। इस अनन्त मरुभूमि में कहाँ शरण मिलेगी?

—मेरी राय में—एक लकड़हारे ने कहा—एक जगह खड़े रहना भी मृत्यु को आवाहन है। हम इससे या तो सर्दी में बर्फ बनकर मरेंगे या बिजली से झुलस-कर मरेंगे। किन्तु यदि एक ओर चलते चलें तो रास्ता भूल जाने पर भी किसी

कुरा (भेड़-स्थान), कुतन (रखवालों की झोपड़ी) या कुएँ पर पहुँच सकते हैं। कुओं पर कोई न कोई काला घर या गड्ढा मिल ही जायेगा, जहाँ अपना सिर रख हम रात···।

लकड़हारा अभी अपनी बात समाप्त न कर पाया था कि आसमान में अत्यन्त भयानक गड़गड़ाहट हुई, जान पड़ा, सारे बयाबान में बहुत-सी बड़ी-बड़ी तोपें एक ही बार दाग दी गयीं। गड़गड़ाहट के बाद फिर बिजली चमकी, दिशाएँ दिन की भाँति प्रकाशित हो गयीं। इस प्रकाश में लकड़हारों ने दूर एक काला घर देखा।

"शरणस्थान मिल गया" कहते पहिले लकड़हारे ने प्रसन्नता प्रकट की। "रुस्तम अका और उसके गदहे पर बिजली गिर पड़ी" कहते कोई चिल्लाया जिससे प्रसन्नता चिन्ता में बदल गयी। सबने विकल हो पीछे की ओर देखा। दूसरी बार की चमक में उन्होंने कुछ दूर पर एक लकड़हारे और गदहे को लेटे देखा।

—खैर, भगवान दया करे—पहिले लकड़हारे ने कहा—यदि जिन्दा रहे तो कल आकर कबर और लकड़ी देंगे। इस समय दौड़ने-भागने की आवश्यकता नहीं।

—यह चालाक खर—एक लकड़हारे ने पैरों में मुँह डालकर पड़ गये गदहे को लात मारते कहा—भागने का कोई रास्ता नहीं देता।

—यदि अपने प्राणों का मोह है—दूसरे ने कहा—तो ईंधन के साथ गदहे को यहीं छोड़ भाग चलो। यदि गदहा जीवित रहा तो कल आकर ले चलना, यदि मर गया तो भेड़ियों का भोज बनेगा।

—जैसे नसरुल्ला कूशबेगी का मुर्दा निजामुद्दीन कूशबेगी का भोज बना—कहकर एक लकड़हारे ने सबको हँसा दिया।

—है:है, कैसी अच्छी उपमा "मेहमान, तुम्हारा हाकिम खर है या भेड़िया ?

—मेरा हाकिम खर भी है, भेड़िया भी, मेहमान के नाम से संबोधित किये गये लकड़हारे ने कहा।

—यह बड़ी विचित्र बात है कि एक ही चीज खर भी हो, भेड़िया भी।

—हाँ, हो सकती है, यदि वह चीज अमीर का हाकिम हो, तो वह दोनों हो सकता है। अमीर के सामने खर और लोगों के ऊपर भेड़िया; लेकिन उनका भेड़ियापन तभी तक रहेगा, जब तक कि लोग भेड़ों की तरह सो रहे हैं। यदि लोग भूखे शेर की तरह लम्बी नींद से उठ खड़े हों, तो इन भेड़ियों की हालत बूढ़े कुत्ते से भी बुरी होगी।

लकड़हारे ईंधन के साथ अपने गदहे को भेड़ियों के ऊपर छोड़कर चल पड़े।

× × ×

लकड़हारे कुछ ही दूर निकल गये थे कि हवा थम गयी, बिजली और कड़क भी बंद थी, काले बादल एक ओर चले गये। उनकी जगह मटमैले सफेद बादल पैदा हुए। वर्षा बंद थी, लेकिन उसकी जगह अब बर्फ पड़ने लगी, जो कि वर्षा के जम गये पानी पर पड़कर जमीन को सफेद बना रही थी। जान पड़ता था, उस अनन्त मरुभूमि में क्षीर-सिंचन हो रहा है। बर्फ के प्रकाश ने सारे बयाबान को चाँदनी की तरह प्रकाशित कर दिया था जिससे काला घर साफ दिखलाई दे रहा था। उसे देखकर लकड़हारे होने पर भी मंजिल के नजदीक पहुँचे गाड़ी के घोड़ों की तरह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा रहे थे। वे घर के पास पहुँचे। वहाँ काले घरों की पाँती थी जिनके छिद्रों से दीपक का क्षीण प्रकाश आ रहा था।

—ए, यहाँ एक औल (डेरा) है, यह किसका है?—कहते एक लकड़हारे ने आश्चर्य प्रगट किया।

—चाहे किसी का हो, एक रात की जगह··· ।

"ठहरो!"

इस आवाज ने लकड़हारे की बात को वहीं रोक दिया और साथ ही बड़ी आशा से आगे बढ़ते लकड़हारों के रास्ते को रोक दिया। यह आवाज एक बन्दूक-धारी की थी। उसने दौड़कर लकड़हारों के सामने आकर कहा—"अपने हाथों को आस्तीनों से निकालकर ऊपर उठाओ।"

इस दूसरे फरमान ने भय और सर्दी से बर्फ बने हाथों में गति प्रदान की और वे ऊपर उठ गये। लकड़हारों को बन्दूकदारों के झुण्ड ने आ घेरा, "सीधे खड़े रहो" कहकर एक और आवाज आयी और साथ ही पीठ पर बन्दूक के कुन्दे भी पड़े। वे उस घर की ओर चले। सामने एक हौज की तरह का गड्ढा था, जिसकी बारी को कँटीली झाड़ियों और मन्दार से रुँधा गया था। एक जवान ने बन्दूक के कुन्दे से काँटे को ढकेलकर एक जगह रास्ता बना दिया। लेकिन सामने लेटे कुत्ते ने गुर्राते हुए रास्ते को रोक दिया। बन्दूकदार जवान ने इस गुस्ताखी के लिये कुत्ते के सिर पर कुन्दा मारा और कुत्ता चिल्लाता

हुआ हट गया ; लेकिन फिर भी वह अपने दाँतों को तेज कर उस आदमी पर आक्रमण करना चाहता था। इसी समय "खालदार, खालदार" की आवाज ने आकर कुत्ते को ठंढा कर दिया—यह आवाज कूतन के मालिक की थी। कुत्ते ने आक्रमण करने का इरादा छोड़ दिया ; किन्तु मारनेवाले पर वह अब भी गुर्रा रहा था। तो भी वह अपने मालिक के हुक्म को मानने से इन्कार नहीं कर सकता था, इसलिये वह अपनी जगह चला गया।

बन्दियों को हौज के अन्दर पहुँचाया गया। सर्दी के मारे भेड़ें एक दूसरे से चिपकी बर्फ पर लेटी थीं। लेकिन नये जानवरों के आने से वे अपनी जगह से उठकर दूसरी जगह जा एक दूसरे से सटकर खड़ी हो गयीं। भेड़ों की छोटी जगह काँटों से घिरे रहने पर भी कुछ नर्म और गर्म बिस्तरे की जैसी थी। लेकिन उन्हें यहाँ लेटकर अपनी थकावट दूर करने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ।

बन्दियों के पीछे-पीछे कितने ही हथियारबन्द जवान आये। उन्होंने वहाँ से काँटा-तिनका दूर किया और घोड़ों के बाँधने लायक बड़े-बड़े लकड़ी के खूँटे गाड़ दिये, फिर हरएक बंदी के दोनों हाथों को लेकर बकरी के बालों की रस्सी से जोर से बाँध दिया, फिर उनके दोनों पैरों को बाँधा, फिर जाँघों को मोड़कर बँधे हाथों को उनके किनारे डालकर जाँघों के बीच में डंडा डालकर उलट दिया। बुखारा की परिभाषा में इसे "कुल्लुक" कहते हैं। इसी तरह सारे बन्दियों को कुल्लुक करने लगे ; लेकिन जब अन्तिम बंदी की बारी आयी, तो रस्सी खतम हो गयी। कुल्लुकची ने अपने दोस्तों से कहा—"रस्सी खतम हो गयी और रस्सी दो।"

—हमारे पास और रस्सी नहीं है—कहते दूसरे आदमी ने अपनी कमर से बँधी रस्सी को दे दिया।

—यह काम न देगी। यह भेड़ के ऊन की रस्सी है।

—कोई हर्ज नहीं—जवान ने कहा—क्या एक कमजोर कुत्ता इसे तोड़कर भाग सकता है? इसकी जान तो अपने आप निकलनेवाली है।

बूढ़े लकड़हारे को भी कुल्लुक किया गया।

कुल्लुक बने आदमियों का भागना असम्भव था, तो भी बन्दूकदार जवान कुल्लुक की रस्सियों को घोड़ों के खूँटों से बाँधकर सोने चला गया।

११

मृत्यु सिर पर

बर्फ फिर पड़ने लगी और जिसने बंदियों के ऊपर सफेद चादर-सी डाल दी। कुल्लुक हुए बंदियों को भेड़ों के पेशाब-पैखाने में नींद कहाँ! एक बंदी ने दूसरे कमजोर-से बंदो को खूँटे के बल सिकुड-फैल, टेढ़े-मेढ़े होकर, हाँफते-काँपते, काँपते-काँपते जोर लगाते हुए कहा—हा अका एरगश! तुम्हें क्या हुआ है? पेट में दर्द तो नहीं?

—चुप रह, आवाज न निकाल, नहीं तो वे जग जायेंगे—कहकर एरगश ने फिर जोर लगाना शुरू किया, फिर "उफ्" कहकर लम्बी साँस लेते कहा—"तोड़ दिया।"

"जिन्दाबाश', "शाबाश" की आवाज एक दूसरे के पीछे निकली "चुप-प्-प्-प" धीमी आवाज से कह एरगश ने पैरों से जोर लगाना शुरू किया। एक दूसरे बंदी ने भी देखा-देखी जोर लगाया और "वाख" कह उठा।

—ठहर, बकरी के बालों की रस्सी नहीं टूटा करती, वह तेरे हाथों को काट डालेगी—एरगश ने कहा—मैं खुल जाऊँ तो तुम सबको खलास कर दूँगा। इतने जोर से बाँध रखा है कि कितना ही जोर लगाने पर नहीं खुलती।

—अपने दाँतों से खोलो—एक बंदी ने कहा।

—अजब आदमी हैं, पैरों के पास मेरा दाँत कैसे जायेगा?

—मेरी ओर पैरों को फैलाकर लेट जाओ, मैं दाँतों से खोलता हूँ—उस बंदी ने कहा।

—ठहर, पालिया—कहते एरगश ने हाथ को जामा के अन्दर से कमर पर ले जा, हँसिया निकाल, उसकी नोक से पैर के बंधन को काट दिया।

—वह क्या है एरगश अका!

—जिस समय पीठ की लकड़ी को चूल्ह में फेंका, उसी समय "किसी वक्त काम देगा" सोचकर हँसिया को कमर में बाँध दिया था और वह सचमुच बड़े जरूरी वक्त पर काम आया।

—बँधे लत्ते को भी ले लिया था?

—खैरियत की उसे न लिया, यदि वह हमारे पास पकड़ा जाता, तो सौ प्राण में एक प्राण भी बच नहीं पाता।

—लेकिन अब क्या प्राण बचेगा?

—यदि अब भाग भी न सकें तो भी कतल नहीं किये जायेंगे और जिन्दा रहने की आशा है—एरगश ने कहा।

—सच कहता है—मेहमान बंदी ने कहा—काम के इतने नजदीक आ जाने पर मरना मैं कदापि नहीं चाहता।

एरगश के हाथ-पैर मुक्त थे। उसने दूसरों के बंधनों को भी काटना शुरू किया। सबने एक दूसरे की मदद की और १५ मिनट में सबके हाथ-पैर खुल गये।

—अब क्या करें—एक बंदी ने कहा।

—क्या करें! भागना है—एरगश ने कहा।

—ऐसा ही सही, आगे चलो।

—चुप-चुप—एरगश ने कहा—कूरा के रास्ते नहीं भाग सकते, वहीं सामने ही काला घर है। हमारे पैरों की आहट सुनते ही वे जरूर जाग जायेंगे।

—वहाँ कुत्ता भी है—कहते दूसरे बंदी ने एरगश की बात का समर्थन किया।

—कुत्ते की पर्वाह न कर—एरगश ने कहा—वह मेरा पुराना परिचित है, एक इशारे पर चुप लेट जायेगा।

कैसे यह कुत्ता तेरा परिचित हुआ?—एक बंदी ने पूछा।

—इसे किसी दूसरे समय बतलाऊँगा, अभी छुट्टी नहीं है। इस वक्त भागने की तदबीर निकालनी है। और एक ही बार सबको निकलना ठीक नहीं। पहिले मैं जाकर रास्ते का पता लगा आऊँ। यदि मैं निकल जाऊँ, तो तुम भी एक-एक करके निकल आना।

एरगश ने जाकर दीवार को देखा। वह जमीन में कटे गड्ढे का किनारा थी और इतनी सीधी और चिकनी थी कि कहीं हाथ-पैर नहीं रखा जा सकता था। एरगश ने हँसिया की नोक से दीवार में खुड्डियाँ बनायीं, पहले बायें पैर को एक खुड्डी में चिपकाया, फिर शरीर को सीधा कर बायें हाथ से एक ऊपरी खुड्डी पकड़ी, फिर शरीर को ऊपर उठा दाहिने हाथ से हँसिया पकड़ उससे ऊपर रखे काँटों को हटा दाहिने पैर को फिर ऊपरी खुड्डी में लगा एक कुदान में ऊपर पहुँच गया। एरगश के काँटा हटाते वक्त एक मुट्ठा भेड़ों के ऊपर गिरा और वह भेड़िया आया समझ,

घबड़ाकर दूसरी जगह चली गयीं। यह देखकर कुत्ता गुर्राते हुए कूरा की चारों ओर चक्कर लगाते जमीन सूँघने लगा। एरगश को भागते देख भी उसने पीछा

१२—एक कुदान में ऊपर पहुँच गया (पृष्ठ २३७)

नहीं किया। जमीन सूँघने से भेड़िया न होने का विश्वास करके वह अपनी जगह जाकर लेट गया।

कुत्ता तो आराम करने लगा, किन्तु उसके भूँकने-गुर्राने से मालिक जग उठा। वह उठकर इधर-उधर देखने लगा और वहाँ एक बंदी को दीवार से चिपके बाहर निकलने की कोशिश करते देख चिल्ला उठा—उठो, आओ बंदी भाग गये।

काले घर से बन्दूकदार जवान दौड़कर "कहाँ, कहाँ, किस तरफ भागे" कहते कूरावाले से पूछने लगे।

—अभी भागे नहीं, किन्तु यदि मैं जागकर आया न होता तो भाग गये होते।

कूरा को घेरकर जवानों ने अंदर आ बंदियों को कुन्दों से मारना शुरू किया। बंदियों के "वाय जानम्, वाय जानम्" की चिल्लाहट से सारा बयाबान गूँज उठा।

सबसे पीछे जगे आदमी ने जामा को सिर पर रख काले घर से निकलकर जवानों से पूछा—सभी हैं न?

—शायद हैं—कूरा के भीतर से जवाब आया।

—अच्छा, इस समय मारना बंद करो, जो बात करनी है कल करेंगे कहकर आदमी घर के भीतर लौट गया।

जवानों ने बंदियों को फिर से बाँधने के लिये रस्सियों के टुकड़े जमा किये।

—हरामजादों ने रस्सियों को कितने जोर से तोड़ा है।—रस्सी के टुकड़ों को जोड़ते हुए एक आदमी ने कहा।

—तोड़ा नहीं काटा है—दूसरे ने कहा—इन खुदा बेखबरों के पास चाकू भी था, लेकिन हमने देखा नहीं!

—अपने चाकुओं को दो—बन्दूकदार ने कहकर बंदियों को धमकाया।

—हमारे पास चाकू नहीं है—एक बंदी ने जवाब दिया।

—दे, कह रहा हूँ, दे—कहकर बंदूकदार उसे मारने लगा।

—न मार, मर जायेगा। सबकी एक तरफ से तलाशी ले लो।

—यदि ऐसा खुदा-बेखबर मर जाये तो सिर की बला—बन्दूकदार ने गुस्से में होकर कहा।

—लेकिन मार डालने से फायदा? कल उनसे बहुत-से भेद खुलने की संभावना है, पीछे जो कुछ करना है करेंगे।

बंदियों की एक ओर से तलाशी ली गयी, लेकिन कोई चाकू या छुरा न मिला।

रस्सियों के टुकड़े को जोड़कर फिर उन्हें कुल्लुक बनाकर खूँटों से बाँध दिया गया।

—एय, एक खूँटा अधिक क्यों–घबड़ायी हुई आवाज में एक बंदूकदार ने कहा।

—बंदियों को गिनकर देख, पहले सब सात थे।

—गिन लिया अब छ हैं।

—ठीक-ठीक, वह बूढ़ा कुत्ता भाग गया, जिसे तू मुर्दा कहता था।

—पहलवान, तुम्हारे कुत्ते ने कोई बहादुरी नहीं दिखलायी—एक बंदूकदार ने कूरे के मालिक से कहा—बेअकल ने भगे बंदी का पीछा भी नहीं किया कि हम खबरदार हो उसका पीछा करते।

—तुमने रात को उसे नाहक मारा, इसलिये वह तुमसे गुस्सा हो गया और तुम्हारी अमानत की रक्षा न की।

—हाँ, हाँ—एक बंदी ने कूरा के मालिक को नजदीक से देखकर दूसरे बंदी के कान में कहा—यह एरगश अका का पहलेवाला मालिक पहलवान अरब है, इसीलिये कुत्ते ने पुराने परिचय के कारण उसका पीछा नहीं किया।

—अच्छा, जो होना था सो हो गया न, अब रेगिस्तान का कोना-कोना ढूँढ़ना है—एक बंदूकदार ने अपने साथी से कहा।

—बतलाओ बुड्ढा कुत्ता किस ओर से कैसे भागा?—धमकाते हुए एक बंदूकदार ने बंदियों से पूछा।

—वहाँ से भगा—कहते एक बंदी ने भागने की जगह की ओर इशारा किया।

बंदूकदार दीवार के पास जा उस जगह को हाथ लगाकर देखने लगा। इसी समय उसके पैर में कोई टेढ़ी-टेढ़ी-सी चीज मिली। उसने उठाकर देखा। वह एरगश का हँसिया था, जिसे वह अपने साथियों के लिये फेंक गया था।

—खैर, जो करना था उसने किया, जो होना था हुआ, अब जरा भी देर किये बिना उसका पीछा करना चाहिये—बंदूकदार ने कहा।

बंदियों पर पहरा बैठा कितने ही बंदूकदार बे-जीन के घोड़ों पर सवार हो बयाबान की ओर दौड़े और एक घंटा बाद खाली हाथ लौट आये। "गिरफ्तार कर लाये?" पूँछने पर एक जवान ने कहा—नहीं, वह बुड्ढा कुत्ता हाथ नहीं आया।

—वह बुड्ढा कुत्ता नहीं, बुड्ढी बिल्ली है, जो कि जवान भेड़ियों को चकमा देकर चली गयी—पहरेदार ने कहा।

× × ×

सवेरे आकाश निरभ्र और मौसिम स्वच्छ था, भाल भर चढ़ आया सूर्य अपनी सुनहली किरणों को बर्फ से ढँके सारे बयाबान में फैला रहा था। प्रकाशमान हिमकण बालातप में हीरे की तरह चमकते आँखों में चकाचौंध डाल रहे थे। अभी वे पिघल नहीं रहे थे।

काले घर में मुख्य स्थान पर बैठे आदमी ने द्वार पर खड़े १७-१८ साला लड़के से कहा—दस्तरखान समेट ले।

लड़के ने घर के अन्दर जा दस्तरखान पर बिखरी बर्रा बिरियान की आधी खायी हड्डियों और घी में पकी गेहूँ की रोटियों के टुकड़े को जमा कर दस्तरखान को समेट लिया। प्रधान पुरुष ने चाय पी, प्याले को पास में रक्खे चायनिक के नजदीक रख दिया। फिर साथ बैठे लोगों में से एक से कहा।

—करावुलबेगी! अब रात के पकड़े अपने शिकारों को लाओ, देखें तो वे कौन हैं?

करावुलबेगी ने घर से बाहर जा दूसरे काले घर की ओर आवाज दी—जवानो, बंदियों को लाओ।

बन्दूकदार जवान "बहुत अच्छा, अभी हाजिर" कहते कूरा की तरफ गये। भेड़ें कब की चरागाह चली गयी थीं और वहाँ सिर्फ बंदी ही रह गये थे। भेड़ों के बर्फ बने पेशाब-पाखाने में लद-फद बंदियों के बन्धनों को खोलकर बन्दूकदारों ने उन्हें बाहर लाना चाहा, लेकिन लम्बी रात तक रस्सी से कसकर बँधे हाथ-पैर, बर्फीली ठंढी हवा, बर्फ बने पेशाब में पड़े शरीर और बन्दूक का कुन्दा खाया सिर कहाँ हिलने-डुलने की शक्ति रख सकते थे। उन्हें घसीटकर करावुलबेगी के सामने बैठाया गया। प्रधान स्थान पर बैठा दल का सरदार घर से बाहर निकला।, उसने बंदियों को एक-एक करके देखा—हाँ, यह गुलाम, नमकहराम गुलाम, हमारी नून-रोटी खा, हमारे हाथों से पर्वरिश पा हमीं पर तलवार खींचते हैं—कहते बंदियों में एक अपरिचित आदमी को देखकर पूछा--किन्तु यह कौन है?

किसी ने जवाब नहीं दिया। सरदार ने फिर करावुलबेगी की ओर निगाह करके "क्यों यह कौन है" कहते अपने सवाल को दुहराया था।

—मैं भी नहीं जानता अमीन बाबा—करावुलबेगी ने जवाब दिया।

सरदार ने खुद उस अपरिचित आदमी की ओर मुँह करके पूछा—तू कौन है?

—आदमी।

अमीन ने गुस्ताखी भरे जवाब को सुन भन्नाकर दूसरे बंदियों से पूछा—यह कौन है आखिर ?

हम इस आदमी के हसब-नसब को नहीं जानते, यह अपने को खातिरची का रहनेवाला बताता है और कुछ समय से हमारे साथ लकड़हारी कर रहा है। आदमी गरीब बेचारा मालूम होता है—।

—यह भी तुम्हारे जैसा गरीब बेचारा होगा—सरदार ने कहा—आजकल सारी आफतें गरीब बेचारे आदमी ही ला रहे हैं। जब से रूस और तुर्किस्तान में सरकार बोलशेविकों के हाथ में गयी, तब से गरीब बेचारों की पूँछ में पानी लग गया है। अच्छा, बतलाओ (अपरिचित आदमी की ओर निगाह करके) गरीब बेचारा खातिरचगी ! तू इधर इस तरह घूमते क्या काम कर रहा है ?

—लकड़हारी करता हूँ—अपरिचित बंदी ने जवाब दिया।

—तुम्हारा दूसरा काम क्या है ?

—दूसरा काम कोई नहीं।

—बहुत अच्छा—कहते अमीन ने बन्दूकदारों को हुक्म दिया—इस आदमी को कुल्लुक करो। डंडा झूठे से सच बुलवाता है।

अपरिचित बंदी के खुले हाथ-पैर फिर बाँध दिये गये। उसे कुल्लुक बना सरदार के कहने पर लचकदार लकड़ियाँ बंदी के पास रख दी गयीं। अमीन ने "मार" कहा और फिर हाथों से लपलपाती न टूटनेवाली पुलगुन की लकड़ियाँ बंदी के शरीर पर सटासट पड़ने लगीं। बंदी पहिले कुछ देर तक "वाय जानम्, वाय जानम्, वाय मरा" कहकर चिल्लाया ; फिर धीरे-धीरे चुप हो गया। वह बेहोश था, उसका शरीर भी अकड़ गया था।

अमीन ने "ठहरो" कहा। फिर पास जाकर भयानक स्वर में कहा "बोल, क्या काम करता है ?" लेकिन जवाब नदारद। अमीन ने अपने एक आदमी को फिर हुक्म दिया "इसकी जाँघों और घुटनों पर फिर मार।"

जमीन पर पड़े बंदी को बैठाकर, नीचे डंडा डाल, उसके घुटनों को ऊपर उठा उनपर डंडे पड़ने लगे। घुटने का चमड़ा फट गया और वहाँ रक्तलिप्त हड्डी दिखलाई देने लगी। अमीन ने फिर पूछा "सच बतला, इस इलाके में तू क्या काम करता है ?" लेकिन बंदी की आँखें बन्द थीं और उसके ओठ नीले हो चुके थे, तो भी वहाँ से एक क्षीण स्वर निकला "ल-क-ड़-हा-री।"

—यदि तू लकड़हारा है, तो तेरा हँसिया, रस्सी और गदहा कहाँ है ?

बंदी ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन एक बन्दूकदार ने कहा—रात कूरा में एक हँसिया मिला था।

—एक हँसिया से सात लकड़हारे कैसे काम कर सकते हैं—अमीन ने कहा—यहाँ कोई भेद है, यह जदीदों और बोलशेविकों के जासूस हैं।

—एक बंदी बोल उठा—रात तूफान आ गया, हम अपने ईंधनों को उसी तरह बंधे अपने हँसियों और गदहों के साथ बयाबान में छोड़कर यहाँ शरण लेने के लिये आ रहे थे।

—बहुत अच्छा, किन्तु यदि तुम्हारी बात झूठ निकली तो तुम सबको यहीं गोली मार देंगे। फिर जनाब आली के पास सूचना दे देंगे—कहकर अमीन ने करावुलबेगी की ओर निगाह करके फिर कहा—इन्हें सावधानी से बंद रखो और जहाँ बतला रहे हैं, वहाँ आदमी भेज इनकी चीजें मँगवाओ।

बंदियों को हाथ-पैर बाँधकर फिर कूरा में डाल दिया गया। सिर से पैर तक खून से लदफद कुल्लुक बना बंदी उसी तरह काले घर के सामने पड़ा रहा। बंदियों की बतलायी जगह की ओर दो सवार दौड़ाये गये।

× × ×

बंदी अपनी चीजों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक ने कहा—अब हमारा भाग्य लकड़हारों के सामान के साथ बँधा है, यदि वे मिल गये तो हम छूट जायेंगे। यदि उन्हें कोई यात्री उठा ले गया, तो समझना चाहिये कि हम जीवन की आखिरी घड़ी बिता रहे हैं।

—सामान मिल भी जाये तब भी हम मारे जायेंगे और बड़ी बुरी तरह से—एक बंदी ने कहा; क्योंकि यदि चीजें मिलेंगी तो उनके अन्दर वह बँधा लत्ता भी मिलेगा तब हमें बिना पूछे ही मार डालेंगे।

ऐसा ही सही—दूसरे बंदी ने कहा—चाहे चीजें मिलें या न मिलें, हमारे जीवन की अंतिम घड़ी के ये ही चन्द मिनट रह गये हैं।

—अलबत्ता (निःसन्देह)—भयभीत बंदी ने कहा—मेरी राय में चीजों के मिलने से उनका न मिलना ही अच्छा है; क्योंकि यदि चीजें मिलीं तो बँधा लत्ता भी हाथ लगेगा। फिर तो यह जल्लाद केवल इन्हीं को मारकर दम न लेंगे, बल्कि संदेह में आधे तूमान को मार छोड़ेंगे।

यदि चीजें न मिलीं तो छूटने की आशा है, फिर तो तुमने व्यर्थ ही पता दिया—कहते किसी ने उस बंदी को दुत्कारा।

चाहे चीजें मिलें या न मिलें, चाहे हम पता देते या न देते, इस आदमी के हाथ से हमें मुक्ति नहीं मिल सकती। जानते नहीं, यह जल्लाद बाजार अमीन है। इस आदमी के हाथ में पड़कर आज तक कोई अपने को बचा नहीं सका।

बंदियों का एक-एक क्षण बड़ी परेशानी से बीत रहा था। सभी का ध्यान गये हुए सवारों की ओर था। बहुत प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। घंटे भर बाद वे लौट आये। बंदी फिर काले घर के सामने लाये गये। वहाँ बाहर रस्सियों, हँसियों और तीन गदहों के सिवा और कोई चीज न देखकर उनके जान में जान आयी।

—शुक्र—कहते पता देनेवाले बंदी ने संतोष प्रकट किया—बँधे लत्ते का कहीं पता नहीं, लेकिन शायद लत्ते को अमीन के पास ले गये हों और वह उनकी जाँच-पड़ताल कर रहा हो—यह सोचकर फिर उसकी चिन्ता बढ़ने लगी।

दूसरे बंदी भी उसी तरह आशा और निराशा के झूले में झूल रहे थे। इसी समय अमीन घर से बाहर निकला। उसके हाथ में बँधा लत्ता न था। बंदियों को घेरकर खड़े बंदूकदारों के हाथों में भी वह लत्ता न था। पता देनेवाला बंदी सोच रहा था—यह कैसे हो सकता है कि सभी चीजें मिलें और उनके अंदर बँधा लत्ता न मिले।

—अच्छा—करावुलबेगी की ओर निगाह करके अमीन ने कहा—तो ये लकड़हारे हैं, किन्तु ये निरे लकड़हारे नहीं हैं, ये वे लकड़हारे हैं, जो सारे देश को जलाने के लिए लकड़ी जमा कर रहे हैं। यदि ये अपनी बात और काम में सच्चे हैं, तो इनके भीतर यह खातिरचगी क्या काम कर रहा है? यदि खातिरचगी निरा लकड़हारा है तो क्या वह खातिरची में ईंधन नहीं जमा कर सकता था?

अमीन ने थोड़ी देर बाद चुप रहने के बाद फिर कहना शुरू किया—इनकी चीजें गनीमत के माल के तौर पर जवानों में बाँट दी जायें और इन्हें गिज्दुवान में मीरशब के पास भेज दिया जाय। बाकी रहस्य वहाँ मीरशबखाने के डंडे से खुलेगा।

आध घंटे बाद हाथों को पीठ पर बाँधकर बंदियों को गिज्दुवान की तरफ रवाना कर दिया गया। खातिरचगी बंदी पैरों से चल नहीं सकता था। उसे दूसरे

के पीछे घोड़े पर सवार कर पैरों को नीचे बाँधकर भेजा गया। कितने ही बंदूकदार रखवाली करते उनके साथ गये।

× × ×

जिस दिन बंदी गिज्दुवान भेजे गये, उसी दिन दोपहर को शाफिरकाम के चूल में एक कजाक के काले घर के भीतर चूल्हे में फरास (सस कोल) का ईंधन शितिर-शितिर जल रहा था। चूल्हे की चारों ओर रोजी, सफर गुलाम, कुल-मुराद, कामिल और यूसुफ अपने हाथों को गरम कर रहे थे।

एरगश उस रात भागकर बँधे लत्ते को लकड़हारों की चीजों में से निकालकर चम्पत होने में सफल हुआ था, और उसे लिये यहाँ पहुँचा था। अपने साथियों को गजेतों और पुस्तिकाओं को दिखलाते मेहमान खातिरचर्गी के पढ़ने के वक्त की याद रही बातों को बतला रहा था। फिर सब इस बात की सलाह करने लगे कि कैसे इन छपी चीजों को लोगों में फैलाया जाय।

१२

उनका खून हलाल, उनकी स्त्री तिलाक

१९२० के अगस्त का अन्त था। सारे बुखारा राज्य की तरह शाफिरकाम और गिज्दुवान के तूमानों में भी बड़ी खलबली और अशान्ति फैली हुई थी। अमीन, अकसक्काल, बाय मुल्ला, राज चाकर और अमलदार दो रात-दिन एक बाजार से दूसरे बाजार, एक गाँव से दूसरे गाँव घोड़े दौड़ा रहे थे। हैत अमीन शाफिरकाम के गिज्दुवान आने पर अब्दुल्ला बायबच्चा गिज्दुवानी ने कहा—हमारा कर्तव्य है कि इस जहाद (धर्मयुद्ध) में बुखारा के दूसरे तूमानों और बिलायतों से ज्यादा कठिन और बढ़कर काम करें।

—किस तरह?—हैत अमीन ने पूछा।

—चूँकि हमारे दोनों तूमान तुर्किस्तान और बुखारा के रास्ते के ऊपर हैं, इसलिए बोलशेविकों की ओर से होनेवाले हर आक्रमण की चोट सबसे पहिले हमपर पड़ेगी और जो आक्रमण उनके ऊपर किया जायेगा, उसकी लपेट में भी पहिले हम आयेंगे। यही कारण था कि कोलिसोफवाले प्रथम युद्ध में कागान

से करमीना तक की रेल की सड़क को हमने बर्बाद किया, अधर्मियों (क्रान्ति-कारियों) को मार भगाया और इस तरह जनाब आली के तख्त को सुरक्षित रखा। अब इस युद्ध में भी जनाब आली की आशा प्रथम अल्ला पर और इसके बाद हमलोगों के ऊपर है।

—किन्तु—हैत अमीन ने कहा—आज के गरीब दो साल के पहिलेवाले गरीब नहीं हैं। दो साल पहिले गरीबों की आँखें बन्द थीं। कुछ भय से और कुछ मन से हम जो कुछ कहते, उसपर "लब्बेक" "खुश तकसीर" कहते यदि किसी आदमी को हम "जदीद" या "बोलशेविक" कहकर इशारा कर देते तो हमारे हाथ उठाये बिना वह आदमी मारकर खतम कर दिया जाता। इन दो सालों में दुनिया कहाँ से कहाँ चली गयी, बहुत पानी आया-गया, बहुत-सी पुरानी बातों को बाढ़ बहा ले गयी।

कैसा पानी और कैसी बाढ़ बतला रहे हो? कहते अब्दुल्ला बायबच्चा ने टोक दिया।

—ठहरो, बायबच्चा! सब बतलाता हूँ। हमने चाहे कितनी ही कड़ाई की, कितने ही बाँध बाँधे, किन्तु बोलशेविकों के जासूस काम करते रहे, यहाँ तक कि कितने जासूस और आन्दोलक हमारे यहाँ भी पैदा हो गये, जिन्होंने गजेत और घोषणापत्र नाम की बीमारी हर जगह फैला दी। हर जगह उन्हें पढ़ाकर लोगों को बहकाया गया। इस तरह उन्होंने वह काम किया, जिससे जनता ने हमसे मुँह फेर लिया।

—हम सत्य पर हैं। सत्य हमारी ओर है। जनाब आली अपने सिंहासन पर विराजमान हैं, फिर काफिरों और बेदीनों के बहकाने पर किसान क्यों हमसे मुँह फेरेंगे—कहते अब्दुल्ला ने आश्चर्य और प्रश्न दोनों किया।

—बात यह है कि हम अपने रास्ते पर उतने सच्चे नहीं हैं—कहते हैत अमीन ने एक ठंढी साँस खींची। जहावत के बहाने एक का दस टैक्स लगाना और दस में से नव को अपनी जेब में डाल लेना, सैनिक बनने के लिये लोगों को आदमी खरीदकर देने के लिये बाध्य करना, आज एक आदमी को भगा कल उसकी जगह दूसरे आदमी को खरीदवाना, सैनिक बनाने के बहाने लोगों के अमरद (अल्पवयस्क) बच्चों को जबर्दस्ती ले (बदमाशी करने के लिये) उन्हें यूजबाशी (कप्तान), सरकर्दा (जेनरल) यहाँ तक कि खुद जनाब आली का

"मुहरम" बनाना।...यह बातें बतला रही हैं कि हमारा रास्ता क्या है, अब लोगों को युद्ध के मैदान में लाना बहुत कठिन।

—अमीन! इस तरह अपने विश्वास को निर्बल न करें—अब्दुल्ला बायबचा ने गर्वित स्वर में कहना शुरू किया—यदि बोलशेविकों के जासूसों ने फुसलाकर नंगों, भुक्खड़ों, बेकारों, बदमाशों को हमारे विरुद्ध कर दिया है, तो साथ ही बायों, धनियों, मुल्लों और इज्जतदारों ने भी जान लिया है कि बोलशेविक क्या है। यदि जनाब आली ने अधिक टैक्स लगाया है तो बोलशेविकों ने भी बायों से कंत्रिबुत्सिया (चन्दा) वसूल किया है। इसलिए अपनी माल-मिलकियत की रक्षा के लिये बाय और दौलतमन्द हमारे पीछे चलने के लिये मजबूर हैं।

—लेकिन उनकी संख्या कम है—अमीन ने कहा—एक बाय के मुकाबिले ५० गरीब हमारा विरोध करने के लिये तैयार हैं।

—लोग भेड़े हैं—अब्दुल्ला ने कहा—प्रत्येक गाँव में यदि पाँच आदमी साथ हों तो बाकी उनके पीछे-पीछे हो जाते हैं। यदि उनमें से भेड़ की तरह झुंड से निकलकर अलग खड़े हो जायें, तो उसे डंडे के जोर से फिर मिलाया जा सकता है।

—ठीक है—अमीन ने कहा—लोग पहिले भी भेड़ें थे और अब भी हैं, लेकिन दो साल पहिले भी भेड़ें, सरकार के आदमियों को कुत्ते की तरह बुरा समझती थीं; किन्तु उन्हें अपना रक्षक समझकर भागती न थीं। आज की भेड़ें हुकूमत के आदमियों को भेड़िया समझती हैं। लड़ने की शक्ति न होने से उनसे भागती हैं, लेकिन उनके पीछे वह जाना नहीं चाहतीं; न आज्ञा मानना चाहती हैं।

—आज्ञा न माननेवालों को मारना, काटना, भेड़िये की तरह पेट चीर डालना बिलकुल ठीक है।

—अच्छा—अमीन ने उदास भाव से कहा—बाजार में खड़े हो हम दोनों का झगड़ना अच्छा नहीं। आज रात सभा में तूमान के चार हाकिम और बड़ों के सामने बात करके जो करना होगा करेंगे। बायबचा से अलग होते जरा देर चुप रहकर अमीन बोल उठा।

—अभी तुमने मुझे निर्बल विश्वासी बतलाया। मैं इसके लिये बुरा नहीं मानता। क्योंकि तुम जवान हो; लेकिन यह बात याद रखना कि तूकसाबा के तौर

पर मेरा पद तुमसे बड़ा नहीं तो कम भी नहीं है। मैं तुम्हारे लिये नहीं, बल्कि अपनी आबरू के लिये चुप हूँ। लेकिन लोगों को मैं तुम्हारी अपेक्षा अधिक जानता हूँ और उनके धोखे में नहीं आता। तुम हो सकता है, जवानी और कम तजर्बे के कारण उनपर विश्वास करो और अंत में धोखा खाओ।

"खैर, खुश", कहते दोनों से अलग हुए।

× × ×

गिज्दुवान के भेड़-बाजार के मैदान में भारी भीड़ जमा थी। बाजार का विस्तृत मैदान जिसमें २५ एकड़ जमीन में ईंधन, खरबूजा, अंगूर, रस्सी आदि की हाटें लगी हुई थीं, सभी जगह, यहाँ तक कि दूकानों और सरायों (गोदामों) में और मकानों की छतों पर भी आदमी-आदमी दिखलाई पड़ते थे। उनमें से कुछ के पास पाँच-गोलियाँ, ग्यारह-गोलियाँ बंदूकें, कुछ के पास शिकारी, शाखदार पलीता-वाली या नली से भरी जानेवाली बन्दूकें थीं। किन्तु अधिकांश आदमियों के पास पुरानी शमशीरें, तलवारें, मांस काटने के छुरे, भाले, गँड़ासे और लाठियों जैसे हथियार थे। मैदान में जगह-जगह कुर्सियों, चौकियों, मेजों और चबूतरों के ऊपर खड़े मुल्ला लोग जहाद (धर्मयुद्ध) के लिये लोगों को भड़का रहे थे और बुखारा के सारे मुफ्तियों (धर्मशास्त्रियों) के मुहरवाले फतवे (व्यवस्थापत्र) को पढ़कर व्याख्या कर रहे थे। उनकी मुल्लाई भाषा को लोग बहुत कम समझ पाते थे। उसे साधारण भाषा में समझाने का काम अमीन और अकसक्काल कर रहे थे।

—जो कोई आदमी जदीदों, बोलशेविकों, काफिरों, धर्म-पतितों अर्थात् जनाब आली के विरुद्ध बागी हुए, श्री-चरणों पर खड्ग उठानेवालों के साथ जहाद करने नहीं जाता, उसका खून (हत्या) हलाल (विहित) है, उसका मालमाले-गनीमत (विजित धन), उसकी स्त्री तिलाक (अनब्याही) और उसके बच्चे बंदी समझे जायेंगे।

"जनाब आली के लिये, दीन के लिये, शरीयत के लिये मेरी जान न्योछावर हो" ऊँची जगह में खड़े एक नौजवान ने जोर से चिल्लाकर कहा। जवान के सिर पर तेलप की टोपी, कुर्ता पायजामे के अन्दर डाला, छाती पर दोनों ओर कारतूसों की पाँती, कमर में शमशेर और एक बगल में पंच-गोलियाँ पिस्तौल थी। उसकी आवाज को सुनकर गर्दन में चादर लपेटे दस-बारह बूढ़े "हमारी जान न्योछावर हो" कहते धाड़ मारकर रोने लगे।

"अच्छा, काने प्रशंसकों जैसा मार्का (त्योहार) है" बूढ़ों के पास खड़े एक आदमी ने कहा।

—काने प्रशंसकों का कैसा मार्का था ?—दूसरे आदमी ने उससे पूछा।

—कुछ साल पहिले की बात है, मैं बुखारा गया था। उस वक्त रमजान (रोजा) का महीना था। मैं तमाशा देखते-देखते दीवानबेगी के हौज के किनारे पहुँचा। दीवानबेगीमठ के आँगन में बहुत-से आदमी एकत्रित थे। देखा कि रोजा-महातम चल रहा है। एक लम्बे कद का, लम्बी दाढ़ीवाला आदमी, जिसकी एक आँख अंधी और सारे चेहरे पर चेचक के दाग थे, कब्र और कयामत (यमराज) पर व्याख्यान दे रहा है। रमजान मास की पवित्रता, रोजा रखने का पुण्य बखान करते वह बतला रहा था कि रोजा (उपवास) न रखनेवालों के लिए कैसे आग में तपाकर बड़ी-बड़ी गदायें वहाँ रखी हुई हैं। इस बात को कहते उसने एक विचित्र कथा आरम्भ की। कथा जब अपने अद्भुत स्थान पर पहुँची, तो प्रशंसक (व्यासजी) अपनी अच्छी आँख को भी मूँद के, सिर नीचा किये थोड़ी देर मौन हो गया। लोग बड़ी उत्सुकता से कथा के बाकी अंश को सुनना चाहते थे। मौन के समय प्रशंसक का बलेगोय (हाँ जी बोलनेवाले) ने "ठीक, हाँ जी" की आवाज से सभा को भरे रखा। प्रशंसक ने सिर को सीधा कर पूरी आँख को लोगों की ओर टेढ़ी करके एक बार देख, अपने बलेगोय से कहा "शा शरीफ !" "लब्बेक, बले, दोस्त्-त" कहते बलेगोय ने जोर से जवाब दिया। "पवित्र मास रमजान के अनुरूप लोगों से क्या माँग की जाये ?" कहते प्रशंसक ने प्रश्न किया। "सिर माँगिये सिर, पवित्र मास रमजान की महिमा के अनुरूप सिर दान ही ठीक है" बलेगोय ने उत्तर दिया।

मफाह (प्रशंसक) ने मजलिस के लोगों के सामने जोर से कहा—"है कोई यहाँ मुसलमान मर्द जो पवित्र मास रमजान की महिमा में मर्दों की इस सभा में अपने प्रिय सिर को बलिदान करें ?"

"पवित्र मास रमजान की इज्जत में मेरी जान न्योछावर हो" कहते चार आदमी सभा के चार कोनों से गर्दन में साफा डाले आगे बढ़े।

—इन बुड्ढों की तरह ही—दूसरे आदमी ने कहा।

—हाँ—कहते उस आदमी ने कथा जारी रखी—अपने साफे को गर्दन में डाले, सभा के बीच से होते, प्रशंसक के पास आ, जमीन पर पेट के बल लेटकर

रोने लगे। प्रशंसक ने "सच्चे मुसलमान" कहकर उनके सिरों को हथेली से मलकर लोगों की ओर निगाह करके कहा—"है कोई ऐसा नरकल्ला जो इन्हीं सिर कुर्बान करनेवाले मुसलमानों का अनुसरण करते एक लाल तिल्ला (अशर्फी) देवे?" दो-तीन लाल तिल्ले भी आये। इसके बाद प्रशंसक ने बारह इमामों के लिये बारह तंका, गौस महान् के लिये ११ तंका, बहाउद्दीन के लिये ७ तंका, पंच-तन आले-अबा के लिये ५ तंका, चारयार के लिए ४ तंका, फिर खिजिर, इलियास और न जाने कितने अनगिनत अजीजों सन्तों अवतारों) के लिये बहुत-से तंके माँग-माँगकर सभावालों के जेबों को खूब खाली कराया। सफेद तंकों के जमा कर लेने के बाद ताँबे के पैसे के जमा करने की बारी आयी। प्रशंसक के कथनानुसार जो भी कुछ देगा उसे भी उतना ही पुण्य होगा, जितना सिर देनेवालों को, और हरएक के लिये उसने दुआ भी की।

—और तूने स्वयं क्या दिया? तू भी नरकल्ला बना या नहीं?—सुननेवाले ने पूछा।

—सात ताँबे के पैसे दिये। यदि हो सकता तो और भी देता, काने ने ऐसा ही मेरे दिल को पानी-पानी कर दिया था—कहते उसने अपनी बात जारी की—ताँबे के पैसे भी वर्षा की बूँदों की तरह बरसने लगे। जब और पैसा आने की आशा न रही, तो प्रशंसक ने सभी तंकों और पैसों को थैली में डालकर बलेगोय के ऊपर लादा। लोग अब भी उसकी कथा के अवशिष्ट भाग को सुनने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने उनकी तरफ देखकर कहा "जो उठे पाप उसका हटे", लोग अपनी जगह से उठ जामा झाड़कर चले गये। मैं उन सिर देनेवालों की ओर बड़े आश्चर्य से देख रहा था। प्रशंसक आगे-आगे चला, उसके पीछे पैसों की थैली लिये बलेगोय और फिर सिर देनेवाले उसी तरह गर्दन में साफा लटकाये। मैं सोच रहा था कि "प्रशंसक इन सिर-दाताओं को काटेगा, बेचेगा या क्या करेगा?" मैं भी परिणाम जानने के लिये उनके पीछे-पीछे हो लिया। वे भी अपने साथियों के साथ मठ (खानकाह) की पच्छिमवाली सराय में गया था। मैं भी उनके पीछे-पीछे सराय में पहुँचा। प्रशंसक ने सराय के एक कोने में जाकर एक कमरे के द्वार को खटखटाया। द्वार खुला। प्रशंसक आगे-आगे और पीछे से दूसरे कमरे के भीतर गये। मुझे वहाँ पहुँचकर आगे बढ़ने की हिम्मत न हुई और दिल में अफसोस कर रहा था कि इस घटना के रहस्य को न जान सका। इसी समय प्रशंसक के

लिये द्वार खोलनेवाले आदमी की निगाह मेरे ऊपर पड़ी। उसने पूछा "हाँ, सुन्दर तरुण, क्या नशा करना चाहता है ?" कमरे के भीतर जाने के लिए मेरी इतनी उत्कट इच्छा थी कि मैंने बिना कुछ सोचे-समझे ही "हाँ" कर दिया। "तो अच्छा, जल्दी अंदर आ जा, कोई बेगाना न आ जाय" कहकर उसने मुझे अंदर कर किवाड़ को झट से बंद कर लिया। मैंने चारों ओर नजर दौड़ायी, वह कमरा नहीं, बड़ी शाला थी, उसकी एक ओर दो बड़े-बड़े समावार उबल रहे थे। चूल्हे पर एक बड़ी देग में पोलाव गरम हो रहा था, घर में रंग उड़ी बहुत-सी तसवीरें लगी थीं, प्रशंसक अपने साथियों के साथ एक अलग बिछे नये कालीन और गद्दे पर बैठा। मैं उससे कुछ दूर कोने में तख्ते पर बैठा। समावारची ने प्रशंसक के सामने दस्तरखान बिछा रोटी और मिठाई के साथ साफी से छानी भाँग के कटोरे भी रखे। समावारची ने फिर मेरे पास आकर पूछा "तुम्हारी क्या फरमाइश है सुतरुण !" "चाय" मैंने कहा। "भाँग नहीं चाहिये !" "मलश (अच्छा) लाओ"—मैंने कहा। मैं रोजा रखे था, चाय भी नहीं पी सकता था; भाँग तो सारी उम्र में एक बार भी नहीं पिये था, तो भी उसे माँगा। व्यर्थ का व्यय भले ही हो ; लेकिन मैं सिर देनेवाले के रहस्य को जानना चाहता था। मैंने चायनिक से प्याले में चाय निकाली, भाँग के कटोरे को भी सामने रखा। देखनेवाला समझता कि मैं पी रहा हूँ। अब तक प्रशंसक और उसके साथी भाँग के कटोरे को कुल्त-कुल्त करके खाली कर चुके थे और समावारची ने उनके सामने एक थाल घी से भरा गरम पोलाव ला रखा। प्रशंसक, जिसने रमजान मास की पवित्रता और माहात्म्य के बारे में उपदेश किया था, बलेगोय जो उसकी हर बात पर हाँ जी, हाँ जी करता था और वे चार आदमी जिन्होंने रमजान मास पर अपने सिर कुर्बान किये थे, सभी भाँग के कटोरों को खाली कर पोलाव पर हाथ साफ करने लगे। थाल का पोलाव भी खतम हुआ, दस्तरखान समेट लिया गया।

थैले का मुँह खोलकर तंकों को पैसे से अलग किया। तिल्ला को तो सभा में ही प्रशंसक ने अपने जेब में डाल लिया था। प्रशंसक ने सिर-दाताओं में से हरएक को दस-दस तंका देकर "कल समय पर आ जाना, लेकिन सारा और जामा बदल के आना" कह के उन्हें बिदा किया। मैं भी समावारची को एक तंका मुफ्त देकर बाहर चला आया।

बोलनेवाले ने अभी अपनी बात समाप्त ही की थी कि हल्ला हुआ। "दौड़ो,

आओ, रवाना होओ, हाँ शाहबाजो! आओ" और लोग वासस्थान से चरागाह जाती भेड़ों की तरह एक ही बार हिल पड़े। घोड़े के सवार, गदहों के सवार और प्यादे जोगियों की जमात की तरह एक दूसरे से मिले रवाना हुए। आगे-आगे तूमान के काजी और अमलाकदार चल रहे थे। रईसों, मीरशबों, अमीनों और अकसकालों ने अपने घोड़े दौड़ाकर लोगों में व्यवस्था रखने की कोशिश की। वे गिज्दुवान के माश (उड़द) बाजार से निकलकर किजिलतप्पा की ओर चले। दो घंटे बाद जब कि वह अभी कूले मूलियाँ को भी पार नहीं कर पाये थे कि लोगों का झुंड गलकर लुप्त हो गया। मानो वह बर्फ का झुंड था, जो कि कूल (नहर) में पहुँचकर पानी बन गया।

१३

अमीर बुखारा से भगा

पहली सितम्बर सन् १९२० बुध का दिन गिज्दुवान के बाजार का दिन था, तो भी बाजार लगने की जगह बिलकुल खाली थी। साधारण समय में इस बाजार में बावकन्द से नूरता, कुर्गान वर्दान्जा से किजिलतप्पा तक और साथ ही किजिल चूल के सारे खरीदार और विक्रेता जमा होते थे, लेकिन आज वहाँ न कोई आदमी था, न कोई चीज। गिज्दुवान के चौरास्ते पर गिज्दुवानी व्यापारियों की स्थायी दूकानें और सरायें थीं। उन्हीं की रखवाली के लिये वहाँ दो-तीन कराबुल (पहरेदार) दिखलाई पड़ते थे। इनके अतिरिक्त गिज्दुवान के मीरशबखाने (थाने) में भी थोड़े से सबगर्द थे। मीरशबखाना चौरास्ते के पश्चिम बिरंज (चावल) बाजार के पीछे था और उसका दरवाजा उत्तर में पीरमस्त नहर की ओर खुलता था।

मीरशबखाना का बंदीखाना (हवालात) एक बहुत ही तंग छोटा-सा घर था, जो बंदियों से भरा था। इन बन्दियों के पैरों में बेड़ी, हाथों में हथकड़ी और गर्दन में जेल मारी हुई थी। बन्दियों के बाल, दाढ़ी और नख बढ़े हुए थे। पोशाक इतनी फटी थी कि छेदों से उनका मैल से भरा शरीर दिखलाई पड़ता था। उन बंदियों के गंदे शरीर, रक्तहीन मुखों पर जूँएँ उसी तरह रेंग रही थीं,

जैसे सड़े मांस पर कृमि। लेकिन हाथों में हथकड़ी होने से वह जूँओं की काटी जगहों को खुजला नहीं सकते थे।

पहली-दूसरी सितम्बर के बीच की रात को बंदीखाने का दरवाजा एकाएक खुला। इस तरह रात को असमय खुलने पर बन्दी घबड़ा उठे शायद जल्लाद है—एक बन्दी ने कहा।

—खुदा करे जल्लाद आये—दूसरे बन्दी ने कहा—इस तरह की जिन्दगी से मरना हजार गुना अच्छा है।

—न-नहीं—एक और बंदी ने कहा—मैं प्रतिदिन हजार बार जिन्दा, हजार बार मुर्दा होकर असह्य पीड़ा सह रहा हूँ, तो भी उस दिन को देखे बिना मरना नहीं चाहता। ओः, वह दिन कैसा सरस दिन होगा, यदि देख पाया तो उस दिन की मिठास के लिए प्राण अर्पण करूँगा।

—न पूरी होनेवाली आशाओं को छोड़ो अका खातिरचगी!—मृत्यु की इच्छा रखनेवाले बन्दी ने कहा—आज होगा, कल होगा कहते हमें आज तक दिलासा देते आये। इन सारे कष्टों, अत्याचारों और वेदनाओं के बाद यह अनन्त कालीन प्रतीक्षा एक दिन सिर पर आफत लाके रहेगी। "प्रतीक्षा मृत्यु से भी बड़ी है" बस करो, इस तरह के जीवन से पेट भर गया, अब तो मृत्यु चाहिये।

बन्दी आपस में इस तरह दुख-सुख की बात कर रहे थे। इसी बीच दरवाजा फिर बन्द हो गया, किन्तु वहाँ जल्लाद या किसी दूसरे का पता न था।

—कौन था, यह—एक बन्दी ने कहा—जो दरवाजा खोलकर आता जैसा मालूम होता था, किन्तु फिर दरवाजा बन्द कर चला गया।

—चुप रहो, कान देकर सुनो, मालूम हो जायेगा, शायद कोई काम होगा।

बन्दियों ने चुप हो कान लगाया, दरवाजे के पास कोई सिसक रहा था—

—कौन है?—एक बन्दी ने ऊँची आवाज में कहा, लेकिन सिसकनेवाले की ओर से कोई जवाब नहीं आया।

—कौन है तू? आदमी है या जानवर, अजिन्ना, (जिन) है या शैतान? जल्दी जवाब दे—कहते दूसरे बन्दी ने धमकाया।

"वा-य-जा-नम्-म्!" का शब्द बहुत क्षीण स्वर में साँस रुक-रुककर दरवाजे की ओर से आया, फिर नीरवता छा गयी।

—कौन है तू, जल्दी बतला?—फिर धमकाते हुए किसी बंदी ने कहा—नहीं तो इसी समय मार-मारकर तेरी जान निकाल दूँगा।

—अ-अ-भी मैं खु-द-ही-मर-र-हा-हूँ—हाँफते-हाँफते उस बंदी ने कहा—मे-रा-सि-र-फ-ट ग-या खू-न-ब-हु-त-ब-ह-ग-या-है।

—अच्छा, तुझपर क्या बीती?—धमकानेवाले बन्दी ने थोड़ा नर्म होकर कहा।

—ल-ड़ा-ई-शु-रू-हो-ग-ई।

"आ—।" कहते खातिरचगी बंदी ने अपनी जगह से उछलना चाहा; लेकिन गर्दन में पड़ी जेल (जंजीर) ने उसे उठने नहीं दिया, क्योंकि उसका एक छोर बंदीखाने से बाहर खूँटे से बँधा था। वह आधा उठकर फिर पीठ के बल गिर पड़ा। इस चेष्टा ने बात को बीच ही में रोक दिया।

—अच्छा, लड़ाई शुरू हो गयी, फिर क्या हुआ?—कहते किसी ने बात आरम्भ की।

—लोगों को जहाद के लिये जमा किया गया था। मैंने इस जमावड़े को काने उपदेशक की सभा से तुलना दी। मेरी यह बात किसी ने सुन ली। जब लोग जहाद करने के लिये न जा रास्ते से भाग गये, तो फसादी कहकर मुझे यहाँ भेज दिया।

"धन्य जो मरने से पहिले देख लिया" कहते हुए खातिरचगी बंदी जंजीर को हिलाते नाचने लगा।

—यदि क्रान्तिकारी शक्तिशाली हुए तो निस्सन्देह वह दिन देखेंगे, किन्तु यदि दो साल पहिलेवाली क्रान्ति की तरह वह फिर हारे, तो इस आशा को साथ लिये ही कब्र में जाना होगा—निराश भाव से एक बंदी ने कहा।

—हम इस युद्ध में शक्तिशाली हैं—खातिरचगी बंदी ने दृढ़ता के साथ कुछ गम होकर कहा—क्रान्तिकारी इस युद्ध में खूब हथियारबंद होकर शामिल हुए हैं। बुखारा प्रदेश के वीरपुत्र भी क्रान्ति के साथ हैं। अमीर के सबसे बहादुर सिपाही हमारी ओर चले आये हैं। गाँव की साधारण किसान जनता इस जवान के कथनानुसार अमीर के साथ से अलग हो गयी है। ऊपर से रूस के कमकर, उनकी लाल सेना और तुर्किस्तान के बोलशेविक हमारी सहायता कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में हम अवश्य विजयी होंगे। हम बलिष्ठ, हम पराक्रमी, हम विजयी होंगे।

अभी खातिरचगी बंदी का विजयोल्लास समाप्त नहीं हो पाया था कि बंदी-खाने के द्वार पर कुछ आदमियों के आने की आहट मालूम हुई। उनके पैर भूखों की तरह पड़ रहे थे। ताला खुलने की आवाज मालूम हुई—आ गये हमें मुक्त करनेवाले—खातिरचगी ने कहा।

दरवाजा खुला। एक आदमी हाथ में मशाल लिये सिर झुकाकर भीतर आया। बंदी छ मास से इस अँधेरे घर में रहते थे, किन्तु उन्होंने एक दूसरे के मुँह को नहीं देखा था। आज इस आधी रात को उन्होंने एक दूसरे के ऊपर निगाह डाली। लेकिन आँखें अंधकार से अभ्यस्त हो चुकी थीं। इसलिये मशाल के प्रकाश में देख नहीं सकती थीं और जल्दी ही उन्हें मूँदना पड़ा।

मशाल के पीछे-पीछे दो असुर-जैसे आदमी भी अन्दर आये और उन्होंने जल्दी-जल्दी बंदियों की जेलों, बेड़ियों और हथकड़ियों को तोड़ना शुरू किया। खातिरचगी बंदी के "हमें मुक्त करनेवाले" कहने पर जो अभी तक विश्वास नहीं करते थे, उन्होंने भी बंधनों बिना अपने को खड़ा देखकर उसकी बात पर विश्वास किया। जिनके बंधन कट गये थे, वे बाहर मीरशब की हवेली के सामने निकल आये। जब वहाँ कुछ हथियारबंद आदमियों ने उन्हें घेर लिया तो आशापूर्ण दिल में फिर निराशा भर गयी। मीरशब का एक आदमी खातिरचगी बंदी के हाथों को एक ओर बाँधने लगा। इसका अर्थ बध के लिये ले जाना है, यह सभी बुखारावाले जानते हैं।

—मुझे किसके हुक्म से कतल करना चाहते हो—खातिरचगी ने पूछा।

—सुलतानबेगी मीरशब के हुक्म से जवाब मिला।

कब से कुल्ली सुलतान को बध-आज्ञा का अधिकार मिला—जीवन से निराश बंदी ने कहा—क्या यह अधिकार खास अमीर का नहीं था?

बंदी के हाथ बाँधते वक्त सिपाही के हाथ पर बहुत-सी जूँएँ चढ़ आयी थीं, उनको चुनकर फेंकते हुए कहा—जब से जदीद-क़दीम का झगड़ा शुरू हुआ तब से सुलतानबेगी मीरशब ने इतने आदमियों को मारा है जितनी तेरे शरीर में जूँएँ हैं और इतनी आसानी से जितना कि आदमी जूँएँ मारता है। इस बेठौर-ठिकाने के जमाने में कौन बेवकूफ है, जो हर बात में अमीर की आज्ञा की प्रतीक्षा करेगा?

दूसरे बन्दियों के भी हाथ आगे बाँध दिये गये और सबको लिये कूचे में

गये। बन्दियों के चारों ओर मीरशब के आदमी तलवार और सेहबन्द (डंडा) लिये घेरे हुए थे। उनके आगे-आगे दो आदमी चल रहे थे, जिनके हाथ में डंडा और कमर में दोधार खाँड़ा था। ये जल्लाद थे। पीरमस्त नहर के किनारे-किनारे वह पश्चिम की तरफ चले।

खातिरचगी बंदी दूसरे बंदी का सहारा लेकर चल रहा था। उसने नये बंदी की ओर निगाह करके कहा :—

जब हम लकड़हारी करते थे, तो हमारी संख्या सात थी। गिरफ्तारी के समय इनमें से एक भाग गया और हम छ रह गये। जो भी हो, मरने के समय तू आ गया और हमारी संख्या को सात करके तूने हमें प्रसन्न किया। अब हम सप्त तन. हैं।

—आकाश में "हफ्तदादर" (सातदाया, सप्तर्षि) जैसे—नये बंदी ने कहा।

—ए, मरते समय तुझे जीवन कैसे मिल गया ?

खातिरचगी ने कहा—

—मैं अभी न मरूँगा—मुँह को खातिरचगी के कान से सटाकर धीमी आवाज में कहा—तुम्हें कतल होने नहीं दूँगा।

—कोई करामात कर हम भी देखें—खातिरचगी ने अविश्वास भाव से कहा।

पश्चिम की तरफ से रास्ते में अराबे (घोड़ा गाड़ियाँ) आने लगे। "किनारे जाओ, अपने अराबों को अलग में रखो" कहकर मीरशब के आदमी चिल्लाते ही रह गये। किन्तु आनेवालों पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा। ये एक दूसरे को गाली दे रहे थे और उन्होंने मीरशब के आदमियों की ओर निगाह किये बिना, उनकी बात सुने बिना सारे रास्ते को भर दिया। लाचार होकर सिपाही बंदियों को एक कूचे में ले गये। आनेवाले और बढ़ते गये। संख्यावृद्धि के साथ-साथ गाली-गलौज और हल्ला-गुल्ला भी बढ़ता गया। कमजोर घोड़ों और टूटे पहियोंवाले अराबों को ढकेलते हुए पीछे से आनेवाले मजबूत अराबों ने आगे बढ़ना चाहा, जिससे कितने सवारों के पैर दबे और चीख उठने लगी। किन्तु वहाँ किसको परवाह, बंदी कूचे के रास्ते काट (घास) बाजार के मुँह पर लाये गये। वहाँ से उन्हें बायीं ओर घुमाकर छोटे मैदान में ले गये, जो कि खोजा अब्दुल खालिक गिज्दुवानी की समाधि की ओर जानेवाली सँकरी गली के मुँह पर है।

यह गुप्त वधस्थान था, जिसे "कोशिशखाना" कहते थे, जिन्हें यहाँ मारा

जाता, उन्हें जान निकलने से पहले ही पैर से घसीटकर खोजा अब्दुल खालिक की समाधि की किसी पुरानी कब्र में डालकर छिपा देते थे। बंदी यहाँ आकर समीप आयी मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे।

यहाँ भी इस छोटे मैदान के सामने की सड़क आने-जानेवालों से भरी थी। अब भी रात की नीरवता को गाली-गलौज भंग कर रही थी। लोगों का आना-जाना हो ही रहा था, मीरशब के आदमी प्रतीक्षा कर रहे थे कि लोगों का आना-जाना बंद हो जिसमें वे अपने पशुओं को काट सकें। देर तक प्रतीक्षा करने के बाद सरदार ने जल्लादों को अपना काम शुरू करने को कहा। हुक्म मिलते ही एक जल्लाद ने अपने डंडे से मारकर खातिरचगा को मुँह के बल गिरा दिया। "आः, अपनी आँखों न देख सकता" कहते जमीन पर गिरे बंदी ने आवाज निकाली। मीरशब के आदमियों ने उसे पछाड़कर हाथ से मुँह को दबा आवाज बंद कर दी।

इसी समय पास से बन्दूक की आवाज आयी, जिसका धुआँ सिपाही और बंदियों के ऊपर फैल गया। मीरशब के आदमियों के सरदार जमीन पर गिरा तड़प रहा था। जल्लाद अपने छूरे को लेकर बंदूक चलानेवाले आदमी की ओर दौड़ा; किन्तु वहाँ पहुँचने से पहले ही किसी ने उसके कलेजों को छूरे से भोंक दिया और वह "वाख" कहते जमीन पर गिर पड़ा। मीरशब के आदमी और दूसरा जल्लाद बंदियों को वहीं छोड़कर भाग गये; लेकिन उनकी जगह अब बन्दूक, तमंचा और दूसरे हथियारों से लैस कितने ही जवानों ने आ घेरा और बात की बात में बंदियों के हाथों को खोलना शुरू किया। जल्लादों के छूरे के नीचे से उठ खड़े हो खातिरचगी ने नये बंदी से कहा।

—नाम तेरा क्या है शेर मर्द ? तेरी करामात ठीक निकली।

—रुस्तम अशकी—नये बंदी ने जवाब दिया।

—ए, तू अपना ही पुराना शिष्य ! मैं उरुन नरकल्ला हूँ।

—तुम अब तक जीवित हो मेरे ओस्ताद—कहते रुस्तम अश्की ने उरुन नर-कल्ला के नजदीक जा हाथों के बँधे होते भी उसके चेहरे और गर्दन पर चुम्बन दिया।

—मैं २५ साल से गुप्त फिरता रहा, अधिक समय खातिरची के हलके में रहा, इसलिये खातिरचगी अपने नाम के साथ लगा लिया। इसलिये मेरे जीने-मरने का तुम्हें कैसे पता लगता ?

"मिलन और बातचीत बाद में, अभी अपने हाथों को खोल लेने दो" कहते दो हथियारबंद जवान नरकल्ला और अश्की के हाथों को खोलने लगे।

सफरू! तुमने क्यों इतनी देर की, करीब था कि हम खतम हो जाते—अश्की ने हाथ खोलनेवाले जवान से कुछ अप्रसन्नता दिखलाते हुए कहा।

—क्षमा करें रुस्तम अका, जवान ने कहा—पहिले तो यह हमें आशा न थी कि तुम्हारे बंदी होने के पहले ही रात सबको कतल करने को लायेंगे। दूसरे यह कि मीरशबखाना को घेरकर कुछ हथियार प्राप्त करने, भगोड़ों के रास्ते रोकने आदि में बहुत समय लग गया। यहाँ आकर भी हमने भगोड़ों पर प्रहार करना चाहा, इसी समय तुम्हारे पास पहुँच गये और तुम्हें मुक्त करने में सफल हुए।

—बहुत अच्छा, युद्ध की बात बतला, अमीर कहाँ है—रुस्तम अश्की ने जवान से पूछा।

—युद्ध में अमीर ने हार खायी और क्रान्तिकारियों ने नगर को ले लिया।

"जिन्दाबाद, इन्कलाब" का नारा लगाते उसने नरकल्ला की बात को बीच में काट दिया; लेकिन सफरू ने "ये अमीर के भगोड़े हैं" कहते अपनी बात समाप्त की।

—और स्वयं अमीर कहाँ है?—हड़बड़ी के साथ नरकल्ला ने पूछा।

—स्वयं अमीर भी इन्हीं भगोड़ों में है—कहकर सफरू ने रास्ते पर नजर डालकर कहा—देखो वह है। सभी मुक्त बंदियों और मुक्तदाता जवानों ने रास्ते की ओर देखा। भगोड़ों के बीच से एक टूटी-सी फिटन जा रही थी। उसका घोड़ा लँगड़ा रहा था। आस-पास हथियारबंद अफगान घेरे हुए थे। भगोड़ों के अन्दर से गर्दन में साफा लपेटे एक सवार ने आकर अपने सिर को फिटन के ओहार के कोने में झुकाकर पूछा—दौलत बरकरार रहे, मेरे स्वामी श्रीचरण कहाँ पधार रहे हैं?

फिटन के भीतर से क्षीण स्वर में जवाब मिला—जाफर के यहाँ अब्दुल्ला बाय बच्चा की हवेली में।

फिटन में अमीर की बात निश्चय हो जाने पर सबने एक साथ नारा लगाया "नेस्तबाद अमीर!"

आवाज को सुनकर अमीर ने कोचवान को जल्दी करने का हुक्म दिया।

कोचवान ने दनादन घोड़ों पर चाबुक लगाया। घोड़े जान पर खेल लँगड़ाते-

लँगड़ाते दौड़े और दो मिनट में बायीं ओर घूमकर पुल पर से गुजरते दरवाजा खताजुद्दीन से होते गिन्दुवान के किले के अन्दर जा आँखों से ओझल हो गये।

१६—कोचवान ने दनादन घोड़ों पर चाबुक लगाया (पृष्ठ २५८)

अमीर भाग गया। पाँच मिनट बाद "कोशिशखाना" के मैदान में फेंके मशाल के सिवा और कोई चीज न रह गयी थी।

मशाल अब भी भुक्-भुक् कर रही थी।

चतुर्थ खंड

क्रान्ति और गृह-युद्ध

(१९२०-२३ ई०)

१

बाय अब भी स्वामी

—यदि खुदा किसी को पूरी रोटी दे तो कोई उसे आधी नहीं कर सकता—कहते उरमान पहलवान ने अपने मेहमान बाजार अमीन के साथ बात शुरू की—ठीक है, जनाब आली की दौलत पर कुदृष्टि पड़ी, हजरत भाग गये। अब्दुल्ला बाय-बच्चा जैसे कुछ अदूरदर्शी आदमी उनके साथ भगे, यहाँ तक कि मैं भी शैतान के बहकावे में पड़कर भागने लगा था; लेकिन फिर अपने को रोका और अंत में भगवान की कृपा से सब काम ठीक हो गया।

उरमान पहलवान ने आगे रखी ठंढी चाय को दो घूँट में खतम कर गरम चाय डालकर मेहमान को देते बात जारी की—आखिर क्या हुआ? ये बे-सिर-पैर के भुक्खड़, जिन्होंने क्रान्ति के आरंभ में वसन्त की वर्षा से रेत में उठनेवाली चींटियों की भाँति सिर उठाया था, अपना सिर नीचा करने के लिये बाध्य हुए और थोड़े ही समय में पानी के बुलबुले की तरह पचक गये ना?

—इस पचकने से क्या विश्वास कर रहे हो कि वे हमेशा इसी तरह रहेंगे? बाजार अमीन ने टोककर कहा—मुझे तो संदेह हो रहा है कि झूठी-सच्ची खबरें हकूमतों[1] के पास भेजकर ये लोग हमारी जड़ पर कुल्हाड़ा चला रहे हैं।

—ठीक है, यदि हम चुपचाप बैठ जायँ तो वे अवश्य जैसा चाहेंगे, करेंगे। किन्तु क्या हम ऐसे भोले हैं कि चुप बैठे उन्हें अपनी जड़ पर कुल्हाड़ा मारने देंगे?

उरमान पहलवान ने बाजार अमीन के खाली किये प्याले को चाय डालकर अपने सामने रखा और फिर कहना शुरू किया—जैसे कि हकूमतों ने आज्ञा दी कि हर गाँव के आदमी अपनी ओर से प्रतिनिधि चुनें। मैंने अपने गाँव में एक पुराने किलाचो बाय के लड़के साबित अकसकाल को प्रतिनिधि चुनवा दिया। इस काम से गाँव फिर पहले की तरह होने लगा, यहाँ तक कि लोग प्रतिनिधि

---

१. क्रान्ति के आरम्भ में बुखारा में 'हकूमत' को लोग 'हकुमतहा' बहुवचन कहते थे।

को पहिले की तरह अकसकाल भी कहते हैं और अमीन के जमाने में अकसक्काल से जितना डरते थे, उतना ही उससे डरते हैं।

—हमने भी ऐसा ही किया।

—ऐसा ही होना चाहिये और ऐसा ही हुआ भी। दूसरे गाँवों में भी ऐसा ही किया गया। कहावत है—"जंगल बिना शेर के नहीं, नदी बिना मगर के नहीं।" हर गाँव में हमासुमा (मा-शुमा) जैसे शेर और मगर यदि प्रतिनिधि चुनवाने का काम अपने हाथ में ले लें, तो सब कर सकते हैं।

उरमान पहलवान ने चाय पी प्याले को भरकर मेहमान की ओर बढ़ाते हुए फिर कहा—पुराने किलाचियों की कहावत है—"यदि अपनी पाँती में एक न रहो, तो रास्ते में खतरा नहीं रहता।" यही प्रतिनिधि अकसक्काल हमारे नर होवें तो हमारा बेड़ा क्यों न पार होगा? इसी के फलस्वरूप मैं तूमान (तहसील) में विशेषज्ञ के तौर पर अन्न-मेम्बर और अन्न-संग्रह का अध्यक्ष बनाया गया हूँ। यह काम एक तो भगवान की ओर से और अपने हाथ से बैठाये गाँवों के इन प्रतिनिधियों की सहायता से हुआ।

इसी समय हैत अमीन आया और बात बीच में टूट गयी। पुराने मित्रों ने परस्पर आलिंगन कर सिर और चेहरे पर चुम्बन किया। हैत अमीन को ऊपर के स्थान पर बैठाकर बाजार अमीन और उरमान पहलवान कुछ नीचे हटकर बैठे। कुशल-प्रश्न के बाद उन्होंने अपने हाथों को ऊपर उठाया। फातिहा-पाठ के समय उरमान पहलवान ने मजाक करते हुए कहा—"इलाही, हकूमतों का खड्ग तीक्ष्ण हो, उनकी यात्रा निर्भय हो, हजरत शेर-खुदा और बहाउद्दीन बला गर्दां उनकी कमरों को बाँधें" और मुँह पर हाथ फेरा।

—ठीक है, तुमने पहले जमाने में जनाब आली के लिये इसी तरह दुआ की—हैत अमीन ने कहा—अब जब कि यह पद मिला, तो हकूमतों के लिये भी उसी तरह दुआ कर रहे हो।

—ठीक होना ही चाहिये—उरमान पहलवान ने कहा—"जमाना तेरे साथ न चले तो तू जमाने के साथ चल", अब हम जमाने के साथ चलने के लिये बाध्य हैं, एक दिन आयगा जब फिर जमाना हमारे साथ चलने के लिये मजबूर होगा।

—तुम्हें अन्न का मेम्बर और सग्रहाध्यक्ष होना मुबारक हो—हैत अमीन ने कहा।

—खुदा मुबारक और शुभ बनाये—कहते उरमान पहलवान चायनिक हाथ में लिये खड़ा हो "अभी आया" कहते देहली के बाहर गया और किसी को बाहर झाड़ू देते देख उसे चायनिक थमाकर बोला—"भीतर जाकर कह कि चाय गरम करें, दस्तरखान दें और जल्दी एक थाल आश पका लें।" फिर लौटकर पहलवान ने अपनी जगह बैठ बात शुरू की—ठीक है, मैं अन्न-मेम्बर और संग्रहाध्यक्ष बनाया गया हूँ। यह भगवान की बड़ी मेहरबानी समझिये। अब आप अपने बखारों को गेहूँ से भरकर किवाड़ में भारी ताला लगा खातिरजमा बैठ सकते हैं और पहिले ही की तरह यदि कोई सामने आकर "अमीन बाबा, भूख से मर रहा हूँ, कुछ न देने से नहीं बनेगा" कहते रोये-कलपे, तो उसकी जमीन को लिखा लें और फिर चाहें तो एक-आध मन गेहूँ दे दें। मैं जानता हूँ कि किससे अन्न लेना है।

चाय आयी, दस्तरखान फैलाया गया और उसके ऊपर रोटी तथा चार-शर्बत (पंचमेल मिठाई आदि) की तश्तरी रखी गयी।

—लेकिन काम बराबर ऐसे ही न रहेगा—अपने बे-दाँतवाले मुँह में रोटी और मेवा डालकर दबाते-चबाते हैत अमीन ने आधा चबा मुर्गे की तरह निगल-कर कहा—अभी हकूमतें हमारा मुँह मीठा कर रही हैं, कौन जानता है, कल क्या करेंगी? मैं डर रहा हूँ कि मुँह मीठा करनेवाले इस रोटी-मेवा की तरह वहाँ भी निगलना मुश्किल है।

—हकूमतें कौन हैं "हकूमत शोराय खल्के बुखारा" (बुखारा-जन-सोवियत-सरकार) और खल्के बुखारा (बुखारा की जनता) हम, तुम या वह प्रतिनिधि हैं, जिन्हें हमने-तुमने चुना या चुनवाया। अभी-अभी हम यही बात कर रहे थे कि हमारे प्रतिनिधि कभी हमारी जड़ पर कुल्हाड़ा नहीं मारेंगे।

—कहावत है "बछड़े की दौड़ भुसवुले तक"—हैत अमीन ने और व्याख्या करते हुए कहा—तुम्हारे चुने प्रतिनिधियों की आवाज तूमान से आगे नहीं जायेगी, किन्तु यदि काम बिगड़ा तो बुखारा में बैठी हकूमतें जैसा चाहेंगी वैसा करेंगी और हमारे-तुम्हारे प्रतिनिधियों की कुछ नहीं सुनेंगी।

—नहीं अमीन बाबा, तुम ठीक से नहीं जानते—उरमान पहलवान ने कहा—नीचे से चुने प्रतिनिधियों की आवाज केन्द्र तक जाती है और कुछ प्रतिनिधि तो केन्द्र के भी सदस्य हैं।

—कैसे ?—हैत अमीन ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

—जैसे कि नूरुद्दीन खोजा आगाल की करशी—उरमान पहलवान ने उदाहरण देते हुए कहा—नूरुद्दीन खोजा आगालिक पहले जनाब आली के समय श्री-दरबार का आदमी था। जदीद-कदीम के झगड़े के समय उसने प्रसिद्ध जदीद मुफ्ती खोजा बहबूदी समरकन्दी को उसके साथियों के साथ मरवाया। यह सब होते भी जब लोगों ने उसे अपना प्रतिनिधि चुना, तो उसे केन्द्र का सदस्य बनाया गया।

—मैं इसीलिये इस तरह के कामों से डरता हूँ—हैत अमीन ने कहा—नूरुद्दीन खोजा गुमनाम आदमी नहीं है कि उसे करशी के किसानों ने चुनकर केन्द्र में भेजा। सब उसे जानते हैं, उसके केन्द्र का सदस्य बनने से यही पता लगता है कि केन्द्र में भी कुछ ऐसे जदीद हैं, जो स्थिति के ऐसे रहने पर विश्वास नहीं करते और अपने पुराने दुश्मनों से मित्रता करते नूरुद्दीन खोजा-जैसों को केन्द्र में टिकाना चाहते हैं, जिसमें कि केन्द्र उनके हाथ में रहे। लेकिन केन्द्र में ऐसे लोगों का बहुमत नहीं है, वहाँ बहुमत उन लोगों का है, जो पूरे दिल से बोलशेविक हैं। यही कारण है कि हाल के चुनाव में "अधिकतर बोलशेविकों को चुनो" का नारा लगाया गया।

—बोलशेविक कौन हैं—उरमान पहलवान ने स्वयं अपने प्रश्न का जवाब देते कहा—बुखारा के बोलशेविकों में भी हमारे-तुम्हारे जैसे आदमी ज्यादा मिलेंगे। यदि बुखारा शहर में जाइये तो देखियेगा कि आधा शहर बोलशेविक बन गया है। बुखारा में बोलशेविक का काम है "सिर काजी और पैर भिश्तीग", उनके भीतर पुराने मुल्लों से लेकर भिश्ती तक भरे हैं। ऐसे बोलशेविकों से क्या डर है ?

—मालूम होता है—सिर को अगल-बगल में हिला इन्कार करते हैत अमीन ने कहा—तुम्हें हाल के कामों की खबर नहीं है। "कम्युनिस्टों का शोधन" नामक एक नयी बला आयी है। इस शोधन द्वारा बाय, मुल्ला और इज्जतदार आदमियों को कम्युनिस्टों के भीतर से बाहर निकाल रहे हैं। इस शोधन में काजी निकाल दिये जायँगे और निखालिस भिश्ती रह जायँगे। अब यदि काम इन आदमियों के हाथ में रहा, तो हमारी हालत क्या होगी ? तब तो केन्द्र के सदस्य नूरुद्दीन खोजा के सिर पर पहिले पानी डालेंगे, फिर हमारे सिरों पर आग डालेंगे।

हमारे सिर पर आगे क्या आनेवाला है, यदि इसे जानना चाहते हो, तो तुर्किस्तान और रूस की ओर देखो।

—यदि हम उस समय तक चुपचाप बैठे रहेंगे, तो अलबत्ता सब कुछ हो सकता है—उस्मान पहलवान ने कहा—हम हर अवसर से लाभ उठाकर अपने काम की फिक्र में हैं। विशेषकर जब कि केन्द्र में भी नूरुद्दीन खोजा-जैसे सहायक आदमी हों तो हमारा काम और भी आसान हो जाता है; क्योंकि जो जदीद उनके सहायक हैं, वे हमारे भी सहायक होंगे। ऐसी स्थिति में यदि वे भीतर से ध्वंस करेंगे, तो बाहर से विध्वंस करेंगे, इस तरह हम ऐसे काम करेंगे जिसमें वे हमारे सिर पर आग न डाल सकें।

तुम बहुत अजीब बात कर रहे हो—बाजार अमीन ने कहा—क्या हम जदीदों की ओर से काम करेंगे? फिर तो वही जदीदी सिद्धान्तों के मक्तबों का खोलना, फिर वही लोगों को धर्म से विमुख करना, फिर वही मुल्लों के सिर पर पानी डालना हुआ न? इन कामों का परिणाम होगा पुराने रीति-रवाजों का छिन्न-भिन्न होना। हम ऐसे कामों में शामिल नहीं हो सकते।

—तुम बड़ी विचित्र बात कर रहे हो—उस्मान पहलवान ने कुछ गरम होकर जवाब दिया—हम जदीदों की ओर नहीं जा रहे हैं, बल्कि वे हमारी ओर आ रहे हैं, हमसे सहायता माँग रहे हैं। इसलिये शक्ति हमारे हाथ में है। भगवान करे, इसी तरह एक काम बने। इसका परिणाम होगा जनाब आली का फिर लौटकर तख्त पर बैठना। क्या जदीद हमारे देश में व्यवस्था स्थापित कर सकते हैं?

—तो उस काम के लिए तैयार होने की जरूरत है—हैत अमीन ने प्रसन्न होकर कहा—"नूरुद्दीन खोजा केन्द्र का सदस्य है, मैं अन्न-सदस्य हुआ हूँ" कहकर प्रसन्न हो मोह में पड़ना ठीक नहीं है। क्योंकि जब तक जनाब आली लौटकर अपने तख्त पर नहीं बैठते, तब तक हम आराम की नींद नहीं सो सकते।

—मैं मोह में पड़ने या प्रसन्न होने के लिए हकूमत के काम में नहीं आया हूँ—उस्मान पहलवान ने कहा, बल्कि इसलिये आया हूँ कि अनुकूल समय के आने तक "आरे", "बले" (हाँ जी) कहता रहूँ।

कहावत नहीं सुनी है? "बाहर के संकट से भीतर का संकट अधिक भयंकर होता है?"

—मैं तुम्हें नहीं कहता कि अन्दर से संकट न लाओ—हैत अमीन ने कहा—

बल्कि "एक समय आँधी उठती है और घास-फूस को उड़ा ले जाती है" कहते बैठकर प्रतीक्षा करना ठीक नहीं। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि अब आँधी को उठाने की तैयारी करनी चाहिये।

—तुम्हें और तुम्हारे जैसे इज्जतदारों को अनाज की वसूली से मुक्त करता हूँ, यह आँधी उठाने की तैयारी है; तुम्हारे और तुम्हारे-जैसे इज्जतदारों के अनाज की रक्षा करता हूँ, यह भी आँधी उठाने की तैयारी है, फिर तूमान पर हकूमतों की तरफ से लगायी लगानों को जाँगर चलानेवाले कमकरों से वसूल करके उन्हें सरकार का विरोधी बनाता हूँ, यह भी आँधी उठाने की तैयारी है।

—यह कम है, और भी अच्छी तैयारी करने की जरूरत है—हैत अमीन ने कहा।

—जैसे, कैसे?—उरमान पहलवान ने पूछा।

—जनाब आली भगे—कहते हैत अमीन का गला भर आया और आँखों से दो-तीन अश्रु-बिन्दु टपक पड़े, जेब से रूमाल निकालकर पोंछते हुए उसने कहा—

जनाब आली के अधिकांश सिपाही अपने हथियारों को लिये हुए तितर-बितर हो गये।

इन हथियारों में से कुछ हमारे-तुम्हारे हाथ में भी पहुँचे हैं, किन्तु अधिकतर उन्हीं सिपाहियों और डाकुओं के हाथ में हैं। ऐसा काम करना चाहिये कि वे हथियार हमारे हाथ में आयें और उन्हें हम सुगुप्त स्थानों में छिपा सकें।

हैत अमीन ने जरा साँस लेकर ठंडी हो गयी चाय से कंठ को सिक्त करके फिर कहना शुरू किया—ये ही हथियार हैं, जो कि रेगिस्तान पर से चली जानेवाली आँधी को नहीं, बल्कि शहरों को जलानेवाली ज्वालमालाकुल आग को खड़ा करेंगे।

—इसके लिये निश्चिन्त रहिये—उरमान पहलवान ने कहा।

—निश्चन्त रहना बिलकुल ठीक नहीं है—हैत अमीन ने कहा—सुनने में आ रहा है कि इन्हीं हथियारों को लेने के लिये हकूमतों ने कमीशन नियुक्त किया है। यदि हम और निश्चिन्त होकर बैठें तो ये हथियार हकूमतों के पास चले जायेंगे।

—यही कमीशन काम को हल्का करके हमारे लिये निश्चिन्तता का रास्ता निकालेगा।

—कैसे?—कहते हैत अमीन ने आश्चर्य किया।

—क्योंकि यदि कमीशन न होता तो हम किसी से न कह सकते थे कि तुम्हारे पास जो हथियार हैं, उन्हें हमें सौंप दो। यदि कहते भी, तो कोई फायदा न होता और कोई हथियार न देता। यदि अपनी आवाज ऊँची करते, तो वह सरकार तक पहुँचती और फिर हथियार हमारे हाथ में नहीं, सरकार के हाथ में चला जाता।

—और अब क्या होगा?—हैत अमीन ने टोका।

—अब कमीशन के आने पर काम का रंग ही बदल जायेगा। कमीशन हमारी सलाह से काम करेगा। हम बे-हथियारवालों का नाम बतलायेंगे और हथियारवालों को धमकायेंगे, इस प्रकार हथियार आसानी से हमारे हाथ आ जायेगा।

—तुम जब बे-हथियारवालों का नाम कमीशन को बतलाओगे—हैत अमीन ने मुल्लाई—शास्त्रार्थ के ढंग पर कहा—और कमीशन उस आदमी से हथियार नहीं पा सकेगा, फिर वह कैसे तुम्हारी बात पर विश्वास करेगा?

—हम कमीशन को बे-हथियारवालों का नाम देकर सारा काम उसके हाथ में न छोड़ देंगे। उनपर मार-पीट और सख्ती करके जब कमीशन कुछ न पा सकेगा, तो फिर सुलह कराने के लिए हम बीच में पड़कर उन्हें राजी करेंगे कि वह हमारे द्वारा हथियार खरीद, अपनी चीज कहकर कमीशन को सौंपे और इस प्रकार जान बचावे।

—इससे क्या फायदा होगा?—हैत अमीन ने कहा—यही न कि तुमने एक हथियार उस आदमी के हाथ बेचा। इस तरह तो और भी हाथ के हथियार निकल जायेंगे।

—पहिले यह कि हम काम के हथियार को नहीं बेचेंगे कि वह सरकार के हाथ में पड़े और हमारी हानि हो—उरमान पहलवान ने कहा—दूसरे यह कि यदि आदमी को नाहक गिरफ्तार करके उसे सासत दी जाये और वह अंत में हथियार खरीदकर देने के लिये बाध्य हो, तो हम हथियारवालों को कमीशन के हाथ में न पड़ने का विश्वास दिला उनके हथियारों को अपने हाथ में कर सकते हैं।

उरमान पहलवान ने ठंढी चाय के आखिरी प्याले को पीकर कहा—मैं यह नहीं कहता कि हकूमत के हाथ में एक भी हथियार नहीं पड़ेगा। कुछ पड़ेगा, किन्तु अधिकांश हथियार हमारे हाथ में आयेंगे।

इसी बीच में खिदमतगार ने आकर आश (भोजन) तैयार होने की खबर

दी। उरमान पहलवान "निकालकर देने के लिये कह और गड़ुवा तथा हाथ धोने का बर्तन ले आ" कहकर उरमान पहलवान स्वयं भी चला गया।

× × ×

उरमान पहलवान के मेहमानखाने में मेहमान पोलाव खा चुके थे और दस्तरखान के हटा लेने पर अब चाय पान हो रहा था। इसी समय भूखों-नंगों का एक झुंड हवेली के फाटक के भीतर आया। उन्होंने बिना किसी से पूछे चबूतरे के ऊपर आ द्वार से मेहमानखाने के भीतर झाँका।

—हाँ, क्या बात है—उरमान पहलवान ने उनसे पूछा।

—यह क्या बात हुई?—उनमें से एक ने गर्म होकर कहा—अन्न-विभाग के आदमियों ने हमारे घरों को घेर लिया और अन्दर घुसकर एकपूद (चार पसेरी), आधपूद जो भी गेहूँ, ज्वार, माष, सरसों हमने लकड़हारी करके जाड़े में बच्चों-कच्चों को खाने के लिये जमा करके रखा था, सब उठा ले गये। यह कैसा अन्याय है?

जिन्होंने तुमसे गल्ला लिया, क्या उन्होंने तुमसे खरीदा नहीं? क्या हस्ताक्षर नहीं दिया?—उरमान पहलवान ने पूछा।

—हस्ताक्षर दिया—कहते एक ने अपने खीसे से एक पुराने कागज के टुकड़े को दिखलाते कहा—किन्तु इस कागज को क्या हम भिगोकर चाटें?

—यही हस्ताक्षर पैसा है—झुड़कते हुए उरमान पहलवान ने कहा—जिस समय बुखारा से पैसा आ जायेगा, इस हस्ताक्षर को देकर नगद पैसा ले सकते हो।

—हमारे भीतर प्रतीक्षा करने की शक्ति नहीं है—दूसरे ने कहा—हमें आज ही अनाज की आवश्यकता है, नहीं तो भूखे मरेंगे। हमने अनाज को खलिहान से नहीं बटोरा। हम खरीदकर खानेवाले हैं...।

—बस, बस, इस वक्त तुम जाओ, मैं इसकी जाँच करूँगा—पहलवान ने टोककर कहा—यदि वस्तुत: तुम्हारे पास अधिक अनाज नहीं था और तुमने अपनी खुशी से उसे नहीं बेचा, तो मैं इसके लिये कोई रास्ता निकालूँगा।

—हम कल तुम्हें कहाँ पावेंगे?

—खोजा-आरिफ में, अन्न-कार्यालय में।

—आज हो वहाँ गये थे, किन्तु तुम्हें वहाँ न पाया, कल भी इसी तरह कहीं मारे-मारे न फिरना पड़े।

—आज शुक्र छुट्टी और विश्राम का दिन है, कल अवश्य आफिस में रहूँगा।

अच्छा तो जाओ, विश्राम के दिन आदमी की जान न खाओ—पहलवान ने कहा।

लोग जब चबूतरे से नीचे उतर गये, तो पहलवान ने उनकी ओर इशारा करके मेहमानों से कहा—देखा, यह भी आँधी है।

लोग फाटक से निकलकर बाहर खड़े थे। इसी समय पुलिस-सवार घोड़ा दौड़ाते आया और फाटक के भीतर चला गया। वहाँ घोड़े को खूँटे से बाँध, चबूतरे पर जा, मेहमानखाने के भीतर झाँक उरमान पहलवान को देखकर कहा—पहलवान जल्दी उठो।

"क्या बात है" कहते पहलवान का रंग उड़ गया।

—बुखारा से कमीशन आया है, तुम्हें जल्दी बुला रहे हैं।

यह बात सुनकर पहलवान की साँस कुछ लौट-सी आयी और "अभी चला" कहते वह उठकर कपड़ा पहनने लगा। सवार घोड़े के पास जाकर पहलवान की प्रतीक्षा करने लगा। मेहमान भी जाने के लिये खड़े हुए और चलते-चलते हैत अमीन ने कहा—यह पहली आँधी है जो कि आग को फूँककर भारी ज्वाला पैदा कर सकती है।

—कहीं इस आग में हमीं खुद न जल जायें—बाजार अमीन ने कहा।

अन्तिम बात को सुनकर सभी के चेहरे पर उदासी दिखलाई पड़ने लगी। सभी मेहमानखाना से बाहर आये। पन्द्रह मिनट बाद खोजा-आरिफ के रास्ते पर घोड़ों के खुरों से धूल उड़ने लगी, जिसने उदास चेहरों को धूल-लिप्त भी कर दिया।

२

उत्पीड़ित, फिर उत्पीड़कों के नीचे

खोजा-आरिफ में पुराने काजीखाने के भीतर बुखारा इलाके का विशेष कमीशन बैठा हुआ था। उरमान पहलवान के आने पर अध्यक्ष ने कुशल-प्रश्न के बाद उससे तूमान की हालत पूछी; फिर अपने काम के बारे में बात करते हुए कहा—पहिले तुमसे ही पूछता हूँ पहलवान, अमीर के भगोड़ों के हाथ

के कितने हथियार तुम्हारे पास आये हैं और उन्हें कब हमारे हाथ में लाकर सौंपोगे ?

—मेरे हाथ में पहले से एक तमंचा और एक पलीतावाली बन्दूक थी। युद्ध के समय अमीर के आदमियों ने जबर्दस्ती एक बन्दूक मेरे गले में डाल दी थी। ये सब हथियार मेरे घर में हैं, जब भी आज्ञा दें, लाकर सौंप दूँ। आपके सिर के न्योछावर।

उरमान पहलवान एक क्षण चुप होकर अध्यक्ष के मुँह की ओर देखता रहा और फिर बोला—लेकिन यदि बन्दूक को मेरे पास ही रहने दें, तो मैं बहुत कृतज्ञ हूँगा। कारण यह है कि मैं सरकारी सेवा स्वीकार कर सच्चाई से काम कर रहा हूँ, जिससे मेरे शत्रु भी अधिक हो गये हैं ; क्योंकि तूमान में ऐसे आदमी बहुत हैं, जो अमीर के राज को भूले नहीं हैं। इसके अतिरिक्त तूमान में हथियार-बंद डाकू भी बहुत हैं। यदि उनको मालूम हो जाये कि मेरे पास कोई हथियार नहीं है, तो जरूर वे मेरे ऊपर आक्रमण करेंगे। मेरी हवेली बिलकुल अलग-अलग मरुभूमि के छोर पर है। वहाँ से मेरी चिल्लाहट किसी के कानों तक नहीं पहुँच सकती। इसलिये आत्म-रक्षा के वास्ते मुझे इन हथियारों की आवश्यकता है।

—इस समय तुम अपने हाथ के सारे हथियारों को लाकर सौंप दो—अध्यक्ष ने कहा—उसके बाद यदि तुमने हथियार जमा करने के काम में तत्परता से सहायता की, तो संभव है, तुम्हें "अमुक को उसकी अच्छी सेवा के लिये अमुक संख्या की बंदूक दी गयी" इस विषय का पत्र लिखकर एक बंदूक दी जायेगी। तब तुम उस बंदूक से डाकुओं और अपने शत्रुओं से आत्मरक्षा कर सकोगे और हकूमत के आदमी भी तुमसे वह बन्दूक न छीन सकेंगे।

अध्यक्ष ने जेब से चाँदी का डब्बा निकाल उसे खोलकर उरमान पहलवान के सामने पेश किया। पहलवान ने एक सिगरेट लिया, अध्यक्ष ने भी एक सिगरेट हाथ में ले, डब्बे को जेब में डाल, दियासलाई निकाल, पहिले उरमान पहलवान के सिगरेट को, फिर अपने को जलाकर पीना शुरू किया। सिगरेट की दो-तीन फूँक लगा धुएँ को छत की ओर फेंककर अध्यक्ष ने फिर बात शुरू की—ऐसा ही है। तूमान में अमीर के पक्षपाती हमारे शत्रु बहुत अधिक हैं और डाकू भी ज्यादा हो गये हैं। कमीशन का पहिला काम यह है कि उनके हाथों से हथियार ले ले, और दूसरा काम यह है कि ज्ञात शत्रुओं को पकड़कर दण्ड देने के लिये

केन्द्रीय सरकार को सुपुर्द करे। बुखारा जन-सरकार की इतनी सच्चाई से सेवा करनेवाले तुम्हारे जैसे लोगों का कर्तव्य है कि इस काम में कमीशन की मदद करें।

—सिर आँखों पर—कहते उरमान पहलवान ने दाहिने हाथ को ललाट पर रख, सिर झुका, आँखों को अध्यक्ष की ओर से हटा, बायें हाथ से अधजले सिगरेट की राख को एक ओर फेंककर बात शुरू की—हर तूमान के छोटे-बड़े, भले-बुरे को वहाँ के लोग जानते हैं। यदि आप हम जैसे सरकार के भक्तों और जान न्योछावर करनेवालों से सलाह लेकर काम करें, तो उद्देश्य भी पूरा हो जायेगा और न्याय का अन्याय भी न होगा।

—"लाल भी हाथ आये और यार भी न रूठे" क्यों पहलवान?—कहते अध्यक्ष ने उसकी बात का समर्थन किया।

—अलबत्ता, "सलाह करके कटा हुआ जामा छोटा नहीं होता" की कहावत कहते उरमान पहलवान ने अपनी बात का समर्थन किया।

—बहुत अच्छा—अध्यक्ष ने कहा—किस-किस के पास हथियार है और कौन हमारे दुश्मन हैं, इसे कागज पर लिखकर दो। ऐसे आदमियों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये, इसे हम खुद देख लेंगे।

—ठीक, उरमान पहलवान ने कहा—लेकिन•••।

उरमान पहलवान बात बंद करके अधजले सिगरेट को फेंकने लगा। अध्यक्ष ने उसके फिर बात करने की प्रतीक्षा किये बिना ही पूछा—लेकिन क्या?

—लेकिन इस बात को भी कह देना चाहता हूँ कि इस समय हर आदमी अपने को "अमीर के जमाने का उत्पीड़ित", "गरीब बेचारा", "बायों के ज़ुल्म का शिकार" बतलाना चाहता है। इस तरह की हवाई बातों पर विश्वास न कर हर बात की पूरी जाँच करके देखना चाहिये।

—अलबत्ता—कहते अध्यक्ष ने पहलवान की बात का समर्थन करते हुए कहा—क्रान्ति के शुरू में हमारी सेना अमीर का पीछा करते-करते गिज्दुवान पहुँची। एक बड़ी हवेली को देखकर उसने वहाँ ठहरना चाहा। जब सैनिक हवेली के अन्दर गये तो एक फटे जामा, रस्सी के कमरबंदवाले एक गरीब आदमी ने हमारा स्वागत किया। सेना के अफसर के पूछने पर उसने कहा कि मैं बाय का नौकर हूँ। मालिक के बारे में पूछने पर उसने कहा—"भाग गया हरामजादा!" "बहुत अच्छा, ऐसा ही सही, तू हमें चाय बनाकर दे।"

—"पधारिये, हवेली भीतर-बाहर सब खाली है। मेहमानखाने में फर्श बिछा हुआ तैयार है। चावल, घी, आटा, चीनी, चाय और जौ भी हैं" कहते ढोरखाने में बँधे जानवरों की ओर संकेत करके कहा—"और यहाँ गाय, बैल, घोड़े और भेड़ें भी हैं।"

—"बहुत अच्छा—सरदार ने कहा—तू मेहमानखाने के दरवाजे को खोल।"

—"अच्छा"—कहकर नौकर मेहमानखाने को खोल सरदार को वहाँ ले गया। सरदार मेहमानखाने के अन्दर की सजावट और सौन्दर्य को देखकर बहुत हैरान हुआ और उस गरीब को पास बुलाकर बोला—"तू इस बाय के पास कितने सालों से काम कर रहा है?"

—"बीस साल से"—नौकर ने जवाब दिया।

—"तेरे सोने-बैठने की जगह कहाँ है?"

—जाड़ों में भेड़खाने में, गर्मियों में बाहर के चबूतरे पर सो रहता हूँ।

—"अपने नीचे क्या बिछाता है?"

—"जाड़ों में पुआल और गर्मियों में नंगी जमीन पर सो रहता हूँ।"

—"इन गद्दों के ऊपर भी जिन्दगी में कभी सोया?"—पूछते हुए सरदार ने अतलस के गद्दे की ओर इशारा किया।

—"मैं अपनी उमर भर में ऐसे गद्दे पर कभी न लेटा"—कहते गरीब ने एक आह खींची।

—"एय् बेचारा"—सरदार उस गद्दे को हाथ में ले नौकर की ओर बढ़ाते हुए बोला—"इसे ले, आज रात को इसी पर सोना।"

—"आपके सदके जाऊँ"—कहते गरीब ने सरदार के हाथ से गद्दा ले लिया।

—"मुझे धन्यवाद देने की आवश्यकता नहीं—सरदार ने कहा—यह तेरा हक है, तेरी मिहनत का बदला है, बाय का सारा माल तेरी मिहनत और तेरे जैसे श्रमिकों की मिहनत से पैदा हुआ है।"

—"अच्छा, अच्छा" कहते गरीब ने उस गद्दे को ले जाकर एक छोटी कोठरी में रख दिया। सरदार ने मेहमानखाने की अरगनी पर हशमी, जहकलाँ, दो जामा, खूँटियों पर शाही कमरबंद और जरदोजी की कुलाह, आलमारी में सूफ का पायजामा और नया अमेरिकन बूट देखा और नौकर को पुकारा।

नौकर, "लब्बेक, क्षमानिधान" कहते दौड़ आया।

—"क्षमानिधान मत कह, साथी कह" कहते सरदार ने "ले इन पोशाकों को पहिन" कह जामा, कुर्ता, पायजामा, बूट, कमरबंद और कुलाह को समेटकर नौकर के हाथ में दे दिया। नौकर उन्हें लेकर देहली में आया। उसने फटे-पुराने गंदे कपड़े को उतारकर फेंक दिये और सूफ के नये कुर्ते और पायजामे को पहना फिर वह ऊपर रेशमी जामा और शाही कमरबंद बाँध अमेरिकन बूट पैरों में डाल सिर पर जरदोजी की कुलाह रखकर सरकार के सामने आया और अपनी पोशाक चारों ओर से देखकर बोला "यह पोशाक मुझे शोभा नहीं देती!"

—"जिन्नपन न दिखा"—सरदार ने कहा—"जो भी चीजें आज से पहिले बाँयों को शोभा देती थीं, अब वह कमकरों की सम्पत्ति हैं और उन्हें शोभा देती हैं। जा दौड़ अपने मालिक के जौ को सैनिकों को बतला कि वे घोड़ों को दाना दें।"

घोड़ों को खूँटों में बाँधकर तोबड़ों में दाना दे दिया गया, कारतूसी पेटियों को दालान में रख दिया गया, अराबे कूचे में पाँती से खड़े कर दिये गये। लाल सैनिक और लाल गोरिल्ले अपनी लम्बी कोटें बिछाकर हवेली के सामने और चबूतरे पर लेट गये। अफसरों ने मेहमानखाने में विश्राम लिया, फिर फौज के सरदार ने नौकर को आवाज देकर कहा—"बाय के भण्डार को दिखला!"

—"पधारिये" कहते नौकर सरदार को हवेली के भीतर ले गया और वहाँ एक भण्डार को खोलकर चाय, चावल, घी आदि को दिखला दिया। सरदार ने मिश्री का एक बड़ा डला और कई डब्बे चाय के गरीब को इनाम दिया; फिर सैनिकों के एक रोज की खुराक लेकर भण्डार में ताला लगा कुंजी को नौकर के हाथ में दे मुस्कुराते हुए कहा "ले अब तू इसका मालिक है।"

"खैरियत है कि मालिक यहाँ नहीं, नहीं तो आज इतनी चीजों के निकल जाने पर कितना रोता-पीटता! मैं आज उमर भर नहीं पहिनी पोशाक को पहिने, उमर भर नहीं खायी चीजों को खाते आनन्द कर रहा हूँ" कहते गरीब ने ऊपर के काले कागज को फाड़कर नीचे हिम-श्वेत मिश्री को जीभ से चाटकर कहा "ओः-ओः-ओः कितनी मीठी है!"

—"तेरा मालिक बड़ा बाय था?"—सरदार ने नौकर से पूछा।

—"बहुत बड़ा बाय था, गिज्दुवान के चार बड़े बायों में से एक था।"

—"उसने अपनी बहुमूल्य चीजों को कहाँ गोड़ा ?"

—मेरा मालिक बड़ा चतुर था, जब जंग शुरू हुई, तो वह अराबों को जमाकर रात-दिन माल ढोने लगा। आखिरी अराबा उसने कल रात को लादा, जब कि अब्दुल्ला बाय-बच्चा तूकसाबा जाफरी की हवेली से निकलकर अमीर जरफशाँ पार हो करशी-चूल की ओर भागा।

—"कहाँ ढोकर ले गया होगा ?"

—"नहीं जानता उसकी चालाकी को, न जाने कहाँ ले जाकर छिपाया। घर के भीतर अब भी शायद कुछ चीजें रह गयी हों" नौकर ने कहा "और आइये, देखिये" कहकर सरदार को चलने के लिए कहा।

—"मैलश् (अच्छा) आगे चल" कहते सरदार उठ खड़ा हुआ। नौकर आगे-आगे चला और सरदार उसके पीछे-पीछे।

सारे कमरों को खोलकर देखा। वहाँ नीचे फर्श, कालीन और ताकों में चायनिकों, प्यालों के अतिरिक्त और कुछ न था।

—"अच्छा, हवेली के भीतर-बाहर जो कुछ भी चीजें हैं, सब तेरी मिलकियत हुई। सबको सँभालकर रख। एक दिन में सबको खर्च न कर डालना।"

—"कुल्लुक" कहकर नौकर ने धन्यवाद देना चाहा।

—"ऐसा न कर, यह सब तेरा ही माल है" कहते सरदार ने और पूछा "बीबी है तेरे पास ?"

—"नहीं।"

—"किसी गरीब लड़की को लेकर घर बसा ले। बैल-जोड़ी को काम में लगा बाय की जमीन में खेती कर।

—खाने के बाद सेना हवेली से निकलकर अमीर के भगोड़ों के पीछे रवाना हुई। दूसरे दिन रैव्-कम् (रेवल्यूशनरी कमेटी = क्रान्ति समिति) गिज्दुवान पहुँची। उसने घोषित किया कि बादशाही माल और अमीर के साथ भगे अमलदारों का माल जब्त किया जाय, दूसरे आदमियों का माल न जब्त न किया जाय। घर छोड़कर भाग गये लोगों के माल की रक्षा करके, मालिकों को बुलाकर दे दिया जाय।

उसी दिन उक्त "नौकर" ने चन्द नौकरों को बुलाकर हवेली के कूड़ा-घास को हटवाया। वहाँ बहुमूल्य वस्तुओं से भरे बहुत-से सन्दूक थे। यह भी पता लगा

कि वह नौकर हवेली का असली मालिक था। और, इस तरह भेष बदलकर उसने अपने माल की रक्षा की।

अध्यक्ष ने अपनी कथा को समाप्त करते हुए कहा—इसलिये हम फटे जामे और रोने-धोने के धोखे में नहीं आते।

—ऐसा ही होना चाहिये—कहकर उरमान पहलवान चला गया। दूसरे दिन पहलवान ने लाकर अपने हथियार कमीशन को सौंपने का वचन दिया। बाहर आने पर उसने हैत अमीन और बाजार अमीन को प्रतीक्षा में बैठे देखा। अध्यक्ष ने उन्हें बुलवाया था। पहलवान धीमी आवाज में "बेकार हथियारों में से एक-दो को दे देना होगा" कहते चबूतरे से नीचे उतरकर चला गया।

× × ×

प्रातःकाल उरमान पहलवान अपने आफिस में पहुँचा। कल के गोहार लानेवाले गरीब भी पहुँचे। आज पहलवान उनसे बड़े प्रेम से मिला। उन्हें बैठने के लिये कहा और अपने लेखक को बुलाकर नाम लिखने का हुक्म दिया। लेखक कलम, कागज, स्याही लेकर लिखने को तैयार हुआ। उ पहलवान ने स्वयं नाम पूछना शुरू किया—तेरा नाम क्या है, भूल गया हूँ।

—एरगश् बाबा गुलाम।

—लिखो मिर्जा—पहलवान ने अपने लेखक से कहा।

—दो पूद (एक मन) गेहूँ और एक द ज्वार मेरी ले गये हैं—एरगश ने कहा।

—अभी तेरे गल्ले की तौल लिखने की जरूरत नहीं, उसे पीछे जाँच करके लिखेंगे—कहकर पहलवान ने दूसरे किसान की ओर निगाह करके पूछा—और तेरा नाम क्या है?

—कुलमुराद बायमुराद।

मिर्जा! तुम लिखते जाओ—अपने लेखक से कहकर पहलवान ने तीसरे किसान से पूछा—और तेरा नाम?

—रोजी ताशपोलाद।

—और तेरा?

—सफर गुलाम हैदर।

इसी तरह आताजान, शादिम् शकूर, गायब, इस्ताद, नारमुराद और कितने

ही दूसरे नाम कागज पर लिखे गये। उरमान पहलवान सूची को अपने हाथ में ले—"तुम बाहर न जा, यहीं ठहरो, मैं अभी जाँच करके आता हूँ" कहकर बाहर चला गया।

—उरमान पहलवान आज बहुत नर्म है—एरगश ने अपने साथियों से कहा।

—जमाना हर आदमी को नर्म कर देता है—कुलमुराद ने कहा—अमीर के जमाने में इसका दिमाग आसमान पर रहता था। क्रान्ति के बाद बहुत नर्म हो गया था। आज बुखारा से कमीशन के आने की बात सुनकर कल-जैसी हिम्मत भी बाकी न रह गयी।

—अभी हमने—सफर गुलाम ने कहा—क्रान्ति से कोई लाभ न देखा, तो भी ऐसे आदमी का नर्म होना भी हमारे लिये लाभ ही है।

—क्रान्ति से लाभ की बात तो दूर, हम केवल हानि ही हानि देख रहे हैं—शादिम् ने सफर गुलाम की ओर निहारते हुए कहा "जब क्रान्ति होगी तो नंगे-भूखे गुलामों और गरीब किसानों का जमाना होगा" कहकर तू हमें धोखा देता रहा।

—अभी यह क्रान्ति का आरंभ है—सफर ने कहा—हम पेड़ लगाते हैं, लेकिन जब तक तीन-चार साल बीत न जाये, तब तक वह फल नहीं देता। जड़ जमाने और फल देने के लिए क्रान्ति को भी समय मिलना चाहिये।

—मुझे तो डर लगता है कि जिन पेड़ों को तुमने लगाया है, कहीं वह बे-फलवाले बेद न निकलें—शादिम् ने कहा।

—भय न खा—सफर ने कहा—बेद भी होगा, तो भी उसकी छाया का तो हमें लाभ होगा।

इसी समय फटे जामेवालों की निगाह, एकाएक आफिस के सामने आकर खड़े हो गये हथियारबंद गारद पर पड़ी और बातचीत वहीं रुक गयी। गारद के अफसर ने उन्हें घर से बाहर आने के लिये कहा। बाहर आने पर उन्हें चारों ओर से घेर लिया और दरवाजे से बाहर हो सड़क से रवाना हुए।

× × ×

उरमान पहलवान की सूची पर नजर दौड़ाकर कमीशन के अध्यक्ष ने पूछा—ये कौन हैं?

—इनका नाम यहीं लिखा है—पहलवान ने जवाब दिया।

—इनकी सामाजिक स्थिति के बारे में पूछ रहा हूँ—अध्यक्ष ने कहा—अर्थात् बाय हैं या बेचारा, किसान हैं या चरवाहा ?

—इस समय ये बेचारा हैं, लेकिन आपकी कहानी के गिज्दुवानी बाय जैसे बेचारा हैं—उरमान पहलवान ने कहा—ये ऐसे बेचारा हैं, जिन्होंने अपनी भेड़ों के गल्ले को किजिल चूल में भेज दिया है और फटे जामों को पहिनकर अपने घरों में फर्श क्या, टाट भी नहीं बिछा रखा है।

—ये उजबेक हैं या ताजिक ?—अध्यक्ष ने पूछा।

—इनके भीतर उजबेक भी हैं, ताजिक भी हैं; अरब भी हैं, गुलाम भी हैं।

—तुम्हारे तूमान में क्या ईरानी भी हैं ?—हैं, लेकिन ये ईरानी अपने पैर से चलकर आये या अमीरों के "आक ओयली" बनाकर लाये हुए नहीं हैं। ये उन गुलामों के सन्तान हैं जिन्हें पुराने जमाने में तुर्कमानों ने लूटकर बेचा था।

—गुलाम कैसे बाय हो गये, जब उनके पास एक धूर जमीन नहीं ?

—खुदा ने दिया और क्या—पहलवान ने कहा—क्या नहीं जानते अब्दुल्ला बाय-बच्चा जाफरी गुलामों के सन्तान होने पर भी गिज्दुवान का प्रथम बाय था ? वह प्रजातन्त्री सरकार का इतना दुश्मन था कि अमीर के साथ भाग गया।

—ठीक—अध्यक्ष ने कहा—किन्तु तुमने उनका गाँव-घर नहीं लिखा ? हम उन्हें कहाँ से धरें-पकड़ें ?

—"शिकारी का काम चलना होता है" फिर शिकार खुद जाल में आते हैं। आपके सौभाग्य से वे मेरे पास नालिश करने आये कि अनाज-विभाग ने इनसे जबर्दस्ती अनाज ले लिया। मैं जानता था कि उनके पास हथियार हैं, इसलिये उनके नामों की सूची बना उन्हें आफिस में रखकर यहाँ चला आया।

—तुमने कहा कि उनके घर में हथियार नहीं हैं, फिर हम हथियार कहाँ से पायेंगे ?

—मैंने बेकार समझकर उनके घर-बार को नहीं लिखवाया, तौभी उनसे हथियार आसानी से मिल सकता है। आप उन्हें पकड़कर एक-दो दिन बन्द रखकर डरायें-धमकायें; फिर मैं उनसे समझौता कराने के लिए बात करके हथियार निकलवा लूँगा।

—बहुत अच्छा—अध्यक्ष ने कहा—मैं डराना-धमकाना खूब जानता हूँ।

उरमान पहलवान ने जाते-जाते अध्यक्ष से कहा—याद रखें, उन्हें इस काम

से मेरा सम्बन्ध नहीं मालूम हो, नहीं तो रात में घेरकर मुझे मार डालेंगे और मेरे घर को जला देंगे।

—निश्चिंत रहो—कहते अध्यक्ष ने अपने अर्दली को आवाज दी।

—उरमान पहलवान ने अध्यक्ष के सामने से निकलकर एक टीले के पीछे अपने को छिपा लिया। १५ मिनट बाद गारद से घिरा गरीबों का झुण्ड अध्यक्ष के सामने से होता शाफिरकाम तूमान के पुराने काजीखाने में पहुँचाया गया।

३

हथियार बटोरना

खोजा-आरिफ के पुराने काजीखाने के जीनखाने में गरीब बेचारे बड़ी दयनीय दशा में लेटे हुए थे। उनके सिर फूटे, नख उखड़े, अंगुलियाँ टूटी, जाँघें कुटी, आँखें सूजी और हाथों-पैरों में "कुल्लुक" जड़ा हुआ था।

—यह है पहला मेवा तेरे लगाये पेड़ का—शादिम् ने सफर से कहा।

—नहीं, तू भूल कर रहा है—सफर ने कहा—यह काम उरमान पहलवान का है।

—यदि कमीशन का अध्यक्ष ठीक आदमी होता—शकूर ने कहा—तो बिना पूछे, बिना जाँच किये सिर्फ उरमान पहलवान के कहने पर ऐसी यातना न देता।

—"पानी कीचड़ के ऊपर"—गायब ने कहा।

—तू "पानी के ऊपर" कहकर केन्द्र का नाम लेना चाहता है—सफर गुलाम ने कहा—किन्तु कमीशन के अध्यक्ष के इस काम और नासमझी से हकूमतों का क्या सम्बन्ध? अभी क्रान्ति का प्रारम्भ है, अभी हकूमतें अपने सारे कर्मचारियों को नहीं पहिचान पायी हैं। एक आदमी पर भरोसा कर उसे कोई भारी काम सौंपती हैं और वह उस काम को जान-बूझकर या भूल से बर्बाद करता है। इससे केन्द्र के आदमी "पानी के ऊपर" कहकर दोषी नहीं ठहराये जा सकते।

एक आदमी पर भरोसा करके भारी काम दिया जा सकता है—शादिम् ने कहा—लेकिन उसके ऊपर निगाह न रखना कैसा?

—जैसे ही हकूमतें कमीशन के दुष्कर्मों को सुनेंगी, अवश्य जाँच करेंगी—शफर

ने कहा—इसके लिये प्रजातन्त्र सरकार से रंज होना या आशा छोड़ बैठना ठीक नहीं। इस समय जो अपराधी हमारे सामने दिखलाई दे रहा है, वह उरमान पहलवान है। वह पुराना जल्लाद है।

—चुप-चुप, उरमान पहलवान आ रहा है—एरगश ने धीमी आवाज में सजग करते यह भी कहा—मैं भी जानता हूँ कि यह काम उसी का है। तो भी अपने को अनजान बना उससे सहायता लेनी चाहिये; क्योंकि जो यह काम कर सकता है वह इससे बुरा भी कर सकता है और इससे छुड़ा भी सकता है। इसलिये उसके सामने गिड़गिड़ाकर यहाँ से छूटना चाहिये। फिर समय आने पर उससे बदला लेंगे।

एरगश की बात समाप्त न हुई थी कि अध्यक्ष की आज्ञा से उरमान पहलवान मिलिशिया (हथियारबंद पुलिस) के साथ बंदीखाने में आया।

—यह कैसा काम है—उरमान पहलवान को देखते ही सफर ने गर्म होकर कहा।

—मैं कहाँ से जानूँगा?—पहलवान ने नर्मी से कहा—मैं तुम्हें आफिस में छोड़कर जाँच करने अनाज-घर में गया था। वहाँ से ज्ञातव्य बातों को जानकर जब तक आफिस में आऊँ, तब तक यह काम हो गया। तब से दो दिन दौड़-धूप करता रहा और अंत में आज्ञा मिली और मैं तुम्हें देखने आया। अब तुम मुझसे अपने दिल की बात कहो, यदि संभव होगा, तो मैं कोई उपाय करूँगा।

पहलवान एक-दो बार खाँसते बलगम को एक ओर थूक फिर बोला—अमीर के जमाने में अका एरगश मेरे सब काम से नाराज और शंकित रहा, किन्तु मैं उस-पर नाराज नहीं हूँ। हो सकता है कि इस काम में भी मुझपर संदेह करता हो। संदेह करता रहे, किन्तु मैं तो एक शुद्ध हृदय निष्कपट आदमी हूँ। मैं तो उसके साथ भी नेकी करना चाहता हूँ। कहावत है "नेकी कर और पानी में डाल", यदि वह नहीं समझता तो खुदा तो समझता है।

उरमान पहलवान ने एक-दो बार और खाँसकर बंदियों से पूछा—सच-सच बताओ, असली बात क्या है?

—हमारे पास कहाँ हथियार हैं कि सारे हथियारों को लाकर सौंपने के लिये कहा जाता है—सफर गुलाम ने गर्म होकर कहा।

—तुम लोगों ने क्या जवाब दिया?—पहलवान ने पूछा।

—हम क्या जवाब देते ?—सफर ने कहा—हस्त को इस्त और नेस्त को नेस्त कह दिया।

—नेस्त (नहीं है) कहने से काम नहीं चलेगा। तुम लोगों से एक दिन पहिले मुझे भी अपने पास बुलाकर हथियार सौंपने के लिये कहा। जो भी हो, मैंने भी आखिर सिपाहगिरी की है, हकूमत के आदमियों के भाव को उनकी आँखों से भाँप लेता हूँ। अध्यक्ष के रंग-ढंग से समझकर "सिर-आँखों पर" कहा और मेरे पास जो हथियार थे, उन्हें लाकर सौंप दिये।

—तुम्हारे पास हथियार थे, इसलिये लाकर सौंप दिया—शादिम् ने कहा—लेकिन हथियार तो अलग, हमारे पास एक चिमटा भी नहीं है, यह तुम भी जानते हो।

—ठीक है—पहलवान ने कहा—तुम्हारे पास हथियार नहीं है, मैं जानता हूँ; लेकिन कमीशन के अध्यक्ष को भी जानते हो, इसे मुहीउद्दीन मखदुम् खोजायफ़ कहते हैं। अपनी जल्लादी के लिये यह मशहूर है। झूठी-सच्ची खबर पाकर जब वह किसी को गिरफ्तार करता है, तो या तो उससे चीज निकालता है या उसे मार डालता है। इसलिये काम का कोई रास्ता निकालना होगा।

—हम कहाँ से रास्ता निकालें ?—एरगश ने कहा—तुमने कहा था "संभव होगा तो मैं कोई उपाय करूँगा।" तुम्हीं सोचकर बतलाओ।

उरमान पहलवान ने खाँसते हुए बलगम फेंकने के बहाने बंदीखाने के छिद्र से बाहर की ओर देखा, द्वार पर खड़े रक्षक के सिवा आसपास किसी को न देखकर वह फिर अपनी जगह आकर बैठा और धीमी आवाज में बोलने लगा—

—मैं तुममें से हरएक के लिये एक-एक हथियार लेकर दूँगा। मेरे पास हथियार कहाँ हैं ? मैं उन्हें पुराने सैनिकों और सिपाहियों से खरीदकर दूँगा। मैं यह भी जानता हूँ कि तुममें से कितनों के पास नगद पैसा नहीं है। लेकिन हरएक के पास गाय, बछड़ा, भेड़, बकरी, गदहा या हैसियत के अनुसार घर का सामान है। हर आदमी किसी चीज को लाकर मेरे पास बंधक के तौर पर रखे। जब हथियार का दाम बेबाक कर देगा, तो अपनी चीज लौटा लेगा।

मेरे पास एक गाय है—सबसे पहिले एरगश ने कहा।

—मेरे पास एक ओसर है—आताजान ने कहा।

—मेरे पास एक बकरी है—कुलमुराद ने कहा।

—मेरे पास एक बछड़ा है—शादिम् ने कहा।

—मेरे पास एक अरबी भेड़ है—गायब कहा।

—मेरे पास एक बर्रा है—शकूर ने कहा।

—मेरे पास एक खर है—इस्ताद ने कहा।

—मेरे पास एक नया कजाकी नम्दा है—नारमुराद ने कहा।

—मेरे पास कुछ नहीं है—सफर गुलाम ने कहा।

—अच्छा, मैलश, कोई हर्ज नहीं—उरमान पहलवान ने सफर गुलाम की ओर नजर डालकर कहा।

—अच्छा, तुम कब हथियारों को लाकर हमें दोगे—एरगश ने उरमान पहलवान से पूछा।

उरमान पहलवान ने जवाब दिया—मैं हथियारों को लाकर तुम्हें यहाँ नहीं दूगा, नहीं तो तुम भी मारे जाओगे और मैं भी। मैं आज जाकर तुम्हारे लिये हथियारों को खरीद रखूँगा और तुम्हारे परिवार को खबर दूँगा, जब वह तुमसे मिलने आयें तो कह देना कि करार की हुई चीजों को हमारे पास पहुँचा दे, मुझसे हथियार लेकर कमीशन को सुपुर्द कर दे और ऐसा प्रगट करे जिससे मालूम हो कि तुमने छिपाये हथियारों का पता उन्हें बताया और तुम्हारे कथनानुसार उन्होंने हथियार लाकर दिये।

—ठीक—एरगश ने कहा—लेकिन स्वीकार करते वक्त कौन किस हथियार के होने की स्वीकृति देवे?

—इसे मैं अभी निश्चित करे देता हूँ—कहते पहलवान ने फिर अपनी निगाह आस-पास डाली और वहाँ किसी को न देखकर कहना शुरू किया। तुम्हारे लिए (एरगश की ओर निगाह करके) एक पंचगोलिया बन्दूक दूँगा, इसे मैंने न सौंपकर अपनी रक्षा के लिये रख छोड़ा था। यह ऐसा हथियार है, जो एक गाय क्या, दस गाय में भी नहीं मिल सकता। अपना प्राण खतरे में डालकर इस बहुमूल्य हथियार को तुम्हारे लिये दे रहा हूँ; क्योंकि मैं तुम्हें प्रसन्न करना चाहता हूँ।

उरमान पहलवान ने एक बार फिर चारों ओर निगाह डालकर कहना शुरू किया—रोजी, अताजान, कुलमुराद और शादिम् के लिये पुराने सैनिकों से खरीदी टोपीवाली बन्दूकें दूँगा। गायब, शकूर, इस्ताद और नारमुराद के लिये

चार शिकारी बन्दूकें लाकर दूँगा। अब खाली सफर गुलाम रह गया। उसके पास देने के लिये चाहे कोई चीज हो या न हो या देना न चाहता हो, तो भी उसके लिये एक पलीतावाली बंदूक लाकर दूँगा। यदि उचित समझे तो छूटने के बाद दाम चुका दे।

उरमान पहलवान ने एक बार फिर उन्हें दी जानेवाली बंदूकों को याद कर "खैर, खुश" कहते अपनी जगह से उठकर ताकीद की—सावधान, स्वीकार करते वक्त अपनी बंदूकों का नाम बतलाने में भूल न करना। इस रहस्य को अब यहीं ढाँक दिया जाय।

उसके जाते ही सफर गुलाम ने कहा "तेरी इस नेकी का दाम हम जरूर चुकायेंगे।"

उरमान पहलवान अध्यक्ष से मिलकर काजीखाने के बाहर आया। वहाँ कूचे में उसे बाजार अमीन खड़ा मिला। उसने उससे धीरे से कहा—मैलश, मैंने इस काम में एक पंचगोलियाँ बंदूक न्योछावर की; लेकिन उसके बदले सौ पंचगोलियाँ बन्दूकें हाथ में करूँगा।

४

बासमची या डाकू

बाजार अमीन के मेहमानखाने में गैस की लालटेन जल रही थी। वहाँ हैत अमीन, नार करावुलबेगी, नारमुराद पहलवान और उरमान पहलवान बैठे थे। नीचे की ओर कुछ नौजवान भी आसीन थे। गृहपति बाजार अमीन जवानों से कुछ ऊँचे, किन्तु दूसरे मेहमानों से नीचे बैठा था। पोलाव खाने के बाद दस्तर-खान उठ जाने पर सब चाय-पान में लगे हुए थे। प्रमुख स्थान पर बैठे हैत अमीन ने नीचे की ओर बैठे लोगों को संबोधित करके कहा—जवानो, आजकल जो काम हो रहा है, उसकी खबर है तुम्हें?

—खबर है—एक जवान ने जवाब दिया।

—बंदूक जमा करनेवाले कमीशन की बात पूछते हो बाबा?—एक दूसरे जवान ने पूछा।

—हाँ, उसीके बारे में क्या सोचते हो ?

—हम क्या सोचते हैं, इसे तुम स्वयं जानते हो अमीन बाबा !

—मैं इसे जानता हूँ—हैत अमीन ने कहा—तुममें से हरएक के पास एक-दो बन्दूकें हैं, क्योंकि तुम पुराने सैनिक हो ; तुमने दहबाशी, चोरगाशी होकर जनाब आली की नून-रोटी खायी है। अलबत्ता तुम्हारे पास हथियार हैं और ये हथियार आज नहीं तो कल तुम्हारे हाथ से निकल जायेंगे, लेकिन हथियार के साथ तुम्हारे सिर भी चले जायेंगे। तुम सबके दोस्त और दुश्मन हो, कोई जाकर कमीशन को खबर दे दे और तुम्हारे घरों को घेरकर छान डालेंगे। यदि तुम्हारे छिपाये हथियार मिल गये, तो फिर तुम्हें जिन्दा न छोड़ेंगे।

अमीन ने चुप होकर सामने रखी चाय को पीना शुरू किया।

—क्या करने को कहते हो अमीन बाबा—एक जवान ने पूछा।

—इस समय—हैत अमीन ने खाली प्याला को चाय डालने के लिये बाजार अमीन की ओर खिसकाकर कहा—इस वक्त शोर है कि जनाब आली आनेवाले हैं। अपने हथियारों और अपने को तब तक सुरक्षित रखने की जरूरत है जब तक कि इन हथियारों का असली मालिक नहीं आ जाता।

इसके लिये उन्हें उरमान पहलवान और बाजार अमीन-जैसे सरकार के विश्वासपात्र लोगों के हाथ में सौंप देना चाहिये; क्योंकि उनके घरों की तलाशी कोई नहीं लेगा। जब जनाब आली आ जायेंगे, तो फिर तुममें से एक दहबाशी दूसरा चूरागाशी बनकर अपने हथियारों को सँभाल लेगा।

—मैंने अपने हथियार को किसी बुरे दिन के लिये रख छोड़ा था, इसी विचार से कि उसे बेचकर दो दिन पेट भर सकूँगा—एक जवान ने कहा—मैं दो साल दहबाशी जरूर रहा, किन्तु इस पंचगोलियाँ बंदूक के अतिरिक्त मुझे कोई चीज हाथ न लगी। जनाब आली के भागने के वक्त जो लूट-पाट मची, उसमें मैं खाली हाथ रहा।

—कब में बेच सकता है—नार करावुलबेगी ने कहा—आजकल के जमाने में हथियार पैसा नहीं, आदमी की मौत है। अमीन बाबा ने अभी बतलाया कि यदि किसी घर में बंदूक निकल आये, तो सारे घरवाले मार डाले जायेंगे। बंदूक पैसा नहीं बला है।

—तुझे भूखा नहीं रहने दिया जायगा—बाजार ने उस जवान से कहा—

जिस समय भी भूखा हो या किसी और चीज की हाजत हो, आकर मुझसे, उरमान पहलवान, हैत अमीन या नार पहलवान से कह, हम किसी-न-किसी तरह तेरी आवश्यकता पूरी कर देंगे—हैत अमीन ने जवान को चुप देखकर दूसरों से पूछा—तुमलोगों को मेरी बात पसन्द है ना ?

"पसन्द, पसन्द" सब जवानों ने कहा, किन्तु सबसे नीचे की ओर बैठे जवान ने जमीन की ओर आँख गड़ाये कहा—"मेरा विचार दूसरा ही है।"

—तेरा विचार कैसा है ?—हैत अमीन ने उससे पूछा। ऊपर की ओर बैठे सभी लोगों की दृष्टि उधर गयी।

—मेरी राय है—जवान ने आँखों को जमीन से हटाये बिना कहा—अपने हथियारों को खुद ले जाकर कमीशन को सौंप दूँ। ऐसी अवस्था में हम कभी कमीशन के सामने अपराधी न होंगे। आज मैंने जैसे ही कमीशन के आने की बात सुनी, अपनी बंदूक को ले जाकर दे डालने का निश्चय किया और जाने के लिये खड़ा ही था कि अमीन बाबा के आदमी ने जरूरी काम के लिये बुलाने की बात कही। मैं उस काम को कल के लिये छोड़ पंचगोलियाँ को घास के नीचे टिकाकर इधर आया।

—तू भी तो जनाब आली का सैनिक रहा—हैत अमीन ने कहा—जनाब आली ने हथियार खरीदकर तुझे इसलिये दिया कि दीन इस्लाम की रक्षा हो। तू कैसे उसे ले जाकर काफिरों को सौंपना चाहता है ?

मैंने जनाब आली का सैनिक बनकर कोई लाभ न देखा—जवान ने कहा—मुझे गाँव के बड़ों ने एक भगे सैनिक की जगह जबर्दस्ती पकड़कर भर्ती करा दिया था। सरकर्दा (जनरल) के आदमियों ने मुझे ले जाकर एक घर के भीतर बंद रखा। दो मास बंद रहने के बाद युद्ध आरम्भ हुआ। बंदीखाना से निकालकर उसी दिन गर्दन में एक पंचगोलियाँ लटका मुझे युद्ध-क्षेत्र में भेज दिया। कूले शगालाँ (शृगालों की नहर) में जो पहिली बार सैनिक भगे थे, उन्हीं के साथ बिना एक गोली चलाये मैं भी भाग निकला और सीधे घर आ इस विचार से पंचगोलियाँ को घास के अन्दर टिकाये रखा कि जब उसका मालिक आयेगा, तो देखा जायेगा। अब उसका मालिक आ गया और माँग भी रहा है। इसलिये उसे सौंप देना चाहता हूँ।

—लेकिन बंदूक तुझे क्या जनाब आली से नहीं मिली थी ? उसके मालिक क्या जनाब आली नहीं हैं—अमीन ने पूछा।

—ठीक है—जवान ने कहा—बंदूक मुझे जनाब आली से मिली थी, लेकिन यह बादशाही माल है, उनका माल है, जो तख्त पर बैठे हैं। इस समय अमीर का स्थान इन्हीं हकूमतों ने लिया है। वह चाहे बुरी हों या भली, काफिर हों या मुसलमान, यह उनका माल है। इसलिये उचित यही है कि बंदूक को ले जाकर कमीशन को सौंप दूँ।

—"हसन मेरी ओर देख" कहकर बाजार अमीन ने इससे बात करनी चाही, लेकिन उस्मान पहलवान ने टोककर कहा—"तुम जरा चुप रहो और फिर जवान की ओर निगाह करके कहने लगा—खैर, बहुत अच्छा, ओका, "मुर्गी की एक टाँग" की तरह इस भेद को मुँह से न निकालना और अपनी स्त्री तक से भी न कहना, जा घर पर आराम से सो जा और कल सबेरे कमीशन को खबर मिलने से पहिले ही जाकर बंदूक को सौंप आना।

हसन बाहर चला गया। सभा में नीरवता छा गयी, जिसे हैत अमीन ने यह कहते भंग किया—तुम इस तरह की बातों पर कान न दो। कल से ही अपने हथियारों को एक-एक करके बाजार अमीन को सौंपते जाओ। आँटा, गेहूँ जिस चीज की जरूरत हो, अमीन के भंडार से लेते जाओ—ऐसा ही हो, अब हमें छुट्टी मिले—एक जवान ने कहा।

—अच्छा, बात यही है, जाकर अपने घरों में आराम करो।

जिस समय जवान उठकर देहली से बाहर जाने लगे, हैत अमीन ने उनसे कहा—फाटक से एक-एक करके जाना और बाहर बिखर के जाना, कूचा में एक साथ होकर न जाना।

जवानों के चले जाने पर उस्मान पहलवान ने बाजार अमीन से कहा—अमीन, तुम कब अपनी सीधाई छोड़ोगे ? मैंने तुमसे ऐसे सैनिकों को बुलाने के लिये कहा था जो कि जनाब आली के भक्त हैं, और तुमने द्रोह रखनेवाले सैनिक को बुलाया। यह आदमी यदि जिन्दा रहा तो बोलशेविक बनकर हम सबको मरवायेगा। क्या इसी को काम करना कहते हैं ?

अभी बोलशेविक न होकर भी मरवा सकता है—हैत अमीन ने कहा—कल

सबेरे अपनी पंचगोलियाँ ले जाकर कमीशन को सौंपेगा और साथ ही हमारी बात-चीत भी कह सुनायेगा। बस, इतने ही में हमारा सर्वनाश है।

—नहीं, इसकी दवा करनी होगी—बाजार अमीन ने अपने काम से कुछ लज्जित होकर कहा।

—अवश्य इसकी दवा करनी होगी, किन्तु क्या उस समय तक चित्त में शान्ति रह सकती है? यहाँ कोई है?—उरमान पहलवान ने कहा।

—अपने पुराने आदमी शराफ और शाहिम हैं—बाजार अमीन ने कहा।

—उनपर तुम्हारा पूर्ण विश्वास है?

—हाँ।

—कहो करावुलबेगी, तैयार हो?—उरमान ने नार की ओर निगाह करके कहा।

—मैं तैयार हूँ—नार करावुलबेगी ने कहा—सिर्फ उसे जाकर सोने भर की छुट्टी देनी चाहिये।

—हाँ, छुट्टी देंगे—उरमान ने कहा और यह भी पूछा—उसका घर क्या यहाँ समीप ही है ना?

—चार-एक पत्थर, कूल (नहर) के उस ओर—दो घंटे बाद चलना होगा—उरमान ने कहा और बैठक में चुप्पी छा गयी।

× × ×

आधी रात बीत चुकी थी, मुर्गे ने बाँग दी। बादल के नीचे छिपा चन्द्रमा भी अब अस्त हो चुका था। खेतों पर ऐसा अन्धकार छाया था कि आदमी आदमी को नहीं देख सकता था। चार सवार कूल पार कर एक गाँव के समीप पहुँचे। सवारों के शरीर पर चुस्त पोशाक थी और पीठ पर पंचगोलियाँ लटक रही थीं।

—घोड़ों को यहीं छोड़ देना चाहिये—उनमें से एक ने कहा।

गाँव के पीछे वृक्षों से घोड़ों को बाँधकर एक जवान वहाँ रक्षक छोड़ बाकी तीन गाँव के भीतर प्रविष्ट हुए। आगे-आगे जानेवाला आदमी एक द्वार के पास खड़ा होकर बोला—"यही है" दूसरे आदमी ने किवाड़ पर जोर लगाकर कहा—"बंद है, किन्तु कोई पर्वाह नहीं, दीवार फाँदकर उतर चलें।"

छोटी दीवार को लाँघकर वे भीतर गये। आँगन में तूत के वृक्ष पर सोया

मुर्गा चिल्ला उठा, उसके साथ ही घर के भीतर से "ददेश, ददेश, उठ, मुर्गे ने आवाज दी" कहती एक स्त्री की आवाज आयी।

—ठहर जा, जरा सोने दे—मर्द ने जवाब दिया।

१४—छोटी दीवार को लाँघकर वे भीतर गये (पृष्ठ २८५)

—तूने कहा था कि मुर्गा बोले तो जगा देना। उठ अब—औरत ने अपनी बात को दोहराया।

द्वार के पीछे खड़े आदमियों में से एक ने जल्दी भीतर चलने के लिये कहा, दूसरे भी उससे सहमत हुए। उनमें से एक ने पीछे हट दौड़कर बूटदार पैर से किवाड़ पर धक्का मारा, जिससे एक पाट टूटकर भीतर गिर गया। एक ने हाथ में रखी मोमबत्ती को जला दिया। मर्द उठना चाहता था और स्त्री उठ बैठी थी। दो आदमियों ने दोनों को धर दबाया। मर्द और स्त्री के बीच लेटी तीनसाला लड़की रोने लगी। उन्हें चिल्लाने का मौका न दे दोनों छुरा चलाने लगे। "इसका काम तमाम हुआ" मर्द के ऊपर बैठे आदमी ने खड़े होकर कहा।

—स्त्री सुन्दर है, इसे आध घंटा बाद भी मारा जा सकता है—स्त्री पर बैठे आदमी ने कहा।

—यदि ऐसे ही काम चलता रहा, तो इससे भी अधिक सुन्दर स्त्रियाँ हाथ आवेंगी—दूसरे ने कहा।

लड़की अब भी माँ के गले से निकले खून में लदफद चिल्ला रही थी। एक खून भरे गद्दे को बच्ची के ऊपर डाल उसकी आवाज को बंद कर आदमी ने अपने साथियों से कहा—चीजों की चाहे आवश्यकता भी न हो, किन्तु बोगचे बाँध ले चलो, जिसमें गाँव के लोग समझें कि यह काम चोर का है।

काम पूरा करके कोठरी से बाहर होने पर मर्द को पछाड़नेवाले आदमी ने आज्ञा दी—"घास के नीचे से पंचगोलियाँ निकाल लो।" आज्ञा पूरी की गयी।

—इस घटना के एक घंटे बाद बाजार अमीन की हवेली में उरमान पहलवान और नार कराबुलबेगी ने अपने खून से सने जामों, जूतों और खंजरों को धोया। शफर ने पानी डाला। शाहिम ने बोगचे में भरे पुराने कपड़ों पर किरासिन डालकर जला दिया।

हसन अपनी बीबी के साथ मारा गया। शाफिरकाम तूमान में बासमची (डाकू) गिरी की पहली बलि हो गयी। माँ-बाप के खून में डूबी तीनसाला बच्ची अनाथ हो गयी। बाजार अमीन के घर से निकली चार पंचगोलियाँ बन्दूकें पाँच बनकर हवेली के भीतर लौटीं और जाकर उस जगह लेटीं जहाँ पहले ही से सैकड़ों पंचगोलियाँ-ग्यारहगोलियाँ बन्दूकें सोयी लेटी हुई थीं।

बासमचीगिरी का प्रारम्भ हो गया।

५

क्रान्ति के रक्षक

जाड़े का मौसिम था, किन्तु अभी सर्दी उतनी न थी। रास्ते और निचली जगहों में बर्फ और बारिश का जमा हुआ पानी रात को जम जरूर जाता था, किन्तु दिन को धूप से फिर पिघल जाता और उसका एक भाग भाप होकर हवा में उड़ जाता और दूसरा जमीन सोख लेती। लेकिन पहलवान अरब की हवेली की चारों ओर के टीलों पर बर्फ और वर्षा का कोई प्रभाव नहीं दिखलाई पड़ता था। बालू के टीले मलेरिया के रोगी की तरह पानी से तृप्त नहीं होते थे। बर्फ बरसते ही पिघलने लगती और पानी बालू में समा जाता।

रात तारों से भरी थी और कुछ-कुछ सर्दी भी थी। एक भींगे-से टीले के ऊपर एक आदमी लम्बा पड़ा था। एक बार वह उठकर सामने की दीवार के नीचे गया और छेद पर मुँह डालकर कुछ देर भीतर देखता रहा; फिर पहली जगह लौटकर लम्बे पड़ा अपने आपसे "क्यों आज वह इतनी देर कर रही है" कहते सिर के ऊपर चमकते तारों की तरफ नजर डालकर अपने विचारों में मग्न हो गया। कुछ देर विचार-मग्न रहने के बाद उसने सितारों को संबोधित करके कहना शुरू किया।

—हे तारागण! अनन्त बयाबान रक्षाहीन बालुका-भूमि और अँधेरी रातों में राह भूले बटोही के लिये तुम बड़े हितकारी और आवश्यक हो, किन्तु मेरे-जैसे राहपाये यात्री के लिए तुम आवश्यक नहीं हो। मेरे और उसके निर्विघ्न मिलन के लिए थोड़ी देर तुम्हारा बादलों के भीतर छिप जाना ज्यादा अच्छा है, जिसमें हमारे भेद खुलने न पायें।

आदमी फिर अपने विचारों में डूब गया।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद जैसे कोई बात एकाएक याद आ गयी हो, वह अपनी जगह से उठा और माँद खोदनेवाले खरगोश की तरह जमीन को खोदने लगा। कुछ मिनटों में बालू के भीतर एक गड्ढा तैयार हो गया, जिसमें एक आदमी सो सकता था। नर्म बालू का खोदना आसान था, किन्तु बालू गिर-गिर पड़ता था। आदमी ने गड्ढे में लम्बा पड़ उठकर कुछ झाड़ियों को ला गड्ढे

की एक ओर रखा। अब पीठ के बल गड्ढे में लम्बे पड़, पास पड़ी रेत को दोनों हाथों से गिराकर गर्दन तक अपने को छिपा लिया और फिर झाड़ी को अपने सिर पर रखकर बोल उठा—"अब और अच्छा साज सजा।" आदमी ने झाड़ी के नीचे से ताकते हुए आँखों को हवेली के ऊपर डाला। अब तक सूना पड़ा रसोई-घर एकाएक चिमनी से धुआँ देने लगा। आदमी ने अपने आप से कहा।

—एय्, इस समय ये खाना पकाना शुरू कर रहे हैं। क्या प्रातःकाल तक मुझे इस कब्र में सोना पड़ेगा?

आदमी ने चिमनी से आँख नहीं हटायी। आध घंटे के बाद वह सोचने लगा, "आध घंटा और प्रतीक्षा करूँ तो देग और बाल बटोरकर शायद वह आवे।" आदमी की दृष्टि अब भी रसोई-घर की छत पर थी। आध घंटे बाद छत पर एक कालिमा दिखाई पड़ी, जिसने दीवार पर खड़ी हो चारों ओर दृष्टि डाली। गड्ढे में लेटा आदमी उसे देखकर बहुत खुश हुआ। कालिमा इधर-उधर किसी को न देख आधी दूर तक दीवार को ढाँके रेत पर कूद पड़ी और टीले की ओर चल पड़ी। टीले को कई बार घूमकर देखा, किन्तु वहाँ कोई नहीं दीख पड़ा। उसने सोचा "शायद प्रतीक्षा करके निराश होकर लौट गया" और वह हवेली की ओर लौटने लगी। अभी वह एक - ही - दो पग चली थी कि "मुहब्बत" के शब्द ने कान में पड़कर उसे रोक दिया। उसने पीछे घूमकर देखा, किन्तु कोई आदमी दिखलाई न पड़ा। "कौन है ओ, क्या अजिन्ना (जिन) है क्या?" कहती मुहब्बत घबरा उठी।

—अजिन्ना नहीं मैं।

—तू मेरा सफर जान, तू कहाँ है?—मुहब्बत ने पूछा।

—यहाँ इस जगह—कहते फिर आवाज आयी और हाथों से झाड़ी के अलग फेंक देने पर तारों के प्रकाश में सफर गुलाम का मटमैले रंग का चेहरा दिखलाई देने लगा; किन्तु उसका शरीर अब भी नहीं दिखलाई देता था।

—यह क्या तमाशा है?—मुहब्बत ने सफर के सिर के पास बैठकर कहा।

—आवाज ऊँची न निकाल, ऐसा ही करने की आवश्यकता थी।

—मैं कई बार यहाँ इधर से उधर घूमी, क्यों नहीं बोला?

—यदि कोई खोज में होता तो मुझे देखता या नहीं, इसी की परवा कर रहा था। आज रात इतनी देर क्यों की ?

—वह देर से आये। खैरियत हुई कि बाय ने आश के लिये अदहन और घी तैयार करके रख छोड़ने के लिए कहा था। मैंने घी तपाकर मांस को तल छोड़ा था। बाय के आते ही चावल डालकर जल्दी-जल्दी आश पका ली और थाल में निकालकर पहुँचा दी। बाय की बीबियाँ आश खाने अपने घरों में चली गयीं। मैं बिना कुछ खाये इस ओर चली आयी।

—सभी आये हैं ?

—वे सभी आये हैं, जो पिछले सप्ताह आये थे। मेहमानखाना भरा है।

—अच्छा, जा, इस समय। जब दस्तरखान समेटकर चाय पीने लगें और हवेली के सामने आदमी न हों, तो किवाड़ के पीछे बैठकर उनकी सारी बातों को अच्छी तरह सुन। जब वह सो जायें तो मुझे आकर बतला।

—एय् खुदा!—कहती मुहब्बत बेमन से बोली—इस तरह की जिन्दगी से ऊब गयी हूँ। इन सारी आफतों के बीच क्या एक रात निश्चिन्त हो तेरे साथ बिताने को न मिलेगी ?

—उदास न हो, सब होगा, इस समय मन लगाकर काम करने की आवश्यकता है।

—मैं काम करने में भय नहीं खाती, किन्तु यदि पकड़ी गयी, तो सारे अरमानों को साथ लेते कब्र में जाऊँगी।

—कब्र में नहीं जायेंगे, हम जिन्दा और मजबूत रहेंगे। जल्दी जा, रहस्य न खुलने पाये।

—तेरे पास से जाने का मन नहीं करता—कहती मुहब्बत उठकर आगे पग रखती एक बार फिर पीछे मुड़कर बोली—आ, मुझे दीवार पर तू चढ़ा दे।

मुहब्बत दीवार के पास पहुँची, सफर गुलाम ने पैर रखने के लिये अपनी पीठ झुका दी, मुहब्बत ने शरीर को सीधा कर दीवार के एक छेद को पकड़ा, फिर सफर गुलाम ने बिलकुल सीधा हो उसे छत पर छोड़ दिया। मुहब्बत ने चलते वक्त कहा—एक बात तो भूल ही रही थी। उस्मान पहलवान ने अपने आदमियों को गाँव में देख-भाल के लिये लगा रखा है। सावधानी से जाना।

"निश्चिन्त रह" कहकर सफर अपने गड्ढे की ओर लौटा।

छत पर धम-धम की आवाज होती तनूर की तरफ चली गयी। जिसे सुनकर बाय की एक बीबी ने आवाज दी—मुहब्बत, छत पर से कुत्ता-बिल्ली कोई जानवर उतरा है, देख कहीं देग और थाल को मुर्दार (भ्रष्ट) न कर दे।

—बिल्ली थी, मैंने भगा दिया—कहकर मुहब्बत ने जवाब दिया और खुद डरी हुई वह जलकर देग से चिपकी सब्जी, प्याज और मांस को खाने लगी।

६

बाय बासमची बने

हम पहलवान अरब के मेहमानखाने को १९१८ में भी गैस प्रदीप से प्रकाशित और गद्दे-कालीन से सुसज्जित देख चुके हैं। पहले से अब इतना ही अन्तर था कि आज वहाँ काजी, रईस, अमलाकदार और मीरशब नहीं दिखलाई पड़ते थे। उनकी जगह और उसी शान-शौकत से वहाँ हैत अमीन, बाजार अमीन, नारसुराद पहलवान, उरमान पहलवान, इस्माईल मीर आखुर्द और नार कराबुलबेगी बैठे हुए थे। सभा में एक बड़ी पगड़ीवाला मुल्ला भी था, जिसने काजी, रईस, मुफ्ती के काम तथा दूसरे शरीयत के कामों को सँभाल रखा था; लेकिन वह बैठक की जगह में ऊपर की ओर नहीं, बल्कि हैत अमीन की बगलवाली सन्दली के पास बैठा था। मेहमानखाने का बाकी भाग जवानों से भरा था। देहली (ओसारे) में नये बेगों अर्थात् कूरबाशियों (सेना-नायकों) के मोहरम (छोकरे) बैठे हुए थे। गृहपति के योग्य-स्थान यानी देहली के द्वार के पास अपनी १९१८ वाली जगह पर पहलवान अरब उसी आसन से बैठा था।

घोड़े के मांस और घी के साथ पके पोलाव खा चुकने पर दस्तरखान समेटा और हरी चाय-चायनिकें लायी गयीं। सब लोग चाय-पान में लगे। हैत अमीन ने चाय डालकर मुल्ला को देते हुए उरमान पहलवान से कहा—बात करो पहलवान, बतलाओ इस समय क्या करना चाहिये ?

—अब सीधे मैदान में कूदने की आवश्यकता है—उरमान पहलवान ने कहा—इस समय सारा देश हमारी ओर है। पूर्वी बुखारा (ताजिकिस्तान)—

हिसार, कूलाब, बलजुवान और दरवाज के कूरबाशी आज मुसलमानों के खलीफा के दामाद अनवरपाशा के अधीन काम कर रहे हैं।

—वह तो जदीद है—मुल्ला टोककर कहने लगा—जो भी काम उसके अधीन होगा, वह जदीदी होगा, फिर लोगों के बच्चों को काफिर बनानेवाले मकतब जारी होंगे।

—वह हमारे बीच बादशाह नहीं होगा—उरमान पहलवान ने कहा—वह युद्ध-विद्या का अच्छा जानकार है, इसलिये सर-अफसर (जेनरल) की तरह काम करेगा, जब हम विजयी होंगे, तो जनाब आली लौटकर अपने सिंहासन पर बैठेंगे। तब हमें क्या करना है, यह देख लेंगे।

मुल्ला को जवाब देकर उरमान पहलवान ने कहा—सारे बयाबान, करशी और शहसब्ज जैसे शहर, गुजार-जैसी बिलायतें (जिले) बासमचियों के हाथ में आ गयी हैं। अब हकूमतें केवल कुरगानों (शासन-केन्द्र के नगरों) में छिपी हुई-सी बैठी हैं। बुखारा के तूमान भी तैयार हैं। कराकुल में मुराद पहलवान पेकन्दी, बुखारा नगर के देहात में आजमखोजा, गिज्दुवान में मतान पहलवान और नईम पहलवान दोनों भाइयों के साथ मुल्ला कहार सरदार बनकर बैठे हैं। यदि ऐसे समय हम मैदान में न आयेंगे, तो कब आयेंगे?

उरमान पहलवान ने चुप हो जवानों के दिल को जानने के लिए उनपर एक-एक करके नजर डाली। एक जवान ने पहलवान से पूछा—यदि हम लड़ने के लिये उठ खड़े हों, तो हकूमतों की सहायता के लिये ताशकन्द और समरकन्द से सेना आकर काम खराब कर देगी।

—इस समय स्वयं तुर्किस्तान पर बासमचियों की चोट पड़ रही है—उरमान ने कहा—फरगाना की बिलायतें अब भी बासमचियों से मुक्त नहीं हुई हैं। समरकन्द के कितने ही गाँवों पर बहराम बेक, हमर कुलबेक और आचल बेक का अधिकार है। ऊरातप्पा में खालबुत बेक, फलगर और मस्चाह में सैयद अहमद खोजा शासन कर रहे हैं। यदि ताशकन्द और समरकन्द में शक्ति होती, तो क्यों नहीं अपने पड़ोस में शान्ति स्थापित करते?

—दूसरे यह कि हकूमतों के भीतर आपस में झगड़ा हो उठा है—बाजार अमीन ने पहलवान की बात का समर्थन करते हुए कहा।

मोहीउद्दीन मखदूम खोजायोफ कमीशन का अध्यक्ष बनकर हमारे यहाँ आया

था। उसने हथियारों को बटोरा और जनाब आली के पास से आये तिल्लों में से आधा हकूमत को दे आधा अपनी जेब में रख लिया और अब बागी बनकर बासमची बन गया है। इस बात की हमें पक्की खबर मिली है कि नाजिर हरबी आरिफोफ भी बिगड़ने ही वाला है।

बाजार अमीन की इस बात पर लोगों ने खूब तालियाँ बजायीं। ताली बजाते समय मुल्ला मुँह बिचकाते हुए बैठा रहा। ताली बंद होने पर सिर से पैर तक आग लगी जैसे गुस्से में लाल होकर उसने कहना शुरू किया।

—तुम्हारा यह काम जदीदों, बोलशेविकों और काफिरों का काम है। हम तुम्हारी तलवार से दीन इस्लाम का प्रचार करना चाहते हैं और तुम लोग ताली पीटकर स्वयं अपने हाथों शरीयत के विधान को बर्बाद कर रहे हो।

—खैर कोई हर्ज नहीं—मुल्ला की बगल में बैठे हैत अमीन ने कहा—हर्षोद्रेक में जवानों से इस तरह की अशिष्टता हो ही जाती है। खुदा चाहेगा तो विजय के बाद हम आपको रईस बनायेंगे, फिर आप अपने इच्छानुसार लोगों से धर्म की पाबन्दी कराइयेगा।

मुल्ला इससे ठंढा न हुआ। उसकी क्रोधाग्नि और भड़की और कहने लगा—अभी-अभी उरमान पहलवान कमीशन के उस अध्यक्ष के बासमची होने पर हर्ष प्रगट कर रहा था, जो बिलकुल काफिर था। यदि वह बासमची हुआ है, तो बासमचीगिरी के काम को भी मुर्दार (भ्रष्ट) कहना पड़ेगा। मैं ऐसे काम से प्रसन्न नहीं हो सकता, क्योंकि धर्म की किताबों में लिखा है "अल्-अऊजो बिल्लाहि रजा बिकुफ्र कफर।" मैंने उस आदमी को सिगरेट पीते अपनी आँखों देखा था, वह पूरा काफिर है।

—नाराज न होओ तकसीर (क्षमानिधान)।—उरमान पहलवान ने मुल्ला से कहा। उस आदमी को बासमचियों ने अपने भीतर नहीं लिया, बल्कि उसे मार डालना चाहते थे और उसने समरकन्द की ओर भागकर जान बचायी।

—खैरियत—मुल्ला ने कहा। अब उसका दिमाग कुछ नरम हुआ था।

—बच्चा, हुक्का तो तैयार कर—कहते नारमुराद ने देहली की ओर आवाज दी और फिर मुल्ला से पूछा। हुक्का पीने में हर्ज तो नहीं है तकसीर!

हुक्का पीना व्यर्थ का काम (बदअत) है—मुल्ला ने जवाब दिया—हुक्का

पीनेवाला दुष्कर्मी होता है, लेकिन काफिर नहीं होता और सिगरेट पीना पूरा कुफ्र है; क्योंकि वैसा करने से वह काफिर के समान होता है।

—ऋषिवचन (हदीस) में आया है "जो आदमी जिस जाति के समान होता है, उसकी गिनती उसी जाति में होती है।

एक १६-१७ साला छोकरा कामदार फर्शी पर चिलम में तमाकू और आग रखकर ले आया। उसने सन्दली के पास जा फर्शी की निगाली को हैत अमीन की तरफ किया। हैत अमीन ने निगाली को हाथ में ले मुस्कुराते हुए लड़के की आँखों और भौंहों की तरफ निगाह करके मुल्ला से कहा:

—ऐसे मृगनयन और कृष्ण भ्रू के हाथ से हुक्का पीना शायद सवाब (पुण्य) होगा तकसीर—निगाली को मुल्ला के मुँह की ओर करके यह भी बोला—आप भी पुण्य प्राप्त करें। कहावत है "कभी भ्रूभंग और असूल (सिद्धान्त), कभी खुदा और रसूल।"

मुल्ला निगाली को मुँह में लगा मुस्कुराते हुए लड़के के मुँह की ओर देखने लगा। उसके इस काम से फिर सभा में एक बार ताली बजी और लोग ठठाकर हँसे; किन्तु अबकी बार मुल्ला पहिले की तरह नाराज न हुआ, बल्कि उसका मुँह कपास-सा लाल हो गया। यद्यपि मुल्ला ने अपने आचरण द्वारा हुक्का पीने की अनुमति दे दी थी, लेकिन पहलवान आप मुल्ला के लिहाज से हुक्का पीने के लिये देहली में चला गया और फिर लघुशंका करने बाहर चला गया।

मुल्ला ने हैत अमीन से कहा—मैंने तुम्हारी बात अनङ्गीकार न करने के लिये निगाली मुँह में डाली, लेकिन बाप के सामने मुझे इसके लिये बड़ी लज्जा हुई; क्योंकि मैंने अनेक बार उसे हुक्का पीने के लिये बुरा-भला कहा है।

—क्यों बुरा-भला कहा?—हैत अमीन ने पूछा।

—कहा तो हुक्का पीने के विरुद्ध धर्मोपदेश किया था, क्योंकि धर्मोपदेश करना मुल्ला का कर्तव्य है।

—हाँ, ऐसा ही एक धर्मोपदेश कीजिये कि हम भी सुनें, क्षमानिधान!—हैत अमीन ने कहा।

मुल्ला ने ऊँची आवाज में सभी लोगों को सुनाते हुए कहा—मेरा पहला उपदेश यह है कि जैसे ही आपलोग विजयी होवें, जनाब आली के पधारने की

प्रतीक्षा किये बिना जिसने भी एक बार हकूमतों को सलाम किया है, चाहे वह जो भी हो, उसे फाँसी पर चढ़ायें।

—यह धर्मोपदेश बहुत कड़ा है—हैत अमीन ने टोककर कहा—क्योंकि मुल्लों में से कितनों ही ने एक बार नहीं, अनेक बार हकूमतों को सलाम किया है, अवसरवादिता करते उनकी खुशामद भी की है। क्या इस तरह सारे मुल्लाओं को मार डालना उचित है?

—कह तो दिया, चाहे कोई भी हो—मुल्ला ने गर्म होकर कहा—जिस मुल्ला ने भी हकूमतों की खुशामद की, वह सबसे अधम धर्म-पतित है।

—जो भी हो, मुल्ला पागवाले हैं। मुल्ला होने के कारण उनपर कुछ रियायत करनी चाहिये, क्षमानिधान—बाजार अमीन ने कहा।

—ऐसे मुल्ला मुल्ला नहीं हैं—मुल्ला ने चिल्लाकर कहा—जैसा कि मैंने सुना, खोजा साकतारी (गाँव) का खतीब सब जगह हकूमतों की तारीफ करता फिरता है। वह मुल्ला कहार कूरबाशी के भोज में नहीं गया और यह भी कहने से बाज नहीं आया कि यह भोज डकैती के पैसे से है, इसलिये इसकी आश हराम है। ऐसा कहकर उसने अपनी जातिवालों को भी "मुजाहिद फि-सबिलिल्लाह" (भगवत्पथ के धर्मयोद्धा) के भोज में जाकर पुण्यार्जन करने से रोका। क्या आप लोग ऐसे मुल्लों को मुल्ला कहकर जीवित रखना चाहते हैं?

—अलबत्ता, ऐसे मुल्ला पहली ही बार गोली से उड़ा दिये जायेंगे—कहते इस्माईल ने मुल्ला के दिमाग को ठंडा कर दिया।

मुल्ला ने अपने धर्मोपदेश का प्रभाव होते देख प्रसन्न होकर कहना शुरू किया—इसके बाद···।

लेकिन मुल्ला का धर्मोपदेश आगे न बढ़ पाया और मेहमानखाने के अन्दर आ पहलवान अरब ने "एक विचित्र घटना" कहते घबड़ाहट प्रदर्शित की। "क्या घटना, क्या घटना" कहते चारों ओर से लोग पहलवान अरब की ओर देखने लगे।

—मैं फरागत के लिये मेहमानखाने से निकला—काँपते-काँपते पहलवान ने बात शुरू की—मेहमानखाने के चबूतरे पर एक कालिमा दिखलाई पड़ी। "कौन है" कहकर मैंने आवाज दी। कालिमा चबूतरे से नीचे कूद दौड़कर हवेली के भीतर चली गयी। शैतान ने मेरे दिल में कुछ अनुचित बातें डालीं। मैं हवेली

के अन्दर गया और अपनी बीबियों के कमरों को एक-एक करके बारीकी से ढूँढ़ा, यहाँ तक कि रोटी रखने के सन्दूकों तक भी नहीं छोड़ा, किन्तु वहाँ कोई दिखाई न पड़ा। इसके बाद रसोईघर, भंडारघर, दूसरी कोठरियाँ और बखारों की पेंदी भी देखी। वहाँ भी कोई न मिला। जान पड़ता है, हमारे ऊपर जासूस लगा है।

पहलवान की इस बात को सुनकर जवानों ने तुरन्त कालीन, गेलम और नमदों के नीचे से निकालकर बन्दूकों को हाथों में ले लिया। पहलवान अरब ने फिर कहा—वह मुझे देख भागकर छत पर चढ़ दीवार से कूद गया और मैंने शैतान के बहकावे में पड़ बीबियों पर संदेह कर उनके घरों को ढूँढ़ने में समय बिता दिया। यदि उसको न पकड़ सके, तो हमारा सत्यानाश हो जायगा, हमारे ऊपर सेना आयेगी।

—इसी समय जाओ, चारों ओर ढूँढ़ो और उस शैतान को पकड़ो—उरमान पहलवान ने हुक्म दिया।

बंदूक हाथ में लिए जवान घर से निकलकर कूचे में दौड़ने लगे। मेहमानखाने के भीतर रह गये आदमियों पर भयंकर नीरवता छा गयी।

भय के मारे शेर से डरकर अपनी गर्दन को सरकंडों में छिपानेवाले गदहे की तरह मुल्ला ने "अब क्या करूँ" कहते रजाई को सिर पर ले उसे सन्दली के नीचे छिपा लिया। लेकिन रजाई से ढकी सन्दली के नीचे रखी अंगीठी के धुएँ से वह अपने सिर को वहाँ अधिक देर तक न रख सका। मुल्ला के सिर निकालते ही गद्दे के नीचे से चिमनी की तरह धुआँ निकलने लगा और घर में छत तक धुआँ भर गया।

"यह क्या है" कहते हैत अमीन ने रजाई को हटाकर संदली को देखा और मुल्ला की पाग को पकड़कर बाहर किया। पाग धुआँ देकर जल रही थी। पहलवान अरब ने दौड़कर पाग को हैत अमीन के हाथ से ले, बाहर ले जा पानी डालकर बुझाया। पाग जलने से मुल्ला का दिमाग भी जल उठा और उसने चिल्लाकर कहा—यहाँ आने से मेरी एक पाग नष्ट हुई, हाय-हाय!

—क्षमानिधान, पाग की बात तो दूर, तुम्हारा सीस भी खतम होनेवाला था—कहकर हैत अमीन ने मुल्ला को और डराया।

धुआँ भरे घर में उदासीनतापूर्ण नीरवता छा गयी, जिसे आध घंटा बाद लौटकर आये बंदूकदार जवानों ने ही भंग किया। उन्होंने हवेली के चारों ओर ढूँढ़ मारा,

किन्तु किसी को न पाया। बासमची भागने के लिये तैयार होने लगे। वह लम्बे-चौड़े जामों को पहने उनके भीतर बंदूकों को छिपाये अपने घोड़ों पर सवार हो दरवाजे से बाहर निकल कतार बाँधकर खड़े हो गये। उरमान पहलवान ने कमांडर बनकर उनके सामने खड़ा हो चारों ओर निगाह करके चार बार सीटी बजायी। सीटी को सुनकर गाँव में छोड़े बासमची भी आ पहुँचे और सारे बासमची बयाबान की तरफ भगे।

पहलवान अरब ने बाकी रात भय और आतंक से जागकर बितायी। सबेरे सूर्योदय के वक्त हस्त-पाद-मुख-प्रक्षालन के लिये मुहब्बत को पानी लाने के लिये कई बार पुकारा, लेकिन कोई जवाब न मिला। नमाज का समय बीतते देख उसने खुद पानी ले वजू किया और बामदाद की नमाज पढ़ी। फिर मुहब्बत को ढूँढ़ने लगा, लेकिन वह न अपनी कोठरी में, न रसोईघर में, नहीं बीबियों के कमरों में मिली। बाय दरवाजे से निकलकर हवेली के पिछवाड़े गया। वहाँ दीवार के नीचे बालू पर दो प्रकार के पैरों के चिह्न दिखलाई पड़े—एक उनमें बड़ा और दूसरा छोटा था। बाय उनके पीछे-पीछे चला, पद-चिह्न दो आदमियों के लेटने लायक एक गड्ढे तक पहुँचे और फिर वहाँ से बालू के टीलों पर से होते आगे चले गये। बाय ने अपने आपसे कहा "जासूस आज रात मेरे रहस्य ही को नहीं ले गया, बल्कि मुहब्बत को भी ; और मुहब्बत मेरे सारे रहस्यों को जानती थी। अब मेरा सर्वनाश हुआ।

सचमुच बाय के घर या कारागार से मुहब्बत सदा के लिए मुक्त हो सफर गुलाम के साथ चली गयी।

७

बासमचियों के चार हाकिम

गिज्दुवान के चारों ओर और छत से ढँकी सड़कों के नीचे स्थानीय सौदागरों की सरायों और दूकानों में भी एक निर्जीवता छायी हुई थी। सौदागर दो-दो, चार-चार करके दूकानें बंद कर, चबूतरों पर बैठे आपस में फुस-फुस कर रहे थे। पूर्वी चौरस्ता की ओर गेहूँ बाजार की तरफ से एक मिलितिसया (हथियारबंद कान्स्टेबुल)

आता दिखलाई पड़ा। उसे देखते ही सारी फुस-फुस बंद हो गयी। जब मिलित्सिया दालान (छत से छायी सड़क) के अन्दर हो सौदागरों के सामने से गुजरा, तो एक ने उससे पूछा—कहो क्या खबर मिलित्सिया आफन्दी ? कोई शुभ समाचार लाये ? क्या उन्हें पकड़ा गया ?

—अभी कोई खबर नहीं, वे जरूर पकड़े जायेंगे—कहते मिलित्सिया चौरस्ते से होता कुर्गान की ओर चला गया।

—हाँ ऐसा ही है, हमने भी सेवेइयाँ तैयार कर रखी हैं—सौदागर ने मिलित्सिया को सुनाते हुए कहा—। फिर घड़ी को जेब से निकालकर "ए, असर की नमाज का समय भी आ पहुँचा, वजू करना चाहिये" कहते अपनी जगह से उठा और पाग और जामा को दूकान के चबूतरे पर रख वजू (हस्त-पाद-मुख-प्रक्षालन) करने चला गया।

सौदागर घीमंडी और चौरस्ते के बीच पहुँचा। वहाँ दो खम्भों पर बँधे बल्ले की ओर निहारते खड़ा हो गया।

—हाँ, क्या निहार रहो हो ?—दूसरे सौदागर ने पूछा।

—अभी कोई चीज नहीं देखी, लेकिन आशा है कि जिन चीजों को इस बल्ले पर लटकाया जाता था, उन्हें फिर लटका देखूँगा—पहले सौदागर ने कहा।

—कल इसी समय देखोगे—दूसरे सौदागर ने कहा।

—मैं तब तक प्रतीक्षा करने की शक्ति नहीं रखता, मैं चाहता हूँ आज ही रात नहीं तो कल सबेरे उसे देखूँ—कहते पहला सौदागर रूद (नदी) की ओर चला गया। मिलित्सिया कूरगान में अपने मिलित्सियाखाने में पहुँचा। वहाँ पहरा देते उसके साथी ने पूछा—हाँ, क्या खबर ?

—काम बुरा है। इन मिलित्सियों के हाथ से क्या बन सकता है, जिनमें अधिकांश ने परेड भी नहीं देखी, बंदूक दागना भी नहीं सीखा।

—विशेषकर जब कि उनका नेतृत्व एक बनिये का बच्चा कर रहा है।

—क्या तू थका तो नहीं ?—नवागन्तुक ने पूछा।

—थका नहीं हूँ, लेकिन अब आ, तू खड़ा हो, मैं थोड़ा दम ले लूँ—पहरेवाले ने कहा।

"अभी आता हूँ" कहते वह भीतर जा अपनी बंदूक ले साथी की जगह खड़ा होकर पहरा देने लगा। उसका साथी बंदूक को अपने सिर के नीचे रख

मिलित्सियाखाने (चौकी) के दरवाजे के सामने लम्बे पड़ दीवार के ऊपर पड़ते पीले सूर्य-प्रकाश को देखते विचारमग्न हो गया।

"खैर, जो कुछ भी हमारे भाग्य में हो, देखेंगे, इसके लिये पहिले से चिन्ता करने की क्या आवश्यकता—पहरे पर खड़े जवान ने अपने साथी को विचारमग्न देखकर कहा।

—भाग्य!—लेटे मिलित्सिया ने कहा—भाग्य का निर्णय उसी दिन हो गया, जिस दिन मिलित्सिया का सरदार एक बनिये का बच्चा बना।

—तेरी यह बात ठीक है—पहरेवाले ने कहा—मैं अभी चौरस्ते से आ रहा था, सौदागरों की आवाज बहुत अनुचित थी। जब मैं उनके समीप पहुँचा तो ताना मारते हुए उन्होंने मुझसे शुभ-समाचार पूछा। यहाँ तक कि एक ने मसखरी करते कहा कि हमने सेवेंइयाँ तैयार कर रखी हैं।

—आनेवालों के लिये उन्होंने भेड़ तैयार कर रखी हैं—लेटे आदमी ने कहा—कौन जानता है कि इन बनियों और उस बनिया-बच्चों के बीच शायद कोई संबंध हो और खबर हमसे भी पहिले उसके पास पहुँच जाती हो।

लेटा आदमी चुप हो गया। दीवार पर पड़ती सूर्य की किरणें भी अब छिप चुकी थीं, आदमी की आँखें भी ढँक चुकी थीं। वह सो रहा था।

× × ×

सूर्यास्त के बाद अंधकार फैल रहा था। गिन्दुवान के किले के अन्दर कोई आवाज नहीं सुनाई दे सकती थी; किन्तु किले के बाहर से गीदड़ों की तरह का उल्लास (घोष) सुनाई देता था। उल्लास से घबड़ाकर पहरेवाले ने "अका उरून, अका उरून" कहकर आवाज दी, लेकिन उरून को इतनी गहरी नींद आयी थी कि वह न जगा। तीसरी बार साथी ने और जोर से आवाज दी, तब उरून "क्या कहता है" कहते जागकर उठ बैठा। अभी उसकी नींद अच्छी तरह दूर नहीं हुई थी, नहीं तो जगाने का कारण पूछने की आवश्यकता न थी। गिन्दुवान के किले के पूरब और उत्तर से "दौड़ो-दौड़ो, पकड़ो-पकड़ो, बाँधो-बाँधो, मारो-मारो" की आवाज आकर आकाश को कंपित कर रही थी। "आ गये" कहते पूरी तौर से जागकर मिलित्सिया बंदूक हाथ में ले फाटक के एक बाजू में अपने साथी के सामने खड़ा हो गया।

आवाज और तेज हुई और उसके साथ बंदूक दागने की आवाज भी आने

लगी। दोनों ने एक बार फिर अपनी बंदूकों पर नजर डाली और कारतूसों को तैयार किया। अधिक देर न हुई, हल्ला-गुल्ला समीप सुनाई देने लगा और कुछ आवाजें तो चौकी के पड़ोस से आने लगीं। पच्चीस सवार उल्लास लगाते चौकी के फाटक के पास आकर खड़े हो गये। उनमें से एक ने ऊँची आवाज में कहा—कौन है ओय्!

—मृत्यु, उरून नरकल्ला—नींद से जगे मिलित्सिया ने जवाब दिया।

—अका उरून ऐसा न करो, तुम हमारे साथ आ जाओ। सारा देश हमारे साथ है—सवार ने कहा।

—मैं तुम्हारे अमीर के साथ नहीं हुआ तो क्या इस समय उसका पेशाब तुम्हारे साथ होऊँगा—नरकल्ला ने कहा।

"ऐसा ही सही तो ले" कहते एक ही साथ ५० बंदूकें चौकी की ओर खाली हुईं। अभी आवाज का कंपन बन्द नहीं हुआ था कि मलित्सियाखाने के दोनों बाजुओं से दो बंदूकें दगीं और एक सवार तथा एक घोड़ा जमीन पर गिरा, बाकी सवार आँखों के सामने से हट गये और चौकी के दरवाजे से छूटी गोलियाँ सूने कूचे में सनसनाती चली गयीं।

किले के भीतर सब जगह शोर मचा हुआ था। बंदूकें एक साथ या बारी-बारी से छूट रही थीं। कूचे के दोनों छोर की दीवारों से लेटी हुई काली पाँती आगे बढ़ती पहरेवालों के सामने दिखाई पड़ी। उन्होंने गोली छोड़ना शुरू किया; लेकिन गोलियाँ दुश्मनों के सिरों के ऊपर से होकर दीवारों से जा लगीं। मिलित्सिया भी जमीन पर लेटकर गोली छोड़ने लगे; लेकिन दोनों तरफ की गोलियाँ बेकार जा रही थीं। दुश्मन सरकते हुए समीप आ पहुँचे। दोनों साथियों ने अपने संगीनों को तैयार कर लिया। इसी समय छत से कूदकर आये दुश्मनों ने उन्हें धर दबाया। उरून नरकल्ला ने "रुस्तम अशकी अपने को सीधा कह" "और जिन्दाबाद इन्कलाब, बासमचियों की मौत" कह—अपने ऊपर चढ़े चार आदमियों को हटाकर वह आधा उठ खड़ा हुआ; किन्तु इसी समय वह दोबारा गिर पड़ा। उसकी कुक्षि और अंतड़ियों से रक्तमिश्रित हरा पानी निकलकर फैलने लगा। दो कदम आगे रुस्तम अश्की भी खून में लदफद पड़ा था।

गिज्दुवान के किले पर बासमचियों का अधिकार था।

× × ×

गिज्दुवान के बाजार, चौरस्तों, सरेमजार, दर्वेशाबाद, कासागरी, नगजककारी, उजबेकी और दूसरे महल्लों में शोर मचा हुआ था। चारों ओर से बंदूक की आवाज आ रही थी। जिसके बीच से "हाय न्याय! उसका क्या अपराध था"··· "अब मैं काली सिरवाली क्या करूँ···" कहती औरतों की चिल्लाहट सुनाई दे रही थी। फिर उनके पीछे अबोध बच्चों का हाहाकार हृदय को विदार रहा था। इन शब्दों के बीच ढोल का "गुम्-गुम्" और ढोलकी की "तिङ्-तिङ्" की आवाज कानों में आ गिज्दुवानियों को अमीर के अत्याचारी जमाने का स्मरण दिला रही थी।

यह हाहाकार सूर्योदय तक जारी रहा। दिन हुआ, गिज्दुवान के कूचे और सड़कें बड़ी पाग बाँधे मुल्लों, सफेद कमरबंद बाँधे पासबानों, नया जामा पहन कमर बाँधे दाढ़ी में कंघी किये बायों से भर गयीं। पुराने अमलाकदारखाने के सामने तंग जामा पहने, कमर में पट्टी लगाये, सिर पर तेलपक (टोपी) दिये, हाथ में घोड़ों को पकड़े बन्दूकदार जवान पाँती बाँधे खड़े थे। जवानों के पीछे दीवार के नीचे हाथों को सामने रखे, मानों अमीर के आर्क के सामने हो, तमाशबिन खड़े थे। उन्होंने अमलाकदारखाने के फाटक से चार आदमियों को यार्लिक (सनद) लेकर बाहर निकलते देखा। "एय्, क्या जनाब आली आ गये" कहते दर्शकों में खलबली मच गयी। दर्शकों के बीच खड़े एक मुल्ला ने एक यार्लिकदार से पूछा—शरीक, क्या खबर? तुम क्या बने?

—मैं गिज्दुवान तूमान का काजी बना।

—और तुम क्या?—मुल्ला ने दूसरे यार्लिकदार से पूछा।

—मैं रईस बना।

—और ये महानुभाव क्या बने?—मुल्ला ने शरीक से बाकी दोनों यार्लिकदारों के बारे में पूछा।

—यह अमलाकदार और यह मीरशब हुए—कहते शरीक काजी ने मुल्ला को जवाब दिया।

—है, है, मुबारक हो शरीक! तुम सबको मुबारक हो—मुल्ला ने कहा।

—खुदा मुबारक और खैर करें—कहते काजी ने सबकी ओर से जवाब दिया। शरीक, क्या तुम्हारी यार्लिक को देख सकता हूँ? कहते मुल्ला ने काजी की ओर हाथ बढ़ाया।

—कृपा है—काजी ने सिर नीचा करते हुए कहा।

मुल्ला ने पगड़ी से काजी की यार्लिक को हाथ में लेकर देखा। यार्लिक अमीर की ओर से लिखी गयी थी और उसपर मुल्ला कहार और उरमान पहलवान की मुहरें थीं।

—बहुत अच्छा—कहते मुल्ला ने यार्लिक को काजी की पाग में खोंस दिया और फिर कहा—"पीर का डंडा पीर की जगह" जनाब आली अभी नहीं आये, किन्तु बेग लोगों ने उनकी ओर से काम शुरू कर दिया।

रईस दूसरे यार्लिकदारों को लिये एक ओर चला गया।

जब रईस काफी दूर चला गया तो मुल्ला ने काजी के पास से गुजरते हुए धीरे से कहा—खुद तू काजी बना, इसके बारे में मैं कुछ नहीं कहता; किन्तु और नहीं तो मुझे रईस ही क्यों नहीं बनवा दिया, मैंने क्या तेरे साथ नहीं पढ़ा था और यह तो एक मंद-बुद्धि मुल्ला था, जो रईस बना है।

—खुदा एक है, मुझसे सलाह नहीं की, नहीं तो मैं जरूर तुम्हारी सिफारिश करता। अब भी तुम खाली हाथ नहीं रहोगे, और आशा है, वाबकन्द के काजी तुम बनाये जाओगे—काजी ने मुल्ला को समझाया।

—ए, क्या वाबकन्द को भी ले लिया—कहते मुल्ला ने आश्चर्य और प्रसन्नता दोनों प्रगट की।

आज ले लेंगे······।

इसी समय अमलाकदारखाने से एक १६-१७ साला लड़का दौड़ा आया। उसके शरीर पर वेकशाब का जामा, कमर में शाही का कमरबंद और सिर पर सोसर की टोपी टेढ़ी रखी थी। उसने मुल्लों की सरस बात में विघ्न डाल दिया। दूसरे दर्शक मुल्लों ने भी लड़के के मुँह पर नजर गड़ाये क्या खबर लाया है, इसे सुनने के लिये कान खड़ा किया। लड़के ने बंदूकदार जवानों से "सवार हो जाओ और सबको सवार होने के लिए कहो" कहा और वह फिर अमलाकदारखाने में लौट गया। ऐसे सुन्दर लड़के को देखकर मुल्ला के मुँह में पानी भर आया। उसने रूमाल से मुँह को साफ करके काजी से पूछा। "यह सूर्य कौन है?"

—उरमान पहलवान का मुहरम्—काजी ने जवाब दिया।

—खुदा जब देता है, तो नहीं पूछता कि तेरा बाप कौन है। जनाब आली को भी ऐसा सुन्दर मुहरम् नहीं मिला होगा।

—अभी यह क्या है?—काजी ने कहा—"हर बेग के पास इससे भी अधिक

सुन्दर दो-दो, तीन-तीन मुहरम् हैं……" इसी समय रईस आ गया और बेकों के मुहरम् की प्रशंसा बन्द हो गयी। काजी और मुल्ला की नजर रईस की बगल में गड़ गयी। वहाँ दो हाथ लम्बी, तीन अंगुल मोटी चमड़े से बखिया की हुई कोई कड़ी-सी चीज थी, जिसकी एक ओर लकड़ी का डंडा लगा हुआ था।

—इसे कहाँ पाया?—आश्चर्य करते मुल्ला ने रईस से पूछा।

—प्रथम क्रान्ति में जब जनाब आली का रईस भाग गया और रईसखाना लुट गया। किसी दिन काम आयेगा, यह ख्याल कर मैंने इस दर्रे (कोड़े) को रईसखाने से ले जाकर छिपा रखा था और आज इसकी जरूरत पड़ गयी—रईस ने कहा। उसने दर्शकों पर दृष्टि डालकर एक आदमी को अपने पास बुलाया। आदमी पास आकर हाथ बाँधे खड़ा हो गया। रईस ने आदमी की ओर दर्रे को बढ़ाते हुए कहा "तू मेरा दर्रा-दस्त (दंड-पाणि) है।" आदमी "सिर-आँखों पर" कह दर्रे को बगल में दबा हाथ बाँधकर रईस के पीछे खड़ा हो गया।

—दर्रा-दस्त बनने के लिए बहुत जबर्दस्त आदमी मिला—मुल्ला ने रईस से कहा—यह पन्द्रह साल तक रईस के पास दर्रा-दस्त रहा।

इसी समय "दौड़ो-दौड़ो, तैयार-तैयार" की आवाज गिज्दुवान के किले से निकलकर चारों ओर फैल गयी और मुल्ला और रईस की बात वहीं खतम हो गयी। अमलाकदारखाने के रहनेवाले आवाज सुनकर बाहर निकले और अपने घोड़ों पर सवार हो गये। मुल्ला कहार और उस्मान पहलवान साथ-साथ चल रहे थे। उनके पीछे बासमचियों के साथ तूमान के इज्जतदार हजरत कुलबेक और दानीबेक भी चल रहे थे। काजी, रईस, अमलाकदार और मीरशब बेकों के पीछे-पीछे दौड़े। चार-सू (चौरस्ते) पर पहुँचकर मुल्ला कहार ने घोड़े को रोका और पीछे मुड़कर अपने भाई नईम पहलवान को पुकारा। नईम घोड़ा दौड़ाते बड़े भाई के पास जाकर बोला—क्या आज्ञा है?

—तू अपने आदमियों को लेकर खोजा साकतारी जा। वहाँ मुहीउद्दीन खोजा को मारकर उसके घर को लूट, उसके बाल-बच्चों को मार डालना या बंदी बनाना। वहाँ से खुतचा जा, वहाँ के कमसोमोल (नौजवान कम्युनिस्ट) बच्चों को उनके माँ-बाप के साथ कतल कर। इन कामों के पूरा हो जाने पर मेरे पास बाबकन्द में आ।

—बहुत अच्छा—कहते नईम पहलवान घोड़े का मुँह फेर पीछे की ओर दौड़ गया।

फिर मुल्ला कहार ने अपने सामने हाथ बाँधे खड़े काजी, रईस, अमलाकदार और मीरशब की ओर निगाह करके कहा—अब तुम्हें छुट्टी है, तूमान का अच्छी तरह प्रबन्ध करो। बाकी बचे बोलशेविकों, जदीदों और आन्दोलकों की सूची बनाकर मुझे समर्पित करो। मैं जो कुछ हुक्म लिखकर भेजूँ, उसे तुरन्त कार्य-रूप में परिणत करना होगा, और दुआ करना न भूलना।

चार हाकिम जमीन पर घुटन ों के बल बैठ हाथों को ऊपर उठाये दुआ करने लगे। मुल्ला कहार अपने दल के साथ घोड़ा दौड़ाता चला गया।

क़ुरबाशियों के चले जाने पर गिज्दुवान के चारसू के छोर पर आकर चार हाकिमों ने रोगन-बाजार के चबूतरे पर बैठकर सूची बनानी चाही। कल मिलिसिया के लिये सेवेइयाँ तैयार करने की बात करनेवाले बनिये ने सराय से निकालकर कालीन और गद्दा चार हाकिमों के लिये बिछा दिया और बाजार में गड़े दोनों खम्भों के ऊपर निगाह करके कहना शुरू किया :

—खुदा का शुक्र है कि मरने से पहिले इन ढोल-ढोलकी बजानेवालों को देख लिया। यदि जनाब आली को भी उनके तख्त पर देख लूँ, तो दुनिया में कोई अरमान बाकी न रह जायेगा।

"अपने जनाब आली के सिर को आर्क के नकारखाने (मीनार) से लटकता देखेगा"—एक स्त्री ने कहा, जो अपने बेटे को छुड़ाने के लिये काजी के पास आयी थी।

—खुदा करेगा तो देख लेगा—कहते मीरशब ने बनिये को जवाब दिया।

हाकिम चबूतरे पर बैठ सलाह करने लगा। अब "दौड़ो-दौड़ो" की आवाज बहुत दूर चली गयी थी। और धीरे-धीरे गिज्दुवान पर शोकपूर्ण नीरवता छानी चाहती थी ; लेकिन उसमें पति-पिता या भाइयों की कतल, घरों की लूट के लिये स्त्रियों का क्रन्दन और अनाथ बच्चों का हाहाकार बाधक हो रहा था।

८

बासमचियों से युद्ध

ऊपर समरकन्द की उपत्यका में वसन्त में भारी वर्षा हुई थी, जिससे जरफशाँ नदी की अंतिम शाखा कराकुल में बहुत पानी आ गया था। नदी पर जिस पुल से बुखारा और वाबकन्द का रास्ता गुजरता था, उसे मेहतर कासिम कहते थे। पुल के पास नदी के दोनों ओर दो सेनाएँ पड़ाव डाले हुई थीं। दोनों एक दूसरे पर आक्रमण करना चाहती थीं; किन्तु पुल पर से पार नहीं हो सकती थीं, और नदी से पार होने से पानी बाधक हो रहा था।

बासमची नदी की दाहिनी ओर अर्थात् उसके उत्तर तरफ वाबकन्द की ओर थे। पुल पर मशीनगनें लगी थीं, इसलिये बासमची उधर बढ़ने की हिम्मत न रखते थे। उधर नदी के दूसरे किनारे अर्थात् बुखारा की ओर लाल सेना, लाल गोरिल्ला, मजदूर-किसान-स्वयंसेवक पड़े हुए थे। वे भी सैनिक दृष्टि से पुल पार करने को ठीक नहीं समझते थे। एक समावारखाने (चायखाने) में, जिसका मालिक भाग गया था, सभा बैठी हुई थी। वहाँ किसी ने कहा—क्या जाने पुल के नीचे दुश्मनों ने बारूद और डीनामाइट रख छोड़ा हो।

—हमारे दुश्मन बासमची उन्हें नहीं जानते, उनके पास पुल उड़ानेवाली चीज नहीं है, न कोई ऐसा आदमी है, जो डीनामाइट तैयार कर सके—कहते एक स्वयंसेवक ने कमांडर की बात का खंडन किया।

कमांडर ने जवाब देते हुए कहा—जैसे हमारे अन्दर रूसी किसान और मजदूर हैं, उसी तरह बासमचियों की तरफ भी सफेद रूसी अफसर और केमिष्ट हैं, इसलिये सैनिक दृष्टिकोण से हम असावधानी नहीं कर सकते।

—यही नहीं, इस वर्गयुद्ध में बासमचियों के भीतर अँगरेज साम्राज्यवादियों के गोइन्दे भी हैं—दूसरे कमांडर ने पहले कमांडर का समर्थन करते हुए कहा।

—गिज्दुवान और किजिलतप्पा के बीच के लोहे के पुल को भी इन्हीं बासमचियों ने तोड़ा था। उन्हें नादान समझना अपने आपको धोखा देना है—कहते स्वयंसेवक सफर गुलाम ने कमांडरों की बात की पुष्टि की।

—१९१८ में कोलिसोफ-काण्ड के समय भी चारजूय से जीरा बुलाक और

कागान से तिर्मिज तक की रेलवे लाइन को बर्बाद करने में सफेद रूसी इञ्जीनियरों और अँगरेज साम्राज्यवादियों ने नेतृत्व किया था—एक और स्वयंसेवक ने कहा।

—अच्छा—पार्टी-सुहृदों के सरदार जौवाद ने कहा—पुल से पार होना ठीक नहीं, तो पानी से पार होना ठीक होगा। लम्बी-चौड़ी बातों में समय बिताना ठीक नहीं। हमने इसी तरह समय बिता दिया, तो फिर दिन हो जायेगा और बासमची हमारी कम संख्या को जान जायँगे, उस वक्त भारी आफत आयेगी।

—*हम कैसे कम हैं—एक पार्टी-सुहृद ने कहा—हम ढाई सौ हैं।*

—चार हजार के मुकाबिले ढाई सौ बहुत कम हैं—जौवाद ने कहा।

—ढाई सौ हैं, किन्तु हमने पार्टी के अधीन शिक्षा पायी है। हमें आग-पानी और सारी दुनिया की दुश्मनी और मरने का भय न करके आगे बढ़ना चाहिये—दूसरे पार्टी-सुहृद ने कहा।

—अवश्य मरने से डरने की जरूरत नहीं—एक स्वयंसेवक ने कहा—लेकिन बेफायदा मरने की भी जरूरत नहीं। जो बेफायदा मरने की इच्छा रखता है, वह घर में बैठे छाती पर तमचा रखकर भी मर सकता है। हमें ऐसी मौत की जरूरत है, जिससे बुखारा जन-प्रजातन्त्र को शक्ति मिले।

—जन प्रजातन्त्र न मरणासन्न है, न मरेगा—जौवाद ने टोककर कहा—जब तक बुखारा के जाँगर चलानेवाले सजग हैं, जब तक दुनिया में कमकरवर्ग जिन्दा है, जब तक रूस और तुर्किस्तान में सोवियत सरकार जिन्दा है तब तक बुखारा-जन-पंचायती प्रजातन्त्र न मरा है, न मरेगा, बल्कि वह बुखारा सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र बनकर सोवियत संघ का अंग बनकर रहेगा। इस विषय में संदेह करना नितान्त भूल है।

—इस समय बुखारा जन प्रजातंत्र के कितने ही अंगों में जो बुराइयाँ देखी जाती हैं, उन्होंने हरएक आदमी के दिल में संदेह पैदा कर दिया है—उक्त स्वयंसेवक ने कहा।

—नाजिर हरबी आरिफोफ के दुश्मनों की ओर भाग जाने और केन्द्रीय कार्य-समिति के अध्यक्ष उसमान खोजा के विश्वासघात ने प्रजातन्त्र को निर्बल नहीं किया, बल्कि सबल करने का रास्ता खोल दिया—जौवाद ने कहा—उनके विश्वासघात से हमारी आँखें खुल गयीं। हम पार्टी-संगठन, सरकारी विभाग

और पंचायती संगठनों को ताजा कर रहे हैं। वहाँ के सड़े अंगों को निकाल बाहर कर उनकी जगह स्वस्थ अंगों को शामिल कर रहे हैं।

—बुखारा जन प्रजातंत्र अवश्य विजयी होगा—कहते एक स्वयंसेवक ने जौवाद का समर्थन किया।

—निःसंदेह हमारी विजय होगी—जौवाद के विरुद्ध बात करनेवाले स्वयंसेवक ने कहा—लेकिन इसके साथ इन युद्धों में तदबीरों को भी काम में लाना जरूरी है।

—तदबीर यह है—जौवाद ने कहा—समय को हाथ से दिये बिना रात के अँधेरे से लाभ उठाकर पानी के भीतर से नदी को पार करना चाहिये और शत्रु पर पीछे की ओर से आक्रमण करना चाहिये।

—मुझे एक तदबीर सूझ रही है—स्वयंसेवक सफर गुलाम ने कहा।

कैसी तदबीर?—सभापति ने पूछा—मैं एक काम अपने सिर पर लेना चाहता हूँ।

—यहाँ खुदसर होकर काम नहीं किया जा सकता—जौवाद ने सभापति की आज्ञा बिना सफर गुलाम की बात काटकर जोर से कहा—यहाँ जो भी काम होता है, युद्ध-समिति के सामूहिक निर्णय के अनुसार होता है।

—अच्छा, इस साथी की बात हमें सुननी चाहिये; फिर यदि कहना हो तो पीछे कहना—सभापति ने जौवाद को जवाब दे सफर गुलाम की ओर निगाह करके कहा—कह चलो साथी!

—मैंने खुदसर हो काम करने की बात नहीं कही—सफर गुलाम ने कहा—सिर्फ यही चाहता हूँ कि यदि मेरी सोची तदबीर सभा स्वीकार करे तो मैं उसे कार्य-रूप में परिणत करूँ। मेरी तदबीर यह है कि यहाँ से एक पत्थर नीचे की ओर नदी को बहुत आसानी से पार किया जा सकता है। मैं अपने आदमियों के साथ वहाँ से नदी पार हो जाऊँ। वहाँ उस पार शीरनों का गाँव है। वहाँ के चप्पे-चप्पे को मैं जानता हूँ; क्योंकि वहाँ मेरा बहुत आना-जाना रहा है, वह बहुत विचित्र आदमी है। उनके बारे में बहुत-सी कहावतें प्रसिद्ध हैं···।

अच्छा—सभापति ने बीच में टोकते हुए कहा—उन कहानियों को छुट्टी के समय फिर कहना, इस समय अपनी सोची तदबीर को जल्दी कहो।

—स्वीकार—कहते सफर ने बात जारी की—मेरी सोची तदबीर यह है कि मैं अपने आदमियों के साथ नदी पार हो शीरनों के गाँव से गुजरकर बासमच्चियों

पर पीछे से आक्रमण करूँ। हम वहाँ पीछे से घेरें और तुम लोग आगे से। अँधेरी रात में दो तरफ से अग्नि-वर्षा होने पर बासमचियों के लिये भागकर तितर-बितर होने के सिवा दूसरा रास्ता नहीं रह जायेगा।

—यदि वह तितर-बितर होकर भाग निकले और मारे नहीं गये तो फिर जमा होकर लड़ेंगे; इसलिये ऐसी तदबीर करनी चाहिये कि वह बिलकुल ही नष्ट हो जायें—कहते एक स्वयंसेवक ने सफर गुलाम की तदबीर पर बहस शुरू की।

—मैंने अभी अपनी बात पूरी नहीं की—सफर ने कहा—जब वह तितर-बितर होकर भागेंगे, उस समय हम अपना सारा सैनिक-सामान नदी पार कर लेंगे। जब हम नदी पार हो जायेंगे तो बाबकन्द, पीरमस्त, शाफिर काम और गिज्दुवान के कमकर-किसान हमारे साथ हो हमारी शक्ति को दसगुना बना देंगे।

—तुम्हारे पास कितने आदमी हैं?—सभापति ने पूछा।

—२० आदमी—सफर ने जवाब दिया।

—यह तदबीर बुरी नहीं है—एक कमांडर ने कहा, जो कि अब तक चुपचाप सफर की बात को ध्यान से सुन रहा था—इस तदबीर को थोड़े संशोधन के साथ स्वीकार करना चाहिये।

—कैसा संशोधन?—सभापति ने पूछा—यह साथी बासमचियों के पीछे पहुँचते ही आक्रमण न करें, बल्कि इससे थोड़ी देर पहिले एक जगह खड़े हो सूचित करते बन्दूक दागें। हमारे इस सूचना से इन साथियों के बासमचियों के पीछे पहुँच जाने की खबर पाकर हम खुद पानी में उतर जायेंगे। पहली सूचना के १५ मिनट बाद एक बार और सिगनल देकर फिर आक्रमण आरंभ कर दें। दूसरा सिगनल तब हो, जब हम नदी पार हो बासमचियों के सामने पहुँच गये रहेंगे। ऐसी स्थिति में बासमची उससे भी अधिक किंकर्तव्यविमूढ़ हो जायेंगे, जितना कि हम ख्याल कर रहे हैं।

सभा ने इस तदबीर को एक स्वर से स्वीकार किया और उसे कार्य-रूप में परिणत करने के लिये लोग लग गये।

× × ×

सफर गुलाम अपने २० आदमियों के साथ नदी पार हो शीरिनिया गाँव के नजदीक पहुँचा। उस समय गाँव की ओर से रोने-काँदने की आवाज आ रही थी। दो सौ से अधिक घरों के इस गाँव के स्त्री-पुरुष, बूढ़े-जवान, छोटे-बड़े सभी

घरों की छतों पर जा चिल्ला रहे थे। सफर गुलाम ने खेतों की ओर से होते एक हवेली के पास पहुँचकर आदमियों से पूछा "क्या बात है, क्यों चिल्ला रहे हो!" एक आदमी ने धीरे-धीरे छत के किनारे आकर हवेली के पीछे हथियारबंद आदमियों को खड़े देखा। वह चिल्लाते हुए छत के बीच की ओर भागा—

बासमची, इधर से भी बासमची आये!"

—"बासमची, घर जले बासमची, हमारे घरों को जलाया बासमची ने" की आवाज एक छत से दूसरी छत पर दुहरायी जाती सारे गाँव में फैल गयी।

—ओय् बिरादरो —सफर गुलाम ने कहा "हम बासमची नहीं हैं, हम हकूमतों के आदमी हैं और बासमचियों को भगा रहे हैं। बासमची कहा हैं, हमें बतलाओ, हम उन्हें सजा देंगे।"

—तू यदि हकूमतों का आदमी है, तो जा पकड़; बासमची वहाँ गाँव की उस तरफ हैं—कहते एक आदमी ने दक्षिण की ओर इशारा किया।

—तुममें से एक आदमी छत से नीचे आये और साथ चलकर उस घर का पता दे, जिसमें बासमची हैं।

—हम छत से नहीं उतरेंगे, यदि हम मरेंगे भी तो छत के ऊपर ही, अपने माल के सामने मरेंगे। तू यदि हकूमतों का आदमी है, तो खुद जाकर बासमचियों को पकड़—कहते फिर हल्ला मचा।

सफर गुलाम अपने आदमियों के साथ गाँव के उस छोर पर पहुँचा। टेढ़े मेढ़े तंग कूचों के दोनों किनारे छोटे-छोटे मिट्टी की दीवारोंवाले मुर्गीखाने-जैसे घरों में चिल्लाहट मची हुई थी। जब दल गाँव के दक्षिणी छोर के नजदीक पहुँचा, तो कूचे के सिरे पर कुछ घोड़े पाँती से खड़े दिखाई पड़े और बंदूक की एक आवाज भी सुनाई पड़ी।

"यह वही है" धीमे स्वर में कह सफर गुलाम घोड़े से उतर पड़ा और साथियों को भी वैसा करने के लिये कहा। घोड़ों को पिछले कूचे में ले जा, खंभों और दरवाजों के कुण्डों से बाँधकर दो आदमियों को उनपर तैनात किया। बाकी १८ आदमी कूचे की दोनों बगल में जमीन पर पड़ पेट के बल बासमचियों के घोड़ों की ओर सरकने लगे। नजदीक जाने पर घोड़ों पर दो बासमची नियुक्त दिखाई पड़े। सफर ने अपने पीछेवाले जवान से कहा—कूचे के उस ओर के

बासमची को तू गोली मार और इधरवाले को मैं, बाकी कोई अपनी बंदूक न दागे, नहीं तो हमारे साथी भ्रम में पड़ जायेंगे।

बन्दूक की दो आवाजें हुई और दो शरीर लुढ़ककर जमीन पर गिर पड़े। सफर के इशारे पर जवान उठ खड़े हुए। सफर ने "सामने की ओर" कहकर दूसरा हुक्म दिया और जवानों ने घोड़ों और लाशों के बीच से गुजरते पास के खुले दरवाजेवाले मकान को घेर लिया। इसी समय मकान के भीतर से तीन आदमी निकले, द्वार की दोनों ओर से तीन गोलियाँ एक साथ छूटीं—दो आदमी वहीं गिर पड़े और तीसरा मकान के अन्दर भाग गया। आधे दल ने मकान को चारों ओर से घेर लिया और बाकी एक की पीठ पर एक चढ़कर छत पर पहुँच गये। मुर्गीखाने से होकर छत पर आने की कोशिश करते दो बासमची और गोली के निशान बने। चार मुर्गीखाने से कूदकर कूचे की ओर दौड़े और उन्होंने गोली छोड़ते निकल जाना चाहा। उनमें से दो गुलामगर्द[1] पर पहुँचते-पहुँचते गोलियों के शिकार हुए। बाकी हवेली के अन्दर भगे जहाँ छत से छूटी गोलियों ने उन्हें चित कर दिया।

हवेली में नीरवता छा गयी; लेकिन पड़ोस के मकान से निकलनेवाला हाहाकार गोलियों की आवाज से भी ज्यादा जोर का हो रहा था। सफर गुलाम अपने साथियों के साथ छत से नीचे उतरा। उसने जमीन पर लेटे शरीर को देखा, जिनमें दो अब भी जिन्दा थे।

—इनका भी काम तमाम कर दें—एक जवान ने सफर से कहा।

—नहीं, मालूम नहीं है हमको हुक्म दिया गया है कि घायलों और बंदियों को न मारें—सफर ने कहा—जैसे हैं वैसे रहने दो। यदि न मरे तो कल सारा काम करके इन्हें डाक्टर के पास भेज देंगे।

सफर गुलाम बाहर चबूतरे पर गया। वहाँ बोगचे, गद्दे और तकिये पड़े थे जिनके बीच एक आदमी की लाश थी और उससे कुछ दूर पर एक कमर टूटी भेड़ दम तोड़ रही थी।

—यह आदमी बासमचियों-जैसा नहीं मालूम होता—सफर ने कहा—यह गरीब गाढ़े का जामा पहने है, निःसन्देह यह गरीब किसान है।

—यह आदमी मेरा पति है—एक डरती-काँपती आवाज भीतर से आयी।

---

१. गुलामी के जमाने में मकान के जिस स्थान तक गुलाम जा सकते थे।

डर मत मौसी, हम बासमची नहीं हैं, हम हकूमतों के आदमी हैं। तुम्हारे घर को घेरनेवाले बासमचियों को हमने मार डाला और उनसे तेरा माल-असबाब छुड़ा लिया—कहते सफर ने स्त्री से पूछा—तुम्हारे ऊपर इन्होंने क्या जुल्म किया और क्यों तुम्हारे पति को मारा?

—तेरी मौसी तेरी शपथ खाती है—स्त्री ने कहा—हमने सुना कि बासमचियों ने वाबकन्द को दखल कर लिया और जमीन में गाड़े माल को भी ढूँढ़कर ले लिया। हमारे लोग डर गये कि यदि बासमची गाँव में आये तो सब माल लूट ले जायेंगे। जमीन में गड़े माल को भी खोदकर निकाल लेंगे। कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। हमने इसके बारे में अपने मुहम्मद दाना (लाल बुझक्कड़) से सलाह ली। उसने सलाह दी—"यदि बासमची आता दिखाई पड़े, तो अपने माल को छत पर ले जाकर छिपा दो।"

जवान मुहम्मद दाना की ऐसी सलाह की बात सुनकर हँस पड़े। स्त्री जरा-सा रुककर हँसी का कारण पूछे बिना फिर कहने लगी—बासमचियों के आने की जैसे ही हमें खबर मिली, हमने अपने माल-असबाब को छत पर पहुँचाया। जब बासमचियों के गाँव में आने की खबर मिली, तो मैं और मेरा पति भी छत पर चढ़ गये। पहिले पड़ने से बासमची सीधे हमारे घर में घुस आये। घर में देखा, कोई चीज नहीं है। मेरा पति छत से चिल्ला उठा "बासमची आया" पश्चात् बासमची ने उससे कहा "अपनी चीजों को नीचे उतार।"

मेरा पति वीर पुरुष था। बासमचियों की घुड़की से नहीं डरा। उसने कहा "मैं अपने हाथ से अपनी चीजें नीचे नहीं उतारूँगा, यदि शक्ति है, तो स्वयं आकर उतार ले जाओ।" "ऐसा ही सही, तो अपने ही को छत से गिरा" कहते एक बासमची ने गोली मार दी। मेरा पति छत से नीचे गिर गया। इसके बाद बासमची ने मुझे सारी चीजें नीचे गिराने के लिये कहा। डर के मारे मैंने सारी चीजें नीचे फेंक दीं। इसके बाद मैं यह सोचकर नीचे चली आयी कि यदि पति मर गया है, तो उसकी लाश को सँभालूँ। यदि जीवित है, तो जर्राह को बुलाऊँ। इसी वक्त कूचे से बंदूक की आवाज आयी और मैं डरकर घर में चली आयी। इसके बाद की बात मैं नहीं जानती।

—भेड़ की कमर को किसने तोड़ा—सफर ने पूछा।

—ए बाय, अब मैं क्या करूँ, घर जले, भेड़ की कमर को किसने तोड़

दिया—कहती मेहरिया रोने लगी। फिर जरा चुप होकर कहने लगी—जब हम अपनी चीजें छत पर ला रहे थे, तो अपने अकेले माल (ढोर) इस भेड़ को भी कमर में रस्सी बाँधकर बड़ी मुश्किल से छत पर ले गये। जिस समय मेरा पति गोली खाकर नीचे गिरा, उसी समय भेड़ भी डरकर नीचे कूदी थी। जान पड़ता है, उसी समय इसकी कमर टूटी।

जवानों को हँसी रोकना मुश्किल था। स्त्री ने रोते-धोते कथा समाप्त करते कहा—मुझे यह भेड़ चखी, डलिया के साथ मिली थी। मैंने कभी न सोचा था कि मेरा ऐसा हलाल माल इस तरह हराम होकर मरेगा।

—खैर! अफसोस न कर मौसी—सफर ने तसल्ली देते कहा—मैं हकूमतों से सहायता करने के लिये कहूँगा। अब गाँव के लोगों को कह कि तेरे मुर्दे को ले जायँ।

एय्, क्या मेरा पति मर गया! हाय मेरे राजा—कहते रोने लगी!

× × ×

सफर गुलाम अपने साथियों से विजय में मिली बन्दूकों को उठवाये कूचे में आया। वहाँ बासमचियों के आने पर निगाह रखने के लिये आदमी रख फिर लौटकर गाँव में गया। गाँव में अब भी "बासमची के हाथ से बचाओ" की चिल्लाहट से आकाश फट रहा था। सफर ने अनेक घरों के सामने जाकर "हमने बासमचियों को मार डाला, अब गाँव में बासमची नहीं हैं। छत से नीचे आओ" कहते बहुत आवाज लगायी; किन्तु किसी ने कान न दिया। उसे एकाएक एक आदमी याद आ गया और उसने एक छोटी गली में जा एक मकान की छत की ओर निगाह करके आवाज दी—"नासिर शीरनी, ओ नासिर शीरनी!"

—हाँ, क्या कहता है—कहते किसी ने छत से जवाब दिया और फिर "बासमची के हाथ से बचाओ" कहते चिल्लाना शुरू किया।

—अरे आ, क्यों इतना डर रहा है—सफर गुलाम ने कहा।

—मैं ऐसा भोला नहीं हूँ कि छत के किनारे आकर तेरी गोली का निशाना बनूँ। जो कहना है, वहीं से कहता चल, मैं यहीं से सुनूँगा। बासमची के हाथ से बचाओ!

—क्या मुझे नहीं पहिचानता?—सफर ने पूछा

—ने, तू कौन है? बासमची के हाथ से बचाओ!

—मैं वही सफर गुलाम हूँ, जिसने तुझे डूबने से बचाया था।

—रब्बि, मैं मरा! क्या तू भी बासमची हो गया!! बासमची के हाथ से बचाओ!!!

—खुदा जानता है, मैं बासमची नहीं हूँ। हकूमतों की ओर से आया हूँ। हमने तुम्हारे गाँव में आये बासमचियों को मार डाला।

—ए, तेरा मुँह चूमूँ—नासिर ने कहा और आवाज दी—ओय मर्दों! पीछे न कहना कि मैंने नहीं सुना। देखो, मेरी चतुराई से बासमची बिलकुल भाग गये।

—ने, भगे नहीं, मर गये—कहते सफर ने आवाज दी।

ओय मर्दों! बासमची के हाथ से बचाओ! बासमची सारे मर गये, कब्र को चले गये—कहते नासिर ने आवाज दी—अब छत से नीचे उतरो। यदि मैं नहीं होता तो तुम सब मारे गये होते और तुम्हारा माल भी हाथ से चला गया होता! बासमची के हाथ से बचाओ!

१० मिनट बाद छत पर कोई न रह गया और सब उतरकर कूचे में आ गये। नासिर शीरनी ने छत से उतरकर अपने पुराने दोस्त से सलाम-दुआ करते कहा, लेकिन जोरा (जोड़ीदार)! अभी घर में रोटी नहीं है। बासमची उठा ले जायेगा, यही सोचकर कई रोज से रोटी नहीं पकायी।

—मुझे रोटी नहीं चाहिये—सफर ने कहा। मुझे आदमियों की आवश्यकता है। हमने तुम्हारे गाँव में आये बासमचियों को मार डाला। उनकी दस बंदूकें और दस घोड़े हमारे हाथ में हैं। लेकिन अभी बासमची खतम नहीं हुए हैं। उनका एक भारी दल मेहतर कासिम पुल के पास पड़ा है, वह फिर तुम्हारे गाँव पर चढ़ाई कर सकता है।

अंतिम बात सुनने पर नासिर ने फिर गोहार की "बासमची के हाथ से बचाओ", "बासमची के हाथ से बचाओ!" गाँव के दूसरे लोग भी "बासमची के हाथ से बचाओ", "बासमची के हाथ से बचाओ" कहते चिल्लाने लगे। सफर गुलाम ने ऊँचे स्वर में कहा—ओय् नासिर! व्यर्थ गोहार न कर, मेरी बात पर कान धर।

—क्या कहता है—कहते नासिर ने आदमियों को चुप रहने के लिये इशारा किया।

—यदि तुम इस प्रकार व्यर्थ गोहार करते रहे, तो बासमची जरूर फिर आ

जायेंगे। लेकिन यदि हमारे साथ मिलकर युद्ध करोगे तो हम सारे बासमचियों को खतम कर डालेंगे।

—हम बेचारे आदमी हैं। हम कैसे युद्ध करेंगे?—नासिर ने कहा।

—जब बाय बासमची बनकर आये हों, तो उनके साथ जंग करने में बेचारों को दोष नहीं—सफर ने कहा—मैं नहीं कहता कि तुम सब चलकर लड़ो, मुझे सिर्फ दस बलवान जवानों को दे दो और बस। मैं उन दसों को बासमचियों से छीने दस घोड़ों, दस बन्दूकों को देकर साथ ले जाऊँगा। इस ओर पीछे से हम बासमचियों पर आक्रमण करेंगे और दूसरी ओर से हमारी सेना उन्हें घेर लेगी। इस तरह हम बासमचियों को बिलकुल खतम कर देंगे और तुम उनके पंजे से छूट जाओगे और सारा देश।

नासिर शीरनी सोच में पड़ा चुप था। सफर गुलाम ने कहा—इस तरह से बैठकर सोचते समय बिताना ठीक नहीं, यदि बात तुम्हें समझ में नहीं आती, तो जाकर अपने मुहम्मद दाना की सलाह ले लो। वह अवश्य दस जवानों को देने की सलाह देगा।

—खुद मैं ही मुहम्मद दाना हो गया हूँ—नासिर शीरनी ने कहा।

—ऐसा! बहुत अच्छा—सफर गुलाम ने प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा—जल्दी कर, दस मजबूत जवानों को अलग कर दे।

नासिर शीरनी ने दस जवानों का नाम पुकारकर उन्हें अलग किया, लेकिन वे नहीं जाने के लिये चिल्लाने लगे। उनमें से एक ने नासिर से कहा "तू मुहम्मद दाना है, अपने पहिले आ, तेरे पीछे हम भी चलेंगे।"

—ठीक है—सफर ने कहा—ऐसा होने पर नौ आदमियों की आवश्यकता है, दसवाँ खुद मुहम्मद दाना होगा।

ने, नहीं होगा—नासिर शीरनी ने कहा।

—क्यों नहीं होगा?—सफर ने पूछा।

—यदि मैं बासमचियों के हाथ मारा गया, तो लोग बिना मुहम्मद दाना के हो जायेंगे।

—नहीं, तू मारा नहीं जायेगा—सफर ने कहा—जिसने तुझे डूबने से बचाया, जिसने तुझे बासमचियों के चंगुल से छुड़ाया, वह सफर गुलाम तुझे मारे जाने नहीं देगा।

मुहम्मद दाना द्विविधा में हो कुछ सोचकर बोला—अच्छा, चलो चलें।

दल के जवानों ने ताली बजाकर प्रसन्नता प्रगट की

सफर गुलाम ने अपने-अपने दल के जवानों को सवार होने के लिये हुक्म दे नये स्वयंसेवकों की ओर निगाह करके कहा—तुम भी सवार हो जाओ।

दल के आदमी घोड़े पर सवार हो गये, लेकिन शीरनी जवान मुहम्मद दाना के पास खड़े हो "तू जा मैं रहूँगा" कहते आपस में झगड़ने लगे। इसी समय सफर गुलाम की दृष्टि अपने आदमियों में से एक की ऊपर पड़ी, जो दीवार के नीचे बैठा था। उसने पूछा—तू क्यों नहीं सवार हो रहा है?

—मेरे हाथ में गोली लगी है। बहुत खून निकला है, शक्ति नहीं है—जवान ने क्षीण स्वर में कहा।

सफर गुलाम उसी वक्त घोड़े से उतरकर उसके पास गया। आस्तीन से उसके हाथ को निकालकर देखते ही बोला—"कोई हर्ज नहीं" और तत्काल जवान के पायजामे के जेब से रूई और लत्ता निकालकर घाव को बाँधते हुए कहा—इस लत्ता और रूई से तुरन्त घाव को बाँध देना चाहिये था, इन्हें तुम्हें जेब में डालकर रखने के लिये नहीं दिया गया है।

सफर गुलाम ने फिर नासिर की ओर मुँह करके कहा—मुहम्मद दाना! इस जवान को बगल से पकड़कर ले जा, अपने घर में सुला दे। यह खाना खाकर आया है, इस वक्त कुछ नहीं खायेगा। कल डाक्टर इसे ले जायेगा।

नासिर घायल जवान को अपने घर ले गया। शीरनी जवान अब भी आपस में झगड़ रहे थे। नासिर के लौटने पर सफर ने उससे कहा—हुक्म दे कि ये सभी दस जवान जीते घोड़ों पर सवार हो, बन्दूकों को हाथ में ले लें और तू स्वयं घायल जवान के घोड़े पर चढ़कर उसकी बंदूक को सँभाल।

मुहम्मद दाना और सभी जवान घोड़ों पर चढ़ गये। सफर ने लोगों की ओर निगाह करके कहा—हम जा रहे हैं, तुम बासमच्चियों की लाश को एक गड्ढे में दफना दो। दोनों घायल बासमची यदि मर न जायें, तो उन्हें डाक्टर को सौंप देना। इस स्त्री के मुर्दे को भी कब्र देने में सहायता करना।

—क्या वह मारा गया!—कहते सभी ने गोहार की और एक ही बार सैकड़ों मुँह से निकला—"बासमच्चियों की मौत!"

सफर गुलाम का दल गाँव से चला गया।

६

बासमचियों पर विजय

—उन्हें गये बहुत देर हो गयी, उनपर कोई आफत तो नहीं आयी?—जौवाद ने कमांडर से कहा।

—जैसे, कैसी आफत?—कमांडर ने कहा—बासमचियों का पड़ाव पहले ही की तरह चुप है।

—जैसे, नदी पार करते समय बासमचियों के आदमियों से कहीं सफर गुलाम के दल की मुठभेड़ न हो गयी हो। दूर जो बंदूक की आवाज सुनाई दी है, वह भी इसी बात को सिद्ध करती है।—कमांडर ने जौवाद की बात का जवाब न दिया। उसे भी संदेह होने लगा था, किन्तु इसके बारे में कुछ और कहकर वह सेना को द्विविधा में नहीं डालना चाहता था। जौवाद थोड़ी देर चुप रहकर फिर बोला।

—मैलश्, आक्रमण शुरू करना चाहिये, यदि हमने और देर की, तो उजाला हो जायगा, फिर सारा काम बर्बाद हो जायेगा।

—युद्ध-समिति के निर्णय के विरुद्ध!—कमांडर ने आश्चर्य के साथ कहा।

—आवश्यकता हो तो एक और छोटी सभा बुला लें। कमांडर फिर चुप रहा। संसार काला, अंधेरा और नीरवता। पोशाक खींचे, बंदूक हाथ में लिये, अखाड़िये की तरह सेना नदी किनारे पड़ी थी। किसी को अपनी ओर ध्यान न था। सभी का कान किसी दूसरी जगह लगा था। इसी समय बासमची-कैम्प के पीछे से बंदूकों की आवाज आयी। नदी किनारे चुपचाप लेटी सेना में गति आयी, किन्तु कमांडर अब भी गतिहीन और चुप था।

—अब किस बात की प्रतीक्षा है—जौवाद ने कहा।

कमांडर ने कहा—छोड़ी जानेवाली बंदूकों की संख्या कम है। पूर्व-निश्चय के अनुसार एक साथ २० बंदूकों को छोड़ना चाहिये था।

—शायद पहली भिड़न्त में हमारी कुछ बंदूकें हाथ से जाती रहीं और बाकी बचे जवान इस तरह अपने कर्तव्य को पूरा कर रहे हैं।

कमांडर को यह बात पसंद आयी। उसने धीमी आवाज में कमान दी, जो एक

मुँह से दूसरे मुँह में होते एक क्षण में सारी सेना में फैल गयी। सेना ने अपने को नदी के भीतर डाल दिया।

× × ×

नईम पहलवान कूरबाशियों के खेमों में से एक में सो रहा था। बंदूक की आवाज सुनकर उसने अपने भांजे अमान को "उठ, उठ, जल्दी उठ" कहते जगाया।

—हाँ, क्या कहते हो तगाई?—कहते अमान जरा-सा सिर उठाकर फिर सिर को बंदूक पर रखकर सो गया और स्वप्न में उसके मुँह से निकल रहा था—"कमसोमोलों (जवान कम्युनिस्टों) को तलवार से टुकड़े-टुकड़े किया। काफिरों की मदद करनेवाले बुड्ढे के सिर को काटकर उसी के खून से उसकी दाढ़ी को रंगा। कमसोमोल की माँ ने पेट में गर्भ की बात कहकर रोना-धोना शुरू किया; लेकिन मैंने "क्या तू फिर एक कमसोमोल बच्चा पैदा करना चाहती है" कहते उसके पेट को संगीन से फाड़कर मार डाला। उसके घर को लूट लिया। कमसोमोल की वर्दी मेरे शरीर में ठीक बैठी।

"अमान चुप हो अब खर्राटे ले रहा था।"

—बहुत अच्छा किया—हँसकर नईम पहलवान ने उसे हाथ से हिलाते कहा और मोहीउद्दीन[1] खोजा का क्या किया?

—उसे पेड़ में बाँधकर गाँव के सारे लोगों के सामने रोजी यावाजिनी ने गोली मार दी। उसके बीबी-बच्चों को एक कोठरी में बंद करके हम जला देना चाहते थे, लेकिन सफेद दाढ़ीवाले खोजों (सैयदों) ने आकर रोना-पीटना शुरू किया और खुद उस कोठरी में घुसकर कहने लगे "तो हमें भी इनके साथ जला दो।" लाचार होकर बीबी-बच्चों को खोजों के हाथ में छोड़ देना पड़ा। सच पूछिये तो बात यह थी कि झंडा उठाये (समाधि-मंदिरों में) लेटे इन खोजों के बाप-दादों से मैं डर गया, मेरा हाथ काँपने लगा; लेकिन उसके घर में एक तिनका भी न छोड़ा, सिर्फ एक पुरानी पाग कफन के लिये रहने दी और वह भी खोजों के गिड़गिड़ाने पर। अमान फिर चुप हो गया और खर्राटे भरने लगा। लेकिन

---

[1] लेखक अयनी का बड़ा भाई।

अबकी बार नईम पहलवान ने उसे बहुत जोर से हिलाकर अच्छी तरह जगा दिया। वह उठ बैठा और आँखें मलते हुए बोला—क्या कहते हो तगाई ?

—तुझे सुलाकर बात पूछनी चाहिये—नईम पहलवान ने हँसते हुए कहा—हम बोलशेविकों के आफिस को खबर दे देते हैं, यदि तू उनके हाथ में पड़े तो तुझे सुलाकर पूछें। तू एक-एक बात को यहाँ तक कि हाथ के काँपने को भी बक देगा।

— क्या हुआ तगाई ?—चकित हो अमान ने कहा।

—इस समय ऐसी बातों के लिये छुट्टी नहीं है। उठ, बंदूक लेकर बाहर जा, बंदूकों की आवाज आ रही है। शायद शीरिनियाँ (गाँव) को दंड देने के लिये भेजे गये आदमी आ रहे हैं। खबरदार, सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि उनकी लायी सारी बहुमूल्य वस्तुओं को उरमान पहलवान अपने तम्बू में उठा ले जाये। अगर सुन्दर स्त्री, लड़की या निमूछा लड़का लाये हो, तो इधर भिजवा और कह दे कि तगाई नईम अभी पहुँचे हैं, उनको इन चीजों की जरूरत है। मुल्ला (कहार) का हुक्म ऐसा ही है।

अमान तम्बू से निकलकर बाहर गया। इसी समय फिर बंदूकों की आवाज सुनाई दी। यह आवाज बासमचियों के कैम्प के पास से आ रही थी।

—अमान !—कहते फिर आवाज दे नईम कपड़े पहिनने लगा।

—हाँ, क्या कहते हो ?—लौटकर अमान ने पूछा—यह बंदूक की आवाज हमारे आदमियों की नहीं है, बंदूकें ज्यादा हैं और पीछे से भी कुछ अलग-अलग छुटी हैं। मालूम पड़ता है, हमें पीछे की ओर से घेर लिया गया है। जल्दी जा कूरबाशियों को जगा।

लेकिन अमान को कष्ट करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कूरबाशी स्वयं कपड़ा पहिनकर बाहर आ गये थे। मुल्ला असमय की अजान (नमाज की सूचना) देने लगे। जवान अपनी बंदूकों को ले घोड़ों पर सवार हो उन्हें दौड़ाते उत्तर की ओर चले। उत्तर की ओर से लगातार आती बंदूकों की आवाज बतला रही थी कि भारी मुकाबला उधर हो रहा है। मुल्ला कहार ने तम्बू से निकलकर जवानों को उत्तर की ओर दौड़ते देख पुकारकर कहा "इस ओर, इस ओर से घेर रहा है" और नदी की ओर इशारा किया।

नदी की तरफ से आवाज और भी अधिक आने लगी, जिसमें कभी बंदूक की

तड़तड़ाहट, तलवार और संगीनों की खटखटाहट और गिरते आदमियों की धम-धमाहट सुनाई पड़ती थी।

यह आक्रमण दक्षिण और पश्चिम की ओर से बासमचियों के कैम्प को अर्ध-वृत्त में घेरते हुए हो रहा था और कूरबाशियों के तम्बू के समीप बढ़ रहा था। उत्तर की ओर से बंदूक की आवाज और तेज होने लगी। वह कभी समीप और कभी दूर होती थी।

"एक ओर से नहीं, बल्कि चारों ओर से हमें घेर लिया है" कहते मतान पहलवान, मानो अपने बड़े भाई मुल्ला (कहार) की "इस ओर से भी, उस ओर से भी घेर लिया" की चिल्लाहट का जवाब दे रहा था।

बासमची बेतहाशा इधर-उधर घोड़े दौड़ा रहे थे और बिजली की तरह चमक-कर बुझ जानेवाले स्फुलिगों की भाँति दिखलाई देते घोड़ों से लुढ़ककर जमीन पर गिर रहे थे और कितने ही घोड़े की गोली खाकर मालिक के शरीर पर गिर रहे थे।

"त—त—त—त, तता—तता—तता—ऊतत्" की आवाज अब पुल की ओर से शुरू हुई, जिसने उधर के नीरव बासमची-कैम्प में खलबली मचा दी। अब मशीनगनें अपना काम करने लगी थीं। कैम्प के पूरब में बुखारा-वाबकन्द सड़कवाले पुल की जो बासमची रक्षा कर रहे थे, उन्होंने आवाज दी "जो भी भाग-कर अपनी जान बचाने की कोशिश नहीं करता, वह नामर्द है।"

इस आवाज को सुनकर इधर-उधर भागते बासमचियों ने पश्चिमोत्तर की ओर मुँह करके घोड़ों को दौड़ाया। बासमचियों के कैम्प में हल्ला मच गया, लेकिन इस हल्ले में "पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो, काटो-काटो" नहीं बोल रहे थे, बल्कि चिल्ला रहे थे "भागो-भागो, भागो-भागो, भागो-भागो, भागो-भागो !"

बासमची भागे।

दिन हुआ, सूर्य निकल आया। बासमचियों के कैम्प में रुधिराप्लुत लाशों, हाय-हाय करते घायलों, चारों ओर फेंके हथियारों और जहाँ-तहाँ उलटे तम्बुओं के अतिरिक्त कोई चीज नहीं दिखलाई पड़ती थी। खून से सनी तलवारों के ऊपर सूर्य की किरणें लाल-हरे-पीले-नीले रंगों को प्रतिबिम्बित कर रही थीं। मैदान में नीरवता छायी हुई थी, जिसमें कभी-कभी उठते-बैठते मुर्दों की आँखें खाने में संलग्न कौओं की काँय-काँय सुनाई देती थी।

क्रान्तिकारी सेना बासमचियों का पीछा कर रही थी। केवल दो-तीन कमांडर कुछ जवानों के साथ बासमचियों की छोड़ी चीजों को जमा करके वाबकन्द भेजने में लगे थे।

—क्यों हमारे दल को अलग करके यहाँ रोक दिया गया?—अब भी अपने घोड़े पर सवार सफर गुलाम ने सामने से जाते कमांडर से पूछा।

—तुझे सैनिक न्यायालय में उपस्थित करने के लिये रोककर रखा गया है—कमांडर ने उत्तर दिया।

—लेकिन मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब तक बासमचियों का पूरा उच्छेद न कर लूँ, घोड़े से न उतरूँगा। यदि मैंने कोई अपराध किया है, उसे युद्ध के अन्त के लिये रख छोड़ना चाहिये।

—अब भी तो तू घोड़े के ऊपर बैठा है?—मुस्कुराते हुए कमांडर ने कहा।

—मुझे सरकस और कूचकारीवालों की तरह घोड़े पर चलने की आवश्यकता नहीं, मुझे इस तरह घोड़े पर सवार होना है कि बासमचियों का पीछा कर सकूँ।

—खैर, कोई हर्ज नहीं—कमांडर ने कहा—तेरा फैसला जल्द हो रहा है। तेरे मामले को देखने के लिए विशेष तौर से पार्टी-सुहृदों के सरदार साथी जौवाद को नियुक्त किया गया है। वह जल्दी ही आकर काम शुरू करेंगे।

कमांडर अपने काम पर चला गया। बहुत देर नहीं हुई, जौवाद भी आ गया। उसके हाथ में रजिस्टर और कलम-दावात थी। उसने सफर को निगाह करके कहा—साथी! घोड़े से उतर आओ, तुमसे कुछ बातें पूछनी हैं।

—मैंने प्रतिज्ञा की है कि तब तक घोड़े से नहीं उतरूँगा, जब तक कि बासमचियों का पूरी तौर से उच्छेद न कर लूँगा। इस वक्त मुझे छुट्टी दो कि मैं बासमचियों के पीछे दौड़ूँ। जो कुछ पूछना है, पीछे पूछ लेना।

—नहीं, यह नहीं हो सकता—जौवाद ने दृढ़ता से कहा—यह युद्ध-समिति की आज्ञा है जिसे बिना ननु-नच के कार्यरूप में परिणत करना है।

—अच्छा, मैलश्—कमांडर ने काम से लौटकर कहा—वह घोड़े पर बैठा रहे, तुम पूछते जाओ।

—अच्छा—जौवाद ने पूछना शुरू किया—इस समय समय नहीं कि तुमसे सारी बातें पूँछूँ, इस समय अधिक काम की बातें पूछता हूँ, दूसरी बातें पीछे के लिये छोड़ता हूँ।

—खैर, जो कुछ पूछना है, जल्दी पूछो—सफर गुलाम ने कहा—जिसमें मैं बासमचियों का पीछा करने में दूर न रह जाऊँ।

—तुमने क्यों आज रात को देर की?—जौवाद ने सवाल किया।

—जवाब में सफर गुलाम ने शीरनियाँ गाँव की घटना को बतलाया और और उस गाँव से लिये स्वयंसेवकों को साक्षी के रूप में उपस्थित किया। उन्होंने सफर गुलाम की बात का समर्थन किया।

—क्यों नहीं तुम शीरनी की एक छोटी-सी घटना को छोड़कर निश्चित समय पर बासमची-कैम्प के पीछे गये?

अगर हम शीरनियाँ गाँव को घेरनेवाले बासमचियों को उसी तरह छोड़कर आगे चले जाते, तो हो सकता था कि वे अपना काम खतम कर हमारे पीछे आते और हमारे काम में बाधा डालते। ऐसी अवस्था में क्रान्ति सेना के काम को बहुत हानि पहुँचती।

जौवाद ने सफर गुलाम के उत्तर को लिखकर फिर पूछा—क्यों तुम युद्ध-समिति के आज्ञानुसार पहिली बार बीस बंदूकों को एक बार न छोड़ उनमें से कुछ को छोड़ा जिससे सेना दुविधा में पड़ गयी?

—जिस समय शीरनियाँ गाँव में दस बासमचियों को मारकर हम बासमची-कैम्प के पीछे पहुँचे, तो मुझे विचार आया कि पहिली बार दस बंदूकें खाली की जायें, जिसमें बासमची इसे अपने आदमियों की बंदूकों की आवाज समझें और अपनी जगह से न हिलें और सचमुच ही इस तदबीर का परिणाम बहुत अच्छा निकला। बासमची हमारी पहिली आवाज में सिर को बिना हिलाये सोते रहे।

—दूसरी बार क्यों तुमने बीस से अधिक बंदूकें छुड़वायीं?

—दूसरी बार मैंने अपनी बंदूकों के अतिरिक्त शीरनी जवानों की बंदूकों को भी खाली करवाया, जिसमें अधिक बंदूकों की आवाज सुनकर बासमची और अधिक घबड़ा उठे और एक साथ ही हमारी ओर दौड़ पड़े, जिसमें क्रान्ति सेना को नदी पार कर आक्रमण करने का अच्छा अवसर मिले।

—अच्छा, तुमने क्यों दूसरी बार सारी बंदूकों को एक साथ न छुड़वा कुछ को आगे, कुछ को पीछे छुड़वाया?

—शीरनी जवान अभी बंदूक दागना अच्छी तरह नहीं सीखे हैं, इसलिये उनका हाथ काँप गया और उन्होंने दूसरे साथियों से पीछे बंदूकें दागीं।

जौवाद ने सारे जवाबों को लिखकर सफर गुलाम की ओर निगाह करके कहा—तुमने युद्ध-समिति के निर्णय के विरुद्ध पहिली बार २० की जगह १० बंदूकें छुड़वा सेना को दुविधा में डाला। इसलिये तुम अपराधी हुए। यद्यपि तुम्हारे इस अपराध का परिणाम अंत में अच्छा निकला, तोभी यह अपराध ऐसा था कि परिणाम उलटा भी हो सकता था। इसके लिये तुम्हें सैनिक-न्यायालय में दिया जाता है।

—अच्छा सफर गुलाम ने कहा—मैं अपने अपराध को स्वीकार करता हूँ और सैनिक अदालत में देना क्या, मैं तोप से उड़ाये जाने के लिये भी राजी हूँ; किन्तु इस समय आज्ञा दो कि मैं युद्ध में सम्मिलित होऊँ।

—नहीं, यह नहीं हो सकता—जौवाद ने जोर देकर कहा।

सफर गुलाम की आँखें डबडबा आयीं। वहाँ चुपचाप खड़े कमांडर की ओर उसने कातर दृष्टि से देखा। यह वे आँसू थे, जो सारे युद्धों, सारे संघर्षों में न गिरे थे; आज वे वर्ग-युद्ध में भाग लेने से वंचित होने के कारण गिरने जा रहे थे। कमांडर सैनिक शिक्षा-दीक्षित होने से सैनिक-व्यवस्था और नियम की तामील में कभी नर्मी न दिखला सकता था। उसके दिल को भी इन आँसुओं ने नर्म कर दिया और उसने बात में सम्मिलित होते कहा:

—मैं समझता हूँ, सफर गुलाम इस काम के लिये अपराधी है। उसका कर्त्तव्य था कि युद्ध समिति के निर्णय को बिना इधर-उधर किये पूरा करता। यह ऐसा भारी अपराध था कि यदि तेरी बोलशेविक पैनी सूझ ने सहायता न की होती, तो हम खड्ड में गिरे बिना न रहते; लेकिन इस बड़े अपराध से अच्छा परिणाम निकला, इसलिये इसे क्षमा कर देना चाहिये और आगे फिर इस तरह का अपराध न करे, इसका वचन लेकर इस मामले को यहीं खतम कर देना चाहिये।

जौवाद ने इसे स्वीकार किया और कमांडर ने फिर कहा—अब इस साथी को लिखकर दे दो कि एरगश अका को सौंपे इसके दल की कमान फिर इसे दे दी जाये।

—क्या मेरे दल का नेतृत्व एरगश अका को दिया गया है?—सफर गुलाम ने पूछा।

—हाँ, अस्थायी तौर से ऐसा किया गया है—कमांडर ने कहा।

—मेरे विचार में—सफर ने कहा [illegible]

नहीं है। इस बुढ़ापे में भी फिर से जवान होकर वह जबर्दस्त बहादुरी के साथ वर्ग-शत्रुओं के अंतिम विनाश के लिये कमर बाँधे हुए है। ऐसे आदमी का दिल तोड़ना अच्छा नहीं है। मेरे लिये बल के चुने ये शीरनी जवान ही पर्याप्त हैं।

—ये युद्ध का ढंग जानते हैं?—कमांडर ने पूछा।

—नहीं, अभी नहीं जानते—सफर ने कहा। कल रात बंदूक की आवाज से बेद (वीरी) के पत्ते की तरह काँपते थे। इस युद्ध में इनके कान अभ्यस्त हो गये हैं। लेकिन एक सप्ताह निशान लगाना सीखना आवश्यक है। इनके अतिरिक्त और आदमियों को भी लेकर मैं अपने दल को बढ़ा लूँगा।

—इस बुढ़वे की क्या आवश्यकता है—कमांडर ने नासिर शीरनी की ओर इशारा करके कहा।

—इसकी बहुत आवश्यकता है। प्रथम यह कि यह शीरनों का मुहम्मद दाना है। शीरनी जवान इससे पूछे बिना कोई काम नहीं करते। दूसरे यह बहुत विचित्र आदमी है, विश्राम के समय इसकी बातें मन को प्रसन्न कर देती हैं। इसके बारे में मैं फिर कभी कहूँगा।

—अच्छा—कमांडर ने कहा—इस समय तू उन्हें साथ लिये जल्दी जाकर सेना में शामिल हो।

पाँच मिनट की गर्द-धूल उड़ने के बाद सफर गुलाम और उसके साथी आँखों से ओझल हो गये। सवारों के गाने की आवाज अब भी कानों में आ रही थी।

"हम तैयार, हम तैयार हैं जान की बाजी लगाये हैं।
जंग और वर्ग-स्वार्थ के जोश में जान लगाऊ अभिमानी हैं।
हम तैयार, हम तैयार हैं गोरिल्ले तैयार हैं।
क्रान्ति की पूर्ति में सिर की बाजी लगाये हैं।
हम तैयार, हम तैयार हैं बासमची को जलाते हैं।
पुरानपन को जलाते हैं नव संसार बनाते हैं।"

१०

बासमचियों के रक्षक

उरमान पहलवान का पीछा करनेवाली सेना ने उसके घर की तलाशी ली। गाँव के अकसकाल ने जन प्रतिनिधि के तौर पर आगे आ हवेली के अंदर और बाहर खोदने और पता लगाने में सहायता की। बेकार खोद-खाद करने के बाद अकसकाल ने कमांडर को बिदा करते वक्त मुस्कुराते हुए कहा :

—मैं इसलिये लोगों का प्रतिनिधि नहीं हुआ कि पंचायती सरकार के साथ विश्वासघात करूँ और बासमचियों को छिपाऊँ। आप अपने को अधिक हैरान न करें। मैं उसकी परछाई देखते ही तत्काल आकर खबर दूँगा।

—मैं भी बिना पता-खबर के व्यर्थ में अपने को हैरान न करूँगा—कमांडर ने कहा।

—ठीक है, मैं आपको पता दूँगा—अकसकाल ने कहा—लेकिन बहुत-से आदमी अच्छा बनने के लिये झूठी खबर पहुँचाते हैं। यदि कल या आज यहाँ बासमची आये होते या इधर से गये होते, तो कम से कम रास्ते में उनके घोड़ों के पद-चिह्न तो दिखलाई पड़ते। नहीं देख रहे हैं, यहाँ आपके घोड़ों के अतिरिक्त किसी के चिह्न नहीं हैं।

—अच्छा, अच्छा—कहते कमांडर अकसकाल की बात को बीच में काटकर अपनी सेना लिए देहनौ अब्दुल्ला जान की ओर चला गया।

जिस समय सेना देहनौ पहुँची तो स्वयंसेवकों के सरदार एरगश ने बजरिया के मुँह पर अवस्थित नमाजगाह की ओर इशारा करके कहा—यहाँ उतरें तो अच्छा।

—क्यों?—कमांडर ने पूछा।

—मुझे अकसकाल की बात पर संदेह है—एरगश ने कहा—उसने पता लगाने की बहुत कोशिश की और कूचे में बासमचियों के घोड़ों के पद-चिह्न तक न होने की भी बात की।

—तो क्या तुम समझ रहे हो कि बासमची यहाँ ही आसपास में हैं?

—मैंने सुना है—एरगश ने कहा कि उरमान पहलवान को किसी गाँव में शरण नहीं मिल रही है और चूल में खाने को कुछ नहीं मिलता; इसलिये वह

अधिकतर अपने या अपने पड़ोसी के घर में रहता है। इन्हीं दिनों अँधेरे में यहाँ आया और अभी तक नहीं लौटा।

—बहुत अच्छा—कमांडर ने कहा—उतरकर कुछ घंटे विश्राम करने में हर्ज नहीं।

सेना ने नमाजगाह में डेरा डाला और घोड़ों को पेड़ों में बाँध दिया गया। लाल सैनिक और लाल गोरिल्ले अपने थैलों से रोटी निकालकर खाने लगे। नासिर शीरनी ने भी कमरबंद खोलकर उसमें बँधी एक रोटी निकाली और एक टुकड़ा तोड़कर बाकी को फिर कमरबंद में बाँधने लगा। कमांडर ने यह देखकर सफर गुलाम की ओर निगाह कर पूछा—तुम्हारे मुहम्मद दाना का कोई भी काम बिना कारण नहीं होता, इसलिये रोटी को थैले में न रख कमरबंद में बाँधना भी किसी कारण से होगा।

—इसका कारण साफ है—सफर गुलाम ने कहा—वह सोचता है कि यदि कहीं मुझे बासमची मार डालें तो थैले में रखी रोटी से भी वंचित हो जाऊँगा। लेकिन यदि कमरबंद में बाँधे रहूँगा तो वह मेरे साथ कब्र तक जायेगी।

सब हँस पड़े, सफर गुलाम ने नासिर शीरनी की तरफ निगाह करके कहा—क्या यही बात है न?

—यही बात है, हँसते हुए नासिर शीरनी ने कहा—यदि कहीं शीरनियों ने इस बात को सुन लिया, तो डर है कि कहीं मुझे निकालकर तुझे न मुहम्मद दाना बना दें।

—अब शीरनीपन भी समाप्त हुआ और शीरनियों का मुहम्मद दाना बनाना भी। यह बीती बात फिर लौटकर न आवेगी—सफर गुलाम ने कहा। युद्ध और क्रान्ति के बीच होते शिरनी भी दाना हो गये। मेरे साथ के शीरनी जवान दो सालों में लिखना-पढ़ना भी सीख गये। युद्ध-कला सीखने में दूसरे जवानों से यदि अच्छे नहीं तो बुरे भी नहीं हैं। स्वयं नासिर अपने अनुभव के कारण एक टुकड़ी का नायक है।

—यह सब अक्तूबर-क्रान्ति का प्रताप और जातियों के बारे में लेनिन की राजनैतिक दृष्टि का परिणाम है—कमांडर ने कहा।

शीरनियों के बारे में जो चुटकुले सुने जाते थे, अब वे पुराने बन गये; लेकिन शीरनियों के चुटकुले बहुत शीरी (मीठे) होते हैं।

—तूने उस समय कहा था—कमांडर ने कहा—शीरनी की कहानी किसी समय सुनायेगा। यदि कहना चाहता है तो इसी समय कह।

—मैं उस घटना को कहना चाहता हूँ, जो मेरे और नासिर शीरनी के बीच में हुई; किन्तु अच्छा यह होगा, यदि उसे नासिर अका अपने मुँह से कहें।

—कहो, कहो—कहकर चारों ओर से आवाज आने लगी।

—ने, मुझे लज्जा मालूम होती है—शर्म से नासिर का चेहरा सेब की तरह लाल हो गया था।

जो बीते के बारे में लज्जा करता है, वह उसे न भूल भविष्य में अपने लिये रास्ता नहीं बना पाता—कमांडर ने जोर देकर कहा।

नासिर शीरनी ने लजाते-लजाते कथा आरंभ की—एक दिन मैं अपने गदहे पर अंगूर लादे गाँव से बुखारा की ओर जा रहा था। उस समय मेहतर कासिम का पुल पत्थर का नहीं, लकड़ी का था। मैंने जरफशाँ के किनारे पहुँचकर देखा कि नदी में पानी बढ़ा हुआ है, पुल पर चढ़ना भी मुश्किल था, घोड़े-गदहों के जाने पर वह हिलता था। मैंने बोझे को नदी के किनारे उतारकर गदहे को पुल पर ले जाकर देखा कि वह हिल रहा था। "स्वयं पानी में गिरूँ जहन्नम्" कहा, किन्तु फिर "यह दो टोकरा अंगूर है, जिसका दो पूद (एक मन) गेहूँ मिल सकता है" सोचकर पानी में उतरने को मूर्खता समझा। अंत में अंगूर को फिर गदहे पर लादकर उसी समय मुहम्मद दाना के पास पहुँचा और अंगूर पार कराने के बारे में उससे परामर्श किया। मुहम्मद दाना ने मुझे पहिले बहुत फटकारा "मेरे न रहने पर तुम क्या करोगे" और फिर कहा 'ऐसे पानी के बढ़े रहने पर पुल के ऊपर से अंगूर ले जाना जरूर बुरा है, तू गदहे के लिए मत डर, उसे पानी में डाल दे।" मैं ऐसी आसान तदबीर को भी न समझ पाने के लिये अपने को बुरा-भला कहते नदी के किनारे पहुँचा और अंगूर के टोकरों के साथ गदहे को पानी में हाँकते पीछे-पीछे चला। किनारे से चार कदम आगे बढ़ने पर गदहा सिर नीचे करके थम गया। मैंने पीछे से सारी शक्ति लगाकर ढकेला, किन्तु गदहा अपनी जगह से न हटा, फिर आगे जाकर गदहे के दोनों कानों को अपने दोनों हाथों से पकड़कर आगे खींचने लगा। इसके बाद गदहा एक-दो कदम रुकते-रुकते कुछ तेजी से पग बढ़ाने लगा, लेकिन मैंने देखा कि वह उधर नहीं जा रहा है, जहाँ कि मैं चाहता था, बल्कि कराकुल की ओर जा रहा था। बहुत कोशिश की कि गदहा

उधर जाये, जहाँ मैं ले जाना चाहता था, लेकिन वह उधर न जा बहाव की ओर और तेजी से जाने लगा। मैं डरने लगा कि अंगूर का टोकरा कराकुल में जा रहा है और मैं उसे बुखारा ले जा रहा था। मैंने गदहे के कानों को छोड़ा और दोनों हाथों से अंगूर के टोकरे को खूब मजबूती से पकड़ा और स्वयं भी गदहे और टोकरे के साथ उसी ओर चला। कुछ मिनट बाद हमारी चाल और तेज हुई और पानी में डूबते-उतराते हम चले जा रहे थे। अब मुझे इसका भी पता नहीं था कि मैं कहाँ हूँ और किधर जा रहा हूँ। इसी समय एक बार आँख खोली तो देखा कि एक जवान सवार मेरी कमर में रस्सी बाँध उसके एक छोर को घोड़े की जीन से लपेटकर कूबकारी की बकरी की तरह किनारे की ओर खींच रहा है। एक झटके में मेरा हाथ टोकरे से छुट गया। मैं "हाय मेरा अंगूर" कहकर बेहोश हो गया। आँख खोला तो देखा कि मैं एक डाली पर पैर ऊपर करके लटका हुआ हूँ और मेरे मुँह से नलके की तरह पानी गिर रहा है। सवार घोड़े को एक ओर बाँधे मेरी ओर देख रहा था। जब उसने मुझे आँख खोलते देखा, तो मुस्कुराते हुए कहा "अब तू बच गया।" मैं आगबबूला होकर बोला "अंगूर का बचना जरूरी था, मैं भले ही कब्र में होता, जब अंगूर नहीं तो मेरे बचने से क्या फायदा?" इस बात को सुन जवान कुछ नहीं बोला और उसने मुझे डाली से उतारकर पीठ पर उठा समतल भूमि में लिटा दिया। जैसे मुर्दा तख्ते पर लेटता है, उसी तरह मैं बिना हिले-डुले लेटा रहा। जवान कमर से कोड़ा निकालकर कंधे से जाँघ तक मुझे पीटने लगा। मैंने समझा कि अंगूर न बचाने के लिये जो मैंने बुरा-भला कहा, उसी से नाराज होकर वह मुझे मार रहा है। मैंने अपने दिल में कहा "अच्छा मारता है, मारता रहे, कोड़ा नरम है, इससे मेरा क्या बिगड़ेगा? जब हाथ थक जायगा तो खुद मारना छोड़ देगा।" लेकिन दो-तीन बार ऊपर से नीचे तक दोहराने के बाद मुझे चोट मालूम होने लगी और बदन सूजता-सा जान पड़ा। अंत में मैं अपने को न रोक सका और चिल्ला उठा "ओका जान, तौबा किया, अब फिर अंगूरों के न बचाने के लिये न कहूँगा।" जवान ने हँसकर कहा "अब पूरी तरह बच गया।"

नासिर ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा—मुझे डूबकर मरने से बचानेवाला जवान सवार यही मेरा प्रिय साथी, सफर गुलाम था। इस साथी ने मुझे दो बार बचाया, एक उस बार जिसका वर्णन मैंने अभी किया है, और दूसरी

चार शीरनियों के अज्ञान और भोलेपन की डुबाई से निकालकर वर्ग-हित के संघर्ष में साथ ले मुझे ज्ञान तथा विद्या सिखायी।

—तू डूबते समय मुहम्मद दाना न था, फिर कैसे इस पद पर पहुँचा—कमांडर ने पूछा

नासिर ने फिर कथा शुरू की—अमीर धर्म-युद्ध के नाम पर सारे घोड़ों को जमा कर रहा था। हमारे गाँव में सिर्फ पाँच घोड़े थे, वे गर्मियों में सिर्फ अपने मालिकों का काम करते; लेकिन वसंत और शरद्-जैसे कीचड़वाले मौसिमों में उनसे सारे गाँव को लाभ होता था। गाँव का आदमी स्वयं बाजार जाता या अपनी चीज बाजार ले जाना चाहता, तो घोड़ा माँगकर अपना काम चला लेता। गाँव के लोग चिन्ता में पड़ गये "यदि इन सारे घोड़ों को अमीर के आदमी पकड़ ले गये तो कीचड़ के समय हम क्या करेंगे?" उस समय हमारा मुहम्मद दाना मर चुका था और लोगों को रास्ता बतानेवाला कोई बुद्धिमान आदमी न था। लोग रोने-चिल्लाने लगे, उसी समय मेरे दिमाग में एक बात आयी और मैंने कहा—"लोगो, मत रोओ-कानो, मैंने पा लिया।" लोगों ने उसी समय रोना बंद कर आँखों को पोंछ मेरी ओर देखकर पूछा "क्या पा लिया?" एक बहुत ही आसान तदबीर है। मैंने कहा "घोड़ों को एक बड़ी दीवारवाली हवेली के भीतर छिपा दें और बाहर से ताला लगा दें। जब अमीर के आदमी घोड़ा लेने आवें, तो उनसे कह दें कि हमारे पास घोड़ा नहीं है; यदि विश्वास नहीं है तो खुद घर के भीतर चल के देख लें। वह बेदरवाजा और खुले घरों के भीतर जाकर देखेंगे और घोड़ा न पाकर चले जायेंगे। इस तरह हमारे घोड़े बच जायेंगे। गाँव के एक आदमी ने मेरी तदबीर पर बहस छेड़ दी:

"यदि वह छिपानेवाले घर के पास आकर ताला खोलकर दिखलाने के लिये कहें तो क्या जवाब देंगे?"

—"कह देंगे कि कुंजी खो गयी।"

—"अगर कूचे में घोड़े के पद-चिह्न देखकर ढूँढ़ निकालें और हमें झूठा कहें तो?"

—"कूचे में वृक्षों की डालियाँ घसीटकर पद चिह्नों को मिटा देंगे"—मैंने उत्तर दिया।

—मेरी बात लोगों को पसन्द आयी और उन्होंने मुझे अपना मुहम्मद दाना

बनने के लिये प्रार्थना की। मैं भी पंचों की बात इनकार न कर सका और राजी हो गया।

नासिर शीरनी की कथा समाप्त हुई, कमांडर और एरगश कुछ सोचने लगे। मंडली में नीरवता छा गयी; लेकिन एक जवान ने नासिर से पूछा—क्या तुम्हारी तदबीर से घोड़े अमीर के आदमी के पंजे से बचे?

—ने—नासिर ने कहा—अमीर के आदमी आये, हमने अपने पहिले से निश्चत किये सवाल-जवाब को दोहराया। उन्होंने कहा "दरवाजे की कुंजी गुम हो गयी, खैर कोई बात नहीं, लेकिन तुम लोगों का मुहम्मद दाना कौन है?" 'मैं हूँ' कहता मैं आगे गया। उन्होंने मुझे जमीन पर लिटाकर कोड़े मारना शुरू किया। मैंने जेब से कुंजी निकालकर उनके सामने फेंक दी। वे ताला खोलकर घोड़ों को ले गये। मैंने लोगों को यह कहकर तसल्ली दी "खैर कोई हर्ज नहीं, जो तुम्हारे घोड़े चले गये; लेकिन कितनी मुश्किल से मिला तुम्हारा मुहम्मद दाना, अमीर के आदमियों के कोड़े से बच गया। इसके लिये अपने को धन्य समझो।"

नासिर की बात समाप्त होते ही बालायरूद गाँव से बंदूक दागने की आवाज आयी। कमांडर ने एकाएक उठकर हुक्म दिया "जवानो, सवार हो जाओ, एरगश सवार हो" और एरगश से यह भी कहा "तेरी बात ठीक निकली, उरमान पहलवान भाग रहा है।

सब सवार हो गये, इसी समय आसपास के गाँवों से दस-बारह बंदूकों की एका-दुका आवाज सुनाई दी।

—ये उरमान पहलवान के आदमी हैं—कमांडर ने कहा—उरमान पहलवान ने संकेत किया जिसका जवाब देकर उसके आदमी भी जा रहे हैं।

सेना ने महत बाकी (मुहम्मद बाकी) काचीखोरों के ऊपर-ऊपर होते बालायरूद की ओर घोड़ा दौड़ाया। वहाँ उरमान पहलवान का पता न मिला, फिर बयाबान की तरफ मुड़कर सेना जिलवाँ के किनारे पहुँची। वृक्ष-वनस्पति-हीन समतल बयाबान में दूर बिल्लियों की तरह दौड़ती कालिमा दिखाई पड़ी। यह कालिमा उरमान पहलवान और उसके साथी थे। वे इतनी दूर निकल गये थे कि उनका पीछा करना बेकार था। सेना वहाँ से उरमान पहलवान की रबात की ओर चली। देखा, अकसकाल एक गड्ढा मूँद रहा है। उसके सामने एक गदहा था, जिसपर जमीन तक लटकती वृक्षों की शाखाएँ बँधी हुई थीं।

—अकसक्काल ! उरमान पहलवान को भगाकर खूब निश्चिन्त हुए हो न !—एरगश ने उससे पूछा।

—मैंने उरमान पहलवान को नहीं देखा। वह इस ओर नहीं आया, यदि आता तो उसके घोड़े के पद-चिह्न होते—अकसक्काल ने जवाब दिया।

—पद-चिह्न भले ही न हों, किन्तु शाखा-चिह्न तो हैं—कमांडर ने कहा—तू अपनी इन शीरनों-जैसी तदबीरों से मजदूरों और किसानों की लाल सेना को धोखा नहीं दे सकता।

—इस गड्ढे में क्या काम कर रहा है अकसक्काल ?—सफर गुलाम ने पूछा।

—खाद को गड्ढे में दफना रहा था !

—तेरे खाद के गड्ढे को मैं भी तो देखूँ—कहते सफर गुलाम गड्ढे के भीतर उतरा और एकाएक बोल उठा "ए—!"

गड्ढे के पीछे एक बहुत विस्तृत भुँइघरा था। इसमें कितने ही घोड़े और आदमी रह सकते थे। एक जगह घोड़े की ताजी लीद पड़ी हुई थी और दूसरी जगह अब भी खाने के कुछ खाली थाल रखे हुए थे, जिनसे पोलाव अभी-अभी खाया गया था।

सफर गुलाम ने गड्ढे से बाहर निकलकर कहा—उरमान पहलवान खास तौर पर बनाये इस गड्ढे में अपने घोड़ों और आदमियों के साथ रहा है। अकसक्काल गड्ढे को ऊपर से ढाँककर छिपाना चाहता था और उसी ने शाखा घसीटकर घोड़ों का पद-चिह्न मिटा दिया है और पकड़ा गया।

—आगे चल—कमांडर ने अकसक्काल से कहा—तुझे जाँगर चलानेवालों के न्यायालय के सामने जवाब देना होगा।

अकसक्काल आगे हुआ। इसी समय पीछे से बंदूक की आवाज आयी। गोली दोनों कंधों के बीच छाती होते निकल गयी। अकसक्काल जमीन पर गिर पड़ा।

—अकसक्काल को जाँगर चलानेवालों के न्यायालय के सामने जवाब देने का अवसर न मिला, लेकिन मैंने सैनिक-व्यवस्था के विरुद्ध जो इस आदमी को गोली मारी, इसका जवाब मैं न्यायालय के सामने दूँगा।

गोली खानेवाला अकसक्काल था अब्दुर्रहीम वाय किलाची का बेटा और बंदूक मारनेवाला था एरगश उसके बाप का गृहजात गुलाम और रहीम दाद—नेकदम—बाबा गुलाम का बेटा।

वर्ग-युद्ध जारी हुआ।

११

बासमचियों की दुर्दशा

१६२३ का साल था। गर्मी के कष्टदायक दिन समाप्त हो गये थे और शरद भी बीतनेवाली थी, लेकिन अभी बर्फ और वर्षावाले जाड़े के दिन आरंभ नहीं हुए थे। तेके-चूल में वर्ष के इस समय आँखों को आनन्द देनेवाली कोई चीज दिखलाई नहीं पड़ती थी। मदार और सोरा सूख गये थे; बबूल के पत्ते गिर चुके थे; शीवाग टूट गये थे।

बयाबान का सारा प्राकृतिक सौन्दर्य लुट चुका था। साही, साँप, बिच्छू-जैसे जानवर अभी जाड़े की नींद नहीं शुरू किये थे और वे कहीं-कहीं दिखलाई देते थे। भेड़िये और गीदड़ झुंड बाँधकर चक्कर काटते थे। अभी बयाबान छोड़ने में उन्हें देर थी; क्योंकि अभी चारों ओर बर्फ ने ढाँककर उन्हें भोजन से पूरी तौर से वंचित नहीं कर दिया था। आजकल इस बयाबान में इन जानवरों के अतिरिक्त दूसरे जंगली जानवर भी घूम-फिर रहे थे। यह जंगली जानवर अपनी जंगलीपन के कारण यद्यपि मानव-समाज से निकाल दिये गये थे, तो भी उन्हें दोपाया होने के कारण भेड़ियों, गीदड़ों, साँपों और सूअरों-जैसे जंगली जानवरों में स्थान नहीं मिला था। वे दोनों दुनिया से बहिष्कृत थे। मानव-संसार से निकाले जा चुके थे और हैवानी दुनिया में जगह नहीं पा सके थे। ये शाफिरकाम तूमान के बासमची थे, जो लाल सैनिकों, लाल गोरिल्लों और लाल लठैतों के प्रहार से बचने के लिए भागकर तेके-चूल को अपना अंतिम शरण-स्थान बनाये हुए थे।

यद्यपि वे समाज से निकाले हुए थे, किन्तु अब भी उन्होंने अपने "बेगी" के चिह्नों को छोड़ा ही नहीं था। अब भी उनके सिरों पर पाग थी, लेकिन वह देग के नीचे रखे जानेवाले लत्ते की तरह काली और मैली थी। अब भी उनके शरीर पर साटन के फूलदार जामे थे, लेकिन गदहों की काठी के नीचेवाले लत्ते की तरह खून और दाग की जमावट से कड़े और दागदार हो गये थे। अब भी उनके तन पर जिहकलाँ की पोशाक थी, लेकिन वह कीड़ा पड़े ऊँट के पेट पर कसे फीते की तरह सड़े मांस की गन्ध और रंग को दे रही थी। उनका भोजन भी पहिले की तरह कजी, मुर्गकबाब, बर्रा बिरियान या भेड़ का सीख कबाब न था,

क्योंकि अब उनके पाने की गुंजाइश नहीं थी। वह लोगों के घरों को लूटकर उनके मुर्गों, भेड़ों और बरों को नहीं ले जा सकते थे, अब उनकी खुराक थी मुट्ठी भर ज्वार और एक टुकड़ा पनीर।

उनके अपने आदमी भी विश्वास खो चुके थे। अब उन्हें छोड़कर भाग गये थे। या तो वह सरकार के हाथ में आत्मसमर्पण कर चुके थे या कोने-अंतरे में जाकर चोरी कर रहे थे। अब तेके-चूल में छिपे बासमचियों की संख्या घटते-घटते पाँच सौ रह गयी थी। जीवन कठिन और मृत्यु-पतनोन्मुख-जैसा था। आपस में एक दूसरे से हँसी-मजाक करते भी अधिकतर मौत के ही बारे में बोलते थे और इस जिन्दगी से मौत को बेहतर समझते थे।

एक दिन अपनी बारी में पहरा देनेवाला दिल्लगीबाज साथी घोड़ा दौड़ाते आकर चिल्लाया "उठो, सवार हो, भागो, लाल सेना आ गयी!" आवाज सुनते ही बासमचियों में कोई सिर-पैर से नंगे, कोई बेकुर्ता-पायजामा, कोई सिर्फ पायजामा पहने सवार होकर भगे। जब वे अपने दुबले-पतले, थके-माँदे घोड़ों पर एक-आध कोस निकल गये, तो दिल्लगीबाज ने हँसते हुए कहा—बेग और कुरबाशी महाशयो! मैंने दिल्लगी की थी, कोई नहीं आ रहा है, आप निश्चिन्त हो, विश्राम-स्थान पर लौट चलें।

दुबले-पतले घोड़े कोड़ों की चोट खा जान पर खेलकर सारी शक्ति लगा दौड़ भागे थे, लेकिन लौटते समय पीठ पर सवारों को ले चलने की बात ही दूर, खाली भी अपना पैर उठाना नहीं चाहते थे। कुरबाशी घोड़ों को आगे कर उन्हें पीछे से ढकेलते बड़ी मुश्किल से अपनी जगह पर पहुँचे।

बाजार अमीन बार-बार ऐसे मजाकों से तंग आ गया था। उसने हैत अमीन से कहा—इसके बाद हम इस आदमी की बात पर कभी न हिलें। ऐसी निराधार बातों पर, मौत से डरकर, हर रोज कई बार भागने से लाल सेना की तलवार से मारा जाना अच्छा है।

—कल का भागना मेरे लिये अत्यन्त कष्टप्रद हुआ—हैत अमीन ने समर्थन करते हुए कहा—मैं आग जला, कपड़े उतार, जूँओं को निकालकर आग में डाल रहा था।

हैत अमीन के मुँह से जिस समय जूँओं का शब्द निकला, उसी वक्त उसका साथी अपने हाथों को चौड़ी आस्तीन के भीतर खींचकर शरीर को खुजलाने

लगा। हैत अमीन आगे कह रहा था—उस समय सारे बदन पर सिर्फ एक एकहरी बंडी थी। एकाएक इस शैतान ने भागो की गोहार लगायी। मैं बिना एजार और पायजामे के घोड़े की नंगी पीठ पर सवार हुआ। एक-आध कोस जाने पर असली बात मालूम हुई। मैंने घोड़ों को रोककर देखा, जाँघों में दर्द हो रहा है। जूँओं की काटी जगह खुजलाते-खुजलाते पक गयी थी। अब नंगी पीठ पर बैठकर दौड़ने से वहाँ लाल मांस दिखलाई दे रहा था।

—पर्वाह न करो—तसल्ली देते हुए उरमान पहलवान ने कहा—यह जनाब आली की सुन्नत (सदाचार) है। अब्दुल्ला बायबच्चा अपने घर से जनाब आली के भागने पर स्वयं ही श्री-चरणों के साथ भाग गया। आजकल अशान्ति से फायदा उठाकर लौट आया है। वह कहता है "जनाब आली गिज्दुवान से करनाब गिरि तक घोड़े की पीठ पर सवार हो भागे और श्री-आसन का चमड़ा छिलकर बंदर के आसन की तरह लाल हो गया था। अन्तर इतना ही था, जहाँ बंदर के आसन की लाली चमड़े से आती है, वहाँ श्री-आसन की लाली नंगे मांस से प्रकट होती थी।"

इसके बाद इस्माईल मीर आखूर ने कहा—अब यदि "यदि सेना आयी" की खबर सुनें तो उठकर मर्दानगी के साथ लड़ना चाहिये।

तुम्हारी इस बात में—नारमुराद पहलवान ने कहा—अंग्रेजी गोइन्दों ने जो हमारे साथ बर्ताव किया, उसकी गंध आ रही है।

—उनके कौन-से बर्ताव की गंध?—एक जवान ने पूछा।

—हमारे काम के आरंभ में अँगरेजों ने हमारे साथ बड़े-बड़े वायदे किये थे और आरंभ में कुछ मदद भी दी थी, लेकिन जब पंचायती सरकार दृढ़ होने लगी और हमारा काम ढीला पड़ा तो उन्होंने अपना हाथ खींच लिया और गर्दन खुजलाते हुए वे हमारी ओर से मुँह हटाने लगे।

—उनके इस काम का मुझसे क्या सम्बन्ध है?—इस्माईल ने चिल्लाकर कहा।

—भारी सम्बन्ध है—नारमुराद ने जवाब दिया—तू हमसे डटकर लड़ने की बात कर रहा है और लड़ाई आरम्भ हो जाने पर जाकर एक किनारे खड़ा हो जायेगा और हार होते वक्त सबसे पहिले भाग खड़ा होगा।

नार करावुलबेगी ने बीच में बोलते हुए कहा—आज हमारी हालत उस भूखे भेड़िये जैसी है, जो कि मांस के लालच में आकर अपने को जाल में डाल देता है, बँध जाता है और अपनी मुक्ति के लिये जितना ही छटपटाता है, उतना ही अधिक

उसका बंधन दृढ़ होता है। नहीं मालूम, हम किस तरह इस हालत से छूट पायेंगे।

—इस हालत से छुट्टी पाने का एक ही रास्ता है—एक बासमची जवान ने कहा—कि बिना शर्त के पंचायती सरकार के हाथ में आत्मसमर्पण कर दें।

—"आत्मसमर्पण"—बाजार अमीन ने बात काटकर कहा—आत्मसमर्पण का अर्थ क्या है ? जनाब आली के जमाने में देखे सारे भोग और आनन्द को स्मृति से निकाल देना, उन सारे दिनों को भूल जाना जब कि हम घोड़े पर सवार हो कोड़े के बल पर लोगों के ऊपर शासन करते ; इसका अर्थ है उन नंगे भूखों के सामने सिर झुकाना जो कल तक यदि रोटी माँगते तो हम उनकी जान लेते, और जो कल तक हमारे दरवाजे पर सैकड़ों अपमान के साथ नौकरी या बटाई का काम करते।

—"आत्मसमर्पण" की बात सिर्फ वे ही कर सकते हैं, जो सरकार के हाथ में बिक चुके हैं और जो काफिरों, धर्म-पतितों के गोइन्दे हैं।

—"गोइन्दा, गोइन्दा" कहते चारों ओर से आवाज आयी। आत्मसमर्पण कहनेवाले आदमी को घसीटते हुए एक ओर ले गये। एक आवाज हुई, रात के अँधेरे में एक ज्वाला प्रगट होकर लुप्त हो गयी। आसपास में एक कड़ुवा और दुर्गन्धवाला धुआँ उठा। कुछ दूर जमीन पर एक कालिमा छटपटा रही थी। बासमची लौटकर अपनी-अपनी जगह चले गये।

सवेरे का समय था। कहीं कोई शब्द नहीं सुनाई देता था। सायंकाल से ही चिल्लानेवाले कीड़े अब नीरव हो गये थे। भूख से सारी रात हिनहिनाते, पैर पटकते घोड़े अब निराश हो पैरों को फैलाकर एक पार्श्व में निश्चेष्ट लेटे हुए थे। देर तक रात को बदन खुजलाता, जूँओं से लड़ते बासमची भी गहरी नींद में सो रहे थे। भूमि और आकाश—कहीं से एक भी आवाज नहीं सुनाई दे रही थी, न कोई प्राणी हिलता-डुलता दीख पड़ता था, सिर्फ बाजार अमीन के निवास के सामने एक सोलह-साला लड़का हाथ में गड़वा लिये अमीन के फरागत से लौटने की प्रतीक्षा में खड़ा था। अमीन लौटा, लड़के ने उसका हाथ धुला, गड़वे को उसकी ओर बढ़ाया। अमीन ने गड़वा लेने की जगह लड़के की कलाई पकड़ ली और उसे अपने तम्बू की ओर घसीट ले गया। इसी समय दिल्लगीबाज जवान ने आवाज दी "उठो, सवार हो, भागो सेना आयी !" लड़के ने अपने पैर को जमीन पर अड़ाकर अपने को छुड़ाने की कोशिश करते सेना के आने की बात कही ; लेकिन अमीन ने "पर्वाह न कर, यह शाहिम का हर रोज का मजाक है" कहते फिर उसे खींच ले जाना चाहा।

इसी समय बंदूक दगने की आवाज सुनाई दी और एक गोली ने अमीन के सिर के ऊपर से होते तम्बू के कोने में लगकर लत्ते में छेद कर दिया। अब

१५—एक आवाज हुई, रात के अँधेरे में (पृष्ठ ३३४)

अमीन ने भी समझा, यह मजाक और दिनों के मजाक की तरह नहीं है, बल्कि "यह मेरा घर जला" वाली कहानी-जैसा है। झूठा आदमी हर रात छत पर जा

"ऐ लोगो, मेरा घर जला, मेरी मदद करो" कहते गोहार करता। लोग मीठी नींद से उठकर घड़ों और कूजों में पानी भरकर वहाँ पहुँचते, तो देखते कि वहाँ आग का कोई चिह्न नहीं। "कहाँ है आग पूछने पर झूठा आदमी जवाब देता "कोई बात नहीं, मैं तो नाहीं कहे था।" कई बार धोखा खाने पर लोगों ने जाना छोड़ दिया। एक दिन सचमुच आग लगी और घर जल गया।

अमीन ने भी हर रोज के मजाक का ख्याल करके ध्यान नहीं दिया और चन्द मिनटों में देखा कि उनका घर बिलकुल जलने लगा। बंदूकें पहिले अलग-अलग छूट रही थीं, धीरे-धीरे वह सलामी देने की तरह एक साथ छूटने लगीं। अब "सवार हो, भागो" की आवाज एक दिल्लगीबाज जवान की ओर से ही नहीं, बल्कि चारों ओर से सुनाई देने लगी। अमीन लड़के को छोड़, तम्बू में जा, बन्दूक हाथ में ले, तलवार को रातवाली पोशाक के ऊपर से लटका बाहर आया और लेटे घोड़े को उठाकर सवार हुआ। घोड़े ने कोड़े खा चलने की बहुत कोशिश की, लेकिन पैर आगे न रख वहीं घूमने लगा। कुछ और कोड़े मारने के बाद अमीन को मालूम हुआ कि घोड़ा बँधा हुआ है। उसने उतरकर तलवार से रस्सी को काट दिया और घोड़ा रवाना हुआ। दूसरे कूरबाशी (डाकू सरदार) भी सवार होकर भगे।

लेकिन बासमचियों के कैम्प की एक ओर भारी हल्ला था। "भागो-भागो" की चीत्कार को बंदूकों की आवाज ने ढाँक दिया था। दिन के प्रकाश पर काला धुआँ छाया हुआ था। घोड़ों के ऊपर से बासमचियों का लुढ़कना सरकस के खेल-जैसा मालूम होता था। एक पैर रिकाब में फँसाये गोली खाकर गिरे सवार किसी घोड़-दौड़ का दृश्य दिखला रहे थे। बंदूक की नामर्दाना लड़ाई खतम हुई, फिर पुराणों में आये वीरों की तरह एक दूसरे के साथ तलवार से काटते, बर्छों से फाड़ते, खंजर से छेदते, भाला से बींधते मर्दाना लड़ाई होने लगी।

बंदूक की आवाज ही चुप नहीं हो गयी थी, बल्कि काला धुआँ भी उड़ गया था। मैदान में चारों ओर सूर्य का प्रकाश फैला हुआ था। लेकिन वहाँ फूटे कपालों, कटे सिरों, टूटे पैरों, लहू-लोहान तनों के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता था।

बासमची मैदान में ११७ मुर्दे छोड़कर भगे। लाल सैनिकों और स्वयंसेवकों ने उनका पीछा किया।

१२

बासमचियों का अन्त

मेघाच्छन्न रात्रि का अंधकार था। तारे कहीं नहीं दिखलाई पड़ते थे। लाल सैनिक, लाल गोरिल्ले, लाल भालादार कमकर-किसान बासमचियों को ढूँढ़ते एक गाँव में गये। कच्चा रास्ता वर्षा से इतना भींग गया था कि उससे धूल-धक्कड़ नहीं उड़ता था और न घोड़ों के खुरों की आवाज ही सुनाई देती थी। चारों तरफ सन्नाटा था। इस सन्नाटे में जब-तब घोड़ों की खाँसी या म्यान की नोक के रिकाब से टकराने का शब्द सुना जाता था, लेकिन अन्धकार में बाधा डालनेवाली कोई चीज न थी। आज रात को दियासलाई जलाने और सिगरेट पीने की मनाही थी।

गाँव की चारों तरफ बालू के टीले फैले हुए थे। सेना ने गाँव को चारों ओर से घेर लिया। एक सोलहसाला लड़के ने आगे-आगे चलते सफर गुलाम को एक ऊँची दीवारवाली रबात की ओर इशारा करके कहा—"इस जगह है।"

—इस रबात को मैं पहिचानता हूँ—कहते सफर गुलाम ने घोड़े को मोड़कर, अपने पीछे आते कमांडर की ओर देखते, हाथ को लिलार पर रखकर कहा—"इसी रबात के अन्दर हैं।"

कमांडर के इशारे पर सवार उतर आये, उनमें से आधे रबात की चारों ओर खड़े हो गये और बाकी कमान की प्रतीक्षा करने लगे। सफर गुलाम कमांडर को लिये दीवार के नीचे गया और रेत से आधो ढँकी दीवार को एक जगह दिखलाकर कहा—"मुहब्बत यहाँ से मेरे साथ भागी थी।"

—"जगह तैयार की हुई है" कहते कमांडर सैनिकों को दो पाँती में बनाकर दीवार के किनारे ले गया।

—एक आदमी पीठ ओड़े और उसपर से होकर सब मेरे साथ आयें। मैं इस हवेली की हर जगह को अच्छी तरह जानता हूँ—सफर गुलाम ने कमांडर से कहा।

—सफर के पीछे मैं—अगली पाँती में खड़े एरगश ने कहा—क्योंकि इस हवेली को मैं भी उसी की तरह जानता हूँ।

—अच्छा—कमांडर ने कहा और पाँती की ओर निगाह करके कहा—कौन पीठ ओड़ेगा ?

"मैं" कहते पाँती से एक कदम आगे बढ़ हाथ को लिलार पर रखे कोई आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

—हर जगह शीरनियों की चाल अका नासिर !—मुस्कुराते हुए सफर गुलाम ने कमांडर की ओर निगाह करके कहा—हवेली के अन्दर जा, बासमचियों की गोली का निशान न बनने के लिये इसी जगह लेट लगाना चाहता है।

—नहीं—नासिर ने कहा—बल्कि इसलिये कि मेरा कद दूसरों से अधिक ऊँचा है। इस काम के लिये दूसरों की अपेक्षा अधिक अनुकूल है।

कमांडर ने स्वीकार किया। नासिर ने पीठ ओड़ी। पहले सफर गुलाम, उसके बाद एरगश, फिर कमांडर नासिर की पीठ पर से छत पर चढ़कर वहाँ लेट गये। कमांडर ने सैनिकों को ऊपर आने का इशारा किया और सभी छत के ऊपर आ गये। सफर गुलाम, एरगश और कमांडर एक के पीछे एक तनूरखाने पर से होते हवेली के नीचे उतरे। दूसरे भी उतरने लगे। सफर गुलाम ने भीतरी हवेली से बाहरी हवेली तक देख डाला। सभी जगह नीरवता थी। इस नीरवता में बारिश की छपछप हो रही थी, जो जूते की आवाज को छिपाने में सहायता दे रही थी।

बाहरी हवेली में आ आधे सैनिकों ने साईसखाने, भेड़खाने, भुसौल और जहाँ कहीं भी आदमी के होने की संभावना थी, सबको ढूँढ़ा। हवेली के भीतर और बाहर पहरा लगा दिया गया। बाकी सैनिक चबूतरे पर आ मेहमानखाने के दरवाजों के पीछे कतार बाँधकर खड़े हो गये। देहली के द्वार के सामने अधिक आदमी रखे गये। यह दरवाजा खुला था, लेकिन उसका पर्दा गिरा हुआ था। मेहमानखाने के भीतर तेज लालटेन जल रही थी, लेकिन आवाज बहुत धीमी फुसफुस करके निकल रही थी, जिससे मालूम नहीं होता था कि वे क्या बात कर रहे हैं।

—पहिले कौन अन्दर जायगा ?—कमांडर ने धीमी आवाज में पूछा।

"मैं" कहते सफर गुलाम आगे आया, लेकिन नासिर ने सफर को पीछे खींचकर खुद आगे बढ़कर कहा—"पहले मैं अन्दर जाऊँगा। मुझपर तूने डरपोक होने का दोष लगाया है। इस दोष को धोने और बासमचियों की गोली खाने का सबसे पहले हक मेरा है।" नासिर ने जोश में आकर कुछ ज्यादा ऊँची आवाज

में बात की। मेहमानखाने के अन्दर से एक आदमी ने दौड़ते आकर "कौन है ओय !" कहते दरवाजे के पर्दे को उठाया; लेकिन जवाब में एक गोली खाकर

१६—यह स्वयं पहलवान अरब है। (पृष्ठ ३३९)

वहीं गिर पड़ा। सफर गुलाम ने दियासलाई जलाकर आदमी की सूरत देखकर कहा—"यह स्वयं पहलवान अरब है।"

उसके पीछे दो और आदमी दौड़कर बाहर आये, जिनमें से एक गोली खा-कर लुढ़क गया और दूसरा भीतर भागकर चिल्लाने लगा—"हमें घेर लिया है, हवेली में चारों ओर फौज भरी है। हमारा सत्यानाश हुआ, यह मजाक नहीं, सची बात है।" यह मजाक नहीं था, इसका प्रमाण बाहर से छूटती गोलियाँ दे रही थीं।

बासमचियों में खलबली मच गयी। वे बन्दूकें सँभालकर खड़े हो गये। प्रमुख स्थान पर बैठे मुल्ला (पंडित) ने अपने सिर की पाग को एक ओर फेंक गद्दों के भीतर अपने सिर को छिपा लिया। किंकर्तव्यविमूढ़ बासमची देहली की ओर अपनी बन्दूकें खाली करने लगे। एक साथ कई बन्दूकों के छूटने से जो वायु-कम्प हुआ, उससे लालटेनों के शीशे टूट गये और वह बुझ गयीं। मेहमान-खाना धुआँ और अँधेरे से भर गया। इस अँधेरे में बासमची एक दूसरे तथा सन्दली और दीवारों से धक्का खाते इधर से उधर दौड़ रहे थे। एक बासमची गद्दे से लिपटकर गिर पड़ा। उसने सारे गद्दों को इकट्ठा कर एक ओर फेंक देना चाहा। इसी समय गद्दे के अन्दर से "मैं गद्दे के अन्दर छिपा हूँ। उधर फेंककर मुझे न मरवायें" कहते मुल्ला ने आवाज दी। मुल्ला की इस बात को सुनकर मौत के मुँह में खड़े होने पर भी बासमची अपनी हँसी न रोक सके।

हवेली के अन्दर की नीरवता भी अब भग्न हुई थी। पहली बंदूक के खाली होते ही जनानखाने से स्त्रियों, बच्चों और ढोरखाने-भेड़खाने से नौकरों और चरवाहों ने चिल्लाना शुरू किया। "चुप हो, लेट जाओ, नहीं तो गोली मार दिये जाओगे" कहकर पहरेवालों ने बंदूकें उस ओर तानीं और सब चुप होकर लेट गये। लेकिन इसी समय गाँव के एक कोने से कई बंदूकें छूटीं, जिससे सेना में हलचल मच गयी।

कमांडर ने हलचल बंद करने के लिये अपनी हथेली को छाती पर रख सैनिकों को बतलाते सफर से आवाज के बारे में पूछा—"यह क्या है ? कहीं इस लड़के ने हमें धोखे में तो नहीं डाला और अपने बासमचियों को बड़ी संख्या में बाहर रखवा हमें इस हवेली के भीतर बंद करवाना तो नहीं चाहता ?"

—इस बारे में निश्चिन्त रहें—सफर गुलाम ने दृढ़ता के साथ कहा—यह लड़का बाजार अमीन के हाथों अपनी बेइज्जती और अपमान के कारण भागकर हमारे पास आया। यदि इस लड़के की ओर से विश्वासघात की बात मालूम हुई, तो सबसे पहिले उसका उत्तरदायित्व मैं लेता हूँ।

—यदि ऐसा है तो ये बंदूकें किसने चलायीं और किनकी तरफ से ?—कमांडर ने पूछा।

—क्षमा करें—सफर गुलाम ने विनम्र स्वर में कहा—आपसे लड़के की कही एक बात को कहना भूल गया था। उरमान पहलवान के मुहरम लड़के ने इस लड़के को बतलाया था कि बासमचियों ने आजकल एक नयी तदबीर निकाली है, जिसके अनुसार कूरबाशी और दूसरे प्रसिद्ध बासमची जब किसी हवेली में डेरा डालते हैं, तो वहाँ से दूर की हवेली में कुछ बासमचियों को छोड़ रखते हैं। जब कूरबाशियों (बासमची सरदारों) को सेना घेरती है तो दूर के बासमची बंदूक दागने लगते हैं और इस तरह सेना का ध्यान अपनी ओर खींचकर कूरबाशियों को भाग निकलने का अवसर दिलाते हैं, और नहीं तो सेना को दो जगह फँसाकर उसे निर्बल कराते हैं। वे पहले ही से तैयार रहते हैं, इसलिये सेना के पहुँचने से पहिले ही रफूचक्कर हो जाते हैं।

—बहुत ठीक—कमांडर ने कहा—लेकिन तूने इस तरह की बहुत महत्त्वपूर्ण बातें भुला दीं और मुझसे नहीं कहा। इसलिये दूसरी बार तुझे सावधान किया जाता है।

—स्वीकार—सफर ने हाथ को लिलार पर रखते कहा—अब काम शुरू करना चाहिये।

मेहमानखाने में फिर खलबली मची और बासमची भीतर इधर से उधर दौड़ने लगे।

—"चुपचाप खड़े रहो, हाथ ऊपर करो" एक आवाज आयी।

इसी के बाद एक गला दबायी-सी आवाज आयी—क्या तुम्हारी आँखें नहीं हैं ? क्या देख नहीं रहे हो कि मैं एक लड़का नहीं, मैं एक मुल्ला हूँ। यदि विश्वास नहीं तो मेरी दाढ़ी को हाथ से टटोलकर देख लो।

मेहमानखाने में एक मिनट फिर नीरवता छायी, जिसे "भागो-भागो, पकड़ो-पकड़ो" की आवाज ने तोड़ दिया। यह चिल्लाहट भी एक मिनट रही। इसी वक्त एक लड़के की आवाज सुनाई दी—"मेरे जवान प्राणों पर रहम करो पहलवान ! मेरी माँ के क्रन्दन, अश्रु तथा मेरी बहिन की करुण आहों पर तरस खाओ।"

—"तेरी माँ और बहिन की ऐसी-तैसी" कहते एक दूसरी आवाज ने लड़के के मुँह को बंद कर दिया।

इसके बाद एक और आवाज आयी—अऊज बिल्लाहि (भगवान बचाये) यह कैसा शरीयत (धर्मशास्त्र) के विरुद्ध काम है। माँ और बेटी को एक ही आदमी का फलाँ करना धर्मशास्त्र में भी विहित नहीं है। इसी तरह के शरीयत-विरोधी कामों के करने ही से तो तुम्हारे ऊपर यह आफतें आयीं।

—मारो इस धर्मशास्त्र बघारनेवाले मुल्ला को—कहती एक भयंकर आवाज आयी और उसके बाद गद्दे पर जूते धप-धप पड़ने लगे।

फिर हल्ला शुरू हुआ—तौबा किया मैंने ऐसे ही एक धर्म-प्रवचन कर दिया था, नहीं तो माँ-बेटी को छोड़ बेटे को भी फलाँ करो, मुझसे कोई मतलब नहीं।

गद्दे का धबधबाना बंद हुआ, लेकिन लड़के का रोना-गिड़गिड़ाना अब भी जारी था। अन्त में उसकी आवाज धीमी होते-होते "साथियो, बचाओ" कहते बिलकुल बंद हो गयी।

सैनिकों ने "साथियो बचाओ" की बात सुनकर "दरवाजों को तोड़कर अन्दर चलें" कहते आवाज दी।

—नहीं—कमांडर ने कहा—दरवाजों में छेद कर उसके अन्दर से गोली छोड़ो।

दो मिनट में आज्ञा को कार्य-रूप में परिणत किया जाने लगा। मेहमानखाने के तीन बलारों (दरवाजों) में बंदूक की नली के जाने लायक छेद किया गया और बंदूकों को छेद के अन्दर से दागा जाने लगा। अन्दर से भी बंदूकें छूटने लगीं; लेकिन दोनों ओर की गोलियाँ किवाड़ों और दीवारों पर लग रही थीं और किसी को नुकसान नहीं पहुँच रहा था। कुछ देर तक ऐसा होता रहा; फिर वह बंद हुई, कमांडर ने बंदूक रोकने का हुक्म देकर घर की ओर मुँह देकर कहा—"बेकार खून न बहाओ, मुफ्त में मुर्दा न बनो। पंचायती सरकार का हुक्म मानकर आत्मसमर्पण करो।"

इसके उत्तर में दरवाजे से एक गोली आयी।

—हः हा कमांडर ने कहा—इनके पास सावधानी की गोलियाँ हैं।

नासिर शीरनी ने अपने हाथ को लिलार के किनारे लगाकर कमांडर से कहा—आज्ञा दें—मैं देहली के दरवाजे से भीतर जाकर गिरफ्तार करता हूँ। गोली खाऊँ तो भी हर्ज नहीं, मैं अपने को दोषमुक्त करना चाहता हूँ।

—नहीं—कमांडर ने कहा—जहाँ बे-मरे काम पूर्ण किया जा सकता है, वहाँ अपने को मरवाना सैनिक-विधान के विरुद्ध है।

—"स्वीकार" कहते नासिर शीरनी जाकर अपनी जगह खड़ा हो गया।

कमांडर ने बिचले दरवाजे के पीछे खड़े आदमी से कहा—उस दरवाजे में एक बोतल के जाने लायक छेद करो।

छेद करने के बाद एक पेट्रोल की बोतल बंदूक की गोली से उड़ाते हुए फेंकी गयी। मेहमानखाना जलने लगा। आग और धुएँ में पड़े बासमची बंदूकों को फेंक हाथों को ऊपर उठाये आत्मसमर्पण करने के लिये देहली से बाहर निकल आये।

नासिर ने भीतर कोई रह तो नहीं गया यह जानने के लिये झाँका, तो वहाँ आग लगे गद्दों के ढेर से किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी। अन्दर घुसते ही उसके पैर में कोई चीज लगी। वह "सफर गुलाम, जल्दी से निकाल" कहते खुद ही जलते गद्दे के नीचे से एक आदमी को खींचकर बाहर लाया। सफर गुलाम भी नासिर की आवाज सुनकर भीतर गया और वहाँ से एक लाश लाकर बंदी हुए बासमचियों के सामने रख दिया।

—इसे किसने मारा—कमांडर ने बासमचियों से पूछा।

—मैंने—उरमान पहलवान ने जवाब दिया।

—क्यों ?

—देखा कि गाँव के दूसरे छोर से छूटी बंदूकों के धोखे में तुम नहीं आये, हमें सन्देह हुआ कि इस रहस्य को इस लड़के ने तुम्हें बतलाया, इसीलिये अपने जीवन का बदला इससे लिया।

कमांडर ने कहा—यह तेरा अंतिम पाप और अपराध है।

उधर चबूतरे पर नासिर शीरनी एक जलती पोशाकवाले आदमी पर पानी डाल रहा था, जिसे वह स्वयं मेहमानखाने के भीतर से निकाल लाया था। उसने अपने साथियों को आवाज दी—देखो, यह कैसा विचित्र-सा आदमी है ?

सब वहाँ जमा हो गये, देखा, वहाँ एक आदमी हाय-हाय करते लेटा है, उसकी दाढ़ी-मूँछ, सिर के बाल, भौंहें और पपनियाँ सब जल गयी हैं। कमांडर ने उस आदमी से पूछा—तू कौन है ?

—मैं मुल्ला (पंडित)—साँस तोड़-तोड़कर आदमी ने कहा—मेरा कोई अपराध नहीं।

—यदि तू निरपराध था, तो उनके साथ क्या कर रहा था—कमांडर ने पूछा।

मैं धर्म-प्रवचन करने आया था—मुल्ला ने कहा—कई सालों से मैं इनको धर्मोपदेश करता आया था। एक वक्त मेरी पाग जल गयी, लेकिन मैं भगवान के संकेत को समझकर होशियार नहीं हुआ और इनके धर्मशास्त्र-विरोधी कामों को देखकर भी इनके पास धर्म-प्रवचन करने आया; लेकिन अबकी बार खुदा ने बड़ी सख्त मार मारी और मेरी दाढ़ी मुझसे छीन ली।

—खैर, पर्वाह न कर—एरगश ने कहा—यदि तू जिन्दा रहा, तो मैं अपनी दाढ़ी तुझे दे दूँगा।

—बाय ! तो क्या तुम मुझे मार डालना चाहते हो—मुल्ला बहुत गिड़गिड़ाकर बोला—खुदा जानने-सुननेवाला है, मेरा कोई अपराध नहीं, मुझपर हाथ न छोड़ो। भगवान तुम्हारे दोनों लोकों को बनावें और अंतिम साँस के समय तुम्हारे ईमान (धर्मविश्वास) को तुम्हारे साथ रखें।

विजयी दल ने ठहा मारकर हँसते हुए एक साथ घोष किया "नेस्तबाद बासमचीगिरी !"

गिरफ्तार हुए बासमची सैनिकों के पहरे में रवाना किये गये। आगे-आगे उरमान पहलवान, हैत अमीन, बाजार अमीन, इस्माईल, मीर आखुर, नार करावुलबेगी, नारमुराद पहलवान, नारमत और शाहिम थे। उनके पीछे-पीछे पाँच-पाँच की पाँती में विजयी दल गाँवों, हारों और सड़कों को अपने विजय-गान से गुजरते चल रहा था।

हम सभी चल रहे क्रान्ति के मार्ग में हम विजय पा गये, बासमची नष्ट हुआ।
पिछले युग में हमारी अवस्था थी जैसे शृगाल-चंग में मुर्ग भेड़िये के मुँह में मेष।
हमारे शासक थे बाय-मुल्ला-खान पाषाण देते जो माँगते रोटी हम।
हम सभी चल रहे०।

बीते युग के हम गुलाम अपमान बिना कुछ न पाते थे।
उस युग में हम काराबद्ध थे हथकड़ी-बेड़ी से हम जकड़े थे।
हम सभी चल रहे०।

उस अन्यायी युग से हम निकल आये हम उन अन्यायों को फिर न देखेंगे।
मजूर वर्ग हमारा सहायक हुआ कम्युनिस्ट दल पथप्रदर्शक हुआ।
हम सभी चल रहे०।

हमने तोड़ा उस हथकड़ी-बेड़ी को हमने फेंका उस लोहे के तौक को
हम उस बाढ़ की लहर को पार हुए हम नील के परले पार आ गये।
हम सभी चल रहे०।

जग के पूँजीवादी हैं क्रुद्ध किन्तु इन वृकों से हम न हैं भीत।
हम दुनिया को अन्याय से मुक्त करें जैसे काँटे से उद्यान मिट्टी से भवन को।
हम सभी चल रहे०।

लेनिन के सारे वचनों को याद रखते स्तालिन के वचनों पर चलते हैं हम।
पुरान युग को नष्ट निर्बल करें जग में सर्वथा दूसरा युग लावें।
हम सभी चल रहे०।

गगन में पक्षी जिमि उड़ते हैं हम भूपर धारा-सी बहते हैं।
हिम-उपत्यका में चमकती बिजली हम जलस्थल में वेग से चलते हैं।
हम सभी चल रहे०।

निर्माण-पथ में शीघ्रकारी हैं हम पूँजीप्रसाद को कम्प-कम्पित करते
समाजवाद को दृढ़ मूल करेंगे हम जग को अपना प्रशंसक बनायेंगे।
हम सभी चल रहे०।

पंचम खंड

कलखोज (पंचायती खेती)

(१९२३-३४ ई०)

१

बेखेतों को खेत

जाड़ों का अंत था। अभी वसन्त का आरम्भ नहीं हुआ था, तो भी सूर्य प्रतिदिन बराबर बर्फ को पानी बना चारों ओर पानी-पानी कर रहा था।

खेतों में घास और गेहूँ के पहले बूटे निकल रहे थे। दीवारों और निचली जगहों के जो भाग सूर्य के सामने पड़ते थे, वे सूख गये थे और वहाँ आदमी लेट-बैठ सकते थे। सारे लम्बे जाड़े में बे-धूप बे-हवा के ढोरखानों में बँधे पशुओं को लोगों ने कूचों में लाकर धूप में खड़ा कर दिया था। बैल, गाय, बछड़े सामने रखे चारे को न खा अपने पैरों को फैलाकर लेटे शरीर को चाट रहे थे। गदहे पैरों को फैला उन्हीं पर सिर रखे पीठ पर कौओं के चोंच मारने की पर्वाह न कर पिनक ले रहे थे।

—आदमियों और पशुओं का धूप लेते बैठना, मक्खियों का चिपटना, कूचे में बच्चों का लँगड़ी कूदते घरों को फाँदते खेल खेलना, मैदानों में दौड़ते, जुम्—म्-म् करते, अकाल-चोलक खेल खेलना—यह जीवन की क्रियाएँ थीं, जो जाड़े की नीरवता में कुछ महीनों तक लुप्त रहने के बाद पहिली बार प्रकट हुई थीं। सारे जाड़े भर बंद, कंडे और काँटों की आग और धुओं से काले और दुर्गन्धित घरों से स्त्रियाँ अपने चर्खों, ओटनियों, झूलों और दूसरी काम की चीजों को निकालकर, चबूतरों पर रख, मचियों पर बैठी काम कर रही थीं। मर्द भी धूप में बैठे अपना काम कर रहे थे। तकलमची बाबा मुराद के द्वार के सामने गाँव की सबसे अधिक धूपैहली जमीन में कितने ही आदमी कपास ओट रहे थे। उनमें से एक ने कहा—यह जाड़ा काम का जाड़ा होकर आया। यदि एक-दो दिन और इसी तरह धूप रही तो खाद को खेतों में ले जा, उन्हें तैयार करके वसन्त की खेती का काम आरंभ कर सकेंगे, शरद में न बोये खेत जोते जा सकेंगे।

—जाड़े में इतनी गर्मी होना शुभ लक्षण नहीं है—लोगों से अलग अपने दरवाजे के बाहर चबूतरे पर कालीचा बिछाकर बैठे बाबा मुराद तकलमची ने कहा—यदि छ मास बर्फ और वर्षा पड़े, जाड़ा अपने जाड़ेपन को दिखलाये,

तब किसान अपनी जमीन से फसल पा सकता है। किन्तु यदि जाड़ा शुष्क हुआ तो गर्मी में फसलें सूख जाती हैं।

—ठीक है—एक आदमी अँगड़ाई लेते बोला-—यदि जाड़ा बे-वर्षा या कम वर्षा का हो तो अवश्य फसल नहीं होगी, लेकिन यह जाड़ा इस तरह शुष्क जाड़ों में नहीं है। दो महीनों तक लगातार खूब वर्षा हुई। अब उसने कुछ रुककर खाद डालने और खेत जोतने का अवसर दिया।

जामा को सिर के नीचे रखकर लेटे एक बूढ़े ने तकलमची की ओर निगाह करके कहा—खुदा न करे, हमारे देश में छ महीने का जाड़ा हो। ऐसा होने पर खेती का एक भी काम पूरा नहीं होगा। हमारे यहाँ के किसान अधिकतर कपास, तरकारी और बागदारी का काम करते हैं। हमारे यहाँ तुला (सितम्बर), कर्क (अक्तूबर) और धनुष (नवम्बर) को कुछ शुष्क होना चाहिये, नहीं तो हम अपनी शरद की फसल को, विशेषकर कपास को न जमा कर सकेंगे, न शरद की बोआई कर सकेंगे। और इसी तरह मार्च-एप्रिल के महीने यदि गरम न हुए और जमीन न तैयार हुई, तो हम कपास और तरकारी को समय पर न बो सकेंगे।

—दुनिया में ऐसे स्थान हैं जहाँ छ महीनों तक जाड़ा, हिमवर्षा रहती है। वहाँ कैसे खेती करते हैं?—तकलमची ने गर्वोक्ति की।

—छ महीने से अधिक के जाड़ावाले देश भी हैं, यह ठीक है; लेकिन वहाँ के किसान सभी तरह के अनाज नहीं पैदा करते। वे तरकारी की खेती करते हैं, जिसके लिए जितनी अधिक वर्षा हो, उतना ही अच्छा। उन्हें तो गर्मियों में भी वर्षा की आवश्यकता होती है। लेकिन हमारे यहाँ "जाड़े में साँप बरसे अच्छा है बरसा से" की कहावत है—बूढ़े ने कहा।

—मेरे विचार में यह जाड़ा हमारा सबसे अच्छा रहा—कैंची दाढ़ीवाले गफूर ने अपनी पहिली बात को दुहराते हुए कहा—शरद ऋतु सूखी रही, सारी फसल की कटाई ठीक से हुई और खेतों को बो दिया। जाड़े के दो मासों में खूब वर्षा हुई और अब समय पर मौसिम गरम है।

—६० साल का मेरा अनुभव भी यही बतलाता है—बूढ़े ने गफूर की बात का समर्थन करते हुए कहा।

—चचा बाय का दर्द किसान के लिये नहीं, किसी दूसरी बात के लिये है—जूता मरम्मत करनेवाले आदमी ने कहा—हमारे गाँव के आधे आदमी किसानी

करते हैं। वे गर्मियों में किसानी करते हैं, तो भी जाड़ों में चचा बाय का काम करते हैं। बाय लोग बाजारों या गाँवों से अपने गदहों पर पुराने जूतों और बूटों को एक-आध रूबल में खरीदकर जमा करते हैं। एक बूट पर एक रूबल का सामान लगवा मेरे-जैसे लोगों से सिलवाते हैं। सिलाई के लिये एक रूबल मजूरी देते हैं। लेकिन उस तकलमा (मरम्मत) किये बूट को, जिसपर तीन रूबल खर्च हुआ है, बाजार में ले जाकर कम-से-कम बीस रूबल में बेचते हैं।

—लेकिन व्यवसाय क्या पाप है ?—बाय ने चिल्लाकर कहा—एक आदमी खेती करता है, दूसरा दलाली करता है, तीसरा चावल विक्रय करता है, मैं बूट-विक्रय ही करता हूँ। मेरे इस व्यवसाय से जाड़े की सर्दी या गर्मी से क्या संबंध ?

—अभी मेरी बात समाप्त नहीं हुई अकाबाय थोड़ा धीरज धरो, मैं बतला देता हूँ कि तुम्हारा दर्द कहाँ है—बूट सीनेवाले ने कहा—मौसिम गर्म हुआ, किसान का काम आरंभ हुआ, तो कारीगर-किसान जिनके पास एक तनाब या आधा तनाब जमीन है, किसानी के काम पर चले जायँगे और बाय का काम ठप्प हो जायगा। मुझे ही ले लो, मैं एक सिलाई करनेवाला हूँ। अच्छा मौसिम देखकर मैंने चाहा कि सिलाई छोड़कर खेती के काम पर जाऊँ; लेकिन बाय ने "सिर्फ एक सप्ताह काम करके अगले सप्ताह तेरी इच्छा" कहकर रोक दिया। मैंने भी इनकार करना पसन्द नहीं किया, नहीं तो कब का खेतों में चला गया होता।

—तेरे एक सप्ताह अधिक काम करने से मुझे क्या लाभ ?—एक सप्ताह कम काम करने से मुझे क्या हानि ? बाय ने गर्म होकर कहा—मैंने तो हाथ के कामों को अधूरा न रखने के लिये कहा था, नहीं तो तू काम करता है अपने लाभ के लिये न कि मेरे लिये !

एक सप्ताह मेरा अधिक काम करना तुम्हारे लिये अधिक लाभ का है अका-बाय !—जूता सीनेवाले ने कहा—यदि मैं एक सप्ताह में छः बूटों का तकलमा करके तुमसे छः रूबल लेता हूँ, तो उन्हीं छः बूटों से तुम सौ से अधिक रूबल लाभ उठाते हो। एक सप्ताह मेरे काम न करने से तुम सौ रूबलों से वंचित होते हो, यदि बीस कारीगर तुम्हारा काम छोड़कर किसानी पर चले गये, तो तुम्हें दो हजार रूबल से वंचित होना पड़ेगा। यही कारण है कि ऋतु के गर्म होने से जहाँ सभी खुश हैं, वहाँ तुम जल-भुन रहे हो।

—हिसाब करना सिर्फ बाय ही नहीं जानते—अब तक बात में साथ न हुए

रजिस्टर पर कलम चलाते एक दाढ़ीमुड़े आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा—सोवियत सरकार की छाया में कमकर भी हिसाबदान (गणितज्ञ) बन गये।

—मैं इन कामों को लाभ के लिये नहीं करता—बाय ने कहा—बल्कि इसलिये करता हूँ कि अपने गाँव के सीनेवाले, जिनके पास आज काम है, कल नहीं, बेकार न रहें। नहीं तो इस तरह के जमाने में लाभ होने से न होना ही अच्छा है।

—जमाने को क्या हुआ अकाबाय?—रजिस्टरवाले आदमी ने कहा।

—जमाना दिन प्रतिदिन बुरा होता जा रहा है—बाय ने कहा—जनाब आली भाग गये और उनकी जगह हकूमतें आकर बैठीं। यह भी गनीमत थी, जो भी हो, हमारे आदमी तो थे। खुदा ने उनके दिन भी पूरे कर दिये। बुखारा हाथ से निकल गया और तुर्किस्तान में मिल गया। लोग अपनी धरती-पानी से विलग हुए। नहीं मालूम, आगे क्या होनेवाला है?

—सब मालूम है—दाढ़ीमुड़े आदमी ने रजिस्टर को बंद करके आगे रखते हुए कहा—लेकिन असली बात पर पर्दा डालकर ऐसी चीजों के बारे में बात कर रहे हो, जिनसे लोगों में खलबली मचे।

—कैसे-कैसे?—आश्चर्य कर बाय ने कहा।

—सब्र करो, मैं समझाता हूँ—दाढ़ीमुड़े आदमी ने कहा—जब तुम अपने जनाब आली से विलग हुए, तो बुखारा जन पंचायती राज्य की सरकार तुम्हारे लिये अवश्य बेहतर थी; क्योंकि उसने तुम्हारे धरती-पानी की मिल्कियत पर हाथ नहीं बढ़ाया। तुम एक ओर बूट बेचकर पैसा जमा कर रहे थे और दूसरी ओर अपने धरती-पानी को पहिले से भी अधिक बढ़ा रहे थे। यह तुम्हारे लिये बहुत भारी गनीमत थी। दूसरी ओर बे-जमीनवाले गरीब भी पहिले की तरह तुम्हारे द्वार पर तुम्हारे नीचे काम करते रहे। यह तुम्हारे लिये दूसरी गनीमत थी।

—इन सबके ऊपर यह कि जमीन पर स्वामित्व और उसके क्रय-विक्रय का अधिकार मौजूद था; इसलिये कितने ही किसान हाथ तंग होने पर अपनी जमीन तुम्हारे हाथ में बेचकर तुम्हारे द्वार पर नौकर, मजूर, बटाईदार बनने के लिये मजबूर होते—छँटी दाढ़ीवाले गफूर ने मुड़ी दाढ़ीवाले आदमी का समर्थन करते हुए कहा।

दाढ़ीमुड़े आदमी ने फिर कहा—हाँ, यह तुम्हारे लिये तीसरी गनीमत थी। बुखारा जन पंचायती प्रजातंत्र जब सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र के रूप में परिणत

हो गया, फिर उसके बाद मध्य-एशिया में जातियों के निवास के अनुसार फिर से सीमाएँ बनीं और उजबेकिस्तान और ताजिकिस्तान के सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र स्थापित हुए, तो तुम्हारी जान निकलने लगी। क्योंकि उन्होंने कानून बनाकर धरती पर से वैयक्तिक संपत्ति और क्रय-विक्रय का अधिकार उठा दिया।

—और इसके द्वारा—गफूर ने कहा—तुम्हारे जमीन के बढ़ाने और कम जमीनवाले किसानों को अपनी जमीन तुम्हारे हाथ में बेच बेजमीन बनकर तुम्हारे द्वार पर नौकर और बटाईदार बनने का रास्ता भी बंद कर दिया।

—हाँ—दाढ़ीमुड़े आदमी ने कहा—तुम इसी बात के लिये कह रहे हो "बुखारा हाथ से निकल गया"। बुखारा कहाँ गया? बुखारा अब भी अपनी जगह पर है। जिन लोगों ने बुखारा जन पंचायती प्रजातन्त्र का नेतृत्व किया था, वही समाजवादी उजबेकिस्तान का नेतृत्व कर रहे हैं। कानून ने भूमि पर से वैयक्तिक संपत्ति और क्रय-विक्रय के अधिकार को हटा दिया, इसे तुम लोग "अपने धरती-पानी से अलग हो गये" कहते हो। किसकी जमीन हाथ से छीन ली गयी? नारमुराद अका-जैसे कम जमीनवाले किसानों की जमीन आज नहीं तो कल हाथ से निकलने जा रही थी, इस कानून ने उनकी जमीन को उनके हाथ में रहने के लिये और मजबूत कर दिया।

—ठीक है—एक कपास ओटनेवाले आदमी ने समर्थन करते कहा—अपने बाप की १० तनाब जमीन मेरे पास थी। अमीर के जमाने में मालगुजारी के लिये कर्ज ले-लेकर दो तनाब इन्हीं अकाबाय के हाथ बेच दिया। फिर स्त्री मर गयी, कब्र-लकड़ी, बीसा-चालीसा, खुदा और वार्षिक भोज में कर्जदार बना और दो तनाब और बेचना पड़ा (क्रान्ति के बाद नये जमाने में भूख के मारे अकाबाय से दो मन (आठ मन) गेहूँ लिया और दो तनाब फिर इन्हीं अकाबाय के हाथ में बेचना पड़ा। दो तनाब और बेचकर लड़के का खतना-संस्कार करने जा रहा था कि कानून ने जमीन के क्रय-विक्रय को बंद कर दिया। अब संस्कारोत्सव भी नहीं कर सकता और जमीन भी नहीं बेच सकता। इसी कानून की मेहरबानी से दो तनाब जमीन अपने हाथ में रह गयी।

—इस फरमान के जारी होने से पहिले—गफूर ने कहा—कम जमीनवाले किसानों के पास जो जमीन थी भी, वह मुशरिब दीवाना (पियक्कड़ साधु) के गदहे-जैसी थी।

—जमीन का गदहे से क्या सम्बन्ध ?—परिहास करके मुस्कुराते बाबा मुराद तकलमची ने कहा ।

—कम जमीनवालों की जमीनों का पियक्कड़ साधु के गदहे से भारी सम्बन्ध है—गफूर ने कहा । पियक्कड़ साधु नमगान शहर से बलख (वाह्लीक) के लिये एक कमजोर गदहे पर सवार होकर चला । जब वह चूल-मिरजा (मिरजा-मरुभूमि) में पहुँचा, तो वहाँ उसने भेड़ों के झुंड के झुंड, गाय-बैलों के गल्ले के गल्ले और ऊँटों की पाँती की पाँती देखी । साधु ने चरवाहों से पूछा—"इनका मालिक कौन है ?" उन्होंने जवाब दिया—"खोजा अहरार ।"[1] साधु चलते-चलते जामिन, जिज्जक, यंगी कुरगान में गेहूँ और जौ के खेतों की पकी बालियों से धरती सुनहली बनाते देखकर वहाँ के किसानों से पूछा कि इनका मालिक कौन है ? किसानों ने जवाब दिया—"इनका मालिक खोजा अहरार है ।" साधु वहाँ से आगे चलकर समरकन्द पहुँचा । उसने शहर की चारों ओर मेवाबागों, फुलवारियों, चक्कियों तथा नहरों को और शहर के भीतर सड़क-सड़क पर दूकानों और कारवाँ-सरायों की पाँतियों को देखकर उससे वहाँ के आदमियों से पूछा—"इनका मालिक कौन है ?" जवाब मिला—"खोजा अहरार ।" साधु फिर आगे चला और करशी, गुजार, शेराबाद होते तिर्मिज पहुँचा । वहाँ भी मैदानों में भेड़ों के झुंड और खेतों में लहलहाती फसल को देखकर पूछा—"इनका मालिक कौन है ?" वहाँ के लोगों ने जवाब दिया—"खोजा अहरार ।" साधु अपने गदहे से उतर पड़ा और गदहे की पीठ पर एक डंडा जड़ते "जा तेरा भी मालिक खोजा अहरार है" कहकर उसे भी खोजा अहरार के गल्लों में डालकर हाथ में डंडा लिये पैदल चल पड़ा ।

छँटी दाढ़ीवाले गफूर ने कहानी समाप्त करते हुए कहा—इस फरमान के जारी होने से पहिले कम जमीनों की जमीन पियक्कड़ साधु के गदहे की तरह अधिक जमीनवालों के पास जाने को तैयार थी; लेकिन इस फरमान के निकलने के बाद कोई अपनी जमीन को पियक्कड़ साधु के गदहे की तरह धनियों को नहीं दे सकता, क्योंकि फरमान ने जमीन के दान को भी वर्जित कर दिया ।

ठीक, अका गफूर की कहानी बहुत ठीक है—दाढ़ीमुड़े आदमी ने कहा—तकलमची बाय का कहना ठीक नहीं है । लोगों की जमीन उनके हाथ से छीनी नहीं

---

१. मध्य-एशिया का एक प्रसिद्ध धर्माचार्य था ।

गयी, लेकिन बहुत संभव है कि तुम्हारे-जैसे बायों की जमीन छीन ली जाय; क्योंकि अपनी जमीनों में नौकरों और कारिन्दों से खेती कराकर तुमलोग स्वयं बाजारों में घूमते फिरते हो। लेकिन इस तरह छीन लेने पर भी खेतों को कोई उठाकर न ले जायेगा। उन्हें उन्हीं नौकरों, गुलामों, बटाईदारों और दूसरों में बाँट दिया जायेगा, जो अब तक भूखे-प्यासे उन्हीं खेतों में काम करते थे। तुम इसी आनेवाली घटना से डर रहे हो और इसी डर को "मालूम नहीं क्या होनेवाला है" के वाक्य में छिपाकर चाहते हो कि लोग भी डरने लगें। लेकिन इसे गाँठ बाँध रखो कि अब जाँगर चलानेवाले किसान तुम्हारे-जैसे बायों की बात में पड़कर धोखा नहीं खायेंगे।

—यदि धोखा भी खायें तो भी तुरन्त उससे निकल आयेंगे—गफ़ूर ने कहा—क्योंकि अब मजूर-वर्ग के अन्दर उनकी पथप्रदर्शिका कम्युनिस्ट पार्टी है, जो जाँगर चलानेवाले किसानों की सहायक है, उन्हें हर बात को समझाती है।

—यदि जमीन किसी के हाथ से नहीं छिनी गयी, तो गाँव की मस्जिदवाले मकतबों (पाठशालाओं) की धर्मोत्तरभूमि को क्यों ले लिया गया और मकतब क्यों बंद हो गये ? और आज जैसे पढ़ने के मौसिम में मकतब न होने से गाँव के लड़के कूचों में इश्तीबाजी और अकालबाजी खेलते फिर रहे हैं—कहते बाय ने सवाल किया।

—ठीक मकतब की धर्मोत्तर भूमि ले ली गयी—दाढ़ीमुड़े आदमी ने कहा—लेकिन उस जमीन को कोई उठा नहीं ले गया, बल्कि वह जमीन उस किसान को दी गयी, जो खुद भूखे रह उसी जमीन में काम कर पैदावार से मकतब के मुल्ला का पेट भरता था। मस्जिदवाला मकतब (मंदिर की पाठशाला) लोगों की बुद्धि को नष्ट करता था। धर्मोत्तर संपत्ति से वंचित होने पर वह अपने आप बंद हो गया, लेकिन देख नहीं रहे हो, उसकी जगह ग्राम-सोवियत (पंचायत) की ओर से स्कूल खोला गया है, जिसपर प्रतिवर्ष दस हजार रूबल खर्च होता है।

—जो लोग इन मकतबों में अपने पुत्रों को नहीं भेजते, उन्हें इनसे क्या लाभ ?—बाय ने कहा।

—लोग अपने बच्चों को सोवियत स्कूल में भेजेंगे और जाँगर चलानेवालों में काफी भेज भी रहे हैं, लेकिन तुम और तुम्हारे मुल्ला "सोवियत स्कूल बच्चों को काफिर बनाता है" कहते लोगों को बहका रहे हो।

इसी समय ग्राम सोवियत से तुरन्त आया एक सवार घोड़े से उतरकर खुर्जी से कागज निकाल उसे दाढ़ीमुड़े आदमी के हाथ में थमाते हुए "अका सियारकुल ! इस कागज को पढ़कर लोगों को समझाओ" कहकर फिर घोड़े पर सवार हो दूसरे गाँव की ओर दौड़ गया।

दाढ़ीमुड़ा आदमी अर्थात् सियारकुल एक बार ऊपर से नीचे तक नजर दौड़ा-कर मुस्कुराते हुए पढ़ने लगा।

"इस पत्र के द्वारा बेजमीनों, कम जमीनों और साधारण जाँगर चलानेवाले किसानों को सूचित किया जाता है कि सोवियत सरकार नवनिर्माण के प्रथम फलस्वरूप तूमान शाफिरकाम में आजकल बालू से पट गयी जिलवाँ की ऐतिहासिक नहर को फिर नये तौर से खोदकर उसमें पानी लाने जा रही है। इस नयी नहर की सिंचाई से जो नयी जमीन आबाद होगी, उसे बेजमीनों, कम जमीनों और खेती करने की इच्छा रखनेवाले साधारण जाँगरियों में बाँट दिया जायगा। मजदूरों की सहायता और सोवियत-संघ के कमकरों की यान्त्रिक कला की सहायता से नहर खोदने का काम शुरू हो गया है। जो जाँगर चलानेवाले नहर खोदने में काम करना चाहते हैं, उन्हें प्रतिदिन पाँच रूबल और काफी गर्मागर्म रोटी तथा भोजन दिया जाता है। निवेदक बुखारा प्रांतीय धरती-पानी विभाग द्वारा प्रस्तावित जिला (रायन) पंचायत द्वारा स्वीकृत। घोषणापत्र पढ़ना समाप्त होते ही जूता सीनेवाला "जिन्दाबाद सोवियत सरकार" कहते उठ खड़ा हुआ और एक अधसिले और दूसरे न सिले जूते को बाबा मुराद तकलमची की ओर फेंकते हुए बोला—"अकाबाय, इन्हें घर से खाना खा सबेरे से शाम तक काम करके तुमसे एक रूबल पाने के लिये सीता था। अब मैं इनकी जगह जाकर जिलवाँ में काम करूँगा, जिससे देश आबाद होगा, बेजमीनों को जमीन मिलेगी और खाने-पीने के अतिरिक्त नहर में काम करने के लिये पाँच रूबल नगद भी मिलेगा।

बाय इसे अपना अपमान समझकर गुस्से से लाल हो गया और उसने खड़ा होकर न सिले जूते को "गुलाम बदरग" कहते जूता सीनेवाले के ऊपर फेंका। उसने सिर नीचा करके अपने को चोट से बचा लिया।

—यदि समद गुलाम बदरग (दास—नीच) है, तो मैं भी गुलाम बदरग हूँ—कहते गफूर ने अपनी ओढनी के तकले को बाय के ऊपर फेंका। तकले का किनारा

जाकर बाय के सिर पर लगा और वहाँ से खून बहने लगा। लिलार से आँख की ओर टपकते खून को पोंछते बाय ने दौड़कर गफूर को पकड़ा और दोनों में मार-पीट होने लगी। समद भी दौड़कर आया और एक हाथ में बाय की लम्बी दाढ़ी को लपेटकर दूसरे से उसे पीटने लगा।

नारमुराद ने कपास ओटना छोड़ दौड़े-दौड़े आकर "अकाबाय, ठहरो, लड़ना अच्छा नहीं" कहते उसके दोनों हाथों को मजबूती से पकड़ लिया और अभी तक बाय जो एक-आध मुक्का मार भी लेता था, अब उसका काम सिर्फ मुक्काखोरी ही रह गया। लात लगने के डर से अलग जाकर दीवार के सहारे बैठे "अधिक नर्म जगह में न मारना रे" कहते सीख दे रहा था।

सियारकुल ने मार खाकर बाय को जमीन पर गिरते देख बीच में पड़ते हुए कहा—मारो नहीं, यह कानून के विरुद्ध है, यदि उसने तुम्हें "गुलाम बदरग" कहकर तुम्हारा अपमान किया, तो इसे न्यायालय में देना चाहिये।

कड़ी चोट और खून बहने से बाय की अवस्था बुरी थी। वह बहुत हिम्मत करके उठा; किन्तु सिर में चक्कर आने से फिर जमीन पर गिरते कूचे के बीच कीचड़ में जा लुढ़का और मतवाले शराबी-जैसा दिखलाई पड़ा। उसके सिर से पैर तक—दाढ़ी, मुँह, आँख, भौंहें—सभी जगह कीचड़ थे। वह फिर उठकर किंकर्तव्य बिमूढ़ हो इधर-उधर देख रहा था। इसपर सियारकुल ने कहा—अकाबाय! तुम्हारी हवेली इस ओर है, जाओ मैं इनको रोके हुए हूँ।

बाय ने रक्तमिश्रित कीचड़ को आस्तीन से पोंछकर देखा कि सचमुच सियार-कुल ने गफूर और समद को पकड़ रखा है। वह धीरे-धीरे पराये गाँव के कुत्ते की तरह डरते-डरते अपनी हवेली की ओर चला। अपने पीटनेवालों के सामने पहुँचने पर घबड़ाकर एकबारगी दौड़ा और अपने फेंके एक पैर के जूते को उठाकर घर के दरवाजे के भीतर भाग कुंडी लगा करके "बदरगो, गुलामो, भुक्खड़ो" कहकर गाली देते भीतर चला गया।

गाँव में वर्गयुद्ध आरंभ हुआ।

२

शत्रु अपने भीतर

"नहीं आती है जिलवाँ जलसे साँस सूखे से गुलामों की नाव नष्ट हुई।
यदि जल आता भी तो अश्रु-सा हमारे मुखों से शोक-धूलि नहीं धो सकता ॥"

इस तरह के गीत जिलवाँ के बारे में पहिले जमाने में गाये जाते थे। लेकिन अब अवस्था दूसरी थी। अब जिलवाँ का जल आँसुओं की भाँति बूँद-बूँद नहीं आता था। अब वह वस्तुत: रूद (नहर) हो गयी थी। उसका पानी नलके की सरसराहट की तरह आता था। जिलवाँ के किनारे की बालुका-भूमि, कंकरीली भूमि, सोरेह भूमि का कहीं पता नहीं था। अब उनकी जगह नियमबद्ध नहरें खिची थीं, चकबद्ध खेत, पाँती से बोये कपास और मोटर-हलों से जुते खेत थे। छायाहीन, पुराने बयाबान में नहरों के किनारे पाँती से बेद और सफेदे के वृक्ष लगे थे और दूर चलायमान बालू के मार्ग को रोकने के लिये फरास के नये पौधे लगे दिखाई पड़ रहे थे।

रूद-जिलवाँ अब वह जिलवाँ नहीं है, जिसे गुलाम, बेजमीन किसान साल में कई बार खोद-खोदकर आँखों के आँसुओं की तरह पानी निकालकर खेती करते और उस आँसू-जैसे पानी के सूख जाने पर "नहीं आती" वाले गीत गाते। अब रूद-जिलवाँ को सूखने या बालू से भरने का डर नहीं था। उसे नये जमाने की यंत्र-विद्या के अनुसार आदि से अन्त तक ऊँचाई-नीचाई को देखकर खोदा गया है, इसलिये वह सर्राटे के साथ बह रही थी। पानी बहने के समय कीचड़ जमने या बालू भरने की बात तो अलग, यदि वह विद्यमान भी हो, तो पानी उसे खोदकर अपने साथ बहा ले जाता। कुछ मीलों के बाद नहर में फाटक और किवाड लगाये गये थे, जिसमें नहर की अवस्था को स्वाभाविक रखा जा सके। इसके अतिरिक्त इन्हीं फाटकों और किवाड़ों, जहाँ से छोटी नहरों में पानी जाता—के किनारे लगे वृक्षों की छाया में नहर को मिट्टी से भरने, किनारे के नष्ट होने या पानी के धरती के भीतर घुसकर बैठने से बचाने के लिये भी तदबीर की गयी थी।

दरगात से बाग-अफजल और तेजगुजार की ओर जानेवाली नहरें निकली

थीं, जिनके ऊपर लगे बेदों की हरियाली ने इस पुराने जले सूखे बयाबान को एक दूसरी ही शोभा प्रदान कर रखी था। अब जिलवाँ तटवासी भूतपूर्व गुलाम-नौकर-मजदूर दूसरी ही तरह के गीत गाते थे।

"जिलवाँ तट हुई फुलवाड़ी फुलवाड़ी में मस्त-सा बहता जल।
गोल बिम्ब से फूते लाला फूल जैसे लाल का प्याला कर में।
चाकर कमकर बैठे प्रसन्न प्राणों का अन्याय अब हुआ समाप्त।"

× × ×

शरद् का समय खेत काटने का मौसिम है। पहले समय के गुलाम-नौकर-मजदूर और बेजमीन के जाँगर चलानेवाले जिलवाँ के किनारे जमीन लेकर खेती करते, अब फसल काटने के लिये वहाँ अपने बीबी-बच्चों को भी ले आये थे। दिन बहुत गर्म था। लोग सवेरे से शाम तक खेतों में काम करते रहे। रात को उन्होंने तेजगुजार की नहर के किनारे बैठकर खाना खाया। अगले दिन सवेरे से ही काम करने विचार से गाँव न जा वह वहीं लेट रहे। एक लेटे हुए बूढ़े ने क्षितिज के ऊपर आते चंद्र-बिम्ब को देखकर कहा।

—कोई एक गजल गाता कि दिल बहलता।

—गा—एक जवान ने दूसरे जवान से कहा।

—तू गा—जवाब मिला—तू हर समय गजल गाता फिरता है। मैं गजल गाना क्या जानूँ?

—"हा लैली" को गाऊँ?—एक दूसरे जवान ने पूछा।

—"हाँ हाँ", "हा लैली" गाओ—की आवाज चारों ओर से आयी।

—हाँ, "हा लैली"—गा—बूढ़े ने भी कहा।

जवान मंडल बनाकर बैठ गये और ताली बजाते ताल देने लगे। एक जवान ने गाना आरंभ किया।

हा लैली, लैली, लैली, मेरी जान फिदा हूँ लैली!

इस पद को सबने मिलकर दोहराया।

—एक को खड़ा करो कि वह नियमन करे—बूढ़े ने अपनी जगह लेटे-लेटे कहा।

—फातिमा! तू खड़ी हो—एक जवान ने इसपर जोर देकर कहा।

—मुझे नियमन करते तूने कहाँ देखा? मैंने इससे पहिले कब खेल में भाग लिया था—लड़की ने लज्जित होकर कुछ उत्तेजित स्वर में कहा।

—इससे पहिले तुम लड़कियों को मैंने मुँह खोलकर घूमते भी नहीं देखा था—बूढ़े ने कहा—सोवियत सरकार की कृपा से काले बुर्के और घर के जेलखाने से मुक्त हुई। मर्दों के साथ एक जगह खूब काम करती फिरती हो, विश्राम के समय साथियों के साथ जरा खेल-तमाशा करने में हर्ज क्या है?

—पहिले मुहब्बत आपा (बहिन) खड़ी होकर खेल आरंभ करा दे, नहीं तो फातिमा लजाती ही रहेगी—एक जवान ने कहा।

—ठीक है—बूढ़े ने कहा। मुहब्बत लाल गोरिल्ला स्त्री है। वह स्वयं बायों और बासमचियों के विरुद्ध लड़ी और सबसे पहिले फरंजा (बुर्का) उतार फेंकनेवाली बनी; इसलिये सबसे पहिले उसको ही खड़े होकर खेल शुरू कराना चाहिये।

इस विचार को सबने पसंद किया। मुहब्बत ने भी अधिक नाज-नखरा न करके कहा—खैर, तुम्हारी यही इच्छा है, तो मैं शुरू करा देती हूँ।

—हम शुरू कर रहे हैं—एक जवान ने कहा।

—शुरू करो।

ताली शुरू हुई। मुहब्बत नियमन के लिये खड़ी हुई। एक जवान ने गाना शुरू किया :

हा लैली, लैली, लैली, मेरी जान फिदा हूँ लैली!

ताली बजानेवालों ने इस पद को एक साथ गाकर दुहराया। मुहब्बत नियमन करते खेल के वृत्त का चक्कर लगा वृत्त के बीच में खड़ी होकर बोली :

रूदे जिलवाँ के किनारे है हुआ गुलिस्ताँ।

दूसरे : हा लैली, लैली, लैली० !

मुहब्बतः

फूला कपास हर तरफ जैसा कि फूल बोस्ताँ

दूसरे : हाँ लैली, लैली, लैली०।

मुहब्बत चुप हो गयी और एक जवान ने दुहराया।

फूला कपास हर तरफ जैसा कि फूल बोस्ताँ,

दूसरे : हा लैली, लैली, लैली० !

जवान : चिनकची ढोढों को लिये

हाथों में प्याला-सा लिये

दूसरे : हा लैली, लैली, लैली० !

मुहब्बत : बायों की चोट से नहीं···हरगिज हताश हो सके।

मुहब्बत के पद गाने पर ताली बजाकर सबने प्रसन्नता प्रगट की और तालियों के बीच में 'जीती रहो, शाबाश" की भी आवाज आयी। मुहब्बत अपनी जगह जाकर बैठ गयी। दूसरे जवान ने मुहब्बत के अंतिम पद में जोड़ दिया :

हम उनके मुँह पर मारते डंडा हँसिया के हाथ से।

वान के लिये ताली बजी और "जीते रहो, शाबाश" भी कहा गया।

—यदि मैं—किसी ने कहा—बाबा मुराद तकलमची के हाथों को न पकड़ता तो वह मारकर गफूर के सिर को फोड़ देता। शाबाशी देते वक्त तुम मेरे कामों को क्यों भूल जाते हो?

—खैर, ऐसा ही सही, अका नारमुराद भी जिन्दाबाद—मुहब्बत ने हँसते हुए कहा।

"जिन्दाबाद, जिन्दाबाद" कहते सब हँस पड़े।

"अब फातिमा की बारी है" की आवाज चारों ओर से आयी।

—अच्छा, ऐसा ही हो—फातिमा ने कहा—मैं और हसन बदेहागोई कहते गावेंगे।

जोर की ताली बजी और "ठीक, ठीक" की आवाज से सबने फातिमा की बात को स्वीकर किया। ताली से ताल दिया जाने लगा। फातिमा और उसके बगल में बैठा एक सोलहसाला नौजवान दोनों हाथ में हाथ मिलाये खड़े हो गये, फिर नियमन करते उन्होंने वृत्त की एक बार परिक्रमा कर वृत्त बनाये लोगों के बीच में आ आमने-सामने खड़े हुए। फातिमा ने बदेहा आरंभ किया—बोस्तां में पुष्प भी है।

हसन : हा लैली, लैली, लैली०!

फातिमा : हाथ में बुलबुल भी है।

हसन : हा लैली, लैली, लैली०!

फातिमा : बाय की भी फिक्र नहीं खीसे में दाम भी है।

हसन और दूसरे : हा लैली, लैली, लैली! मेरी जान फिदा हूँ लैली!

इसके बाद फिर नाचते हुए वृत्त का फिर एक बार चक्कर काटकर दोनों बीच में आमने-सामने खड़े हुए।

हसन : दिल में ग़रूर रखता हूँ।

फातिमा : हा लैली, लैली, लैली०!

हसन : पैसे से घृणा रखता हूँ ।

फातिमा : हा लैली, लैली, लैली !

हसन : हमारी मदद के लिये दो हाथ जोरदार हैं ।

फातिमा और दूसरे : हा लैली, लैली, लैली ! मेरी जान फिदा हूँ लैली !

जरा नाच करके फातिमा ने गाया : बाग में सुंबुल भी है ।

हसन : हा लैली, लैली, लैली !

फातिमा : फूल फूल फूल भी है ।

हसन : हा लैली, लैली, लैली !

फातिमा : न फिक्र मुझको काक की बाग में बुलबुल भी है ।

हसन और दूसरे : हा लैली, लैली, लैली ! मेरी जान फिदा हूँ लैली ।

नियमन के बाद हसन : वसन्त-फूल भी है ।

फातिमा : हा लैली, लैली, लैली !

हसन : यार से यारी भी है ।

फातिमा : हा लैली, लैली, लैली !

हसन : तेरा पुष्प चुनने के लिये दो हाथ काम के भी हैं ।

"जीते रहो, शाबाश ! जिन्दाबाद हसन एरगश" के नारे के साथ खूब तालियाँ पिटीं । फातिमा लजा गयी और उसके मुख का वर्ण शतपत्र गुलाब-जैसा लाल हो गया ।

"ए, क्या बात है ? मेरे नीचे पानी आ गया" कहते एकाएक उठकर बूढ़े ने सबकी दृष्टि फातिमा की ओर से हटाकर अपनी ओर खींच ली ।

—आ बाबा साबिर ! क्या स्वप्न देख रहे हो ?—एक जवान ने कहा और सब ठठाकर हँस पड़े ।

—उठो, अभी तुम्हारे नीचे भी पानी जा रहा है—बूढ़े ने गर्म होकर कहा और प्रमाणस्वरूप अपने भींगे पैरों को झटका दिया—यह काम तेजगुजारवालों की बेपरवाही से हुआ । उन्होंने अपनी नहर में पानी कर लिया और पीछे से सावधानी न रखी जिससे पानी ने नहर के किनारों के ऊपर से फैलकर सभी चीजों को खराब कर दिया ।

—आज रात तेजगुजार की नहर में पानी न था—कहते समद ने नहर के कनारे जाकर देखा और फिर कहा—अब भी पानी नहीं है ।

—उसकी फिर जाँच करेंगे—बाबा साबिर ने बात काटकर कहा—इस समय नारमुराद और समद तीन-चार नौजवानों के साथ जाकर नहर की टूटी जगह को बाँधें और दूसरे लोग पानी में उतरकर ढेर की हुई कपास को उरद और सरसों के खलिहान में शुष्क स्थान पर पहुँचायें।

किसान सब उठ पड़े। नारमुराद और समद कुछ दूसरे नौजवानों के साथ फावड़ा लेकर तेजगुजार नहर के किनारे-किनारे ऊपर की ओर चल पड़े। दूसरे बोरे, थैले, जाल, जामा जो भी हाथ आयी, उसमें डालकर कपास को पानी से निकाल खलिहान में ढोने लगे।

नारमुराद की टोली वहाँ पहुँची, जहाँ सारा पानी नहर के किनारे को तोड़कर खेत में जा रहा था और एक बूँद भी नहर में नीचे की ओर नहीं बह रहा था।

—आः तेजगुजारियो!—नारमुराद ने क्षोभ प्रकट करते हुए कहा—बदमाशी करके रूद का सारा पानी अपनी नहर में ले गये अथवा मूस के बिल या दूसरे छिद्र से पानी खुद फूट निकला।

—काम शुरू कर—समद ने कहा—तेजगुजारियों से जो झगड़ा है, उसे कल मिटाना। इस समय पानी बाँधना है।

—ऐसा ही सही, तो नंगा हो जा—कहते नारमुराद ने अपने कपड़े उतार फेंके—हम दोनों लेटकर अपने शरीर से पानी को रोकते हैं और दूसरे हमारे पीछे मिट्टी-कीचड़ रखकर बाँधें।

नारमुराद और समद नंगे हो करवट के बल पानी में लेट गये और दूसरे मिट्टी रखने लगे। इस तरह एक जगह पानी बाँध दिया गया। दूसरी टूटी जगह को भी उन्होंने इसी तरह बाँधना चाहा; लेकिन वहाँ यह ढंग सफल नहीं हुआ। बँधा पानी यहाँ आकर और तेज हो गया था। जो भी मिट्टी लाकर वहाँ डालते, वह उबलती पतीली में पड़ते नमक की तरह पानी होकर बह जाती। कानों और नाकों में थोड़ी मिट्टी रह जाने के सिवा वहाँ कुछ नहीं ठहरता। जवानों ने बहुत जोर लगाकर मिट्टी डाली, लेकिन पानी सबको बहा ले गया और मटमैले पानी को साफ होने में देर न लगी। लगातार फावड़ा चलाते जवानों के हाथों में शक्ति न रह गयी। इसी समय समद ने अपनी जगह से उठकर कहा—"हम बहुत मूर्खता कर रहे हैं। चलकर दरगात के पटरे को हटाना चाहिये।

—पागल हो गये थे सचमुच—नारमुराद भी हँसता उठ खड़ा हुआ।

सभी उठकर किनारे-किनारे ऊपर की ओर चले। नारमुराद सबसे पहिले रूद के किनारे पहुँचा और देखकर बोला—एय्, पानी को तेजगुजारियों ने चुराया क्या? अब उनको दो कामों की सजा देनी होगी—एक तो पानी चुराया, दूसरे दूसरों की सफल बर्बाद की।

सचमुच वहाँ एक नहर से फाटक के ताले और पटरे को खोलकर हटा दिया गया था, फिर दूसरी के फाटक में पहरा लगा आगे नमदा को फैला जिलवाँ के सारे पानी को तेजगुजार नहर में मोड़ दिया गया था।

—हमारे लिये एक नमदा गनीमत मिला।—एक जवान ने नमदा को खींचकर अलग रखते हुए कहा—यदि फिर नहर के किनारे रात बितानी पड़ी, तो इसे बिछाकर सोयेंगे।

नमदा के खींच लेने पर सारा पानी जिलवाँ के नीचे की ओर दौड़ पड़ा और तेजगुजार नहर की ओर का पानी भी उधर मुड़ पड़ा। पाँच मिनट में नहर में एक बूँद भी पानी न रह गया। टोली ने लौटकर टूटी जगह को बाँध दिया। इस तरह पानी रोककर समद की टोली लौटी। तब तक कपास हटाकर दूसरे भी आ पहुँचे थे। समद ने पूछा—सभी कपास बचा लिया?

—एक भाग को बचा लिया—मुहब्बत ने जवाब दिया—कुछ पानी में बहकर इधर-उधर बिखर गयी है। उसे अंधेरे में नहीं पा सके, कल जमा करेंगे।

× × ×

काम से लौटने के बाद किसानों को बात करने की रुचि न रह गयी थी। सभी नहर के किनारे के ऊँचे भीटे पर लम्बे पड़ गये। अभी उनकी आँखें मूँदी नहीं थीं कि एक सवार नहर के किनारे ऊपर की ओर आता दिखाई पड़ा।

—एक तेजगुजारी आया—कहते नारमुराद अपनी जगह उठ बैठा।

—पानी ले जाने के लिये—समद ने अपनी जगह से बिना हिले ही कहा।

—जरा आये तो—नारमुराद ने कहा—छठी का दूध निकाल दूँगा, माँ का पता बतला दूँगा। दिन भर के काम की थकावट उसपर से इनकी बदमाशी के लिये रात में हम पानी के अन्दर घुसकर काम करने के लिये मजबूर हुए।

सवार पास आ गया, नारमुराद भी लड़ने के लिये तैयार हो मुट्ठी बाँध कलाई पर ताव देने लगा।

सवार ने आकर कुछ दूर ही उतरकर घोड़े को एक बूटे में बाँध दिया और "साथियो, थके तो नहीं, तुम्हारा काम कैसा हो रहा है ?" कहते आवाज दी।

आवाज सुनते ही लड़ाई के लिये तैयार नारमुराद के खड़े रोंगटे गिरकर नरम पड़ गये; क्योंकि यह आवाज किसी तेजगुजारी की नहीं, बल्कि सफर गुलाम की थी।

—काम बुरा नहीं हो रहा है—नारमुराद ने जवाब दिया, लेकिन तेजगुजारियों ने पानी चुराया, हमारे खेत को डुबा दिया और बहुत-सी कपास बर्बाद हो गयी।

औरतों के बीच सोयी मुहब्बत सफर गुलाम की आवाज सुन उसके पास जाकर बोली—सब ठीक तो है ? ऐसे असमय कैसे आया ?

—तेरे लिये खिंचकर आया—कहते सफर गुलाम भी भीटे पर बैठ गया।

—सच-सच कह—मुहब्बत ने कहा—मेरा दिल काँप रहा है, मेरा दिल काँप रहा है, तेरे आने का कोई कारण जरूर है।

—कारण है—सफर गुलाम ने कहा—लेकिन दिल कँपानेवाला नहीं, बल्कि खुश करनेवाला। जमीन के सुधार के लिये कमीशन आ रहा है।

सफर गुलाम की इस बात को सुनकर सबकी नींद उड़ गयी। तेजगुजारियों की बात भी भूल गये और सब अपनी जगह उठ बैठे। लोगों ने सवाल पूछना आरंभ किया—"कमीशन कब आता है?" "काम कब आरंभ करेगा?" "बाबा मुराद तकलमची की जमीन किनको देंगे?"

"शायद हातिम चावलफरोश की जमीन को भी बाँटेंगे।

सफर गुलाम के लिये सवालों की झड़ी का जवाब देना मुश्किल था। बूढ़े को लोग सोया ख्याल करते थे, लेकिन वह भी अपनी जगह से उठकर सफर गुलाम के पास आकर बोला—बाबा मुराद तकलमची की मेरे घर के पीछेवाली दो तनाब जमीन को मुझे दिलवाना। उसने नायब-काजी से मिलकर जाली दस्तावेज लिखवा मुझसे यह जमीन ले ली थी। बुढ़ापे में घर से दूर जिलवाँ के किनारे दौड़ने से मेरी छुट्टी कराओ।

—खैर, तुम्हारी इच्छा के अनुसार होगा—सफर गुलाम ने सभी सवालों में से बूढ़े के सवाल का जवाब दिया।

सभी ने आकर सफर गुलाम को घेर लिया। मुहब्बत ने उससे पूछा—कमीशन आ रहा है, तो क्यों उनके साथ काम न करके तू इधर आया ?

—कमीशन शाम को आयेगा—सफर ने कहा—गरीबों, बतरकों और लाल गोरिल्लों को इकट्ठा कर आधी रात तक सभा की। कमीशन में काम करने के लिये कुछ आदमियों की आवश्यकता है, और वह तुझे चाहते हैं, कल सबेरे से काम शुरू होगा। समय पर काम शुरू हो जाये, इसीलिये तुझे लाने आया।

मुहब्बत कपड़े पहनने लगी।

—बाबा साबिर को बाबा मुराद तकलमची की जमीन में से दिलाने का वायदा किया—एक जवान ने सफर से कहा—और हम क्या करें? हम क्या फिर पहिले की तरह ही जिलवाँ के किनारे काम करते रहेंगे और सप्ताह-दस दिन में एक बार घर का मुँह देखेंगे? या हमें भी अपने घरों के पास बायों की जमीन में से मिलेगी?

—कल सबेरे ही काम आरंभ हो रहा है—सफर ने कहा—बनियों, सूदखोरों-जैसे खेती का पेशा न रखनेवालों और मात्रा से अधिक जमीन रखनेवाले बायों की एक सूची बनायी जायेगी। एक बार फिर उनकी जमीन की जाँच होगी। इसी तरह बे-जमीन गरीबों, कमजमीन मजदूरों और नौकरों की भी सूची बनायी जायेगी; फिर गरीबों की साधारण सभा बुलायी जायेगी, जिसमें तुम लोगों को भी आना चाहिये। यह सभा बहुमत से जो निर्णय करेगी, उसीके अनुसार काम किया जायगा।

—तुम्हारी बात से मेरे सवाल का जवाब नहीं मिला—घर के पास जमीन चाहनेवाले जवान ने फिर कहा।

—जिस समय बँटवारे का काम शुरू होगा, तो जरूर उन लोगों को खाली हाथ नहीं रखा जायेगा, जिनकी उमर नौकरी और मजदूरी में बीती। बायों के जमीन बाँटते वक्त सबसे पहिले खेत में काम करनेवालों का ख्याल किया जायेगा।

—तेजगुजारियों के काम के बारे में क्या करेंगे—नारमुराद ने पूछा।

—तेजगुजारियों का कैसा काम?—सफर ने आश्चर्य प्रगट करते हुए पूछा।

—है—है, मालूम होता है मुहब्बत, अपा के साथ बात करते तुमने मेरी बात न सुनी—नारमुराद ने अफसोस करते कहा—तेजगुजारियों ने दरगाल (नहर के फाटक) पर नमदा डालकर आज रात को पानी की चोरी की और पानी का प्रबन्ध नहीं किया। पानी नहर को तोड़कर हमारे चुने कपास, दायीं सरसों, इकट्ठा किये उड़द और अब भी खेत में खड़ी फसल को डुबा दिया।

—इस काम को न्यायालय में देना चाहिये—सफर गुलाम ने कहा।

—जब बाबा मुराद तकलमची ने मुझे "गुलाम बदरग" कहकर गाली दी, तो अका सियारकुल की सहायता से मैंने मामले को न्यायालय में दिया ; लेकिन कोई काम न हुआ। कल-परसों कहते काम को टालते-टालते अंत में उसको बिलकुल सुला दिया।

—उस समय जिला (रायन) न्यायालय में बेगाना आदमी बहुत थे। उन्होंने बाय के कजी और मुर्ग-कबाब को खा अपने कंठ को चिकना कर मामले को दबा दिया। अब जमीन के सुधार को लेकर जिला के न्यायालय को शुद्ध किया गया है—कहते सफर ने जेब से डब्बा निकालकर एक सिगरेट जलाया और कुछ देर सोचकर फिर कहा—लेकिन हो सकता है, यह काम तेजगुजारियों का न हो, वह पानी चोरी नहीं करेंगे, इसकी उन्हें आवश्यकता नहीं। यदि वह पानी चोरी करते तो पानी की राह का भी प्रबन्ध करते।

सफर गुलाम ने सिगरेट की राख को एक ओर फेंका। नारमुराद ने फिर पूछा—तो इस काम को किसने किया ?

—मेरी राय में—सफर ने कहा—चाहे यह काम तेजगुजारियों का हो या किसी दूसरे गाँव का ; लेकिन इस काम को किसी वर्ग-शत्रु ने किया है और भूल से नहीं, बल्कि जान-बूझकर।

सफर गुलाम ने फिर दियासलाई से बुझे सिगरेट में आग लगाकर दृढ़तापूर्वक कहा—यह काम बायों का है।

दियासलाई जलाते वक्त समद जूता-मोची ने सफर गुलाम के पास एक जूता देखकर पूछा—अका सफर ! हमारे लिये जूता लाये क्या ?

—हाँ—सफर ने कहा—रास्ते में काली चीज देखकर घोड़ा बिदका। मैंने निगाह करके देखा तो वह एक पैर का जूता था। उतरकर उसे उठा लिया। शायद किसी लकड़हारे का गिर पड़ा होगा—सफर गुलाम एक-दो फूँक लगाकर जूते को खिसकाते हुए बोला—यह इसी जगह रहे, यदि कल इसका मालिक ढूँढ़ते हुए आये तो उसे दे देना।

समद हाथ बढ़ा जूते को लेकर हाथ से टटोलते हुए बोला—जूता भींगा है। बेचारा लकड़हारा पानी में गिर गया था, इसलिए इसे निकालकर उसने ईंधन के गटठर पर रख दिया। घर जाने पर जानेगा कि जूता नहीं है। लेकिन

अका सफर ! यदि इसका मालिक नहीं आया तो यह मेरा माल है, क्या कहते हो ?

—ठीक—सफर ने कहा—तू एक पैर के जूते को लेकर क्या करेगा ?

—जब मैंने बाबा मुराद तकलमची से लड़ाई की थी, तो उसने एक नाल लगे जूते को मेरी ओर फेंककर मारा था। वह मार खाकर भाग गया और उसका एक पैर का जूता मेरे पास रह गया। उसके बाद उसने न माँगा, न मैंने उसको दिया। यदि मालिक नहीं आया, तो मैं इसे उसके साथ मिलाकर पहनूँगा।

—ठीक है—सफर गुलाम ने दोबारा कहा।

—अब प्रायः यह मेरा माल है, दियासलाई जला इधर करना तो देखूँ तो यह काम लायक है भी। सफर ने दियासलाई को समद की तरफ फेंक दिया। एक जवान ने दियासलाई जलायी। समद जूते को चारों ओर से देखकर बोल उठा—ए, यह मेरे अपने काम-जैसा है—फिर समद ने जवान से कहा—यूसुफ ! एक दियासलाई और जलाना, अच्छी तरह देखूँ कि इसे कब और किसके लिए बनाया था। यूसुफ ने दियासलाई जलायी, समद ने जूते को अच्छी तरह देखकर और अधिक आश्चर्य करते हुए कहा—ए, यह उसी जूते का जोड़ा है जिसका एक पैर बाय के पास रह गया था। मालूम होता है, उस जूते को किसी दूसरे के साथ जोड़ा लगाकर बेच डाला था, लेकिन जूते ने जोड़ी को पसन्द नहीं किया और वह फिर अपनी असली जोड़ी के साथ मिलने यहाँ आ गया।

—हो सकता है !—कहते सफर गुलाम कुछ सोचने लगा।

—भेद खुल गया—कहते बाबा साबिर सफर के पास आया, दूसरों का ध्यान भी उसकी ओर खिंचा। "कैसा भेद" सफर ने सवाल किया।

—इससे पहले जब तू हर काम में कहता "यह काम वर्ग-शत्रु का है" तो मेरे दिल में होता था कि हर काम में बायों को दोषी बनाना सफर के लिए एक स्वाभाविक बीमारी बन गयी है। अभी-अभी फसल डूबने की बात कहने पर भी तूने कहा कि यह काम वर्ग-शत्रु का है, बायों का काम है। मैं सोचने लगा कि सफर को फिर बीमारी का दौरा हुआ। लेकिन अब मैंने समझा कि तूने सच कहा। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे खेत को बाबा मुराद तकलमची ने डुबाया।

सफर गुलाम को छोड़ सभी आदमियों को यह सुनकर आश्चर्य हुआ और

चारों ओर से बुड्ढे पर सवालों की बौछार होने लगी—"कैसे-कैसे, कैसे तूने जाना कि इस काम को बाबा मुराद ने किया है ?"

—मैंने झगड़े के बाद बचे उस जूते के साथ एक दूसरे बे-ठीक से जूते को पहने बाय को कई बार देखा था। यदि यह वही जूता है, तो जरूर यह बाय के पैर से गिरा है।

—यह वही जूता है और अब यह अपनी मिल्कियत है—समद ने खुश होकर कहा।

—मान लो कि यह वही जूता है और बाय के पास से गिर पड़ा था, लेकिन इससे कैसे मालूम होता है कि इस काम को बाबा मुराद ने किया ?—नारमुराद ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा।

—यदि यह जूता वही है, जिसे बाय पहिने फिरता था, तो जरूर इस काम को उसी ने किया—सफर गुलाम ने कहा—जब जिलवाँ का किनारा आबाद हुआ, बे-जमीन, कम जमीन किसानों और गरीबों ने आकर इधर जमीन ली, तब से बाय का काम मन्द पड़ गया। उससे गुस्सा हो आज रात आकर उसने तुम्हारी सारी फसल को डुबा दिया। पानी को तोड़ते वक्त उसका जूता भींग गया। लौटते वक्त उसने उसे जीन के मोढ़े से लटका दिया और रास्ते में एक जूता गिर गया।

—कारीगर किसानों के खेती के कामों में लग जाने पर वह कितना गुस्सा हुआ था। यह मुझसे झगड़ पड़ने के वक्त ही मालूम हो गया था—समद ने सफर और बाबा साबिर की बात का समर्थन करते हुए कहा—मेरे साथ हाथापाई का कारण भी जिलवाँ के किनारे मेरे आने की बात ही थी।

—पिदरलानत (हरामजादा)—नारमुराद ने मुट्ठी बाँधकर हवा में हिलाते हुए कहा—दुश्मन अपने भीतर था और मैं तेजगुजारियों पर संदेह कर रहा था। पिदरलानत, आखिर तूने हमारी फसल के सिर में पानी डाला ही !

—उसने हमारी फसल के सिर में पानी डाला, तो हम उसके सिर में आग डालेंगे—समद ने कहा।

—सबसे पहिले उसकी जमीन, बैल-जोड़ी और खेती के सामान को उसके हाथ से बिलकुल ले लेते हैं—कहते सफर गुलाम अपनी जगह से उठा और घोड़े पर चढ़कर गाँव की ओर लौट गया।

३

जमीन-सुधार-कमीशन

बाबा मुराद तकलमची के मेहमानखाने में प्रधान स्थान पर गाँव का मुल्ला इमाम मुल्लों की शान-शौकत के साथ बैठा हुआ था। इमाम के सामने दस्तरखान फैलाकर उसपर घी भरे पोलाव का बड़ा थाल रखा हुआ था। थाल की एक ओर बाबा मुराद बाय बैठा हुआ था और सामने उसके नौकर शादिम और इस्ताद भी बैठे थे। जीवन में यह पहिली बार थी, जब कि वह मालिक और मुल्ला के साथ आश खा रहे थे; इसलिये वह खा भी रहे थे बड़ी लाज और संकोच से। दस्तरखान के नीचे की ओर बाय का बड़ा लड़का शामुराद बैठा था। पोलाव खाकर फातिहा पढ़ लेने के बाद शामुराद थाल और दस्तरखान समेटकर ले गया और ताजा गरम की हुई चाय को सामने रखकर स्वयं नौकरों से भी नीचे की ओर बैठ गया। नौकर अनुचित स्थान में बैठे समझ उठकर "बाय-बचा! आप ऊपर आइये" कहते शामुराद को ऊपर की ओर बैठने के लिये आग्रह करने लगे। शामुराद ने न स्वीकार करते हुए कहा :

तुम्हारी उम्र मुझसे अधिक है। तुम मेरे बड़े भाई की तरह हो। तुमसे ऊपर की ओर बैठना मेरे लिये उचित नहीं है।

—"मेहमान तेरे बाप से भी बड़ा है" की कहावत नहीं सुनी?—इमाम ने बातचीत में शामिल होते नौकरों की ओर निगाह करके कहा—तुम बाय के नौकर-खिदमतगार हो सही; किन्तु वह अपनी जगह पर रहे, इस समय तुम बाय के मेहमान हो, इसलिये उचित है कि बाय-बच्चा तुम्हारा सम्मान करे।

शामुराद ने पहिले प्याले को इमाम की ओर बढ़ाया, दूसरे को अपने बाप को न दे शादिम को दिया, जो कि इस्ताद के ऊपर की ओर बैठा था।

शादिम ने संकोच से मुँह लाल किये प्याले को हाथ में ले उसे इमाम की ओर बढ़ाया, जो कि अभी अपने प्याले को पी न चुका था। इमाम के इनकार करने पर बाय की ओर, उसके भी इनकार करने पर इस्ताद की ओर और उसके भी न लेने पर शामुराद को देना चाहा।

इमाम ने फिर बात शुरू की—लजाओ मत, पियो शादिम अका! इससे पहिले

अनजाने बाय ने शायद कभी तुम्हारे साथ कड़ा बर्ताव किया हो, लेकिन अब वह जानते हैं कि नौकर और खिदमतगार के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये। नौकर बाय के धन का साझीदार है। तुम्हारे और बाय के बीच कोई अन्तर नहीं है। यदि बाय तुम्हारे घर जायें, तो उनका सम्मान करना तुम्हारा धर्म है। तुम भी अब बाय के घर में मेहमान आये हो, तो तुम्हारी इज्जत करना उसका धर्म है।

—हमारे पास घर भी नहीं है—लजाते हुए इस्ताद ने कहा।

—पहिले यदि तुम्हारे पास घर नहीं रहा, तो अब हो जायगा, यदि तुम्हारे पास जमीन नहीं है, तो बाय अपनी जमीन में से तुम दोनों को चार तनाब पाँच तनाब दे भी दें और तुम उस जमीन को बाय की बैल-जोड़ी से बटाई जोतो, तो इससे बाय की दौलत कम न होगी।

—और क्या?—बाय ने कहा—गाँव के समीप ही अपनी एक तनाब जमीन है। चाहता हूँ कि उसकी चारों ओर दीवार खींचकर बीच में अलग-अलग हवेलियाँ बनवाकर इन दोनों को दे दूँ।

—बारकल्ला (भगवान बढ़ायें), हिम्मत इसे कहते हैं—इमाम बाय से कहकर नौकरों से कहने लगा—जब बाय तुम्हारे साथ इतनी नेकी करना चाहते हैं, तो तुम्हारा भी धर्म है कि बाय के हक पर कुदृष्टि न डालो।

—कैसी कुदृष्टि?—शादिम ने पूछा—जैसे कुछ नमकहराम नौकर बेदीन हो गये हैं और चाहते हैं कि अपने मालिकों के माल को आपस में बाँट लें। उनका अनुकरण करके तुम भी बाय की जमीन को बाँटना न चाहो और बाय के भेद को कमीशन के सामने न खोलो—इमाम ने बात रोककर चाय पीना शुरू किया; लेकिन नौकरों ने जवाब में हाँ-नहीं कुछ नहीं कहा और अपनी संदेह-भरी दृष्टि को जमीन पर गड़ाये चुपचाप बैठे रहे।

इस चुप्पी को तोड़ते हुए बाय ने इमाम की ओर निगाह करके कहा—क्षमानिधान, नारसुराद से खरीदी मेरी चार तनाब जमीन गाँव के समीप है और मेरी दो तनाब जमीन बाबा साबिर की हवेली के पीछे है। इन दोनों जमीनों को इसी जगह मेरी ओर से शादिम के नाम लिखकर दे दीजिये और मेरी अपनी हवेली के पीछे जो छः तनाब बहुत ही अच्छी जमीन है, उसे इस्ताद के नाम से लिख दीजिये।

—ठीक है न?—इमाम ने नौकरों की ओर निगाह करके पूछा।

—हाँ ठीक है—शादिम ने जवाब दिया और इस्ताद ने भी सिर हिलाकर स्वीकार किया।

—भगवान कृपा करें तुम्हारे पिता पर—इमाम ने खुश होकर नौकरों से कहा—खुदा, पैगम्बर, शरीयत (धर्मशास्त्र) की आज्ञा के विरुद्ध काम करके दूसरे के माल को लूटना कहाँ और कहाँ छ तनाब जमीन को मालिक की मर्जी से दान में पाना? मालिक की दी हुई छ तनाब जमीन लूटकर ली हुई सौ तनाब से भी अच्छी है।

—और वैसे भी—बाय ने कहा—यदि तुम भी दीन से निकलकर, काफिर बन, भुक्खड़ बदमाशों के साथ हो जाते और गाँव के बायों तथा मेरे खेतों को लूटकर लेना चाहते, तो एक-एक को दो तनाब भी न मिलती।

—ठीक है—इमाम ने बाय की बात का समर्थन करने के लिये कथा आरंभ की। एक समय बुखारा का अमीर शामुराद दरबारियों के साथ किले से उतरकर घोड़े पर सवार हो दीवानबेगी-हौज के किनारे जा रहा था। जब वह तोकमूदोजी-स्नानागार (हम्माम) के सामने पहुँचा, तो हम्माम के अन्दर से किसी की आवाज आयी "ओय् अमीर, यहाँ ठहर, मेरा तुझपर दावा है।" अमीर ने चकित हो, इस शब्द को सुन, घोड़े की लगाम को फेर वहाँ जाकर देखा कि एक बिलकुल नंगा आदमी है जिसकी कमर से नीचे का शरीर हम्माम की राख में डूबा है, वही आवाज दे रहा है। "तू मुझपर क्या दावा रखता है?"—अमीर ने राख में बैठे आदमी से पूछा? "दायभाग का दावा"—आदमी ने कहा। "ऐसा ही सही, जरा उरे आ, और अपने दावे को कह कि मैं भी सुनूँ"—अमीर ने कहा। इसपर आदमी ने कहा—"यदि मैं अपनी जगह पर से उठूँ, तो शरीर का अप्रकाशनीय अंग नंगा हो जायेगा और तेरा रईस धर्मानुसार अपराधी कहकर मेरे ऊपर कोड़े लगवायेगा। इसलिये यदि सुनना चाहता है तो सुन, मैं इसी जगह से सोये-सोये कहता हूँ"। "कहता जा, मैं सुन रहा हूँ" अमीर ने कहा। आदमी ने कहा—"मैं तेरा भाई हूँ, इसलिये बाप से मिले दाय में से आधा मुझे बाँट कर दे दे"। "मेरा भाई होने के लिये अपनी बात के अतिरिक्त और भी कोई गवाह-साखी है?"—अमीर ने पूछा। आदमी ने कहा—"क्या मैं और तू बाबा आदम और भाई हौवा के पुत्र नहीं हैं? फिर क्यों तू इतनी माल-दौलत का मालिक बना रहे और मैं नंगा-भूखा राख के भीतर लेटा रहूँ?। इसी समय मेरा दायभाग बाँटकर दे दे।"

"ठीक है, तूने प्रमाण दे दिया" कहते अमीर ने जेब में हाथ डालकर दो ताँबे के पैसे (तीन कोपेक के बराबर) निकालकर आदमी के सामने फेंक दिये। आदमी ने ताँबे के पैसे को देखकर कहा—"इतनी धन-दौलत में क्या मेरा हक इतना ही है? न्याय कर और नहीं तो चौथाई तो दे।" अमीर ने कहा—"यदि बुखारा में रहनेवाले सारे नंगे-भिखमंगे तेरे हक पाने की बात सुनकर इसी तरह दावा सिद्ध करके अपना हक माँगें, तो इन्हें भी कुछ-कुछ देना होगा। उस समय तुझे यह दो पसा भी नहीं मिलेगा।"

इमाम ने अपनी कथा समाप्त करके कहा—इसी तरह बाय की जमीन में से सारे गरीब हिस्सा लेने लगें, तो तुममें से एक-एक को दो तनाब भी नहीं मिलेगा।

इमाम ने कलम-स्याही ठीककर दस्तावेज लिखना शुरू किया। इसी समय दरवाजे से भीतर आकर एक गरीब ने कहा—अकाबाय! अभी चलो, तुम्हें जमीन-सुधार कमीशन बुला रहा है। बाय का रंग उड़ गया। मुँह सूख गया। उसने शादिम और इस्ताद की ओर निगाह करके कहा—तुम भी मेरे पीछे जल्दी आओ, यदि आवश्यकता हुई तो मैं तुम्हे अपनी ओर से गवाह पेश करूँगा।

बाय घबड़ाया हुआ बाहर चला गया।

× × ×

ग्राम-पंचायत के मकान का हाता आदमियों से भरा था। एक ओर गरीब, नौकर, मजदूर, बे-जमीन, कमजमीन जाँगर चलानेवाले हँसते-मुस्कुराते एक दूसरे के साथ बात करते हुए बैठे थे; दूसरी ओर बाय, सूदखोर और बड़े जमीन्दार रंग उड़े दीवार का तकिया लगाये उकंडू बैठे आँखों से क्रोधाग्नि बरसाते एक दूसरे से काना-फूसी कर रहे थे। ग्राम-पंचायत के एक कमरे में गरीबदल समिति बैठी थी और इसी कमरे में सुधार-कमीशन भी जमीन पर बैठा था। अब तक जमा किये सारे कागज-पत्र को आँखों से देखते कमीशन फिर एक बार प्रत्येक बाय की जमीन और खेती के सामान के हिसाब को खुद उससे पूछ-पाछकर अंतिम बार निश्चित कर रहा था।

बाबा मुराद तकलमची की पारी आयी—कमीशन ने उससे पूछा—

—तुम्हारा नाम क्या? —बाबा मुराद।

—बाप का नाम? —मिरजा मुराद।

—पेशा क्या ? —खेती।

—और कोई दूसरा काम ? —नहीं।

—झूठ—एक कोने में बैठे समद ने कहा—जूताफरोशी भी करता है।

—इसके बारे में क्या कहते हो ?—कमीशन के अध्यक्ष ने बाय से पूछा।

—जाड़ों के समय खेती का काम बंद होता है, उस समय कभी-कभी एक-दो पुराने जूते ले उन्हें-सी बेचकर बाल-बच्चों की परवरिश करता हूँ।

—झूठ—फिर समद ने कहा—इसके पास २० से अधिक सीनेवाले हैं। एक रूबल में पुराने जूते को सिला जूता पीछे १०-१५ रूबल लाभ करता है। कभी-कभी एक जूते पर २० रूबल का भी लाभ करता है।

"ठीक है, ठीक है" की आवाज चारों ओर से आयी और समद ने फिर कहा—मैं झूठ नहीं बोलता, जब जिलवाँ में पानी लाया गया, तो बेजमीनवाले सीने-वालों ने वहाँ जमीन ले ली और खेती करने लगे, तब से बाय का लाभ कुछ कम हुआ।

—बहुत अच्छा—अध्यक्ष ने कहा—तुम्हारे पास कितनी जमीन है ?

—४० तनाब (एकड़)

—झूठ—नारमुराद ने कहा—इनके पास ८० तनाब है।

—तुझसे कोई नहीं पूछ रहा है गुलाम—बाय ने गर्म होकर नारमुराद से कहा।

मैं तुम्हें सावधान किये देता हूँ—अध्यक्ष ने कहा—इसके लिये तुम पर मुकदमा चलाया जायेगा। सोवियत सरकार के कानून में जनता को "गुलाम और आसिलजादा" (कुलीन) में नहीं बाँटा गया है। यहाँ दूसरे ही दो वर्ग माने गये हैं, जिनमें एक है दूसरों की मेहनत से लाभ उठानेवाला और दूसरा पारिश्रमिक लेकर मेहनत करनेवाला।

—क्यों झूठ बोलता है बाबा मुराद—बाबा साबिर ने कहा—मुर्गे को जब मारना चाहते हैं, तो अंतिम आयु में हराम चीज न खाने देने के लिये उसे तीन दिन तक बाँध करके रखते हैं। सारी उमर जो झूठ बोलता आया, वही बहुत है, अब इस अंतिम आयु में माल-मिलकियत लिये जाने के समय झूठ मत बोल, जिसमें तेरा कंठ थोड़ा शुद्ध तो हो।

—ऐसे झूठ बोलने से लाभ भी नहीं—समद ने कहा—जमीन पैसा नहीं है

कि उसे गाड़कर रखा जा सके। वह हार में खुली खड़ी है और सभी जानते हैं कि कितनी तनाब है।

—ठीक है, बाबा मुराद की जमीन ८० तनाब से कम नहीं, ज्यादा है—किनारे से एक आवाज आयी।

मैं तो गुलाम था और मैंने तुझपर मिथ्यारोप किया—गरम होकर नारमुराद ने कहा—क्या बाबा साबिर भी गुलाम है या यह गरीब भी गुलाम है, जिसने तेरी जमीन को ८० तनाब से ज्यादा बतलाया?

—मेरे पास कितनी जमीन है, इसे मेरे घर में काम करनेवाले नौकरों से पूछिये। बाहरी आदमी मेरी जमीन के परिमाण के बारे में क्या जानेंगे?—बाय ने अध्यक्ष से कहा।

—जो भी हो, तुमने स्वयं स्वीकार किया कि तुम्हारे पास काम करनेवाले नौकर भी हैं—अध्यक्ष ने कहा।

—मैं सोवियत कानून से बाहर नहीं हूँ। सोवियत कानून में इस बात की आज्ञा है कि कपास-जैसी खेती के लिये एक-दो आदमियों से मजदूरी पर काम कराया जा सकता है।

—तुम कपास की खेती के किसान हो?—बाबा साबिर ने पूछा।

—बीस तनाब कपास के लिये मैंने सरकार के साथ एकरारनामा लिखा है—बाबा मुराद ने कहा।

—ठीक है, तुमने बीस तनाब कपास के लिये करारनामा किया है, बीज और बुनक (दादनी) भी लिया; लेकिन बीज के बिनौले का तेल निकलवा लिया और बुनक के पैसे को जूलाफरोशी में लगा दिया। दिखलाने के लिये जमीन को जहाँ-तहाँ जोतकर—चार तनाब कपास बोया; न उसे कोड़ा, न उसमें पानी दिया।

—बात साफ हो गयी—अध्यक्ष ने कहा—तो भी तुम्हारे गवाहों से भी पूछते हैं। तुम्हारे नौकर का क्या नाम है?

—एक का शादिम और दूसरे का इस्ताद।—शादिम और इस्ताद आगे आयें—रईस ने कहा।

—"हाजिर" कहते दोनों सामने आये—तुम बाबा मुराद के नौकर हो?

—हाँ।

—कितने सालों से उनके पास काम करते हो ?

—पाँच साल से ।

—तुम्हारे मालिक के पास कितनी जमीन है ?

—यही तीस तनाब के करीब होगी ।—शादिम ने कहा ।

—तुम क्या कहते हो ?—अध्यक्ष ने इस्ताद से पूछा ।

—शायद इतने ही के करीब ।

रईस ने बाय की ओर निगाह करके कहा—तुमने ४० तनाब कहा था और ये ३० तनाब बतला रहे हैं ।

—मैंने भी ४० तनाब अन्दाजा करके कहा था और इन्होंने ३० तनाब अन्दाजा किया है । एक आदमी का अन्दाज दूसरे से भिन्न हो सकता है —बाय ने कहा ।

—बाय ने इन्हें जो बात सिखा दी थी, उसे ये भूल गये—समद ने कहा ।

अध्यक्ष ने बाय को बाहर जाने के लिये कहा । फिर उसने बाय की जमीन के बारे में दोबारा शादिम और इस्ताद से पूछा । उन्होंने फिर उसी जवाब को दुहराया ।

—ये बिक चुके हैं—समद ने कहा ।

—इस तरह कहना ठीक नहीं—सफर ने कहा, ये धोखा खाये हुए हैं । बाय ने इन्हें धोखा दे दिया है । इन्हें अपने (श्रमजीवी) वर्ग के लाभ को समझाकर जाल से बाहर निकालने की जरूरत है ।

अध्यक्ष ने कहा—हम बाय की जमीन को बाँटते वक्त सबसे पहिले तुमको देंगे । जो अधिक बच रहेगी, उसे दूसरे गरीबों को देंगे । तुम लोग क्यों बाय के बहकावे में आकर झूठ बोल रहे हो ?

—मुझे किसीका माल नहीं चाहिये—शादिम ने कहा—हम खुदा से डरते हैं ।

—तुम्हें क्या हुआ है—गरीब दल के प्रमुख एरगश ने कहा—परसों ही तो तुमलोग मेरे पास आकर कह रहे थे कि बाय की बढ़िया जमीन हमें दें । आज क्या हो गया, जो खुदा से डरने लगे ?

शादिम ने जवाब दिया—उस समय शैतान ने गुमराह कर दिया था । इस समय खुदा ने मदद की ।

अध्यक्ष ने कहा—बहुत अच्छा, तुम लोग जाओ, यदि तुम लोग खुदा से डरते हो, तो यहाँ खुदा से न-डरनेवाले बहुत से गरीब हैं, वे बाय की जमीन को लेंगे।

—मैं खुदा से डरता हूँ—बाबा साबिर ने कहा—तो भी अपने पिछवाड़े की दो तनाब जमीन लेना चाहता हूँ ; क्योंकि बाय ने उसे जाली कागज लिखवाकर मुझसे ले लिया था।

बाबा मुराद तकलमची का मामला समाप्त हुआ। कमीशन दूसरे के मामले को देखने लगा।

४

बूढ़े किसान का खून

अँधेरी रात थी। हथियारबंद जवानों के साथ कुछ निर्धन बाबा मुराद तकलमची के दरवाजे पर पहुँचे। एक ने दरवाजा खटखटाया, किन्तु कोई जवाब न मिला।

दीवार पार कर हवेली में चलें, नहीं तो भाग जायेगा—सफर गुलाम ने कहा।

—ठीक है, एक सीढ़ी चाहिये—एक निर्धन ने कहा।

—सीढ़ी की जरूरत नहीं—सफर गुलाम ने कहा। एक आदमी पीठ ओड़े, उसपर से हम एक-एक करके दीवार पकड़ के ऊपर चले जायेंगे।

—यह हमारी पुरानी कला है—मुहब्बत ने सफर की बात का समर्थन करते हुए कहा।

—एय ! क्या तुमने चोरी भी की है ?—किसी ने उपहास किया।

—चोरी न करने पर भी हमने चोर बायों और बासमचियों के साथ इस उपाय से काम लिया है—सफर ने कहा।

एक आदमी ने पीठ ओड़ी, दूसरे उसके ऊपर से छत पर चढ़ गये और फिर हवेली के अन्दर उतर पड़े। बाहरी हवेली में एक भी प्राणी न था। मेहमानखाने में ताला, ढोरखाना और साईसखाना खाली और नौकरखाना सूना था। किसी ने दियासलाई जला नौकरखाने के अन्दर झाँककर कहा—शादिम और इस्ताद भी नहीं हैं।

—ये लड़के बाय के बहकावे में पड़कर दोनों लोक से गये—सफर ने कहा—बाय की सारी जमीन ले ली गयी तो उसके घर इनके काम के लिये नहीं रह गया। पीछे बाय के बैल को बेचते पकड़े गये, फिर हमसे भी अलग हुए।

—बाय के हाथ में बिक चुके थे, फिर जड़ कटनी ही चाहिये—समद ने कहा।

बाहरी हवेली में किसी को न पाकर भीतरी हवेली में जा गुलामगर्द में खड़े हो किवाड़ को खटखटाया। देर न हुई कि पैर की आहट सुनाई दी और फिर किसी औरत ने पूछा—हाँ ददेश! क्यों जल्दी आ गये?

—हम ददेश नहीं हैं। हम उनकी खोज में हैं। अकाबाय कहाँ है? सफर गुलाम ने पूछा।

—नहीं जानती—औरत ने जवाब दिया।—अभी तुमने कहा कि क्यों जल्दी आ गये? अगर बाय के कहाँ और क्यों जाने की बात नहीं जानती, तो इस तरह न पूछती। सच बताओ बाय कहाँ है?—सफर गुलाम ने कुछ कड़े स्वर में कहा।

—दो रोज पहिले यह कहकर गये थे कि गिज्दुवान जा रहा हूँ और शायद वहाँ एक सप्ताह तक रहूँ। तुम्हें मैंने उन्हें समझा, इसीलिये पूछा कि क्यों जल्दी आ गये?

—तुम्हारा बड़ा लड़का कहाँ है?—

—वह भी बाप के साथ गया है।

—बहुत अच्छा—सफर गुलाम ने कहा—ऐसा ही सही, छुट्टी दो कि मुहब्बत जाकर तुम्हारी भीतरी हवेली देख आवे। मर्द के भीतर जाने पर तुम्हें रंज होगा, इसीलिये हम मुहब्बत को साथ लाये।

—मैलश, आयें देखें—स्त्री ने कहा। मुहब्बत घर के भीतर गयी। चबूतरे के नीचे आग का ढेर देख आश्चर्य करते उसने स्त्री से पूछा—इस गर्मी के मौसिम में इतनी आग क्यों जलायी?

तुम्हारी कृपा से फरास का कोयला गुम हो गया, चाहा कि जाड़ों के लिये कुछ कोयला तैयार कर लें, जो सन्दली के नीचे काम आये—स्त्री ने ताना देते कहा।

लेकिन आग के अन्दर फाल और पंजे को देखकर मुहब्बत ने समझ लिया कि खेती के हथियारों को जलाया जा रहा है जिसमें वे कमकरों के हाथ में न

जायँ। मुहब्बत ने भी ताना मारते कहा—तुम फाल और पंजे का भी कोयला बना रही हो क्या ? खैर कोई हर्ज नहीं, लोहेवाला कोयला बनेगा।

मुहब्बत ने सारे कमरों में जाकर देखा, लेकिन वहाँ कोई मर्द नहीं मिला। वह बाहर चली आयी।

"मौसी नाराज न हो, दरवाजा बंद कर ले, हम चले"—कहकर सफर गुलाम अपने साथियों के साथ कूचे में चला आया।

सफर गुलाम ने कूचा के किनारे अपने साथियों को रखकर उनसे कहा—मुझे इस स्त्री की बात पर संदेह है। मेरे विचार में बाय ने आने की खबर दे रखी है। वह भागने की तैयारी करके किसी दूसरी जगह छिपा है और स्त्री को कह रखा है, सारे गाँवों के सो जाने पर हम भिनसारे भाग चलेंगे। इसीलिये औरत ने कहा कि "क्यों जल्दी आ गये", लेकिन "मेरा पति दो दिन पहिले गया" कहना बिलकुल झूठ है।

—मैंने कल उसे कूचे में देखा था—नारमुराद ने कहा।

तो क्यों नहीं इस बात को सामने कहकर उसे लज्जित किया—कहते सफर ने उसे फटकारा।

—मैं क्या जानता था—नारमुराद ने कहा—जब भी मैं बात करता हूँ तो तू मुझे "तेरी यह बात राजनीति के विरुद्ध है" कहकर फटकारता है। मैंने समझा, यह बात भी राजनीति के विरुद्ध होगी, इसलिये नहीं कहा।

चाहे कितना ही गरम हो, लेकिन नारमुराद की बात पर सफर गुलाम अपनी हँसी को रोक न सका।

—उसके लड़के को भी मैंने कल गली में देखा था। उसने मुझसे बात मारते कहा—"अब तुम्हारा जमाना है, जो कुछ करना चाहो कर लो, लेकिन एक दिन फिर हमारा जमाना आयेगा"—यूसुफ ने कहा।

सफर गुलाम ने और झल्लाकर कहा—तुममें से किसी के पास वर्ग-संबंधी चतुराई नहीं है। किसी काम की खबर समय पर "गरीब दल" के पास नहीं पहुँचाते।

—स्वयं तुम्हारे पास भी वर्ग-सम्बन्धी चतुराई नहीं है—मुहब्बत ने अपने पति सफर से कहा—बाबा मुराद तकलमची की खेती और पशुओं के सामान को ले लेने का निर्णय हुआ था, लेकिन उसे कार्य-रूप में परिणत करने में देर

कर दी। बाय को मौका मिल गया। उसने काम के दो बैलों को मार डाला, एक जोड़ी बैल को बेच डाला और उसके नौकरों—शादिम और इस्ताद—की मूर्खता से सिर्फ एक जोड़ी बैल हमारे हाथ आये। इसी तरह खेती के सामान को भी लेने में देरी की।

अभी मैंने देखा, बाय की स्त्री ने सबको जला डाला।

—ठीक है—सफर ने स्वीकारोक्ति देते हुए कहा—वस्तुतः हममें से किसी के पास उस दर्जे की वर्गचातुरी नहीं है, जैसी कि हमारी पार्टी चाहती है। हम इस समय वर्ग-युद्ध में पैर डाल चुके हैं। मुझे आशा है कि अपनी इस तरह की भूलों से शिक्षा लेकर भविष्य में अपनी वर्ग-चातुरी को और बढ़ायेंगे।

—बहुत अच्छा, अभी रहने दो इस पचड़े को, आज रात को अपनी वर्ग-चातुरी से काम लेकर बाबा मुराद को हाथ में करना चाहिये—समद ने कहा।

—अच्छा, सफर ने कहा—एक पहरेदार छोड़कर हम कोने में छिप जायँ, जैसे ही बाय आकर हवेली के अन्दर जाये, उसे घेर लें, नहीं तो इसी रात को वह भाग जायेगा।

—क्यों न इस वक्त बाबा साबिर के मकान पर चलकर एक-आध चायनिक चाय पियें—समद ने कहा।

—अच्छी बात है—सफर ने कहा—पहरे पर कौन रहेगा?

—मैं—यूसुफ ने कहा—मेरा मकान पास में है। मुझे यहाँ देखकर किसीको संदेह नहीं होगा।

यूसुफ को पहरेदारी पर छोड़कर दूसरे बाबा साबिर के मकान पर चले गये। जब वे नजदीक पहुँचे तो हवेली से किसी के रोने की आवाज सुनाई दी।

—क्या बुड्ढा बुढ़िया को पीट रहा है—सफर गुलाम ने कहा—जल्दी अन्दर चलें—मुहब्बत, तू हवेली में जा और बुढ़िया को उसके हाथ से छुड़ा, कहीं यह उजड्ड बुड्ढा अपनी स्त्री को पीटते-पीटते मार न डाले।

एकपाटे द्वार में भीतर से जंजीर लगी थी, लेकिन तीन हाथ की दीवार फाँदने में क्या लगता था? सब भीतर आँगन में चले गये। अब भी घर में से हृदय-द्रावक आवाज आ रही थी।

—आः, बेचारी स्त्रियाँ वह मूर्ख अत्याचारी मर्दों के हाथ से कब मुक्त होंगी—

कहती मुहब्बत बिना किवाड़ के भीतरी घर में गयी। लेकिन देर न हुई कि वह अपने दोनों हाथों को सीने पर रखे बाहर लौटकर जल्दी-जल्दी साँस लेते बोली :

—कुछ आदमी एक आदमी को लिटाकर मार रहे हैं—आदमी चिल्ला रहा है "मेरी बुढ़िया को मार डाला मुझे भी मारो, मैं उसके बिना जीवित नहीं रहना चाहता।" और एक मारनेवाला कह रहा है। "धीरज धर, तुझे भी मारते हैं, लेकिन ऐसी सासत करके मारेंगे कि दूसरे लोक में भी उसे न भूलेगा।"

"घेर लो" कहकर सफर गुलाम तमंचा खोलकर हाथ में ले आगे बढ़ा। मुहब्बत को छोड़ सारे पुलिस जवान और कमकर हथियार सँभाले भीतर गये। उन्होंने जाकर खूनियों को चारों ओर से घेर लिया। सफर गुलाम ने "हाथों को ऊपर उठाओ" कहते एक हवाई फैर किया।

अपराधियों के हाथ ऊपर उठ गये और मांस काटने के छुरे और फरसे जमीन पर गिर पड़े। गिरफ्तार करके तलाशी लेने पर तीन खीसों में तीन पत्र निकले। सफर गुलाम ने दियासलाई के प्रकाश में उन्हें पढ़ा। दो पत्रों में बाबा मुराद की ओर से शादिम और इस्ताद के नाम छ-छ तनाब जमीन का दानपत्र था, जिसे इमाम ने लिखा था। तीसरे पत्र में लिखा था "यदि कोई ऐसे आदमी को मार डाले, जिसने उसके माल को सीधे हड़पकर लिया है, तो उसे कोई पाप नहीं।"

—बाबा साबिर ने तो तेरी जमीन हड़पकर ली थी, इसलिये उसका खून तेरे लिये "हलाल" हुआ, लेकिन इस बुढ़िया ने क्या कसूर किया जो तुमने उसे मारा ?—सफर गुलाम ने बाबा मुराद से पूछा।

—हमने जिस समय बाबा साबिर को गिराया—बाय ने कहा—यह औरत दौड़कर चिपट पड़ी और हमें पहिचान गयी। इसलिये उसे कतल करने के सिवा कोई उपाय न था। कल सवेरे इमाम के पास जा कह इसके बारे में भी तुझे फतवा लिखकर दे देगा—सफर गुलाम ने बाय से कहा, फिर अपने दो आदमियों को अराबा (ताँगा) लाकर बाबा साबिर को अस्पताल ले जाने को कहा और मुहब्बत, समद और एक पुलिस को जाँच करनेवालों के आने तक स्त्री के शव की रखवाली के लिये छोड़ दिया। अपराधियों को ग्राम-पंचायत की ओर ले चले। उनके आगे-आगे दोनों हाथों को हवा में उठाये नारमुराद चल रहा था।

—तू क्यों अपने हाथों को ऊपर उठाये चल रहा है? सफर ने चकित दृष्टि से देखते पूछा।

—जब हम चले थे, तो तूने कहा नहीं था कि भिड़न्त के समय मैं जैसी आज्ञा दूँ, उसे बिना ननु-नच के पूरा करना चाहिए। —नारमुराद ने जवाब देते पूछा।

—कहा था—सफर ने कहा।

—जब हम बाबा साबिर के शरीर के पास पहुँचे तो तूने हुक्म दिया—"हाथों को ऊपर उठाओ" तभी से मैंने अपने हाथों को ऊपर उठा लिया। इनके गिराने के लिये दूसरे हुक्म की आवश्यकता थी जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

ऐसी हृदयद्रावक दुर्घटना देखकर सबके दिल मुरझा गये थे; लेकिन नारमुराद की बात को सुनकर सब हँस पड़े। सफर गुलाम ने हँसते हुए कहा—"अपने हाथों को नीचे उतारो", ले तेरे लिये यह दूसरा फरमान है। जब टोली ग्राम-पंचायत (सोवियत) के करीब पहुँची तब तक दिन निकल आया था।

५

कलखोज धर्म के विरुद्ध

सादिक ने ढिबरी जला दी और ढोरखाने में जा मालों के सामने चारा डाला, फिर अपने बैल "स्याह कुंदुज" "स्याह कुंदुज" के पास गया। सिर से पैर तक उसपर कई बार हाथ फेरा। यह गुस्सैल जानवर जिसका ककुद ऊँट के कोहान की तरह का था, किसी को पास नहीं आने देता था। लेकिन सादिक के साथ उसका बर्ताव बहुत मुलायम था। जब कभी सादिक उसके पास जाता, वह खाना छोड़-कर सादिक के जामे को सूँघता, उसके हाथों को चाटता। सादिक ने अपने बेजबान मेहरबान जानवर को खूब सहलाया। इसी समय उसकी आँखों से दो-तीन बूँद आँसू टपक पड़े। उसने अपने आप से कहा।

—नहीं, नहीं हो सकता, मेहरबान हैवान है। मैंने अपने हाथों से इसे पाला-पोसा, खुद इसकी गर्दन पर जुआ रखा, खुद हल में निकाला, खुद एक दिन में एक तनाब जमीन जोती। इतनी मुहब्बत से पाल-पोसकर इस जानवर को कैसे

ऐसे आदमियों के हाथों में सौपूँगा, जिनके बारे में मैं नहीं जानता कि वह कौन हैं।

१७—नहीं हो सकता, यह मेहरबान हैवान है। (पृष्ठ २८२)।

सादिक अपने विचारों में डूब गया, बैल भी मानों अपने मालिक के भाव को समझ रहा था, इसलिये चारे पर मुंह नहीं डाल रहा था या डालता था, तो

एक मुट्ठी मुँह में लेकर बिना खाये ही गिरा देता और सादिक की ओर मुँह फेर-कर "हु: हु:" करते कुछ कहना चाहता।

—नहीं, नहीं हो सकता—सादिक ने अपने मन में कहा—मैं अपने आप नहीं दूँगा, यदि जबर्दस्ती ले जाना चाहें तो? इसकी कोई दवा करनी होगी।

सादिक ने फिर एक बार सिर से पैर तक बैल को सहलाते हुए कहा—अभी समय है। साधारण सभा होनेवाली है। तब तक लोगों का कान भरना चाहिये और अधिकांश गरीबों और मजूरों को समझाना चाहिये, जिसमें वह कलखोज (पंचायती खेती) के लिये राजी न हों। तब मेरी जान भी छूटेगी, मेरी जमीन भी बच जायेगी और मेरा "स्याह कुन्दुज" भी।

इस अंतिम विचार से सादिक को बहुत तसल्ली हुई। उसका चेहरा खिल गया और उसने "हु: हु:" करके हाथ चाटते बैल के सिर को चूम लिया। दो-एक बार और सींगों के बीच सहलाकर वह ढोरखाने के बाहर निकला। बाहर-भीतर से भी अधिक अँधेरा मालूम हुआ। उसके मस्तिष्क में फिर अंधकारपूर्ण विचार पैदा होने लगे। वह अपने मन से प्रश्न करने लगा—गरीबों-मजूरों ने जमीन-सुधार के वक्त जैसे किया, यदि कलखोज के बारे में भी वैसी कोशिश करने लगे तो फिर? उस समय प्रयत्न करूँगा कि मेरे-जैसे बैल-जोड़ी और खेती के सामान-वाले आदमी कलखोज की ओर पैर न बढ़ायें। यदि यह भी न हो तब? तब यह कदापि न होगा कि स्याह कुन्दुज को जीवित उनके हाथ में सौंप दूँ—इस तरह सोचते सादिक का दिमाग फिर पहिली जगह आ गया।

सादिक इन्हीं आशा और निराशा से भरे विचारों में डूबता-उतराता घर के अन्दर आ अपने बिछौने पर लेट गया। बीबी-बच्चे खर्राटे मारकर सो रहे थे। उनको इस तरह बेपरवाह और दुनिया से बेखबर सोते देखकर सादिक का मन कुढ़ने लगा और उसने अपने आपसे कहा—अगर मैं न होऊँ तो ये सारे भूखों मर जायेंगे। इन्हें कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरे सर पर क्या बीत रही है, उस सिर पर जो कि इनके लिये रोटी-कपड़ा जुटाता है।

—सादिक के दिल में ख्याल आया कि बीबी को जगाकर उससे अपना दु:ख-सुख सुनाये, किन्तु फिर सोचने लगा—"यह लम्बी-चोटी-अकल-छोटी क्या सलाह देगी।" सादिक ने कितनी ही बार इस करवट से उस करवट बदलते आँखों को बन्द किया; किन्तु फिर भी उसे नींद न आयी। एक बार थोड़ी तंद्रा आने लगी,

तो उसने देखा कि गाँव के गरीब आकर उसके ढोरखाने में घुस गये और स्याह-कुन्दुज को लिये जा रहे हैं। उसने चाहा कि छुरे से बैल के पेट को फाड़कर उसे नष्ट कर दे; लेकिन न कर सका। उसका हाथ काँपने लगा और हिम्मत न हुई कि उस निरीह प्राणी को अपने हाथों से मार डाले, जिसे उसने अपने बच्चे की तरह पाला-पोसा।

सादिक घबड़ाकर उठ बैठा, आस-पास खर्राटा लगाकर सोते बीबी-बच्चों के सिवा किसी को न देखा। मन को धीरज हुआ और उसने इस शोकपूर्ण विचार-परम्परा को मन से हटाने की कोशिश की; लेकिन वह न हो सका। यदि नींद आती तो वही भयानक स्वप्न, यदि नींद न आती तो वही भयोत्पादक विचार!

सादिक सवेरे सोकर उठा। हवेली के बाहर गया, देखा लड़के बर्फ का खेल खेल रहे हैं और स्त्री ओसारे के नीचे चूल्हे के पास बैठी थाल-पतीली धो रही है।

सादिक हाथ-मुँह धो आकर गरम सन्दली के पास बैठा और सन्दली की चारों ओर लटकती रजाई को लेकर गर्माने की कोशिश करने लगा। स्त्री ने सन्दली पर दस्तर-खान रखकर उसपर एक रोटी और एक कटोरा उड़द की दाल (माशाब) लाकर रखा और स्वयं भी सन्दली की एक ओर बैठकर पति की आँखों को देखने लगी। सादिक ने बे-मन से एक-दो टुकड़ा रोटी और एक-दो घूँट माशाब मुँह में डाला। लेकिन खाने की रुचि न थी। स्त्री ने यह देखकर पूछा—ददेश! तुम्हें क्या हुआ है?

—कुछ नहीं हुआ है—सादिक ने जवाब दिया।

—खुदा न करे, मैं डर रही थी कि तुम्हें कोई बीमारी हो गयी है, एक बार नींद खुली तो देखा कि तुम अकबक बोल रहे हो, हाय-हाय करते गोहार कर रहे हो, जैसे भारी ज्वर आया हो। एक करवट से दूसरी करवट छटपटा रहे थे। किन्तु तुम्हारे शरीर को छूकर देखा, तो ज्वर नहीं था। इसी अवस्था में तुमने रात काटी और सूर्योदय के बाद कुछ शान्त हुए। तुम्हारी नींद में बाधा न हो, इसलिये बच्चों को बाहर लायी, आश पकाकर बहुत प्रतीक्षा की; किन्तु तुम नहीं जगे। हमने चूल्हे के पास ही बैठकर खाना खा लिया।

—इस समय दिन कितना चढ़ा होगा?—बात काटते हुए सादिक ने पूछा।

—दो पहर।

—एहा! बहुत अधिक सोया कहते सादिक अपनी जगह से उठा। स्त्री ने बहुत कहा—कहाँ जा रहे हो, आश तो खा लो; लेकिन जवाब न दे उसने बाहर

चबूतरे पर जाकर स्त्री को आवाज दी—बड़ी मुर्गी को पकड़कर बाँध रख। शाम को मारूँगा, नमक डालकर रख लेना। कल सूप पकेगा।

—बड़ी मुर्गी को क्यों मार रहे हो?—स्त्री ने चकित होकर पूछा—आजकल उसका मुँह लाल हुआ है, वह कक्-कास करती फिर रही है, कल या परसों से अंडे देने लगेगी, इस समय क्यों उसे मारकर नष्ट करना चाहते हो?

—सिर्फ उसको ही नहीं, सारे मुर्गों को आठ-दस दिन के भीतर मारकर खतम करना है।

स्त्री का आश्चर्य और बढ़ा और उसका रंग उड़ गया, उसने कहा:

—बिना मुर्गी के दिन कैसे कटेंगे? बच्चों को उबालकर अंडा देती हूँ। जब मांस नहीं मिलता, तो अंडे की तरकारी बनाती हूँ। शरद के जमा किये सारे अंडे खतम हो गये। अब मेरी आशाएँ मुर्गी पर थीं।

—मेहरिया!—सादिक ने आग-बगूला होकर कहा—बाल तेरा लम्बा भले ही हो, लेकिन तेरी अकल बड़ी छोटी है। तू नहीं जानती कि इन्हीं दिनों यदि पंचायती खेती (कलखोज) बन गयी, तो हमारी सारी मुर्गियों को पकड़कर ले जायेंगे। मुफ्त जाने देना क्या अच्छा है?

—कौन हमारी सारी मुर्गियों को पकड़कर ले जा रहा है?

—कलखोज!

—वह कौन चंडाल है?

—ये ही गाँव के गरीब और नंगे-भूखे!

—जिन्होंने जमीन-सुधार के बहाने धनियों (बायों) के खेत और खेती के सामान को ले लिया, वही क्या?

—वह भी और दूसरे भी, विशेषकर बोलशेविक और कम्सोमोल (तरुण सभाई) इस काम में आगे आ गये हैं।

—तुम तो कह रहे थे कि सरकार मध्य-वित्त किसानों से दुश्मनी नहीं रखती, उनकी सहायता करती है।

—तब वैसा ही था। उस समय सचमुच सरकार ने मध्य-वित्त किसानों को सहायता दी। उस समय वह दादनी (बुनक) देती, बीज देती। गरीबों को तो एक दूसरे की जमानत पर दादनी देती, लेकिन मध्य-वित्त किसानों को बिना जमानत के

कपास तैयार होने तक के लिये दादनी देती। सरकार के इस सहायता से ही मेरे पास एक की जगह एक जोड़ी बैल और गाय भी हो गयी।

—यदि ऐसा है तो क्यों डर रहे हो?

—यदि आज मेरी इन सारी चीजों को ले जायँ, तो पहिले की दी हुई सहायता से क्या लाभ?

सादिक फिर अपने विचारों में डूब गया, लेकिन औरत ने उससे कहा—जो भी भगवान ने भाग्य में लिखा है, वही होगा। तुम पहिले ही से क्यों चिन्ता में मरे जा रहे हो? घर में चलकर गरम सन्दली के पास बैठो, देख रही हूँ, फिर तुम्हारा रंग उड़ रहा है।

—नहीं, मुझे एक जगह जाना है—सादिक ने अपने मन में कहा, फिर कुछ सोचकर बोला—रहमत बाबा मुराद तकलमची ने ठीक कहा था।

उसने क्या कहा था?—औरत ने पूछा।

—जमीन-सुधार के समय एक दिन वह मुझे रास्ते में मिला और बोला—"आज तुम मध्य-वित्त किसान गरीबों के साथ होकर हमारे भेद खोल रहे हो, ऐसा दिन आयेगा, जब यही बात तुम्हारे सिर पर पड़ेगी। उस दिन तुम कहोगे कि बाबा मुराद ने ठीक कहा था।"

—ठीक है—स्त्री ने कहा—यदि उसके ऊपर किसी खुदा के मर्द (सन्त) की दृष्टि नहीं पड़ी होती, तो वह कैसे इतनी सारी धन-दौलत का मालिक हुआ होता! आगे की बात सोचने में उसने करामात कर दी है!

—उसने बुरे काम भी किये—सादिक ने कहा—सूदखोरी में बहुत जुल्म करता था। सौ रूबल का महीने में एक सौ बीस रूबल और एक मन गेहूँ का दो मन लेता था। इसी ढंग से कर्जा बढ़ाकर दूसरे के खेतों को अपने हाथ में कर लिया था। खुदा न्याय करें, मरने के समय भी चैन से नहीं रह पाया, बाबा साबिर की स्त्री को मार डाला और बाबा साबिर को भी इतना घायल किया कि वह अस्पताल में जाकर मर गया। (थोड़ा चुप होकर फिर बोला) मैं जाता हूँ।

—कहाँ जा रहे हो इस जाड़े-पाले में?

—अका खोजानजर के घर जाकर दुःख-सुख बतियाऊँगा—कहते सादिक चल पड़ा।

× × ×

मेहमानखाने की सन्दली (अँगीठीवाली चौकी) जरदालू के ईंधन की आग से खूब गरम थी। प्रधान स्थान में गद्दे पर खोजानजर लेटा हुआ था। उसके शरीर पर रूईदार जामा और सिर पर कुल्ला के ऊपर पाग बँधी हुई थी। बाय आधा सोया और आधा जगा हुआ था। देहली में किसी के पैर की आहट सुनकर बोला—कौन है ?

—मैं, सादिक—कहकर जवाब आया।

—यहाँ आ, वहाँ क्या कर रहा है ?

—तुम्हें छुट्टी नहीं है, यह सोचकर मैं लौटा जा रहा था—कहते सादिक मेहमानखाने के भीतर आया।

—इस जमाने में फुरसत कहाँ ? उरे आ, चार बात करें।

—मैं भी थोड़ी बात करके अपने दिल का भार उतारने आया था—कहते सादिक भी सन्दली की एक ओर रजाई ले गद्दे पर बैठ गया। बाय भी उठकर दीवार के सहारे बैठ गया।

—आपकी सन्दली खूब तपी है—सादिक बैठते समय सन्दली के नीचे फैला दिये अपने पैरों को खींचते हुए बोला।

—कलखोज को देने से नष्ट कर डालना, स्वयं जलाकर तन को गर्म करना बेहतर है, यही सोचकर चारबाग के मेवा-वृक्षों को कटवा रहा हूँ। पहिले दस पेड़ जर्दालू कटवाकर ईंधन बनवाया।

—कलखोज (पंचायती खेती) होना क्या निश्चित है ?—निराश होकर सादिक ने पूछा।

—अभी तो निश्चित नहीं हुआ, लेकिन निश्चित हो जायेगा, क्योंकि इन कुलच्छन-मुँहें बोलशेविकों के मुँह से जो भी बात निकली, वह आज तक बिना हुए नहीं रही।

—यदि अधिकांश आदमी न चाहें, तो कैसे जबर्दस्ती कलखोज बनायेंगे ?

—ज्यादा आदमी चाहेंगे—कहते बाय ने ठंढी साँस ली—क्योंकि गाँव में अधिकांश आदमी गरीब-नंगे-भूखे हैं और कलखोज होने से उन्हें कोई हानि नहीं होगी। उनको क्या ? उनकी तीन-चार तनाब (एकड़) जमीन जायेगी और वह भी जमीन-सुधार के समय धनियों के हाथ से छीनकर उन्हें मिली थी।

—वह और कुछ दूसरी भी—सादिक ने बाय की बात का समर्थन करते हुए

कहा—क्योंकि ऐसे भी गरीब हैं, जिन्हें जमीन-सुधार के समय खेत नहीं मिला और अब वह कलखोज में आकर हमारे माल को दोनों हाथों से उड़ाना चाहते हैं।

—ऐसा ही है, गाँव के सभी भुक्खड़ों को, जो कि बात के फैसला करने का अधिकार मिला हुआ है—खोजानजर ने कहा—इस तरह हमारी सारी चीजें तो हाथ से निकली ही जा रही हैं। इसीलिये जो भी खा-खर्च लेना गनीमत है, सोच-कर एक मोटी-ताजी बछिया को मारकर आज ही नमक लगाया है।

—मैंने भी गृहजात बैल "स्याह-कुन्दुज" को मारना चाहा; लेकिन दिल तैयार नहीं हुआ।

—इसीलिये तैयार नहीं हुआ कि दूसरे पकड़कर ले जायें और नष्ट करें!—बाय ने कहा।

—दूसरे ले जायेंगे, तो आँख से दूर नष्ट करेंगे, लेकिन उसे अपने हाथ मारना बेटे के मारने की तरह बहुत मुश्किल है।

—किसी कसाई को दे दे, आँख से दूर मारा जायगा और तुझे पैसा भी मिल जायेगा, नहीं तो ऐसे ही मुफ्त में कलखोज में चला जायेगा।

—दूसरा कोई उपाय न होने पर यही करूँगा—कहते सादिक ने बाय की सलाह स्वीकार की और फिर पूछा कि क्या कोई उपाय नहीं है कि गाँव के गरीबों को राह से हटाया जाये, जिसमें वे स्वयं कलखोज में जाना पसन्द न करें?

—सिर्फ गरीबों की ही बात नहीं है। खेतवाले किसानों में भी कितने भ्रष्ट हो गये हैं। योलदाश के लड़के को नहीं देखता? सोवियत के स्कूलों में पढ़कर कितने ही पतित हो गये हैं। वह कृषि-विशेषज्ञ, मशीनची (मिस्त्री, ड्राइवर) और न जाने क्या-क्या बन गये हैं। उन्होंने मेरे भाई महमूद को भी खराब करके अपने साथ कर लिया। यह टोली मध्य-वित्त किसानों में से भी अधिकांश को अपने साथ करने में सफल हुई है और कलखोज बनाने पर तुली हुई है।

"इलाही तौबा" कहते सादिक ने अपना कुर्ता पकड़ा और बाय ने फिर कहना शुरू किया—यदि मध्य-वित्त किसान पतित न हुए होते, तो गाँव के गरीब कोई काम न कर सकते। यदि कलखोज बनता भी तो वह सफल न होता।

—क्यों न सभा के दिन तक हम भी कमर कसकर मध्य-वित्त किसानों में से कुछ को अपनी ओर खींचें, शायद कलखोज बनना रुक जाय—सादिक ने कहा।

—सिर्फ मध्य-वित्त किसान ही नहीं, हो सके और बात पर कान दें तो गाँव के

गरीबों को भी अपनी ओर खींचना चाहिये, विशेषकर उन गरीबों को जो कि जमीन-सुधार के बाद खेतवाले बनकर निजी सम्पत्ति का रस ले चुके हैं। लेकिन यह बात बहुत कठिन है तो भी "जब तक जड़ पानी में तब तक फल की आशा" की कहावत के अनुसार निराश न हो काम करना चाहिये, लेकिन उसी पर आशा न रखकर अपने ढोरों को भी कम करना चाहिये। यदि कलखोज न हुआ तो बाद में भी ढोर मिल जायेंगे।

खोजानजर आँखों को मूँदकर कुछ सोचने लगा। कुछ देर बाद जैसे कोई बात याद आ गयी, एकाएक हाथ को सन्दली के भीतर डालकर बोला—ओः, तुझे चाय निकालकर देना भी भूल गया—और चायनिक को सन्दली के नीचेवाली अँगीठी से निकालकर मेहमान को एक प्याला चाय देते हुए फिर बोलने लगा—जमीन-सुधार से मुझे उतना नुकसान नहीं हुआ था। कुछ जमीन हाथ से जरूर निकल गयी, किन्तु बाकी जमीन से पहिले ही जैसी पैदावार होने लगी; क्योंकि जमीन के कम होने पर भी मैंने ढोरों और कमकरों को कम नहीं किया। सुधार से जमीन पानेवाले गरीब भी पहले ही की भाँति ऋण और दूसरी तरह से मेरे अधीन होने लगे। किसी के पास बैल और गदहा नहीं था, किसी के पास पंजा या हल नहीं था। किसी को किसी दूसरी चीज की जरूरत थी। मैं उन्हें कोई चीज देकर बदले में उनसे काम और पैदावार लेने लगा। इस तरह कितने ही गरीब खेतवाले होकर भी मेरे बटाईदार-जैसे बन गये। साथ ही वे मेरा कुछ काम भी कर देते थे।

खोजानजर आँखें मूँदकर कुछ देर सोचते हुए फिर बोला—लेकिन यह कलखोज नाम की बलाय ऐसी है, जिससे छुटकारा नहीं हो सकता। इसमें जाओ तब भी बलाय, न जाओ तब भी बलाय। अगर न जाओ, तो तुम्हारा काम नहीं हो सकता; क्योंकि सारे गाँव के गरीब, मजदूर, नौकर उसमें चले गये और तुम्हारा काम करने के लिये कोई न रह गया। बोलशेविकों की नजर इसी बलाय तक रुकने-वाली नहीं है। क्या जाने अभी सिर पर और भी कौन-कौन बलायें लायें। यदि कलखोज में जाओ, तो सारी माल-मिलकियत हाथ से जाती है और ऊपर से बाध्य होते हो मजूरों के साथ काम करने के लिये। ओः, मैंने जीवन में यदि एक बार भी कुदाल चलाई होती !

—मैं काम करने से नहीं डरता—सादिक ने कहा—लेकिन बाप-दादा से चली

आती पाँच-छः तनाब जमीन और अपने हाथ का पाला-पोसा स्याह-कुन्दुज हाथ से निकला जा रहा है, यह मेरे लिये बड़ी मुश्किल है।

—तू मुझसे इसी कलखोज की बलाय से छूटने का रास्ता पूछने आया था, क्यों यही न?

—हाँ, यही।

—तो सुन बिल्ली के बच्चे ने अपनी माँ से पूछा था कि भेड़िये से छूटने का कौन रास्ता है? उसकी माँ ने जवाब दिया—"भेड़िये से छूटने के बहुत-से रास्ते हैं, किन्तु सबसे अच्छा रास्ता यही है कि भेड़िये का मुँह ही न देखा जाय।" इसी कहावत के अनुसार कोशिश करनी चाहिये कि कलखोज बनने न पाये और मैं और तुम इस भेड़िये का मुँह न देखने पायें। यदि हमारे सब कुछ करने पर भी कलखोज बन जाये, तो उससे छूटने का उपाय है कि उसके अन्दर जाकर भेड़िया बनना और कलखोज को आगे न बढ़ने देना। लेकिन, तू कलखोज में जाकर काम करना चाहता है?

—मैं सात साल की उम्र से ही काम करता आ रहा हूँ—सादिक ने कहा—जब काम के लिये जाऊँगा, तो हो नहीं सकता कि बिना काम किये रहूँ।

इसी बीच खाँसते मेहमान देहली के अन्दर आ जूता निकालकर बिस्मिल्ला कहते मेहमानखाने में आया। सादिक और खोजानजर अपने स्थान से थोड़ा नीचे हटकर बैठे और इमाम को प्रधान स्थान पर बैठा साहेब-सलामी की। इमाम ने बिना किसी के कहे ही दुआ पढ़कर हाथों को मुँह पर फेरा और कहा—मैं शाहनजर के पास गया था।

लेकिन बाय ने "मैं अभी आता हूँ" कहते उठकर देहली के बाहर जा आवाज दी—नौरोज, चाय और दस्तरखान ला—फिर लौटकर अपनी जगह बैठ इमाम की बात सुनने के लिये कान लगाया।

—तुम्हारे नौकर कैसे हैं—इमाम ने पूछा—इस जमाने में अगर नौकर बुरा हो, तो आदमी को बड़ी मुश्किल में पड़ना होता है।

—मेरे पास नौकर नहीं हैं—खोजानजर ने कहा—मैंने उसी समय से नौकर रखना छोड़ दिया, जब सरकार ने आज्ञा निकाली कि नौकरों को कानून के अनुसार रखना होगा। इसी कारण से जमीन-सुधार के समय अपनी कुछ जमीन पास रह गयी।

—तो जो लोग तुम्हारे यहाँ आकर खेती का काम करते हैं, वे कौन हैं ?

—क्या आप नौरोज और हमीद के बारे में पूछते हैं ? वह मेरे साले हैं—खोजानजर ने मुस्कुराते हुए कहा—आप हमारे गाँव में नये आये हैं, और यहाँ की घटनाओं को नहीं जानते। जिस समय सरकार ने आज्ञा निकाली, "नौकरों को कानून के अनुसार रखना होगा", उसी समय मैंने सारे नौकरों को निकाल दिया। अपने भीतर पुंस्त्व न भी था, तो भी एक खरीदी लड़की के साथ, जिसके दो भाई भी थे, ब्याह कर लिया। अब उसके दोनों भाई नौरोज और हमीद मेरा काम करते हैं। इनमें और दूसरे नौकरों में अन्तर इतना ही है कि इन्हें कोई हमारा नौकर नहीं समझता। इन्हें मजदूरी देने की भी जरूरत नहीं, सिर्फ दाल-रोटी पर काम करते हैं।

—खैरियत है—इमाम ने कहा कि तुम्हारी बड़ी औरतों ने जवान स्त्री ब्याहने पर जंजाल नहीं खड़ा किया, नहीं तो भारी मुश्किल में पड़ना पड़ता; क्योंकि सरकारों ने बीबी के रहने पर और विशेषकर बूढ़े को जवान लड़की से ब्याह करने की मनाही कर दी है।

—मेरी बीबियाँ खूब जानती हैं बाय ने कहा कि मेरे पास पुंस्त्व का कोई चिह्न नहीं है, इसलिये नये ब्याह से उनका कोई हर्ज नहीं, बल्कि फायदा है, क्योंकि वह आराम से बैठी रहती हैं और जवान स्त्री घर का सब काम किया करती है।

इसी समय नौरोज अन्दर आया। खोजानजर ने उसके हाथ से दस्तरखान को लेकर सन्दली पर फैला दिया और रोटी तोड़कर प्याले में चाय निकालते इमाम से पूछा—अभी आपने शाहनजर के पास जाने के बारे में कहा था।

—हाँ, शाहनजर के पास गया था, लेकिन उसने मुझे बहुत नाराज कर दिया।

—क्यों, कैसे नाराज कर दिया ?—बाय ने पूछा।

—उसने मुझसे पूछा "दमुल्ला, बतलाइये दुनिया की क्या बात है ?" मैंने कहा—"कलखोज छोड़कर दूसरी कोई बात नहीं है।" उसने फिर पूछा—"आपकी राय में यदि मैं कलखोज में जाऊँ तो कैसा ?" मैंने जवाब दिया—"यदि भगवान का भय नहीं, तो कलखोज में जा और जो भी चाहे कर।" उसने कहा—"इस काम से भगवान का क्या संबंध ?" मैंने जवाब दिया—"धर्मशास्त्र के अनुसार

कलखोज का होना ठीक नहीं, क्योंकि इसे हमारे पैगम्बर (धर्मप्रवर्त्तक ने वर्जित किया है।" उसने कहा—"पैगम्बर के जमाने में कलखोज नहीं था और आज भी सोवियत-संघ को छोड़ किसी दूसरे मुल्क में कलखोज नहीं है।" मैंने कहा—"यदि कलखोज होने से खुदा मियाँ नाराज न होता, तो क्यों रूस में कलखोजों की फसल सूख गयी? उनके जानवर मर रहे हैं। गिज्दुवान में भी कलखोजियों को जमीन निगल गयी।" वह मेरी इस बात पर पहिले हँसा और फिर कुछ गर्म होकर बोला—"रूस में कलखोज की फसल को खुदा ने सुखाया-जलाया नहीं, ढोरों को भी खुदा ने मारा नहीं, बल्कि इस काम को बायों और तुम्हारे-जैसे पोपों ने किया। जब वे कल-खोजी आन्दोलन को रोक न सके, तो उन्हें नुकसान पहुचाने के ख्याल से कलखोजों की खेती को उन्होंने जला दिया, जहर देकर कलखोजी ढोरों को मार दिया। और गिज्दुवान में जमीन कलखोजियों को निगल गयी, यह ऐसी मूर्खता की बात है कि इसे सात वर्ष का बच्चा भी नहीं मानेगा। उठो, हटो, भाग जाओ यहाँ से" कहते मुझे घर से निकाल दिया। मुझे ऐसी लज्जा मालूम हो रही थी कि चाहता था कि जमीन फट जाये और मैं उसके अन्दर समाकर मुँह छिपा लूँ। मैं पसीने-पसीने हुआ वहाँ से जल्दी-जल्दी उठकर भागा।

—गिज्दुवान दूर नहीं है। वहीं जाइये, जमीन कलखोजियों के साथ आपको भी निगल जायेगी और आपकी लज्जा भी छूट जायेगी—बाय ने इमाम की बात पर हँसकर कहना शुरू किया—प्राचीन समय में एक नगर में एक चतुर वैद्य रहता था। वह जिस रोगी को देखता, बता देता कि उसने क्या खाया। एक दिन वैद्य स्वयं बीमार हो गया। लोग पुछार करने के लिये आये और रोगी की बीमारी को भयानक देखा। उसके बाद उन्होंने लड़के को देखकर पूछा—"तुम्हारे बाप ने अपनी विद्या तुम्हें सिखायी है या नहीं?" वैद्य के लड़के ने नहीं कहा और बतलाया कि बाप ने मुझे वैद्य बनने के अयोग्य कहकर विद्या नहीं सिखलायी। लोगों ने सोचा, यदि वैद्य मर गया तो बिना वैद्य के हम कैसे जीयेंगे। दूसरे दिन वे फिर वैद्य के पास आये और उससे प्रार्थना की कि अपने लड़के को फातिहा पढ़कर वैद्यक की सारी किताबें दे दें। वैद्य ने लोगों की प्रार्थना स्वीकर की, लेकिन कहा—"मेरे लड़के में इमाम बनने के अतिरिक्त और किसी काम करने, विशेषकर वैद्य बनने की योग्यता नहीं है, तो भी तुम्हारी बात मानकर उसके लिये फातिहा पढ़ दूँगा।" लोग प्रसन्न होकर चले गये। वैद्य ने अपने लड़के को बुलाकर कहा—"वस्तुतः मुझे

वैद्यक विद्या कुछ भी मालूम नहीं, लेकिन लोगों को धोखा देने की विद्या मैं खूब जानता हूँ। जब मुझे बीमार के पास ले जाते हैं, तो मैं बीमार के घर में इधर-उधर निगाह डालकर वहाँ बचे-खुचे भोजन और उसके चिह्न को देखता हूँ। वहाँ खरबूजा-तरबूजा के दाने-छिलके या प्याज-तरकारी के छिलके या ताजा हड्डी देखता, तो यह जानकर कि घर के लोग जो खाते हैं, बीमार भी उसमें से जोर लगाकर कुछ ले लेता है। मैं सिरहाने बैठ बीमार की नाड़ी पकड़कर कुछ देर देखकर कहता हूँ—"एवाय, क्यों तुमने खरबूजा खाया या मांस खाया ? इन चीजों को तुम पचा नहीं सकते, तुम्हारी बीमारी बढ़ेगी।" फिर कुछ घास-पात को उबलवाकर बीमार को दे देता हूँ और अपनी फीस ले चल देता हूँ। जब बीमार मर जाता है, तो इसके लिये कोई मुझे बुरा नहीं कहता; क्योंकि मैंने बतला दिया था कि बीमार ने क्या खाया और यह बात बहुत बड़ा वैद्य ही जान सकता है। यदि अच्छा हो गया तो कोई बात ही नहीं। इस तरह दिन-प्रति-दिन मेरी बड़ी प्रसिद्धि हुई और आमदनी भी बढ़ी। लेकिन तेरी बुद्धि कम है। तू इस तदबीर को नहीं कर सकता, लेकिन लोग चाहते हैं; इसलिये मेरे बाद वैद्यक करना, खुदा तुझे बुद्धि और भाग्य प्रदान करें। वैद्य मर गया। बीसा और चालीसा के बाद लड़के ने वैद्यकी करने की सूचना दी। पहिली ही बार उसे एक बीमार के पास ले गये। उसने घर में इधर-उधर बहुत ध्यान से देखा, लेकिन गदहे के एक पलान के सिवा कुछ नहीं देखा। बीमार की नाड़ी पकड़ थोड़ी देर चुप रह उसने कहा—"एवाय ! क्यों तुमने गदहा खाया, तुम्हारे लिये बहुत हानिकारक है, वह तुम्हारी बीमारी को बढ़ा देगा। बीमार यद्यपि मृत्युशय्या पर पड़ा था, तो भी आग-बगूला हो उठ बैठा और वैद्य के सिर पर एक मुक्का दे मारा। दूसरे लोगों ने भी क्रुद्ध हो उसे पी-पीटकर बाहर निकाल दिया।"

खोजानजर ने बात समाप्त करते हुए कहा—आप भी उसी वैद्य के बेटे की तरह हैं। इमाम बनने के सिवा और किसी काम की योग्यता नहीं रखते। आप जिस काम में लगेंगे, उसे बर्बाद करेंगे। शाहनजर ने सोवियत शिक्षणालय में विद्या प्राप्त की है। वैसे आदमी के पास जाकर ऐसी बात ही क्यों छेड़ी ? मैंने जो बातें सिखलायी थीं, उनमें गिज्दुवान की बात क्यों जोड़ दी ? वह यहाँ से सिर्फ छ मील है, वहाँ जमीन कलखोजियों को निगल गयी, इसे बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती। मुझे आश्चर्य है कि शाहनजर ने पटककर तुम्हारी खूब मरम्मत क्यों नहीं की ?

—गिज्दुवान में जमीन के कलखोजियों के निगलने की बात को बुद्धि क्यों नहीं स्वीकार करेगी ? क्या उसके अन्दर जगह नहीं है कि कुरान-वर्णित लूत की जाति के निगलने की तरह उन्हें भी निगल जाये ?—कहते इमाम ने शास्त्रार्थ द्वारा अपनी बात सिद्ध करनी चाही। लेकिन इसी समय अपराह्न की नमाज की बांग सुनाई पड़ी और वह चुप हो मुँह में बुड़बुड़ाने लगा। खोजानजर दोनों हाथों को ऊपर उठा छत की ओर नजर करके ऊँची आवाज में दुआ माँगने लगा—"हे खुदा ! हे खुदावन्द ! इसी महम्मदवाली अजान की हक-हुरमत के लिये हमें कल-खोज की बलाय से बचा।

इमाम ने सिर उठाकर "अजान के समय बात करना उचित नहीं कहते" बाय को फटकारा। इसी समय अजान की आवाज को ढाँकती एक दूसरी आवाज कूचे से आयी।

"हे गाँव के गरीबो और मध्य-वित्त किसानो ! हे पुराने मजदूरो, नौकरो, गुलामो ! कल शाम को ग्राम-पंचायत में जमा हो जाओ, वहाँ कलखोज के बारे में मन्त्रणा होगी।

इमाम मस्जिद की तरफ दौड़ा। सादिक बाय से "आज्ञा दो, मैं जाकर अपनी मुर्गी को मारूँ जिसमें देर न हो" कहते अपनी जगह से उठा।

बाय छत में नजर गड़ाये कलखोज के बारे में आवाज सुनकर बेहोश-सा हो गया था। सादिक की बात सुनकर अपने में आकर बोला—"स्याह-कुन्दुज को ठिकाने लगाना न भूलना।"

६

कलखोज बना

ग्राम-पंचायत के हाते में सारे किसान इकट्ठा हुए थे। व्याख्यान कलखोज के बारे में हो रहा था। जिला (रायन) से आये नेता ने कलखोज के एक-एक गुण बयान करते सिद्ध किया कि अकेली खेती में उतना लाभ नहीं हो सकता जितना सबको मिलाकर साझे में खेती (कलखोज) करने में। उसने यह भी कहा—मैं आशा रखता हूँ कि तुम्हारे गाँव के किसान भी इन्हीं सैकड़ों तरह के लाभों को देखकर यहाँ एक विशाल कलखोज स्थापित करेंगे।

—कलखोज में शामिल होना अपनी इच्छा पर है या जबर्दस्ती—एक किसान ने पूछा।

—अपनी इच्छा पर है, लेकिन जमाना कलखोज में आने के लिये मजबूर कर रहा है—नेता ने कहा।

—यदि इच्छा पर है, तो हम कलखोज में नहीं आयेंगे—उक्त किसान ने कहा—हम अपने बाप-दादों के रीति-रिवाज को नहीं छोड़ेंगे। हम जमाना-पमाना को नहीं जानते।

सफर गुलाम ने उसकी बात काटकर कहना शुरू किया—अका सादिक, तू 'हम' में और किसको शामिल कर रहा है? यदि तू उसमें बायों और कुलकों (धनी किसानों) को लेता है, तो याद रख, हम बायों और कुलकों को उनके चाहने पर भी कलखोज में नहीं आने देंगे। यदि हमसे तेरा मतलब है जाँगर चलानेवाले किसानों से, तो मैं समझता हूँ, हममें से किसी ने तुझे अपना वकील नहीं बनाया। यदि "हम" से तेरा मतलब है अपने भर से, तो "हम" न कहकर "मैं" कह, जिसमें लोगों को संदेह न हो। यदि तू कलखोज में नहीं आना चाहता, तो कोई तुझे मजबूर नहीं करता।

—मैं "हम" कहकर बहुत आदमियों के लिये कह रहा हूँ। मैंने बहुत लोगों को कहते सुना है कि वह कलखोज में नहीं आयेंगे।

"तू झूठ बोलता है, हम सब कलखोज में शामिल होंगे।"

—सभा में चारों ओर से आवाज आने लगी—पीठ-पीछे कोने-किनारे में बात करना ठीक नहीं। जो आदमी कलखोज को नहीं चाहता, वह सामने, सभा में आकर बात करे—कहते एक आवाज आयी, जो मानो सादिक के ऊपर तीर थी।

सादिक लज्जा के मारे लाल होकर अपनी जगह बैठ गया और पास बैठे नारमुराद को दबाकर बोला—उठ, तू बात कर।

—क्यों उन्हें बोलने नहीं देते—अपनी जगह बैठे ही बैठे नारमुराद ने कहा।

—तू क्यों डरता है? उठ, जो दिल में आये कह—सफर गुलाम ने कहा।

—मैं किससे डरूँगा—कहते खड़ा होकर नारमुराद ने बात शुरू की—मैं ऐसा आदमी हूँ कि जिसने अमीर के जमाने में बहुत जुल्म और अत्याचार देखे। मेरी

जमीन का बहुत-सा हिस्सा भी हाथ से निकल गया, जो दो तनाब जमीन बची, जब उसे बेचना चाहा, तो जमीन का क्रय-विक्रय बंद हो गया और दो तनाब हाथ में रह गयी ! जमीन-सुधार के समय दो तनाब और भी मिला। इसके लिये मैं सोवियत सरकार को धन्यवाद देता हूँ, लेकिन अब जब अवसर मिला और मैंने चाहा खुद अपना काम करके इच्छानुसार जिन्दगी बिताऊँ, तो तुम लोग उस चार तनाब जमीन को भी छीन लेना चाहते हो। मैं इसके लिये राजी नहीं हो सकता। इसके बाद···इसके बाद···।

नारमुराद को कहने के लिये कोई बात न मिल रही थी। इसलिये वह "इसके बाद, इसके बाद" कहते खड़ा था। उसी वक्त "गरीब-दल" के अध्यक्ष एरगश बाबा गुलाम ने कहा—जो बातें उसे रटायी गयी थीं, वह खतम हो गयीं। अब उसे कोई बात कहने को नहीं मिल रही है। (फिर नारमुराद की ओर देखकर) तूने वस्तुतः अमीर के जमाने में बहुत जुल्म और अन्याय देखा है। अकेले तूने ही नहीं, तेरे बाप-दादे भी जुल्म सहते आये। केवल अमीर के हाथ में नहीं, सारी पुरानी दुनिया जुल्म कूटने के लिये तैयार थी। मेरे-तेरे और यहाँ उपस्थित और कितने ही साथियों के बाप-दादा गुलाम होकर मिहनत करते रहे। तू जुल्म देखे हुए है और गरीब-दल का मेम्बर है। किसी को आशा नहीं थी कि तू बिना जाने-सुने अपने लाभ के विरुद्ध, गरीबों के लाभ के विरुद्ध, सारे जाँगर चलानेवालों के विरुद्ध बात करेगा। बात हो रही है कलखोज के बारे में और तू रो रहा है "उस चार तनाब जमीन को भी मेरे हाथ से छीन रहे हो।" कोई तेरी जमीन लेकर तुझे नहीं खदेड़ेगा।

नारमुराद खड़े रहने में लज्जा अनुभव कर अपनी जगह बैठ सादिक से फुस-फुस कर रहा था। एरगश ने उसकी ओर निगाह करके कहा—कान इधर कर नारमुराद, मैं तुझसे बात कर रहा हूँ। इस समय तेरे हाथ में चार तनाब जमीन है, जिसे जोतने के लिये तेरे पास एक गदहा तक भी नहीं है। इसलिये बायों से किराये पर बैल-जोड़ी लेकर जैसे-तैसे अपनी जमीन को जोतता है और उससे पूरी फसल भी नहीं पा सकता है। (एरगश मेज पर रखे गिलास को उठा पानी पीकर सूखे गले को तर करते फिर बोलने लगा)—कलखोज बन जाने पर दूसरी जमीनों के साथ-साथ तेरी चार तनाब जमीन भी अच्छी तरह जोती-बोयी जायेगी। एक ओर कलखोजियों के एकजाया पशु खेतों में लगातार काम करेंगे, दूसरी ओर

सरकार भी ट्रैक्टर-कल्टीवेटर (मोटर हल और कोड़क) से मदद करेगी, जिससे जमीन की खूब जोताई-बोआई हो सकेगी और तेरी उस चार तनाब जमीन से, जो करीब-करीब खराब हो चली है, दस तनाब के बराबर फसल पैदा होगी। मैं समझता हूँ, तुझे मालूम नहीं कि कलखोज क्या है और बिना जाने ही उसका विरोध कर रहा है।

—मैं क्यों नहीं जानता ? मैं जानता हूँ कि कलखोज क्या है—नारमुराद बोल उठा।

—अगर जानता है तो बता, कलखोज क्या है—एरगश ने नारमुराद से पूछा।

—कलखोज भी जमीन-सुधार की तरह का एक काम है, जिससे लोगों की माल-मिलकियत उनके हाथ से ले ली जाती है। अन्तर इतना ही है कि जमीन-सुधार में बायों की माल-मिलकियत छीनी गयी और कलखोज में गरीबों की भी।

एरगश ने ठट्ठा मारकर हँसते हुए कहा—किसी से पूछा—"चाँद कैसा होता है ?" उसने जवाब दिया—चाँद ऊँट की तरह दो सींगोंवाला होता है। तू भी उसी आदमी की तरह न जमीन-सुधार की एक भी बात को समझता है, न कलखोज की ही। (एरगश ने फिर एक घोंट पानी पीकर कहना शुरू किया) जमीन-सुधार में लोगों की माल-मिलकियत नहीं छीनी गयी, बल्कि जिन लोगों का जमीन के काम से कोई सम्बन्ध नहीं था और जो कि जमीन की उपज अर्थात् दूसरों की कमाई को लेकर मौज उड़ाते थे, उनके हाथों से जमीन को लेकर तेरे-जैसे आदमियों को दिया गया, जो कि उस जमीन में मेहनत करते थे ; अतएव जो वस्तुतः उस जमीन के मालिक थे। कलखोज में भी जाँगर चलानेवाले किसान अकेले काम न कर एकजाया काम करेंगे और अपने काम के पशुओं को भी एकजाया करके उनसे काम लेंगे। फिर तुझे दर-बदर बैल-जोड़ी माँगने या बायों से किराया लेने की जरूरत न होगी।

—उसे बायों और मुफ्तखोरों ने बहकाया है—एक कोने से आवाज आयी।

—मुझे भी बहकाने के लिये इमाम को मेरे पास भेजा था—शाहनजर ने कहा।

—मुझे कहने की आज्ञा दीजिये— कहते कुलमुराद ने कहना शुरू किया—हमारे गाँव में जैसे बड़े-बड़े जमीन्दार और भेड़दार थे, वैसे ही बहुत-से चरवाहे, नौकर और गुलाम भी थे, जो उनका काम करते। और कम जमीन और कम भेड़वाले किसान भी थे, जो अपनी रोजी को बड़ी मिहनत से कमाते थे। हम बोलशेविकों ने लाल गोरिल्ला और लाल सेना की सलाह से सरकारी सेवा से लौटकर गाँव में आकर पिछले साल अपनी कराकुली भेड़ों को एकजाया कर एक पंचायती पशुपालन बनाया। कम भेड़ोंवाले तथा चरवाहे, नौकर और गुलाम इस पशुपालन-संस्था में शामिल हो गये। एक सौ आदमियों की कुल सोलह सौ भेड़ें हमारे पास जमा हुईं। भेड़ों के बियाने का समय आया। हमने ५० बरों को मारकर उनकी पोस्तीन सरकार को बेच दी। एक साल बीतते-बीतते हमारी सोलह सौ भेड़ें बाईस सौ भी हो गयीं। बड़े बायों और भेड़वालों ने इसी एक साल के भीतर अपनी भेड़ों को बेच डाला, मार डाला या देश से बाहर भेज दिया, और इस तरह अपने को भी, सरकार को भी और देश को भी ऐसे बहुमूल्य लाभदायक जानवरों से वंचित कर दिया। हमारी पंचायती मेषपालन-संस्था में चराने के लिये बारी-बारी से सिर्फ पाँच-छः आदमी आवश्यक होते हैं। दूसरे अपनी बारी आने तक खेती या लकड़हारी-जैसे काम करते हैं। किसी को साल में दो महीने से अधिक काम नहीं करना पड़ता। पोस्तीन बेचने के बदले हमें जो गेहूँ, चाय, चीनी और दूसरी चीजें मिलीं, उनमें केवल गेहूँ आदमी पीछे सौ पूद (५० मन) के करीब मिला। पंचायती पशुपालन से पहिले हर आदमी अपनी दस-पन्द्रह भेड़ों के पीछे साल भर मारा-मारा फिरता था और इससे आधी भी आमदनी नहीं होती थी। गाँव के जाँगर चलानेवालों ने हमारी इस सफलता को देखा। अब वे भी चाहते हैं कि अपने खेतों और काम करनेवाले पशुओं को एक कर पशुपालन और खेती का एक बड़ा कलखोज कायम करें—अपनी बात समाप्त करते कुलमुराद ने कहा—मेरे ख्याल में कलखोज की सफलता में कोई संदेह नहीं है। आप लोग बिना कुछ पूछे-पाछे कलखोज बनाइये।

—गदहसवारी से समाजवाद तक नहीं पहुँचा जा सकता—कहते सियारकुल ने बात शुरू की—हम समाजवादी समाज तैयार करना चाहते हैं। दो तनाब जमीन एक गदहा या चार तनाब जमीन एक घोड़ा या बहुत तो आठ तनाब जमीन और एक जोड़ी बैल, इससे समाजवादी समाज कभी बनाया नहीं जा सकता।

मैं मजूर हूँ, मेरी सारी उमर कपास के कारखाने में गुजरी। जब ये कारखाने नहीं थे, तो यह काम धुनकी और ओटनी से किया जाता था। उस समय एक आदमी बिना आराम किये रात-दिन में एक पूद (आधा मन) कपास मुश्किल से ओट पाता। और अब फैक्टरी में यदि सौ मजदूर काम करें, तो रूई ओटकर, साफ करके, गाँठ बाँधकर चार मालगाड़ी भर सकते हैं, जो चार हजार पूद (दो हजार मन) रूई हुई। अर्थात् आदमी पीछे ४० पूद (२० मन)। यदि सौ मजदूर इकट्ठा होकर के भी ओटनी से काम करते, तो सौ पूद से अधिक रूई तैयार न कर सकते। फैक्टरी में उतनी मिहनत से इतना अधिक काम क्यों होता है? मशीन के कारण। इसलिये कलखोज का गुण सिर्फ यही नहीं है कि वहाँ नाँगर चलानेवाले एक होकर खेती के पशुओं को इकट्ठा करके काम करेंगे; बल्कि कलखोज या एकजायी खेती का एक गुन यह है कि वहाँ मशीन का उपयोग किया जा सकता है। अलग-अलग खेती करने में दो तनाब जमीन के लिये एक बोआई की मशीन (बोवक), चार तनाब जमीन के लिये एक कल्टीवेटर (कोड़क), आठ तनाब जमीन के लिये एक ट्रैक्टर (मोटरहल) खरीदना संभव नहीं है, न उनका पूरा उपयोग ही किया जा सकता है। अकेली खेती कमजोर गदहे की यात्रा-जैसी है और कलखोज की साझी खेती का काम और आमदनी कारखाने और फैक्टरी की तरह होता है।

सियारकुल की बात पर लोगों ने तालियाँ बजायीं और नारे लगाये—"जिन्दाबाद कलखोजी गाँव, जो फैक्टरी और कारखाने की जगह ले रहे हैं।"

—जो कोई कलखोज का पक्षपाती है, वह हाथ उठाये—सभापति ने कहा।

चारों ओर हाथ उठ गये।

—गिराइये, जो विरोधी हैं वे हाथ उठायें—सभापति ने फिर कहा।

सभापति ने निगाह करके देखा, तो नारमुराद को छोड़कर किसी का हाथ उठा नहीं दीख पड़ा और नारमुराद अपने दोनों हाथों को उठाये हुए था—क्या तू अब भी कलखोज के विरुद्ध है?

—नहीं—उसने कहा—दूसरे एक हाथ से कलखोज के पक्षपाती हैं और मैं दोनों हाथों से।

—तो तूने विरोध के वक्त क्यों हाथ उठाये रखा?

—मैंने अपनी भूल को मिटाने के ख्याल से चाहा कि दूसरे यदि हाथ गिरा दें तो भी मैं सदा अपने हाथ उठाये रहूँगा।

लोग ठठाकर हँस पड़े।

मुहब्बत आज की सभा की सभापति थी। उसने जिला से आये नेता को बाबा साबिरवाली दुर्घटना के दिन नारमुराद के हाथ उठाये चलने की बात सुनायी। वह खूब हँसा।

७

बायों का बहकावा

कलखोज के लिये बुलाई साधारण सभा से लौटकर सादिक ने अपनी बीबी से कहा—"सभी मुर्गे-मुर्गियों को बाँधकर रख" और खुद लौटकर जाने लगा।

—क्या बाकी सारे मुर्गे-मुर्गियों को मारेगा, क्या बलाय है—कहते औरत चिल्लायी; लेकिन सादिक बिना सुने ही जा चुका था।

बच्चे यह खबर सुनकर रो-पीट रहे थे, लेकिन उसका कुछ भी न ख्याल कर स्त्री ने बारह मुर्गियों और एक मुर्गे को पकड़कर दो जगह रस्सी से पैर बाँधकर रख दिया। इसके बाद ओसारे में आ, चूल्हे में एक छुरी डाल, वहाँ से एक चिमटा हाथ में ले, अब भी रोते बच्चों के पीछे यह कहते मारने दौड़ी—"हा नाशुदनी (अनहोनी) जवाँ मर्गो! हा छुरी के नीचे न आनेवालो! लेकिन अब मुर्गों की पाँती में!" बच्चे भागकर गली में चले गये और घर में नीरवता छा गयी। स्त्री घर के भीतर जा सन्दली के नीचे पैरों को फैलाकर अपने आप से "या तो मेरा पति पागल हुआ है या कलखोज में जानेवाले" कहती बालिश का सहारा लेती लेट गयी।

सादिक घर लौटा। सूर्य डूब गया था, चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था। बच्चे गली से ही "ददा जान, जान ददा जान, मुर्गों को न मार" कहते रोते-रोते उसके साथ हो लिये।

—चुप रहो, नहीं तो तुम्हारा कान काट लूँगा—कहते उन्हें धमकाकर सादिक ने स्त्री को पुकारा—"आचेश, कैंची-छुरी ले आ।" बच्चे कान काटने

की बात सुनने के बाद ही कैंची-छुरी लाने की बात सुन डरकर घर के अन्दर भगे और संदली के पास जाकर रजाई के अन्दर चुपचाप लेट गये। स्त्री ने कैंची-छुरी लिये पति के पास आकर कहा—अभी मुर्गे को बाँधे एक दिन भी नहीं हुआ कि हलाल होंगे। और सूर्य के डूबने के बाद पशु मारने को भी कुलच्छन कहते हैं, क्यों इस समय बेचारों को मारता है ?

—मैंने दमुल्ला इमाम (पुरोहितजी) से पूछा था। उन्होंने कहा—"आवश्यकता पड़ने पर मुर्गे को बिना तीन दिन बाँधे या रात को मारना विहित है।"

—रहने दो मारने की क्या जरूरत, कल मारना।

—कल कहाँ मौका मिलेगा ? कलखोज बनना निश्चित हो गया। सब कलखोज में जा रहे हैं, तो मेरा भी उसमें जाना जरूरी है। जमात के अन्दर जाकर फिर बाहर आना नहीं हो सकता—चाहे कुछ भी हो "यारों के साथ मौत भी त्योहार है।"

—क्या मुर्गियों को भी एकजाया करेंगे ?

—सभी चीजों को एकजाया करते हैं। कहा गया है "जो कोई कलखोज के अन्दर आना चाहे, वह अपनी सब चीजों की सूची के साथ आवेदन-पत्र दे, जो चीज को छिपा रखेगा, वह जवाबदेह होगा" कहकर धमकाया भी है। इसलिये इनको मारकर खतम कर देना आवश्यक है, नहीं तो इन्हें भी सूची में लिखना पड़ेगा। मार डालने पर विश्वास न हो तो वह मेरे घर में आ मुर्गों के पंखों को ले जाकर चाहें तो अपने बालिश बनायें।

—गाय, बछड़े, बैलों और खर को क्या करें ?—पत्नी ने दूसरा प्रश्न कर दिया।

—खर और एक बैल को कलखोज में दिये बिना जान न बचेगी। बाकी के लिये कसाई को तैयार करके आया हूँ।

—इ—बी—! मैं मरी, क्या उनको भी मारेगा ? इतना मांस क्या करेंगे ?

—बहुत बात न बना लम्बी चोटी—सादिक ने गर्म होकर कहा—मैं इसके लिये बाध्य नहीं हूँ कि अपने सब सोचे कामों को एक-एक करके तुझे बतलाऊँ। इस समय स्वयं अपने प्राण निकल रहे हैं।

सादिक ने अपना काम शुरू किया। स्त्री जान निकलते समय पंख नोच रही थी और उसका प त मुर्गे का सिर काट प्राण निकलने से पहिले स्त्री के पास फेंकता जाता था। सभी मुर्गों को मार सादिक हाथ धोकर बाहर जाने लगा। इसी समय स्त्री ने कहा—

—ठहरो, सूप तैयार है, दो को मैंने चढ़ा दिया था। पककर तैयार है; लेकिन उनके पेट में सौ छोटे-बड़े अंडे निकले, देखकर दिल मसोसने लगा।

—इस समय मेरे गले से नीचे कोई चीज नहीं उतरती—कहते सादिक बाहर चला गया।

× × ×

आधी रात हो चुकी थी, जब कि सादिक एक आदमी को साथ लिये घर लौटा। आदमी को ढोरखाने के पास रखकर घर के अंदर चला गया और चूल्हे से ढिबरी बारकर लाया। आदमी ने एक-एक पशु को हाथ लगा-लगाकर देखा, फिर उसने दोबारा स्याह-कुन्दुज के पास आकर उसके ककुद, पीठ, पेट पर हाथ फेरते कुक्षि में हाथ डाला। सादिक बैल की गर्दन को पकड़कर उसे सहला रहा था, लेकिन बैल एकाएक पीछे हटकर अपरिचित आदमी को अपने सींगों पर उठाने ही वाला था कि आदमी ने बड़ी फुर्ती से एक ओर हटकर आक्रमण को व्यर्थ कर दिया और फिर सादिक से कहा—बात करो, इन तीनों का क्या करें?

—चार कहो, बछड़ा भी है—सादिक ने कहा।

—बछड़ा तो घालू है—आदमी ने कहा—एक टोकरा तरबूजा खरीदते हो तो दो-तीन घालू में मिलता है।। मैं जो तुम्हारे इतने मालों को खरीद रहा हूँ, क्या एक बछड़े को घालू भी नहीं दोगे?

—मैलश (अच्छा) बछड़ा घालू ही सही—कहते सादिक विचारों में डूब गया।

—बात करो, रात गुजर रही है—आदमी ने कहा।

—मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है, कोई चीज याद नहीं आती, तुम ही एक बात बोलो।

—अच्छा, ऐसा ही सही—आदमी ने स्याह-कुन्दुज की ओर इशारा करके कहा—यह जवान है, इसका पाँच सौ रूबल। उस बूढ़े बैल का चार सौ और गाय का दो सौ, सब मिलाकर ग्यारह सौ रूबल ले लो।

—इन्साफ करो अका रहीम—सादिक ने कहा—इस बैल को तुम जवान कह रहे हो, लेकिन है यह छ साल का एक बड़ा बैल। दो मास से इससे काम नहीं लिया गया और खूब खिलाया गया, जिससे हड्डी तक पर चर्बी चढ़ गयी है। यदि कीचड़ में गिरे आदमी को हाथ पकड़कर निकालते नहीं, तो उसे गर्दन पकड़कर और डुबाना भी तो नहीं चाहिये?

—यदि राजी नहीं हो, तो माल तुम्हारा, मैं भी सरकार की आँखों के सामने आसानी से पचा नहीं सकता, छिपाकर मारूँगा और छिपाकर बेचूँगा। यदि पकड़ा गया तो दाम का चौगुना जुर्माना देना पड़ेगा—कहते रहीम कसाई ढोरखाने से निकलने लगा।

—जरा ठहरो—सादिक ने कहा—खैर ऐसा ही सही, उस कमजोर बुड्ढे बैल का क्या हिसाब किया ?

—वह भी पाँच सौ—कसाई ने कहा।

—क्या मुझे पागल समझ रहे हो—सादिक ने कुछ तेज होकर कहा—बूढ़ा बैल काम के अयोग्य है, उसे पाँच सौ रूबल के हिसाब में लेकर कलखोज को देने की जगह क्यों न इस स्याह-कुन्दुज को दूँ जिसका भी दाम तुमने पाँच सौ रूबल किया है ? मैं इस काम को कुछ लाभ की आशा से कर रहा था।

—अच्छा, ऐसा ही सही, अपना हाथ इधर दो—कहते कसाई ने सादिक के बायें हाथ को अपने बायें हाथ में लेकर कहा—जाओ, बरकत पाओ, मेरा बैल चार सौ।

—नहीं, नहीं होगा—कहते सादिक ने अपने हाथ को खींच लेना चाहा—इसकी जगह चार सौ रूबल दामवाले बूढ़े बैल को क्यों कलखोज में दूँ ?

कसाई सादिक के हाथ को मजबूती से पकड़े बोलता रहा—जाओ, बरकत पाओ। मैं अपने बूढ़े बैल का तीन सौ रूबल हिसाब करता हूँ। मैं इस समय इन मालों को लिये जाता हूँ। सबेरे आठ सौ रूबल के साथ अपने बूढ़े बैल को लाकर दे दूँगा। ठीक है न ?

—खैर, बरकत पाओ—कहते सादिक ने अपना हाथ खींच लिया।

जिस समय कसाई मालों को दरवाजे से निकाल रहा था, सादिक एक हाथ से स्याह-कुन्दुज की गर्दन को सहलाते दूसरे हाथ से आँखों से झरते आँसुओं को पोंछ रहा था। इसी समय हवेली के भीतर से औरत की आवाज आयी—"वाय ! मेरी गाय ! हाय मेरी गैया ! तीन माह बाद जायती, बारह कटोरा दूध देती, रोट-जैसी मलाई पड़ती !"

उसे चिल्लाकर रोते सुन सादिक दरवाजा बन्द कर उसके पास गया और "चुप मेहरिया, लम्बी चोटी अकल छोटी, आवाज न निकाल नहीं तो सिर पर बलाय आयेगी और सब पर बलाय आयेगी" कहते खुद भी चिल्लाकर रोने लगा।

× × ×

कलखोज आफिस में आवेदन-पत्रों की वर्षा हो रही थी। सेक्रेटरी उन्हें ले रहा था। एक आवेदन-पत्र पर नजर डालते उसने आवेदक से पूछा :

—तुम्हारे आवेदन-पत्र में और चीजें तो दर्ज हैं, किन्तु अपने बैलों को क्यों नहीं दर्ज किया ?

—मैं गरीब आदमी हूँ, मेरे पास बैल कहाँ ?—आवेदक ने कहा।

—तुम्हारे पास बहुत जमीन है, फिर अकेला बैल क्यों ? इतनी जमीन को क्या एक बैल जोत सकता है ? सेक्रेटरी ने पूछा।

—एक बैल था, उसे कलखोज को अर्पित कर दिया और क्या कहते हो ? उनसे बात करो, जो केवल एक हँसिया लेकर कलखोज में आये—आवेदक ने उत्तर दिया।

—खोजानजर बाय ने एक साथ तीन आवेदन-पत्रों को लाकर सेक्रेटरी के हाथ में दिया। सेक्रेटरी ने उनपर एक नजर डालकर पूछा—इनमें एक आवेदन-पत्र तुम्हारा है, बाकी दो किनके हैं ?

—क्या आवेदन-पत्रों पर नाम नहीं लिखा है ?

—नाम लिखा है, एक पर है नौरोज का नाम और दूसरे पर हमीद का।

—हाँ। उन्हीं के आवेदन-पत्र हैं—बाय ने कहा।

—पूछ रहा हूँ कि वे कौन हैं और कहाँ के हैं ?

—वे मेरी बीबियों के भाई हैं, लज्जा-संकोचवाले आदमी हैं, खुद आने में शर्माते हैं, इसलिये उन्होंने मेरे हाथ से आवेदन-पत्र भेजा।

—बहुत अच्छा—सेक्रेटरी ने कहा—तुम्हारे आवेदन-पत्र में केवल एक बैल लिखा हुआ है। उसके अतिरिक्त न किसानी के हथियार हैं, न और जानवर। क्या तुम गाँव के गरीब हो ?

—मैं अपने को गरीब नहीं कह सकता—बाय ने कहा—लेकिन जमाने की मार ने मुझे भी गरीबों के नजदीक कर दिया। एक बैल और एक गाय को शरद में बेचकर खा डाला, एक कलोर जाड़ों में मारकर खायी। खर मर गया, ऊँट ने कीचड़ में पड़कर पैर तोड़ लिया और उसे खुदा के नाम पर मारकर बाँट दिया।

—बस करो बाय बाबा—अपनी बारी में आवेदन-पत्र लिये पीछे खड़े नारमुराद ने कहा—मुझे लग रहा है कि ऊँट के बाद अब कहने जा रहे हो "मैं भी पंचायती खेती की खबर सुनकर मर रहा हूँ।"

सेक्रेटरी ने हँसकर फिर बाय से पूछा—हल, पंजा, माला क्या हुए?

बाय ने पहिले नारमुराद की ओर इशारा करके "यह बीच में न पड़े" कहते बोला—सर्दी का मौसिम बहुत सख्त आया, सूखा ईंधन नहीं था। बाध्य हो उन्हें जलाकर सर्दी से बच्चों को बचाया।

खोजानजर के बाद नारमुराद ने अपना आवेदन-पत्र दिया। उसके आवेदन-पत्र में जो लिखित चीजें थीं, उनमें एक ओटनी, एक धुनकी, एक गड़ुवा, एक चमचा, एक टीन की थाली और एक कनटूटी मिट्टी की हँड़िया भी थी।

—इन चीजों की कलखोज में क्या जरूरत है—चीजों के नामों को ऊँची आवाज में पढ़ते सेक्रेटरी ने पूछा।

—मैं क्या जानूँ? सब चीजों को लिखने के लिये कहा गया। मेरे पास जो चीजें थीं, लिखवा दिया—नारमुराद ने कहा—कलखोज बन जाने के बाद मुझे थाली-हँड़िया की क्या जरूरत रहेगी? रोज कलखोज आफिस में आकर आश खाकर चला जाऊँगा।

—तुझसे किसने कहा कि थाली-हँड़िया, चक्की-चूल्हा एक होगा—एक कोने में बैठे एरगश ने पूछा।

—मैं क्या जानूँ? गली में ऐसी ही आवाज सुनाई देती है।

—यह बायों और मुफ्तखोरों का बहकावा है। लोगों को कलखोज-विरोधी बनाने के लिये इस तरह की आवाज निकलवाते हैं। तू गरीब-दल का मेम्बर है, तुझे गली की बातों पर विश्वास करना ठीक नहीं है।

—ठीक है, थाली-हँड़िया एक होना क्या बुरा है?—नारमुराद ने कहा—हर आदमी घर-घर में तकलीफ उठाकर खाना पकाये, क्या उसकी जगह आफिस में आकर खा लेना अच्छा नहीं है?

—सब लोगों का विचार तेरी तरह नहीं है—एरगश ने कहा।

—ओटनी और धुनकी ले लेनी चाहिये—वहाँ बैठे एक जवान ने कहा।

—किस काम के लिये—सेक्रेटरी ने पूछा।

—हम घरों में कपास न जाने के लिये रखवाली कर रहे हैं—जवान ने कहा—ओटनी और धुनकी ऐसे हथियार हैं जिनकी सहायता से खेतों की कपास घरों में गायब हो रही है। हम सोच रहे हैं कि कमूसोमोलों (तरुण सभाइयों)

और प्योनीरों (बालचरों) की टोली लेकर सारे घरों की ओटनी और धुनकी ले लेवें।

—मुझे भी बालचर बना लो, मैं तुम्हें सौ ओटनी और धुनकी इकट्ठा करके दूँगा—नारमुराद ने कहा—इसी खोजानजर बाय के घर में ही दस ओटनियाँ और धुनकियाँ हैं।

—यदि तुम्हें बालचर बनना है, तो वर्गयुद्ध में खूब साहस दिखलाओ। मैलश, पचाससाला बालचर होने में भी कोई हर्ज नहीं है—जवान ने नारमुराद से मजाक करते खोजानजर की ओर निगाह करके कहा—बाय बाबा, हल, पंजा, माला जैसे खेती के हथियारों को जलाने की जगह तुम ओटनी-धुनकी जलाकर तापते तो क्या काम नहीं चलता ?

—साथी योलदाशोफ ! बाय ने फीकी हँसी हँसते कहा—तुम्हारे बाप रहमत योलदाश बाय अका बेचारे कोमल स्वभाव के आदमी थे, किसी को पीड़ा न देते थे, तुम क्यों इस तरह हर काम में बखिया उधेड़ते फिरते हो ?

—तुम हमारे बापों के सारे बेचारापन और कोमलता से लाभ उठाकर सब काम करते आये। हम चाहते हैं कि अपने बापों का हक तुमसे माँग लें।

जिस समय सेक्रेटरी सादिक के आवेदन-पत्र को देख रहा था, खोजानजर ने उससे कहा—क्षमा कीजिये आफन्दी (महाशय)! मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ।

—पूछिये—सेक्रेटरी ने आवेदन-पत्र को मेज पर रखकर कहा।

—मैंने अपनी २० तनाब बहुत ही अच्छी जमीन एक काम करनेवाले बैल के साथ कलखोज को दी और नारमुराद ने सिवा चार तनाब खराब जमीन के और कुछ नहीं दिया। क्या फसल तैयार होने पर पैदावार में हम दोनों का भाग बराबर होगा ?

सेक्रेटरी इस सवाल को सुनकर घबड़ा-सा गया ; लेकिन इसी समय उसकी सहायता करते एरगश ने कहा—अभी इस बारे में हमें कुछ नहीं मालूम है। हमारे हाथ में कलखोज का नियम नहीं आया है। अभी सब मिलकर काम करें। फसल तैयार होने तक जिले से नियम भी आ जायगा या स्वयं आपस में हमलोग बैठकर इसका निर्णय बहुमत से करेंगे।

सेक्रेटरी ने इस गंभीर प्रश्न से इतनी आसानी से छुट्टी पा लिलार से पसीना पोंछते सादिक के आवेदन-पत्र को पढ़ा। उसके आवेदन-पत्र में आठ तनाब जमीन-

एक बैल, एक गदहा, एक जूआ, एक हल, एक पंजर इत्यादि लिखा हुआ था।

—औरों से तू अधिक इज्जतदार निकला—एरगश ने सादिक से कहा।

—मैं मध्यवित्त किसान से भी अधिक बुरी अवस्था में हूँ और यह मध्यवित्त है—खोजानजर ने कहा।

—अब उचित है कि सादिक तुमसे अधिक हक पाये—योलदाशोफ ने कहा।

—क्यों?—बाय ने पूछा।

—क्योंकि इसने तुझसे अधिक चीजें कलखोज को दीं।

इसका खर मुझसे अच्छा भले ही हो, लेकिन मेरी जमीन इससे अच्छी है—खोजानजर ने जवाब दिया।

—वस्तुतः सादिक का खर तुमसे ज्यादा है—योलदाशोफ ने कहा।

खोजानजर ज्यादा हक पाने की फिक्र में इतना लगा हुआ था कि उसे कुछ नहीं समझ में आया, लेकिन लोग योलदाशोफ की बात पर हँस पड़े। बाय मतलब न समझ चकित हो लोगों के मुँह की ओर देखने लगा।

—एक लम्बी दाढ़ी, नीली पागवाले आदमी ने अपना आवेदन-पत्र सेक्रेटरी के हाथ में दिया। सेक्रेटरी ने एक बार आवेदन-पत्र और दूसरी बार आदमी की ओर निगाह करके उससे पूछा—तुम इमाम हो न?

—हाँ—आदमी ने कहा—मैंने क्रान्ति के आरंभ होते ही इमामत (पुरोहिती) को छोड़ दिया। कभी-कभी पुण्यार्थ नमाज और श्मशान-विधि पढ़ा दिया करता हूँ। यदि यह भी अपराध है, तो यह भी न करूँगा।

—कलखोजियों के मुर्दे के लिये जनाजे (अन्त्येष्टि-संस्कार) की क्या जरूरत?—खोजानजर ने ताना मारते हुए कहा।

इमाम के बाद एक मरियल-से आदमी ने सेक्रेटरी के हाथ में अपना आवेदन-पत्र दिया। सेक्रेटरी ने नजर दौड़ाकर उस आदमी से पूछा—तुम्हारा पेशा क्या है?

—मुर्दा नहलाना।

—खेती भी करते हो?

—नहीं।

—कलखोज में आकर खेती का काम करना चाहते हो?

—यदि मैं लोगों की सेवा—मुर्दा नहलाने से छुट्टी पाऊँगा, तो काम भी करूँगा; किन्तु यह धर्म की सेवा भी कलखोज की सेवा है।

—तुम मुर्दा नहलाकर कलखोज से भाग लेना चाहते हो?—योलदाशोफ ने पूछा।

—हाँ।

—ऐसा नहीं हो सकता—योलदाशोफ ने कहा—मान लो, मैं मर गया, मैं कम्युनिस्ट हूँ, मेरे लिये मुर्दा धोने की आवश्यकता नहीं, यदि तुम मुर्दा नहलाकर कलखोज से हिस्सा लोगे, तो दूसरे की मेहनत, मेरे-जैसे की मेहनत से मुफ्त में फायदा उठाओगे। मुर्दा नहलाना सभी कलखोजियों की सेवा नहीं है। यह उनका निजी काम है। जो मुर्दों को धुलाना चाहता है, वह मजदूरी देगा।

खोजानजर "कलखोजचियों के लिये मुर्दा धुलाने की भी जरूरत नहीं"—कहते कुड़कुड़ाते वहाँ से चला गया।

—ऐसा होने पर इनका आवेदन-पत्र स्वीकार करूँ या नहीं—सेक्रेटरी ने योलदाशोफ से पूछा।

—स्वीकार करो, प्रत्येक आवेदन को स्वीकार करो—योलदाशोफ ने कहा—लेकिन आवेदन-पत्र का स्वीकार करना कलखोज में स्वीकार करना नहीं है।

कलखोज-प्रवेश का निश्चय साधारण सभा करेगी। हो सकता है, इन आवेदनों में से साधारण सभा कितनों को न स्वीकार करे।

गली की ओर से हल्ला सुनाई दे रहा था। लोगों का ध्यान उधर खिंचा। आवाज आ रही थी—"कलखोजवालों के मुर्दों को बिना नहलाये, बिना जनाजा पढ़े दफनाया जायेगा। कलखोजचियों के लिये मुर्दा जलाने की आवश्यकता नहीं। हमें ऐसा कलखोज नहीं चाहिये।" लोगों को शांत करने के लिये एरगश, सेक्रेटरी नारमुराद और दूसरे लोग आफिस से बाहर दौड़े, किन्तु वहाँ कोई बात सुनने के लिये तैयार नहीं था। योलदाशोफ ने कहा—"खोजानजर को गिरफ्तार करना चाहिये।" लेकिन वह लोगों में न था। आग लगाकर वह खुद भाग गया था।

८

ट्रैक्टर आया

कलखोज का काम आरंभ हुआ। ग्राम-पंचायत के घरों में सभी लोगों के नष्ट होने से बचे खेती का सामान और निजी तथा खेती के पशुओं को इकट्ठा किया गया था ; लेकिन उन जानवरों को ठीक से बाँधने के लिये ढोरखाना और खाने के लिये घास-भूसा न था। तंग घरों में गदहों के साथ गदहे घोड़ों के साथ घोड़े, बैलों के साथ बैल बाँधे जाते थे और वे आपस में लड़कर एक दूसरे को घायल करते थे।

घास-भूसे की समस्या और भी कठिन हो गयी और उसे हल करने का और कोई रास्ता नहीं दिखलाई पड़ता था। कलखोज में आनेवाले किसानों में से—जिन्होंने पशु दिये थे, उन्होंने भी—घास-भूसा नहीं दिया था और जानवरों के चारे को या तो छिपाकर बेच डाला था या ईंधन की जगह जला दिया था। ऊपर से कपास अधिक पैदा करने पर इतना अधिक जोर दिया गया कि समय बीत जाने पर भी दूसरी चीजों के खेतों में कपास बो दी गयी थी, जिसके कारण फसल होने के बाद भी घास-भूसा होने की उम्मीद न थी।

बायों, मुल्लों और क्रान्तिविरोधियों ने "बोलशेविक अपने जानवरों के साथ आदमियों को भी भूखों मारना चाहते हैं। मेहनत करके, सासत उठाके मरने से आराम से सोते मर जाना बेहतर है" कहकर लोगों को काम करने से बहकाया और उनमें निराशा पैदा की। यहाँ तक कि सोवियत सरकार पर सच्ची श्रद्धा रखनेवाले जाँगरचलानेवालों में भी असंतोष पैदा होने लगा।

इस तरह की अव्यवस्था साथी स्तालिन की तीव्र दृष्टि से छिपी नहीं रही। इसी समय उनका ऐतिहासिक व्याख्यान "सफलता से चकाचौंध" छपकर प्रकाशित हुआ। उसने उन कर्मियों को अँधेरे में दीपक का काम दिया, जिन्होंने काम मजबूत करने की जगह उसे अधिक-से-अधिक प्रतिशत गाँवों और जमीनों को कलखोजी बनाने में शक्ति लगायी थी और साझी खेती पर संतोष न कर उसे कमूनी खेती (एक परिवार-जैसी) बनाने की कोशिश की। अब स्थानीय नेताओं और गाँव के कर्मियों का काम बहुत मुश्किल हो गया था। स्तालिन के व्याख्यान के अनुसार

एक ओर हाथ में लिये कामों को मजबूत करना था और दूसरी ओर की हुई भूलों को ठीक करना था ; ऊपर से बायों और मुफ्तखोरों के बहकावे का भी डट के प्रतिरोध करना था। बाय "कलखोज में आने की जरूरत नहीं, ऐसी आज्ञा ऊपर से आ गयी है" कहते लोगों के दिलों में संदेह पैदा कर रहे थे, जिसमें सब लोग कलखोज छोड़कर निकल जायें और वह खतम हो जाये। इसी समय साझे के जानवरों को खिलाना-पिलाना और उनसे काम लेना भी कठिन हो गया; लेकिन इस कठिनाई के समय जिला और केन्द्र के नेताओं के व्यावहारिक पथ-प्रदर्शन और एक के बाद एक आते उनके आदेशों ने बड़ी सहायता की। विशेषकर उस समय काम बहुत सँभल गया जब कि पार्टी के विशेष आदेशों के साथ औद्योगिक केन्द्रों से २५ हजार कर्मी आकर देहात में फैल गये और हरकाम में अपने व्यावहारिक पथ-प्रदर्शन द्वारा एक नये जीवन का संचार करने लगे।

× × ×

—हाँ ददेश, तो तुम भी कलखोज से निकल आये ?—कहती खुश होकर बीबी ने बूढ़े बैल और लंगड़े गदहे को लेकर घर पहुँचे सादिक का स्वागत किया।

—नहीं, मैं निकल नहीं आया—सादिक ने जवाब दिया।

—अगर ऐसा था तो क्यों अपने मालों को लौटा आये ?

—ढोरखाना और घास-भूसे की कठिनाई के कारण जानवरों को अस्थायी तौर से उनके मालिकों के पास भेजा गया है।

—अधिकांश आदमी कलखोज से निकल आये, तुम भी क्यों नहीं निकल आये ?

—मैं इस घरजले खोजानजर बाय की सलाह से कलखोज से बाहर नहीं आया। उसने कलखोज का विरोध करने के लिये मुझे बहकाया और वही मेरे सारे मालों, विशेषकर स्याह-कुन्दुज के नष्ट करने का कारण हुआ।

—"हाय मेरी मुर्गियाँ, हाय मेरी गैया !" कहती स्त्री ने पति के साथ संवेदना प्रगट की, फिर सादिक ने भी "ऐसा ही" कहते बात शुरू की :

—खोजानजर ने मुझे और दूसरे किसानों को कलखोज के विरुद्ध भड़काया और स्वयं ही सबसे पहिले तीन घर बनाकर सबसे पहिले कलखोज में शामिल हुआ। उसने अपनी हवेली में भी तीन घरों के नम्बर लगा रखे हैं, मानों वहाँ तीन परिवार रहते हैं।

—यह किसलिये ?

—इसलिये कि कलखोज में घर पीछे पैदावार बाँटी जाती है, वह इस बहाने से कलखोज से तीन भाग लेना चाहता है।
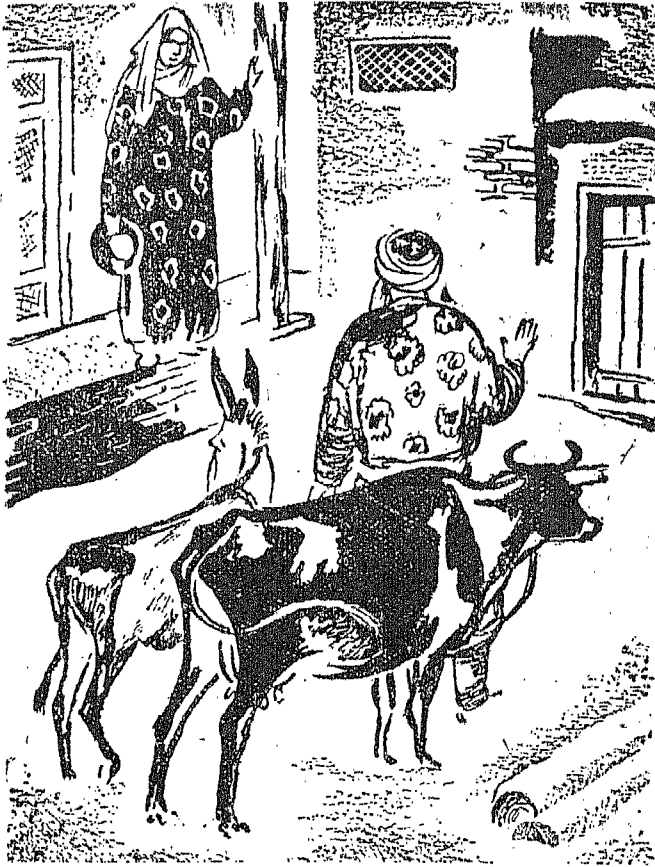
१८—हाँ, ददेश, क्या तुम भी कलखोज से निकल आये ? (पृष्ठ ४११)

—कलखोज से यदि निकल आते, तो हम मुर्गियाँ और गाय पाकर पहिले की तरह आनन्द से रहते।

—हाँ, इस सभा में बात होते मालूम हुआ कि कलखोज में रहते भी अपनी मुर्गियाँ और गायें रखी जा सकती हैं, लेकिन···

—लेकिन क्या?—स्त्री ने सोच में पड़े पति से पूछा।

—लेकिन, इन कुलच्छनी आयों के बहकावे से गाँव में न मुर्गियाँ रह गयीं, न गायें, न घास ही।

—मैंने एक गाय के लिये वसन्त तक खिलाने भर की घास रख रखी है और कसाई से मिले पैसे भी रख छोड़े हैं। क्यों न हाट से जाकर एक गाय खरीद ला?

—पहिले तो यह कि खरीदने के लिये हाट में गाय नहीं है, दूसरे यह कि इन तीनों मालों के दाम से अब एक गाय भी नहीं मिल सकती, तीसरे यह कि उस घास को इस बैल और गदहे को खिलाता है।

—क्या घास को इसीलिये बचा रखा था कि उसे कलखोज के गदहे और बैल को खिलावें?

—मैंने घास को खोजानजर की सलाह से रख छोड़ा था।

—खोजानजर तुम्हारी घास का क्या करना चाहता था?

—उसने अपने घास-भूसे को गिज्दुवान बाजार में ले जाकर बेच डाला और दूसरों को भी बेच डालने की सलाह दी। जिन लोगों पर उसका किराया और सवाई आदि का पैसा था, उसके बदले में भी उसने घास-भूसा लिया। वह पूरा भूसाफरोश बन गया था। मुझे भी उसने बहकाया कि मैं उसे ले जाकर बाजार में बेच आऊँ या उसी के हाथ में बेच दूँ; लेकिन पीछे मेरा विश्वास उसके ऊपर नहीं रह गया और मैंने उसकी बात न मानकर घास-भूसे को अपने भुसौल में डालकर द्वार को गिलावे से बंद कर दिया। अब वह आज काम देगा।

—जब आदमी किसी के प्रति अविश्वासी हो जाता है, तो उसकी बात का उलटा करता है क्या?—स्त्री ने कहा।

—हाँ, एक आदमी ने एक संत (शेख) से पूछा—"क्या करूँ कि शैतान के बहकावे से बच जाऊँ?" सन्त ने जवाब दिया "जो भी बात शैतान तेरे दिल में डाले, उससे उलटा कर।" इस मनुष्य-रूप शैतान के बहकावे में आकर मैंने स्याह कुन्दुज और अपनी गाय को हाथ से खोया। तब से निश्चय कर लिया कि वह जो कुछ कहेगा, मैं उससे उलटा करूँगा।

—लेकिन क्यों तू इस घास को, अपनी गाय खरीदकर उसे न खिला, कलखोज के बैल को खिला रहा है ?

—पहिले यह कि मैं पुराना हलवाहा हूँ, कलखोज में भी हलवाही करूँगा। ताँगेवाला और हलवाहा चाहे स्वयं भूखा रहे, लेकिन जब तक अपने जानवरों को खिला-पिला न ले, उसे नींद नहीं आती। दूसरे यह कि पंचायती पशुओं को जवाबदेही देकर उनके मालिकों के पास अस्थायी तौर से लौटाया गया है। यदि यह बूढ़ा बैल और गदहा भूख से मर जायें, तो तूने गाय खरीदने के लिये जो भी पैसा बचा रखा है, वह क्षतिपूर्ति में चला जायेगा।

—अच्छा (इस वक्त खिला) वसन्त आने पर जब नया घास-चारा उग आयेगा, तो गाय खरीद लायेंगे—बीबी ने बड़ी आशा के साथ कहा।

—लेकिन वसन्त में भी घास की आशा नहीं है—सादिक ने निराश स्वर में कहा—यूनुचूका (घास) के सभी बूटों को उलटकर उन खेतों में भी कपास बो दी है।

—इन थोड़े-से कमजोर बैलों से इतनी जगह में कैसे कपास की खेती होगी ? स्त्री ने पूछा।

सादिक अभी जवाब न दे सका था कि कूचे में हल्ला सुनाई दिया। सादिक कूचे की ओर दौड़ा और स्त्री छत पर।

× × ×

जिले की ओर से शृंखलित चक्रवाले ट्रैक्टर (मोटरहल) आ रहे थे। उनमें से प्रत्येक के पीछे चार पहियेवाली गाड़ी थी, जिनमें अनाज, चीनी तथा कारखाने के दूसरे प्रकार के माल भरे थे। ट्रैक्टर उसी तरह बड़ी तड़क-भड़क से चल रहे थे, जैसे ब्याह की रात वधू के घर जानेवाला वर। गाँव के बालचर उनके आगे-आगे बैन्ड और नगाड़ा बजाते चल रहे थे। देखने से सचमुच ही पुराने जमाने की वरयात्रा याद आ रही थी। गाँव के सारे लोग कूचे में जमा हो गये थे, जिससे ट्रैक्टरों को राह नहीं मिल रही थी। बूढ़े "इलाही तौबा" कहकर अपना मुँह छिपा रहे थे। बच्चे हल्ला मचाते ट्रैक्टर के आगे-पीछे दौड़ते बालचरों की परेड में बाधा डाल रहे थे।

ट्रैक्टर ग्राम-पंचायत-कार्यालय—जहाँ कलखोज-कार्यालय भी था—के सामने जाकर खड़े हो गये। चौपहियों पर से सामान उतारकर कलखोज के गोदाम

में रख दिया गया। इसके बाद सभा शुरू हुई, जिसमें सफर गुलाम, कुलमुराद, दरगश आदि ने ट्रैक्टर के गुण बखाने और बतलाया कि वह एक दिन में कितने एकड़ खेत जोतता है। सभा समाप्त हुई। मुहब्बत हाल ही में ट्रैक्टर चलाने की विद्या सीखकर आयी थी। उसने ट्रैक्टर पर चढ़ उसे चलाकर लोगों को चकित कर दिया। ट्रैक्टर अपनी जगह पर रख दिये गये। दर्शक चले गये। कर्मी आफिस में बैठकर बसन्त की जोताई-बोआई की योजना बनाने लगे।

दर्शकों के बीच सादिक को देखकर सफर गुलाम ने "सादिक अका, आओ, तुम भी हमारी बैठक में सम्मिलित होओ, तुम्हारे अनुभव से हम लाभ उठायें" कहते उसे भी बैठक में बुला लिया।

इधर योजना का काम जोर से हो रहा था और उधर कूचे में फिर हल्ला होने लगा। कुछ किसान "हमें ट्रैक्टर नहीं चाहिये" कहते कलखोज के आफिस में पहुँचे। सफर गुलाम ने उनके पास जाकर पूछा—"क्यों ट्रैक्टर नहीं चाहिये ?"

—ट्रैक्टर की जोती जमीन मुर्दार (हराम) हो जाती है, फसल नहीं होती, मिहनत मारी जाती है। ट्रैक्टर को शैतान ने बनाया है। हम बाबा आदम से चले आये हल और जूए को नहीं छोड़ेंगे—कहते सब चिल्लाने लगे। सफर गुलाम इन बातों को सुनकर पहले हँसा, फिर कड़ी-कड़ी बातें सुनाकर चिल्लाना रोककर बोला—"मेरे साथ यहाँ आओ" और कहते उन्हें कलखोज की दूकान में ले जाकर दिखलाया। वहाँ अनाज का भारी ढेर, चीनी के बस्ते-के-बस्ते, चाय, साबुन के डिब्बे-के-डिब्बे और दूसरी चीजें भरी हुई थीं। सफर गुलाम ने उन्हें दिखलाकर कहा :

—यदि ट्रैक्टर की जोती जमीन में हल-कुदालवाली जमीन से अधिक पैदावार न हो, तो मैं इस सारे माल को तुम्हें बेपैसे दे दूँगा।

किसानों ने जब भरे गोदाम को देखा, तो चाहे सफर की बात पर विश्वास न भी हुआ हो, तोभी उन्हें कुछ तसल्ली हुई और वे धीरे-धीरे कुरकुराते वहाँ से चले गये।

× × ×

सादिक योजनावाली बैठक से लौटकर घर आया, देखा, उसकी बीबी आँखों और कानों पर मोटा लत्ता बाँधकर लेटी हुई है।

—क्या बात है आचेश ?—कहते शंकित हो सादिक ने पूछा।

वह चला गया या अब भी यहीं है—जवाब देने की जगह बीबी ने सवाल किया।

—कौन?—सादिक का आश्चर्य और बढ़ा।

—दज्जाल का खर और कौन?

—दज्जाल[1] का खर कौन? मैं तेरी कोई बात नहीं समझ रहा हूँ, ठीक से कह—सादिक ने उससे कहा।

—अरे, वही चीज जो कूचे से गयी जिसके पीछे तू भी दौड़ा। उसीके बारे में पूछ रही हूँ?—पूछते वक्त बीबी के ओठ भय से काँप रहे थे।

—उठ, ए लम्बी चोटी अकल छोटी! अपने आँख कान खोल—सादिक ने कुछ गरम होकर कहा—वह चीज दज्जाल का गदहा नहीं थी। वह ट्रैक्टर है ट्रैक्टर! वह हमारे कलखोज के खेत जोतेगा और बैलों की कमी को पूरा करेगा। उसकी जोताई से पैदावार भी बढ़ेगी।

स्त्री के दिल से अब भी संदेह दूर नहीं हुआ था, तो भी पति की आज्ञा मानकर वह उठी। आँख-कान की पट्टी खोल कान में डाली रूई को भी निकाल फेंका। लेकिन अब भी उसके चेहरे का रंग पूर्ववत् नहीं हुआ था।

—अच्छा, यह तो बतला, किसने तुझे ट्रैक्टर को दज्जाल का गदहा बतलाया और क्यों तूने आँख-कान को बाँध दिया?—बीमार न होने के निश्चय हो जाने के बाद सादिक ने संतोष के साथ पूछा।

स्त्री कहने लगी—तू बाहर चला गया। मैंने छत पर से जाकर देखा कि एक बड़ी विचित्र चीज कूचे से जा रही है, जिसके पैर कहानियों में सुने जानवरों की तरह चक्कर खाते चल रहे थे। मैंने उस चीज को अभी भली भाँति देख न पाया था कि पड़ोसी शेरबेक चावलफरोश की हवेली से औरतों की चिल्लाहट कानों में आयी। उधर देखा तो बीबी खलीफा और दूसरी औरतें मुझे पुकार रही थीं। मैं तमाशा छोड़कर छत के किनारे जाकर बोली—"क्या कहती हो?"

"खुदा से नहीं डरती कि दज्जाल के गदहे को देख रही है, जो कोई उसे देखता है, सीधे नरक में जाता है—मुझे डाँटते हुए बीबी खलीफा ने कहा।

---

1 सृष्टि के अंत में सर्वनाश का सूचक एक विचित्र राक्षस = दज्जाल आयेगा, जिसका वाहन गदहा होगा।

दज्जाल के गदहे का नाम सुनते ही मेरे होश उड़ गये और डर के मारे मैं छत से गिरनेवाली थी। जैसे-तैसे "बिस्मिल्ला" कहती हिम्मत करके छत से उतरकर घर में आयी। बचपन में दादी ने भी कहा था "जो कोई दज्जाल के गदहे को देखेगा, उसके नगाड़े या शहनाई की आवाज सुनेगा, वह नरक में जायेगा।" इसीलिये आँख-कान बन्द कर लेटी कि कहीं वह जा रहा हो और दूसरी बार उसपर नजर न पड़े ; उसके नगाड़े और शहनाई की आवाज न सुनाई दे।

—लम्बी चोटी अकल छोटी—सादिक ने दुबारा स्त्री को फटकारते हुए कहा—शेरबेक की स्त्री और बीबी खलीफा का अभिप्राय मालूम नहीं है? वे भी शेरबेक और खोजानजर की तरह कलखोज के खिलाफ हैं, इसलिये गाँव में ट्रैक्टर का आना पसन्द नहीं करती ; क्योंकि इससे कलखोज का काम आगे बढ़ेगा, लेकिन तू लम्बी चोटी अकल छोटी! क्यों उनकी बात मानकर भय का शिकार बनी?

—तू कैसे जानता है कि ट्रैक्टर से कलखोज का काम आगे बढ़ेगा—स्त्री ने पूछा—तूने भी तो ट्रैक्टर को आज ही देखा?

—मैंने गिज्दुवान के कलखोजवालों से सुना था कि ट्रैक्टर से जोते खेत में दुगुनी फसल होती है और आज सभा में उन लोगों ने ट्रैक्टर के गुन बखाने जिनकी बात अब तक झूठी नहीं हुई—सादिक ने कहा—ट्रैक्टर से कपास की खेती अधिक होती है, पैदावार भी अधिक होती है। लेकिन हमारे कलखोज में घास और अलफ नहीं है। यह एक कमी है।

—क्यों नहीं कलखोज में थोड़ा यूनुच्का और अलफ गाय के लिये बो दिया, कि कलखोज के जानवर भी खाते और हम भी अपनी एक गाय रख लेते?—स्त्री ने पूछा।

—आज कलखोज-आफिस में इसके बारे में भी बात हुई। मैंने भी कहा कि थोड़ा यूनुच्का, गाय का अलफ और ज्वारी बोयी जाय। लेकिन शाशमाकुल ने मेरा विरोध किया और मुझे अड़ियल कहकर गाली भी दी—कहते कुछ सोचकर सादिक फिर बोला—काम एक हद तक ठीक होता जा रहा है, आश्चर्य नहीं कि एक दिन घास-भूसे का सवाल भी हल हो जाय—कहते सादिक ने विश्वास प्रगट किया।

अब स्त्री की अवस्था पहिले-जैसी हो गयी थी और उसके चेहरे पर खून दौड़ गया था। उसने "ददेश! तुमसे एक बात पूछती हूँ, नाराज तो नहीं होगे" कहते कुछ प्रसन्नता प्रगट की।

—पूछ।

—क्यों तुम हर समय मुझे और दूसरी स्त्रियों को भी "लम्बी चोटी अकल छोटी" कहकर गाली देते हो।

—यह ठीक है—सादिक ने जोर देकर कहा—पहिले मैं इस बात को मुल्लों के मुँह से सुनकर कहता था, पीछे देखा कि यह बात बिलकुल ठीक है।

—कैसे?—औरत ने आश्चर्य करते पूछा।

—जैसे अभी तुम लम्बी चोटीवाली औरतें ट्रैक्टर को दज्जाल का गदहा समझकर डर के मारे मरने लगीं, उधर मुहब्बत आपा ने अपने बालों को छोटा करवा लिया है, ट्रैक्टर से डरने की बात तो दूर, उसने उसपर सवार होकर खुद चलाया—सादिक ने कहा—मुहब्बत मध्य-वयस्का स्त्री है। उसने स्कूल देखा है। क्या तूने गफूर की लड़की फातिमा को नहीं देखा? वह बाल छोटा करवा कमूसो-मोलका (तरुण सभाई) बन गयी है। बड़े मर्दों से भी अधिक बात जानती है, बायों और मुल्लों के धोखे को पहिले से ही खूब जानती है।

—ऐसा है तो मैं भी अपने बालों को थोड़ा कटाकर छोटा करा लूँ, तो कैसा?—कहते स्त्री ने पीठ पर पड़ी बाल की लम्बी मीढ़ों को हाथ से आगे खींच सहलाते हुए सीने पर लटका लिया।

—अभी धीरज धर—सादिक ने कहा। बीबी के रेशम-जैसे बालों की चमक ने उसके दिल को अपनी ओर खींच लिया था। उसने अपने हाथों में मीढ़ को लेकर कहा :

—एक दिन आयेगा, जब मैं भी अपनी दाढ़ी मुड़ा दूँगा, उस समय तू भी अपने बालों को छोटा करा लेना।

बीबी पति की दाढ़ी को सहलाते नजदीक आ गयी। सादिक ने उठकर कहा—अभी ठहर, जल्दी कुछ खाना तैयार कर, मैं भुसौल से बैल और गदहे को चारा दे आता हूँ। खाना खिलाकर बच्चों को सुला दे, फिर इच्छा हो तो दाढ़ी को सह-लाना। अभी मुझे हल चलाने भी जाना है।

—क्या सच है—स्त्री ने न विश्वास करते हुए कहा—मैंने तो समझ लिया था कि कलखोज में जाकर तुम मर्द नहीं रह गये।

—ठीक है—सादिक ने कहा—कलखोज में जाने से चाहे न भी हो, किन्तु अपने पशुओं के नष्ट होने, विशेषकर स्याह-कुन्दुज के मारे जाने और कलखोज के

काम के भी आगे न बढ़ने से अपने मर्दपन ही नहीं, बल्कि खुद अपने को भी हाथ से खो देनेवाला सा था।

—और अब क्या?—स्त्री ने आशापूर्ण स्वर से कहा।

—अन्त में काम कुछ-कुछ चल निकला है। खूब अन्न और दूसरा माल आया है। इसके बाद आज ट्रैक्टर भी आ गया है। इस खुशी से मेरी जान में जान आ गयी।

सादिक घर से निकलकर भुसौल की ओर गया और स्त्री प्रसन्न हो चूल्हे की ओर दौड़ी और आश पकाने लगी। बाहर से लौटकर आये बच्चे बड़े जोश के साथ ट्रैक्टर की प्रशंसा कर रहे थे।

कलखोजी आन्दोलन के बाद आज पहिला दिन था, जब कि सादिक के परिवार में प्रसन्नता छायी हुई थी।

९

कलखोज के किसान

आकाश में सफेद बादल फैले हुए थे। तेज हवा के साथ धूलि की तरह बर्फ बरस रही थी, तो भी चिनकची (लोढ़नेवाले) खेतों में कपास चिनने के लिये फैले हुए थे। सफर गुलाम उनका काम देखते-देखते एक टोली के पास आकर बोला:

—आज कलखोजचियों को क्या हुआ है जो उनमें से आधे भी चिनने के लिये नहीं आये?

—भोज में गये हैं—एक चिनकची ने जवाब दिया—बाग-अफजल में फजल बाय ने ऊँट मारकर भोज किया है। आस-पास के गाँवों में भी न्योता दिया है। हमारे कलखोजचियों में से भी जो अका एरगश के हाथ में नहीं पड़े, भोज में चले गये।

—वर्ग-शत्रु की चालबाजी!—कहते सफर गुलाम दूसरे चक की ओर चला गया।

—खूब वर्ग-शत्रु की चालबाजी है!—सफर गुलाम के दूर चले जाने पर उस चिनकची ने कहा—यदि अका एरगश के हाथ में न पड़ा होता, तो मैं भी सबके साथ भोज में गया होता।

—भोज में भी वर्ग-शत्रु !—ताना मारते नारमुराद ने कहा।

—उसके वर्ग-शत्रु होने से मुझे हानि क्या और उसके वर्ग-मित्र होने से मुझे लाभ क्या?—उस चिनकची ने कहा—और हमारे लिये तो "तला हो और दूध दे।"

—उस वर्ग-शत्रु ने कब तुझे दूध दिया था?—नारमुराद ने उस आदमी से पूछा।

ऐसी सर्दी में भोज करके लोगों को तृप्त करना, दूध नहीं है तो क्या है—उस आदमी ने कहा—तुम लोग वर्ग-मित्र होते, सर्दी में कपास चिनाते लोगों के हाथों को बर्फ जमाते हो और वह वर्ग-शत्रु होते भी कलोर मारकर घी के साथ पोलाव खिला रहा है।

—पहिली बात यह है कि—गफ़ूर ने बीच में पड़कर कहा—कपास की चिनाई के समय बाय का भोज करना इसलिये नहीं है कि तुझे और दूसरे को तृप्त करें, बल्कि वह इसलिये है कि काम करनेवाले काम से हट जायें और कपास की चिनाई में बाधा पड़े। इस प्रकार कलखोज, कलखोजचियों और कलखोज-किसानों को भी हानि पहुँचे। दूसरे यह कि रूई तू हमारे लिये नहीं, बल्कि अपने लिये चिनता है। फिर हम क्यों तेरे लिये कृतज्ञ होवें।

—कहने की बात है—उस चिनकची ने कहा—यदि कपास चिनना था, तो क्यों नहीं अच्छे मौसिम में चिनकर खतम कर दिया गया?

—मैं दो मास से कपास चिन रहा हूँ—नारमुराद ने कहा—यदि इस समय तू और तेरे-जैसे दूसरे काहिल हमारे साथ न काम करते होते, तो चिनने का काम न जाने कब का खतम हो गया होता। इस दो महीने में मैंने तुझे चार या पाँच बार देखा।

—लेकिन मैं क्या तीन घरों का भाग पाऊँगा जो कि मैं, मेरी स्त्री और मेरी लड़की भी काम करती है—गफ़ूर ने कहा।

—तुम जानते हो—फातिमा ने अपने बाप गफ़ूर से कहा—सोवियत संघ में कपास की खेती को बढ़ाने के लिये किस तरह का काम करना चाहिये? चचा मौलान भी नहीं जानते। इन्हें भी बतलाने की जरूरत है, जिसमें वह "बाय का भोज छूट गया" कहकर अफसोस नहीं करें।

—मैं भी—सादिक ने कहा—अकेला घर गिना जाता हूँ, ऐसा होने पर भी मैं और मेरी बीबी दोनों कपास चिनने का काम करते आ रहे हैं। लेकिन खोजा-

नजर बाय ने तीन घर बना रखा है, और न जोतने-बोने के वक्त, न निराई के वक्त, न लोढ़ने के वक्त ही कपास के खेत में पैर रखा, कौन इसे सुनकर रंज न होगा ?

—खोजानजर बाय—फातिमा ने कहा—चाहे कपास के खेत में पैर न रखता हो, लेकिन कलखोज-आफिस से उसका पैर कभी नहीं हटता। अपने एक पुराने मुनीम को कलखोज में लिपिक रखवा दिया है। मेरे सफर अका जब खेत में चले आते हैं, तो वह आफिस में जाता है और लिपिक के पास बैठा बातफरोशी करता या माल खरीदता है।

—सफर गुलाम कलखोज का अध्यक्ष है, वह कूचों में क्या करता फिरता है? आफिस में रहकर देख-भाल करनी चाहिये—मौलान ने आक्षेप करते कहा।

—यदि वह और चचा एरगश आफिस में बैठ जावें तो कलखोज के काम में कौन आयेगा? वह गली-गली, घर-घर दौड़ते हैं और आलसी कलखोजचियों को कहकर जबर्दस्ती काम पर भेजते हैं। लेकिन खोजानजर जाकर आफिस में काम करता है।

—तू तो खोजानजर के सभी कामों को जानती है, क्यों नहीं सफर गुलाम और एरगश को समझाती—सादिक ने फातिमा से कहा—यदि हम बोलते हैं, तो "तुम गुटबाजी करके कलखोज को बर्बाद करना चाहते हो" कहकर फटकारता है। तू कम्सोमोलका है। तेरी बात पर वह काम धरेगा।

—मैंने कई बार उनसे ये बातें कहीं—फातिमा ने कहा—लेकिन उन्होंने कहा—"अभी उन बातों को रख छोड़, जब खेत का काम ठीक हो जाये, कपास जमा कर लें, तो आफिस के काम को ठीक कर लेंगे।

—खेत का काम ठीक करना क्या यही है—सादिक ने गरम होकर कहा—मैं अपनी बीबी के साथ रोज काम करता हूँ और खोजानजर कोई काम नहीं करता और हिस्सा लेने के वक्त "रसोई के साथ तैयार रसोइया" बनकर आयेगा और थाली में घी मांसवाले हिस्से को अपनी तरफ खींचेगा।

—मैं क्या हूँ?—खोजानजर की बड़ी बीबी के भाई नौरोज ने कहा—मेरा पाच्चा (बहनोई) काम पर न भी आये, लेकिन मैं तो उसकी ओर से काम कर रहा हूँ?

—तेरा भी एक घर गिना गया है और तेरे दादर (छोटे भाई) का भी एक घर गफूर ने कहा—तू अपने लिये काम करता है और तेरा दादर भी अपने

लिये काम करता है। तीसरे घर के लिये तेरे पाच्चा को भी अपना काम करना चाहिये।

—मैं कैसे एक घर गिना जाता हूँ—नौरोज ने कहा—जब कि न मेरे पास, न मेरे दादर के पास एक बित्ता भी खेत है? मैंने और दादर ने कलखोज से न एक मुट्ठी गेहूँ लिया, न एक पैसा ही। हम पाच्चा की आश-रोटी खाकर कलखोज का काम कर रहे हैं।

—यह शोषण का सबसे बुरा ढंग है—फातिमा ने कहा—कलखोज की स्थापना से पहिले बाय अपने नौकरों को थोड़ी-बहुत मजूरी देकर उन्हें मूँड़ते थे, और अब कलखोज होने पर खोजानजर बाय "तू मेरा खाकर कलखोज में काम करे जा" कहते कृतज्ञ बनाकर इन्हें मजदूरी भी न दे, मूँड़ रहा है। इन बेचारों में वर्ग-चेतना जगानी चाहिये और कलखोज को ऐसी बदनामी से बचाना चाहिये।

चिनकची होड़ बाँधकर पानी से आगे बढ़ रहे थे; किन्तु मौलान पीछे रह गया था। वह घास-फूस मिले छोर में पड़ी कपास को बच्चों की तरह लोकाते खेल रहा था। फातिमा कपास से भरे अपने थैले को खाली करने गयी, तो मौलान ने उससे कहा—फातिमा! तू क्यों इतना जान लगाकर काम कर रही है? क्या इस तरह तू संसार के गरीबों की सरकार को बाय बनाना चाहती है?

फातिमा का दिल खोजानजर की बात से पहिले ही जला हुआ था, मौलान की इस बात और ढंग से वह और भी जल-भुन गयी और बिना जवाब दिये ही चली गयी। जिस समय फातिमा ने थैले को रास पड़ उँड़ेला, उसी समय जिला-नगर से भेजे कम्सोमोल और बालचर बैंड बाजे के साथ आ पहुँचे। फातिमा का गिरा मन हरा हो गया और वह थैले को रास पर छोड़कर उनके स्वागत के लिये दौड़ गयी।

कम्सोमोल और बालचर कपास को अधिक चुनने, अच्छी तरह चुनने और बढ़-बढ़कर चुनने के लिये आये थे। वे एक दूसरे से समाजवादी होड़ लगा टोलियों में बटकर खेतों में फैल गये। कपास की ढेंढ़ियों को वे उसी तरह तेजी से चुन रहे थे, जैसे बाज अपने पंजों से कबूतर को। यह तरुण शहर में अपने गरम किये हुए मकानों में आराम से रह सकते थे, लेकिन उसे छोड़कर इस जाड़े-पाले में ऐसे कलखोज की मदद देने के लिये आये थे, जहाँ उनका कोई सगा-संबन्धी न था। इन तरुणों के उत्साह और काम को देखकर मौलान और नौरोज को बहुत आश्चर्य

हुआ । नारमुराद ने—"मैं भी पचाससाला बालचर हूँ, मुझे भी एक लाल गर्दन बेद दे दो" कहते दोनों हाथों को सिर के बराबर ले जा (सलाम कर) सबको हँसा दिया । फातिमा कम्सोमोलों के साथ कपास चुनती गा रही थी :

"फूला कपास हर तरफ जैसा कि फूल बोस्ताँ
हा लैली, लैली, लैली, मेरी जान फिदा हूँ लैली !
चिनकची ढोंढों को लिये, हाथों में प्याला-सा लिये
हा लैली० !"

१०

कपासचोर बाय

सफर गुलाम कर्मियों की बैठक में कह रहा था—दस दिन की सुस्ती के बाद बहुत जोर करके हम अपनी योजना को ७० प्रतिशत तक पहुँचा सके, यह हमारे लिये बड़ी लज्जा की बात है ।

—मेरी राय में—एरगश ने कहा—हम योजना को पूरा न कर सके, इसका कारण है कलखोज का नया-नया बनना, काम करने की व्यवस्था न होना, देर से जोतना-बोना इत्यादि । तोभी बहुत ज्यादा पीछे न रहे । जो बात अकेली खेती में न हो सकती थी, वह हमारी साझी खेती (कलखोज) में हुई । हमारे बहुत-से खेतों को ट्रैक्टर ने खूब गहरा और अच्छी तरह जोता, कृषि विशेषज्ञों ने बीज चुनकर दिया और दूसरी तरह की सहायता की । काम करने की व्यवस्था ठीक तौर से न होने पायी, तो भी गरीब और मध्य-वित्त किसानों ने—"हमने कलखोज बनाया । इसलिये इसकी कोई बदनामी न होनी चाहिये"—कहकर आन पर डटकर खूब काम किया । इसीसे मध्यम श्रेणी की पैदावार हुई । लोढ़ने में देर हो रही थी; लेकिन कम्सोमोलों और बालचरों की सहायता से कपास की एक ढेंढ़ी भी खेत में न छूट पायी । यह सब होने पर भी हम कपास की उपज की योजना का ७० सैकड़ा ही पूरा कर सके । नहीं मालूम हमारी कपास आकाश में उड़ गयी या जमीन में लोप हो गयी ।

—फातिमा समझती है—गफूर ने कहा—सुस्त कलखोजचियों और कितने ही

निजी खेतीवाले किसानों के घरों में अब भी ओटनी, धुनकी और करघे काम कर रहे हैं। इसीलिये कपास हाथोंहाथ लुप्त हो रही है।

—जिस वक्त मैंने अपनी ओटनी, धुनकी कलखोज को सौंपी, उस समय साथी योलदाशोफ को छोड़कर तुम सब हँस पड़े थे। अब देख रहे हो न, ओटनी और धुनकी से कितनी हानि हुई?—नारमुराद ने गर्व से कहा।

—प्राविलूना (सच)—योलदाशोफ ने कहा।

—दुनिया में एक बार अकिल का एक काम किया, इसके लिये इतना गर्व न कर—सफर गुलाम ने नारमुराद से कहा।

—इस काम को भी समझकर नहीं किया—एरगश ने कहा।

—क्यों मैंने समझकर नहीं किया?—नारमुराद ने गरम होकर कहा।

योलदाशोफ ने "अच्छा, अच्छा समझकर किया" कहते नारमुराद को तसल्ली दी—ओटनी और धुनकी-जैसी चीजें समाजवादी निर्माण में कई तरह से हानि पहुँचाती हैं। इनकी वजह से अकेली खेतीवाले किसानों और कलखोजचियों का खिंचाव उधर होता है और काम करने की समाजवादी व्यवस्था खराब होती है, दूसरी ओर कपास की चोरी में सहायता होती है, तीसरी ओर लोगों के शोषण का बड़ा रास्ता खुल जाता है; क्योंकि कोई आदमी कच्चे ही कपास को लोढ़कर बेच देता है, वह उसे खरीदकर ओटनेवाले को बेच देता है; फिर कपास खरीदकर सूत काटनेवाले के हाथ में बेच देता है और चौथा आदमी सूत खरीदकर बुननेवाले को बेच देता है। इस तरह की कपड़े की तैयारी से सारे उजबेकिस्तान में शोषण का बाजार गरम हो जाता है।

—मुझे अचरज होता है कि लोग खूबसूरत और मजबूत साटन तथा सूफ के कपड़ों को न खरीदकर क्यों गाढ़े मोटे कलमी दगली करकी कपड़ों के पीछे इतना दौड़ते फिरते हैं—कलखोज के लिपिक ने कहा—मेरे पास एक ट्रैक्टर छाप का साटन आया था, लेकिन किसी ने उसमें से एक बित्ता भी नहीं खरीदा।

—फातिमा के कथनानुसार—गफूर ने कहा—खोजानजर ने यह कहकर लोगों को बहकाया कि साटन पर आदमी और घोड़े की तसवीर है। जिस घर में वह रहेगा, उसमें नमाज नहीं पढ़ी जा सकती, न फिरिश्ते (देवता) वहाँ आ सकते।

—मैलश—नारमुराद ने कलखोजी कोपरेटिव (साझीदारा दूकान) के लिपिक से कहा—वह जहाँ हो, वहाँ भले ही नमाज न पढ़ी जाये, फिरिश्ते न

आवें ; लेकिन उसमें से कुछ मीतर (सवा गज) मुझे दो। मैं एक गद्दा बनवाना चाहता हूँ— ।

—वह खतम हो गया—लिपिक ने कहा—जब कलखोजचियों ने नहीं खरीदा, तो चार-चार, पाँच-पाँच मीतर करके खास-खास आदमियों को बेच डाला।

—बात हो रही है—सफर गुलाम ने कहा—कैसे कपास की चोरी-बिक्री बंद की जाय और कैसे उसके लोप होने को रोका जाय, लेकिन वह धीरे-धीरे बढ़कर कोपरेटिव की दूकान पर चली गयी। हमें इसी बात पर विचार करना है कि कपास लोप होने और चोरी जाने को कैसे रोका जाय ?

—लोगों में घोषणा कर दी जाय कि अपनी-अपनी चर्खी-धुनकी को लाकर कलखोज को सौंप दें—एरगश ने कहा।

—नहीं, यह नहीं होना चाहिये—सिर हिलाते सफर गुलाम ने कहा—क्योंकि ऐसा होने पर एक आदमी अपनी चीज को लाकर सौंप देगा और दस आदमी, जिन्होंने इसे अपना पेशा बना लिया है, यह कहकर बैठे रहेंगे कि हमारे पास चर्खी-धुनकी नहीं है।

—खोजानजर शायद कहेगा कि मेरी चर्खी-धुनकी मर गयी या मैं उनको मारकर खा गया—नारमुराद ने कहा। लोग हँस पड़े।

—एक काम करना चाहिये—योलदाशोफ ने कहा—मेरे विचार में बालचरों की टोली बनाकर घरों की तलाशी ली जाय, इससे चर्खा, ओटनी, धुनकी भी हाथ में आ जायेगी और चुराई कपास भी।

—क्या सभी घरों की तलाशी करायी जायेगी ?—कलखोज के लिपिक ने पूछा।

—अलबत्ता—योलदाशोफ ने जवाब दिया—नहीं तो लोग "हमारी हवेली की तलाशी ली और अमुक की हवेली की तलाशी नहीं ली" कहकर नाराज होंगे।

पहिले मेरी हवेली की तलाशी लो—नारमुराद ने कहा—लेकिन जामा में डालने के लिये मैंने ५ कदाक (छटाँक) कपास रख रखी है, कहीं उसे न ले लेना।

—एक म्राम (मासा) भी होगा, तो उसे ले लेंगे—सफर गुलाम ने कहा—जामा, गद्दा, बालिश में डालने के लिये धुनी बनी रूई दूकान में आयी है।

लिपिक ने कहा—अब भी तीन गाँठ धुनी-बनी रूई मौजूद है—

—मैं ख्याल करता हूँ—गफूर ने कहा—सबसे पहिले खोजानजर बाय के घर की तलाशी ली जाय, क्योंकि यदि नारमुराद-जैसे वे जामा में डालने के लिये ५

कदाक रूई जामा की है, तो खोजानजर ने बेचने का ख्याल करके बस्ते का बस्ता लिया होगा। नहीं सुना है "सौ सोनार की एक लोहार की !"

सफर गुलाम ने गफूर की बात का समर्थन करते हुए कहा—ठीक है, यदि हम दूसरे के घरों में घूमते फिरेंगे, तो वह चुराई कपास को ऐसी जगह छिपा देगा कि हम उसे बिलकुल न पा सकेंगे या दूसरी जगह भेज देगा।

—मेरे ख्याल में—कोपरेटिव के लिपिक ने कहा—पहिले दो-तीन गरीबों के घरों की तलाशी ली जाय, फिर खोजानजर की, नहीं तो वह "गरीब कलखोजची मध्य-वित्तों को तंग करते हैं" कहते जिला तक दुहाई देगा।

—यह विचार भी ठीक—सफर ने योलदाशोफ की ओर आँख का इशारा करते हुए कहा—मध्य-वित्तों को नहीं रंज करना चाहिये।

—बहुत अच्छा, वक्त न गँवाकर काम शुरू करना चाहिये—योलदाशोफ ने कहा—यदि आज्ञा हो तो मैं भी बालचरों की टोली जमा कर लूँ।

—पचासाला बालचर यहाँ तैयार है—कहते नारमुराद ने दोनों हाथों को सिर के बराबर उठाकर सलाम किया।

तू जा, दूसरे बालचरों को जमा करके ला।

"मेरे ख्याल में सवाल हल हो गया" कहते योलदाशोफ बाहर चला गया। सफर गुलाम ने भी "हल हो गया" कहते उसकी बात को दुहराया।

नारमुराद खोजानजर की हवेली के बाहर सफेद रंग के बड़े गमछे को बालचरों के गर्दनबंद की तरह बाँधे खड़ा था। इसी वक्त हवेली के अन्दर से आवाज आयी—चचा नारमुराद, दौड़ो, अन्दर आओ।

आवाज सुनते ही नारमुराद दौड़कर हवेली के अन्दर गया और सामने के दृश्य को देखकर चकित रह गया। हवेली के बीच में एक गड्ढा खुदा हुआ था, जिसमें धुनकी, ओटनी और चर्खे फेंके हुए थे और उन्हें मिट्टी के अन्दर दबाने के लिये हाथ में फावड़ा लिये नौरोज और हमीद गड्ढे के किनारे खड़े थे। चबूतरे के ऊपर कपास का ढेर किया हुआ था और एक ओर आधी तैयार रूई फैली थी। चबूतरे के एक कोने में धुनी रूई के गद्दे की तरह तह पर तह रखा गया था, जिसके लिये बालचरों और कुछ औरतों में छीना-छीनी हो रही थी। इस छीना-छीनी में रूई किसी के हाथ में न जा बीच में बिखर गयी थी। दूसरे कोने में खोजानजर के हाथ में ताजा गाला डाला गद्दा था, जिसपर अब भी सूत नहीं डाला गया

था और जिसे अपनी तरफ खींचने के लिये बालचर लड़के हाथ-मुँह लगाये चिपक गये थे, लेकिन खोजानजर गद्दे के आधे को दोनों पैरों के बीच में दबा दोनों हाथों से कमर में लपेटकर हाथ से न देने की कोशिश कर रहा था।

नारमुराद यह देखकर आपे से बाहर हो गया और "रूई से काम शुरू करूँ या ओटनी-चर्खी-धुनकी से" सवाल करके स्वयं "योलदाशोफ ने ओटनी-चर्खी-धुनकी को कपास की बर्बादी का कारण बतलाया है, इसलिये पहिले इन्हीं को हाथ में करना चाहिये—सोचकर उसी गड्ढे में कूदा, जहाँ ओटनियाँ-चर्खियाँ-धुनकियाँ बिखरी पड़ी थीं। कूदने के साथ ही "हाय मरा" कहते चिल्ला उठा। उसके पैर में एक तकला चुभ गया था, जिसे चर्खे से अलग किये बिना ही गड्ढे में फेंक रखा था।

बालचर-दल के नायक लड़के ने नारमुराद को वैसा करते देखकर कहा—चचा, होश तुम्हारा कहाँ गया है? गड्ढे के अन्दर क्या कर रहे हो? यहाँ आओ, इस गद्दे को छुड़ायें। इसके भीतर करीब दो पूद (एक मन) रूई है।

—मैं क्या जानूँ? यहाँ बालचर मुश्किल में पड़ा है—कहते नारमुराद ने गड्ढे से बाहर आना चाहा; लेकिन फिर ओटनी पर गिर पड़ा। "हाय मेरी कमर" कहते अपनी जगह से उठ इस बार बड़ी सावधानी से गड्ढे का किनारा पकड़कर अपने को बाहर किया। एक हाथ में जूता लिये और दूसरे हाथ को कमर पर रखे, खून बहते पैर को जमीन पर मलते "हाय-हाय" करते, लंगड़ाते वह चबूतरे पर पहुँचा।

नारमुराद के अन्दर आते ही बाय की स्त्रियाँ, बिचली दरीची से होकर पड़ोसी के घर में चली गयी थीं, तो भी खोजानजर नारमुराद पर यह कहते हुए बिगड़ उठा—"तू किसके हुक्म से मेरी स्त्री-बच्चों को देखने भीतर घुस आया?" लेकिन इसी समय वह "हाय मेरा हाथ, हाय मेरा अंगूठा" कहते पीठ के बल गिरा और बालचर लड़के भी गद्दे के दूसरे छोर को पकड़े चबूतरे पर पीठ के बल गिरे।

—खैर, हरज नहीं खोजानजर अका!

—नारमुराद ने कहा—मेरी आँख तो बिना इच्छा के चाहे तुम्हारी औरतों पर पड़ गयी हो, लेकिन तुम तो जान-बूझकर मेरे घर पर जा मेरी स्त्री को देख आते हो; इसलिये हम दोनों बराबर हैं।

खोजानजर को नारमुराद की बात का जवाब देने की ताकत कहाँ थी? वह तो चोट खाये अंगूठे को पकड़े "हाय-हाय" कर रहा था।

—मेरे खोजानजर बाबा के पास चार बीबियाँ हैं। तुमने उनकी चार बीबियाँ देखीं और तुम्हारे पास एक बीबी है, इसलिये यह जाकर तुम्हारी बीबी को देखते हैं तो भी बराबर नहीं है—कहते एक बालचर ने नारमुराद से परिहास किया।

—"गरीबों को बायों के बराबर करें" रहमत शाकिर अका की इस बात की तरह यह भी बराबर ही है—नारमुराद ने कहा।

बालचर नायक दुश्मन पर विजयी हो शेर की तरह जोश में आया था। उसने नारमुराद से कहा—चचा, यह राजनीति छाँटने का समय नहीं है, जल्दी चबूतरे पर आओ, इस रूई को जमा करें।

नारमुराद ने चबूतरे पर जा घर के भीतर की ओर देखकर नायक से कहा—हसन एरगश! जल्दी जा, अपने बाप को खबर दे कि तेरे सफर चचा और दूसरों के साथ जल्दी आयें, इतनी रूई को जमा करके ले जाना हम बालचरों का काम नहीं है।

हसन एरगश हवेली के बाहर की ओर चला गया।

"आदमी का मुँह बाँध देनेवाले इस बच्चे मुहम्मद दाना से छुट्टी तो मिली—कहते नारमुराद ने खोजानजर के पास जाकर कहा—क्या है, बात करो खोजानजर अका! क्या गाढ़ा न मिलने से साटन का थैला सिलाया?

—यह थैला नहीं है, गद्दा है—खोजानजर ने गरम होकर कहा।

—क्या गद्दे में इतनी रूई डाली जाती है? इसमें ऐसी रूई ठूँसी हुई है, जैसे थैले में।

—बूढ़ा हो गया हूँ, अपने लिए एक रूईदार नरम गद्दा बनवाया हूँ।

—वह क्या है?—कहते नारमुराद ने घर के सामने रखे गद्दों की ओर इशारा किया, जिनका मुँह अभी भी न सीया गया था।

बाय इस सवाल से बौखलाकर बोला—तुमने मेरे घर के अन्दर घुसकर मुझे घायल और अपाहिज बनाया। मैं तुम सबको न्यायालय में दूँगा।

—हरज नहीं, एक बालचर ने कहा—यदि अपाहिज हो गये हो, तो कलखोज तुम्हारे लिये बीमारों का भत्ता देगा।

—यदि कलखोज अपाहिजों के लिये बीमार-भत्ता देता है, तो सबसे पहिले मुझे देना चाहिये। "हाय मेरा पैर, हाय मेरी कमरिया" कहते लंगड़ाते-लंगड़ाते नार-

मुराद दीवार का सहारा लेकर बैठ गया और गर्दन में बँधे अंगोछे को अपने पैर में लपेटकर बाँध लिया।

बहुत देर नहीं हुई, पैरों की आहट सुनाई दी। एरगश, उसका लड़का हसन, सफर गुलाम, गफूर और योलदाशोफ आगे-आगे और पीछे से गाँव के गरीब बड़े बोरे हाथ में लिये आ पहुँचे।

—बोरों के लाने की क्या जरूरत थी? मेरे खोजानजर अका ने साटन के थैले पहिले ही से सिला रखे हैं—नारमुराद ने कहा—

सचमुच ही थैले—सफर गुलाम ने चबूतरे पर आकर वहाँ जमा किये गद्दों को देखकर कहा।

बालचरों ने बोरों को लेकर चबूतरे पर फैली रूई को भरना शुरू किया।

योलदाशोफ दरवाजे के भीतर झाँककर "बात तो यहाँ है, यहाँ आओ" कहते अंदर गया। उसके पीछे दूसरे भी गये। वहाँ बहुत-से गद्दे थे, जिनक मुँह अभी सीया नहीं गया था। कोठेवाले तख्ते पर भी रूई भरे गद्दे छत तक कसे हुए थे। घर में एक सिलाई की मशीन थी जिसके पास कितने ही अधसिले गद्दे के खोल पड़े थे। मशीन के पास एक थान साटन था, जिसे चौड़ा फैलाकर उसपर कैंची रखी थी।

—तुम्हारे कथनानुसार—गफूर ने बाय को आवाज देकर कहा—जिस घर में ट्रैक्टर मार्का का साटन हो, वहाँ नमाज पढ़ना ठीक नहीं, और उस घर में फिरिश्ते नहीं आते, फिर अपने घर में साटन के इतने गद्दे सिलवाकर क्यों रखे हैं?

बाय के पास कोई उत्तर न था, लेकिन उसकी ओर से एरगश ने कहा—शायद मेरे बाय अका ने बे-दीनों के जमाने में अब नमाज पढ़ना ही छोड़ दिया है।

नमाज पढ़ना छोड़ देने पर भी फिरिश्तों के बिना जिन्दगी कैसे कटेगी?—कहते सफर गुलाम ने मजाक करते कहा।

—इसीलिये शैतान की तरह बन गया है—कहते नारमुराद ने सबको हँसा दिया।

इन गद्दों को घर में रखने के लिये नहीं, बेचने के लिये तैयार कराया है; क्यों ऐसा ही है न चचा? योलदाशोफ ने कहा। मैंने सुना है, आजकल गद्दे में रूई भर-

कर जुआफेरी बहुत हो रही है। हर गद्दे में दो पूद रूई डालकर रेल से जहाँ चाहते हैं, पार्सल कर देते हैं।

—मैंने सुना है—सफर गुलाम ने कहा कि पुराने खोलों में नई रूई डालकर भेजते हैं; लेकिन हमारे खोजानजर अका नये खोल में रूई डालते हैं।

—खोजानजर चचा हुन्नरी हैं न—योलादाशोफ ने कहा—दूसरे सिर्फ रूई पर नफा कमाते हैं और ये रूई और साटन के खोल दोनों पर। रूईवाले जिलों की कोपरेटिव दूकानों में साटन सस्ता आता है, दूसरे जिलों में भेजकर उससे पाँच-गुना नफा कमाते हैं।

—किसी को साटन न देकर कोपरेटिव के लेखक ने सब इसी के हाथ में बेच दिया—एरगश ने आश्चर्य करते कहा।

—उसका भी उपाय करेंगे—सफर गुलाम ने कहा।

बालचरों ने रूई को थैले में भर दिया। दूसरों ने साटन के खोलों में भरी हुई रूई को उठाया और गड्ढे में से ओटनी-धुनकी-चर्खा को भी उठाकर साथ लिया। लोग जब हवेली से बाहर होने लगे तो सफर गुलाम ने सिर को पीछे फेरकर "खैर खुश चचा! सलामत रहो। इसी तरह बाद में भी कपास और धुनकर तैयार रखो, जिसमें फैक्टरी को तकलीफ न करनी पड़े" ताना देते कहा और फिर अब भी दीवार के नीचे बैठे नारमुराद की ओर निगाह करके कहा—"तू क्यों नहीं आ रहा है?"

—मैं घायल अपाहिज हूँ, राह नहीं चल सकता, मुझे उठाकर ले चलो।

कैसे तू ऐसा अपाहिज हो गया?—कहते सफर गुलाम लौटकर उसके पास गया। दूसरे भी खड़े हो गये।

—गड्ढे में कूदते वक्त पैर में कोई चीज लग गयी, जिससे खून बहने लगा—बालचर नायक हसन एरगश ने कहा—

नारमुराद ने नाराज होकर कहा—पहिले तो यह कि मैं बेकार गड्ढे में नहीं कूदा, बल्कि रूई गुम होने के असली साधन—ओटनी-धुनकी—को हाथ में लेने के लिये कूदा। दूसरे यह कि कोई चीज लगकर मेरे पैर से खून नहीं बहा, बल्कि तकुवा पैर से आर-पार हो गया।

—लेकिन क्या तेरे पैर में जूता न था कि तकुवा पार हो गया?—सफर गुलाम ने पूछा।

खैरियत हुई कि गड्ढे में गिरने से पहिले ही जूता निकल गया—नारमुराद

ने कहा—नहीं तो इतना बड़ा छेद होता कि उसकी मरम्मत के लिये मोची को रूबल देना पड़ता

—खैर हरज नहीं—एरगश ने कहा—तेरे पैर का छेद कुछ दिनों में बिना मोची के अपने आप भर जायेगा और तुझे रूबल खर्च नहीं करना पड़ेगा।

—जब तक पैर ठीक नहीं होता, तब तक क्या खाऊँगा?—मेरे लिये बीमार-भत्ता देना चाहिये—नारमुराद ने कहा।

—बीमार-भत्ता क्या, मैंने नहीं समझा—एरगश ने पूछा।

—खोजानजर कलखोज का माल चोरी करता है, उसका एक अंगूठा मोच खा गया, इसपर तुम उसके लिये बीमार-भत्ता ठीक करते हो और मैं पचास-साला बालचर हूँ, रूई चुरानेवाले से लड़ते घायल हुआ; फिर मेरे लिये बीमार-भत्ता क्यों नहीं?

—नारमुराद ने जोर देते हुए कहा।

—खोजानजर को भत्ता देने की बात किसने की?—एरगश ने हँसते हुए पूछा।

—नहीं मालूम, एक बालचर ने कहा। नारमुराद ने जवाब दिया।

—खोजानजर के लिये क्रान्ति न्यायालय आचार-सुधार-घर में भेजकर दण्ड का भत्ता देगा—हसन ने कहा।

सब हँस पड़े। सफर गुलाम ने नारमुराद के पास बैठकर "कहाँ घाव है, देखूँ तो" कहते पैर से कपड़ा खोलना चाहा; लेकिन "आह-आह, न छू, बहुत दुख रहा है" कहते नारमुराद ने दोनों हाथों से उसे मजबूती से ढँक रखा। "क्या मरा जाता है" कहते गफूर ने उसके दोनों पैरों को पकड़कर जमीन पर गिरा दिया। सफर गुलाम ने खोलकर देखा—पैर के तलले में जौ बराबर तकुवा धँसने का घाव था। पहले कुछ खून निकला था, लेकिन अब सूख गया था। अंगोछे और पैर की जगह में एक-आध खून के दाग लगे थे। नारमुराद ने देख लिया कि उसका भेद खुल गया। उसने रास्ता लेते कहा—"तुम बोलशेविकों को कोई धोखा नहीं दे सकता।"

—लेकिन नौरोज किंकर्त्तव्यविमूढ़ अब भी गड्ढे के किनारे खड़ा था। बाय ने "क्यों बेकार खड़े हो मुफ्तखोरो! गड्ढे को बंद कर जमीन को बराबर करो" कहते गाली दे ईसा के कसूर को मूसा पर लादा।

११

बाय की बेटी का जाल

कम्युनिस्टों, कम्सोमोलों और मीर-कमकरों की संयुक्त बैठक थी। बैठक से बगल-से-बगल मिलाये लौटते हसन एरगश ने फातिमा से पूछा—इस बैठक का तुझपर क्या प्रभाव पड़ा ?

—सभा वस्तुतः मीर-कमकरों की थी—फातिमा ने कहा—मुफ्तखोरों को खतम करना, पशुपालन-संस्था को मिलाकर एक बड़ा कलखोज बनाना, पंचायती पशुओं को पंचायती ढोरखाने में रखना और उनपर उत्तरदायी आदमी को नियुक्त करना, इनमें से आज की हरएक बात अत्यावश्यक और गंभीर समस्या है।

—हमारे महान् नेता साथी स्तालिन ने जो छः ऐतिहासिक शर्तें घोषित की हैं, जिनके अनुसार पैदावार बाँटने में कुलकों (धनी किसानों) को समान भाग देने की बात छोड़ना, काम करने में समाजवादी होड़ लगाना, जोर की मिहनत करना आदि जो कहा गया है, वह कैसी है ?—कहते प्रश्न करते हसन ने स्वयं जवाब दिया—इनमें से हरएक ऐसी बात है, जो कलखोज को आर्थिक और राजनैतिक दोनों दृष्टि से सबल बनाती है।

दोनों कुछ कदम और आगे बढ़े, दोराहा आया। फातिमा ने हसन की ओर हाथ बढ़ाते कहा—"खैर, खुश, तुझे अपने घर की ओर जाना है।"

हसन एरगश ने अपनी ओर बढ़ाये सबल हाथों को दृढ़ता से पकड़कर कहा—पहिले तुझे तेरे घर पर पहुँचा आऊँ। फिर घर जाऊँगा।

अँधेरी रात के नीरव पथ पर दोनों एक दूसरे के हाथों को पकड़े चुपचाप चले जा रहे थे। बीसवर्षीय हसन के हाथ का स्पर्श अष्टादश-वर्षीया फातिमा के हृदय में एक विचित्र भाव पैदा करके उसे बात करने से रोक रहा था और हसन भी अपने भीतर कुछ अनिर्वचनीय भाव अनुभव करते चुपचाप चल रहा था। इस चुप्पी को तोड़ते हुए फातिमा ने कहा—शाशमाकुल की बातें मुझे पसंद नहीं आयीं।

—कौन-सी बातें—हसन ने पूछा।

—हरएक बात—फातिमा ने कहा—शाशमा कुल ने सादिक को कुलक कहा। सादिक कैसे कुलक हो सकता है? वह एक मुस्तैद कलखोजची है। पहिले मध्य-वित्त किसान था। जब से काम के अनुसार मजदूरी, कुलकों को समान भाग न देना, समाजवादी होड़ को अपनाया गया तब से सादिक और भी अधिक मुस्तैद काम करनेवाला बन गया (जिसने कभी किसी दूसरे की मेहनत से अपना फायदा नहीं किया, वह कैसे कुलक कहा जा सकता है?

—सादिक को शाशमाकुल ने कुलक किसी दूसरे ही कारण से कहा—हसन ने कहा।

—वह क्या कारण है?

—तू भी जानती है कि शाशमाकुल हमारी सारी जमीन में शत-प्रतिशत कपास की खेती करने का पक्षपाती है। लेकिन सादिक ने यह कहते उसका विरोध किया कि यदि सारी जमीन में कपास बोयी गयी तो वह सब जगह ठीक नहीं होगी और उधर जानवरों को चारा भी न मिलेगा। शाशमाकुल अपनी बात पर डटा हुआ था। सादिक ने—"तू चरवाहों में से आया है, तू किसानी को क्या जाने" कहकर उसे नाराज कर दिया। शाशमाकुल ने फिर कहा—"मैं कम्युनिस्ट हूँ, एक कम्युनिस्ट के बारे में तेरा ऐसा कहना ठीक नहीं। फिर मेरे बाय और चचा सफर-जैसे कम्युनिस्टों ने डाँटकर इस झगड़े को दबा दिया। इसके बाद जब खेती के बारे में पार्टी का नया आदेश आया, तो सादिक की बात ठीक निकली और शाशमाकुल का सिर नीचा हुआ। तो भी सादिक के लिये उसके दिल में ईर्ष्या बनी हुई है। हर बात में वह सादिक की पगड़ी-दाढ़ी से उलझ पड़ता है और आज भी उसने सादिक को कुलक कहा।

—शाशमाकुल का यह बर्ताव—फातिमा ने कहा—एक ओर तो वैयक्तिक शत्रुता बनकर काम को खराब करेगा, दूसरी ओर मध्य-वित्त किसानों में से आये एक मुस्तैद कलखोजची को कुलक कहते रहना सचमुच कुलकों की पनचक्की में पानी बहाना है। यही शाशमाकुल, जो आज सादिक को कुलक कहता है, पहिले उरुन बाय किलाची का पक्ष लेता था।

—उसकी इन बातों को कोई नहीं सुनता—हसन ने कहा—यदि हमारे यहाँ सौ कुलक हों तो उनमें वह एक है और यदि एक हो तो वह स्वयं है।

—हसन की इन बातों से फातिमा का विश्वास कुछ बढ़ा और उसने उसके हाथों को दृढ़ता से पकड़कर पूछा—और उरुन बाय की लड़की कैसी ?

—मैं उसकी लड़की को—जरा रुककर हसन ने कहा—कुलक नहीं कह सकता।

इस बात को सुनकर फातिमा का हाथ कुछ सुस्त हो गया और वह हसन के हाथ से छूटने ही वाला था, लेकिन हसन ने उसे जोर से पकड़े कहा—फातिमा, जब तू किसी आदमी के बारे में निर्णय कर रही हो, तो अपने भावों के फेर में न पड़। मैं जानता हूँ कि तुझे यह बात पसन्द न आयेगी, लेकिन तू अपनी प्रसन्नता के लिये मुझे सचाई से हटने नहीं देगी, यह मुझे विश्वास है। दुनिया में बहुत-सी घटनाएँ हैं...।

—रहने दो अपना दर्शन बघाना—फातिमा ने टोककर कहा। बात संक्षेप करके उसका तथ्य बतलाओ।

—तथ्य यही है कि उरुन बाय किलाची कुलक है, सौदागर है, सूदखोर है और हर प्रकार से वर्गशत्रु है; लेकिन उसकी लड़की कुतुबिया कुलक नहीं है।

—कुलक-परिवार का संतान कुलक नहीं !

—कुलक-परिवार का संतान कुलक होता यदि वह परिवार के साथ रहता, उसके प्रभाव में जीवन बिताता। लेकिन कुतुबिया न जाने कब की माँ-बाप से अलग हो चुकी है और एक मेहनतकश बेवा स्त्री अपनी मौसी के साथ रहती है, सोवियत-स्कूल में पढ़ती है।

क्या तू समझता है कि अपनी मौसी के साथ रहने और सोवियत-स्कूल में पढ़ने के कारण वह माँ-बाप के प्रभाव से मुक्त है ?

—मैं समझता हूँ कि वह माँ-बाप के प्रभाव से मुक्त है—हसन ने कहा।

—ऐसा समझने के क्या कारण हैं ?

—कारण यह है—हसन ने कहा—वह पर्दा न कर मुँह खोले चलती है; यदि माँ-बाप के प्रभाव में होती, तो अपना फरंजा न उतार फेंकती, उरुन बाय फरंजा छोड़नेवाली स्त्रियों के पतियों को बहकाकर उनसे पिटवाता रहा है। वह कैसे अनुमति दे सकता है कि उसकी अपनी लड़की मुँह खोलकर चले ?

—शायद उसका यह काम किसी कम्सोमोल को फँसाने के लिये हो।

—इसीलिये न मैं कहता था कि तू अपने भावों के फेर में पड़ रही है—हसन

ने जोर देते हुए कहा—दो तरुण जीवों की एक दूसरे की मित्रता या उनका एक साथ जीवन व्यतीत करने का विचार क्या फँसना-फाँसना है? माँ-बाप के प्रभाव से निकल आयी एक कुलक की लड़की क्या फिर किसी कुलक के लड़के के पास जाये? कौन ऐसा कम्सोमोल (तरुण कम्युनिस्ट) है, जो अपने कम्सोमोलिक कर्तव्य को बेचकर एक कुलक-पुत्री के जाल में फँसेगा?

—क्षमा करो—फातिमा ने निष्ठुरता के साथ कहा—तुमने मेरी बात नहीं समझी। मैं फँसने या बिकने को दो भिन्न-भिन्न अर्थों में लेती हूँ और तुम दोनों का एक अर्थ लेकर झगड़ रहे हो।

फातिमा अपनी हवेली के पास पहुँच गयी थी। उसने अपने हाथ को हसन के हाथ से खींचकर "इसके बाद हम दोनों में फिर इस विषय पर बातचीत नहीं होगी" कहती हवेली में चली गयी।

× × ×

फातिमा के चले जाने पर कूचे में अकेला खड़ा हसन अपने को एक भारी बोझ के नीचे दबा अनुभव कर रहा था। उसके दिल में प्रश्न उठ रहा था "घर जाकर सो जाऊँ या लाल चायखाने में जाकर उससे मिलूँ? लेकिन वह किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाता, उसे दम घुटता-सा मालूम हो रहा था। गाँव के छोटे, टेढ़े-मेढ़े कूचे में दिल और तंग था। उसने कुरते का बटन खोलकर सीने को नंगा कर लिया, तो भी दिल का घुटना कम नहीं हुआ। गाँव के एक कोने में अवस्थित फातिमा के घर से आगे चलते-चलते वह खेतों में चला गया।

खेतों की स्वच्छ हवा, जर्दालू की नयी खिली कलियों की गन्ध ने घुटते दिल को कुछ विकसित किया; ताजा हवा ने आराम दिया, जिससे उसने अपने भीतर शक्ति आती महसूस की। अंधेरे हार में काली चादर जैसे एक गोजूम वृक्ष के नीचे बैठे पेड़ का आसरा ले वह सोचने लगा—क्या फातिमा मेरे इस काम से नाराज होने का अधिकार रखती है? अधिकार रखती है, क्योंकि उसका मेरे साथ प्रेम है, वह मुझे अपना जीवन-संगी बनाना चाहती है, अब जब कि वह मेरा झुकाव दूसरी ओर देखती है, तो उसका दिल जलता है, ईर्ष्या होती है। यद्यपि बचपन से फातिमा के साथ मेरी दोस्ती चली आ रही है। तो भी मैंने उसे कभी अपनी जीवन-संगिनी बनाने की इच्छा नहीं प्रगट की। न वैसा वचन दिया। हाँ, कभी-कभी ऐसा विचार दिल में आया जरूर, लेकिन मैंने कभी इस

विचार को उससे या दूसरे से नहीं कहा ; क्योंकि इस विषय में मैं स्वयं किसी निश्चित निर्णय पर नहीं पहुँचा था। अतएव न विधान से, न कर्तव्य से ही मैं फातिमा के साथ बँधा नहीं हूँ।

हसन एरगश इस प्रकार फातिमा के हाथ से अपने को मुक्त कर अब कुतुबिया के बारे में विचार करने लगा—कुतुबिया मुझसे अत्यन्त प्रेम करती है। उसके प्रेम ने मेरे हृदय के अन्दर की प्रेमाग्नि प्रज्वलित कर दी है। जीवन-संगी बनाना ऐसा काम है, जो कि दोनों ओर के प्रेम से ही हो सकता है और हम दोनों में प्रेम है। लेकिन क्या उसे जीवन-संगिनी बनाने पर मुझे लेनिन-पथ पर चलने में बाधा होगी? बाधा होने का भय नहीं, क्योंकि उसके प्रेम से भी अधिक मेरा प्रेम लेनिन-पथ और कम्सोमोल-कर्तव्य पर है। यदि पीछे उसने बाधा डाली या विरुद्ध प्रभाव डालने की कोशिश की, तो मैं उसी समय उससे अलग हो अपने मार्ग पर पूर्ववत् चलता रहूँगा।

इस तरह मन में तर्क-वितर्क करके हसन ने कुलक-पुत्री को जीवन-संगिनी बनाना ठीक समझा। उसने यह भी सोचा कि इस तरह के सम्बन्ध से अपने प्रेम और हृदय की इच्छा ही नहीं पूरी होगी, बल्कि इससे एक दूसरा भी लाभ है। वह मुझसे प्रेम करती है, माँ-बाप को छोड़कर मुझपर मुग्ध हुई है। मेरे साथ रहने पर मैं उसे एक मुस्तैद कलखोजची, समाजवादी निर्माण में एक जबर्दस्त भाग लेनेवाली सदस्या होने की शिक्षा दे सकता हूँ और इस प्रकार समाजवादी निर्माण के लिये एक और कार्यकर्ता मिलता है।

आखिर हसन एक निर्णय पर पहुँचा और वह कुतुबिया को देखने और उसे अपनी स्वीकृति देने के लिये चल पड़ा।

× × ×

हसन एरगश द्वार से गाँव में होते लाल चायखाने के पास पहुँचा। इसी समय चायखाने की दीवार से लगकर खड़ी एक कालिमा चलित हुई और उसने रास्ते के बीच में आ हसन को पकड़ लिया। हसन ने कालिमा को अपनी ओर लपकते देख उसे वर्ग-शत्रु समझ खीसे में हाथ डाल तमंचे को पकड़ लिया। लेकिन उसी समय अतर की सुगन्ध उसके दिमाग में और नरम नाजुक हाथ उसके खुले सीने पर पहुँचा। हसन ने देखा कि वह कुतुबिया है।

अब भी तू यहीं थी?—जल्दी-जल्दी धड़कते दिल के साथ हसन कह गया।

—यह रात जब मेरे पास जीवन या मृत्यु, सौभाग्य या दुर्भाग्य की प्रतीक्षा लिये आयी, तो मैं कहाँ जाती ?—कुतुबिया ने कहा—आज मैं तैयार होकर के आयी कि तुझसे मिलकर स्वीकृति लूँ या अस्वीकृति लेकर सीधे कब्र की ओर जाऊँ।

—कब्र तेरे माँ-बाप जायें, कमकर-वर्ग के शत्रु जायें, लेकिन तू सच्चे दिल से मुझसे प्रेम करती है, इस बात का अधिकार रखती है कि समाजवादी उद्यान में रहकर जीवन का मजा लें।

इस तरह के मनोवांछित उत्तर पाकर कुतुबिया का नरम हाथ हसन के सीने को दबाते उसकी बगल में आ गया। तमंचा निकालने के लिये खीसे में गया हाथ भी कुतुबिया की कमर से लिपट गया और उसे साथ लिवाये वृक्षों की छाया में होते वह हार की ओर चला। उस समय भावों को प्रगट करने के लिये जिह्वा को चलने की आवश्यकता न थी। वह चुपचाप चलते पाँच मिनट बाद उसी गोजूम वृक्ष के नीचे जा पहुँचे, जहाँ हसन ने अपने भविष्य का निर्णय किया था।

—तू चायखाने में मेरी प्रतीक्षा करनेवाली थी, फिर क्यों कूचे में खड़ी रही—कहते हसन ने बात शुरू की।

—मैं तुम्हारी सभा के खतम होने तक चायखाने में रही, जब चायखाना सभा से आये लोगों से भरने लगा, तो तुझसे अकेले में मिलने के लिये कूचे में आ गयी। तू जल्दी नहीं आया और मैं दीवार के साथ भित्ति-चित्र की तरह निश्चल खड़ी रही, किंतु तूने क्यों इतनी देर की ?

—मैं जिस समय सभा से बाहर आया, फातिमा भी मेरे साथ थी। ऐसे समय में जब कि वर्गशत्रु विरोध के लिये तुले हुए हैं, अंधेरी रात में उसे अकेले भेजना ठीक नहीं समझा, इसलिये उसे उसके घर तक पहुँचाकर लौटा हूँ।

—अभी तक फातिमा से तेरा दिल नहीं हटा ?

—मैंने कब उसे दिल दिया था कि उसे हटाता ?

—सभी कहते हैं कि तू फातिमा का दोस्त है।

—ठीक है, मैं उसका दोस्त हूँ, लेकिन उसे अपना साथी और सहकारी समझकर। समय पड़ने पर आवश्यकतानुसार उसकी सहायता भी करता हूँ, लेकिन उसे जीवन-संगिनी बनाने का वचन मैंने कभी नहीं दिया।

—मैं उसे पसन्द नहीं करती—कुतुबिया ने अप्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा।

—क्योंकि तू कुलक और जमीन्दार की लड़की है और वह मिहनतकश की लड़की तथा कम्‌सोमोल का है। तेरे और उसके भीतर भारी खाई है। जब तू मेरी शिक्षा में रह मिहनत करने की बान डालेगी और बबुआनी आदतों से हाथ धो लेगी, उस समय समझ सकेगी कि फातिमा कितनी योग्य लड़की है और तब उसे दोस्त भी मानेगी।

—अच्छा—कुतुबिया ने निराशापूर्ण स्वर में कहा—अंत में तू मुझे क्या जवाब दे रहा है?

हसन ने एक क्षण की भी देर किये बिना कहा—तुझे जीवनसंगिनी बनाऊँगा, यह मैंने निश्चय कर लिया है, लेकिन उन शर्तों के साथ, जिन्हें तुझसे एक बार कह चुका हूँ, और अब फिर दुहराता हूँ।

—कौन-सी शर्तें?—प्रसन्न हो कुतुबिया ने पूछा।

—माँ-बाप से अपना सम्बन्ध सदा के लिये तोड़ ले और उन्हें भूल जा, यह पहिली शर्त है। आवश्यकता पड़ने पर पंचायती समिति के सामने माँ-बाप के राजनैतिक भेदों को प्रगट कर, यह दूसरी शर्त है, तीसरी शर्त यह है कि अपनी जमीन्दाराना-अमीराना आदतों को छोड़कर मेहनत और काम में मेरा साथी बन।

—मेरे हसनजान—कुतुबिया ने अपने हाथ को उसके गले में डालकर कहा—मैं तेरे लिये, तेरी काली आँखों और भौंहों के लिये, तेरे चाँद-जैसे मुखड़े के लिये, तेरे सबल बाहुओं के लिये, तेरी स्पष्ट और निर्मल बातों के लिये तैयार हूँ कि अपने को देग में उबालूँ, आग में जलाऊँ, भट्ठी में तपाऊँ, तीक्ष्ण वाहिनी नदी में डुबाऊँ। इनके सामने यह तेरी शर्तें क्या हैं?

हसन की गर्दन पर पड़े कुतुबिया के नरम-नाजुक हाथों ने सुदृढ़ शृंखला लौह-पंजर की भाँति अपनी ओर खींचा। हसन ने पूरा जोर लगा अपने को सँभालकर कहा—अभी यहीं तक, कल रात को ब्याह की रजिस्ट्री के बाद फिर और कुछ।

—पके तैयार पोलाव को थाल में निकालकर खाने से पहिले चखकर उसके नमक को देखना जरूरी है—कहते कुतुबिया के पतले ओठ हसन के ओठों से लग गये। हसन भी "एक जमीन्दार बच्ची को समाजवाद के निर्माण की ओर खींचा" सोचकर दिल में बहुत प्रसन्न हुआ।

१२

कलखोज में काम

कलखोज के हार में बड़े जोर-शोर से काम हो रहा था। सारे कलखोजची स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़की से लेकर नौरस बच्चों तक ब्रिगेडों में बँटे हुए अपने-अपने चक में फैल गये थे। हरएक ब्रिगेड का अपना चक था, जिसके सारे कामों की जवाबदेही उस ब्रिगेड के ऊपर थी। प्रत्येक ब्रिगेड अपने चक में योजना के अनुसार एक-एक जौ काम कर रहा था। ब्रिगेड का नायक—ब्रिगादीर—अपने ब्रिगेड और उसके काम की जगह से वैसे ही परिचित था जैसे युद्धक्षेत्र का कमांडर अपने क्षेत्र से।

जैसे कलखोजों ने एक दूसरे के साथ समाजवादी होड़ बाँध रखी थी, वैसे ही एक कलखोज के भीतर एक ब्रिगेड दूसरे ब्रिगेड के साथ होड़ बाँधे हुए था; यहाँ तक कि ब्रिगेड के भीतर कलखोजची भी आपस में होड़ बाँधकर काम कर रहे थे। होड़ में पहले निकल जाने के लिये मुस्तैद कमकर नयी-नयी तदबीरें निकाल रहे थे। हार में फैले ट्रैक्टर अपने इंजनों की घनघनाहट के साथ जोतने में लगे हुए थे। आकाश स्वच्छ था। वसन्त की मन्द-सुखद वायु चल रही थी। नवजात अंकुरों की सुगन्धि नयी निकली कोपलें, दूसे और नयी हरियाली के साथ ट्रैक्टर से उलटी जाती आर्द्र भूमि के सोंधेपन से मिलकर श्वास को स्वच्छ,मस्तिष्क को ताजा करके हृदय हर्षोत्फुल्ल और शरीर को शक्ति-संपन्न बना रही थी। ट्रैक्टर से निकलता धुआँ स्वच्छ विशाल समुद्र में सैर करती मटमैली मछलियों की तरह निरभ्र आकाश में डोल रहा था।

गौरैया चहचहा रही थीं, कुरकुरी कुरकुर कर रही थीं, पंडुक कू-कू बोल रहे थे, कौवे जुते खेतों से दाने चुन रहे थे, चींटियाँ वर्षा के जल से भींग गये आहार और अंडों को ढोकर दूसरी जगह ले जा रही थीं।

अर्थात् १६३३ के वसंत की खेती के समय हरएक वस्तु गति में थी।

कलखोज की परती तथा नीची-ऊँची जमीनें इस साल पहिली बार ट्रैक्टर से जोती गयीं। उसके अन्दर के काँटों और घासों को नीचे जड़ तक उखाड़ दिया गया और छोटे-छोटे खंडों को मिलाकर मशीन चलने लायक बड़े-बड़े खेतों में परिवर्तित

कर दिया गया था। कितने ही कलखोजची फावड़ा और कुदाल लिये खेतों में रास्तों और नहरों के पहुँचने के लिये उनके नीचे-ऊँचे भाग को समतल करके सींचने लायक बना रहे थे।

—सोवियत संघ के मजदूरों ने ट्रैक्टर बनाकर हमारे पास इसलिये भेजा कि खेती के पशुओं को कड़ी मेहनत से छुट्टी मिले। यदि भूमि समतल बनाने के लिये भी कोई मशीन बनाकर भेजते, तो हमारा काम और भी हलका होता—एक कलखोजची ने कहा।

—कौन जानता था—दूसरे कलखोजची ने जवाब दिया—कि ट्रैक्टर नाम की एक मशीन पैदा होगी, जो एक जोड़ी बैल के २० दिन की जोताई से भी अधिक को एक दिन में जोत देगी। जिन कारीगरों ने इस तरह की मशीनें बनायी हैं, क्या जाने वे ऐसी भी मशीन बना दें जैसी की तू चाहता है।

—ट्रैक्टर का गुण इतना ही नहीं है—तीसरे कलखोजची ने कहा—कि वह अधिक काम को कम समय में कर देता है, उसका एक गुन यह है कि वह धरती को बहुत गहरा जोतता है और चिप्पचिप्पा करके उलटता है।

—जमीन के गहरे जोतने और चिप्पा करने से क्या लाभ है?—एक दाढ़ीमुड़े, मूँछ खड़ी किये, चुस्त पोशाकवाले आदमी ने कहा।

—जो जमीन—कलखोजची ने कहा—गहरी जोती जाती है, उसमें पौधों की जड़ें खूब फैलतीं और अधिक नीचे तक जाती हैं। चिप्पा गिराने से पिछले साल की बेगाना घासें उखड़कर मिट्टी में दब जाती हैं, जिससे एक ओर खेत में घास नहीं रह जाती, दूसरी ओर दबी घास सड़कर खाद बन भूमि को उर्व्वर बनाती है। यह सब काम पैदावार बढ़ाने में सहायक होता है।

—ट्रैक्टर और खेती की दूसरी मशीनों के लाभदायक होने में बिलकुल संदेह नहीं—एक और कलखोजची ने कहा।

—लेकिन सियालका (बोवक, बोने की मशीन) एक पैसे में भी महँगी है—दाढ़ीमुड़े आदमी ने कहा—मैंने पारसाल मशीन के काम से मुग्ध होकर सियालका चलाना सीखा और उससे कुछ एकड़ जमीन बोयी; लेकिन उसका बीज अच्छी तरह नहीं जमा और जमे पौधे खोखली जड़वाले निकले, इसके लिये मुझे दोषी बनाना चाहा, लेकिन किसी तरह शाशमाकुल अका की सहायता से जान बची, तब से मैंने मशीन छोड़ फावड़े को सँभाला।

—तू भूल कर रहा है—उस कलखोजची ने कहा—कभी भी हाथ की बोआई सियालके की बराबरी नहीं कर सकती। हाथ की बोआई में सभी जगह बीज बराबर एक-सा नहीं पड़ता, हाथ की बोयी कपास का कोड़ना भी मुश्किल है; क्योंकि वहाँ कल्टीवेटर (कोड़क, कोड़ने की मशीन) काम नहीं कर सकती। सियालके की बोआई में बीज एक-सा और निश्चित दूरी पर पड़ता है, इसलिये उसे कल्टीवेटर से कोड़ना आसान होता है।

—यदि मशीन और ट्रैक्टर ज्यादा हो, तो जैसा कि सियारकुल अका ने कहा, कलखोज भी फैक्टरी और कारखाने का रूप ले लेता है—एक कलखोजची ने कहना शुरू किया—एक बार मैंने सियारकुल अका के साथ जाकर रूई-मिल देखी। वहाँ सब काम मशीन से होता था। मजदूर केवल उन मशीनों की खबरदारी करते थे। कपास को जिन्-मशीन के मुँह में देते, मशीन बिनौले और रूई को अलग करती, साफ की हुई रूई को मशीन प्रेस-खाने में ले जाती, जहाँ गाँठ बनती है, इत्यादि। खेतों में भी काम मशीन से हो, ट्रैक्टर जोते, सियालका बोये, कल्टीवेटर कोड़े और जमीन को नरम करे। हाल में कपास लोढ़ने की भी मशीन निकली है, ऐसी अवस्था में फैक्टरी और खेती में क्या अन्तर रह जायगा?

—खेतों में मशीनों और ट्रैक्टरों के छा जाने पर पैदावार ज्यादा होगी, सारे कलखोज बोलशेविक कलखोज बन जायेंगे और सारे कलखोजची सुखी—एक कलखोजची ने कहा।

—अलबत्ता—शाहनजर ने कहा—जहाँ मेहनतकशों के नेता साथी स्तालिन ने "प्रत्येक कलखोज को बोलशेविक कलखोज और प्रत्येक कलखोजची को सुखी" बनाने का प्रोग्राम हमारे सामने रखा, वहाँ इसके लिये "खेती के काम मशीनों से किये जायें" कहकर भूमि भी तैयार कर दी।

—स्त्रियों को काम में ले आने की बात भी क्यों नहीं करते?—एक कलखोजची ने नहर के किनारे काम करती बहुत-सी स्त्रियों की ओर इशारा करके कहा—यह उसी तरह मुस्तैदी से काम कर रही हैं, जैसे चींटियाँ लगकर खलिहान से दाना ढोने में। अतीत काल में वह थाली-हाँड़ी और सिलाई-कताई के सिवा और कोई काम नहीं जानती थीं।

—मेरी स्त्री एक और काम जानती थी—दम लेने के लिये बैठे नारमुराद ने कहा।

—क्या काम—एक कलखोजची ने पूछा।

—यदि कोई चीज चाहती और मैं लाकर नहीं देता, तो चीज चुरा के बेचकर उस चीज को खरीद लेती। ऐसे कामों के लिये बार-बार उसने मार भी खायी। कलखोज बनने के बाद पारसाल देखा कि मैंने साल में १५० दिन काम किया और उसने दो सौ दिन काम किया। अपनी पोशाक और मनोवांछित चीजें ही नहीं, बल्कि घर की आवश्यक चीजों में से भी कितनी को स्वयं खरीदकर उसने मेरे भार को बहुत हलका कर दिया।

—अब तेरे सिर पर केवल उसका रात्रि-आहार ही रह गया है, क्यों?

—न जाने कब से मैं उसके रात्रि-आहार से मुक्त हूँ—नारमुराद ने कहा।

—अगर तू इस तरह काम न कर साँस खींचते बैठा रहा, तो इस साल तेरे दिन-आहार को बीबी देगी—शाहनजर ने कहा।

—मैं आज चाहे काम करूँ या न करूँ, सब बराबर है—नारमुराद ने कहा—क्योंकि हम आठ आदमी काम कर रहे हैं, मेरे न करने पर भी काम पूरा हो जायगा।

—लेकिन—बेदाढ़ीवाले जवान ने कहा—"स्त्रियाँ स्वतन्त्र हों" कहकर उन्हें दासियों की तरह काम करने के लिये बाध्य क्यों किया जाता है?

—तूने दाढ़ी मुड़ा ली, मूँछ खड़ी कर ली, चुस्त पोशाक पहिनकर "हमदम फोमंगी" नाम रख लिया, तो भी एक पैसा भर विद्या न सीखी—शाहनजर ने दाढ़ीमुड़े आदमी से कहा—पूँजीवादी देशों में स्त्री-स्वतन्त्रता का अर्थ दूसरा है और समाजवादी देश में दूसरा। उन देशों में स्त्री-स्वतन्त्रता का अर्थ मर्दों की मर्जी पर स्त्रियों को बलिदान करने के अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं है, वहाँ स्त्रियाँ आर्थिक परतन्त्रता में हैं और अपनी आवश्यकताओं के लिये हर तरह पुरुष के अधीन हैं; लेकिन हमारे देश में स्त्री-स्वतन्त्रता का अर्थ है उनकी आर्थिक और श्रम की स्वतंत्रता। हमारी स्त्रियाँ समाजवादी श्रम में भाग लेने लगीं जिससे उन्हें वास्तविक स्वतंत्रता, यानी आर्थिक स्वतंत्रता मिली।

—इसका उदाहरण।—नारमुराद ने कहा—मेरी स्त्री का चोरी छोड़ना और मेरी मार से बचना है

—ठीक है—शाहनजर ने कहा—इसका उदाहरण खोजानजर की छोटी बीबी खदीजा भी हो सकती है। खदीजा खोजानजर के हाथ में एक क्रीतदासी की तरह

काम करती थी, तो भी उसने कभी शरीर पर एक अच्छा वस्त्र नहीं देखा, उसके कान गाली से पके और शरीर मार से सूखा रहता था। खोजानजर के हाथ से मुक्त होने पर आज वह एक मुस्तैद कलखोजची बनकर मैदान में आयी है। पर साल उसने २५० दिन काम किया और अपने लिये मकान भी तैयार कर लिया।

खदीजा ने एक भूल का काम किया —एक कलखोजची ने कहा।

—कौन-सा काम ?—शाहनजर ने पूछा।

—एरनजर कामचोरी के कारण कलखोज से निकाल दिया गया। उसने खदीजा के सिर पर रेशमी रूमाल, शरीर पर मखमल का जामा, पैर में पॉलिश-वाला बूट और खासकर उसके ढाई सौ दिन के काम को देखा जो कि सारे ठाट-बाट का कारण है। उसने खदीजा के पास ब्याह का संदेश भेजा। खदीजा ने संदेशवाहक से कहा—"मैं अब जानती हूँ कि समाजवादी श्रम और सच्ची स्वतंत्रता क्या है, यदि मुझे करना होगा तो अपने योग्य किसी मुस्तैद कलखोजची से ब्याह करूँगी। कामचोर एरनजर से कहना कि वह मेरी ओर निगाह न करे, मैं उससे घृणा करती हूँ।"

—अगर ऐसा है, तो मैं आज ही से मुस्तैद कलखोजची बनना आरंभ करता हूँ—नारमुराद ने कहा।

—क्या खदीजा के साथ ब्याह करने के लिये ?—शाहनजर ने पूछा।

—अलबत्ता—नारमुराद ने कहा—साल में २५० दिन काम करनेवाली जवान स्त्री से कौन ब्याह करना नहीं चाहेगा ?

—वह क्यों तुम्हारे-जैसे बूढ़े को पसन्द करेगी ?—एक कलखोजची ने कहा।

—मैं कैसे बूढ़ा हूँ ? एक आदमी जो पचास साल की उमर में बालचर बना, यदि ५३ साल की उम्र में दामाद बने, तो क्या बूढ़ा होगा ? विशेषकर जब कि वह अपनी स्त्री के रात्रि-आहार से मुक्ति पा चुका है, तो वह एक क्वाँरे से बिलकुल भेद नहीं रखता।

—तुम आज से मुस्तैद कलखोजची बनना शुरू कर दो और मैं भी आज से ही तुम्हें "५३ साला क्वारा दामाद" की उपाधि देता हूँ—शाहनजर ने कहा।

—ऐसा ही हो, मैं आज से ही मुस्तैद बनना शुरू करता हूँ—कहते नारमुराद उठकर फावड़ा चलाने लगा, लेकिन इसी समय आवाज आयी :

अका नारमुराद! थक न जाओ। क्या हमलोगों को देखते ही काम शुरू कर दिया?

—साथी योलदाशोफ! तुम्हारा मुँह चाहे एक ही हो, किन्तु आँखें चार हैं। कैसे तुमने दूर से देख लिया कि मैं काम नहीं करके बैठा हूँ?—कहते नारमुराद फावड़े को उसी तरह जमीन पर रख बैठकर बोला—मैं अपने काम को समाप्त कर दम लेने बैठा था।

योलदाशोफ के साथ आये उत्पादन-सोवियत का अध्यक्ष जमीन पर उकड़ू बैठ, सिर को जमीन की ओर झुका, चारों ओर आँखें दौड़ाकर "इस काम को स्वीकार नहीं किया जा सकता" कहते खड़ा हो गया।

—क्यों स्वीकार नहीं किया जा सकता?—हमदम फ़ुरमा ने कहा—उसका रंग कुछ उड़-सा गया था।

—इसलिये कि जमीन बराबर नहीं की गयी—अध्यक्ष ने कहा।

—योलदाशोफ ने भी जमीन पर बैठकर चारों ओर देखा और अध्यक्ष की बात का समर्थन करते हुए कहा।

—तुमने नीची-ऊँची जमीन को बराबर करने की जगह ऊँचाई को कुछ नीचा और नीचाई को कुछ ऊँचा करके जमीन को असम ही रखा।

अध्यक्ष ने रिपोर्ट लिखना शुरू किया। नारमुराद ने काम को बेकार होते देख गरम होकर हमदम से कहा—मैंने कहा न था कि तू काम खराब करता है! तू दाढ़ी-मूँछ बराबर करना भले ही जाने, किन्तु जमीन बराबर करना तेरे बूते का नहीं है।

—उसने खराब किया तो तुम ठीक करते—योलदाशोफ ने नारमुराद से कहा।

—मैंने ठीक करना चाहा, लेकिन यह सुस्ताने लगा और मुहम्मद दानाई की। सच है "एक मछली सारा तालाब गंदा कर देती" एक खराब काम करनेवाले की वजह से हमलोगों का एक दिन का सारा काम नहीं लिखा गया और बदनाम हुए अलग।

—तुमने कुछ काम भी किया कि तुम्हारा काम नहीं लिखा गया?—एक कलखोजची ने हँसते हुए कहा।

—मैंने पहिले ही समझ लिया था कि यह काम खराब होगा, इसीलिये जान-

बूझकर काम नहीं किया। क्यों मैं काम करके फिर उसे बेमजूरी का करवाता, इसीलिये बैठा दम ले रहा था।

रिपोर्ट लिखी गयी, उत्पादन-सोवियत के अध्यक्ष ने कलखोज के अध्यक्ष योलदाशोफ के साथ उसपर हस्ताक्षर किया। दूसरे चक से लौटकर अभी-अभी आये ब्रिगादीर ने भी काम को खराब देखकर हस्ताक्षर किया और कहा :

—इस काम के लिये मैं भी दोषी हूँ, जब मैंने इस काम की योजना बनाई तो यह भी जरूरी था कि काम बाँटकर सभी कमकरों के भीतर समाजवादी होड़ लगवाता। उस समय काम अधिक भी होता और पक्का भी।

—उस समय मैं भी दम न मारकर काम करता—नारमुराद ने कहा।

—अभी भी उसी तरह काम शुरू करना चाहिये—योलदाशोफ ने कहा।

—ब्रिगादीर ने जमीन बराबर करने का काम कमकरों में बाँटकर फिर से काम करने को कहा और उन्हें सलाह दी कि एक दूसरे के साथ समाजवादी होड़ लगाकर करें। होड़ की घोषणा होते ही नारमुराद भी "जान जाये तो जाये आन न जाये" कहते काम में लगा। लेकिन वह हर पाँच-छः कुदाल मारने के बाद सीधे खड़े हो कमर मलने लगता। उसके बगल में काम करनेवाले हमदम फूरमा ने उसकी सहायता की और उसके काम को भी करते हुए कहा :

—नारमुराद अका! तुमने मुझे काम खराब करने के लिये फटकारा, किन्तु यदि मुझे काम सिखलाओ तो मैं उसे ठीक से कर सकता हूँ और एक कार्यज्ञ और कार्यकारी कलखोजची बनकर तुम्हारे काम में भी मदद दे सकता हूँ।

—शाबाश—नारमुराद ने कहा—यदि इसी तरह काम करता रहा, तो तू एक कार्यज्ञ कार्यकारी कलखोजची बन सकता है, नहीं तो तुझे "बिगाड़ू" कहकर कलखोज से निकाल देंगे।

शाम को कमीशन ने आकर जमीन को समतल की हुई पा काम को स्वीकार किया। नारमुराद और हमदम फूरमा के काम को दूसरों से बढ़िया पाकर "शाबाश" कह उनकी प्रशंसा भी की।

—इस ५३ साला क्वाँरे जवान ने, जो कि जल्दी ही दामाद बननेवाला है, सिर्फ अपने ही काम को पूरा नहीं किया, बल्कि हमदम फूरमा जैसे बेतजर्बा के

आदमी को भी सिखलाकर एक कार्यज्ञ कलखोजची बना दिया—कहते नारमुराद ने अपनी छाती ठोककर गर्व किया।

हमदम फ़ूरमा अपने दिल में यह सोचकर प्रसन्न हुआ "यदि पहिले दाढ़ी मुड़ाकर शाशमाकुल की नजर में एक मुस्तैद कलखोजची बन गया था, तो आज नारमुराद-जैसे गरीबों में से आये शुद्ध हृदय कलखोजची की दृष्टि में एक कार्यज्ञ कलखोजची बना।

१३

बाप की बेटी

हमदम फ़ूरमा एक मुस्तैद कमकर बन गया था। उस दिन जमीन समतल करते समय उसने काम को खराब कर दिया था, जिससे लज्जित होकर उसने कमर कस ली थी कि अब चाहे मुस्तैद कमकर न भी बना हो या एक ब्रिगादीर-जैसे प्रबन्धक होने लायक न भी बना हो, लेकिन वह ब्रिगेड के अन्दर एक टोली का नायक बन-कर काम कर सकता था। हमदम फ़ूरमा के कथनानुसार नारमुराद की अप्रिय, किन्तु सत्य बातों ने उसे ऐसा बनाने में सहायता की।

हमदम फ़ूरमा अपनी टोली के साथ एक नहर में खुदाई का काम कर रहा था। नारमुराद ने उधर से जाते वक्त काम देखकर कहा—हमदम, अब तू आदमी हुआ जैसा मालूम हो रहा है। तेरा यह काम बहुत पक्का हो रहा है, शाबाश!

—यदि मैं आदमी हुआ हूँ तो यह तुम्हारी कृपा है, तुम्हारी गालियों, तुम्हारी कड़ी बातों ने मेरे लिये दवा का काम किया और मुझे अज्ञान और कामचोरी की बीमारी से मुक्त किया। मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ—हमदम ने कहा।

नारमुराद ने गर्व से कहा—बात यह है कि आदमी यदि अपने से पहिले एक कुरता फाड़े आदमी की बात पर कान दे या उसकी शिक्षा पर चले, तो अलबत्ता आदमी बनेगा। दाढ़ी मुड़ा, कंघी से बाल झाड़, अपने को सजाकर मटरगश्ती करने से कोई काम नहीं बनता। अपने जिम्मे जो काम है, यदि उसे ठीक से करे, तो हर आदमी के मुँह से शाबाशी सुनेगा और काम की मजदूरी भी ज्यादा पायेगा। शायद तू ने सुना है कि साथी स्तालिन ने सबको एक समान मजदूरी देना

मना किया है और कहा है कि मजदूरी देते समय काम के गुण और कमकर की चतुराई सामने रखनी चाहिये।

हमदम फ़ुरमा ने "ऐसा ही है, ऐसा ही है" कहकर नारमुराद के मुँह पर प्रसन्नता प्रगट की; लेकिन उसकी अंतिम बात से उसके चेहरे पर क्रोध के चिह्न प्रगट होने लगे थे, जिसको छिपाने के लिये उसने बात को दूसरी ओर घुमाते हुए कहा—तुम्हारा अपना काम कैसे चल रहा है ? मुस्तैद कलखोजचियों की पाँती में शामिल होने लायक हुनर दिखा सके, जिसमें कि खदीजा के पति बनो ?

—काम बुरा नहीं है—नारमुराद ने कहा—हर रोज नार्म (निश्चित परिमाण) से अधिक काम कर रहा हूँ। काम का गुण भी अच्छा है। इस समय जमीन समतल करने का शिक्षक बनाया गया हूँ। एक दिन कृषि-विशेषज्ञ आया था। वह मेरी बराबर की गई जमीन को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला—"जिन जमीनों को तुमने बराबर कराया है, वहाँ न एक बूँद पानी बर्बाद हो सकता है, न एक पौधा बिना पानी के रह सकता है—शाबाश !"

—तो कहना पड़ेगा कि जल्दी ही दामाद बनोगे—हमदम फ़ुरमा ने कहा।

—अभी दामाद बनने का समय निश्चित नहीं किया और खदीजा की स्वीकृति भी नहीं ली—नारमुराद ने कहा—अभी से नौजवान मुझे "नारमुराद अका" या "नारमुराद चचा" न कह "नारमुराद दामाद" यहाँ तक कि कुछ तो "दामाद चा" भी कहते फिर रहे हैं। एक बूढ़े आदमी के लिये "दामाद" का नाम देना भी दामाद होने-जैसी प्रसन्नता देता है—कहते नारमुराद ने सबको हँसा दिया। जो भी हो, हिम्मत छोड़ना नहीं चाहिये।

नारमुराद ने अपना रास्ता लिया। अपनी प्रशंसा से प्रसन्न हुआ हमदम फ़ुरमा अपने दिल में "अब काम करना चाहिये" सोचते "हाँ, शेरो ! हिम्मत करो" कहते टोली को बढ़ावा दे स्वयं भी बहादुरी के साथ फावड़ा चलाने लगा।

हमदम की टोली जिस नहर में खुदाई कर रही थी, वह प्रायः आध मील उसी रूद (बड़ी नहर) के साथ-साथ चलती थी, जिससे कि वह निकाली गयी थी। रूद और नहर के बीच एक गाड़ी जाने भर की जगह छूटी हुई थी। हमदम ने उस जगह को बेकार कहकर नहर को रूद के नजदीक से खुदवाया और उससे निकली जमीन को भी दूसरी ओर अवस्थित कलखोज की जमीन के बराबर करवा दिया।

एक खोदनेवाले ने नहर को रूद के इतने नजदीक देखकर हमदम से कहा—हमारी नहर सीधी और गहरी है, लेकिन यह बीच की जगहवाला रास्ता नहीं रहा।

—इस रास्ते की कोई जरूरत नहीं—हमदम ने कहा—कुलकों को जमीन की कदर मालूम न थी। उन्होंने इतनी जमीन रास्ता बना के छोड़ रखी थी। पुराना रास्ता वह सड़क है, जो कि रूद के दूसरे तट से जा रहा है। नहर को रूद के नजदीक ले जाकर हमने सात हाथ जमीन निकाल ली और यह करीब आधा मील तक, इस तरह कलखोज की जमीन में कई एकड़ की वृद्धि हुई, जिसका प्रभाव रूई की उपज पर भी पड़ेगा।

हमदम फूरमा ने नहर के अन्दर की तरफ उसके किनारे को और भी रूद के नजदीक करके खोदने के लिये चिह्न लगाया और "डेढ़ हाथ और निकाला" कहकर प्रसन्नता प्रगट की।

× × ×

अंतिम दिन हमदम फूरमा ने अपनी इच्छा के अनुसार नहर को रूद के बिलकुल नजदीक खोदकर काम को खतम किया। उसने शाम को घर लौटकर खाना खाया और अंधेरा हो जाने पर चायखाना की ओर चला। चायखाने में गैस की रोशनी जल रही थी और आदमी भरे हुए थे। हमदम ने चायखाने के पास के तूतवृक्ष की आड़ में हो, वहाँ के आदमियों के ऊपर एक-एक करके नजर दौड़ायी और अपने दिल में यहाँ अब भी वह नहीं है, थोड़ी प्रतीक्षा करूँ, शायद आये, अपने दिल में कहते वह कलखोजचियों की बातें सुनने लगा।

कलखोजची आजकल अपने अनुकूल काम-काज होने तथा अपनी सफलताओं और त्रुटियों को कहते एक दूसरे के अनुभव से लाभ उठाने के बारे में बात कर रहे थे। इसी समय बाँसुरी, दोतार, तम्बूर, दफ (दायरा) और दुम्बक की आवाज सुनाई दी, जिसे कलखोज की संगीत-टोली बजा रही थी। लोग बात बंद कर उसे सुनने लगे। कुछ देर बाद उसके बंद होने पर किसी ने कहा :

अपनी सफलता और त्रुटियों के बारे में बतलाने के लिये नारमुराद दामाद को बोलने दिया जाय।

हमदम फूरमा ने इस आवाज को सुनकर शेर की आवाज से घबड़ाये गदहे की तरह कान खड़ा कर उसकी ओर ध्यान दिया।

—मेरे काम में कोई त्रुटि नहीं है—लोगों को हँसाते हुए नारमुराद ने कहा—आज हमने ३० एकड़ जमीन को समतल करके बोने के लिये तैयार किया।

१९—हमदम ने···तूतवृक्ष की आड़ में हो··· (पृष्ठ: ४४८)

—यह सुनकर अप्रसन्न हो हमदम अपनी अंगुलियों से कानों को बंद करने जा रहा था।

—लेकिन मेरी सफलताएँ सिर्फ अपने या अपनी टोली तक ही सीमित नहीं,

हैं, बल्कि मेरे हिम्मत के साथ मुस्तैदी से काम करने के कारण हमदम फूरमा-जैसे कामचोरों और बिगाड़ुओं को भी लज्जा आयी।

× × ×

नारमुराद की इस बात को सुनकर वह फिर खुश हुआ और ध्यान से सुनने लगा।

नारमुराद कह रहा था :

—आज हमदम फूरमा की खोदी नहरिया को देखकर मैं मुँह बाय रह गया। सपूत ने उसे अपने मुँह की तरह विस्तृत, अपनी आँखों की तरह गहरी, अपनी दाढ़ी की तरह समतल और अपनी नाक की तरह सीधी करके खोदा है।

श्रोताओं ने नारमुराद की इन अयुक्त उपमाओं पर ताली बजाते हँसना शुरू किया और हमदम भी अपने को रोक न सका।

"जिन्दाबाद ५३साला दामाद" कहते हसन एरगश ने हँसी के प्रवाह को रुकने नहीं दिया। हसन को इस बात से खदीचा का चेहरा कुछ लाल हुआ, लेकिन उसने भी अनजान बनकर हँसी में दूसरों का साथ दिया।

"इस तरह जान पर खेलकर काम करने से भी नारमुराद का दामाद होना संभव है। किन्तु मेरा दामाद होना संभव ही नहीं, निश्चित है" कहते हमदम फूरमा सोचने लगा—यदि मैं नारमुराद-जैसे भोले-भाले आदमी की प्रशंसा द्वारा लोगों के दिलों में जगह पा सकूँ, तो मेरे सब कामों का रास्ता खुल जायेगा। उस समय कुतुबिया जान की पतली कमर में अपने इन मोटे हाथों को डाल नारमुराद द्वारा उपहासित अपने इस चौड़े मुँह को उसके पतले ओठों और गुलाब की कली-जैसे छोटे मुँह में लगाकर मिलन-मदिरा पीना निश्चित है।—आ, कुतुबिया जान!

हमदम फूरमा इन मधुर विचारों में डूब रहा था कि इसी समय शाशमाकुल के मुँह से अपना नाम सुनकर उधर आकृष्ट हुआ। वह कह रहा था :

—एक बार मैंने कहा था कि हमदम फूरफा एक बहुत अच्छा कलखोजची है, तो सफर अका और एरगश चचा मुझपर हँसने लगे। अब उनकी प्रशंसा आप नारमुराद चचा-जैसे सच्चे आदमी के मुँह से सुन रहे हैं।

हमदम फूरमा कैसा कलखोजची है, इसका पता शरद में लगेगा—सफर गुलाम ने कहा—एक काम को अच्छी तरह सरंजाम देने या एक नहरिया

को अच्छी तरह खोदने-खुदवाने से कोई मुस्तैद कलखोजची नहीं बन जाता। कलखोजची जब वसन्त से शरद और शरद से बोआई के समय तक काम की हर शाखा में अपने काम की खूबी दिखलाये, तब मुस्तैद कलखोजची कहा जा सकता है।

—"मुस्तैद कलखोजची" नाम पाने के लिये और भी बहुत-से काम करने होते हैं—हमदम ने अपने आपसे कहा।

कलखोज की मंडली ने फिर संगीत आरंभ किया। हमदम अपने दिल में "हसन एरगश यहाँ है, इस समय मौका है उससे मिलने" और मेरे नहर खोदने की तारीफ को भी उसे सुनाने का। ये लोग अपने तजबों को मिलकर देख रहे हैं, "हम भी अपने कामों को मिलकर देखें" विचारते वह अपने आये रास्ते से लौट पड़ा। कोई देख न ले, इसके लिये वृक्षों की छाया और दीवारों की आड़ लेकर चलने लगा।

× × ×

हमदम फ़ूरमा गाँव के छोर पर पहुँचा और अंतिम हवेली के किनारे से खेत के ओर से होते उसके पीछे गया। उस ओर खुलती सफेद पर्दे से ढँकी खिड़की के काँच पर एक-दो बार नख से खटखटाया। घर के भीतर से भी नाखून की खटखटाहट द्वारा जवाब मिला। आवाज सुन हमदम ने झुककर मिट्टी उठा उसी काँच पर "मैं" लिख दिया। एक षोड़शी सुन्दरी ने पर्दा हटा लालटेन के प्रकाश में "मैं" शब्द को पढ़ा; फिर काँच पर एक बार नाखून से शब्द करके कपड़ा पहिनना शुरू किया।

हमदम फ़ूरमा आवाज सुनकर काँच पर लिखे "मैं" को मिटा कूचे की ओर लौटा। इसी समय घर के अन्दर आवाज सुनाई दी—"बीबी, मैं लाल चायखाने जा रही हूँ, हसन जान को देर हो गयी, उसे साथ लिवाये आती हूँ।"

कूचे की बगल में एक नहरिया थी, जो रास्ते के साथ-साथ चली गयी थी। नहरिया की दोनों ओर घनी छायावाले पुराने बलखी तूतवृक्ष लगे हुए थे, जिनके कारण वहाँ रात्रि का अंधकार और भी घना हो गया था। हमदम फ़ूरमा कूचे में आ नहर और हवेली की दीवार के बीच की राह से हो एक मोटे वृक्ष के नीचे पीठ लगाकर खड़ा हुआ।

हवा बिलकुल बंद थी, रात्रि प्रशान्त, निश्चल और नीरव थी। इस नीरवता

को अगर कोई भंग कर रहा था, तो वह थी हमदम फ़रमा के दिल की धड़कन, जिसे वह स्पष्ट सुन रहा था। दरवाजा हलकी आवाज से खुला और फिर बंद हो गया। पैर की कोमल आवाज के साथ एक कालिमा आने लगी, जिसे हमदम के सिवा कोई नहीं देख रहा था। बहुत देर न हुई कि पैरों की आहट, बुखारावाले शाही के नये कुर्ते की खनखनाहट और उससे भी आगे-आगे चलती गुलाबी अतर की सुगन्ध गाँव के कूचे को अतरफरोश की दूकान बना आगे बढ़ी। हमदम के "मैं" कहने पर कालिमा खड़ी हो गयी और जिधर से आवाज आ रही थी, वहाँ किसी को नहीं देखकर बोली—तू कहाँ है ?

—मैं यहाँ, पेड़ के पीछे खड़ा हूँ—हमदम ने कहा।

—मुझे तू बिलकुल नहीं दिखाई दे रहा है, कहाँ से नहर पार करूँ ?

—यहाँ इस पुल से आ—कहते हमदम ने हाथ बढ़ाकर अपने से पाँच कद दूर के पुल की ओर इशारा किया; लेकिन उस अंधेरे में हाथों को कौन देखता ?

"हाँ, देखा" कहकर कालिमा बड़ी तेजी के साथ पुल पार हो दीवार के नीचे से होते पेड़ के पास पहुँची। हमदम ने दीवार और पेड़ के बीच खड़ा हो दोनों हाथों को फैला रखा था। जैसे ही कालिमा दोनों हाथों के बीच आयी, उसने "आ, कुतुबिया जानम्" कहते उसे हाथों के बीच में कस लिया। कुतुबिया ने अपने चेहरे को हमदम के मुँह पर लगा नाज करते कहा—ठहर, वह आता न हो।

—अब भी क्या तेरा दिल उसके साथ है, अब भी क्या तुझे उसका ख्याल है ?—हमदम ने रुष्ट-सा होकर कहा।

—पहले भी मेरा दिल उसके साथ न था और अब भी नहीं है; लेकिन जब तक अलग न हो जाऊँ, उसका ख्याल करना ही पड़ेगा, नहीं तो सारा काम बर्बाद हो जायेगा—कुतुबिया ने कहा—बैठ, बात कर, समय बीत रहा है, उसके लौटने का समय नजदीक है।

हमदम एक हाथ हटा दूसरे हाथ से उसकी कमर पकड़े दीवार के सहारे बैठा। कुतुबिया भी अपने सिर को उसके वक्ष पर रखकर बगल में बैठ गयी। हमदम ने सिर पर बँधा रूमाल के नीचे से निकले कुतुबिया के कोमल केशों पर हाथ फेरते कहना शुरू किया—मुझे डर लग रहा है, काँच और बुखारी (अंगीठी) वाला घर, रूपहला पलंग, बुखारा के शाही के कुरते, हरे-लाल-गुलाबी रेशमी

रूमालें—जो कि काले बालों, आँखों, भौंहों, लाल चेहरे और सफेद गर्दन की शोभा को बढ़ाते हैं, रेशमी के पतले मोजे और चरणशोभावर्द्धक वार्निश के ये बूटों ने तेरे दिल को ज्यादा खींच रखा है, क्यों ?

—बुखारी और काँचवाले घर उन्हीं गुलामों-नौकरों-मुफ्तखोरों को अपनी ओर खींच सकते हैं, जिन्होंने अपने जीवन में घर नहीं देखा या किसानों को खींच सकते हैं, जिनके घर ढोरखानों से अन्तर नहीं रखते। उरुन बाय किलाची की लड़की की आँखों में ऐसे घर का क्या मूल्य है ? मेरे बाप के पास एक महल-जैसी हवेली रही है। शादी की पोशाक मैंने नयी नहीं पहनी, मैं बाप के घर में जरी की पोशाक पहनती रही।

—यदि ऐसा था, तो हसन की किस बात पर मुग्ध होकर तूने उसे पसंद किया ?

जब जमाना खराब आया, कलखोज नाम की बला पैदा हुई, बायों के ऊपर आक्रमण हुआ, तो मैं अपने परिवार को इस बलाय से बचाने के लिये तैयार हुई। इस काम के लिये एक पार्टी-मेम्बर या कमसोमोल को पति बनाना आवश्यक था। सबको देखा-भाला। सबमें हसन को अधिक सीधा-सादा और अनुभवहीन पाकर उसे फाँसने की तदबीर करने लगी। अन्त में सफल हुई।

कुतुबिया एक आः खींचकर चुप हो गयी। हमदम ने "तू स्वयं भी जाल में फँस गयी" कहकर उसे फिर बात करने के लिये मजबूर किया—हाँ, सच कहता है, मैं खुद भी जाल में फँस गयी। जब ब्याह की रजिस्ट्री की बात आयी, तो उसने "तू विरोधी वर्ग में रहती है" कहकर इन्कार कर दिया। मैंने इसकी भी तदबीर सोच ली और माँ-बाप की अनुमति से उनसे अलग होकर मौसी के घर रहने लगी। हसन से पूछा—"अब क्या कहता है ?" उसने जवाब दिया—"यदि वचन दे कि अब से माँ-बाप के यहाँ आना-जाना न करेगी, तो मैलश्।" मैंने इसके बारे में भी वचन दे दिया। मैंने समझा कि इसके बाद रजिस्ट्री करके एक बालिश पर सिर रख उसे अपने राह पर ला सकूँगी, लेकिन···।

कुतुबिया चुप हो गयी। हमदम ने फिर "लेकिन क्या" कहकर सवाल किया।

—लेकिन मैंने समझा न था कि ऊपर से भोला-भाले और नर्म दिखलाई देनेवाले इस लड़के का दिल पत्थर से भी अधिक कड़ा है। शादी की रजिस्ट्री हुई। मैं उसके साथ जितना प्रेम प्रगट करती, वह उससे भी अधिक मेरे साथ प्रेम प्रगट करता। लेकिन यहाँ एक बात मानूँगी कि जहाँ मेरा प्रेम झूठा और

बनावटी था, वहाँ उसका प्रेम सच्चा और जवानी के स्वच्छ हृदय से निकला था।

यदि उसका प्रेम सच्चा और स्वस्थ था, तो उसने तेरे परिवारवालों के लिये क्यों नेकी नहीं की?—हमदम ने टोका।

—ठहर, कहती हूँ—कुतुबिया ने कहा—लेकिन ऐसे सच्चे और साफ प्रेम के होते भी जैसे ही मैंने अपने बाप की बात छेड़ी, तो सच्चे प्रेमवाले उस हृदय में ईर्ष्या, क्रोध और घृणा पैदा हो गयी। उसने उठकर चला जाना चाहा। मैंने रोते हुए हाथों से उसे रोकना चाहा। वह धक्का देकर बोला—"मेरा और तेरा काम यहीं खतम हुआ। तूने अपने वचन को तोड़ा, यदि अब मैं भी अपने वचन को तोड़ूँ तो दोष नहीं" और चाहा कि घर से बाहर चला जाय; फिर मैंने दूसरी तदबीर की और "मैं अपने माँ-बाप से सदा के लिये अलग हो गयी, मैंने तो एक परिहास किया था" कहकर उसे समझाया-बुझाया। इस खेल को दूसरे ढंग से भी मैंने कई बार करके देखा; लेकिन उसके पाषाण-से हृदय को नर्म नहीं कर सकी। वह एक ठंढ पत्थर था, जिसे मैंने पीटा, एक बेकार बात थी जिसे आँधी के समय मुँह से निकाला।

कुतुबिया फिर चुप हो गयी। हमदम ने "पीछे फिर क्या हुआ" कहकर उसे फिर कहने के लिये प्रेरित किया।

—मेरे बाप की सारी माल-मिलकियत जब्त हुई, खुद बाप-माँ और मेरे भाई निर्वासित किये गये। मेरी हवेली स्कूल बन गयी। गच किये हुए मेरे कमरों में घर गरम करने की बुखारियाँ बैठा दी गयीं; लेकिन तो भी अपने मतलब के लिये मैं उसके हाथ में बनी हूँ।

बात समाप्त करते समय कुतुबिया ने अपने चेहरे को हमदम के हथेली पर मलते आँखों से गिरते आँसुओं के एक-दो बूँद वहाँ गिरा दिये और इस तरह हमदम के दिल को और भी अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

हमदम को सूझ नहीं पड़ रहा था कि बात को कहाँ से आरंभ करें; लेकिन अपने आपको सर्वथा अर्पित किये हुई तरुणी के पास देर तक चुपचाप रहना ठीक नहीं समझकर उसने कहा—उसे छोड़कर आ मेरे साथ रजिस्ट्री करा, लेकिन शर्त यह है कि रजिस्ट्री के बाद इमाम को बुलाकर निकाह भी पढ़ायेंगे।

—यदि खुदा हमें वह दिन दिखलाये, तो जरूर निकाह पढ़ायेंगे—संदिग्ध स्वर में कहकर कुतुबिया चुप हो गयी।

—हमें वह दिन दिखलाने में खुदा कहाँ बाधक है ? सोवियत सरकार ने ब्याह करना और तिलाक देना आसान कर दिया है । तू यदि उसे नहीं चाहती तो कल सवेरे रजिस्ट्री आफिस में चली जा और उससे जुदा हो जा ; फिर परसों मेरे साथ रजिस्ट्री करा ले । चिट्ठी तमाम और सलाम । इस तरह बैठकर आँखों से पानी गिराने की क्या आवश्यकता ? इस लड़के ने तेरे दिल को तोड़ा, तेरे माँ-बाप गाँव से दूसरी जगह निर्वासित कर दिये गये, तब भी इस लड़के ने सहायता न की। अब तू उससे इस तरह बदला ले ।

—मेरे दिल को केवल हसन से बदला लेने से शान्ति नहीं मिलेगी । मुझे इस कलखोज से भी बदला लेना है, जिसने मेरे घर-बार को उजाड़ दिया और जो गुलामों, नौकरों, चरवाहों, बटाईदारों के जीवन को सुखी बनाने का कारण हुआ, इसके लिये तेरे इन सबल हाथों से सहायता चाहती हूँ ।

कुतुबिया बात समाप्त कर हमदम की आस्तीनों को ऊपर की तरफ खिसकाकर उसके हाथों को अपने सुनहली चूड़ियोंवाले रुपहले हाथों से चुपचाप मलती रही । हमदम ने अपने चेहरे को कुतुबिया के बिखरे बालों से मलते हुए कहा—कलखोज से बदला लेने में मैं तेरा सहायक हो सकता हूँ ।

—मैंने भी ऐसी ही आशा की थी ।

—तो क्या अब आशा नहीं रही ?

—आशा नहीं होती, तो क्यों तुझे मिलने के लिये बुलाया होता ? किन्तु निराश होने ही जा रही थी, जब सुना कि एक मुस्तैद कलखोजची बन गया ।

—मिरजा उरुन बाय किलाची और उसका विश्वासपात्र गुमाश्ता क्या कभी मुस्तैद कलखोजची बन सकते हैं—हमदम ने कहा—केवल आरंभ में मैंने भूल की और खुल्लम-खुल्ला कामचोरी और बिगाड़ का काम करने लगा ; लेकिन मेरा यह खेल अधिक न चल सका, भेद खुलने ही वाला था कि मैंने मुँह पर पर्दा डाल लिया और मुस्तैद कलखोजची बनने के लिये जुट पड़ा ।

—अच्छा, जुटकर क्या काम किया ?—कुतुबिया ने पूछा ।

—मेरे जिम्मे एक बड़ा काम सौंपा गया था । मैंने उस काम को अपने मन के अनुसार किया और साथ ही मुस्तैद कलखोजची का नाम भी पाया; लेकिन मेरा मुस्तैद कलखोजची होना वैसा ही है, जैसा तेरा मुस्तैद कम्सोमोल की स्त्री होना ।

—अच्छा, तो तू ध्वंस का काम कब करेगा ?

—यही काम जो अभी पूरा किया है, ध्वंस ही का काम है।

"कैसे ?"—कहते प्रसन्न होकर कुतुबिया अपने एक हाथ को हमदम की गर्दन पर डालकर दूसरे से उसकी खड़ी मूँछों से खेलने लगी।

—मुझे एक नहर खोदने का काम मिला था। उसे ऐसा बना दिया है कि सिंचाई के वक्त आसानी से उसे नष्ट कर सकता हूँ। इससे कपास यदि बिलकुल नष्ट न हो तो भी दस दिन पानी न मिलने से पैदावार आधी तो जरूर हो जायेगी।

—क्या यही सब कुछ है—कुतुबिया ने अप्रसन्नता प्रगट करते हुए, उसकी गर्दन से हाथ हटाकर मूँछ के ताव को बिगाड़ते हुए कहा।

—नहीं और भी है—हमदम ने मुँह में भिगोकर मूँछ पर फिर ताव देते हुए कहा।

—और क्या है—कुछ हर्षित हो कुतुबिया ने कहा।

—कपास बोने के बीज में से आधा बोरा बीज निकालकर उसमें पोच बिनौला मिला दिया।

—और क्या ?

—रासायनिक .खाद के बारे में भी तदबीर सोच रखी है। यदि काम इसी तरह चलता रहा, तो कोड़ने के वक्त उस तदबीर को काम में लाऊँगा।

—ऐसा है तो कान देकर सुन—कुतुबिया ने कहा—हसन सियालका (बोवक) और कल्टीवेटर (कोड़क) पर काम करता है। अभी उसने इन मशीनों के काम को अच्छी तरह नहीं सीख पाया है। "तू मुस्तैद कलखोजची" होने का लाभ उठा उसके आप-पास मँड़राते एक पुराने सियालकची के तौर पर उसे सलाह दे और अवसर पाते ही उसके कामों को खराब कर दे। यदि तू यह काम कर सके, तो एक तीर से दो शिकार करेगा।

—दो शिकार कौन हैं ?

—एक तो यही कलखोज को हानि पहुँचाना और दूसरे हसन के काम को खराब करना, जिससे वह बदनाम होगा—कुतुबिया ने कहा—पार्टी और कमूसोमोल के काम में दिलोजान से पड़े रहनेवाले आदमियों के काम को बर्बाद करना कलखोज को बर्बाद करना है।

—यह काम मेरे सामने सबसे पहिले है—हमदम ने कहा—मैं ऐसा करूँगा कि हसन की बोई कपास बिलकुल न जमे।

हमदम की बात समाप्त हो जाने पर कुतुबिया ने उसकी आँखों, भौंहों और चेहरे को चूमते हुए कहा— मैं पहिले से ही तुझसे प्रेम रखती थी, लेकिन वह केवल इन काली आँखों, भौंहों और चाँद के चाप-जैसी मूँछों की बाहरी सुन्दता के लिये नहीं, बल्कि कुछ और सुन्दरता के लिये भी, जो तुझमें है और जिन्हें मैं निश्चित न कर सकी थी। अब मैंने निश्चित कर लिया, तू वह जवान है, जो मेरी आंतरिक इच्छाओं के अनुसार चल सकता है। एक तीर से दो शिकार मारना मेरा प्रथम उद्देश्य है।

हमदम ने तरुणी को अपने अंक में लेकर कहा—नहीं देखती, मैं सदा अपने काम को मशीनों और कपास संबंधी नयी प्रक्रियाओं के ऊपर चलाता हूँ। मेरे इस काम से पैदावार में कमी होगी और मशीन तथा वैज्ञानिक ढंग के पक्षपाती नेताओं की इज्जत भी खराब होगी, साथ ही वे लोग भी इस तरह विरोधी बन जायेंगे, जिन्हें कि अभी मशीनों और नये ढंग की आदत नहीं पड़ी है और जो उनके गुणों को नहीं जानते। इन सबका परिणाम यह होगा कि कलखोज आगे न बढ़कर बर्बाद होगा।

—हमदम जान, हमदम जाने-मन्—कहती कुतुबिया अपने हाथ को उसकी कमर में डालकर बोलने लगी—दुनिया में मेरे दो मनोरथ हैं—एक तो यह कि कल-खोज बर्बाद हो और दूसरा यह कि यह दृढ़ शरीर मेरा बने।

हमदम ने बिना कुछ बोले उसके ओठों पर अपना ओठ रख दिया; लेकिन इसी समय लाल चायखाने की ओर से लालटेन का प्रकाश दिखलाई पड़ा, जिसने साँप की तरह पेंच खाये इन दोनों षड्यंत्रियों को एक दूसरे से अलग होने के लिये बाध्य किया। हमदम फूरमा वृक्ष-पंक्ति के नीचे नहर के किनारे-किनारे जाकर लुप्त हो गया। कुतुबिया जल्दी-जल्दी अपनी पोशाक को ठीक करके पुल पर से बड़े कूचे में हो चायखाने की ओर चली। २०-२५ कदम जाने पर लालटेन के साथ आनेवाले आदमी मिले, जिनमें हसन भी था—हसन मेरे प्राण! क्यों इतनी देर की—कहते कुतुबिया ने बगल में जा उसे चलने से रोक दिया। हसन एरगश उसे बगल में लेकर बोला:

—आज रात चायखाने में बात बहुत गरम रही, समाजवादी होड़ ने अपने अच्छे परिणाम हमारी आँखों के सामने रखे हैं। पहिले के कामचोर अब मुस्तैद कलखोजची बन रहे हैं। इन सफलताओं पर वार्त्तालाप करके एक दूसरे के अनुभव को जानने की कोशिश करते रहे। हमें अपने महान् नेता साथी स्तालिन की शिक्षा "हरएक कलखोज को बोलशेविक कलखोज और हरएक कलखोजची को धनी बनाओ" इन सफलताओं का एक बड़ा कारण है, इसे हमने अपने काम से दोबारा समझ लिया और दूसरों को समझाया।

हसन एरगश अपनी स्त्री के साथ बात करते साथियों से पीछे रह गया। उसने सहानुभूतिपूर्ण स्वर में पूछा—तेरे सिर का दर्द कैसा है?

कुतुबिया ने प्रेमाभिनय करते सिर को पति के कंधे से लगाकर कहा—सिर का दर्द चला गया, लेकिन उसकी जगह दिल का दर्द शुरू हुआ। तूने देरी की, दिल घबड़ाने लगा, नींद नहीं आयी और लाचार उठकर तेरी ओर दौड़ी।

—कुतुबिया! तू सचमुच मुझसे प्रेम करती है—यदि तुझसे प्रेम न करती, तो आधी रात को इस अंधेरे कूचे में जहाँ मर्द भी बिना लालटेन के नहीं आ सकते, अकेली क्यों तेरे पीछे दौड़ती आती?

—ठीक है, किन्तु जैसे तूने अपने माँ-बाप को भुला दिया, वैसे ही बायों-जमींदारों की आदतों को भी छोड़ दे और एक मुस्तैद कलखोजची बनने की कोशिश कर। तब तू मुझे प्रसन्न कर सकेगी।

"हा पाषाण-हृदय" कहती कुतुबिया हसन की गर्दन से लिपट गयी और अपने बिखरे बालों को उसके मुँह पर मलने लगी।

लोग बिखरकर अपने-अपने घरों में जा चुके थे और कूचे में लालटेन नहीं रह गयी थी, नहीं तो उसके प्रकाश में हसन एरगश देखता कि उसके साथ इतना प्रेमाभिनय करती कुतुबिया अपने आँखों के कोने से उस जगह पर हसरत भरी निगाह डाल रही है। जहाँ पाँच क्षण पहिले वृक्ष के नीचे हमदम के अंक में वह मीठे सपने देख रही थी।

१४

कलखोज की मशीन गुम

मौसिम अच्छा था, निर्मल आकाश नील के रंग की तरह चमक रहा था, सूर्य आकाश में उठकर सारे हार को अपने प्रकाश से आप्लावित किये हुए था। ट्रैक्टर से जोते, दनदाना से माला किये, सियालका से बोये कलखोज के खेत देखने में उसी तरह हरे और सुन्दर मालूम होते थे, जैसे पिस्तई रंग के रेशम से फूल-पत्ते निकाली सूजनी। नवजात पौधों के भीतर से घासों को निराती स्त्रियाँ और लड़कियाँ वसन्त में फुलवाड़ी में मधु-मक्खियों की तरह बड़े परिश्रम से काम कर रही थीं। पंक्तिबद्ध कलखोजचियों के फावड़े कोड़ने के लिये आकाश में उठे, उसी तरह सूर्य किरणों में चमकते, आँखों में चकाचौंध पैदा कर रहे थे, जैसे लाल सेना के सवारों की तलवारें परेड के मैदान में। तीनपतिया-चौपतिया हो चुके पौधों को कपास के विशेषज्ञ उसी तरह दो-दो, एक-एक कर रहे थे, जैसे आँख के डाक्टर पीड़ा देनेवाली अधिक बरौनियों को मोचने से सावधानी के साथ पहचानते हैं; आवश्यकता से अधिक अंकुरों को वह अपनी अंगुलियों से इतनी सावधानी से पकड़कर खींचते थे कि पास के पौधे को जरा भी हानि न पहुँचे।

आबदार (सिंचाई के कर्मी) नहरें ठीक कर रहे थे। पशुपाल यूनुच्का (घास) काटकर ला रहे थे, खच्चरची गाड़ी के न जाने लायक जगहों में खच्चरों या गदहों पर खाद-गोबर लादकर खेतों में डाल रहे थे।

किन्तु हार में एक चक पर जमा हुए कुछ कलखोजची आपस में कड़ा वाद-विवाद कर रहे थे। खेत का चक्कर लगाकर वहाँ आया सफर गुलाम कृषि विशेषज्ञ से कह रहा था—यह मेरा दोबारा बोआई है, एक बार बोया, बीज इससे भी कम जमा, उसे उलटकर फिर से बोया, लेकिन तो भी देख रहे हो, कितनी जगह खाली है। तुम्हारे विचार में इसका क्या कारण हो सकता है?

—इसका कारण सियालका (बोने की मशीन) है, सियालका से ठीक से काम न लेना है—कहते कृषि-विशेषज्ञ ने जेब से डिब्बा और दियासलाई निकालकर एक सिगरेट अपने मुँह में लगा दूसरा सफर गुलाम को दे दिया। सलाई से जला एक-दो फूँक लगाकर फिर कहना शुरू किया—जानते हो क्या हुआ है?

सियालका की नाप आवश्यकता से अधिक नीचे उतार दी गयी, जिससे अधिक बीज निश्चित स्थान से दूर जाके गिरा, मिट्टी से न ढकने के कारण न जम सका, और इस प्रकार बहुत-सी जगह खाली चटियल रह गयी।

कृषि-विशेषज्ञ ने सिगरेट की राख को गिरा एक-दो फूँक लगाकर फिर पूछा—तुम्हारा सियालकची कौन था?

—यही जवान—कहते सफर गुलाम ने मुँह फक हुए हसन की ओर इशारा किया।

—यह किसका लड़का है?—हसन के ऊपर संदेह की दृष्टि से देखते उसने पूछा।

—मेरा लड़का—कलखोजचियों के बीच उदास खड़े एरगश ने कहा।

—बहुत अच्छा. बड़ा लड़का है, इसका कद तुम्हारे बराबर हो गया है—कृषि-विशेषज्ञ ने कहा।

—स्वयं मुस्तैद कमूसोमोल है—कहकर सफर गुलाम ने हसन का और परिचय दिया।

—आगे आ साथी जवान, तेरा नाम क्या है—कहते कृषि-विशेषज्ञ ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया।

हसन ने नाम बतलाते अपना हाथ दिया। फिर कृषि-विशेषज्ञ ने उससे कहा—तूने सियालका ठीक करने का काम खूब अच्छी तरह सीखा है?

—सीखा है—हसन ने जवाब दिया।—काम आरंभ करने से पहिले सियालका को परीक्षा करके देख लिया था?

—देख लिया था। सियालका ठीक था—हसन ने जवाब दिया—परीक्षा के समय हमदम अका भी उपस्थित थे—कहते वहाँ खड़े हमदम की ओर इशारा किया।

—सच कहता है, परीक्षा करके देख लिया था, उस समय मैं वहाँ मौजूद था—हसन की बात का समर्थन करते हुए हमदम ने कहा—सियालका अच्छी मशीन नहीं है। पारसाल मैंने सियालका से एक टुकड़े में कपास बोयी थी। मैंने सियालका को बहुत ठीक करके चलाया था, लेकिन इसी तरह खेत कहीं-कहीं खाली था।

—शायद काम करते समय सियालका अपने आप खराब हो गया हो—शाशमाकुल ने कहा।

—काम करते समय सियालका अपने आप खराब हो सकता है, लेकिन उसकी नाप अपने आप नीचे-ऊपर नहीं हो सकती—कृषि-विशेषज्ञ ने कहा—इसमें या तो साथी हसन की भूल है या काम करने के समय किसी बेगाने हाथ ने वह काम किया जिसकी खबर हसन को नहीं है।

कृषि-विशेषज्ञ की अंतिम बात को सुनकर हमदम का रंग उड़ गया। उसने आकाश की ओर निगाह करके "ऐ, दोपहर हो गया। मैं जाकर अपने नार्म (निश्चित परिमाण) का काम पूरा करूँ" कहते जाना चाहा; किन्तु शाशमाकुल ने रोक दिया "तू कहाँ जाता है? तू कमीशन का मेम्बर है, जाँच के काम को पूरा करके अपने काम पर जा।"

सफर ने कृषि-विशेषज्ञ से पूछा—उलटकर फिर से बोने के लिये समय नहीं रह गया। अब क्या करें, ऐसे ही छोड़ दें या खाली जगहों में कुदाल से बोयें?

—मेरे विचार में—कृषिविशेष ने कहा—यदि ऐसे ही छोड़ दो तो बहुत-सी जगह खाली रह जायेगी, इसलिये खाली जगहों में कुदाल से बो देना चाहिये। यदि कपास नहीं होगी तो भी कोरक देगी।

—मेरी राय में ठीक न उगी इस सारी कपास को उलटकर खेत में ज्वारी बो देनी चाहिये। इन बचे-खुचे पौधों से श्रम और भूमि के अनुसार फसल नहीं होगी। ज्वारी यदि प्रति एकड़ ४० बोरा भी हो जायेगी तो भी अच्छा—हमदम फूरमा ने कहा—इतने खेत के उलट देने से हमारी योजना के न पूरी होने का डर नहीं है, क्योंकि हमारी कपास की खेती के क्षेत्रफल और उसमें होते काम से मालूम हो रहा है कि इस साल हमारी पैदावार दुगुनी होगी।

—यह विचार हानि पहुँचानेवाले का विचार है—योलदाशोफ ने लिलार पर सिकुड़न लाते हुए कहा।

—यह भी एक विचार है—शाशमाकुल ने कहा—इसमें भूल भी हो सकती है, लेकिन उसके लिये कमीशन के मेम्बर एक कलखोजची पर ऐसा आक्षेप करना, जिसमें वह अपने विचारों को प्रगट न कर सके, ठीक नहीं है।

—मैं कुछ कह सकता हूँ—सादिक ने आगे आकर कहा।

—कहो—योलदाशोफ ने कहा।

—हम—सादिक ने कहा—बीज न जमी जगहों में कुदाल से बोकर बड़ी भूल करेंगे, क्योंकि कपास बोने का समय बीत चुका है, नये पौधे ठीक पैदावार न देंगे और

साथ ही अपनी बगल के पुराने पौधों को भी अवसर न देंगे कि वे शाखा फैलाकर कोरक बाँधे। इसके अतिरिक्त एक ही खेत में अलग-अलग समय में जमे पौधों में सिंचाई करने, कोड़ने आदि में दूसरों को हानि पहुँचेगी। इसका परिणाम यह होगा कि हम प्रतिहेक्तर[1] सोलह सौ किलोग्राम (५० मन) के करारनामे की जगह हजार किलोग्राम भी नहीं पैदा कर सकेंगे।

—अच्छा, तो क्या तुम भी इस जमीन में कपास उलटकर दूसरी चीज बोने के लिये कह रहे हो?—शाशमाकुल ने पूछा।

—सब्र करो, अभी मैंने "दादश्" नहीं कहा।

—"दादश्" क्या है?—कृषि-विशेषज्ञ ने सफर गुलाम से पूछा।

—एक समय—सफर गुलाम ने कथा शुरू की—एक मुल्ला ने पियक्कड़ साधु (दीवाना मुश्रिब) से पूछा—"तेरा नाम क्या है?" पियक्कड़ साधु ने जवाब दिया—"खुदाय······" मुल्ला ने दूसरे मुल्लों के साथ मिलकर "काफिर हो गया" कहते पियक्कड़ साधु को मारना शुरू किया। साधु चिल्लाने लगा "मुझे क्यों मार रहे हो, मैं अपना नाम खुदायदाद कहने जा रहा था, लेकिन तुम मुल्लों ने दादश् (उसमें के दाद) को सुने बिना ही मुझे अपराधी बना दिया। यह एक प्रसिद्ध कहावत है।

कृषि-विशेषज्ञ ने "कहावत बहुत अच्छी है" कहकर सादिक की ओर निगाह करके कहा—अच्छा, अब "दादश्" को कहो।

—मेरे विचार में—सादिक ने कहा—जमें पौधों को इसी तरह रखकर अधिक कमाना चार बार नहीं, पाँच-छ बार कोड़ना और मिट्टी फैलाना चाहिये। घासों को उगते ही निकाल डालना, रासायनिक खाद के अतिरिक्त हर कोड़ाई पर राख डालनी चाहिये। इससे पौधे खाली जगहों की ओर शाखायें फैलायेंगे और जो बूटा वैसे सौ कोरक (कली) बाँधता, वह दो सौ कोरक बाँधेगा। इस तरह पैदावार अधिक होगी। हाँ, मेहनत जरूर यहाँ दूनी करनी पड़ेगी।

—यदि खाली जगहों को ऐसे ही छोड़ दें तो क्या तुम करारनामा के अनुसार प्रतिहेक्तर १८०० किलोग्राम पैदावार देने की जवाबदेही ले सकते हो?—शाशमाकुल ने गरम होकर कहा।

---

[1] २·७ एकड़ = १ हेक्तर

—यदि यह काम मेरे हाथ में हो, तो मैं प्रतिहेक्टर चौबीस सौ किलोग्राम (७५ मन) कपास पैदा करने की जिम्मेवारी ले सकता हूँ—सादिक ने जवाब दिया।

—यदि पैदावार कम हुई, तो हम तुम्हें हानि पहुँचाने का अपराधी बनायेंगे—शाशमाकुल ने धमकाते हुए कहा।

योलदाशोफ ने कृषि-विशेषज्ञ की ओर निगाह करके हँसते हुए कहा—क्षतिपूर्ति के बारे में उपाय बतलानेवाले एक किसान को इस प्रकार धमकाना ठीक नहीं।

मैं—कृषि-विशेषज्ञ ने कहा—अका सादिक की राय से सहमत हूँ, इनका विचार साइंस के अनुकूल है। मैं आप लोगों को सलाह दूँगा कि इस खेत का काम अका सादिक को सौंपकर तजर्बा करके देखना बुरा नहीं है।

"ठीक है" की आवाज सबकी ओर से आयी, किंतु हमदम फ़ुरमा चुप रहा, और शाशमाकुल ने "मैं अपनी राय पर कायम हूँ" कहा, उस खेत का काम सादिक को सौंपा गया और उसके कहने के अनुसार उसे कलखोजचियों की एक टोली बनाकर दी गयी।

—यह काम समाप्त हुआ।—कमीशन के अध्यक्ष सफर गुलाम ने कहा—अब मरे-मुरझाये पौधों का सवाल लेते हैं।

सफर गुलाम ने अब भी हसन को कमीशन के पीछे आते देखकर कहा—तू अपने काम पर जा। कल्टीवेटर में घोड़ा जोड़कर काम शुरू कर।

हसन एरगाश अपने काम पर चला गया और कमीशन मरे-मुरझाये पौधों की ओर।

× × ×

—यह खेत शरद में जोता गया था या नहीं?—मरे-मुरझाये पौधोंवाले खेत की ओर इशारा करके कृषि-विशेषज्ञ ने पूछा।

—जोता गया था—उत्पादन-समिति के अध्यक्ष समद मोची ने कहा।

—ट्रैक्टर से?

—हाँ, ट्रैक्टर से।

—डुबाऊ और भिगाऊ सिंचाई हुई थी?

—हुई थी।

—घरू खाद डाली गयी थी?

—गोबर की खाद डाली गयी थी।

—रासायनिक खाद ?

—उसे भी डाला था।

—प्रतिहेक्तर कितनी ?

—तुम्हारे कथनानुसार प्रतिहेक्तर ७२ किलो (सवा दो मन)—ब्रिगादीर अबदी ने जवाब दिया।

—खेत कैसा है ?—कृषि-विशेषज्ञ ने सफेद हो गये पत्तोंवाले पौधों के खेत को दिखलाकर पूछा।

—उसे भी इसी खेत की तरह शरद में जोता गया, डुबाऊ भिंगाऊ सिंचाई की गयी, घर की खाद डाली गयी, दोनों को एक समय बोया कोड़ा गया, एक समय सिंचाई करके एक ही बार बराबर रासायनिक खाद बिखेरी गयी—ब्रिगादीर ने कहा।

—ऐसा जवाब दे रहे हो, जिससे मालूम होता है कि इन पौधों का ऐसा होने का कारण खुदा या शैतान को छोड़ दूसरा नहीं हो सकता—कहते कृषि-विशेषज्ञ ने डिब्बा निकाल सफर गुलाफ को एक सिगरेट दे खुद एक सिगरेट जला दो-एक फूँक मारकर कहा—प्राकृतिक तौर से एक जैसे दो खेत, जो एक बार बोये गये, जिनमें एक ही तरह का खाद-पानी देकर काम किया गया, दो तरह की उपज नहीं दे सकते। और यहाँ इन दोनों में साफ अन्तर है—कृषि-विशेषज्ञ सिगरेट पीते कुछ सोचने लगा।

हमदम फूरमा ने कहा—मेरे विचार में दोष रासायनिक खाद में है। सुना गया है, गिज्दुवान की ओर भी रासायनिक खाद ने बहुत कपास को सुखा दिया है।

—मेरी चकवाली कपास को रासायनिक खाद ने क्यों नहीं सुखाया—गफूर ने हमदम की बात को काटकर कहा।

—प्राविल्ना (ठीक)—कहते योलदाशोफ ने गफूर की बात का समर्थन करते हुए ब्रिगादीर अबदी से पूछा—कृषि-विशेषज्ञ की बात को भूलकर अंदाज से कम-बेश रासायनिक खाद तो नहीं डाली ?

—नहीं डाली—अबदी ने कहा—गोदाम से अपने हाथ से १४४ किलो खाद तोलकर निकाला और मैंने उसे बाँटकर एक-एक हेक्तरवाले इन दोनों खेतों में डाला।

—ठीक से बाँटा या तूने भी अमीर के जमाने का अन्दाजा लगाया ?—एरगश ने ब्रिगादीर से पूछा।

—नाप-नापकर बाँटा, बाँटते वक्त हमदम भी वहाँ थे।—कहते ब्रिगादीर ने हमदम को गवाह पेश किया।

—सच कहता है—हमदम ने उसकी बात का समर्थन किया।

—अलबत्ता, यहाँ कोई भेद है—कृषि-विशेषज्ञ ने अधजले सिगरेट को जमीन पर फेंककर उसको रगड़ते हुए कहा—मेरे विचार में इस मुरझाये पौधेवाले खेत में रासायनिक खाद ज्यादा पड़ी है और कमजोर पौधेवाले खेत में बहुत कम या बिल्कुल नहीं डाली गयी है।

इसे ठीक करने के लिये तुम्हारी क्या सलाह है—सफर गुलाम ने पूछा।

—जिस तरह मुर्दे को जिन्दा नहीं किया जा सकता, उसी तरह मुरझाये-सूखे पौधों को हरा नहीं किया जा सकता; लेकिन इस कमजोर पौधेवाले खेत को कल्टीवेटर से कोड़कर बीस-पचीस किलो रासायनिक खाद डाली जाय, तो ठीक हो सकता है।

—यदि कमजोर पौधों को खाद डालकर ठीक किया जा सकता है, तो रासायनिक खाद को कम करके सूखे-मुरझाये पौधे को ठीक किया जा सकता है—नारमुराद ने कहा।

सब हँस पड़े। कृषि-विशेषज्ञ ने कहा—हँसने का काम नहीं, सिद्धान्ततः इस साथी का विचार ठीक है, अधिक खाद डालने से जो पौधा बीमार पड़ा है—खाद कम करने से पौधा ठीक हो सकता है—कृषि-विशेषज्ञ ने नारमुराद की बात का समर्थन करते, उसका हौसला बढ़ाते, उससे पूछा—इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है? किस तरह जमीन की खाद को कम किया जा सकता है?

—इस खेत से मिट्टी निकाल लें और उसकी जगह नयी मिट्टी डाल दें—नारमुराद ने कहा।

—यह काम बहुत कठिन है—कृषि-विशेषज्ञ ने कहा—हो सकता है, मिट्टी निकालते वक्त अच्छे पौधे भी सूख जायें। हाँ, कोड़ने के समय यदि अच्छे पौधों की जड़ में नयी मिट्टी डाल दी जाये, तो हो सकता है, तो बढ़ निकलें। सूखे पौधों का हरा करना तो नितान्त असंभव है।

—जो बोलशेविकों की तरह काम करना चाहते हैं, उनके लिये कोई काम कठिन नहीं है—नारमुराद ने कृषि-विशेषज्ञ से कहा और फिर दूसरों की ओर निगाह करके—मेरी बात सुनकर तुम हँस पड़े थे, लेकिन देखा न, साथी विशेषज्ञ

ने उसे ठीक बतलाया ? तुम सब नादान हो, अब फिर मेरी बात पर न हँसना।

कमीशन के मेम्बर नारमुराद की बात पर हँस रहे थे; लेकिन सभी की हँसी लुप्त हो गयी, जब कि इसी समय हसन ने आकर कहा—"सफर चचा ! कल्टीवेटर (कोड़क) गुम हो गया।"

—कहाँ गुम हो गया !—आश्चर्य करते सफर गुलाम ने उससे पूछा।

—कल शाम को कल्टीवेटर से घोड़ा खोल आज काम करने का ख्याल करके उसे खेत ही में छोड़कर चला गया था ; लेकिन अभी जाकर देखा, तो वहाँ नहीं है—हसन ने कहा।

—हो सकता है कि किसी ने चुरा लिया हो—हमदम ने कहा।

कल्टीवेटर को कौन चुरायेगा ?—सफर गुलाम ने कहा।

पाँच रूबल की कुदाल को जब चुरा ले जाते हैं, तो कल्टीवेटर को क्यों नहीं चुरायेंगे—हमदम ने कहा।

—यह काम मामूली चोर का नहीं, बल्कि वर्गशत्रु का है—योलदाशोफ ने कहा।

—"ओ सफर अका—! ओ—ो सफर अका हो—ो—ो—य् ! इधर दौड़ो, नयी नहर को बहाकर पानी रूद् में ले गया।" इस आवाज ने आकर कमीशन के मेम्बरों के ध्यान को कल्टीवेटर से हटा नहर की दुर्घटना की ओर खींच लिया और सब लोग जल्दी-जल्दी उधर भगे।

× × ×

लोग सब काम पर चले गये थे। सारा गाँव सूना था। कमीशनवाले जब नहर की ओर भागे, इसी समय हमदम चुपके से अलग हो गाँव में चला आया। एक मकान की खिड़की से घर के भीतर की ओर उसने झाँका। शीशेवाली बड़ी खिड़की होने से घर भीतर से खूब प्रकाशित था। ऊपर से सामने की दीवार पर टँगे तीन हाथ के दर्पण पर प्रतिफलित सूर्य की किरणों ने प्रकाश को और बढ़ा दिया था। हमदम के ध्यान को रूपहली पलँग पर सोयी कुतुबिया ने अपनी ओर खींच लिया। उसके शरीर पर एक लम्बा सफेद फूलदार कंचुक था। सिर के नीचे पंखों से भरी, सुनहले खोल से ढँकी नर्म बालिश थी। खुले बटन के भीतर से उसका स्फटिक सदृश वक्षःस्थल दिखाई पड़ रहा था, साबुन से धुले, अतर लगे उसके खुले केशपाश बिखरे तथा आँखों और भौंहों पर कुंचित पड़े थे और उनके भीतर

उसका कान गुलाब के फूल की तरह भासित होता था। बालिश की दोनों ओर उसके मोमबत्ती की तरह के सफेद हाथ केहुनी तक खुले पड़े थे। उसकी लाल अंगुलियों में पोखराज की नगवाली अंगूठी दीप-कलिका की तरह चमक रही थी। इस मुग्ध सौन्दर्य को देखकर हमदम बेकाबू हो गया। वह थोड़ी देर तक ओठ चाटते कुतुबिया के मोहक सौन्दर्य का पान करता रहा; फिर उसकी दृष्टि घर के भीतर गयी। कमरे की एक ओर तार खींचा हुआ था जिसके ऊपर पाँती से कुतुबिया की पोशाक, कंचुक, जामा, एक तही साटन, कसीदावाला शाही कमरबंद; हसन के सूट रखे थे। एक खूँटी पर हसन का कराकुली कालरवाला ओवरकोट और बुखारी टोपी टँगी थी। दूसरी जगह क्रोम का नया बूट रखा था। कमरे की दूसरी ओर मेज के ऊपर दावात, कलम, कागज, कापी, दैनिक मासिक पत्र पड़े थे। दीवार की आलमारी में छोटी-बड़ी बहुत सी किताबें दिखाई पड़ रही थीं। देहली के एक कोने में मकान गर्म करने के लिये दीवार से लगी काली बुखारी खड़ी थी, जिससे मालूम होता था कि घर की दीवारें लकड़ी की नहीं, ईंटों की हैं। फर्श लकड़ी का था, जिसपर एक कालीन बिछा हुआ था।

हमदम फूरमा ने सुखी जीवन की चीजों से भरे इस स्वच्छ सुन्दर घर को देखकर अपने मन में कहा—आः गुलाम, नौकर, चरवाहे जो झोपड़ों में पैदा हुए, ढोरखाने में पाले-पोसे गये, जिन्होंने अपने जीवन में घर भी नहीं देखा था, आज वह कलखोज की बदौलत ऐसा सुखी जीवन बिता रहे हैं। ऐसे जीवन को तो कुतुबिया के बाप ने भी नहीं देखा था। इन्हें कैसे कलखोज से भगाया जाय?

कुतुबिया के बाप का स्मरण आते ही उस वक्त के जीवन पर वह नजर दौड़ाने लगा—अरे! वह बाय था और मैं भी उसकी बदौलत बाय-जैसा जीवन बिताता था; लेकिन हमारी बायगिरी सुखी जीवन बिताने के लिये नहीं, बल्कि भोज, कूबकारी और सर्दी में सर्द तथा गर्मी में गर्म होनेवाले घरों में दिन काटने के लिये थी।

हमदम फूरमा ने ईर्ष्या, द्वेष से जलते अपने दिल को बहलाने के लिये ध्यान को दूसरी ओर फेरा—यदि बाद में धनी हुआ, तो इसी तरह का एक घर बनवाऊँगा।

आशा-निराशा के बीच फिर उसने अपने ख्याल को दौड़ाया; लेकिन कलखोजची होते धनी बनने के लिये मेहनत करने, हलाल मेहनत करने, व्यवस्थित मेहनत करने की आवश्यकता है; लेकिन खुदा ने मुझे स्वयं मेहनत करने के लिये

नहीं, बल्कि दूसरों से मेहनत कराने और उससे धन जमा करने के लिये पैदा किया है। लेकिन दूसरों की मेहनत से लाभ नहीं उठाया जा सकता, जब तक कि दुनिया में कलखोज विद्यमान है। इसलिये कलखोज को बर्बाद करना, कलखोज को नष्ट करना और नहीं तो कलखोज को हानि पहुँचाना आवश्यक है। तभी मैं बेमेहनत के धन का स्वामी बनूँगा और इस तरह की सुन्दरी का अंकशायी भी।

आशा ने फिर उसके दिल में जोर मारा और कंचुक के उभार से दिखलाई देते कुतुबिया के शरीर पर नजर गड़ा "इस मोहिनी ने मुझे कलखोज बर्बाद करने की आज्ञा दी है" कहते, उसे जगाकर आज के अपने कामों का शुभ-समाचार देने के लिये नाखून से तीन बार काँच को तकतकाया ; लेकिन वह न जगी। देहली या दूसरे कमरे में बैठी कुतुबिया की सास कहीं सुन न ले, इसलिये उसने खिड़की को और जोर से खटखटाना ठीक नहीं समझा और जमीन से मिट्टी का टुकड़ा उठाकर शीशे पर लिख दिया--"नहर बर्बाद हुई, कल्टीवेटर गुम हो गया" और यह ख्याल करते चल दिया कि जागने पर वह पढ़कर खिड़की खोलकर उसे मिटा देगी।

हमदम जिस समय मकान के पीछे पिछवाड़े से आकर कूचे में पहुँचा, उसी समय हसन से उसकी भेंट हो गयी और वह पूछ उठा—हाँ, हमदम आका! यहाँ क्या कर रहे हो?

—यहाँ ही एक काम के लिये आया था—हमदम ने जवाब दिया।

हसन अपने विचारों में इतना डूबा था कि हमदम के जवाब को बिना ठीक से सुने बेपरवाही के साथ अपने घर में चला गया। हमदम को इस बेपरवाही से संतोष हुआ तो भी शीशे पर लिखे वाक्य का ख्याल करके डर लगने लगा।—"यदि हसन के कमरे में पहुँचने से पहिले जागकर उसने वाक्य को मिटा न दिया तो क्या जवाब दिया जायेगा।"

लेकिन इसी समय नहर बाँधने के लिये जमा होकर जाते कलखोजचियों के हल्ले ने उसे भी अपनी ओर खींचा और वह एक मुस्तैद कलखोजची के तौर पर उनके पीछे चल पड़ा।

१५

बाप की बेटी और उसका यार

सितम्बर के सुखद आतप ने हार की हवा को वर्षाहीन वासन्ती हवा की तरह सुखस्पर्श बना दिया था। कपास के पौधे सिर से पैर तक कलाबत्तू की तरह खिले हुए अपने खेतों को वासन्तिक उद्यान की शोभा प्रदान कर रहे थे, चुने कपास के बड़े-बड़े ढेर उसी तरह आँखों में चकाचौंध पैदा कर रहे थे, जिस तरह धूपवाले वासन्ती दिन में क्षितिज पर प्रकट हुए स्थूल श्वेत अभ्रखंड। खेतों में एक साथ कपास लोढ़ते स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ, छोटे-बड़े उसी तरह छाये हुए थे, जैसे उद्यानों में पक्षियों के समूह।

"साथियो! रोटी और भोजन" कहकर ब्रिगादीरा अपा मुहब्बत ने आवाज दी और सारे चिनकची (लोढ़नेवाले) दस्तरखान पर जमा हो गये; लेकिन फातिमा नहीं दिखलाई पड़ी। मानो उसने आवाज सुनी ही नहीं और वह अब भी अपने काम में पहिले की तरह लगी हुई थी। वह कमर से लटकते थैले में अपने दोनों हाथों से कपास चुन-चुनकर डाल रही थी। थैला भरते ही उसे बस्ते में गिरा, बिना दम लिये फिर उसके दोनों हाथ जल्दी-जल्दी पौधों पर चलने लगते थे। मुहब्बत अपा ने फातिमा को दस्तरखान पर न देख उठकर खेत की ओर निगाह करके "फातिमा! आ, खाने" कहते आवाज दी।

—मैं आज खाना काम करके खाऊँगी—फातिमा ने कपास की ओर से मुँह फेरे बिना जवाब दिया।

तू हर रोज होड़ में जीत रही है—आ खाना खा, आज भी तू ही विजयिनी होगी।

—बात यह नहीं है कि एक आदमी होड़ जीते, हमें ऐसा करना है, जिसमें सारे ब्रिगेड की जीत हो—फातिमा ने जवाब दिया।

—हमारा ब्रिगेड—ब्रिगादीरा मुहब्बत ने कहा—पिछले पाँच दिनों की तरह आज भी होड़ जीतेगा।

—यहीं काम खतम नहीं हो जाता—फातिमा ने कहा—होड़ में पड़ोसी कलखोजों पर हमारे कलखोज की विजय होनी चाहिये।

—यह भी मालूम है कि इस बज़ार में हमारे कलखोज से आगे बढ़ा दूसरा कोई कलखोज नहीं है—मुहब्बत ने कहा।

—यह भी बस नहीं है—फातिमा ने कहा—हमें अपने जिले को दूसरे जिलों पर विजय दिलानी है। यदि इसमें भी सफल हुए तो हमें अपने उजबेकिस्तान-प्रजातन्त्र को आजुर-बाइजान-प्रजातंत्र के साथ समाजवादी होड़ में विजयी होने की कोशिश करनी है। यदि इसमें भी सफल हुए, तो सोवियत-संघ की कपास की खेती को और मजबूत करना है और सारी दुनिया के कपास पैदा करनेवाले देशों में, उपज की दर में प्रथम बनना है। इसके लिये वैयक्तिक होड़ों पर संतोष न कर सार्वजनिक होड़ में जनता की विजय के लिये मुस्तैदी से काम करना है।

—जमाने के अनुसार लाल-लाल बातें—दस्तरखान पर बैठी कुतुबिया ने अपनी कोमल अंगुलियों से अलकों को पीछे करते हुए कहा।

—वह किसके या किस चीज के लिये ज़मानासाज़ी (अवसरवादिता) कर रही है?—दस्तरखान पर बैठी मुहब्बत ने कहा—वह कम्‌सोमोल का है, द्रुतकारी है, ऐसी लड़की है, जो कि तीन साल से कलखोज के एक सदस्य के तौर पर ही नहीं, बल्कि कर्त्ता-धर्त्ता की तरह काम कर रही है।

—जो भी हो, मैं उसे बिलकुल पसन्द नहीं करती—कुतुबिया ने अपने जूठे हाथों को शाही के सफेद रूमाल में पोंछते हुए कहा।

—क्योंकि उसका हाथ तुम्हारे हाथों जैसा कोमल नहीं है। यदि तुम उसे पसन्द करो, उससे मेल बढ़ाओ, तो उसके हाथ से तुम्हारा हाथ अधिक कड़ा हो जायेगा।

—यदि कम्‌सोमोल का हाथ इसके-जैसा नर्म हो, तो वह कम्‌सोमोल का हाथ कैसा—कहते एक लड़की ने ताना मारा।

—वह दूसरी बात है—मुहब्बत ने भी व्यंग करते हुए कहा—वह ऐसा ठीक हाथ है जो कि जमाने में लाल महोत्सव की कृपा से मिला है।

सभी के व्यंगों का लक्ष्य कुतुबिया थी, उसे भला यह बातचीत क्यों पसन्द आने लगी? वह दस्तरखान से उठकर कुछ पग दूर नहर के किनारे एक बेद (बीरी) वृक्ष का सहारा लेकर खड़ी, अपने आवरक (सामने लटकाये कपड़े) को खोलकर जोर से उसकी गर्दन को झाड़ उसमें चिपके घास-तृण को अंगुलियों से चुनकर फेंकने लगी। फिर उसे कमर से बाँध लिया। आवरक को वह आज ही सफेद सूफ

के कपड़े का सिलाकर कपास चुनने आयी थी। कपास लोढ़ने के लिये शाही के कंचुक की जगह उसने नये गुलाबी साटन का कंचुक पहना था और उसकी बाँहों को केहुनी से ऊपर चढ़ा रखा था। उसने शाही के नर्म सफेद रूमाल को जेब से निकालकर हाथ पर पड़ी धूल को झाड़ना शुरू किया। इसी समय आवाज सुनाई दी—"थक न जाओ, थक न जाओ, आपा मुहब्बत" जिसे सुनकर कुतुबिया ऐसी घबड़ाई कि यदि पेड़ का सहारा न होता, तो अवश्य नहर में गिर जाती। उसने जब देखा कि बोलनेवाला हमदम है, जिससे उसको धैर्य हुआ, लेकिन अब भी दिल तेजी से धड़क रहा था और उसे थामने के लिये उसने अपने हाथ को सीने पर रख लिया।

हमदम ने चिनकन्चियों का सलाम सुने बिना, दर्जी की दूकान पर रखी विज्ञापनवाली मूर्ति की तरह पेड़ के सहारे खड़ी कुतुबिया को देखा और उसके सामने सम्मान के लिये सिर झुकाते हुए कहा—"तुम भी थक न जाओ मेरी प्यारी!" कुतुबिया ने सीने से हटाकर अपने हाथ को उसकी ओर बढ़ाया। हमदम ने हाथ की कलाई को एक-दो बार मलकर उसे अपने हाथ में ले कोमल पतली अंगुलियों को देखकर कहा—तुम लोढ़ने के लिये यहाँ आकर अपनी इन कोमल अंगुलियों को क्यों कष्ट दे रही हो?

—बहुत न जला, मेरे हाथों में शक्ति नहीं रह गयी—कुतुबिया ने आवाज को और धीमी करके कहा—अवस्था बुरी है। उसने दो टूक करके कह दिया है "लोढ़ने का काम न करनेवाली स्त्री के साथ मैं नहीं रह सकता, मेरे साथ रह या शौकीनी के साथ।"

कुतुबिया के साथ पहिले चुटकी लेनेवाली लड़की ने हमदम और कुतुबिया को हाथ मिलाते देखकर मुस्कुराते हुए मुहब्बत से कहा—फ़रमा के हाथ क्या उसके हाथ को कड़ा नहीं बना देंगे?

—फ़रमा का हाथ सचमुच उसके हाथ लायक है—मुहब्बत ने कहा—वस्तुतः उरुन बाय किलाचो की लड़की के लिये उसका गुमाश्ता ही ठीक था। "बछड़ा बछड़े के साथ सौ साल का मीत" की कहावत नहीं सुनी? लेकिन हमारा हसन जान अनुभवहीन होने से जाल में फँस गया और अब अपने को भी जलाता है और फातिमा को भी।

—हसन जान के मामले को क्या हुआ ? उसपर कलखोज को हानि पहुँचाने का दोष लगा था—लड़की ने मुहब्बत से पूछा।

—हसन जान को अपराधी बनाना शाशमाकुल-जैसे बेअकल आदमियों का काम है। हसन जान जान-बूझकर कभी हानि पहुँचाने का काम नहीं कर सकता। हो सकता है, उस तितली का उसमें भी कुछ हाथ हो।

—खैर, हसन को अपराधी माना गया या निरपराध ?

—हसन जान को दायित्वपूर्ण कामों से हटा दिया गया ; लेकिन कमूसोमोली से नहीं निकाला। उसका दादा गुलाम था और बाप लाल गोरिल्ला, यही सोचकर उसके मामले को दबा रखा गया ; लेकिन अब वह फिर खड़ा हो रहा है।

—कैसे ?

—मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के राजनैतिक विभाग की ओर से अकलमुराद को भेजा गया था। उसने इस मामले को फिर खड़ा कराया और "जो भी हानि पहुँचानेवाला हो, उसे ढूँढ़ निकालना आवश्यक है" कहकर फिर से जाँच आरम्भ करायी। यदि जाँच में हसन जान का कोई सम्बन्ध उस मामले से सिद्ध होगा, तो बर्बाद हो जायेगा और यह तितली भी फल पायेगी।

हमदम को ख्याल आया कि दस्तरखान पर उसके और कुतुबिया के बारे में बात हो रही है। उसने कुतुबिया के हाथ को बिना छोड़े मुँह को पीछे की ओर फेरकर कहा—"अपनी चिरपरिचिता स्वामी-पुत्री के साथ बात कर रहा हूँ, लेकिन इसने एक मुस्तैद कमूसोमोल की बीबी बनकर अपने पुराने सेवक को भुलाकर नजर फेर ली है" और फिर कुतुबिया से बात शुरू की।

—यदि उसने दो टूक फैसला कर दिया है, तो तू भी दो टूक फैसला करके क्यों नहीं तुरन्त उससे अलग हो जाती ? कब तक लोगों के सामने हम फुसफुसाते और कोने-अतरे में मिलते रहेंगे ? जल्दी रजिस्ट्री करके हमें प्रगट हो जाना चाहिये।

कुतुबिया ने स्त्रियों और लड़कियों को लोढ़ाई पर जाने के लिये उठते देख निश्चिन्तता की साँस ली और कहा—थोड़ा और धैर्य रखने की आवश्यकता है।

—किसलिये और धैर्य धरने की आवश्यकता है—नाराज-सा होकर हमदम ने कहा—मैंने अपने वचन को पूरा किया और कलखोज को बिलकुल बर्बाद न कर सकने पर भी उसे भारी हानि पहुँचायी है। हसन के सिर पर पानी डाल दिया। अब उसका सम्मान और विश्वास पहिले-जैसा नहीं रह गया। यदि इस

समय तू उसे छोड़ दे, तो कोई तुझे दोषी नहीं कहेगा। फिर जब हम खुल्लमखुल्ला एक हो जायेंगे, तो संभव है कि कलखोज को इससे भी अधिक हानि पहुँचा सकें।

लोढ़नेवाली दूर चली गयी थीं, इसलिये कुतुबिया की निश्चिन्तता और बढ़ गयी थी। उसने हमदम के हाथ में पड़े अपने हाथ की अंगुली से उसकी हथेली को नर्म नर्म गुदगुदाते धीरे से अपना हाथ खींच लिया और दोनों हाथों से अँगड़ाई लेते उन्हें अपनी छाती पर प्रेमाभिनय करते रखा। फिर अपने दोनों हाथों को उसके कन्धे पर रख "बैठ" कहते स्वयं भी पेड़ के सहारे बैठ गयी। हमदम फ़ुरमा की आँखें गुलाबी हो गयी थीं। वह उसके सामने नर्म मिट्टी पर घुटनों के बल बैठ गया और अपने कंधों से कुतुबिया के दोनों हाथों को हटा अपनी जाँघ पर रखकर शनैः-शनैः सहलाते हुए बोला—"मेरी जान, मेरी मीठी जान! मुझे क्या जवाब दे रही हो?"

यद्यपि और धैर्य धरने की मुझमें शक्ति नहीं है—एक आह खींचकर कुतुबिया ने कहा—तो भी तुझे थोड़ा और धैर्य रखने की बात कहने के लिये मैं मजबूर हूँ।

—क्यों?

—क्योंकि मुझे विश्वास है कि जल्दी ही मैं सम्मानपूर्वक इसके हाथ से मुक्त हो जाऊँगी।

—कैसे विश्वास है?

—वह और उसके माता-पिता यद्यपि अपने सारे भेदों को मुझसे छिपाकर रखते हैं, लेकिन मैं रंग-ढंग को समझ रही हूँ।

किससे और कैसे भेदों को समझा?

—नारमुराद से—कुतुबिया ने कहा—नारमुराद एक मुस्तैद कलखोजची भले ही हो, लेकिन है वह एक बेवकूफ आदमी। उससे किसी भी भेद का पता लगा लेना आसान है। मैं उससे हर दूसरे-तीसरे दिन मिलती रहती हूँ और "क्या हाल है चचा दामाद" कहकर कुशल-मंगल पूछती हूँ "खदीजा के साथ कब शादी होगी, कब हमें भोज खाने को मिलेगा" जैसी बातें करने पर वह खुल पड़ता है। फिर बात को हसन के ऊपर लाकर बिना अपने को प्रकट किये उससे सारे भेद ले लेती हूँ।

—उसने क्या भेद बतलाया?

—उसके कहने के अनुसार हसन पर सियालका खराब करने, कलखोज को क्षति पहुँचाने और कल्टीवेटर गुम करने का अपराध लगाया गया है, जल्दी ही उसपर मुकदमा चलाया जायेगा।

—क्या उसपर मुकदमा चलाने की प्रतीक्षा करके हम बैठे रहें?

—तब तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं। जिस समय कलखोज की साधारण सभा में बातचीत करके कसूर को उसके सिर पर रख दिया जाय, उसी समय मैं पूरे सम्मान के साथ उससे अलग हो सकती हूँ। उस समय मेरे इस काम की हरएक कम्युनिस्ट और कम्सोमोल प्रशंसा करेगा। उसके बाद एक स्वतंत्र तरुणी की तरह एक मुस्तैद कलखोजची को पति बनाना चाहूँगी और वह मुस्तैद कलखोजची तू होगा।

हमदम फूरमा ने अपने हाथों को कुतुबिया की गर्दन पर रख "आ-आ, इस मधु-जैसी मधुर वाणी बोलनेवाली तेरी वाणी को एक चुम्बन दे दूँ" कहते उसे अपनी ओर खींच लिया।

"ठहर, कोई आ न रहा हो" कहती कुतुबिया ने अपने सिर को पीछे खींच लिया और डरी हुई-सी सिर को ऊपर उठा चारों ओर देखने लगी। हमदम भी उसकी चेष्टा से दुविधा में पड़कर चारों ओर देखकर बोला :

—चिन्ता न कर, कपास के ये कुलच्छनी पौधे कलखोज को सबल और कलखोजचियों को धनी बनाने के साधन होने से हमें प्रसन्न नहीं कर सकते, तो भी चारों ओर शाखा फैलाये कोरक बाँधे पोरसा भर खड़े इनका हमें कृतज्ञ होना चाहिये; क्योंकि इन्होंने हमारी सरस बातचीत को छिपा रखा है। इन गंदे पौधों के कारण आदमी जब तक पास न आ जाय तब तक हमें देख नहीं सकता।

—इसीलिये मैं तेरे कामों पर संतोष नहीं कर सकती। सियालका को खराब किया कुछ हेक्टर जमीन को बेपौधा किया; लेकिन उन्होंने लगातार मेहनत करके उसे हानिहीन बना डाला। मुहब्बत के कथनानुसार इस खाली बीजवाले खेत में पहिली ही लोढ़ान में चौबीस सौ किलोग्राम निकला। दूसरी-तीसरी लोढ़ाई मिलाकर तीन हजार किलो से भी अधिक उपज हो जायेगी, यद्यपि सादिक ने प्रतिहेक्टर चौबीस सौ किलोग्राम देने का वचन दिया था।

—और अच्छे बिनौले के बीज को चुराकर खोखले बिनौले जो डाल दिये?

—इसकी भी दवा उन्होंने ढूँढ़ निकाली और दुविधा में न बैठे रह उसी समय दुबारा बो दिया, यद्यपि पैदावार उतनी अधिक नहीं हुई तो भी मेहनत के बल पर मध्यम दर्जे की उपज हो ही जायेगी।

—और कल्टीवेटर ?

—वह भी कुछ बिगाड़ नहीं सका। उसी समय दूसरा कल्टीवेटर लाये और काम नहीं अटका। नये कल्टीवेटर के खरीदने के लिये कलखोज के कुछ रूबल चले गये, इसके सिवा और कोई हानि नहीं हुई और ऐसे बढ़े-चढ़े कलखोज के लिये कुछ रूबलों का खर्च कोई बड़ी बात नहीं।

—और नहर ?

—नहर की खराबी पर तूने भारी आशा बाँध रखी थी, समझता था कि इसके कारण कपास आठ-दस दिन तक पानी से वंचित रहेगा; लेकिन इसके महत्त्व को समझकर दूसरे कामों को छोड़ सारे कलखोजची जुट पड़े और एक ही दिन में नहर को ठीक कर कपास को समय पर पानी दिया। इससे कलखोजचियों की एक दिन की मेहनत बेकार जाने के सिवा और कोई हानि नहीं हुई।

— और रासायनिक खाद के बारे में जो किया ?

—इससे कुछ हानि हुई—कुतुबिया ने कहा—लेकिन ढाई सौ हेक्तर (सवा सात सौ एकड़) कपास की खेती जिस कलखोज में हो, उसके लिये आठ हेक्तर जमीन में पैदावार कम होने या न होने से कोई भारी हानि नहीं पहुँच सकती। कलखोज पर ऐसा प्रहार करना चाहिये कि वह जड़ से नष्ट हो जाये, तभी हमें संतोष होगा।

—और हसन के ऊपर जो आफतें मैंने ढायी हैं ?—हमदम ने कुछ गर्व के साथ कहा

—यह ठीक है, यह प्रहार जो उसपर पड़ा है, इससे मैं इतनी प्रसन्न हुई हूँ, जैसे मेरे माँ-बाप निर्वासन से लौट आये हों और फिर अपने माल-मिलकियत के मालिक बन गये हों। क्योंकि मुस्तैद कलखोजचियों, कम्सोमोलों, कम्युनिस्टों या गरीबों पर होनेवाली हरएक चोट तो कलखोज की इमारत की जड़ से एक ईंट निकाल फेंकना-जैसा है। यदि यह न होता तो तूने जो खेल खेले हैं, उससे भारी नुकसान पहुँचा होता; लेकिन इनकी मुस्तैदी ने तेरे सारे काम को बेकार कर दिया।

—मैं इसके लिये अपने को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि कम से कम एक काम के लिये तूने हर्ष तो प्रगट किया।

—लेकिन यह कम है—कुतुबिया ने कहा—जो चोट सिर्फ हसन पर की गयी है, वह कम है, ऐसी चोटों को और करना चाहिये, तब ठीक होगा।

कुतुबिया ने बात बंद कर एक अंगड़ाई ले दूसरी बार अपने हाथों को हमदम की जाँघ पर रखकर नाज करते हुए कहा :

—हमदम जाने-मन्, अब तू मेरा सचमुच हमदम (प्रिय) है। इसलिये सच्चे हमदम के साथ अपना ब्याह चाहती हूँ ; बतला तो, क्या तू इस समय अपने विध्वंस के काम को जारी रख सकेगा ?

—इस अपार कृपा से प्रभावित हो हमदम ने अपने खुले रहनेवाले ओठों को जबर्दस्ती बंद करके कहा—जो आदमी इन काली आँखों, इन काली भौंहों, इन काली अलकों, काले तिलों का बंदी बन चुका है, वह इनसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी काले विचारों को बिना स्वीकार किये कैसे रह सकता है; विशेषकर एक हो जाने के बाद ?

—तेरी अयोग्यता और कमी इन्हीं बातों से सिद्ध हो रही है—कुतुबिया ने दण्ड के तौर पर अपने हाथों को हटाकर कहना शुरू किया—हसन भी तुझसे कम इन काली आँखों, काली भौंहों, काली अलकों और काले तिलों का बंदी नहीं है, लेकिन जैसे ही कलखोज, कम्‌सोमोल और पार्टी की बात चलती है, सारे प्रेम को भूल जाता है और कहता है—"मैं तुझसे भी प्रेम करता हूँ और कलखोज से भी ; किन्तु यदि तू कलखोज से प्रसन्न नहीं है, तो मैं भी तुझसे प्रसन्न नहीं हो सकता।"

कुतुबिया थोड़ी देर चुप रही, फिर अपनी कटीली आँखों को हमदम की भय-त्रस्त आँखों में गड़ाकर कहने लगी—जिस तरह हसन एरगश-जैसे आदमी कलखोज को सबल बनाने पर तुले हुए हैं, यदि उसी तरह उसके ध्वंस करने पर तू तुला हुआ रहा, तो कुछ कर सकता, और यदि सिर्फ मेरी काली आँखों, काली भौंहों··· के लिये काम करेगा, इस भार को पार नहीं पहुँचा सकता।

—कुतुबिया जानम् ! मुझे क्षमा कर—गिड़गिड़ाते हुए हमदम ने कहा—मैं सिर से पैर तक तेरे प्रेम-बंधन में बँधा हूँ, तेरे हर काम को मैं उसी प्रेम और मुहब्बत के साथ अपने दिल में बाँधूँगा। कलखोज की क्षति और ध्वंस के कामों को तुझे वचन देने से पहले से भी करता आ रहा हूँ।

—वह कौन-सा काम ?—कुतुबिया ने पूछा।

—जब से मैं कलखोज में आया हूँ, तब से कम आदमियों को कामचोर नहीं बनाया, कम कपास को चुराकर नहीं बेचा, कलखोज के कम जानवरों को नहीं मरवाया। मैंने इन तीन सालों में कलखोज को जो क्षति पहुँचायी है, वह खोजा-नजर बाय से अधिक नहीं तो कम भी नहीं है—हमदम ने चुप होकर कुतुबिया की आँखों को देखा। अब भी वहाँ अविश्वास का प्रभाव दिखलाई दे रहा था, जिसे दूर करने के लिये उसने फिर कहना शुरू किया—अपने ही सोचकर देख, क्या मैंने तेरे बाप की बदौलत कम सुख और आनन्द देखा है ? यदि कलखोजचियों ने हरएक सुख, हरएक संपत्ति को अपने परिश्रम से पाया, तो मैंने सारे सुख तेरे बाप के द्वार पर देखे। खुद मैं अपने हाथों को ठंडे पानी में भी नहीं डालता था, गुलामों-नौकरों, चरवाहों और बटाईदारों से गदहे की तरह काम लेता था। यह भी तेरे बाप की बदौलत ही था। "एक कम जमीनवाला किसान हूँ, मेरी उमर बायों के दरवाजों पर गुजरी" कहकर, मैं कलखोज के अन्दर आ सका और बदला लेने का अवसर पा सका। भाग्यचक्र ने मेरे असली उद्देश्य इस कलखोज-ध्वंस को तेरे प्रेम के साथ मिला दिया। मुझे विश्वास है कि हमारे तन और मन के एक होने पर, हम अपने असली उद्देश्य को जल्दी पूरा कर सकेंगे।

—मैंने तेरी परीक्षा की, भगवान को धन्यवाद है कि तुझे आशा से अधिक अपने उद्देश्य के अनुकूल पाया—कहते कुतुबिया ने अपने हाथ को बढ़ाकर हमदम को चूमने का अवसर दिया। मानो यह चुम्बन उसकी इच्छा से नहीं हुआ था, उसे दिखलाते हुए लीला से अपने हाथ को खींच जल्दी से उठकर सूर्य की ओर देखकर बोली—ए, दिन बहुत बीत गया, आज नार्म (निश्चित परिमाण) को आधा भी पूरा न कर सकी।

—मेरे आने से तुझे बहुत क्षति हुई, आज नार्म को आधा भी पूरा न कर सकी।

—मेरे भीतर नार्म पूरा करने की क्षमता कहाँ ?—कुतुबिया ने कहा—उरमान बाय किलाची की लड़की के लिये परिश्रम करके नार्म पूरा करना लजा की बात है ! प्रतिदिन की लोढ़ाई का नार्म ४० किलोग्राम (सवा मन) है। लेकिन कल मैंने केवल १० किलोग्राम चुने थे और आज तो शायद सात भी न होगा।

—यह भी कलखोज को क्षति पहुँचाने का ढंग है—हमदम ने कहा।

—ऐसा हो तो आज के तीन किलोग्राम कम होने का पुण्य तुझे प्रदान करती हूँ—कहती कुतुबिया खेत की ओर चली गयी।

—तेरी इस कृपा के लिये बहुत कृतज्ञ हूँ—कहते हमदम फूरमा भी दूसरी ओर चला गया।

१६

दो बिछुड़े दिल

मुहब्बत ने खाना खाते समय एक गुच्छा अंगूर को एक टुकड़ा रोटी के साथ रूमाल में बाँधकर फातिमा के लिये रख छोड़ा था। दस्तरखान समेट लेने पर उसने फातिमा को आवाज देकर पूछा—इस खेत की बाकी कपास को आज तू अकेले चिन लेगी या किसी दूसरे को भी भेजूँ?

फातिमा ने बाकी बचे खेत की ओर देखकर जवाब दिया—दूसरे की आवश्यकता नहीं, इसे मैं अकेली खतम कर लूँगी।

मुहब्बत ने रोटी-अंगूर को ले जाकर फातिमा को दे दिया और चिनकच्चियों को दूसरे चक में लगाया, फिर स्वयं भी एक मुस्तैद ब्रिगादीर की तरह चिनना आरम्भ किया।

फातिमा ने रोटी बँधे रूमाल को एक पौधे पर रख दिया और अपने आपसे "मैंने इस खेत की बाकी कपास को आज ही अकेले चिनकर खतम कर देने का वचन दिया है, इस वचन को बोलशेविकी ढंग से कार्य-रूप में परिणत करना आवश्यक है" कहते मुस्तैदी से काम पर टूट पड़ी और इसमें परिश्रम से पुष्ट उसकी कमर, अभ्यास से सुदृढ़ हुई मुशकों और रबर की तरह लचकदार हाथों ने सहायता की। पहले कम हुए, किन्तु पीछे खाद और मेहनत से शाखायें बढ़ा कोरक बाँधे पौधों ने भी मदद की। फातिमा जिस बूटे पर पड़ती, उससे सत्तर-पचहत्तर ढेरियाँ लेकर छोड़ती।

—बेचारा हसन!—फातिमा अपने आप से कह रही थी—तेरी बोयी कपास इतनी पैदावार दे रही है और तुझे अपराधी बनानेवाले थे। कुछ देर चुप रह,

किन्तु हाथ को बराबर चलाते फिर कहने लगी—तुझे अपराधी बनाना कुछ हद तक ठीक भी था। कपास पर जो और अधिक मेहनत खर्च करनी पड़ी, यह तेरा अपराध था, जो कल्टीवेटर के गुम होने से भी बड़ा समझा गया—सामने लटकता थैला भर गया था। फातिमा ने उसे ले जाकर बोरे में खाली कर दिया और बूटेदार नीले कंचुक की बाँहों को ऊपर तक उलटकर फिर काम करना शुरू किया—सुनहली मछली की तरह पुष्ट, स्वच्छ और लाल अंगुलियाँ हरे पत्तों, लाल फूलों और पीले कोरकों के बीच लटकते कपास के गुच्छों के ऊपर बड़ी तेजी और अंदाज से पड़ रही थीं। सचमुच फातिमा मशीन की तरह काम कर रही थी।

वह फिर अपने विचारों में मग्न हो गयी और अब उसके विचार में हसन का सुन्दर रूप उद्भासित हुआ। उसके चरण सुदृढ़ मरमर-स्तम्भ-जैसे, अभी क्षौर के अयोग्य उसका तरुण मुख जिसमें अनार के दाने की तरह खून झलक रहा था, उसकी काली आँखें जिनमें श्रम और साहस की दीप्ति चमक रही थी, उसका संकल्प जो कि फौलाद की तरह दृढ़ था, उसकी बातें जो कि कोमल और गंभीर होती थीं। फातिमा ने उस मूर्ति से कहना शुरू किया—नहीं, तू अपराधी नहीं है, पंचों के सामने तुझे भले ही अपराधी समझा जाये, लेकिन कर्तव्य के सामने तू अपराधी नहीं है। मैं तेरी कमसोमोली ईमानदारी को अच्छी तरह जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि कलखोज स्थापित करने और समाजवादी निर्माण के कार्य में तू शुद्ध हृदय और दृढ़ संकल्प के साथ शामिल हुआ। तू मुझसे भले ही दूर हो या दूर कर दिया गया हो, किन्तु मैं तेरे आन्तरिक रहस्य और सच्चे उद्देश्यों को अपने आन्तरिक रहस्यों की भाँति अणु-अणु जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि तू कलखोज-निर्माण और समाजवाद की स्थापना में जान-बूझकर क्षति नहीं पहुँचा सकता और क्षति पहुँचाने का अवसर भी नहीं दे सकता। लेकिन···

थैला फिर कपास से भर गया था, जिससे फातिमा की विचार-शृंखला वहीं टूट गयी। उसने ले जाकर उसे बस्ते में गिराया और लौटकर फिर काम करते विचार-परम्परा को जारी किया—लेकिन मैं इसे नहीं समझ पायी कि इस तरह का शुद्ध हृदय, इस तरह का फौलादी संकल्प और ऐसा दिल जो तेरे बारे में पत्थर से भी कड़ा है, कैसे वर्ग विचार से बिलकुल अनुचित उस औरत के सामने झुका ? इस तरह के मजबूत मुश्कों लौह-अस्थियोंवाले हाथों में कैसे रेंड़

की लकड़ी-जैसे शुष्क सारहीन पीले नीरक्त हाथों में अपने को बंदी होने दिया ? काम, ज्ञान और मेहनत के प्रकाश से चमकती इन काली आँखों ने बेकार उन्निद्रता से बेरंग-बेखून-बेनमक चेहरे में क्या रस पाया ?

फातिमा अपने इन प्रश्नों का जवाब न पा, फिर मानसिक संलाप में लग पड़ी—"अन्यायी, निर्दय, पाषाण-हृदय भूल गया उन दिनों को, जब कि हम दोनों छोटे-छोटे बच्चे थे, जिलवाँ के किनारे खेलते, कपास चिनते, विश्राम लेते, गीत गाते थे। तुझे एक साथी, सहकारी और मित्र पाकर गर्व के साथ मैंने गाया था :

"बाग में सुंबुल भी है फूल-फूल-फूल भी है।
न फिक्र मुझे काक की बाग में बुलबुल भी है।"

और तूने जवाब में—"बसन्त-फूल भी है यार से यारी भी है।
तेरे पुष्प चुनने के लिये दो हाथ काम के भी हैं।"

कहकर मेरे दिल को अपने साथ बाँधा था। लेकिन परिश्रम के साथ मिश्रित, परिश्रम के साथ पोषित, परिश्रम के साथ सिंचित, परिश्रम के साथ वर्द्धित मेरा और तेरा यह संबन्ध एक बार ही छिन्न हो गया ! मेरा पुष्प-गुच्छक छीन लिया गया। मेरी बुलबुल को मेरे बाग से पकड़ ले गये !"

फातिमा का हृदय शोक से विह्वल हो चुका था। अब विचार-परम्परा को भीतर ही प्रज्वलित अग्नि ने तोड़ दिया। दिल के भीतर एकत्रित शोकाग्नि भूमि के भीतर एकत्रित गैसों की तरह फूट निकलना चाहती थी। फातिमा ने हृदय तपाने, तन कँपाने, वक्ष चीरने, प्राण हरनेवाले अति करुण स्वर में कजाकों के विलाप गीत की तान में गाना शुरू किया :

"निष्ठुर वंचक आया मेरे पुष्प को हाथ से छीन लिया।
श्येन ने आक्रमण किया मेरे बाग से बुलबुल छीन लिया।
माली की लापरवाही से उस कृतघ्न शत्रु ने।
मेरे बाग से मेरे फूल मेरे बुलबुल मेरे सुम्बुल को छीन लिया।"

—करुण स्वर में गाये जानेवाले गाने को मैं पसन्द करता हूँ। लेकिन "कजाक-विलाप" की तान में गाये गाने को बिलकुल पसन्द नहीं करता—इस आवाज ने आकर फातिमा के गाने को एकाएक रोक दिया। उसने पीछे फिरकर देखा, तो पास में हसन खड़ा था। फातिमा जल्दी से मुँह को फेर उसे बिना जतलाये आँसू भरी आँखों को साफ करके बोली :

—तुझे जरूर "कजाक-विलाप" पसन्द नहीं आयेगा, तुझे हर्ष और परिहास के गाने चाहिये।

२०—हसन ने···फातिमा की ओर अपना हाथ बढ़ाया (पृ० ४८२)

हसन ने अनजानपन दिखलाते हुए कहा—हमारा युग समाजवादी निर्माण का युग, समाजवादी आक्रमण का युग, वर्गयुद्ध का युग है। अमीरों के युग के बनाये

गीत और तान, उस युग की परिस्थिति में रोदन-विलाप के साथ गाये जानेवाले गाने इस युग के अनुरूप नहीं हैं। हमारे लिये ऐसे गानों और तानों की आवश्यकता है, जो महत्त्वाकांक्षा, आत्मसम्मान और साहस प्रदान करें, विजय और वीरता का संदेश लायें, हमारी विजय और वीरता का यश गायें, जो हमारी सफलता और विजय के अनुरूप हों।

थैले से बस्ते में कपास को डालकर लौटती हुई फातिमा ने अपने आप से ऊँची आवाज में कहा—ज्ञान बघाड़ना !

"आओ अभिवादन तो करें" कहते हसन ने पास से जाती फातिमा की ओर अपना हाथ बढ़ाया। फातिमा अपने हाथ को बढ़ाये बिना ही "तुझे ऐसे हाथ चाहिये, जो दिन में कई बार सुगन्धित साबुन से धोये जायँ और कोई काम करने की क्षमता न रखें" कहती चली गयी और आस्तीनों को ऊपर उठा काम करने लगी।

हसन इस कटु व्यंग का जवाब न पा उसके सामने जाकर बोला—ऐसा है तो आ गंभीरता से इसपर बातचीत करें।

गंभीरता से बात करने का समय बीत गया, हृदय टूट चुका है, अब न गंभीर वचन की आवश्यकता है न परिहास की—फातिमा ने काम की ओर से नजर हटाये बिना ही कहा—

—फातिमा !—

—फातिमा !—

—मेरी ओर देख !—

—फातिमा ! मुझे क्षमा कर। अब तक हसन की बात को अनसुनी करके फातिमा कपास चुनने में लगी थी; लेकिन अंतिम बात सुनकर उसका क्रोध भड़क उठा और उसने काम से अपने हाथ को रोककर उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखते हुए कहा—हसन ! यह तेरी गंभीर बात ऐसी बात नहीं है जिसे एक कमूसोमोल किसी कमूसोमोलका से कहे, ऐसी शोहदापन की बातें जाकर बायों की लड़की से कह।

—फातिमा ! मैं चाहती हूँ कि अपनी भूल को सुधारूँ—लज्जा से लाल हुए हसन ने कहा।

—मैं कुछ नहीं जानती—फातिमा ने फिर काम शुरू करते कहा—क्या मेरे किसी गुनाह के लिये बोल रहा है ?

—मैं तेरे गुनाह के लिये नहीं बोल रहा हूँ, बल्कि···

—फातिमा ! क्या तूने अब तक कुछ नहीं खाया—मुहब्बत ने अपने बिस्रेड के काम की देख-भाल करती पौछे पर रूमाल की पोटली को देखकर कहा, और पोटली उठाकर पास आयी, जिससे हसन की बात वहीं रुक गयी।

—नहीं—फातिमा ने जवाब दिया—मन खाने को नहीं करता, और इस लोढ़ाई को आज खतम करके अपने वचन को पूरा करना है, इसलिये अभी नहीं खा सकती हूँ।

पास आकर मुहब्बत ने वहाँ हसन को देखकर पूछा—ए, तू भी यहीं है ? उन्हें देखा ?

—देखा।

—दोनों को एक जगह ?

—हाँ।

—तूने क्या कहा ?

—मैंने उन्हें देखा, लेकिन उन्होंने मुझे नहीं देखा। मैं पौधों की आड़ में लेटकर उनकी बातें सुनता रहा।

—क्या बातें कर रहे थे ?

बहुत-सी बातें, ऐसी बातें जिनका मुझे कभी ख्याल भी न था, जिनपर मैंने कभी विचारा भी न था।

—यदि उचित समझे तो बतला ?

—समय आने पर बतलाऊँगा, किन्तु इस समय भेद को छिपा रखना है, क्योंकि वे सारी बातें मेरे ऊपर लगाये अभियोग से संबंध रखती हैं।

—क्या कुलमुराद तेरे मामले को अपूर्ण ही छोड़ गया ?

—एक सीमा तक पूरा करके एक परिणाम और निष्कर्ष निकालकर गया।

—कैसा निष्कर्ष ?

—ऐसा निष्कर्ष जो मेरे विरुद्ध है और शाशमाकुल तथा हमदम फूरमा के अनुकूल।

हसन के इस जवाब को सुनकर फातिमा काम से हाथों को रोक उसकी ओर

ध्यान से देखने लगी। मुहब्बत ने उदास होकर पूछा—स्पष्ट कहा आखिर क्या निष्कर्ष निकाला ?

—उस निष्कर्ष के अनुसार—हसन ने कहा—खियालका को खराब करके बीज बोने और कल्टीवेटर गुम करने का अपराधी मैं हूँ। मेरी बात साधारण सभा में दूसरों को शिक्षा देने के लिये रखी जायेगी। फिर मुझे लोगों में बदनाम कर कलखोज से निकालकर अदालत में सौंप देंगे।

"हो नहीं सकता" कहती हसन की बात का विरोध करके फातिमा ने फिर अपना काम शुरू किया।

मुहब्बत ने भी—यह ऐसा निष्कर्ष है जिसे कभी कोई ख्याल में भी नहीं ला सकता—कहते आश्चर्य करके फिर पूछा—साधारण सभा कब होगी ?

—शाशमाकुल चाहता था कि साधारण सभा इन्हीं दो-तीन दिनों में बुलायी जाय, किन्तु सफर चचा, योलदाशोफ और दूसरे कम्युनिस्टों ने यह कहकर रुकवा दिया कि इस समय साधारण सभा बुलाने से कपास की चिनाई में बाधा पड़ेगी। ७ नवम्बर अर्थात् सोलहवें क्रान्तिवार्षिकोत्सव तक शत-प्रतिशत काम पूरा करके महोत्सव में सम्मिलित होने का अधिकार प्राप्त करना होगा, इसलिये साधारण सभा को लोढाई के काम के समाप्तप्राय हो जाने पर बुलायी जाय।

—अच्छा, मैंने तुम्हारी बात में बाधा डाली। अब मैं जाती हूँ—कहती मुहब्बत चली गयी।

—हम कोई गोप्य बात नहीं कर रहे थे कि उसे तुमसे छिपाया जाय—कहते हसन भी चलने लगा। उसने मुहब्बत की ओर निगाह करके फातिमा को सुनाते हुए ऊँचे स्वर में कहा—फातिमा मुझसे बहुत देर से नाराज है। उन दोनों के चले जाने पर मैं इधर से जा रहा था। फातिमा को देखकर खड़ा हो गया। इससे बात करके क्षमा माँगना चाहता था, लेकिन उसने मुझे और फटकारा।

—मुझे किसी को फटकारने का क्या हक है—फातिमा ने गर्म होकर कहा—तेरी बात का मैंने उचित जवाब दिया। उसे तूने फटकारना समझा, यह तेरी भूल है साथी !

—फातिमा को तुझसे नाराज होने का हक है—मुहब्बत ने कहा—तूने ही

पहिले-पहिल उसके हृदय को भग्न किया। भग्न-हृदय छूछी क्षमाप्रार्थना से नहीं जुड़ा करता। भुक्तभोगियों ने कहा है :

"दिल किसी से रंज हो फिर खुश करना मुश्किल है।
काँच टूटे जो उसे पेबन्द करना मुश्किल है।
काँच टूटे को कभी पेबन्द करना हो सके।
हाथ छूटे पच्छी को पाबन्द करना मुश्किल है।"

—मुझे विश्वास है कि मेरी क्षमाप्रार्थना छूछी न रहेगी।

मुहब्बत और हसन जब कितनी ही दूर चले गये, तो उनके पीछे एक करुण स्वरलहरी उठने लगी—फातिमा कवि राफई के इस पद को गा रही थी :

"कम कह वचन कि वह दिले दिलदार नाजुक है।
भार मोती न उठे यह ताज नाजुक है।
व्यर्थ पत्थर इस हृदय परितप्त पर न मार।
देख पहिले काँच को यह कितना नाजुक है।"

हसन फातिमा के करुण गीत को सुनकर विह्वल हो गया।

१७

कलखोजी की मजूरी

कलखोज-कार्यालय के हाते में कलखोजचियों की भारी भीड़ थी। बूढ़े-जवान, छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़की, थैला-थैलियों को बगल में दबाये चकें-चक करते चारों तरफ घूम रहे थे। कल के अनपढ़ आज आफिस में बैठे कागज और रजिस्टर पर लिख रहे थे; किन्तु अब उनकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता था; क्योंकि अब कलखोजचियों में से बहुत अधिक लिखना-पढ़ना, हिसाब-किताब जान गये थे। गोदाम में कलखोज के आर्थिक विभाग का संचालक अपने सहायकों के साथ गेहूँ के बोरों को तराजू पर तौलकर लेने के लिये तैयार दिखाई पड़ रहा था। कोपरेटिव दूकान का संचालक भी हाथ के माल का हिसाब करके नये आनेवाले माल को लेने के लिये हाजिर था।

दूर से गुम्बुर-गुम्बुर की आवाज सुनाई दी। छोटे बच्चे कूचे की ओर दौड़े।

सयाने "कारवाँ आया" कहते एक दूसरे की ओर निगाह करके हँस रहे थे। थोड़ी ही देर में गाँव के छोर पर उठती गुम्बुर-गुम्बुर की आवाज कलखोज के हाते के नजदीक पहुँची; फिर लदे ऊँटों की पाँती हाते में आयी। एरगश ने लाल बिल्लोंवाले ऊँटों को लाल पलानों, लाल अंगाड़ियों, लाल पछाड़ियों, लाल मुहेड़ियों से सुसज्जित देखकर कहा :

—पुराने जमाने के किलाची बायों के कारवाँ-जैसा !

लेकिन एक अंतर है—सफर गुलाम ने कहा—किलाची बायों के ऊँट सिर्फ उन बायों के खीसे को भरने के लिये काम करते थे, लेकिन हमारे ऊँट काम करते हैं सारी जनता के लिये, सारे कलखोजचियों के लिये, उन लोगों के लिये जो उस जमाने में गुलाम, नौकर और चरवाहे थे।

हसन के सामने खड़ी हमदम फ़ूरमा से अपनी दोनों आँखें लगायी कुतुबिया ने सफर गुलाम के इन शब्दों को सुन आकाश की ओर निगाह करके एक ठंडी-सी साँस खींची और आँखों के आँसुओं को रूमाल से पोंछकर कातर दृष्टि से हमदम की ओर देखा।

—और भी एक अन्तर है—ऊँटवान ने "चीख-चीख" कह ऊँट को बैठाते कहा—उस जमाने के ऊँट किला की यात्रा के अतिरिक्त भी रात-दिन काम करते बहुत दुबले-पतले हो जाते थे, लेकिन हमारे ऊँट कलखोज की बदौलत घास-चारा खाकर बुर्दा की भेड़ों की तरह खूब मोटे-ताजे रहते हैं।

—अफसोस, गाँव में वह ऊँट नहीं रहे जो कि कलखोजी आन्दोलन के आरंभ में मार दिये गये—दूसरे ऊँटवान ने कहा—यह प्राणी जो किसी को दुःख नहीं देते, दुनिया में भार ढोना छोड़ और किसी काम के लिये नहीं पैदा किये गये। लेकिन दुर्गन्धित मांस होने पर भी बायों के निष्ठुर छूरों से वह बच न सके। आज यदि वह होते, तो कलखोज की आधी भार ढुलाई वह कर डालते।

कुतुबिया की आँख में आँख गड़ाये उससे दूर खड़े हमदम ने "बायों की निष्ठुर छुरी" वाक्य को सुनकर अपने हाथ की नोक से सीने पर एक-दो बार धीरे-धीरे मारा, कुतुबिया ने मुस्कुराकर उसे धन्यवाद दिया।

बिठाये ऊँटों की पीठ से गेहूँ के बोरों को उतारकर गोदाम में ले गये और उनकी जगह रूई के बस्तों को उनपर लादने लगे। अभी कपास लादना खतम नहीं हुआ था कि फाटक से एक माल ढोनेवाली लारी फों-फों करती अन्दर

आयी। आवाज सुनते ही ऊँट अपने कम बँधे, आधे बँधे भारों को फेंक एकाएक उठकर जिधर-तिधर भाग निकले।

—यह संस्कृति के सामने बर्बरता का भागना है—एरगश ने कहा।

—पुराने काम के ढंग पर साइंसी ढंग की विजय—सफर गुलाम ने कहा।

—साइंसी ढंग पुरानी ढंग पर क्यों न विजयी हो—योलदाशोफ ने कहा—जितने समय में ऊँट को लादकर गाँव से बाहर करते, उतने समय में लारी भार को प्राप्य स्थान पर पहुँचाकर लौट भी आती। इसके ऊपर वह अकेली कई ऊँटों का बोझ ढो ले जाती है।

यदि एक और लारी होती—यूसुफ ने कहा, तो बोझा ढोने का काम बहुत आसान हो जाता।

—एक और लारी का मिलना आसान है—योलदाशोफ ने कहा—यदि अगले साल भी मुस्तैदी से काम करके योजना को समय से पहिले और अधिक परिमाण में पूरा कर सकें, तो प्रजातन्त्र की मर्जी से एक और लारी मिल सकती है।

—इसके अतिरिक्त—सफर गुलाम ने कहा—सोवियत संघ के कमकर हर तरह की भौतिक और आत्मिक सहायता करने में उठा नहीं रखते। वह हमारे लिये सैकड़ों लारियों और खेतों की मशीनों को बना रहे हैं।

हमारा कलखोज भी आर्थिक तौर से इतना मजबूत है कि वह अपने पैसे से एक-दो लारी और दूसरी मशीनें खरीद सकता है।

—पैसा भी है और मशीन भी है—योलदाशोफ ने कहा—आवश्यकता है केवल साइंसी ढंग को खूब सीखकर कार्य-रूप में परिणत करने, मशीनों की आँख की पुतली की भाँति रक्षा करने और उनसे परिमाण के अनुसार काम लेने की।

—सियालका को न खराब करने और कल्टीवेटर को न गुम करने की—शाशमाकुल ने हसन एरगश को सुनाकर कहा।

—कलखोज को क्षति पहुँचाने के विचार को छोड़ने की भी आवश्यकता है—कहते हमदम फूरमा ने भी एक तीर हसन की ओर छोड़ा।

हसन इन बातों को अनसुनी करके चुपचाप खड़ा रहा, लेकिन उसकी बगल में खड़ी कुतुबिया ने हमदम की ओर आँख मारकर मुस्करा दिया।

लारी माल गिरा, कपास लादकर चली गयी, फिर ऊँट भी कपास लादकर रवाना हुए। ऊँट अभी हाते से बहुत दूर नहीं गये थे कि भार से लदे अराबे

(घोड़ा गाड़ियाँ) आ पहुँचे। इनके बड़े-बड़े घोड़ों की पीठ पर लोहे और चमड़े के साज और कंधे पर ऊँची कमान थी। जिन आराबों पर गल्ला था, वे गोदाम के दरवाजे पर पाँती में खड़े हुए और जिनपर कपड़ा, चीनी, चाय, किरासिन, घी, तेल, साबुन, सिगरेट, दियासलाई-जैसी कारखाने की चीजें थीं, वे कोपरेटिव दूकान के सामने खड़े हुए।

एरगश ने एक-एक अराबा पर नजर डालते हुए कहा—पहिले जमाने में माल लदे अराबों की पाँती सिर्फ गिज्दुवान में बड़े बायों की सराय (आढ़तखाने) के फाटकों पर ही देखी जाती थी। बाय उन्हें दोनों तूमानों और कजाक-मरुभूमि में एक-एक करके बेचकर पैसा जमा करते। लेकिन हमारे तूमान साफिर काम में, जिसका नाम अजकल बौमान रखा गया है, अधिक माल की तो बात अलग, माल रखने की भी कोई सराय न थी। और अब कलखोज की बदौलत हर गाँव गिज्दुवान बन गया है।

—ऐसा होना ही चाहिये—योलदाशोफ ने कहा—अवस्था के दूसरी हुए बिना नाम दूसरा नहीं होना चाहिये। हमारे रायन् (परगना) साफिर काम तूमान के केन्द्रीय नगर का नाम बदलकर बौमानाबाद रखा गया है। अब वह एक नगर-जैसा है और उसका हर गाँव कसबा-जैसा है। वैयक्तिक खेतियाँ एक होकर कारखाना, फैक्टरी-सी बन गयी हैं, मेहनतकश किसान संगठित मजूरों-जैसा काम कर रहे हैं।

गल्ला उतारकर कलखोज के ओसारे में छल्ली लगा दी गयी और अराबों पर कपास के बस्ते लाये जाने लगे। कलखोजची गल्ला दिये जाने के बारे में पूछने लगे। फातिमा ने योलदाशोफ से पूछा—साथी योलदाशोफ, गल्ला कब बाँटोगे?

—अभी, जैसे ही अराबे चले जायँ और गोदाम का द्वार खाली हो।

—एक दिन की मेहनत (नार्मं) का कितना मिलेगा—फातिमा ने फिर पूछा।

—अभी पक्का हिसाब नहीं हुआ है, लेकिन अन्दाजी हिसाब के अनुसार एक दिन की मेहनत का आठ किलो (१० सेर) गेहूँ और छ-सात रूबल (४-५ रुपया) मिलेगा। लेकिन अभी हम उसमें से छ किलोग्राम गेहूँ और ५ रूबल देंगे, बाकी हिसाब कपास के आखिरी हिसाब तैयार हो जाने पर चुकाया जायेगा।

योलदाशोफ की बात सुनकर कलखोजच्चियों ने बगल से अपनी-अपनी कापियों को निकालकर उन्हें देखना और अंगुलियाँ टेढ़ी-सीधी करके हिसाब लगाना शुरू किया। फातिमा को कापी खोलकर देखते देख हसन ने उसके नजदीक जाकर पूछा—फातिमा, इस साल तेरे काम के दिन कितने हुए हैं?

—२३५—फातिमा ने जवाब दिया।

इतना काम करने पर भी क्यों नहीं इस नीले सूती कुरते और मामूली जूते को बदलती? सब पैसा को सेविंग बैंक में जमा करके क्या करेगी?—हसन ने परिहास के तौर पर कहा।

कुतुबिया ने हसन के इस प्रश्न पर गर्व करते एक बार अपने शाही के कंचुक, मखमली लहँगिया (स्कर्ट) और पॉलिश किये बूटों पर दृष्टि डाली।

—सेविंग बैंक में पैसा भी है, आलमारी में तह-के-तह शाही के कंचुक, मखमली स्कर्ट, गलचम की टोपी, जरदोजी का लिलारबंद ताशकी टोपी भी है, और कुछ जोड़े बूट के भी हैं—फातिमा ने जवाब दिया—लेकिन मैं बायों की लड़कियों की तरह मूर्ख नहीं हूँ कि काम के वक्त भी, फरागत के वक्त भी, भार ढोने के वक्त भी शाही का कंचुक पहिने फिरूँ।

फातिमा के इस विष-बुझे तीरों की मार से कुतुबिया तिलमिला गयी। उसने हमदम फूरमा की ओर निगाह करके झूठी हँसी हँसकर हलका करना चाहा; लेकिन सफल नहीं हो रही थी। इसी समय गोदामवाले ने आवाज दी:

—साथियो! आओ, अपना-अपना गल्ला लेते जाओ। पहिली बार "मुस्तैद कमकर" पंक्ति-बद्ध हों।

कुतुबिया जहाँ-की-तहाँ खड़ी रही, फातिमा और मुहब्बत मुस्तैद कमकरों की पाँती में हो गोदाम की ओर गयीं। हसन को सफर गुलाम बात करने के लिये एक कोने में ले गया। अब कुतुबिया को साँस लेने और खुलकर बात करने की छुट्टी मिली। वह अतर लगे रूमाल से आँख, कान और चेहरे को पोंछती हमदम फूरमा के पास जाकर बोली—सुना, इस बदरंगी दासी-पुत्री बेटुल्ली की बात, कैसी बढ़-बढ़कर हाँक रही थी? उसे दो सौ पैंतीस दिन काम करने का बहुत गर्व है।

—आः, यदि पहिले का जमाना होता, तो मैं ऐसी दासी-पुत्री से पानी भी नहीं भरवाती, लेकिन आज वह मुझसे आगे-आगे है।

हमदम ने तसल्ली देते कहा—अभी जो कुछ हाथ में आ रहा है, लेती जाने

दो ; किन्तु देर नहीं होगी, जो बलाय हसन के सिर पर आयी है, वह इसके सिर पर भी आनेवाली है।

—हसन का काम आज ही तमाम होगा ?—कुतुबिया ने प्रसन्न होकर कहा।

—हाँ, आज ही, और हमलोगों का काम भी आज ही तमाम होना चाहिये—हमदम ने जवाब दिया।

उसका काम तमाम हो जाने पर—कुतुबिया ने कहा—मैं "इस तरह के कलखोजध्वंसक आदमी के साथ नहीं रह सकती" कहती तेरी बगल में आ जाऊँगी। इस तरह हमारा काम भी तमाम (पूरा) हो जायेगा। बाकी रहा रजिस्ट्री का काम उसे कल करेंगे।

"ए खुदा ! सभा जल्दी आरंभ हो" कहते हमदम ने अपने पंजों को मिला, बाँहों को खींचकर एक लम्बी अँगड़ाई ली और अपने से चंद कदम दूर खड़े शाशमाकुल के पास जाकर पूछा—साथी ! सभा कब आरंभ होगी ?

"अभी" शाशमाकुल जवाब नहीं दे पाया था कि सफर गुलाम ने उसे इशारे से बुलाया। वह "अभी आया" कहकर सफर गुलाम के पास दौड़ गया। हसन वहाँ से हट गया। सफर ने शाशमा से कहना शुरू किया—हसन कहता है कि यदि कुलमुराद के आने से पहिले सभा आरंभ हुई, तो मैं कोई जवाब न दूँगा और ऐसी सभा के निर्णय को स्वीकार भी न करूँगा ; क्योंकि मैं आवश्यक सामग्री को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन[1] के राजनैतिक विभाग को सौंप चुका हूँ।

—हसन अस्वीकार करे, अस्वीकार करता फिरे—शाशमाकुल ने कहा—कलखोज की साधारण सभा किसी कलखोजची के बारे में अपना विचार प्रगट कर सकती है और फैसला दे सकती है।

सो ठीक है—सफर गुलाम ने कहा—लेकिन इस फैसले के उचित और वास्तविक होने के लिये आवश्यक बातों का जानना भी जरूरी है। इसलिये मैं भी कुलमुराद के आ जाने तक ठहरने की सलाह देता हूँ।

—तू कैसा कम्युनिस्ट है, जो पार्टी-सेल के निर्णय को उलटना चाहता है—शाशमाकुल ने गर्म होकर कहा और सफर गुलाम के "सब्र कर साथी, बात सुन"

---

१ सोवियत के हर दस-पन्द्रह गाँव पर ऐसा एक स्टेशन होता है, जहाँ से ट्रैक्टर और खेती की मशीनें ड्राइवरों के साथ भाड़े पर मिलती हैं।

कहने को बिना सुने ही वहाँ से उठकर हमदम के पास चला गया और उससे बोला—अभी सभा शुरू होती है। कलखोजचियों के गल्ला ले लेने पर सभा आरंभ करेंगे—फिर अपनी छाती पर मुक्का मारते बोला—मैं कम्युनिस्ट हूँ, मैं ऐसे आदमियों के मामले को एक क्षण के लिये भी रोकने नहीं दूँगा, जिन्होंने कलखोज के माल को बर्बाद किया, कलखोज को क्षति पहुँचायी।

१८

बेचारा निरपराध

लाल चायखाना में सारे कलखोजची साधारण सभा के लिये एकत्रित हुए थे। सफर गुलाम, एरगश, योलदाशोफ, मुहब्बत अपा-जैसे कुछ गंभीर कम्युनिस्ट अपने भीतरी भेद को न जतलाते बैठे थे; किन्तु शाशमाकुल-जैसे हलके आदमियों के चेहरों के फड़फड़ाने, बार-बार ओठों के चाटने से मालूम होता था कि वह जल्दी से जल्दी सभा आरंभ कर कलखोज को क्षति पहुँचानेवालों को सजा दिलाने के लिये अधीर हैं। उनके अतिरिक्त कितने ऐसे भी व्यक्ति थे, जो अपनी नहर के बर्बाद करनेवाले, बीज में खोखला बिनौला मिलानेवाले, रासायनिक खाद को कम-बेशी करके उनकी कपास को नष्ट करनेवाले, सियालका खराब करनेवाले, कल्टीवेटर गुम करनेवाले आदमी या आदमियों पर क्रोध से भरे होने पर भी किसानों की न्याय-प्रियता के कारण उतावले न हो, अपराध सिद्ध हो जाने तक की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ ऐसे भी थे, जिनके चेहरे से मालूम होता था कि उन्हें कलखोज की इतनी क्षति की परवाह नहीं। वह अंगुली से हसन एरगश की ओर इशारा करके परिहास करते धीरे-धीरे हँस रहे थे।

हमदम फूरमा रुपहली पलंग के नर्म बिस्तरे के ऊपर सफेद रेशमी कंचुक पहने कुतुबिया के साथ सोने के स्वप्न में मस्त था और कुतुबिया सभा के फैसले के बाद छिप-छिपकर मिलने की जगह खुलकर हमदम के साथ एक होने, दासी-पुत्री फातिमा के सिर पर पानी डालने और कलखोज से बदला लेने की योजना बना रही थी।

फातिमा का सारा ध्यान हसन के मामले की ओर था। उसके दिल में जरा भी

संदेह नहीं था कि हसन-जैसा शुद्ध हृदय कम्सोमोल गुलाम बाप-दादों की संतान ऐसा करेगा।

और कम्सोमोल हसन, जिसके लिये यह सभा हो रही थी, अपराधी की तरह सिर नीचा किये, जमीन की ओर देखते बैठा कोशिश कर रहा था कि दूसरे उसके भीतरी भावों को न जान पायें।

"साथियो" योलदाशोफ की इस आवाज ने सभा में बैठे सभी लोगों की दृष्टि को चायखाना के छोर पर रखी मेज की ओर खींचा, जिसके पास कई कुर्सियाँ रखी थीं। योलदाशोफ ने फिर कहा—आगे आकर बैठो, सभा आरंभ हो रही है।

लोग एक दूसरे से आगे दौड़कर आपस में सटकर बैठे। योलदाशोफ ने कलखोज की घटी-बढ़ी का उदाहरण देते कुछ जानकारी की बातें बतलाकर फिर कहा—साथियो! हम सफलता के साथ जितना ही आगे बढ़ें, वर्गशत्रु ने भी अपने काम में उतनी ही तत्परता दिखलायी। हमने अपने सामूहिक कलखोज से कुलकों के वैयक्तिक काम और वर्ग को निकाल फेंका और नष्ट कर दिया, तो भी उनके अवशेष अपने काम को जारी किये हुए हैं। इस साल हमारे कलखोज में चन्द दुर्घटनाएँ हुई हैं। इन अपराधों का असली करनेवाला अभी तक मालूम न हो सका, तो भी कुछ संदिग्ध आदमियों का मामला साधारण सभा के सामने रखने का हमने विचार किया था; लेकिन मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के राजनैतिक विभाग ने—जिसे कि साथी स्तालिन के परामर्शानुसार खोला गया है—इस बारे में अच्छा काम किया है और अपराधी का पता लगा लिया है। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के राजनैतिक विभाग ने यह मामला साथी कुलमुराद को सौंपा था। अच्छा तो यही था कि साथी कुलमुराद के आने तक इस प्रश्न को साधारण सभा के सामने न रखा जाय; किन्तु कुछ साथियों का इससे मतभेद है और वह नहीं चाहते कि सभा कुलमुराद के आने तक प्रतीक्षा करे। इस मामले की संक्षिप्त जानकारी देने के लिये साथी सफर गुलाम को बोलने के लिये कहा जाता है।

सफर गुलाम बोलने के लिये खड़ा हुआ। शाशमाकुल ने भी खड़ा होकर चिल्लाना शुरू किया—मैं कम्युनिस्ट हूँ, पहिले मुझे बोलने का अवसर दिया जाय; पार्टी और सोवियत सरकार की इज्जत करनी चाहिये।

—साथी शाशमाकुल! धीरज धरो। साथी सफर के बोलने के बाद जब तक तुम्हारे गले का पर्दा फट न जाय तब तक बोलते रहना—योलदाशोफ ने कहा।

लेकिन शाशमाकुल उसकी बात को अनसुनी करके "पार्टी की इज्जत करनी चाहिये, सोवियत सरकार की इज्जत करनी चाहिये, मैं कम्युनिस्ट हूँ" कहते चिल्लाता रहा।

—तू ही नहीं, यहाँ और भी कम्युनिस्ट हैं—योलदाशोफ ने कहा—सफर गुलाम और अका एरगश तुझसे अधिक पुराने कम्युनिस्ट हैं। कम्युनिस्ट ऐसे नहीं हुआ करता, सभा में व्यवस्था और अनुशासन मानना चाहिये।

सभा के कुछ भागों से आवाज आयी "बोलने दिया जाये", "साथी शाशमाकुल बोलेंगे।" योलदाशोफ ने कहा—बहुत अच्छा, "साथी—कम्युनिस्ट बोल।"

—साथियो!—शाशमाकुल ने खाँसकर जेब से रूमाल निकाल उसमें थूक फिर उसीसे नाक-आँख-मुँह पोंछते हुए कहा—साथियो! पार्टी की इज्जत करनी चाहिये। सोवियत सरकार की इज्जत करनी चाहिये। गाँव की सबसे बड़ी संस्था ग्राम-सोवियत है। इसे भूलना नहीं चाहिये। इस मामले के बारे में कई बार कार्रवाई हो चुकी है।

—साथी शाशमाकुल—योलदाशोफ ने बीच में टोकते हुए कहा—तू कलखोज में हुए अपराधों के बारे में बोलना चाहता था, उन्हीं पर बोल।

—कैसे बोलना चाहिये, इसे मैं स्वयं जानता हूँ, मुझे याद दिलाने की जरूरत नहीं। पार्टी और सोवियत सरकार की इज्जत करनी चाहिये, मैं इसी बारे में बोल रहा हूँ।

—तुमने विशेषकर हसन के अपराध के बारे में बोलना चाहा था—कहते पीछे की ओर से किसी ने उसे उसकावा दिया।

—वत् (हूँ) बात यही है—शाशमाकुल ने कहा—मैं काक् कम्युनिस्ट (कम्युनिस्ट के रूप में) जानता हूँ कि हसन ने नहर को बर्बाद किया, कपास को पानी से वंचित किया और इसके बाद भी नहर की मरम्मत के लिये न आ घर में जाकर बीबी के साथ सोया (दो-तीन जगहों से "ठीक है" की आवाज आयी) इसके कितने ही गवाह हैं, जिनमें से एक गवाह है सबसे मुस्तैद कलखोजची हमदम फुरमा।

—"सच है" हमदम ने बिना सिर उठाये अपनी जगह बैठे-बैठे कहा।

—वत् (यह) अपराधी, नहीं, नहीं गवाह—कहते-कहते शाशमाकुल ने बात जारी की—मैंने कम्युनिस्ट, मैंने काक् कम्युनिस्ट सभी गवाहों को लिखकर दे दिया

है। गवाहों ने मुझसे करार किया है कि अदालत के सामने हसन के सारे अपराधों को प्रगट करेंगे। वह (हसन) अभी कम्युनिस्ट न होते भी कम्युनिस्टों के आगे आगे रहना चाहता है, उन्हें बात करना सिखलाना चाहता है। वत् (हूँ) बात यह है।

"हसन ने और कौन-कौन अपराध किये हैं" किसी ने पीछे की ओर पूछकर शाशमाकुल को उसकाया।

—वत् अभी कहता हूँ।

—शाशमाकुल जेब से रूमाल निकाल मुँह के पसीने को साफ करते रुक गया, इसी समय फिर किसी ने पीछे से कहा—"सियालका, कल्टीवेटर!"

वत्-वत् वत्, ये भी हैं—शाशमाकुल ने कहा—हसन ने सियालका खराब किया, कल्टीवेटर गुम किया, और भी बहुत-से अपराध किये। वत्, मैं काक् कम्युनिस्ट सच्ची बात कहता हूँ।

"रासायनिक खाद का क्या किया?"—फिर एक आदमी ने पीछे से कहा।

—वत्, और भी एक दूसरा गवाह, हसन ने रासायनिक खाद को ज्यादा करके डाला, इसलिये कपास के पौधे नष्ट हो गये। इस बात का समर्थन खुद कृषि-विशेषज्ञ ने किया।

—तुम्हारा विचार क्या है?—किसी ने शाशमाकुल से पूछा।

—मेरा विचार यही है—शाशमाकुल ने कहा—कि काक् कम्युनिस्ट (कम्युनिस्ट की भाँति) हमें पार्टी और सोवियत-सरकार की इज्जत करनी चाहिये।

—और हसन के बारे में क्या कहते—पीछे की ओर से किसी ने आवाज दी।

—हसन को इसी समय कलखोज से निकाल बाहर कर अदालत में देना चाहिये। वत्, कम्युनिस्टों की इज्जत न करनेवाले कम्सोमोल के लिये यही उचित दंड है—शाशमाकुल ने अपना भाषण समाप्त किया।

सभा के कुछ स्थानों में कुछ आदमियों ने ताली बजायी, जिसमें हमदम फ़रमा की ताली देर तक बजती रही। सभापति योलदाशोफ ने कहा—जानकारी देने के लिये साथी सफर गुलाम को बोलने के लिये कहा जाता है।

—साथियो! सफर गुलाम ने बोलना शुरू किया—हमारे कलखोज में कुलकों के अवशेषों ने अपनी कारवाई जारी रखी है, यह वस्तु-स्थिति है। यह उन्हीं के कामों में से है, जो बोने के समय सियालका खराब किया गया, कल्टीवेटर चुराया

गया, बीज में छूछे बिनौले मिलाये गये, रासायनिक खाद कम-बेशी की गयी, इत्यादि। लेकिन प्रश्न है कि इन अपराधों को किसने या किन्होंने किया?

—हसन एरगश ने—अपनी जगह बैठे शाशमाकुल ने कहा।

"ठीक है" कहते जहाँ-तहाँ से आवाज आयी।

—इन अपराधों में से—सफर गुलाम ने आगे बोलते हुए कहा—सियालका का खराब होना, कल्टीवेटर का गुम होना उस समय हुआ जब कि हसन एरगश उनसे काम कर रहा था।

इस बात को सुनकर सभा में हलचल मची और सभी आँखें सिर नीचा करके बैठे हसन एरगश के ऊपर पड़ीं। प्रेसीदियम् (सभापतिमंडल) के स्थान पर बैठे शाशमाकुल ने आधा खड़ा हो सभा की ओर दृष्टिपात करके कहा—वत्, ऐसे आदमी को इसी समय कलखोज से निकाल बाहर कर अदालत में देना चाहिये।

"इसी समय कलखोज से बाहर निकाला जाय" सभा में से आवाज आयी।

—साथियो!—सफर ने फिर बोलना शुरू किया—आपलोगों ने मेरी बात को ठीक से नहीं समझा या शायद मैं ही ठीक से नहीं समझा सका।

बात यह है कि कल्टीवेटर हसन के अधिकार में रहते गुम हुआ, और सियालका उसीके हाथ में रहते बोआई के समय खराब हुआ। लेकिन स्वयं उसने सियालका को खराब किया या कल्टीवेटर को गुम किया, यह अभी तक सिद्ध नहीं हुआ···

—हसन के हाथ से सियालका को क्या शैतान ने खराब किया?—शाशमाकुल ने टोककर कहना शुरू किया—पार्टी कहती है कि दुनिया में शैतान नाम की कोई चीज नहीं है। सफर अका पुराने कम्युनिस्त होते भी पार्टी के इस सूक्ष्म सिद्धान्त को नहीं समझते। मैं इस सिद्धान्त पर कई बार काम कर चुका हूँ और काक् कम्युनिस्ट कहता हूँ कि सियालका को खुद हसन ने खराब किया।

—पूर्वोक्त परिस्थिति में—सफर ने कहा—हसन का जवाबदेह होना ठीक था। पहिली बार की जाँच में ज्ञात नहीं हुआ कि इस अपराध में कोई बाहर का हाथ है और हसन को अदालत में देने की बात निश्चित हुई।

—हाँ, तो उसी निश्चय को काक् कम्युनिस्ट कार्य-रूप में परिणत करना चाहिये—शाशमाकुल ने टोकते हुए कहा।

"ठीक"-"ठीक" कहकर दो-तीन आवाजों ने शाशमाकुल की बात का समर्थन किया।

—लेकिन हाल में—सफर गुलाम ने फिर कहा—अपराध का पता लगने लगा। इस मामले के बारे में आवश्यक सामग्री राजनैतिक विभाग के हाथ में पहुँच चुकी है। राजनैतिक विभाग का अधिकारी आज आकर इसी बारे में आपलोगों को बतलानेवाला था, लेकिन किसी कारण से उसने देर की। इसलिये मैं प्रस्ताव करता हूँ कि साथी कुलमुराद के आने तक इस विषय को स्थगित रखा जाय।

—यह कैसा प्रस्ताव है? यह स्पष्ट अपराध के ऊपर पर्दा डालना, अपराधी की सहायता करना, कुलकों का पक्षपात करना है—कहते शाशमाकुल ने विरोध किया।

—यह कैसी मनमानी है?—योलदाशोफ ने शाशमाकुल की ओर निगाह करके जोर से कहा—आदमी को बोलने नहीं देते, प्रस्ताव सुनने नहीं देते, सभा में इस तरह भाषण नहीं दिया जाता। नियम को मानना चाहिये।

—अपराधी का पक्षपात करना चाहिये, लोगों को बोलने नहीं देना चाहिये—यह है नियम साथी योलदाशोफ का—शाशमाकुल ने कहा।

—ओय् प्रेसीदियम्, ओय् प्रेसीदियम्!—नारमुराद ने उठकर बोलते योलदाशोफ का ध्यान अपनी ओर खींचकर कहा—यदि नियम-विरुद्ध न हो तो मुझे बोलने की आज्ञा दो। (और फिर आज्ञा की प्रतीक्षा किये बिना ही बोलना शुरू किया) मैं हसन को अपने लड़के की तरह मानता हूँ, उसे एक मुस्तैद कम्सोमोल समझता हूँ। उसके बाप अका एरगश मेरे अका (बड़े भाई)-जैसे हैं। तो भी अपने कलखोज को मैं हसन से भी अधिक प्यारा समझता हूँ; क्योंकि मैंने जहाँ हसन से पैसा भर का भी लाभ नहीं देखा, वहाँ कलखोज से दो सौ दिन काम करके ७५ पूद (७५ × १६ × १$\frac{1}{2}$ सेर) गेहूँ पाया। मेरी स्त्री ने मुझसे भी अधिक काम किया और अधिक गेहूँ भी पाया। हसन एरगश जब हमारे ऐसे कलखोज को बर्बाद करना चाहा है, तो उसे इसी समय निकाल बाहर कर देना चाहिये। मुझे और कुछ नहीं कहना है।

नारमुराद बैठ गया। उसके भाषण पर बड़े जोर की ताली बजी। नारमुराद भी अपनी जगह से उठकर ताली बजाने लगा, फिर प्रेसीदियम् की ओर निगाह

करके "क्या मेरा भाषण भी नियम-विरुद्ध हुआ" कहते अपनी जगह बैठ गया।

"मुझे बोलने की आज्ञा दीजिये" कहते सादिक अपनी जगह से उठा और योलदाशोफ के "प्रसन्नतापूर्वक" कहने पर बोलने लगा—मैं अका परगश की बहुत इज्जत करता हूँ, तो भी उनके लड़के हसन से उतना प्रसन्न नहीं हूँ; क्योंकि वह मेरे लड़के को सिखलाता है कि भगवान नहीं है। इतने पर भी मैं विश्वास नहीं कर सकता कि हसन ने कलखोज को क्षति पहुँचायी होगी। क्योंकि वह सदा कलखोज में तन-मन से काम करता है। बच्चों को "भगवान नहीं" की शिक्षा भले देता हो, किन्तु साथ ही काम करना भी सिखलाता है। हरएक बच्चा हसन अका की तरह "कर्मठ" बनने की कोशिश करता है। एक जवान जो कलखोज में इस तरह जान लड़ाकर काम करता है और दूसरों को भी कर्मठ बनाता है, वह जान-बूझकर कलखोज को हानि नहीं पहुँचा सकता। इसलिये मेरा विचार है कि यह काम इस समय स्थगित किया जाय।

—साथियो! सुनी कुलक की बात—अपनी जगह खड़ा होकर शाशमाकुल ने कहा। सफर गुलाम कहते हैं कि कलखोज में कुलकों के अवशेष हैं, लेकिन वह कुलक को अपने सामने बैठा नहीं देख रहे हैं।

मैंने किस कुलक को नहीं देखा? सफर गुलाम ने पूछा।

—यही यहाँ सादिक को—शाशमाकुल ने कहा—एक समय अपने कुलकपन को छिपाने के लिये चाहे पुराना जामा पहने ही फिरता हो, लेकिन अब इसका जामा खोजा नजर बाय के जामे से भी बढ़िया, पेट रहीम कसाई से भी भारी, इसकी दाढ़ी तूराकुल रोगनगर (तेली) से भी बड़ी और चिकनी है। जब यहाँ से दूसरे कुलकों को भगा दिया गया, तो फिर यह क्यों कलखोजची बनकर हमारी सभा में आ अपराधी का पक्ष ले रहा है? जो कोई इसकी बात को ठीक कहता है, वह कुलक है। वत्, मैं काक् कम्युनिस्ट सच्ची बात कहता हूँ—शाशमाकुल बैठ गया।

इसे वोट (सदा) पर रखा जाय। "वोट लिया जाय", "वोट लिया जाय" की आवाजें चारों ओर से आने लगीं।

—अच्छा, ऐसा ही सही। प्रश्न को वोट पर रखते हैं—योलदाशोफ ने खड़ा होकर लोगों की ओर निगाह करके कहा—जो चाहते हैं कि हसन इसी समय कलखोज से न निकाला जाय और अभी उसका मामला स्थगित रखा जाय, वह अपना हाथ उठायें।

सभा में आधे से अधिक हाथ उठ गये।

—नहीं, यह ठीक नहीं—शाशमाकुल अपनी जगह खड़ा होकर बोलने लगा—पहिले मेरे प्रस्ताव पर वोट लो। कुलक के प्रस्ताव पर क्यों पहिले वोट लिया गया? जो लोग चाहते हैं कि हसन इसी समय कलखोज से निकाल दिया जाय, अदालत के हाथ में सौंपा जाय; और जो स्वयं कुलक और कुलक के पक्षपाती नहीं हैं, वह हाथ उठायें।

—अच्छा—तंग आये योलदाशोफ ने वोट पर रखते हुए कहा—जो चाहते हैं "हसन इसी समय कलखोज से निकालकर अदालत में दे दिया जाये" वह हाथ उठायें।

इस समय भी आधे से अधिक लोगों ने हाथ उठाये।

"प्रस्ताव पास हो गया" कहते ताली बजाते शाशमाकुल अपनी जगह से उठा—कुछ लोगों ने भी उसके साथ ताली बजायी। हमदम फूरमा जहाँ बैठा था, वहाँ तालियाँ अधिक बजीं। कुतुबिया ने प्रेसीदियम् की ओर मुँह करके कहा—मेरी प्रार्थना है, मैं नहीं चाहती कि एक अपराधी की बीबी रहूँ। मैं इसी समय अपने को हसन से अलग समझती हूँ।

कुतुबिया की बात पर हमदम फूरमा के आस-पास बैठे लोगों ने तालियाँ बजायीं और हर्षोल्लास प्रगट किये।

"सलामत रहें वह लोग जिन्होंने हसन एरगश के अपराधों का उद्घाटन किया" कहती कुतुबिया ने अपने सिर को शाशमाकुल की ओर झुकाया और जाकर हमदम फूरमा से गर्मा-गर्म हाथ मिलाते उसकी बगल में बैठ गयी।

—हो नहीं सकता—कहती फातिमा खड़ी होकर बोलने लगी—हसन अपराधी नहीं हो सकता, हसन कलखोज से निकाला नहीं जा सकता।

"प्रस्ताव पास, सभा समाप्त हो गयी" कहते शाशमाकुल ने फातिमा को रोक दिया।

यद्यपि अभी सभापति ने सभा को समाप्त नहीं किया था, किन्तु "सभा समाप्त" की आवाज सुनते ही लोग खड़े हो गये। किन्तु अभी सभा बिखरी नहीं थी कि मुहब्बत ने "कुलमुराद आये, कुलमुराद आये" की आवाज दी। सब लोग अपनी जगह खड़े रह गये।

१९

सच्चा न्याय

चार आदमी लाल चायखाने के सामने घोड़ों से उतरे, उनमें एक कुलमुराद था, दूसरा रायन् (तहसील) का तेरगोची (पुलिस अधिकारी) और दूसरे दो हथियारबन्द पुलिस कान्स्टेबुल थे।

कुतुबिया ने हथियारबन्द सिपाहियों को देखकर मुँह को हमदम के पास ले जा, मानो उसे चूम रही हो, प्रसन्न होकर कहा—जान पड़ता है, उसे यहीं से हवालात में ले जायेंगे।

—अलबत्ता—हमदम फूरमा ने उसकी बात का समर्थन करते दूसरों को भी सुनाते उच्च स्वर में कहा—चाहता था कि कमूसोमोल के नाम से लाभ उठाकर अपने अपराध को जारी रखे।

—हो नहीं सकता कि हसन अपराधी होकर निकाला जाय—फातिमा ने गर्म होकर हमदम की बात का विरोध किया।

—उसके बाद तेरी पारी है—कुतुबिया ने पहिली विजय से ढीठ होकर फातिमा से कहा।

—यदि हसन अपराधी होकर निकाला गया, तो मैं भी अपराधी बनी ही हूँ; फिर तुम इच्छानुसार कलखोज को बर्बाद करना फातिमा ने जवाब दिया।

यह विवाद लड़ाई का रूप लेने जा रहा था; किन्तु इसी समय कुलमुराद के चायखाने के भीतर आ जाने से वहीं रुक गया।

कुलमुराद और तेरगोची अपने पोर्ट फोल और हैन्डबेग को मेज पर रख सिर झुकाकर सभा को सम्मानित कर बैठ गये।

—साथी कुलमुराद! तुम राजनैतिक विभाग के आदमी हो, तुमसे एक विशेष प्रश्न पूछना चाहता हूँ, क्या उसे पूछ सकता हूँ—शाशमाकुल ने साँस तर ऊपर करके पूछा।

—बड़ी प्रसन्नता से, पूछिये—कुलमुराद ने मुस्कुराते हुए कहा।

—क्या आज के जमाने में कलखोज में कुलक (धनी किसान) के लिये जगह हो सकती है?—शाशमाकुल ने पूछा।

—कलखोज में इस समय तो क्या, कलखोज आरंभ के समय भी कुलक के लिए जगह न थी—कुलमुराद ने मुस्कुराते हुए कहा।

—हमारे कलखोज में अब भी एक कुलक है—शाशमाकुल ने कहा।

—एक नहीं, और भी हो सकते हैं—कुलमुराद ने बैग को खोल कागजों को निकालकर, उनपर नजर दौड़ाते हुए कहा—यदि तुम्हारे कलखोज में कुलक और उनके अवशेष न होते तो इतने अपराध न होते। राजनैतिक विभाग का यह कर्तव्य है कि इन कुलकों और अवशेषों को खोज निकाला जाय, उन्हें नंगा किया जाय और कलखोज को राजनैतिक तौर से पक्का और आर्थिक तौर से सबल बनाया जाय।

—इस समय इस सभा में एक कुलक है, जो कलखोजची के नाम से फायदा उठाकर यहाँ बैठा है। मेरी राय है कि उसे इसी समय सभा से निकाल दिया जाय—शाशमाकुल ने कहा।

—कौन है वह—कुलमुराद ने कागजों से दृष्टि हटा चकित हो शाशमाकुल की ओर देखा।

—वही घनी दाढ़ी, मोटे पेट, रेशमी जामावाला आदमी, जो वहाँ बैठा है—कहते शाशमाकुल ने सादिक की ओर इशारा किया।

—क्या सादिक भाई को कहते हो!—आश्चर्य करते कुलमुराद ने पूछा।

वह, इसीको नस्तयाश्शों (आधुनिक) कुलक कहते हैं—शाशमाकुल ने गर्व से कहा।

सादिक का चेहरा फक हो गया। शरीर सिर से पैर तक काँपने लगा। हमदम ने कुतुबिया के कान के पास मुँह ले जाकर कहा—एक और भी गिरा।

—क्या वह भी कम्युनिस्ट है?—कुतुबिया ने फुसफुसाते हुए पूछा।

—वह कम्युनिस्ट न भी हो, लेकिन एक कम्युनिस्ट की तरह जान लगाकर कलखोज में काम करता है—हमदम ने कहा—यदि इसने सँभाला न होता, तो हसन की बोयी सारी कपास खराब जाती, तब एक ओर हसन का अपराध भारी होता और दूसरी ओर कलखोज को भी भारी क्षति होती।

—ठीक है—कुतुबिया ने हमदम की बात को पुष्ट करते हुए कहा—यदि हम ऐसे कार्यज्ञ और कार्यकारी दस कलखोजचियों को गिरा सकें, तो कलखोज बर्बाद हो जायगा।

कुलमुराद ने शाशमाकुल की अंतिम बात सुनकर मुस्कुराते हुए जेब से डिब्बा निकाल सिगरेट जला एक-दो फूँक खींचा और फिर शाशमाकुल की ओर निगाह करके बात शुरू की—सादिक को मैं जानता हूँ। बहुत समय से मैं तुम्हारे कलखोज की ओर काम कर रहा हूँ। मैंने सादिक को एक मुस्तैद और लगनवाला कलखोजची पाया है। वह सारी कृषि-विज्ञान के ढंगों को लेकर अच्छी तरह काम करता है, उन्हें समझता है और उनके साथ मिलान करने की कोशिश करता है।

—पहिले भले ही पुराना जामा लपेटकर कलखोज में आया हो—शाशमाकुल ने कहा—अब उसने अपने लिये नया जामा बनाया है, अपने घर को भी चीज-वस्तु से भर दिया है। उसका पेट, दाढ़ी, पाग उन्हीं जैसा है, जिन्हें कुलक बनाकर हमने निकाल बाहर किया था; इसलिये मैं काकू कम्युनिस्ट प्रस्ताव करता हूँ कि इसे इसी समय सभा से निकाला जाय और कुलक मानकर उसकी सारी माल-मिलकियत जब्त कर ली जाय। पार्टी की इज्जत करनी चाहिये, सोवियत सरकार की इज्जत करनी चाहिये। गाँव में सर्वश्रेष्ठ संस्था ग्राम-सोवियत है।

शाशमाकुल ने आरंभ में कुलमुराद के लिये जो सम्मान प्रदर्शित किया था, आगे उसे कम करके अपनी समझ में अपने भाषण को खूब तर्क-सम्मत बनाकर लम्बा करना चाहा। लेकिन कुलमुराद ने इसके लिये अवसर न दे—"बस कर बक-बक करना" कहते उसे रोककर बोलना शुरू किया—हो सकता है, तू एक बार कम्युनिस्ट पार्टी में आ गया हो, शायद तेरे पास पार्टी का टिकट भी हो, लेकिन तुझे बिलकुल नहीं मालूम कि कम्युनिस्ट क्या होता है।

—क्यों?—शाशमाकुल ने बात काटकर कहा।

—इसलिये कि यदि तू कम्युनिस्ट होता, तो साथी स्तालिन के बतलाये ढंग और देहात में काम करने के लिये उनकी शिक्षा और कुलक के दस गुणों से बिलकुल अनजान न होता—कुलमुराद ने कहा।

—क्यों! मैं साथी स्तालिन की हर बात को दिन में कई बार करता रहता हूँ—शाशमाकुल ने गर्व से कहा।

—चुप रह—कहते कुलमुराद ने उसकी बात काट दी—साथी स्तालिन ने कहा है—"आज की अवस्था में कार्टून के मोटे पेटों में कुलक को मत ढूँढ़ो, बल्कि उन्हें अपने ही बीच ऐसे आदमियों में ढूँढ़ो, जो बिलकुल तुम्हारी ही तरह की पोशाक पहने हैं।" लेनिन के तुल्य और उसके काम को आगे बढ़ानेवाले

साथी स्तालिन ने यही ढंग सिखलाया है। और तू कार्टून (व्यंग चित्र) से कुलक ढूँढ़ निकालनेवालों की तरह पाग, जामा, दाढ़ी, मूँछ और पेट देखकर कुलक घोषित करने चला है।

—तो क्या सादिक कुलक नहीं है?—शाशमाकुल ने आश्चर्य करते हुए कहा।

—निःसंदेह कुलक नहीं है। किस युक्ति से तू कुलक कहता है?

—युक्ति यह है—शाशमाकुल ने कहा—वह एक कुलक से भी अधिक घर में रखता है। उसने साटन की गद्दा-गद्दी बनवाई है। उसके पास दूध देनेवाली गाय और अच्छी जाति की भेड़ें हैं।

—इन चीजों को उसने कहाँ से पाया?

—नहीं जानता कहाँ से पाया? कलखोज से पाया होगा—शाशमाकुल ने कहा।

कुलमुराद ने निठुराई के साथ कहा—तेरी सबसे बड़ी भूल यही है कि कलखोज में हलाल काम करके किसी ने जो माल-असबाब जमा किया है, उसे तू कुलक होने का प्रमाण मानता है। इसी से जान पड़ता है कि तुझे साथी स्तालिन की बात—"हरएक कलखोज, बोलशेविक कलखोज और कलखोजची सुखी" को बिलकुल नहीं जानता।

—क्यों बिलकुल नहीं जानता हूँ? मैंने इस शिक्षा पर भी कई बार काम किया है—कहते शाशमाकुल ने फिर टोका।

—चुप हो, बस कर। तेरी बकवास सुनने से काम नहीं चलेगा, हमें और भी आवश्यक काम करने हैं—कुलमुराद ने कहा और फिर योलदाशोफ की ओर निगाह करके—साथी सभापति! मुझे बोलने की आज्ञा दीजिये।

—कृपा कीजिये।

साथियो!—कुलमुराद ने कहना शुरू किया—सोवियत संघ के अधिकांश कलखोजों की भाँति तुम्हारे कलखोज की सफलताएँ आँखों के सामने हैं। उनकी और व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं। लेकिन कलखोज और समाजवादी आर्थिक अवस्था जितनी ही आगे बढ़ती है, कुलकों की कार्रवाइयाँ और वर्ग-शत्रुओं की चालें भी उतनी ही अधिक होती जाती हैं। उसकी भी लम्बी-चौड़ी व्याख्या करने की जरूरत नहीं। मैं सीधे उन अपराधों और दुष्कर्मों पर आता हूँ, जो तुम्हारे कलखोज में हुए।

कुलमुराद ने थोड़ी देर दम लेकर सभा की ओर नजर दौड़ाते फिर कहना शुरू किया—मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के राजनैतिक विभाग ने तुम्हारे कलखोज में अपराध करने-करानेवालों को ढूँढ़ निकालने में बहुत काम किया, तो भी जल्दी सफलता नहीं मिली। लेकिन राजनैतिक विभाग हारकर बैठा नहीं, बल्कि उसने अपनी जाँच जारी रखी और अन्त में भेद खुल गया।

मैंने जो जानकारी दी थी, आखिर वह ठीक आयी न ?—शाशमाकुल ने बीच में कहा।

कुलमुराद ने उसकी ओर निगाह न करके बोलना जारी रखा—घटना इस तरह है। कुछ हेक्टरों में बोने के लिये बीज जा रहा था। उसमें छूछा बिनौला मिला दिया गया, बीज नहीं जमा, फिर उलटकर बोना पड़ा। बोआई असमय हुई और मिहनत भी अधिक लगी। एक चक खेत की बोआई होने के समय सियालका खराब कर दिया गया, जिसमें कितनी ही जगह बीज नहीं पड़ा और नहीं जमा, ठीक आवश्यकता के समय कल्टीवेटर को चुरा लिया गया; सिंचाई के समय एक नहर को नष्ट कर दिया गया इत्यादि।

कुलमुराद बोलना बंद करके चाय की घूँट पी कंठ भिगोने लगा, इसी समय शाशमकुल बोल उठा—हसन इन सारे अपराधों का जिम्मेवार हुआ था, उसे आज कलखोज से निकालकर अदालत में दे दिया। गया।

—असंभव, हसन को अपराधी बनाकर नहीं निकाला गया—कहकर फातिमा ने शाशमाकुल को टोका।

कुलमुराद ने फिर कहना शुरू किया। इन अपराधों में से कुछ का जिम्मेवार हसन हो सकता है, जैसे सियालका को खराब करना, कल्टीवेटर का चोरी जाना।

—भगवान को धन्यवाद हमदम फ़ुरमा ने कुतुबिया से कहा—इसने भी हसन के अपराध को मान लिया।

—लेकिन—कुलमुराद ने कहा—राजनैतिक विभाग ने सारे अपराधों का संबंध ढूँढ़ निकाला है, और इससे मालूम हुआ कि जिस दिन नहर बर्बाद हुई उसकी पिछली रात को कल्टीवेटर चुराया गया। नहर के नष्ट होने की खबर सुनकर जब ब्रिगादीर लोग अपने ब्रिगेडों को ले उधर दौड़े, उसी समय एक आदमी ने गाँव में जा एक घर की खिड़की पर मिट्टी की डली से लिखा। "नहर बर्बाद हुई, कल्टीवेटर गुम हुआ" दो मिनट बाद घर का मालिक जब घर में आया, तो उसने

उस लेख को महत्त्व नहीं दिया ; और समझा कि किसी बच्चे ने वैसा सुनकर लिख दिया होगा। घर का मालिक घर में जाने से पहिले कूचे में एक आदमी से मिला था; लेकिन उसने उसपर जरा भी संदेह नहीं किया।

कुलमुराद की बात के पहिले भाग को सुनकर हमदम का रंग उड़ गया था; किन्तु आखिरी अंश को सुनकर कुछ धीरज बँधा।

कुलमुराद ने बात जारी रखते हुए कहा—उस दिन उस घर के मालिक ने जिस आदमी को कूचे में देखा था, दूसरे दिन उसे एक स्त्री के साथ बैठकर बात करते देखा। बात कल्टीवेटर के गुम होने, नहर के बर्बाद होने और दूसरी चीजों के बारे में हो रही थी। घर के मालिक को अब इन बातों और खिड़की पर लिखे वाक्य के बीच संबंध मालूम हुआ।

कुलमुराद की इस बात से हमदम फूरमा का दिल काँपने लगा, लेकिन जब आगे चलकर कुलमुराद ने कहा कि ये प्रमाण राजनैतिक विभाग को काफी नहीं जँचे तो फिर उसके दिल को जरा आराम मिला।

—हमें ऐसे गवाहों की आवश्यकता है—कुलमुराद ने कहा—जो अपराधी का खुलकर पता दे।

—हसन ने अपराध किया, इसके बारे में मैं तुम्हें कई गवाह दे चुका हूँ न ! कहकर शाशमाकुल ने रोका।

धीरज धर, तेरे विशेष गवाहों के बारे में भी मैं अभी कहने जा रहा हूँ—कुलमुदाद ने कहा—हमें भौतिक प्रमाणों की आवश्यकता है। जब तक ऐसे प्रमाण न मिलें, तब तक हसन गुनाहगार रहा...

मैंने भी "हसन गुनाहगार रहा" कहा था न ?—शाशमाकुल ने कहा।

अब हमदम फूरमा के चेहरे पर भी प्रसन्नता के चिह्न दिखलाई पड़े।

कुलमुराद ने बात जारी रखते कहा—आज जब मैं आपकी सभा में आने की तैयारी कर रहा था, तो एक खबर सुनी कि नष्ट हुई नहर को साफ करने के लिये जब मिट्टी निकाली जा रही थी, तो वहाँ एक कल्टीवेटर मिला। मैं यह खबर सुनते ही तेरगोची को साथ लिये वहाँ पहुँचा। कल्टीवेटर को अपनी आँखों से देखा, जिस जगह कल्टीवेटर मिला था, उसे फिर से खुदवाकर देखा। वहाँ एक रम्बा मिला। मैंने समझा कि यह वह हथियार है, जिससे जमीन के नीचे छेद बनाकर पानी के लिये रास्ता निकाल नहर को बर्बाद किया गया। उस रम्बा को किसने

बनवाया, इसे जानने के लिये मैंने लोहारों से पूछा। सत्तार आहंगर ने कहा—"इस हथियार को मुझसे नौमानजादा ने आग-खोदनी कहकर बनवाया था"—कुलमुराद ने जरा साँस लेकर फिर बात जारी की—साथियो! जैसा कि सारी युक्तियों से पता लगा कि इन सारे अपराधों का सूत्र जाकर नौमानजादा को पकड़ता है।

कुलमुराद अपनी बात खतम करके बैठ गया। तीरगोची ने खड़ा हो अपने पोर्ट फेल में से एक कागज निकालकर उसपर नजर दौड़ा सभा से पूछा—नौमानजादा कहाँ है?

लोगों के लिये नया नाम था। वह एक दूसरे से धीमी आवाज में पूछ रहे थे। इसी समय एक बूढ़ा उठा और उसने मरे चूहे की तरह फर्श पर ढेर हुए हमदम फूरमा की ओर इशारा करके कहा—इसी जवान के बाप का नाम नौमान था, जो कि आजकल अपना नाम हमदम फूरमा रखे घूम रहा है।

—हमदम फूरमा के नाम से प्रसिद्ध हमदम नौमानजादा कलखोज का अपराध करने के लिये गिरफ्तार करके सशस्त्र पुलिस के अधीन हवालत में भेजा जा रहा है—तेरगोची ने कहा।

सभा के लोग इस आकस्मिक खबर को सुनकर चकित हो चारों ओर से हमदम फूरमा के ऊपर नजर गड़ाकर देखने लगे।

—जमीन समतल करते वक्त मैंने कब के नहीं कहा था कि इस मूँछुन्दर के हाथों सिवा बर्बादी के और कुछ नहीं हो सकता। आखिर मेरी बात सच निकली न!—नारमुराद ने चिल्लाकर कहा।

भय और आश्चर्य के मारे हमदम की ऐसी हालत हो गयी थी कि वह पुलिस की मदद से खड़ा हुआ और निराशा तथा विह्वलता से पागल हो चिल्ला उठा—इन बदरगों—गुलामों—भुक्खड़ों—नौकरों ने, जो हमारी रोटी-दाल से पले थे, आखिर में हमारे सिर पर पानी डाला।

—गुलाम, नौकर, चरवाहे और मेहनतकश किसान कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के नेतृत्व में एक हो, जिन्होंने बायों और कुलकों के सिर पर पानी डाला, वही कुलकों के अवशेषों के सिर पर आग डालेंगे—यह जवाब था एरगश का, जिसके बाप का नाम बाबा गुलाम, असली नाम रहीम दाद और उपनाम नैकदम था।

"जिन्दाबाद हमारा महान् नेता स्तालिन और उसकी दीर्घदर्शिता, जिसमें मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन का राजनैतिक विभाग भी है"—कहते फातिमा ने सारी सभा को अपने पैरों पर खड़ा कर दिया।

"जिन्दाबाद कम्युनिस्ट पार्टी और उसका महान् नेता साथी स्तालिन!"

"जिन्दाबाद लेनिन-तुल्य और लेनिन के काम को आगे बढ़ानेवाला महान् स्तालिन!"

"जिन्दाबाद कलखोजी निर्माण का मुस्तैद ब्रिगादीर हमारा महान् स्तालिन!"

"ऊरा, ऊरा, ऊरा!" कहते सारे मुखों से निकली आवाज चायखाने की खिड़कियों के काँचों को कम्पित करने लगी।

लेकिन वहाँ दो व्यक्तियों में गति का कोई चिह्न दिखाई नहीं पड़ रहा था। उनमें एक थी कुतुबिया जिसके चेहरे का रंग मुर्दे की भाँति हो गया था और वह फर्श पर बेहोश पड़ी थी और दूसरा था एरगश का पुत्र हसन, जो दृढ़ हृदय वीर-विजेता की भाँति खुशी से न फूलकर अपने हाथों को जेब में डाले स्मितमुख चायखाना के बीच में खड़ा था।

॥ समाप्त ॥